हिन्दी बुखारी शरीफ – दाउदराज

पारा	पेज नं.	वोल्युम 1
1	1-363	
2	365-533	हदीस नं.
3	535-740	1-813

पारा	पेज नं.	वोल्युम 5
14	1-196	
15	197-318	
16	319-477	हदीस नं.
17	478-608	3465-4394

पारा	पेज नं.	वोल्युम 2
4	1-223	
5	224-421	हदीस नं.
6	422-640	814-1653

पारा	पेज नं.	वोल्युम 6
18	1-199	
19	200-357	
20	358-532	हदीस नं.
21	533-688	4395-5244

पारा	पेज नं.	वोल्युम 3
7	1-209	
8	210-401	हदीस नं.
9	402-608	1655-2489

पारा	पेज नं.	वोल्युम 7
22	1-171	
23	172-309	
24	310-443	
25	445-593	हदीस नं.
26	594-736	5245-6516

पारा	पेज नं.	वोल्युम 4
10	1-197	
11	198-367	
12	368-543	हदीस नं.
13	544-732	2491-3467 x 4, 5, 6 x

पारा	पेज नं.	वोल्युम 8
27	1-166	
28	167-325	
29	326-487	हदीस नं.
30	488-652	6517-7563

M-09825696131

(राजअ़ : 35)

ذَنبِهِ)). [راجع: ٣٥]

बाब 29 : इस बयान में कि दीन आसान है

٢٩- بَابُ الدِّينُ يُسْرٌ،

जैसा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का इर्शाद है कि अल्लाह को सबसे ज़्यादा वो दीन पसंद है जो सीधा और सच्चा हो। (और वो यक़ीनन दीने इस्लाम है जो सच है)

وَقَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَحَبُّ الدِّينِ إِلَى اللهِ الْحَنِيفِيَّةُ السَّمْحَةُ))

(39) हमसे अ़ब्दुस्सलाम बिन मुत़ह्हिर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको उ़मर बिन अ़ली ने मअ़न बिन मुह़म्मद ग़िफ़ारी से ख़बर दी, वो सईद बिन अबू सईद मक़बरी से, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया बेशक दीन आसान है और जो शख़्स दीन में सख़्ती इख़्तियार करेगा तो उस पर दीन ग़ालिब आ जाएगा (और उसकी सख़्ती न चलेगी) बस (इसलिये) अपने अ़मल में पुख़्तग़ी इख़्तियार करो और जहाँ मुम्किन हो मियानारवी (मध्यमार्ग) बरतो और ख़ुश हो जाओ (कि इस तर्ज़े अ़मल से तुमको दोनों जहाँ के फ़वाइद ह़ासिल होंगे) और सुबह और दोपहर और शाम और किसी क़द्र रात में (इबादत से) मदद ह़ासिल करो। (पंज वक़्ता नमाज़ कभी मुराद हो सकती है कि पाबन्दी से अदा करो) (दीगर मक़ाम : 5673, 6463, 7235)

٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلاَمِ بْنُ مُطَهَّرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ مَعْنِ بْنِ مُحَمَّدٍ الْغِفَارِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الدِّينَ يُسْرٌ، وَلَنْ يُشَادَّ الدِّينَ أَحَدٌ إِلاَّ غَلَبَهُ، فَسَدِّدُوا وَقَارِبُوا، وَأَبْشِرُوا، وَاسْتَعِينُوا بِالْغَدْوَةِ وَالرَّوْحَةِ وَشَيْءٍ مِنَ الدُّلْجَةِ)).

[أطرافه في : ٥٦٧٣، ٦٤٦٣، ٧٢٣٥].

तश्रीह : सूरह ह़ज्ज में अल्लाह पाक ने फ़र्माया है 'मा जअ़ल अ़लैकुम फ़िद्दीनि मिन ह़रजिन मिल्लत अबीकुम इब्राहीम' (अल ह़ज्ज : 78) यानी 'अल्लाह ने दुनिया में तुम पर कोई सख़्ती नहीं रखी बल्कि ये तुम्हारे बाप ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की मिल्लत है।' आयतें और अह़ादीष़ से रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ है कि इस्लाम हर त़रह़ से आसान है। उसके उसूली और फ़ुरूई अह़काम और जिस क़द्र अवामिर व नवाही हैं सब में इसी ह़क़ीक़त को मल्हूज़ (दृष्टिगत) रखा गया है मगर स़द अफ़सोस कि बाद के ज़मानों में ख़ुद साख़्ता ईजादात से इस्लाम को इस क़द्र मुश्किल बना लिया गया है कि अल्लाह की पनाह, अल्लाह नेक समझ दे। आमीन!!

बाब 30 : इस बारे में कि नमाज़ ईमान का ह़िस्सा है और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे ईमान को ज़ाया करनेवाला नहीं, यानी तुम्हारी वो नमाज़ें जो तुमने ब़ैतुल मक़्दिस की त़रफ़ मुँह करके पढ़ी हैं, क़ुबूल हैं

٣٠- بَابٌ: الصَّلاَةُ مِنَ الإِيْمَانِ، وَقَوْلُ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَمَا كَانَ اللهُ لِيُضِيعَ إِيْمَانَكُمْ﴾ يَعْنِي صَلاَتَكُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ

(40) हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया, उनको ह़ज़रत बराअ बिन आ़ज़िब ने ख़बर दी कि

٤٠- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ أَوَّلَ مَا قَدِمَ الْمَدِينَةَ نَزَلَ

नबवी में ग़श खाकर गिर पड़ा करते थे। शहर से निकलते तो सवारी में गधा होता, जिस पर मामूली नमदह कसा होता है। छाल की रस्सी की लगाम होती। जब सामने कोई आ जाता तो मज़ाक़न ख़ुद कहते, रास्ता छोड़ो अमीर की सवारी आ रही है।

बड़े मेहमान-नवाज़ थे, अल्लाह तआला आज किसी को मामूली फ़ारिग़ुलबाली (बेनियाज़ी) भी अ़ता करता है तो ग़ुरूर से हालत कुछ और हो जाती है मगर अल्लाह ने आपको ज़मीन से उठाकर अर्श पर बिठा दिया, लेकिन सादगी का वही आ़लम रहा।

बाब 37 : ह़ज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम का आँह़ज़रत (ﷺ) से ईमान, इस्लाम और एह़सान और क़यामत के इ़ल्म के बारे में पूछना

٧- بَابُ سُؤَالِ جِبْرِيلَ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الإِيمَانِ، وَالإِسْلاَمِ، وَالإِحْسَانِ، وَعِلْمِ السَّاعَةِ، وَبَيَانِ النَّبِيِّ ﷺ لَهُ. ثُمَّ قَالَ: ((جَاءَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ يُعَلِّمُكُمْ دِينَكُمْ)) فَجَعَلَ ذَلِكَ كُلَّهُ دِينًا. وَمَا بَيَّنَ النَّبِيُّ ﷺ لِوَفْدِ عَبْدِ الْقَيْسِ مِنَ الإِيمَانِ. وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الإِسْلاَمِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ﴾.

और उसके जवाब में नबी करीम (ﷺ) का बयान फ़र्माना फिर आख़िर में आपने फ़र्माया कि यह जिब्राईल अलैहिस्सलाम थे जो तुमको दीन की ता'लीम देने आए थे। यहाँ आपने उन तमाम बातों को (जो जिब्राईल अलैहिस्सलाम के सामने बयान की गई थीं) दीन ही क़रार दिया और उन बातों के बयान में जो आँह़ज़रत (ﷺ) ने ईमान से मुता'ल्लिक़ अ़ब्दुल क़ैस के वफ़्द के सामने बयान की थी और अल्लाह पाक के इस इर्शाद की तफ़्सील में कि जो कोई इस्लाम के अ़लावा कोई दूसरा दीन इख़्तियार करेगा वो हर्गिज़ क़ुबूल न किया जाएगा।

इस आयते-शरीफ़ा में भी इस्लाम को लफ़्ज़े-दीन से ता'बीर किया गया है।

٥٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو حَيَّانَ التَّيْمِيُّ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَارِزًا يَوْمًا لِلنَّاسِ، فَأَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: مَا الإِيمَانُ؟)) قَالَ: ((الإِيمَانُ أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ، وَمَلاَئِكَتِهِ، وَبِلِقَائِهِ، وَبِرُسُلِهِ، وَتُؤْمِنَ بِالْبَعْثِ)). قَالَ: مَا الإِسْلاَمُ؟ قَالَ: ((الإِسْلاَمُ أَنْ تَعْبُدَ اللهَ وَلاَ تُشْرِكَ بِهِ، وَتُقِيمَ الصَّلاَةَ، وَتُؤَدِّيَ الزَّكَاةَ الْمَفْرُوضَةَ، وَتَصُومَ رَمَضَانَ)). قَالَ: مَا الإِحْسَانُ؟ قَالَ: ((أَنْ تَعْبُدَ

(50) हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू हय्यान तैमी ने अबू ज़ुरआ से ख़बर दी, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से नक़ल किया कि एक दिन आँह़ज़रत (ﷺ) लोगों में तशरीफ़ फ़र्मा थे कि आपके पास एक शख़्स आया और पूछने लगा कि ईमान किसे कहते है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ईमान यह है कि तुम अल्लाह पाक के वजूद और उसकी वहदानियत पर ईमान लाओ और उसके फ़रिश्तों के वजूद पर और उस (अल्लाह) की मुलाक़ात के बरह़क़ होने पर और उसके रसूलों के बरह़क़ होने पर और मरने के बाद दोबारा उठने पर पर ईमान लाओ। फिर उसने पूछा कि इस्लाम क्या है? आप (ﷺ) ने फिर जवाब दिया कि इस्लाम यह है कि तुम ख़ालिस़ अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात फ़र्ज़ अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो। फिर उसने एह़सान के बारे में पूछा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया एह़सान यह है कि

जिन बर्तनों के इस्ते'माल से आपने मना फ़र्माया उनमें अरब के लोग शराब रखा करते थे। जब शराब पीना हराम क़रार पाया तो चंद रोज़ तक आँहज़रत (ﷺ) ने उन बर्तनों के इस्ते'माल की भी मुमानअत फ़र्मा दी। M-09825696131

याद रखने के क़ाबिल : यहाँ हज़रत मौलाना मुबारकपुरी मुद्दज़िल्लहु ने एक याद रखने के क़ाबिल बात फ़र्माई है। चुनाँचे फ़र्माते हैं, '**क़ालल हाफ़िज़ु व फ़ीहि दलीलुन अला तक़द्दुमि इस्लामि अब्दिल क़ैसि अला क़बाइलि मुज़र अल्लज़ीन कानू बैनहुम व बैनल मदीनति व यदुल्लु अला सबक़िहिम इलल इस्लामि अयजन मा रवाहुल बुख़ारी फिल जुम्अति अनिब्नि अब्बासिन क़ाल इन्न अव्वल जुम्अतिन जुमिअत बअ़द जुम्अति फ़ी मस्जिदि रसूलिल्लाहि (ﷺ) फ़ी मस्जिदि अब्दिल क़ैसि बिजवाषी मिलन बहरैनि व इन्नमा जमऊ बअ़द रुजूइ वफ़्दिहिम इलैहिम फदल्ल अला अन्नहुम सबक़ू जमीअल क़ुरा इलल इस्लामि इन्तहा वहफज्हु फ़इन्नहू यन्फ़उक फ़ी मस्अलतिल जुम्अति फ़िल क़ुरा**' (मिरआत जिल्द अव्वल पेज नं. 44)

यानी हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) ने कहा कि इस हदीष मे दलील है कि अब्दुल क़ैस का क़बीला मुज़र से पहले इस्लाम क़ुबूल कर चुका था जो उनके और मदीना के बीच में रहते थे। इस्लाम में उनकी सबक़त पर बुख़ारी की वो हदीष भी दलील है जो नमाज़े जुम्आ के बारे में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि) से मन्क़ूल है कि मस्जिदे नबवी में इक़ामते जुम्आ के बाद पहला जुम्आ जवाषी नामी गाँव में जो बहरीन में वाक़ेअ था, अब्दुल क़ैस की मस्जिद में क़ायम किया गया। ये जुम्आ उन्होंने मदीना से वापसी के बाद क़ायम किया था। पस षाबित हुआ कि वो देहात में सबसे पहले इस्लाम क़ुबूल करने वाले हैं। इसे याद रखो ये गाँव में जुम्आ अदा होने के षुबूत में तुमको नफ़ा देगी।

बाब 41 : इस बात के बयान में कि अमल बग़ैर निय्यत और ख़ुलूस के सहीह नहीं होते और हर आदमी को वही मिलेगा जो वो निय्यत करे

٤١- بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الأَعْمَالَ بِالنِّيَّةِ وَ الْحِسْبَةِ، وَلِكُلِّ امْرِءٍ مَانَوَى فَدَخَلَ فِيهِ الإِيْمَانُ وَالوُضُوءُ وَالصَّلاةُ وَالزَّكَاةُ وَالْحَجُّ وَالصَّومُ وَالأَحْكَامُ. وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَى شَاكِلَتِهِ﴾ عَلَى نِيَّتِهِ. وَنَفَقَةُ الرَّجُلِ عَلَى أَهْلِهِ - يَحْتَسِبُهَا - صَدَقَةٌ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ)).

तो अमल में ईमान, वुज़ू, नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज्ज सारे अहकाम आ गए, और (सूरह बनी इस्राईल में) अल्लाह ने फ़र्माया ऐ पैग़म्बर! कह दीजिए कि हर कोई अपने तरीक़ यानी अपनी निय्यत पर अमल करता है और (उसी वजह से) आदमी अगर षवाब की निय्यत से अल्लाह का हुक्म समझकर अपने घरवालों पर ख़र्च कर दे तो उसमें भी उसको सदक़े का षवाब मिलता है और जब मक्का फ़तह हो गया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अब हिजरत का सिलसिला ख़त्म हो गया लेकिन जिहाद और निय्यत का सिलसिला बाक़ी है।

٥٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَقَّاصٍ عَنْ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ، وَلِكُلِّ امْرِىءٍ مَا نَوَى، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ

(54) हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्होंने यह्या बिन सईद से, उन्होंने मुहम्मद बिन इब्राहीम से, उन्होंने अलक़मा बिन वक़्क़ास से, उन्होंने हज़रत उमर (रज़ि.) से कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अमल निय्यत ही से सहीह होते हैं (या निय्यत ही के मुताबिक़ उनका बदला मिलता है) और हर आदमी को वही मिलेगा जो निय्यत करेगा। बस जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की रज़ा के लिए हिजरत करे उसकी हिजरत अल्लाह और उसके

عَادَتْ حَرْمَتُهَا الْيَوْمَ كَحُرْمَتِهَا بِالأَمْسِ، وَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ)). فَقِيْلَ لأَبِي شُرَيْحٍ : مَا قَالَ عَمْرٌو؟ قَالَ: أَنَا أَعْلَمُ مِنْكَ يَا أَبَا شُرَيْحٍ، إِنَّ مَكَّةَ لاَ تُعِيْذُ عَاصِيًا، وَلاَ فَارًّا بِدَمٍ، وَلاَ فَارًّا بِخَرْبَةٍ.

[طرفاه في : ١٨٣٢، ٤٢٩٥].

पूछा गया कि (आपकी यह बात सुनकर) अ़म्र ने क्या जवाब दिया? कहा यूँ कि ऐ (अबू शुरैह़!) ह़दीष़ को मैं तुमसे ज़्यादा जानता हूँ मगर ह़रमे (मक्का) किसी ख़त़ाकार को या ख़ून करके और फ़ित्ना फैलाकर भाग आनेवाले को पनाह नहीं देता।

(दीगर मक़ाम : 1832, 4290)

M-09825696131

तश्रीह़ : अ़म्र बिन सईद, यज़ीद की त़रफ़ से मदीना के गवर्नर थे, उन्होंने ह़ज़रत अबू शुरैह़ से ह़दीषे़ नबवी (ﷺ) सुनकर तावील से काम लिया और अल्लाह के रसूल (ﷺ) के सह़ाबी ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि) को बाग़ी (विद्रोही) व फ़सादी (उपद्रवी) क़रार देकर मक्का शरीफ़ पर फ़ौजकशी का जवाज़ निकाला। ह़ालाँकि उनका ख़याल बिलकुल ग़लत़ था। ह़ज़रत इब्ने ज़ुबैर (रज़ि) न बाग़ी थे, न फ़सादी थे। नस़्स़ के मुक़ाबले पर राय व क़यास व फ़ासिद तावीलों से काम लेने वालों ने हमेशा इसी त़रह़ फ़सादात बरपा करके अहले ह़क़ को सताया है। ह़ज़रत अबू शुरैह़ का नाम ख़ुवेलिद बिन अ़म्र बिन स़ख़र है और बुख़ारी शरीफ़ में उनसे सि़र्फ़ तीन अह़ादीष़ मरवी हैं। 68 हिजरी में आपने इंतिक़ाल फ़र्माया रह़िमहुल्लाहु व रज़ियल्लाहु अ़न्हु

चूँकि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने यज़ीद की बैअ़त से इंकार करके ह़रमे मक्का शरीफ़ को अपने लिये जाए पनाह (शरणस्थली) बनाया था। इसीलिये यज़ीद ने अ़म्र बिन सईद को मक्का पर फ़ौजकशी करने का हुक्म दिया। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि) शहीद किये गये। और ह़रमे मक्का की सख़्त बेहुर्मती की गई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊ़न। ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि) रसूलल्लाह (ﷺ) के फूफीज़ाद भाई और ह़ज़रत अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि) के नवासे थे। आजकल भी अहले बिदअ़त ह़दीषे़ नबवी को ऐसे ही बहाने निकाल कर रद्द कर देते हैं।

١٠٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ ذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: ((فَإِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ- قَالَ مُحَمَّدٌ: وَأَحْسِبُهُ قَالَ وَأَعْرَاضَكُمْ - عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا، فِي شَهْرِكُمْ هَذَا. أَلاَ لِيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ مِنْكُمُ الْغَائِبَ))، وَكَانَ مُحَمَّدٌ يَقُولُ: صَدَقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، كَانَ ذَلِكَ ((أَلاَ هَلْ بَلَّغْتُ؟)) مَرَّتَيْنِ. [راجع: ٦٨]

(105) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उनसे हम्माद ने अय्यूब के वास्ते से नक़ल किया, वो मुह़म्मद से रिवायत करते हैं कि (एक बार) अबूबक्र (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) का ज़िक्र किया कि आप (ﷺ) ने (यूँ) फ़र्माया, तुम्हारे ख़ून और तुम्हारे माल, मुह़म्मद कहते हैं कि मेरे ख़याल में आप (ﷺ) ने अअ़राज़ुकुम का लफ़्ज़ भी फ़र्माया। (यानी) और तुम्हारी आबरूएँ तुम पर ह़राम हैं जिस त़रह़ तुम्हारे आज के दिन की हुर्मत तुम्हारे इस महीने में। सुन लो! यह ख़बर ह़ाज़िर ग़ायब को पहुँचा दे। और मुह़म्मद (ह़दीष़ के रावी) कहते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सच फ़र्माया। (फिर) दोबारा फ़र्माया कि क्या मैंने (अल्लाह का यह हुक्म) तुम्हें नहीं पहुँचा दिया। (राजेअ़ : 68)

मक़्स़द ये कि मैं इस ह़दीषे़ नबवी की ता'मील कर चुका हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज्जतुल विदाअ़ में ये फ़र्माया था, दूसरी ह़दीष़ में तफ़्स़ील से इसका ज़िक्र आया है।

बाब 38 : इस बयान में कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर झूठ बांधने वाले का गुनाह किस दर्जे का है

٣٨- بَابُ إِثْمِ مَنْ كَذَبَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

बाब 38 : इस बयान में कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर झूठ बांधने वाले का गुनाह किस दर्जे का है

٣٨- بَابُ إِثْمِ مَنْ كَذَبَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

(106) हमसे अ़ली बिन जअ़दी ने बयान किया, उन्हें शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर ने, उन्होंने रबई बिन हिराश से सुना कि मैंने हज़रत अ़ली (रज़ि.) को यह फ़र्माते हुए सुना है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझ पर झूठ मत बोलो क्योंकि जो मुझ पर झूठ बांधे वो दोज़ख़ में दाख़िल हो।

M-09825696131

١٠٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَنْصُورٌ قَالَ: سَمِعْتُ رِبْعِيَّ بْنَ حِرَاشٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَلِيًّا يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تَكْذِبُوا عَلَيَّ، فَإِنَّهُ مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ فَلْيَلِجِ النَّارَ)).

यानी मुझ पर झूठ बाँधने वाले को चाहिए कि वो दोज़ख़ मे दाख़िल होने को तैयार रहे।

(107) हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे जामेअ़ बिन शद्दाद ने, वो आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से और वो अपने बाप अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं। उन्होंने कहा मैंने अपने बाप यानी ज़ुबैर (रज़ि.) से पूछा कि मैंने कभी आपसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की अहादीष़ नहीं सुनीं। मैंने आपको यह भी फ़र्माते हुए सुना है कि जो शख़्स मुझ पर झूठ बांधेगा वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ جَامِعِ بْنِ شَدَّادٍ عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قُلْتُ لِلزُّبَيْرِ: إِنِّي لَا أَسْمَعُكَ تُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ كَمَا يُحَدِّثُ فُلَانٌ وَفُلَانٌ. قَالَ: أَمَا إِنِّي لَمْ أُفَارِقْهُ، وَلَكِنْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

इसीलिये मैं हदीषे़ रसूल (ﷺ) बयान नहीं करता कि मुबादा कहीं ग़लतबयानी न हो जाए।

(108) हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वारिष़ ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के वास्ते से नक़्ल किया कि अनस (रज़ि.) फ़र्माते थे कि मुझे बहुत सी हदीषे़ं बयान करने से यह बात रोकती है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स मुझपर जान—बूझकर झूठ बांधे तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ: قَالَ أَنَسٌ: إِنَّهُ لَيَمْنَعُنِي أَنْ أُحَدِّثَكُمْ حَدِيثًا كَثِيرًا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ تَعَمَّدَ عَلَيَّ كَذِبًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

(109) हमसे मक्की इब्ने इब्राहीम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने सलमा बिन अल अक्वा (रज़ि.) के वास्ते से बयान किया, वो कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते हुए सुना कि जो शख़्स मेरे नाम से वो बात बयान करे जो मैंने नहीं कही तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٩- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ هُوَ ابْنُ الْأَكْوَعِ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ يَقُلْ عَلَيَّ مَا لَمْ أَقُلْ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

ये हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) की पहली ष़लाष़ी हदीष़ है। ष़लाष़ी वो हदीष़ हैं जिनमें रसूले करीम (ﷺ) और इमाम बुख़ारी (रह) तक दरम्यान में सिर्फ़ तीन ही रावी हों। ऐसी हदीष़ों को ष़लाष़ियाते इमाम बुख़ारी (रह) कहा जाता है। और जामेअ़

(106) हमसे अली बिन जअ़दी ने बयान किया, उन्हें शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर ने, उन्होंने रबई बिन ह़िराश से सुना कि मैंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को यह फ़र्माते हुए सुना है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझ पर झूठ मत बोलो क्योंकि जो मुझ पर झूठ बांधे वो दोज़ख़ में दाख़िल हो।

M-09825696131

١٠٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَنْصُورٌ قَالَ: سَمِعْتُ رِبْعِيَّ بْنَ حِرَاشٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَلِيًّا يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَكْذِبُوا عَلَيَّ، فَإِنَّهُ مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ فَلْيَلِجِ النَّارَ)).

यानी मुझ पर झूठ बाँधने वाले को चाहिए कि वो दोज़ख़ मे दाख़िल होने को तैयार रहे।

(107) हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे जामेअ़ बिन शद्दाद ने, वो आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से और वो अपने बाप अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं। उन्होंने कहा मैंने अपने बाप यानी ज़ुबैर (रज़ि.) से पूछा कि मैंने कभी आपसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की अह़ादीष़ नहीं सुनीं। मैंने आपको यह भी फ़र्माते हुए सुना है कि जो शख़्स मुझ पर झूठ बांधेगा वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ جَامِعِ بْنِ شَدَّادٍ عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قُلْتُ لِلزُّبَيْرِ: إِنِّي لاَ أَسْمَعُكَ تُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ كَمَا يُحَدِّثُ فُلاَنٌ وَفُلاَنٌ. قَالَ: أَمَا إِنِّي لَمْ أُفَارِقْهُ، وَلَكِنْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

इसीलिये मैं ह़दीष़े रसूल (ﷺ) बयान नहीं करता कि मुबादा कहीं ग़लतबयानी न हो जाए।

(108) हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वारिष़ ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के वास्ते से नक़ल किया कि अनस (रज़ि.) फ़र्माते थे कि मुझे बहुत सी ह़दीष़ें बयान करने से यह बात रोकती है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स मुझपर जान–बूझकर झूठ बांधे तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ: قَالَ أَنَسٌ: إِنَّهُ لَيَمْنَعُنِي أَنْ أُحَدِّثَكُمْ حَدِيثًا كَثِيرًا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ تَعَمَّدَ عَلَيَّ كَذِبًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

(109) हमसे मक्की इब्ने इब्राहीम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने सलमा बिन अल अक्वा (रज़ि.) के वास्ते से बयान किया, वो कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते हुए सुना कि जो शख़्स मेरे नाम से वो बात बयान करे जो मैंने नहीं कही तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٩- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ هُوَ بْنِ الأَكْوَعِ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ يَقُلْ عَلَيَّ مَا لَمْ أَقُلْ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

ये ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) की पहली ष़लाष़ी ह़दीष़ है। ष़लाष़ी वो ह़दीष़ हैं जिनमें रसूले करीम (ﷺ) और इमाम बुख़ारी (रह़) तक दरम्यान में सिर्फ़ तीन ही रावी हों। ऐसी ह़दीष़ों को ष़लाष़ियाते इमाम बुख़ारी (रह़) कहा जाता है। और जामेअ़

अस्सहीह में उनकी ता'दाद सिर्फ़ बाईस है। ये फ़ज़ीलत इमाम बुख़ारी (रह़) के दूसरे हम अ़स्र उ़लमा (समकालीन विद्वान) जैसे ह़ज़रत इमाम मुस्लिम वग़ैरह, को ह़ासिल नहीं हुई। स़ाह़िबे अन्वारुल बारी ने यहाँ ष़लाष़ियाते इमाम बुख़ारी (रह़) का ज़िक्र करते हुए ष़नाइयाते इमाम अबू ह़नीफ़ा के लिये मुस्नदे इमाम आज़म नामी किताब का ह़वाला देकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) पर ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा की बरतरी ष़ाबित करने की कोशिश की है मगर ये वाक़िया है कि फ़न्ने ह़दीष़ में ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा की लिखी हुई कोई किताब दुनिया में मौजूद नहीं है और मुस्नदे इमाम आ़ज़म नामी किताब मुह़म्मद ख़्वारिज़्मी की जमाकर्दा है जो 674 हिज्री में राइज हुई (बुस्तानुल मुह़द्दिष़ीन पेज नं. 5)

M-09825696131

(110) हमसे मूसा ने बयान किया, उनसे अबू अ़वाना ने अबी ह़ुसैन के वास्ते से नक़ल किया, वो अबू स़ालेह़ से रिवायत करते हैं, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से, वो रसूलुल्लाह (ﷺ) से कि (अपनी औलाद) का मेरे नाम के ऊपर नाम रखो। मगर मेरी कुन्नियत इख़्तियार न करो और जिस शख़्स ने मुझे ख़्वाब में देखा तो बिलाशुब्हा उसने मुझे देखा क्योंकि शैतान मेरी सूरत में नहीं आ सकता और जो शख़्स मुझ पर जान—बूझकर झूठ बोले वो जहन्नम में अपना ठिकाना तलाश करे।

(दीगर मक़ाम : 3539, 6188, 6197, 6993)

١١٠- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي حُصَيْنٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((تَسَمَّوا بِاسْمِي، وَلاَ تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي، وَمَنْ رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَقَدْ رَآنِي، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَتَمَثَّلُ فِي صُورَتِي. وَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

[أطرافه في : ٣٥٣٩، ٦١٨٨، ٦١٩٧، ٦٩٩٣].

तश्रीह : इन मुसलसल अह़ादीष़ का मक़्सद ये है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ लोग ग़लत़ बात मन्सूब करके दुनिया मे ख़ल्क़ (लोगों) को गुमराह न करें। ये ह़दीष़ें बजाते ख़ुद इस बात पर दलालत करती हैं कि आम त़ौर पर अह़ादीष़ नबवी (ﷺ) का ज़ख़ीरा मुफ़्सिद (फ़ासिद, उपद्रवी) लोगों के दस्तेबुर्द से मह़फ़ूज़ रहा है और जितनी अह़ादीष़ लोगों ने अपनी त़रफ़ से गढ़ लीं थीं उनको उ़लम—ए—ह़दीष़ ने स़ह़ीह़ अह़ादीष़ से अलग छांट दिया।

इसी त़रह़ आप (ﷺ) ने ये भी वाज़ेह़ फ़र्मा दिया कि ख़्वाब मे अगर कोई शख़्स मेरी सूरत देखे तो वो भी स़ह़ीह़ होनी चाहिए क्योंकि शैतान ख़्वाब मे भी रसूलुल्लाह (ﷺ) की सूरत में नहीं आ सकता।

मौज़ूअ और स़ह़ीह़ अह़ादीष़ को परखने के लिये अल्लाह पाक ने जमाअ़ते मुह़द्दिष़ीन ख़ुसूस़न इमाम बुख़ारी व मुस्लिम (रह़) जैसे अकाबिरे उम्मत को पैदा फ़र्माया। जिन्होंने इस फ़न की वो ख़िदमत की कि जिसकी पिछले दौर में नज़ीर नहीं मिल सकती, इल्मुर्रिजाल व क़वानीने जरह़ व तअ़दील ईजाद किये कि क़यामत तक उम्मते मुस्लिमा उन पर फ़ख़्र किया करेगी मगर स़द अफ़सोस! कि आज चौदहवीं स़दी में कुछ ऐसे भी मुतअ़स्सिब मुक़ल्लिदे जामिद वजूद में आ गये हैं जो ख़ुद उन बुज़ुर्गों को ग़ैर फ़क़ीह नाक़ाबिले ए'तिमाद ठहरा रहे हैं। ऐसे लोग मह़ज़ अपने मज़्ऊमा तक़्लीदी मज़ाहिब की ह़िमायत में ज़ख़ीर—ए—अह़ादीष़े नबवी (ﷺ) को मशकूक (संदिग्ध) बनाकर इस्लाम की जड़ों को खोखला करना चाहते हैं। अल्लाह उनको नेक समझ दे। आमीन!! ये ह़क़ीक़त है कि ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) को ग़ैर फ़क़ीह ज़ूदो-रंज बतलाने वाले ख़ुद बेसमझ हैं जो छोटा मुँह और बड़ी बात कहकर अपनी कम अ़क़्ली का मुज़ाहिरा (प्रदर्शन) करते हैं। उसकी मुक़ाम की तफ़्सील में जाते हुए स़ाह़िबे अनवारुल बारी ने जमाअ़ते अहले ह़दीष़ और अकाबिरे अहले ह़दीष़ को बार—बार लफ़्ज़ जमाअ़ते ग़ैर मुक़ल्लिदीन से जिस त़ंज़ व तौहीन के साथ याद किया है वो ह़द दर्जा क़ाबिले मज़म्मत है। मगर तक़्लीदे जामिद का अष़र ही ये है कि ऐसे मुतअ़स्सुब ह़ज़रात ने उम्मत में बहुत से अकाबिर की तौहीन व तख़्फ़ीफ़ की है। क़दीमुद्दयाम (प्राचीन काल) से ये सिलसिला जारी है। मुआनिदीन (निंदा करने वालों) ने तो स़ह़ाबा को भी नहीं छोड़ा। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि), उ़क़्बा बिन आ़मिर, अनस बिन मालिक (रज़ि) वग़ैरह रज़ियल्लाहु अन्हुम को ग़ैर फ़क़ीह ठहराया है।

बाब 40 : (दीनी) इल्म को क़लमबंद करने के जवाज़ में

M-09825696131

٤٠- باب كِتابة العِلم

(111) हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उन्हें वक़ीअ़ ने सुफ़यान से ख़बर दी, उन्होंने मुतर्रफ़ से सुना, उन्होंने शअ़बी (रह.) से, उन्होंने अबू जुहैफ़ा से, वो कहते हैं कि मैंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से पूछा कि क्या तुम्हारे पास कोई (और भी) किताब है? उन्होंने फ़र्माया कि नहीं, मगर अल्लाह की किताब क़ुर्आन है या फिर फ़हम है जो वो मुसलमानों को अ़ता करता है। या फिर जो कुछ इस स़हीफ़े में है। मैंने पूछा, इस स़हीफ़े में क्या है? उन्होंने कहा, दियत और क़ैदियों की रिहाई का बयान है और यह हुक्म है कि मुसलमान, काफ़िर के बदले में क़त्ल न किया जाए।

(दीगर मक़ाम : 1870, 3047, 4172, 3179, 6755, 6903, 6915, 7300)

١١١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مُطَرِّفٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ قَالَ: قُلْتُ لِعَلِيٍّ هَلْ عِنْدَكُمْ كِتَابٌ؟ قَالَ: لاَ إِلاَّ كِتَابُ اللهِ، أَوْ فَهْمٌ أُعْطِيَهُ رَجُلٌ مُسْلِمٌ، أَوْ مَا فِي هَذِهِ الصَّحِيْفَةِ، قَالَ قُلْتُ: وَمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيْفَةِ؟ قَالَ : الْعَقْلُ، وَفَكَاكُ الأَسِيْرِ، وَلاَ يُقْتَلُ مُسْلِمٌ بِكَافِرٍ.

[أطرافه في : ١٨٧٠، ٣٠٤٧، ٤١٧٢، ٣١٧٩، ٦٧٥٥، ٦٩٠٣، ٦٩١٥، ٧٣٠٠].

बहुत से शिया ये गुमान करते थे कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि) के पास कुछ ऐसे ख़ास़ अह़काम और पोशीदा बातें किसी स़हीफ़े में दर्ज हैं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके अ़लावा किसी और को नहीं बताए, इसलिये अबू जुहैफ़ा ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि) से ये सवाल किया और आपने स़ाफ़ लफ़्ज़ों में इस बातिल (झूठे) ख़्याल की तर्दीद फ़र्मा दी।

(112) हमसे अबू नुऐम अल फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, उनसे शैबान ने यह्या के वास्ते से नक़्ल किया, वो अबू सलमा से, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि क़बील–ए–ख़ुज़ाआ (के किसी शख़्स) ने बनू लैष़ के किसी आदमी को अपने किसी मक़्तूल के बदले में मार दिया था, यह फ़तहे मक्का वाले साल की बात है, रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह ख़बर दी गई, आपने अपनी ऊँटनी पर सवार होकर ख़ुत्बा पढ़ा और फ़र्माया कि अल्लाह ने मक्का से क़त्ल या हाथी को रोक लिया। इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते हैं इस लफ़्ज़ को शक के साथ समझो, ऐसे ही अबू नुऐम वग़ैरह ने अल क़त्ल और अल फ़ील कहा है। उनके अलावा दूसरे लोग अल फ़ील कहते हैं। (फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया) कि अल्लाह ने उन पर अपने रसूल और मुसलमानों को ग़ालिब कर दिया और समझ लो कि वो (मक्का) किसी के लिये हलाल नहीं हुआ। न मुझसे पहले और न (बाद में) कभी होगा और मेरे लिये भी स़िर्फ़ दिन के थोड़े ह़िस़्से के लिये ह़लाल कर दिया गया था।

١١٢- حدَّثنا أبو نُعَيمٍ الفَضْلُ بنُ دُكَينٍ قال: حدَّثنا شيبانُ عن يَحيى عن أبي سَلَمَةَ عن أبي هُرَيرةَ أنَّ خُزاعَةَ قتلوا رَجُلاً من بني لَيثٍ عامَ فتحِ مَكَّةَ بقتيلٍ منهم قَتَلوه، فأُخبِرَ بذلكَ النبيُّ ﷺ فركِبَ راحلَتَه فخطَبَ فقال : ((إنَّ اللهَ حَبَسَ عن مَكَّةَ القَتْلَ - أو الفِيلَ. قالَ مُحمَّدٌ وَجَعَلُوهُ عَلَى شَكٍّ أبوعبدِ الله - وسَلَّطَ عليهم رسولَ اللهِ ﷺ والمُؤمنِينَ. ألا وإنَّها لم تَحِلَّ لأحَدٍ قَبلي، ولا تَحِلُّ لأحَدٍ بَعدي. ألا وإنَّها حَلَّتْ لي ساعةً مِن نهار. ألا وإنَّها ساعتي هذه حرامٌ : لا يُختلى

شَوْكُها، ولا يُعْضَدُ شَجَرُها، ولا تُلْتَقَطُ ساقِطَتُها إلا لِـمُنْشِد. فَمَنْ قُتِلَ لَهُ قَتِيلٌ فَهوَ بِخَيرِ النَّظَرَيْنِ إمَّا أنْ يُعقَلَ، وإمَّا أنْ يُقادَ أهلُ القَتِيلِ)). فجاءَ رَجُلٌ من أهلِ اليَمَنِ فقال: اكْتُبْ لي يا رسولَ اللهِ. فقال: ((اكتبوا لأبي فلان)). فقال رجلٌ من قُرَيشٍ: إلاَّ الإذْخِرَ يا رسولَ اللهِ، فإنَّا نَجعَلُهُ في بيوتِنا وقبورِنا. فقال النبيُّ ﷺ: ((إلاَّ الإذْخِرَ)).

[طرفاه في : ٢٤٣٤، ٦٨٨٠]

सुन लो कि वो इस वक़्त हराम है। न इसका कोई कांटा तोड़ा जाए, न इसके पेड़ काटे जाएँ और इसकी गिरी–पड़ी चीज़ें भी वही उठाए जिसका मंशा यह हो कि वो उस शै का तआरुफ़ करा देगा। तो अगर कोई शख़्स मारा जाए तो (उसके अ़ज़ीज़ों को) इख़्तियार है दो बातों का, या तो दियत लें या बदला। इतने में एक यमनी आदमी (अबू शाह नामी) आया और कहने लगा (यह मसाइल) लिख दो तो एक क़ुरैशी शख़्स ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मगर इज़ख़र (यानी इज़ख़र काटने की इजाज़त दे दीजिए) क्योंकि उसे हम घरों की छतों पर डालते हैं। (या मिट्टी मिलाकर) और अपनी क़ब्रों में भी डालते हैं (यह सुनकर) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि (हाँ) मगर इज़ख़र, मगर इज़ख़र। (दीगर मक़ाम : 2434, 2880)

यानी उसके उखाड़ने की इजाज़त है। आँहज़रत (ﷺ) ने यमनी साइल की दरख़्वास्त पर ये सारे मसाइल उसके लिये क़लमबन्द करवा दिये। जिससे मा'लूम हुआ कि तदवीने अह़ादीष़ व किताबते अह़ादीष़ की बुनियाद ख़ुद ज़मान–ए–नबवी (ﷺ) से शुरू हो चुकी थी, जिसे ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के ज़माने में निहायत एहतिमाम के साथ तरक़्क़ी दी गई। पस जो लोग अह़ादीष़े नबवी (ﷺ) में ऐसे शुकूक व शुब्हात पैदा करते और ज़ख़ीर–ए–अह़ादीष़ को कुछ अ़ज्मियों की गढ़ी हुई बताते हैं, वो बिलकुल झूठे कज़्ज़ाब और मुफ़्तरी बल्कि दुश्मने इस्लाम हैं, उनकी ख़ुराफ़ात पर हर्गिज़ कान न धरना चाहिए। जिस सूरत में क़त्ल का लफ़्ज़ माना जाए तो मतलब ये होगा कि अल्लाह पाक ने मक्का वालों को क़त्ल से बचा लिया। बल्कि क़त्ल व ग़ारत को यहाँ ह़राम क़रार दे दिया। और लफ़्ज़ फ़ील की सूरत में उस क़िस्से की त़रफ़ इशारा है जो क़ुर्आन पाक की सूरह फ़ील मे मज़्कूर है कि आँह़ज़रत (ﷺ) के विलादत वाले साल में ह़ब्श का बादशाह अब्रहा नामी बहुत से हाथी लेकर ख़ाना कअ़बा को गिराने आया था मगर अल्लाह पाक ने रास्ते ही में उनको अबाबील परिन्दों की कंकरियों के ज़रिये हलाक कर डाला।

١١٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرٌو قَالَ: أَخْبَرَنِي وَهْبُ بْنُ مُنَبِّهٍ عَنْ أَخِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: مَا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ أَحَدٌ أَكْثَرَ حَدِيثًا عَنْهُ مِنِّي، إِلاَّ مَا كَانَ مِنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو فَإِنَّهُ كَانَ يَكْتُبُ وَلاَ أَكْتُبُ. تابَعَهُ مَعْمَرٌ عن هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ.

(113) हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे अ़म्र ने, वो कहते हैं कि मुझे वहब बिन मुनब्बा ने अपने भाई के वास्ते से ख़बर दी, वो कहते हैं कि मैंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को यह कहते हुए सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के स़ह़ाबा में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) के अ़लावा मुझसे ज़्यादा कोई ह़दीष़ बयान करने वाला न था, मगर वो लिख लिया करते थे और मैं लिखता नहीं था। दूसरी सनद से मअ़मर ने वहब बिन मुनब्बा की मुताबअ़त की, वो हमाम से रिवायत करते हैं, वो ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से।

इससे और ज़्यादा वज़ाह़त हो गई कि ज़मान–ए–नबवी (ﷺ) में अह़ादीष़ को भी लिखने का त़रीक़ा जारी हो चुका था। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि) ये समझे कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ने मुझसे ज़्यादा अह़ादीष़ रिवायत की होंगी, मगर बाद की तह़क़ीक़ से मा'लूम हुआ कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि) की मरवियात पाँच हज़ार से ज़ाइद अह़ादीष़ (5376 अह़ादीष़) हैं। जबकि अ़ब्दुल्लाह

ताईद मे जगह जगह ह़दीषुल्बाब अफ़्आल वला ह़रज को भी लाए हैं। (अनवारुल बारी जिल्द 4 पेज नं. 104)

मा'लूम होता है कि स़ाह़िबे अनवारुल बारी को ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) के दिल का पूरा ह़ाल मा'लूम है, इसीलिये तो वह उनके ज़मीर पर ये फ़त्वा लगा रहे हैं। इस्लाम की ता'लीम थी कि मुसलमान आपस में हुस्ने ज़न्न (अच्छे गुमान) से काम लिया करें, यहाँ ये सूए ज़न्न (बुरा गुमान) है। अस्तग़्फ़िरुल्लाह आगे स़ाह़िबे अनवारुल बारी मज़ीद वज़ाहत फ़र्माते हैं।

आज इसी क़िस्म के तशद्दुद से हमारे ग़ैर मुक़ल्लिद भाई और ह़रमैन शरीफ़ेन के नज्दी उ़लमा अइम्मा ह़नफ़िया के ख़िलाफ़ महाज़ (मोर्चा) बनाते हैं, ह़नफ़िया को चिढ़ाने के लिये इमाम बुख़ारी (रह़) की इकत़रफ़ा अह़ादीष पेश किया करते हैं। (ह़वाला मज़्कूर)

स़ाह़िबे अनवारुल बारी के इस इल्ज़ाम पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है क़ायदा है, **'अल मरउ यक़ीसु अ़ला नफ़्सिही'** (इंसान दूसरों को भी अपने नफ़्स पर क़यास किया करता है) चूँकि इस तशद्दुद और चिढ़ाने का मंज़र किताब अनवारुल बारी के बेशतर मक़ामात पर ज़ाहिर व बाहिर है। इसलिये वो दूसरों को भी इसी ऐनक से देखते हैं, ह़ालाँकि वाक़ियात बिलकुल उसके ख़िलाफ़ हैं। मुक़ामे स़द शुक्र है कि यहाँ आपने अपनी सबसे मअ़तूब जमाअ़त अहले ह़दीष को लफ़्ज़ ग़ैर मुक़ल्लिद भाई से तो याद फ़र्माया। अल्लाह करे कि ग़ैर मुक़ल्लिदो को ये भाई बनाना बिरादराने यूसुफ़ की नक़ल न हो और हमारा तो यक़ीन है कि ऐसा हर्गिज़ न होगा। अल्लाह पाक हम सबको नामूसे इस्लाम की ह़िफ़ाज़त के लिये आपसी इत्तिफ़ाक़ अ़ता फ़र्माए। सहवन ऐसे मौक़ा पर इतनी तक़्दीम व ताख़ीर मुआफ़ है। ह़दीष का यही मंशा है, ह़नफ़िया को चिढ़ाना ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) का मंशा नहीं है।

बाब 48 : अल्लाह तआ़ला के इस फ़र्मान की तशरीह़ में कि तुम्हें थोड़ा इल्म दिया गया है

٤٨- بَابُ قَولِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَمَا أُوتِيتُم مِنَ العِلمِ إِلَّا قَلِيلاً﴾

(125) हमसे क़ैस बिन ह़फ़्सी ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वाह़िद ने, उनसे अअ़मश सुलैमान बिन मुहरान ने इब्राहीम के वास्ते से बयान किया, उन्होंने अलक़मा से नक़्ल किया, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से रिवायत किया, वो कहते हैं कि (एक बार) में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मदीना के खंडहरात में चल रहा था और आप (ﷺ) खजूर की छड़ी पर सहारा देकर चल रहे थे, तो कुछ यहूदियों का (उधर से) गुज़र हुआ, उनमें से एक ने दूसरे से कहा कि आपसे रूह़ के बारे में कुछ पूछो, उनमें से किसी ने कहा मत पूछो, ऐसा न हो कि वो कोई ऐसी बात कह दे जो तुम्हें नागवार गुज़रे (मगर) उनमें से कुछ ने कहा कि हम ज़रूर पूछेंगे, फिर एक शख़्स ने खड़े होकर कहा, ऐ अबुल क़ासिम! रूह़ क्या चीज़ है? आप (ﷺ) ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़र्माई, मैंने (दिल में) कहा कि आप पर वह्य आ रही है। इसलिये मैं खड़ा हो गया। जब आपसे (वो कैफ़ियत) दूर हो गई तो आप ﷺ ने (क़ुर्आन की यह आयत जो उस वक़्त नाज़िल हुई थी) तिलावत फ़र्माई (ऐ नबी!) तुमसे ये लोग रूह़ के बारे में पूछ रहे हैं। कह दो

١٢٥- حَدَّثَنَا قَيسُ بنُ حَفصٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبدُ الوَاحِدِ قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعمَشُ سُلَيمَانُ بنُ مِهرَانَ عَن إِبرَاهِيمَ عَن عَلقَمَةَ عَن عَبدِ اللهِ قَالَ: بَينَا أَنَا أَمشِي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي خَرِبِ المَدِينَةِ - وَهُوَ يَتَوَكَّأُ عَلَى عَسِيبٍ مَعَهُ - فَمَرَّ بِنَفَرٍ مِنَ اليَهُودِ، فَقَالَ بَعضُهُم لِبَعضٍ : سَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ. وَقَالَ بَعضُهُم لاَ تَسأَلُوهُ، لاَ يَجِيءُ فِيهِ بِشَيءٍ تَكرَهُونَهُ. فَقَالَ بَعضُهُم لَنَسأَلَنَّهُ، فَقَامَ رَجُلٌ مِنهُم فَقَالَ: يَا أَبَا القَاسِمِ، مَا الرُّوحُ؟ فَسَكَتَ. فَقُلتُ إِنَّهُ يُوحَى إِلَيهِ، فَقُمتُ. فَلَمَّا انجَلَى عَنهُ فَقَالَ: ﴿وَيَسأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ، قُلِ الرُّوحُ

कि रूह़ मेरे रब के हुक्म से है। और तुम्हें इल्म का बहुत थ़ोड़ा हिस़्सा दिया गया है। (इसलिये तुम रूह़ की ह़क़ीक़त नहीं समझ सकते) अअ़मश कहते हैं कि हमारी क़िरात में वमा ऊतू है। वमा (ऊतीतुम) नहीं।

مِنْ أَمْرِ رَبِّي، وَمَا أُوتِيتُم مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً﴾) قَالَ الأَعْمَشُ: هَكَذَا فِي قِرَاءَتِنَا. وَمَا أُوتُوا.

(दीगर मक़ाम : 4721, 7297, 7456, 7662)

[أطرافه في : ٤٧٢١، ٧٢٩٧، ٧٤٥٦، ٧٤٦٢].

तश्रीह़ : चूँकि तौरात में भी रूह़ के बारे में यही बयान किया गया है कि वो अल्लाह की त़रफ़ से एक चीज़ है, इसलिये यहूदी मा'लूम करना चाहते थे कि उनकी ता'लीम भी तौरात के मुताबिक़ है या नहीं? या रूह़ के सिलसिले में ये भी मुलाहि़दे व फ़लसफ़े की त़रह़ दूर अज़ कार बातें कहते हैं। कुछ रिवायात से मा'लूम होता है कि ये सवाल आपसे मक्का शरीफ़ में भी किया गया था, फिर मदीना के यहूदी ने भी उसे दोहराया। अहले सुन्नत के नज़दीक रूह़ जिस्मे लत़ीफ़ है जो बदन में इसी त़रह़ सरायत किये हुए है, जिस त़रह़ गुलाब की ख़ुश्बू उसके फूल में समाई हुई होती है। रूह़ के बारे में सत्तर अक़्वाल हैं ह़ाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम (रह़) ने किताबुर् रूह़ में उन पर ख़ूब रोशनी डाली है। वाक़िया यही है कि रूह़ ख़ालिस़ एक लत़ीफ़ शै है, इसलिये हम अपनी मौजूदा ज़िंदगी में जो कष़ाफ़त से भरपूर है किसी त़रह़ रूह़ की ह़क़ीक़त से वाक़िफ़ नहीं हो सकते, अकाबिर अहले सुन्नत की यही राय है कि अदब का तक़ाज़ा यही है कि रूह़ के बारे में सुकूत इख़्तियार किया जाए, कुछ उ़लमा की राय है कि मिन अम्रि रब्बी से मुराद रूह़ का आ़लमे अम्र से होना है जो आ़लमे मल्कूत है, जम्हूर का इत्तिफ़ाक़ है कि रूह़ ह़ादिष़ है जिस त़रह़ दूसरे तमाम अजज़ा ह़ादिष़ हैं। ह़ज़रत इमाम क़द्दस सिर्रुहु का मंशा—ए—बाब ये है कि कोई शख़्स़ कितना ही बड़ा आ़लिम, फ़ाज़िल, मुह़द्दिष़, मुफ़स्सिर बन जाए मगर फिर भी इंसानी मा'लूमात का सिलसिला महदूद (सीमित) है और कोई शख़्स़ नहीं कह सकता कि वो जुम्ला उ़लूम (सारे ज्ञान) पर ह़ावी हो चुका है, इल्ला मन शाअल्लाह!

बाब 49 : इस बारे में कि कोई शख़्स कुछ ब ातों को इस ख़ौफ़ से छोड़ दे कि कहीं लोग अपनी कम फ़हमी की वजह से उससे ज़्यादा सख़्त (यानी नाजाइज़) बातों में मुब्तला न हो जाएँ

٤٩- بَابُ مَنْ تَرَكَ بَعْضَ الاِخْتِيَارِ مَخَافَةَ أَنْ يَقْصُرَ فَهْمُ بَعْضِ النَّاسِ عَنْهُ فَيَقَعُوا فِي أَشَدَّ مِنْهُ

(126) हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने इस्राईल के वास्ते से नक़ल किया, उन्होंने अबू इस्ह़ाक़ से अस्वद के वास्ते से बयान किया, वो कहते हैं कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) तुमसे बहुत बातें छुपाकर कहती थीं, तो क्या तुमसे क़ाबा के बारे में भी कुछ बयान किया, मैंने कहा (हाँ) मुझसे उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (एक बार) इर्शाद फ़र्माया था कि ऐ आ़इशा! अगर तेरी क़ौम (दौरे जाहिलियत के साथ) क़रीब न होती (बल्कि पुरानी हो गई होती) इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा यानी ज़मान—ए—कुफ़्र के साथ (क़रीब न होती) तो मैं क़ाबा को तोड़ देता और उसके लिये दो दरवाज़े बना देता। एक दरवाज़े से लोग दाख़िल होते और दूसरे दरवाज़े से बाहर

١٢٦- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَقَ عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ: قَالَ لِي ابْنُ الزُّبَيْرِ: كَانَتْ عَائِشَةُ تُسِرُّ إِلَيْكَ كَثِيرًا، فَمَا حَدَّثَتْكَ فِي الْكَعْبَةِ؟ قُلْتُ: قَالَتْ لِي: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا عَائِشَةُ لَوْ لاَ أَنَّ قَوْمَكِ حَدِيثٌ عَهْدُهُمْ - قَالَ ابْنُ الزُّبَيْرِ: بِكُفْرٍ - لَنَقَضْتُ الْكَعْبَةَ فَجَعَلْتُ لَهَا بَابَيْنِ: بَابٌ يَدْخُلُ النَّاسُ، وَبَابٌ يَخْرُجُونَ)) مِنْهُ

(142) हमसे आदम ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब के वास्ते से बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, वो कहते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) जब (क़ज़ा–ए–ह़ाजत के लिए) बैतुल ख़ला में दाख़िल होते तो ये (दुआ) पढ़ते। ऐ अल्लाह! मैं नापाक जिन्नों और नापाक जिन्नियों से तेरी पनाह चाहता हूँ। (दीगर मक़ाम : 6322)

M-09825696131

١٤٢ - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا يَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ الْخَلاَءَ قَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ)). [طرفه في : ٦٣٢٢].

इस ह़दीष़ में ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) का ये दुआ पढ़ना मज़्कूर है और मुस्लिम की एक रिवायत में लफ़्ज़े अम्र के साथ है कि जब तुम बैतुल ख़ला में दाख़िल हो तो ये दुआ पढ़ो। **बिस्मिल्लाहि अऊज़ू बिल्लाहि मिनल् ख़ुबुष़ि वल् ख़बाइष़ि** इन लफ़्ज़ों में पढ़ना भी जाइज़ है। ख़ुबुष़ और ख़बाइष़ से नापाक जिन्न और जिन्नियाँ मुराद हैं। ह़ज़रत इमाम ने फ़ारिग़ होने के बाद वाली दुआ की ह़दीष़ को इसलिए ज़िक्र नहीं किया कि वो आपकी शर्तों के मुवाफ़िक़ न थी। जिसे इब्ने ख़ुज़ैमा और इब्ने ह़िब्बान ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि) से रिवायत किया है कि आप फ़ारिग़ होने के बाद **ग़ुफ़रानक** पढ़ते और इब्ने माजा मे ये दुआ आई है, **अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्हब अन्निल्अज़ा व आफ़ानी** (सब ता'रीफ़ें उस अल्लाह के लिए है जिसने मुझको आफ़ियत दी और इस गंदगी को मुझसे दूर कर दिया) फ़ारिग़ होने के बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ये दुआ भी पढ़ा करते थे।

बाब 10 : इस बारे में कि बैतुल ख़ला के पास पानी रखना बेहतर है

١٠ - بَابُ وَضْعِ الْمَاءِ عِنْدَ الْخَلاَءِ

(143) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे हाशिम इब्ने अल क़ासिम ने, कहा कि उनसे वर्क़ा बिन शुक्री ने उ़बैदुल्लाह बिन अबी यज़ीद से नक़ल किया, वो इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि नबी करीम (ﷺ) पाख़ाना के लिये गए। मैंने आपके लिए वुज़ू का पानी रख दिया। (बाहर निकलकर) आपने पूछा ये किसने रखा? जब आपको बतलाया गया तो आपने (मेरे लिए दुआ की और) फ़र्माया, ऐ अल्लाह! इसको दीन की समझ अ़ता फ़र्मा। (राजेअ़ : 75)

١٤٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ قَالَ: حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي يَزِيْدَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ الْخَلاَءَ فَوَضَعْتُ لَهُ وَضُوءًا. قَالَ: ((مَنْ وَضَعَ هَذَا؟)) فَأُخْبِرَ، فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ فَقِّهْهُ فِي الدِّيْنِ)).

[راجع: ٧٥]

ये उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत मैमूना बिन्ते ह़ारिष़ ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि) की ख़ाला के घर का वाक़िया है। आपको ख़बर देने वाली भी ह़ज़रत मैमूना ही थीं। आपकी दुआ की बरकत से ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि) फ़क़ीहे उम्मत क़रार पाए।

बाब 11 : इस मसले में कि पैशाब और पाखाना के वक़्त क़िब्ले की तरफ़ मुँह नहीं करना चाहिये लेकिन जब किसी इमारत या दीवार वग़ैरह की आड़ हो तो कुछ हर्ज नहीं

١١ - بَابُ لاَ تُسْتَقْبَلُ الْقِبْلَةُ بِغَائِطٍ أَوْ بَوْلٍ، إِلاَّ عِنْدَ الْبِنَاءِ : جِدَارٍ أَوْ نَحْوِهِ

(144) हमसे आदम ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने ज़िब ने, कहा कि हमसे ज़ुहरी ने अ़ता बिन यज़ीद अल लैष़ी के वास्ते

١٤٤ - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ

बाब 11 : इस मसले में कि पेशाब और पाखाना के वक़्त क़िब्ले की तरफ़ मुँह नहीं करना चाहिये लेकिन जब किसी इमारत या दीवार वग़ैरह की आड़ हो तो कुछ हर्ज नहीं

١١- بَابُ لاَ تُسْتَقْبَلُ الْقِبْلَةُ بِغَائِطٍ أَوْ بَوْلٍ، إِلاَّ عِنْدَ الْبِنَاءِ : جِدَارٍ أَوْ نَحْوِهِ

(144) हमसे आदम ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने ज़िब ने, कहा कि हमसे ज़ुहरी ने अ़त्ता बिन यज़ीद अल लैषी के वास्ते

١٤٤- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ ءَ ،اءِ بْنِ

से नक़ल किया, वो ह़ज़रत अबू अय्यूब अंसारी से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुममें से कोई पाख़ाने में जाए तो क़िब्ले की तरफ़ मुँह करे न उसकी तरफ़ पीठ करे (बल्कि) मश्रिक़ की तरफ़ मुँह कर लो या मग़रिब की तरफ़।

(दीगर मक़ाम : 394)

يَزِيْدَ اللَّيْثِيِّ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أَتَى أَحَدُكُمُ الْغَائِطَ فَلاَ يَسْتَقْبِلِ الْ...ةَ وَلاَ يُوَلِّهَا ظَهْرَهُ، شَرِّقُوا أَوْ غَرِّبُوا)).

[طرفه في : ٣٩٤].

M-09825696131

तश्रीह : ये हुक्म मदीना वालों के लिए ख़ास़ है क्योंकि मदीना मक्का से शिमाल (उत्तर दिशा) की त़रफ़ वाक़ेअ है। इसलिए आपने क़ज़ा–ए–ह़ाजत के वक़्त पश्चिम या पूरब की त़रफ़ चेहरा करने का हुक्म दिया, ये बैतुल्लाह का अदब है। इमाम बुख़ारी (रह़) ने ह़दीष़ के उ़न्वान से ये ष़ाबित करना चाहा है कि अगर कोई आड़ सामने हो तो क़िब्ला की त़रफ़ चेहरा कर सकता है। आपने जो ह़दीष़ इस बाब में ज़िक्र की है वो बाब के तर्जुमा के मुत़ाबिक़ नहीं होती क्योकि ह़दीष़ से मुत़्लक़ मुमानअ़त निकलती है और बाब के तर्जुमा में इमारत को मुस्तष़्ना (अलग) किया है। कुछ ने कहा है कि आपने ये ह़दीष़ मह़ज़ मुमानअ़त ष़ाबित करने के लिए ज़िक्र की है और इमारत का इस्तिष़्ना आगे वाली ह़दीष़ से निकाला है जो इब्ने उ़मर से मरवी है। कुछ ने लफ़्ज़े ग़ायत़ से सिर्फ़ मैदान मुराद लिया है और इस मुमानअ़त से समझा गया कि इमारत में ऐसा करना दुरुस्त है।

ह़ज़रत अ़ल्लामा शैख़ुल ह़दीष़ मौलाना उ़बैदुल्लाह मुबारकपुरी ने इस बारे में दोनों तरफ़ की दलीलों पर मुफ़स्सल (विस्तारपूर्वक) रोशनी डालते हुए अपना आख़िरी फ़ैसला ये दिया है, **'व इन्दी अल इहतिराज़ु अनिल इस्तिक़्बालि वल इस्तिदबारि फ़िल बुयूति अहवतु वुजूबन ला नुदुबन'** यानी मेरे नज़दीक भी वजूबन एह़तियात़ का तक़ाज़ा है कि घरों में भी बैतुल्लाह की त़रफ़ पीठ या मुँह करने से परहेज़ किया जाए। (मिर्आत जिल्द अव्वल पेज नं. 241) अ़ल्लामा मुबारकपुरी (रह़) स़ाह़िबे **तोह़फ़तुल अह़वज़ी** ने भी ऐसा ही लिखा है।

से नक़ल किया, वो हज़रत अबू अय्यूब अंसारी से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुममें से कोई पाख़ाने में जाए तो क़िब्ले की तरफ़ मुँह करे न उसकी तरफ़ पीठ करे (बल्कि) मश्रिक़ की तरफ़ मुँह कर लो या मग़्रिब की तरफ़।

(दीगर मक़ाम : 394)

يَزِيْدَ اللَّيْثِيِّ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أَتَى أَحَدُكُمْ الْغَائِطَ فَلاَ يَسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةَ وَلاَ يُوَلِّهَا ظَهْرَهُ، شَرِّقُوا أَوْ غَرِّبُوا)).

M-09825696131

[طرفه في : ٣٩٤].

तश्रीह : ये हुक्म मदीना वालों के लिए ख़ास है क्योंकि मदीना मक्का से शिमाल (उत्तर दिशा) की तरफ़ वाक़ेअ है। इसलिए आपने क़ज़ा–ए–हाजत के वक़्त पश्चिम या पूरब की तरफ़ चेहरा करने का हुक्म दिया, ये बैतुल्लाह का अदब है। इमाम बुख़ारी (रह़) ने ह़दीष़ के उन्वान से ये षाबित करना चाहा है कि अगर कोई आड़ सामने हो तो क़िब्ला की तरफ़ चेहरा कर सकता है। आपने जो ह़दीष़ इस बाब में ज़िक्र की है वो बाब के तर्जुमा के मुताबिक़ नहीं होती क्योंकि ह़दीष़ से मुत्लक़ मुमानअत निकलती है और बाब के तर्जुमा में इमारत को मुस्तष्ना (अलग) किया है। कुछ ने कहा है कि आपने ये ह़दीष़ मह़ज़ मुमानअत षाबित करने के लिए ज़िक्र की है और इमारत का इस्तिष्ना आगे वाली ह़दीष़ से निकाला है जो इब्ने उमर से मरवी है। कुछ ने लफ़्ज़े ग़ायत से सिर्फ़ मैदान मुराद लिया है और इस मुमानअत से समझा गया कि इमारत में ऐसा करना दुरुस्त है।

ह़ज़रत अल्लामा शैख़ुल ह़दीष़ मौलाना उबैदुल्लाह मुबारकपुरी ने इस बारे में दोनों तरफ़ की दलीलों पर मुफ़स्सल (विस्तारपूर्वक) रोशनी डालते हुए अपना आख़िरी फ़ैसला ये दिया है, **'व इन्दी अल इहतिराज़ु अनिल इस्तिक़्बालि वल इस्तिदबारि फ़िल बुयूति अहवतु वुजूबन ला नुदुबन'** यानी मेरे नज़दीक भी वजूबन एह़तियात का तक़ाज़ा है कि घरों में भी बैतुल्लाह की तरफ़ पीठ या मुँह करने से परहेज़ किया जाए। (मिर्आत जिल्द अव्वल पेज नं. 241) अल्लामा मुबारकपुरी (रह़) साह़िबे **तोह़फ़तुल अह़वज़ी** ने भी ऐसा ही लिखा है।

बाब 12 : इस बारे में कि कोई शख़्स दो ईंटों पर बैठकर क़ज़ा-ए-हाजत करे (तो क्या हुक्म है?)

١٢- بَابُ مَنْ تَبَرَّزَ عَلَى لَبِنَتَيْنِ

(145) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक ने यह्या बिन सईद से ख़बर दी। वो मुहम्मद बिन यह्या बिन ह़िब्बान से, वो अपने चचा वासेअ बिन ह़िब्बान से रिवायत करते हैं, वो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं। वो कहते थे कि लोग कहते थे कि जब क़ज़ा-ए-ह़ाजत के लिए बैठो तो न क़िब्ले की तरफ़ मूँह करो न बैतुल मक़्दिस की तरफ़ (ये सुनकर) अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा कि एक दिन मैं अपने घर की छत पर चढ़ा तो आँह़ज़रत (ﷺ) को देखा आप बैतुल मक़्दिस की तरफ़ मुँह करके दो ईंटों पर क़ज़ा-ए-ह़ाजत के लिए बैठे हैं। फिर अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने (वासेअ से) कहा कि शायद तुम उन लोगों में से हो जो अपने कूल्हों के बल नमाज़ पढ़ते हैं। तब मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता (कि आपका क्या मतलब है?) इमाम मालिक

١٤٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ عَنْ عَمِّهِ وَاسِعِ بْنِ حَبَّانَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّهُ كَانَ يَقُوْلُ: إِنَّ نَاسًا يَقُوْلُوْنَ إِذَا قَعَدْتَ عَلَى حَاجَتِكَ فَلاَ تَسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةَ وَلاَ بَيْتَ الْمَقْدِسِ. فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ: لَقَدِ ارْتَقَيْتُ يَوْمًا عَلَى ظَهْرِ بَيْتٍ لَنَا، فَرَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ عَلَى لَبِنَتَيْنِ مُسْتَقْبِلاً بَيْتَ الْمَقْدِسِ لِحَاجَتِهِ. وَقَالَ: لَعَلَّكَ مِنَ الَّذِيْنَ يُصَلُّوْنَ عَلَى أَوْرَاكِهِمْ. فَقُلْتُ : لاَ أَدْرِيْ

मुनासिब होगा कि कुत्ते के लुआब के बारे में हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) के मसलक के बारे में हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अनवर शाह साहब देवबन्दी (रह़) का क़ौल भी नक़ल कर दिया जाए जो स़ाहिबे अनवारुल बारी की रिवायत से ये है

इमाम बुख़ारी (रह़) से ये बात मुस्तब्अ़द है कि वो लुआबे कल्ब (कुत्ते के थूक) की त़हारत के क़ाइल हों, जबकि इस बाब में क़त्इयात से नजासत का षुबूत हो चुका है। ज़्यादा से ज़्यादा ये कह सकते हैं कि इमाम बुख़ारी (रह़) ने दोनों त़रफ़ की अह़ादीष़ ज़िक्र कर दी हैं। नाज़िरीन ख़ुद ये फ़ैसला कर लें क्योंकि ये भी उनकी एक आ़दत है। जब वो किसी बाब में दोनों जानिब कुव्वत देखते हैं तो दोनों त़रफ़ की अह़ादीष़ ज़िक्र कर दिया करते हैं। जिससे ये इशारा होता है कि वो ख़ुद भी किसी एक जानिब का यक़ीन नहीं फ़र्माते वल्लाहु आलम। (अनवारुल बारी जिल्द नं. 5 पेज नं. 107) कल्बि मुअ़ल्लम की ह़दीष़ नीचे लाने से भी ज़ाहिर है कि ह़ज़रत इमाम उ़मूमी त़ौर पर लुआबे कल्ब की त़हारत के क़ाइल नहीं हैं।

कल्बि मुअ़ल्लम (सधाया हुआ कुत्ता) वो कुत्ता जिसमें इत़ाअ़त शिआ़री (वफ़ादारी) का माद्दा बहुत ज़्यादा हो और जब भी वो शिकार करे कभी उसमें से ख़ुद कुछ न खाए। (किरमानी)

M-09825696131

١٧٥- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ ابْنِ أَبِي السَّفَرِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَرْسَلْتَ كَلْبَكَ الْمُعَلَّمَ فَقَتَلَ فَكُلْ، وَإِذَا أَكَلَ فَلاَ تَأْكُلْ فَإِنَّمَا أَمْسَكَ عَلَى نَفْسِهِ)). قُلْتُ: أُرْسِلُ كَلْبِي فَأَجِدُ مَعَهُ كَلْبًا آخَرَ. قَالَ: ((فَلاَ تَأْكُلْ، فَإِنَّمَا سَمَّيْتَ عَلَى كَلْبِكَ وَلَمْ تُسَمِّ عَلَى كَلْبٍ آخَرَ)).

[أطرافه في: ٢٠٥٤، ٥٤٧٥، ٥٤٧٦، ٥٤٧٧، ٥٤٨٣، ٥٤٨٤، ٥٤٨٥، ٥٤٨٦، ٥٤٨٧، ٧٣٩٧].

(175) हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने इब्ने अबिस्सफ़र के वास्ते से बयान किया, वो शुअ़बी से नक़ल फ़र्माते हैं, वो अ़दी बिन ह़ातिम से रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से (कुत्ते के शिकार के बारे में) पूछा तो आपने फ़र्माया कि जब तू अपने सधाए हुए कुत्ते को छोड़ दे और वो शिकार कर ले तो तू उस (शिकार) को खा और अगर वो कुत्ता उस शिकार में से ख़ुद (कुछ) खा ले तो तू (उसको) न खाइयो क्योंकि अब उसने शिकार अपने लिए पकड़ा है। मैंने कहा कि कभी–कभी (शिकार के लिए) अपने कुत्ते छोड़ता हूँ, फिर उसके साथ दूसरे कुत्ते को भी पाता हूँ। आपने फ़र्माया, फिर मत खा क्योंकि तुमने बिस्मिल्लाह अपने कुत्ते पर पढ़ी थी। दूसरे कुत्ते पर नहीं पढ़ी।

(दीगर मक़ाम : 2054, 5475, 5476, 5477, 5483, 5484, 5485, 5486, 5487, 7397)

इस ह़दीष़ की अस़ल बह़ष़ किताबुस्सैद में आएगी, इंशाअल्लाहु तआ़ला! मा'लूम हुआ कि आ़म कुत्ते की नजासत के हुक्म से सधाए हुए कुत्तों के शिकार का इस्तिष्ना है, बशराइते मा'लूमा मज़्कूरा।

٣٥- بَابُ مَنْ لَمْ يَرَ الْوُضُوءَ إِلاَّ مِنَ الْمَخْرَجَيْنِ الْقُبُلِ وَالدُّبُرِ

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ﴾ وَقَالَ عَطَاءٌ فِيمَنْ يَخْرُجُ مِنْ دُبُرِهِ الدُّودُ أَوْ مِنْ ذَكَرِهِ نَحْوُ الْقَمْلَةِ: يُعِيدُ

बाब 35 : इस बारे में कि कुछ लोगों के नज़दीक स़िर्फ़ पेशाब और पाख़ाने की राह से कुछ निकलने से वुज़ू टूटता है

क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया है कि जब तुममें से कोई क़ज़ा-ए-हाजत से फ़ारिग़ होकर आए तो तुम पानी न पाओ तो तयम्मुम कर लो। अ़त़ा कहते हैं कि जिस शख़्स के पिछले हिस़्से

बाब 35 : इस बारे में कि कुछ लोगों के नज़दीक सिर्फ़ पेशाब और पाख़ाने की राह से कुछ निकलने से वुज़ू टूटता है

क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि जब तुममें से कोई क़ज़ा-ए-हाज़त से फ़ारिग़ होकर आए तो तुम पानी न पाओ तो तयम्मुम कर लो। अ़ता कहते हैं कि जिस शख़्स के पिछले हिस्से

٣٥- بَابُ مَنْ لَمْ يَرَ الْوُضُوءَ إِلاَّ مِنَ الْمَخْرَجَيْنِ الْقُبُلِ وَالدُّبُرِ

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ﴾ وَقَالَ عَطَاءٌ فِيمَنْ يَخْرُجُ مِنْ دُبُرِهِ الدُّودُ أَوْ مِنْ ذَكَرِهِ نَحْوُ الْقَمْلَةِ: يُعِيدُ

से (यानी दुबुर से) या अगले हिस्से से (यानी ज़कर या फ़रज से) कोई कीड़ा या जूँ की क़िस्म का कोई जानवर निकले उसे चाहिये कि वुज़ू लौटाए और जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि जब (आदमी) नमाज़ में हंस पड़े तो नमाज़ लौटाए और वुज़ू न लौटाए और ह़सन (बस़री) ने कहा कि जिस शख़्स ने (वुज़ू के बाद) अपने बाल उतरवाए या नाख़ून कटवाए या मोज़े उतार डाले उस पर वुज़ू नहीं है। ह़ज़रते अबू हुरैरह (रज़ि.) कहते हैं कि वुज़ू ह़दष़ के सिवा किसी और चीज़ से फ़र्ज़ नहीं है और ह़ज़रत जाबिर से नक़ल किया गया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़ातुर्रिक़ाअ की लड़ाई में (तशरीफ़ फ़र्मा) थे। एक शख़्स के तीर मारा गया और उस (के जिस्म) से बहुत ख़ून बहा मगर फिर भी उसने रुकूअ और सज्दा किया और नमाज़ पूरी कर ली और ह़सन बस़री ने कहा कि मुसलमान हमेशा अपने ज़ख़्मों के बावजूद नमाज़ पढ़ा करते थे और त़ाऊस, मुहम्मद बिन अ़ली और अहले हिजाज़ के नज़दीक ख़ून (निकलने) से वुज़ू (वाजिब) नहीं होता। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने (अपनी) एक फुंसी को दबा दिया तो उसमें से ख़ून निकला। मगर आपने (दोबारा) वुज़ू नहीं किया और इब्ने अबी औफ़ा ने ख़ून थूका। मगर वो अपनी नमाज़ पढ़ते रहे और इब्ने उ़मर और ह़सन (रज़ि.) पछने लगवाने वाले के बारे में ये कहते हैं कि जिस जगह पछने लगे हों उसको धो ले, दोबारा वुज़ू करने की ज़रूरत नहीं।

الْوُضُوءَ. وَقَالَ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ: إِذَا ضَحِكَ فِي الصَّلاَةِ أَعَادَ الصَّلاَةَ وَلَمْ يُعِدِ الْوُضُوءَ. وَقَالَ الْحَسَنُ: إِنْ أَخَذَ مِنْ شَعَرِهِ أَوْ أَظْفَارِهِ أَوْ خَلَعَ خُفَّيْهِ فَلاَ وُضُوءَ عَلَيْهِ. وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: لاَ وُضُوءَ إِلاَّ مِنْ حَدَثٍ. وَيُذْكَرُ عَنْ جَابِرٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ فِي غَزْوَةِ ذَاتِ الرِّقَاعِ فَرُمِيَ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فَنَزَفَهُ الدَّمُ فَرَكَعَ وَسَجَدَ وَمَضَى فِي صَلاَتِهِ. وَقَالَ الْحَسَنُ: مَا زَالَ الْمُسْلِمُونَ يُصَلُّونَ فِي جِرَاحَاتِهِمْ. وَقَالَ طَاوُسٌ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ وَعَطَاءٌ وَأَهْلُ الْحِجَازِ: لَيْسَ فِي الدَّمِ وُضُوءٌ. وَعَصَرَ ابْنُ عُمَرَ بَثْرَةً فَخَرَجَ مِنْهَا الدَّمُ وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. وَبَزَقَ ابْنُ أَبِي أَوْفَى دَمًا فَمَضَى فِي صَلاَتِهِ. وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ وَالْحَسَنُ فِيمَنْ يَحْتَجِمُ: لَيْسَ عَلَيْهِ إِلاَّ غَسْلُ

M-09825696131

से (यानी दुबुर से) या अगले हिस्से से (यानी ज़कर या फ़रज से) कोई कीड़ा या जूँ की क़िस्म का कोई जानवर निकले उसे चाहिये कि वुज़ू लौटाए और जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि जब (आदमी) नमाज़ में हंस पड़े तो नमाज़ लौटाए और वुज़ू न लौटाए और ह़सन (बस़री) ने कहा कि जिस शख़्स ने (वुज़ू के बाद) अपने बाल उतरवाए या नाख़ून कटवाए या मोज़े उतार डाले उस पर वुज़ू नहीं है। ह़ज़रते अबू हुरैरह (रज़ि.) कहते हैं कि वुज़ू ह़दष़ के सिवा किसी और चीज़ से फ़र्ज़ नहीं है और ह़ज़रत जाबिर से नक़ल किया गया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़ातुर्रिक़ाअ़ की लड़ाई में (तशरीफ़ फ़र्मा) थे। एक शख़्स के तीर मारा गया और उस (के जिस्म) से बहुत ख़ून बहा मगर फिर भी उसने रुकूअ़ और सज्दा किया और नमाज़ पूरी कर ली और ह़सन बस़री ने कहा कि मुसलमान हमेशा अपने ज़ख़्मों के बावजूद नमाज़ पढ़ा करते थे और त़ाऊस, मुह़म्मद बिन अ़ली और अहले हिजाज़ के नज़दीक ख़ून (निकलने) से वुज़ू (वाजिब) नहीं होता। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने (अपनी) एक फुंसी को दबा दिया तो उसमें से ख़ून निकला। मगर आपने (दोबारा) वुज़ू नहीं किया और इब्ने अबी औफ़ा ने ख़ून थूका। मगर वो अपनी नमाज़ पढ़ते रहे और इब्ने उ़मर और ह़सन (रज़ि.) पछने लगवाने वाले के बारे में ये कहते हैं कि जिस जगह पछने लगे हों उसको धो ले, दोबारा वुज़ू करने की ज़रूरत नहीं।

(176) हमसे आदम बिन अबी इयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद अल मक़्बरी ने बयान किया, वो ह़ज़रते अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत करते हैं, वो कहते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि बन्दा उस वक़्त तक नमाज़ ही में रहता है जब तक कि मस्जिद में नमाज़ का इंतिज़ार करता है। उस वक़्त तक कि वो ह़दष़ न करे। एक अ़ज्मी आदमी ने पूछा कि ऐ अबू हुरैरह (रज़ि.)! ह़दष़ क्या चीज़ है? उन्होंने फ़र्माया कि हवा जो पीछे से ख़ारिज हो। (जिसे उर्फ़े आ़म में गूज़ मारना कहते हैं)

(दीगर मक़ाम : 445, 477, 647, 648, 659, 2119, 3229, 4717)

الْوُضُوءَ. وَقَالَ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ: إِذَا ضَحِكَ فِي الصَّلاَةِ أَعَادَ الصَّلاَةَ وَلَمْ يُعِدِ الْوُضوءَ. وَقَالَ الْحَسَنُ: إِنْ أَخَذَ مِنْ شَعَرِهِ أَوْ أَظْفَارِهِ أَوْ خَلَعَ خُفَّيهِ فَلاَ وُضُوءَ عَلَيْهِ. وَقَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ : لاَ وُضُوءَ إِلاَّ مِنْ حَدَثٍ. وَيُذْكَرُ عَنْ جَابِرٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ فِي غَزْوَةِ ذَاتِ الرِّقَاعِ فَرُمِيَ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فَنَزَفَهُ الدَّمُ فَرَكَعَ وَسَجَدَ وَمَضَى فِي صَلاَتِهِ. وَقَالَ الْحَسَنُ: مَا زَالَ الْمُسْلِمُونَ يُصَلُّونَ فِي جِرَاحَاتِهِمْ. وَقَالَ طَاوُسٌ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ وَعَطَاءٌ وَأَهْلُ الْحِجَازِ : لَيْسَ فِي الدَّمِ وُضُوءٌ. وَعَصَرَ ابْنُ عُمَرَ بَثْرَةً فَخَرَجَ مِنْهَا الدَّمُ وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. وَبَزَقَ ابْنُ أَبِي أَوْفَى دَمًا فَمَضَى فِي صَلاَتِهِ. وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ وَالْحَسَنُ فِيمَنْ يَحْتَجِمُ : لَيْسَ عَلَيْهِ إِلاَّ غَسْلُ مَحَاجِمِهِ.

١٧٦- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ الْمَقْبرِيّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : ((لاَ يَزَالُ الْعَبْدُ فِي صَلاَةٍ مَا كَانَ فِي الْمَسْجِدِ يَنْتَظِرُ الصَّلاَةَ مَا لَمْ يُحْدِثْ)). فَقَالَ رَجُلٌ أَعْجَمِيٌّ: مَا الْحَدَثُ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ : الصَّوْتُ (يَعْنِي الضَّرْطَةَ).

[أطرافه في : ٤٤٥، ٤٧٧، ٦٤٧، ٦٤٨، ٦٥٩، ٢١١٩، ٣٢٢٩، ٤٧١٧].

M-09825696131

रफ़अ़े ह़ाजत के लिए तशरीफ़ ले गए (जब आप वापस आए, आप ﷺ ने वुज़ू शुरू किया) तो मुग़ीरह बिन शुअ़बा आपके (अअ़ज़ा–ए–वुज़ू) पर पानी डालने लगे। आप (ﷺ) वुज़ू कर रहे थे आपने अपने मुँह और हाथों को धोया, सर का मसह़ किया और मौज़ों पर मसह़ किया।

(दीगर मक़ाम : 203, 206, 363, 388, 2918, 4421, 5798, 5799)

عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي سَفَرٍ وَأَنَّهُ ذَهَبَ لِحَاجَةٍ لَهُ وَأَنَّ مُغِيرَةَ جَعَلَ يَصُبُّ الْمَاءَ عَلَيْهِ وَهُوَ يَتَوَضَّأُ، فَغَسَلَ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ وَمَسَحَ بِرَأْسِهِ وَمَسَحَ عَلَى الْخُفَّيْنِ.

[أطرافه في : ٢٠٣، ٢٠٦، ٣٦٣، ٣٨٨، ٢٩١٨، ٤٤٢١، ٥٧٩٨، ٥٧٩٩].

M-09825696131

बाब 37 : बेवुज़ू होने की ह़ालत में तिलावते क़ुर्आन करना वग़ैरह और जो जाइज़ हैं उनका बयान

٣٧- بَابُ قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ بَعْدَ الْحَدَثِ وَغَيْرِهِ

मंसूर ने इब्राहीम से नक़ल किया है कि ह़म्माम (ग़ुस्लख़ाना) में तिलावते क़ुर्आन में कुछ ह़र्ज नहीं, इसी त़रह़ बग़ैर वुज़ू ख़त़ लिखने में (भी) कुछ ह़र्ज नहीं और ह़म्माद ने इब्राहीम से नक़ल किया है कि अगर उस (ह़म्माम वाले आदमी के बदन) पर तह्बन्द हो तो उसको सलाम करो, और अगर (तह्बन्द) न हो तो सलाम मत करो।

وَقَالَ مَنْصُورٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ: لاَ بَأْسَ بِالْقِرَاءَةِ فِي الْحَمَّامِ، وَبِكَتْبِ الرِّسَالَةِ عَلَى غَيْرِ وُضُوءٍ. وَقَالَ حَمَّادٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ: إِنْ كَانَ عَلَيْهِمْ إِزَارٌ فَسَلِّمْ، وَإِلاَّ فَلاَ تُسَلِّمْ.

(183) हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने मख़रमा बिन सुलैमान के वास्ते से नक़ल किया, वो कुरैब—इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के आज़ादकर्दा ग़ुलाम—से नक़ल करते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि उन्होंने एक रात रसूले करीम (ﷺ) की ज़ौज–ए–मुत़ह्हरा और अपनी ख़ाला ह़ज़रते मैमूना (रज़ि.) के घर में गुज़ारी। (वो फ़र्माते हैं कि) मैं तकिया के अ़र्ज़ (यानी गोशे) की त़रफ़ लेट गया और रसूले करीम (ﷺ) और आपकी अहलिया ने (मा'मूल के मुत़ाबिक़) तकिये की लम्बाई पर (सर रखकर) आराम फ़र्माया। रसूलुल्लाह (ﷺ) सोते रहे और जब आधी रात हो गई या उससे कुछ पहले या उसके कुछ बाद आप बेदार हुए और अपने हाथों से अपनी नींद को दूर करने के लिए आँखें मलने लगे। फिर आपने सूरह आले इमरान की आख़िरी दस आयतें पढ़ीं, फिर एक मश्कीज़े के पास जो (छत में) लटका हुआ था आप खड़े हो गए

١٨٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ مَخْرَمَةَ بْنِ سُلَيْمَانَ عَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ بَاتَ لَيْلَةً عِنْدَ مَيْمُونَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ- وَهِيَ خَالَتُهُ - فَاضْطَجَعْتُ فِي عَرْضِ الْوِسَادَةِ، وَاضْطَجَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَهْلُهُ فِي طُولِهَا، فَنَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، حَتَّى إِذَا انْتَصَفَ اللَّيْلُ - أَوْ قَبْلَهُ بِقَلِيلٍ، أَوْ بَعْدَهُ بِقَلِيلٍ - اسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَجَلَسَ يَمْسَحُ النَّوْمَ عَنْ وَجْهِهِ بِيَدِهِ. ثُمَّ قَرَأَ الْعَشْرَ الآيَاتِ الْخَوَاتِيمَ مِنْ سُورَةِ آلِ عِمْرَانَ. ثُمَّ قَامَ إِلَى شَنٍّ مُعَلَّقَةٍ

बाब 39 : इस बारे में कि पूरे सर का मसह़ करना ज़रूरी है क्योंकि अल्लाह तआला का इर्शाद है कि अपने सरों का मसह़ करो

٣٩- بَابُ مَسْحِ الرَّأْسِ كُلِّهِ، لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَامْسَحُوا بِرُؤُوسِكُمْ﴾

और इब्ने मुसय्यब ने कहा है कि सर का मसह़ करने में औरत मर्द की तरह़ है। वो (भी) अपने सर का मसह़ करे। इमाम मालिक (रह.) से पूछा गया कि क्या कुछ ह़िस्सा सर का मसह़ करना काफ़ी है? तो उन्होंने दलील में अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद की (ये) ह़दीष़ पेश की, या'नी पूरे सर का मसह़ करना चाहिये

وَقَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ: الْمَرْأَةُ بِمَنْزِلَةِ الرَّجُلِ تَمْسَحُ عَلَى رَأْسِهَا. وَسُئِلَ مَالِكٌ: أَيُجْزِىءُ أَنْ يَمْسَحَ بَعْضَ الرَّأْسِ؟ فَاحْتَجَّ بِحَدِيْثِ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ.

(185) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने अ़म्र बिन यह्या अल माज़िनी से ख़बर दी, वो अपने बाप से नक़ल करते हैं कि एक आदमी ने अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) जो अ़म्र बिन यह्या के दादा हैं, से पूछा कि क्या आप मुझे दिखा सकते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किस त़रह वुज़ू किया है? अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कहा कि हाँ! फिर उन्होंने पानी का बर्तन मंगवाया पहले पानी अपने हाथों पर डाला और दो बार धोए। फिर तीन बार कुल्ली की, तीन बार नाक स़ाफ़ की, फिर तीन बार अपना चेहरा धोया। फिर कुहनियों तक अपने दोनों हाथ दो–दो बार धोये। फिर अपने दोनों हाथों से अपने सर का मसह़ किया। इस त़ौर पर अपने हाथ (पहले) आगे लाए फिर पीछे ले गए। (मसह़) सर के इब्तिदाई ह़िस्से से शुरू किया। फिर दोनों हाथ गुद्दी तक ले जाकर वहीं वापस लाए जहाँ से (मसह़) शुरू किया था, फिर अपने पैर धोए।

(दीगर मक़ाम : 186, 191, 196, 197, 199)

١٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى الْمَازِنِيِّ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّ رَجُلاً قَالَ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ - وَهُوَ جَدُّ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى - أَتَسْتَطِيْعُ أَنْ تُرِيَنِي كَيْفَ كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَتَوَضَّأُ؟ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ زَيْدٍ : نَعَمْ. فَدَعَا بِمَاءٍ فَأَفْرَغَ عَلَى يَدَيْهِ فَغَسَلَ مَرَّتَيْنِ، ثُمَّ مَضْمَضَ وَاسْتَنْثَرَ ثَلاَثًا، ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثَلاَثًا ثُمَّ غَسَلَ يَدَيْهِ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ إِلَى الْمِرْفَقَيْنِ، ثُمَّ مَسَحَ رَأْسَهُ بِيَدَيْهِ فَأَقْبَلَ بِهِمَا وَأَدْبَرَ : بَدَأَ بِمُقَدَّمِ رَأْسِهِ حَتَّى ذَهَبَ بِهِمَا إِلَى قَفَاهُ، ثُمَّ رَدَّهُمَا إِلَى الْمَكَانِ الَّذِيْ بَدَأَ مِنْهُ، ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَيْهِ.

[أطرافه في : ١٨٦، ١٩١، ١٩٢، ١٩٧، ١٩٩].

M-09825696131

तशरीह़ : इमाम बुख़ारी (रह़) और इमाम मालिक (रह़) का मसलक ये है कि पूरे सर का मसह़ करना ज़रूरी है क्योंकि अल्लाह पाक ने अपने इर्शाद **वम्सहू बिरुऊसिकुम** (अल माइदा : 6) में कोई ह़द मुक़र्रर नहीं की कि आधे या चौथाई सर का मसह़ करो। जैसे हाथों में कोहनियों तक और पैरों में टख़नों तक की क़ैद मौजूद है तो मा'लूम हुआ कि सारे सर का मसह़ फ़र्ज़ है जब सर पर अ़मामा न हो और अगर अ़मामा हो तो पेशानी से सर का मसह़ शुरू करके अ़मामा पर हाथ फेर लेना काफ़ी है। अ़मामा उतारना ज़रूरी नहीं । ह़दीष़ की रू से यही मसलक स़ही़ह है।

बाब 40 : इस बारे में कि टख़नों तक पांव धोना ज़रूरी है

٤٠- بَابُ غَسْلِ الرِّجْلَيْنِ إِلَى الْكَعْبَيْنِ

(186) हमसे मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वहब

١٨٦- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ

बाब 60 : बच्चों के पेशाब के बारे में

M-09825696131

٦٠- بَابُ بَوْلِ الصِّبْيَانِ

(222) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मालिक ने हिशाम बिन उ़र्वा से ख़बर दी, उन्होंने अपने बाप (उ़र्वा) से, उन्होंने ह़ज़रते आइशा उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) के पास एक बच्चा लाया गया। उसने आपके कपड़े पर पेशाब कर दिया तो आप (ﷺ) ने पानी मंगाया और उस पर डाल दिया।

(दीगर मक़ाम : 5468, 6002, 6355)

٢٢٢- حِدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ أَنَّهَا قَالَتْ: أُتِيَ رَسُولَ اللهِ ﷺ بِصَبِيٍّ فَبَالَ عَلَى ثَوْبِهِ، فَدَعَا بِمَاءٍ فَأَتْبَعَهُ إِيَّاهُ.

[أطرافه في : ٥٤٦٨، ٦٠٠٢، ٦٣٥٥].

(223) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमें मालिक ने इब्ने शिहाब से ख़बर दी, वो उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा (बिन मसऊ़द) से ये ह़दीष़ रिवायत करते हैं, वो उम्मे क़ैस बिन्ते मिह़सन नामी एक ख़ातून से कि वो रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में अपना छोटा बच्चा लेकर आईं जो खाना नहीं खाता था (यानी शीरख़्वार था) रसूले करीम (ﷺ) ने उसे अपनी गोद में बिठा लिया। उस बच्चे ने आप (ﷺ) के कपड़े पर पेशाब कर दिया। आप (ﷺ) ने पानी मंगाकर कपड़े पर छिड़क दिया और उसे नहीं धोया। (दीगर मक़ाम : 5693)

٢٢٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ أُمِّ قَيْسٍ بِنْتِ مِحْصَنٍ أَنَّهَا أَتَتْ بَابْنٍ لَهَا صَغِيْرٍ لَمْ يَأْكُلِ الطَّعَامَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَجْلَسَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي حِجْرِهِ، فَبَالَ عَلَى ثَوبِهِ، فَدَعَا بِمَاءٍ فَنَضَحَهُ وَلَمْ يَغْسِلْهُ.

[طرفه في : ٥٦٩٣].

शीरख़्वार (दूधपीता) बच्चा जिसने कुछ भी खाना पीना नहीं सीखा है, उसके पेशाब पर पानी के छींटे काफ़ी हैं। मगर ये हुक्म सिर्फ़ मर्द बच्चों के लिए है बच्चियो का पेशाब बहरहाल धोना ही होगा।

बाब 61 : इस बयान में कि खड़े होकर और बैठकर पेशाब करना (ह़स्बे मौक़े दोनों त़रह़ से जाइज़ है)

٦١- بَابُ الْبَوْلِ قَائِمًا وَقَاعِدًا

(224) हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने अअ़मश के वास्ते से नक़ल किया, वो अबू वाइल से, वो ह़ुज़ेफ़ा (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि नबी करीम (ﷺ) किसी क़ौम की कूड़ी पर तशरीफ़ लाए (पस) आप (ﷺ) ने वहाँ खड़े होकर पेशाब किया। फिर पानी मंगाया, मैं आप (ﷺ) के पास पानी लेकर आया तो आप (ﷺ) ने वुज़ू किया। (दीगर मक़ाम : 225, 226, 2471)

٢٢٤- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ حُذَيفَةَ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ ﷺ سُبَاطَةَ قَوْمٍ فَبَالَ قَائِمًا، ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ، فَجِئْتُهُ بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ.

[أطرافه في : ٢٢٥، ٢٢٦، ٢٤٧١].

मा'लूम हुआ कि किसी ज़रूरत के तह़त खड़े होकर भी पेशाब किया जा सकता है। और जब ज़रूरतन खड़े होकर पेशाब करना जाइज़ हुआ तो बैठकर तो यक़ीनन जाइज़ होगा मगर आजकल कोट पतलून वालों ने खड़े होकर करना अंग्रेज़ों से सीखा है एक मर्द मुसलमान के लिए ये सरासर नाजाइज़ और इस्लामी तहज़ीब के ख़िलाफ़ है क्योंकि उसमें न तो पर्दे का लिहाज़ रखा जाता है और न छींटों से परहेज़ किया जाता है।

अबू अवाना ने अपनी सहीह में निकाला है। अबू अवाना की रिवायत के लिये हदीष नं. 260 मुलाहज़ा की जा सकती है।

बाब 22 : इस बयान में कि जब औरत को एहतलाम हो तो उस पर भी ग़ुस्ल वाजिब है

٢٢- بَابٌ إِذَا احْتَلَمَتِ الْمَرْأَةُ

M-09825696131

(282) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उन्होंने हिशाम बिन उ़र्वा के वास्ते से, उन्होंने अपने वालिद उ़र्वा बिन ज़ुबैर से, वो ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा से, उन्होंने उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) से, आपने फ़र्माया कि उम्मे सुलैम अबू तलहा (रज़ि.) की औरत रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और कहा कि अल्लाह तआला हक़ से हया नहीं करता। क्या औरत पर भी जबकि उसे एहतलाम हो ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है। तो रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ अगर (अपनी मनी का) पानी देखे (तो उसे भी ग़ुस्ल करना होगा)

(राजेअ : 130)

٢٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ أَنَّهَا قَالَتْ: جَاءَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ امْرَأَةُ أَبِي طَلْحَةَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُوْلَ اللهِ إِنَّ اللهَ لاَ يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ، هَلْ عَلَى الْمَرْأَةِ مِنْ غُسْلٍ إِذَا هِيَ احْتَلَمَتْ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((نَعَمْ، إِذَا رَأَتِ الْمَاءَ)). [راجع: ١٣٠]

इस हदीष से मा'लूम हुआ कि औरत को भी एहतलाम होता है। इसके लिये भी मर्द का सा हुक्म है कि जागने पर मनी की तरी अगर कपड़े या जिस्म पर देखे तो ज़रूर ग़ुस्ल कर लें तरी न पाए तो ग़ुस्ल वाजिब नहीं।

बाब 23 : इस बयान में कि जुनुबी का पसीना और मुसलमान नापाक नहीं होता

٢٣- باب عَرَق الْجُنُبِ، وَأَنَّ الْمسْلِمَ لاَ يَنْجُسُ

(283) हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, कहा हमसे हुमैद तवील ने, कहा हमसे बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह ने अबू राफ़ेअ के वास्ते से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि मदीना के किसी रास्ते पर नबी करीम (ﷺ) से उनकी मुलाक़ात हुई। उस समय अबू हुरैरह जनाबत की हालत में थे। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मैं पीछे रह कर लौट गया और ग़ुस्ल करके वापस आया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा कि ऐ अबू हुरैरह! कहाँ चले गए थे? उन्होंने जवाब दिया कि मैं जनाबत की हालत में था इसलिये मैंने आपके साथ बग़ैर ग़ुस्ल के बैठना बुरा समझा। आप (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, सुब्हानल्लाह! मोमिन हर्गिज़ नजिस नहीं हो सकता।

(दीगर मक़ाम : 285)

٢٨٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا بَكْرٌ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَقِيَهُ فِي بَعْضِ طَرِيْقِ الْمَدِيْنَةِ وَهُوَ جُنُبٌ، فَانْخَنَسْتُ مِنْهُ، فَذَهَبْتُ فَاغْتَسَلَ ثُمَّ جَاءَ، فَقَالَ: أَيْنَ كُنْتَ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ: كُنْتُ جُنُبًا فَكَرِهْتُ أَنْ أُجَالِسَكَ وَأَنَا عَلَى غَيْرِ طَهَارَةٍ. فَقَالَ: ((سُبْحَانَ اللهِ، إِنَّ الْمُؤْمِنَ لاَ يَنْجُسُ)).

[أطرافه في : ٢٨٥].

यानी ऐसा नजिस नहीं होता कि उसके साथ बैठा भी न जा सके। उसकी नजासत आरज़ी (अस्थाई) है जो ग़ुस्ल से ख़त्म हो जाती है, इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष़ से ये निकाला कि जुनुबी का पसीना भी पाक है क्योंकि जब बदन पाक है तो बदन से निकलने वाला पसीना भी पाक ही होगा।

M-09825696131

बाब 24 : इस तफ़्सील में कि जुनुबी घर से बाहर निकल सकता है

٢٤- بَابُ الْجُنُبِ يَخْرُجُ وَيَمْشِي فِي السُّوقِ وَغَيْرِهِ

और अ़ता ने कहा कि जुनुबी पछना लगवा सकता है, नाख़ून तरशवा सकता है और सर मुँडवा सकता है अगरचे वुज़ू भी न किया हो।

وَقَالَ عَطَاءٌ: يَحْتَجِمُ الْجُنُبُ وَيُقَلِّمُ أَظْفَارَهُ وَيَحْلِقُ رَأْسَهُ وَإِنْ لَمْ يَتَوَضَّأْ.

(284) हमसे अ़ब्दुल आ़ला बिन हम्माद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन अबी अ़रूबा ने बयान किया, उन्होंने क़तादा से, कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने उनसे बयान किया कि नबी (ﷺ) अपनी तमाम बीवियों के पास एक ही रात में तशरीफ़ ले गए। उस समय आपकी बीवियों में नौ बीवियाँ थीं। (राजेअ़ : 268)

٢٨٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ حَدَّثَهُمْ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ كَانَ يَطُوفُ عَلَى نِسَائِهِ فِي اللَّيْلَةِ الْوَاحِدَةِ، وَلَهُ يَوْمَئِذٍ تِسْعُ نِسْوَةٍ. [راجع: ٢٦٨]

इससे जुनुबी का घर से बाहर निकलना यूँ ष़ाबित हुआ कि आप (ﷺ) एक बीवी से सोहबत करके घर से बाहर दूसरी बीवी के घर तशरीफ़ ले जाते।

(285) हमसे अ़याश ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल आ़ला ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुमैद ने बक्र के वास्ते से बयान किया, उन्होंने अबू राफ़ेअ़ से, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से, कहा कि मेरी मुलाक़ात रसूलुल्लाह (ﷺ) से हुई। उस समय मैं जुनुबी था। आपने मेरा हाथ पकड़ लिया और मैं आपके साथ चलने लगा। आखिर आप (ﷺ) एक जगह बैठ गए और मैं धीरे से अपने घर आया और ग़ुस्ल करके हाज़िरे ख़िदमत हुआ। आप अभी बैठे हुए थे, आपने पूछा ऐ अबू हुरैरह! कहाँ चले गए थे, मैंने वाक़िआ बयान किया तो आपने फ़र्माया सुब्हानल्लाह! मोमिन तो नजिस नहीं होता। (राजेअ़ : 283)

٢٨٥- حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ عَنْ بَكْرٍ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: لَقِيَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَنَا جُنُبٌ، فَأَخَذَ بِيَدِي فَمَشَيْتُ مَعَهُ حَتَّى قَعَدَ، فَانْسَلَلْتُ فَأَتَيْتُ الرَّحْلَ فَاغْتَسَلْتُ، ثُمَّ جِئْتُ وَهُوَ قَاعِدٌ فَقَالَ: ((أَيْنَ كُنْتَ)) فَقُلْتُ لَهُ، فَقَالَ: ((سُبْحَانَ اللهِ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ، إِنَّ الْمُؤْمِنَ لاَ يَنْجُسُ)). [راجع: ٢٨٣]

इस हदीष़ की और बाब की मुताबक़त भी ज़ाहिर है कि अबू हुरैरह (रज़ि.) हालते जनाबत में राह चलते हुए आँहज़रत (ﷺ) से मिले।

बाब 25 : ग़ुस्ल से पहले जुनुबी का घर में ठहरना जबकि वुज़ू कर ले (जाइज़ है)

٢٥- بَابُ كَيْنُونَةِ الْجُنُبِ فِي الْبَيْتِ إِذَا تَوَضَّأَ

(286) हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम और

٢٨٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ

وَشَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ أَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَرْقُدُ وَهُوَ جُنُبٌ؟ قَالَتْ : نَعَمْ. وَيَتَوَضَّأُ.

[طرفه في : ٢٨٨].

शैबान ने, वो यह्या से, वो अबू सलमा से, कहा मैंने आइशा (रज़ि.) से पूछा कि क्या नबी करीम (ﷺ) जनाबत की हालत में घर में सोते थे? कहा हाँ! लेकिन वुज़ू कर लेते थे।

(दीगर मक़ाम : 288)

M-09825696131

तश्रीह : एक हदीष़ में है कि जिस घर में कुत्ता या तस्वीर या जुनुबी हो तो वहाँ फ़रिश्ते नहीं आते। इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब लाकर बतलाया कि वहाँ जुनुबी से वो मुराद है जो वुज़ू भी न करे और जनाबत की हालत में बेपरवाह बनकर यूँ ही घर में पड़ा रहे।

٢٦- بَابُ نَوْمِ الْجُنُبِ

बाब 26 : इस बारे में कि बग़ैर ग़ुस्ल किये जुनुबी का सोना जाइज़ है

٢٨٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ: أَيَرْقُدُ أَحَدُنَا وَهُوَ جُنُبٌ؟ قَالَ: ((نَعَمْ، إِذَا تَوَضَّأَ أَحَدُكُمْ فَلْيَرْقُدْ وَهُوَ جُنُبٌ)).

[طرفاه في : ٢٨٩، ٢٩٠].

(287) हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने नाफ़ेअ से, वो इब्ने उमर (रज़ि.) से कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि क्या हममें से कोई जनाबत की हालत में सो सकता है? फ़र्माया हाँ! वुज़ू करके जनाबत की हालत में भी सो सकते हो।

(दीगर मक़ाम : 289, 290)

٢٧- بَابُ الْجُنُبِ يَتَوَضَّأُ ثُمَّ يَنَامُ

बाब 27 : इस बारे में कि जुनुबी पहले वुज़ू कर ले फिर सोए

٢٨٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَنَامَ وَهُوَ جُنُبٌ غَسَلَ فَرْجَهُ وَتَوَضَّأَ لِلصَّلاَةِ. [راجع: ٢٨٦]

(288) हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उन्होंने उबैदुल्लाह बिन अबी अल् जअद के वास्ते से, उन्होंने मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान से, उन्होंने उर्वा से, वो हज़रत आइशा (रज़ि.) से, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) जब जनाबत की हालत में होते और सोने का इरादा करते तो शर्मगाह को धो लेते और नमाज़ की तरह वुज़ू करते।

(राजेअ : 286)

٢٨٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ : حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: اسْتَفْتَى عُمَرُ النَّبِيَّ ﷺ: أَيَنَامُ أَحَدُنَا وَهُوَ جُنُبٌ؟ قَالَ : ((نَعَمْ، إِذَا تَوَضَّأَ)).

(289) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने नाफ़ेअ से, वो अब्दुल्लाह बिन उमर से, कहा उमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि क्या हम जनाबत की हालत में सो सकते हैं? आपने फ़र्माया, हाँ! लेकिन वुज़ू करके।

٢٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّهُ قَالَ: ذَكَرَ عُمَرُ بْنُ

(290) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन दीनार से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से, उन्होंने कहा हज़रत उमर

الْخَطَّابِ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ تُصِيبُهُ الْجَنَابَةُ مِنَ اللَّيْلِ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تَوَضَّأْ وَاغْسِلْ ذَكَرَكَ ثُمَّ نَمْ)).

[راجع: ٢٨٧]

(रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा कि रात में उन्हें ग़ुस्ल की ज़रूरत हो जाया करती है तो रसूलुल्लाह (ﷺ)) ने फ़र्माया कि वुज़ू कर लिया कर और शर्मगाह को धोकर सो जाओ।

(राजेअ़ : 287)

M-09825696131

तश्रीह़ : इन सारी अह़ादीष़ का यही मक़्सद है कि जुनुबी वुज़ू करके घर में सो सकता है। फिर नमाज़ के वास्ते ग़ुस्ल कर ले क्योंकि ग़ुस्ले जनाबत किये बग़ैर नमाज़ दुरुस्त नहीं होगी। मरीज़ के लिये रुख़्सत है जैसा कि मा'लूम हो चुका है।

٢٨- بَابُ إِذَا الْتَقَى الْخِتَانَانِ

बाब 28 : इस बारे में कि जब दोनों ख़ितान एक–दूसरे से मिल जाएँ तो ग़ुस्ले जनाबत वाजिब है,

حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فُضَالَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ ح.

हमसे मुआज़ बिन फ़ुज़ाला ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया

٢٩١- وَ حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا جَلَسَ بَيْنَ شُعَبِهَا الْأَرْبَعِ ثُمَّ جَهَدَهَا فَقَدْ وَجَبَ الْغُسْلُ)). تَابَعَهُ عَمْرٌو عَنْ شُعْبَةَ، وَقَالَ مُوسَى: حَدَّثَنَا أَبَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ أَخْبَرَنَا الْحَسَنُ مِثْلَهُ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ هَذَا أَجْوَدُ وَ أَوْكَدُ وَ إِنَّمَا بَيَّنَّا الْحَدِيثَ لِاخْتِلَافِهِمْ وَالْغُسْلُ أَحْوَطُ.

(291) (दूसरी सनद से) इमाम बुख़ारी ने फ़र्माया कि हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, वो हिशाम से, वो क़तादा से, वो इमाम ह़सन बस़री से, वो अबू राफ़ेअ से, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब मर्द–औरत के चहार ज़ानू में बैठ गया और उसके साथ जिमाअ के लिये कोशिश की तो ग़ुस्ल वाजिब हो गया, इस ह़दीष़ की मुताबअ़त अ़म्र ने शुअ़बा के वास्ते से की है। और मूसा ने कहा कि हमसे अबान ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, कहा हमसे ह़सन बस़री ने बयान किया, इसी ह़दीष़ की तरह़। अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी) ने कहा ये ह़दीष़ इस बाब की तमाम अहादीष़ में उ़म्दा और बेहतर है और हमने दूसरी ह़दीष़ उ़ष़्मान और इब्ने अबी कअ़ब की) स़हाबा के इख़्तिलाफ़ के पेशेनज़र बयान की और ग़ुस्ल करना ज़्यादा बेहतर है।

तश्रीह़ : 'क़ालन्नववी मअनल ह़दीषि अन्न ईजाबल ग़ुस्लि ला यतवक्क़फ़ु अ़ लल इन्ज़ालि बल मता ग़ाबतिल हश्फ़तु फ़िल फ़र्जि वजबल ग़ुस्लु अलयहिमा व ला ख़िलाफ़ फ़ीहिल यौम।' इमाम नववी (रह.) कहते हैं कि ह़दीष़ का मा'नी ये है कि ग़ुस्ल इन्ज़ाले मनी पर मौक़ूफ़ (आधारित) नहीं है बल्कि जब भी दुख़ूल हो गया दोनों पर ग़ुस्ल वाजिब हो चुका और अब इस बारे में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है।

ये तरीक़ा मुनासिब नहीं :— फ़िक़्ही मसालिक में कोई मसलक अगर किसी जुज़्ई में किसी ह़दीष़ से मुत़ाबिक़ हो जाए तो क़ाबिले क़ुबूल है। क्योंकि अस़ल मामूल बिही क़ुर्आन व ह़दीष़ है। इसीलिये ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) ने फ़र्मा दिया है कि **इज़ा स़ह़्ह़ल ह़दीषु फ़हुव मज़हबी**। जो भी स़ह़ीह़ ह़दीष़ से ष़ाबित हो वही मेरा मज़हब है। यहाँ तक दुरुस्त और क़ाबिले तह़सीन है। मगर देखा ये जा रहा है कि मुक़ल्लिदीन अपने मज़हब को किसी ह़दीष़ के मुत़ाबिक़ पाते हैं तो अपने मसलक को

(296) हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा इब्ने जुरैज ने उन्हें ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझे हिशाम बिन ड़र्वा ने ड़र्वा के वास्ते से बताया कि उनसे सवाल किया गया, क्या हाइज़ा बीवी मेरी ख़िदमत कर सकती है? ड़र्वा ने फ़र्माया मेरे नज़दीक तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। इस तरह की औरतें मेरी भी ख़िदमत करती हैं और इसमें किसी के लिये भी कोई हर्ज नहीं। इसलिये कि मुझे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) को हाइज़ा होने की हालत में कंघी किया करती थीं और रसूलुल्लाह (ﷺ) उस समय मस्जिद में मुअतकिफ़ होते। आप अपना सरे मुबारक क़रीब कर देते और हज़रत आइशा (रज़ि.) अपने हुज्रे ही से कंघा कर देतीं, हालाँकि वो हाइज़ा होतीं।

(राजेअ : 295)

M-09825696131

٢٩٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ: أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ عُرْوَةَ أَنَّهُ سُئِلَ: أَتَخْدُمُنِي الْحَائِضُ أَوْ تَدْنُو مِنِّي الْمَرْأَةُ وَهِيَ جُنُبٌ؟ فَقَالَ عُرْوَةُ: كُلُّ ذَلِكَ عَلَيَّ هَيِّنٌ، وَكُلُّ ذَلِكَ تَخْدُمُنِي وَلَيْسَ عَلَى أَحَدٍ فِي ذَلِكَ بَأْسٌ، أَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ أَنَّهَا كَانَتْ تُرَجِّلُ - رَأْسَ رَسُولِ اللهِ ﷺ- وَهِيَ حَائِضٌ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَئِذٍ يُجَاوِرُ فِي الْمَسْجِدِ، يُدْنِي لَهَا رَأْسَهُ وَهِيَ فِي حُجْرَتِهَا فَتُرَجِّلُهُ وَهِيَ حَائِضٌ. [راجع: ٢٩٥]

बाब की हदीष़ से मुताबक़त जाहिर है– अदयाने साबिक़ा (अन्य पुराने धर्मों) में औरत को अय्यामे हैज़ में बिल्कुल अलाहिदा कैद कर दिया जाता था इस्लाम ने बन्दिशों को हटा दिया।

बाब 4 : इस बारे में कि मर्द का अपनी बीवी की गोद में हाइज़ा होने के बावजूद क़ुर्आन पढ़ना जाइज़ है

٤- بَابُ قِرَاءَةِ الرَّجُلِ فِي حَجْرِ امْرَأَتِهِ وَهِيَ حَائِضٌ

अबू वाइल अपनी ख़ादिमा को हैज़ की हालत में अबू रज़ीन के पास भेजे थे और वो उनके यहाँ से क़ुर्आन मजीद जुज़्दान में लिपटा हुआ अपने हाथ से पकड़कर लाती थी।

وَكَانَ أَبُو وَائِلٍ يُرْسِلُ خَادِمَهُ وَهِيَ حَائِضٌ إِلَى أَبِي رَزِينٍ فَتَأْتِيهِ بِالْمُصْحَفِ فَتُمْسِكُهُ بِعِلاَقَتِهِ.

इस अष़र को इब्ने अबी शैबा ने मौसूलन रिवायत किया है।

(297) हमसे अबू नुऐम फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, उन्होंने ज़ुहैर से सुना, उन्होंने मंसूर बिन स़फ़िया से कि उनकी माँ ने उनसे बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने उनसे बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मेरी गोद में सर रखकर क़ुर्आन मजीद पढ़ते, हालाँकि मैं उस समय हैज़ वाली होती थी। (दीगर मक़ाम : 7549)

٢٩٧- حَدَّثَنَا أَبُونُعَيْمٍ الْفَضْلُ بْنُ دُكَيْنٍ سَمِعَ زُهَيْرًا عَنْ مَنْصُورِ بْنِ صَفِيَّةَ أَنَّ أُمَّهُ حَدَّثَتْهُ أَنَّ عَائِشَةَ حَدَّثَتْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَتَّكِيءُ فِي حَجْرِي وَأَنَا حَائِضٌ ثُمَّ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ. [طرفه في : ٧٥٤٩].

हदीष़ और बाब की मुताबक़त जाहिर है।

बाब 5 : उस शख़्स के बारे में जिसने निफ़ास का

٥- بَابُ مَنْ سَمَّى النِّفَاسَ حَيْضًا

M-09825696131

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي زَيْدٌ هُوَ ابْنُ أَسْلَمَ عَنْ عِيَاضِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِي سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي أَضْحَى - أَوْ فِطْرٍ - إِلَى الْمُصَلَّى، فَمَرَّ عَلَى النِّسَاءِ فَقَالَ : ((يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ تَصَدَّقْنَ، فَإِنِّي أُرِيْتُكُنَّ أَكْثَرَ أَهْلِ النَّارِ)) فَقُلْنَ، وَبِمَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((تُكْثِرْنَ اللَّعْنَ، وَتَكْفُرْنَ الْعَشِيْرَ، مَا رَأَيْتُ مِنْ نَاقِصَاتِ عَقْلٍ وَدِيْنٍ أَذْهَبَ لِلُبِّ الرَّجُلِ الْحَازِمِ مِنْ إِحْدَاكُنَّ)). قُلْنَ: وَمَا نُقْصَانُ دِيْنِنَا وَعَقْلِنَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((أَلَيْسَ شَهَادَةُ الْمَرْأَةِ مِثْلَ نِصْفِ شَهَادَةِ الرَّجُلِ؟)) قُلْنَ: بَلَى. قَالَ: ((فَذَلِكَ مِنْ نُقْصَانِ عَقْلِهَا. أَلَيْسَ إِذَا حَاضَتْ لَمْ تُصَلِّ وَلَمْ تَصُمْ؟)) قُلْنَ: بَلَى. قَالَ : ((فَذَلِكَ مِنْ نُقْصَانِ دِيْنِهَا)) .

[أطرافه في : ١٤٦٢، ١٩٥١، ٢٦٥٨].

कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझे ज़ैद ने और ये ज़ैद असलम के बेटे हैं, उन्होंने इयाज़ बिन अ़ब्दुल्लाह से, उन्होंने ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से कि आपने फ़र्माया कि रसूले करीम (ﷺ) ईदुल अज़्हा या ईदुल फ़ित्र में ईदगाह तशरीफ़ ले गये। वहाँ आप औरतों के पास से गुज़रे और फ़र्माया ऐ औरतों की जमाअ़त! सदक़ा करो क्योंकि मैंने जहन्नम में ज़्यादा तुम्हीं को देखा है। उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ऐसा क्यों? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लअ़न–तअ़न बहुत करती हो और शौहर की नाशुक्री करती हो, बावजूद अ़क़्ल और दीन में नाक़िस होने के मैंने तुमसे ज़्यादा किसी को भी एक अ़क़्लमंद और तजुर्बेकार आदमी को दीवाना बना देने वाला नहीं देखा। औरतों ने कहा हमारे दीन और हमारी अ़क़्ल में नुक़्सान क्या है या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्या औरत की गवाही मर्द की गवाही से आधी नहीं है? उन्होंने कहा, जी है! आप (ﷺ) ने फ़र्माया बस यही उसकी अ़क़्ल का नुक़्सान है। फिर आपने पूछा क्या ऐसा नहीं है कि जब औरत ह़ाइज़ा हो तो न नमाज़ पढ़ सकती है और न रोज़े रख सकती है, औरतों ने कहा ऐसा ही है। आपने फ़र्माया यही उसके दीन का नुक़्सान है।

(दीगर मक़ाम : 1462, 1951, 2658)

तश्रीह़ : क़स्तलानी ने कहा कि लानत करना उस पर जाइज़ नहीं है जिसके खात्मे की खबर न हो, अलबत्ता जिसका कुफ्र पर मरना यक़ीनी षाबित हो उस पर लानत जाइज़ है जैसे अबू जहल वग़ैरह, इसी तरह बग़ैर नाम लिये हुए ज़ालिमों और काफ़िरों पर भी लानत करनी जाइज़ है।

٨- بَابُ تَقْضِي الْحَائِضُ الْمَنَاسِكَ كُلَّهَا إِلاَّ الطَّوَافَ بِالْبَيْتِ

बाब 8 : इस बारे में कि हाइज़ा बैतुल्लाह के त़वाफ़ के अ़लावा हज्ज के बाक़ी सारे अर्कान को पूरा करेगी

وَقَالَ إِبْرَاهِيْمُ: لاَ بَأْسَ أَنْ تَقْرَأَ الآيَةَ. وَلَمْ يرَ ابْنُ عَبَّاسٍ بِالْقِرَاءَةِ لِلْجُنُبِ بَأْسًا. وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَذْكُرُ اللهَ عَلَى كُلِّ أَحْيَانِهِ. وَقَالَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ: كُنَّا نُؤْمَرُ أَنْ يَخْرُجَ فَيُكَبِّرْنَ بِتَكْبِيْرِهِمْ وَيَدْعُوْنَ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: أَخْبَرَنِي أَبُوسُفْيَانَ أَنَّ هِرَقْلَ

इब्राहीम ने कहा आयत पढ़ने में कोई ह़र्ज नहीं। और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) जुनुबी के लिये क़ुर्आन मजीद पढ़ने में कोई ह़र्ज नहीं समझते थे। और नबी करीम (ﷺ) हर समय अल्लाह का ज़िक्र किया करते थे। उम्मे अ़तिया ने फ़र्माया हमें हुक्म होता था कि हम हैज़ वाली औरतों को भी (ईद के दिन) बाहर निकालें। बस वो मर्दों के साथ तक्बीर कहतीं और दुआ़ करतीं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि उनसे अबू

M-09825696131

रखी गई और हालते इक़ामत की नमाज़ों में ज़्यादती कर दी गई।

(दीगर मक़ाम : 1090, 3935)

فَأُقِرَّتْ صَلَاةُ السَّفَرِ، وَزِيْدَ فِي صَلَاةِ الْحَضَرِ.

[طرفاه في : ١٠٩٠، ٣٩٣٥].

बाब 2 : इस बयान में कि कपड़े पहनकर नमाज़ पढ़ना वाजिब है

٢- بَابُ وُجُوبِ الصَّلَاةِ فِي الثِّيَابِ، وَقَولِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ:

(सूरह अअ़राफ़ में) अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का हुक्म है कि तुम कपड़े पहना करो हर नमाज़ के समय और जो एक ही कपड़ा बदन पर लपेटकर नमाज़ पढ़े (उसने भी फ़र्ज़ अदा कर लिया) और सलमा बिन अक्वा से मन्क़ूल है कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि (अगर एक ही कपड़े में नमाज़ पढ़े तो) अपने कपड़े को टाँक ले अगरचे काँटे ही से टाँकना पड़े, इसकी सनद में गुफ़्तगू है और वो शख़्स जो उसी कपड़े में नमाज़ पढ़ता है जिसे पहनकर वो जिमाअ़ करता है (तो नमाज़ दुरुस्त है) जब तक वो उसमें कोई गंदगी न देखे और नबी करीम (ﷺ) ने हुक्म दिया था कि कोई नंगा बैतुल्लाह का तवाफ़ न करे।

﴿ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ ﴾ وَمَنْ صَلَّى مُلْتَحِفًا فِي ثَوبٍ وَاحِدٍ وَيُذْكَرُ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((تَزُرُّهُ وَلَوْ بِشَوْكَةٍ)) . فِي إِسْنَادِهِ نَظَرٌ. وَمَنْ صَلَّى فِي الثَّوبِ الَّذِي يُجَامِعُ فِيهِ مَا لَمْ يَرَ فِيهِ أَذًى، وَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ لاَ يَطُوفَ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ.

तश्रीह : आयते शरीफा '**ख़ुज़ू ज़ीनतकुम**' अलअख़ में मस्जिद से मुराद नमाज़ है। बक़ौल हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास एक औरत खान–ए–का'बा का तवाफ नंगी होकर कर रही थी कि ये आयते शरीफा नाजिल हुईं मुश्रिकीने–मक्का भी उमूमन तवाफे का'बा नंगे होकर किया करते थे। इस्लाम ने इस हरकत से सख्ती के साथ रोका और नमाज़ के लिये मस्जिद में आते वक़्त कपड़े पहनने का हुक्म फर्माया '**ख़ुज़ू ज़ीनतकुम**' में ज़ीनत से सतरपोशी ही मुराद है जैसा कि मशहूर मुफ़स्सिरे क़ुर्आन हज़रत मुजाहिद ने इस बारे में उम्मत का इजमाअ़ व इत्तिफाक़ नक़ल किया है। लफ़्ज़े ज़ीनत में बड़ी वुसअत है जिसका मफ्हूम (भावार्थ) ये कि मस्जिद अल्लाह का दरबार है, इसमें हर मुम्किन व जाइज़ जैबो–ज़ीनत के साथ इस निय्यत से दाख़िल होना कि मैं अल्लाह अहकमुल हाकिमीन बादशाहों के बादशाह रब्बुल आलमीन के दरबार में दाख़िल हो रहा हूं, ऐन आदाब दरबारे खुदावन्दी में दाख़िल है। ये बात अलग है कि अगर सिर्फ़ एक ही कपड़े में नमाज़ अदा कर ली जाए बशर्ते उससे सतरपोशी कामिल तौर पर ह़ासिल हो तो ये भी जाइज़ व दुरुस्त है।

ऐसे एक कपड़े को पहन लेने का मतलब ये है कि उसके दोनों किनारे मिलाकर उसे अटकाए। अगर घुण्डी या तुमका (बटन, हुक वग़ैरह) न हो तो काँटे या पिन से अटका ले ताकि कपड़ा सामने से खुलने न पाए और शर्मगाह छुपी रहे। सलमा बिन अक्वा की रिवायत अबू दाऊद और इब्ने खुज़ैमा और इब्ने हिब्बान में हैं उसको सनद में इजतिराब है। इसीलिये ह़ज़रत इमाम उसे अपनी सह़ीह़ में नहीं लाए '**व मन सल्ला फ़िष्षौबिल्लज़ी**' एक तवील ह़दीष़ में वारिद है जिसे अबू दाऊद और निसाई ने निकाला है कि आँह़ज़रत (ﷺ) जिस कपड़े को पहनकर सोहबत करते अगर उसमें कुछ पलीदी न पाते तो उसी में नमाज़ पढ़ लेते थे और ह़दीष़ '**अल्ला यत्तव्वफ़ फिल बैति उर्यान**' को इमाम अहमद ने रिवायत किया है। इससे मक़्सद ये ष़ाबित करना कि जब नंगे होकर तवाफ करना मना हुआ तो नमाज़ ब-तरीक़े औला के मुताबिक़ मना है।

(351) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन इब्राहीम ने बयान किया, वो मुहम्मद से, वो उम्मे अ़तिया से, उन्होंने फ़र्माया कि हमें हुक्म हुआ कि हम ईदैन के दिन हाइज़ा और पर्दानशीन औरतों को भी बाहर ले जाएँ ताकि वो

٣٥١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: أُمِرْنَا أَنْ نُخْرِجَ الْحُيَّضَ يَومَ

(351) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन इब्राहीम ने बयान किया, वो मुहम्मद से, वो उम्मे अ़तिया से, उन्होंने फ़र्माया कि हमें हुक्म हुआ कि हम ईदैन के दिन हाइज़ा और पर्दानशीन औ़रतों को भी बाहर ले जाएँ ताकि वो

٣٥١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: أُمِرْنَا أَنْ نُخْرِجَ الْحُيَّضَ يَوْمَ

M-09825696131

मुसलमानों के इज्तिमाअ़ और उनकी दुआ़ओं में शरीक हो सकें अल्बत्ता हाइज़ा औ़रतों को नमाज़ पढ़ने की वजह से दूर रखें। एक औ़रत ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हममें कुछ औ़रतें ऐसी भी होती हैं जिनके पास (पर्दा करने के लिये) चादर नहीं होती। आपने फ़र्माया कि उसकी साथी औ़रत अपनी चादर का एक हिस्सा उसे ओढ़ा दे और अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने कहा हमसे इमरान क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन सीरीन ने, कहा हमसे उम्मे अ़तिया ने, मैंने आँहज़रम (ﷺ) से सुना और यही हदीष़ बयान की। (राजेअ़ : 324)

الْعِيدَيْنِ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ، فَيَشْهَدْنَ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَدَعْوَتَهُمْ، وَتَعْتَزِلُ الْحُيَّضُ عَنْ مُصَلاَّهُنَّ. قَالَتِ امْرَأَةٌ : يَا رَسُولَ اللهِ إِحْدَانَا لَيْسَ لَهَا جِلْبَابٌ. قَالَ: ((لِتُلْبِسْهَا صَاحِبَتُهَا مِنْ جِلْبَابِهَا)). وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا عِمْرَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِيرِينَ قَالَ حَدَّثَتْنَا أُمُّ عَطِيَّةَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ بِهَذَا.

[راجع: ٣٢٤]

तश्रीह : हदीष़ के बाब का तर्जुमा अल्फ़ाज़ **लि तुलबिसहा साहिबतहा मिन जल्बाबिहा** (जिस औ़रत के पास कपड़ा न हो उसके साथ वाली औ़रत को चाहिए कि अपनी चादर ही का कोई हिस्सा उसे भी ओढ़ा दे) से निकलता है। मक़सद ये कि मस्जिद में जाते वक़्त, ईदगाह में हाज़री के वक़्त, नमाज़ पढ़ते वक़्त इतना कपड़ा ज़रूर होना चाहिए जिससे मर्द व औ़रत अपनी–अपनी हैषियत में सतरपोशी कर सके। इस हदीष़ से भी औ़रतों का ईदगाह जाना षाबित हुआ।

इमाम बुख़ारी (रह.) ने सनद में अ़ब्दुल्लाह बिन रजा को लाकर उस शख़्स का रद्द किया जिसने कहा कि मुहम्मद बिन सीरीन ने ये हदीष़ उम्मे अतिय्या से नहीं सुनी बल्कि अपनी बहन हफ्सा से, उन्होंने उम्मे अतिय्या से, उसे तबरानी ने मुअजम कबीर में वस्ल किया है।

M-09825696131

मुसलमानों के इज्तिमाअ और उनकी दुआओं में शरीक हो सकें अल्बत्ता हाइज़ा औरतों को नमाज़ पढ़ने की वजह से दूर रखें। एक औरत ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हममें कुछ औरतें ऐसी भी होती हैं जिनके पास (पर्दा करने के लिये) चादर नहीं होती। आपने फ़र्माया कि उसकी साथी औरत अपनी चादर का एक हिस्सा उसे ओढ़ा दे और अब्दुल्लाह बिन रजाअ ने कहा हमसे इमरान क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन सीरीन ने, कहा हमसे उम्मे अतिया ने, मैंने आँहज़रम (ﷺ) से सुना और यही हदीष बयान की। (राजेअ : 324)

الْعِيدَيْنِ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ، فَيَشْهَدْنَ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَدَعْوَتَهُمْ، وَتَعْتَزِلُ الْحُيَّضُ عَنْ مُصَلاَّهُنَّ . قَالَتِ امْرَأَةٌ : يَا رَسُولَ اللهِ إِحْدَانَا لَيْس لَهَا جِلْبَابٌ. قَالَ: ((لِتُلْبِسْهَا صَاحِبَتُهَا مِنْ جِلْبَابِهَا)). وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا عِمْرَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِيرِينَ قَالَ حَدَّثَتنَا أُمُّ عَطِيَّةَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ بِهَذَا.

[راجع: ٣٢٤]

तश्रीह : हदीष के बाब का तर्जुमा अल्फ़ाज़ **लि तुलबिसहा साहिबतहा मिन जल्बाबिहा** (जिस औरत के पास कपड़ा न हो उसके साथ वाली औरत को चाहिए कि अपनी चादर ही का कोई हिस्सा उसे भी ओढ़ा दे) से निकलता है। मक़सद ये कि मस्जिद में जाते वक़्त, ईदगाह में हाज़री के वक़्त, नमाज़ पढ़ते वक़्त इतना कपड़ा ज़रूर होना चाहिए जिससे मर्द व औरत अपनी-अपनी हैषियत में सतरपोशी कर सके। इस हदीष से भी औरतों का ईदगाह जाना षाबित हुआ।

इमाम बुख़ारी (रह.) ने सनद में अब्दुल्लाह बिन रजा को लाकर उस शख़्स का रद्द किया जिसने कहा कि मुहम्मद बिन सीरीन ने ये हदीष उम्मे अतिय्या से नहीं सुनी बल्कि अपनी बहन हफ्सा से, उन्होंने उम्मे अतिय्या से, उसे तबरानी ने मुअजम कबीर में वस्ल किया है।

बाब 3 : नमाज़ में गुद्दी पर तहबंद बाँधने के बयान में

और अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने सहल बिन सअद से रिवायत करते हुए कहा कि लोगों ने नबी (ﷺ) के साथ अपनी तहबंद कँधों पर बाँधकर नमाज़ पढ़ी।

٣- بَابُ عَقْدِ الإِزَارِ عَلَى الْقَفَا فِي الصَّلاَةِوَقَالَ أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، صَلَّوا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَاقِدِي أُزْرِهِمْ عَلَى عَوَاتِقِهِمْ.

(352) हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आसिम बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे वाक़िद बिन मुहम्मद ने मुहम्मद बिन मुंकदिर के हवाले से बयान किया, उन्होंने कहा कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने तहबंद बाँधकर नमाज़ पढ़ी, जिसे उन्होंने सर तक बाँध रखा था और आपके कपड़े खूँटी पर टंगे हुए थे। एक कहनेवाले ने कहा कि आप एक तहबंद में नमाज़ पढ़ते हैं? आपने जवाब दिया कि मैंने ऐसा इसलिये किया कि तुझ जैसा कोई अहमक़ मुझे देखे। भला रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में दो कपड़े भी किसके

٣٥٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنِ يُونُسَ قَالَ: حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي وَاقِدُ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ : صَلَّى جَابِرٌ فِي إِزَارٍ قَدْ عَقَدَهُ مِنْ قِبَلِ قَفَاهُ وَثِيَابُهُ مَوْضُوعَةٌ عَلَى الْمِشْجَبِ. فَقَالَ لَهُ قَائِلٌ: تُصَلِّي فِي إِزَارٍ وَاحِدٍ؟ فَقَالَ: إِنَّمَا صَنَعْتُ ذَلِكَ لِيَرَانِي أَحْمَقُ مِثْلُكَ. وَأَيُّنَا كَانَ لَهُ ثَوْبَانِ عَلَى عَهْدِ

M-09825696131

عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلٍ قَالَ: كَانَ رِجَالٌ يُصَلُّوْنَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَاقِدِي أُزُرِهِمْ عَلَى أَعْنَاقِهِمْ كَهَيْئَةِ الصِّبْيَانِ، يُقَالُ لِلنِّسَاءِ: ((لاَ تَرْفَعْنَ رُؤُوسَكُنَّ حَتَّى يَسْتَوِيَ الرِّجَالُ جُلُوْسًا)). [طرفاه في : ٨١٤، ١٢١٥].

हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया सहल बिन सअ़द सअ़दी से, उन्होंने कहा कि कई आदमी नबी करीम (ﷺ) के साथ बच्चों की तरह अपनी गर्दनों पर इज़ारें बाँधे हुए नमाज़ पढ़ते थे और औरतों को (आपके ज़माने में) हुक्म था कि अपने सरों को (सज्दे से) उस समय तक न उठाएँ जब तक कि मर्द सीधे होकर बैठ न जाएँ।

(दीगर मक़ाम : 814, 1215)

क्योंकि मर्दों के बैठ जाने से पहले सर उठाने में कहीं औरतों की नजर मर्दों के सतर पर न पड़ जाए इसीलिये औरतों को पहले सर उठाने से मना फर्माया। उस जमाने में औरतें भी मर्दों के साथ नमाज़ों में शरीक होती थी और मर्दों का लिबास भी इसी किस्म का होता था। आजकल ये सूरतें नहीं है, फिर औरतों के लिये अब ईदगाह में भी पर्दे का बेहतरीन इन्तेजाम कर दिया जाता है।

٧- بَابُ الصَّلاَةِ فِي الْجُبَّةِ الشَّامِيَّةِ

बाब 7 : शाम के बने हुए चोग़े में नमाज़ पढ़ने के बयान में

وَقَالَ الْحَسَنُ فِي الثِّيَابِ يَنْسُجُهَا الْمَجُوسُ لَمْ يَرَ بِهَا بَأْسًا، وَقَالَ مَعْمَرٌ: رَأَيْتُ الزُّهْرِيَّ يَلْبَسُ مِنْ ثِيَابِ الْيَمَنِ مَا صُبِغَ بِالْبَوْلِ. وَصَلَّى عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ فِي ثَوْبٍ غَيْرِ مَقْصُوْرٍ.

इमाम हसन बस़री (रह.) ने फ़र्माया कि जिन कपड़ों को पारसी बुनते हैं उसके इस्ते'माल करने में कोई क़बाहत नहीं। मअ़मर राशिद ने फ़र्माया कि मैंने इब्ने शिहाब ज़ुहरी को यमन के कपड़े को पहने देखा जो (हलाल जानवरों के) पेशाब से रंग जाते थे और अ़ली बिन अबी त़ालिब ने नए बग़ैर धुले कपड़े पहनकर नमाज़ पढ़ी।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़सद ये है कि शाम में उन दिनों काफ़िरों की हुकूमत थी ओर वहां से मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के कपड़े यहाँ मदीना में आया करते थे, इसलिये इन मसाइल के बयान की ज़रूरत हुई। पेशाब से हलाल जानवरों का पेशाब मुराद है जिसको रंगाई के मसालों में डाला जाता था।

٣٦٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ مُغِيْرَةَ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ فَقَالَ: ((يَا مُغِيْرَةُ خُذِ الإِدَاوَةَ)). فَأَخَذْتُهَا. فَانْطَلَقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى تَوَارَى عَنِّي فَقَضَى حَاجَتَهُ، وَعَلَيْهِ جُبَّةٌ شَامِيَّةٌ، فَذَهَبَ لِيُخْرِجَ يَدَهُ مِنْ كُمِّهَا فَضَاقَتْ، فَأَخْرَجَ يَدَهُ مِنْ أَسْفَلِهَا،

(363) हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू मुआविया ने अअ़मश के वास्ते से, उन्हों ने मुस्लिम बिन स़बीह से, उन्होंने मसरूक़ बिन अज्दअ़ से, उन्होंने मुग़ीरह बिन शुअ़बा से, आपने फ़र्माया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र (ग़ज़्व-ए-तबूक) में था। आपने एक मौक़े पर फ़र्माया। मुग़ीरह! पानी की छागल उठा ले। मैंने उसे उठा लिया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) चले और मेरी नज़रों से छुप गए। आपने क़ज़ा-ए-हाजत की। उस समय आप शामी जुब्बा पहने हुए थे। आप हाथ खोलने के लिये आस्तीन ऊपर चढ़ाना चाहते थे लेकिन वो तंग थी इसलिये आस्तीन के अंदर से हाथ निकाला। मैंने आपके हाथों

النَّبِيَّ ﷺ فَسَأَلَهُ عَنِ الصَّلاَةِ فِي الثَّوْبِ الْوَاحِدِ، فَقَالَ: ((أَوَ كُلُّكُمْ يَجِدُ ثَوْبَيْنِ)). ثُمَّ سَأَلَ رَجُلٌ عُمَرَ، فَقَالَ: إِذَا وَسَّعَ اللهُ فَأَوْسِعُوا: جَمَعَ رَجُلٌ عَلَيْهِ ثِيَابَهُ، صَلَّى رَجُلٌ فِي إِزَارٍ وَرِدَاءٍ، فِي إِزَارٍ وَقَمِيصٍ، فِي إِزَارٍ وَقَبَاءٍ، فِي سَرَاوِيلَ وَرِدَاءٍ، فِي سَرَاوِيلَ وَقَمِيصٍ، فِي سَرَاوِيلَ وَقَبَاءٍ، فِي تُبَّانٍ وَقَمِيصٍ، - قَالَ: وَأَحْسَبُهُ قَالَ - فِي تُبَّانٍ وَرِدَاءٍ.

[راجع: ٣٥٨]

पढ़ने के बारे में सवाल किया। आपने फ़र्माया कि क्या तुम सब ही लोगों के पास दो कपड़े हो सकते हैं? फिर (यही मसला) ह़ज़रत उमर (रज़ि.) से एक शख़्स़ ने पूछा तो उन्होंने कहा कि जब अल्लाह तआला ने तुम्हें फ़राग़त दी है तो तुम भी फ़राग़त के साथ रहो। आदमी को चाहिए कि नमाज़ में अपने कपड़े को इकट्ठा कर ले, कोई आदमी तहबंद और चादर में नमाज़ पढ़े, कोई तहबंद और क़मीस़, कोई तहबंद और क़बा में, कोई पाजामा और चादर में, कोई पाजामा और क़मीस़ में, कोई पाजामा और क़बा में, कोई जांघिया और क़बा में, कोई जांघिया और क़मीस़ में नमाज़ पढ़े। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मुझे याद आता है कि आपने ये भी कहा कि कोई जांघिया और चादर में नमाज़ पढ़े।

(राजेअ : 358)

तश्रीह : इसमें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को शक था कि ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने ये आखिर का लफ़्ज़ कहा था या नहीं, क्योंकि महज़ जांघिया से सतरपोशी नहीं होती है। उस पर ऐसा कपड़ा हो जिससे सतरपोशी कामिल तौर पर ह़ासिल हो जाए तो जायज है और यहां यही मुराद है, **फ़स्सतरू बिही हासिलुन मअल क़बा व मअल क़मीस़** (क़स्तलानी) चोग़ा या लम्बी कमीस पहन कर उसके साथ सतरपोशी हो जाती है।

٣٦٦- حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عَلِيٍّ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سَأَلَ رَجُلٌ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: مَا يَلْبَسُ الْمُحْرِمُ؟ فَقَالَ: ((لاَ يَلْبَسُ الْقَمِيصَ وَلاَ السَّرَاوِيلَ وَلاَ الْبُرْنُسَ وَلاَ ثَوْبًا مَسَّهُ الزَّعْفَرَانُ وَلاَ وَرْسٌ. فَمَنْ لَمْ يَجِدِ النَّعْلَيْنِ فَلْيَلْبَسِ الْخُفَّيْنِ وَلْيَقْطَعْهُمَا حَتَّى يَكُونَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ)). وَعَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ. [راجع: ١٣٤]

(366) हमसे आस़िम बिन अ़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने ज़ुहरी के ह़वाले से बयान किया, उन्होंने सालिम से, उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से, उन्होंने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक आदमी ने पूछा कि एहराम बाँधने वाले को क्या पहनना चाहिए। तो आपने फ़र्माया कि न क़मीस़ पहने न पाजामा, न बारान कोट और न ऐसा कपड़ा जिसमें जा'फ़रान लगा हुआ हो और न वर्स लगा हुआ कपड़ा, फिर अगर किसी शख़्स़ को जूतियाँ न मिलें (जिनमें पांव खुला रहता हो) वो मोज़े काटकर पहन ले ताकि वो टख़नों से नीचे हो जाएँ और इब्ने अबी ज़िब ने इस ह़दीष़ को नाफ़ेअ से भी रिवायत किया, उन्होंने ऐसा ही आँह़ज़रत (ﷺ) से भी रिवायत किया है।

(राजेअ : 134)

वर्स नामी एक पीले रंग वाली खुश्बूदार घास यमन में होती थी जिससे कपड़े रंगे जाते थे। मुनासबत इस ह़दीष़ के बाब से ये है कि मुहरिम को एहराम की हालत में इन चीजों के पहनने से मना फर्माया मा'लूम हुआ कि एहराम के अलावा दीगर हालतों में इन सबको पहना जा सकता है। यहाँ तक कि नमाज़ में भी, यही बाब का तर्जुमा है। ह़ाफ़िज़ इब्ने हजर फर्माते हैं कि इस ह़दीष़ को यहां बयान करने से मक़्सद ये है कि कमीस और पाजामे के बग़ैर भी (बशर्ते की सतरपोशी ह़ासिल हो) नमाज़ दुरूस्त है क्योंकि मुहरिम इनको नहीं पहन सकता और आखिर वो नमाज़ जरूर पढ़ेगा।

M-09825696131

गर्मी की वजह से कोई कोई हममें से अपने कपड़े का किनारा सज्दे की जगह रख लेता।

(दीगर मक़ाम : 542, 1208)

مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَيَضَعُ أَحَدُنَا طَرَفَ الثَّوْبِ مِنْ شِدَّةِ الْحَرِّ فِي مَكَانِ السُّجُودِ.

[طرفاه في : ٥٤٢، ١٢٠٨].

बाब 24 : जूतियों समेत नमाज़ पढ़ना (जाइज़ है)

٢٤- بَابُ الصَّلاَةِ فِي النِّعالِ

(386) हमसे आदम बिन अबी इयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू मुस्लिमा सईद बिन यज़ीद अज़्दी ने बयान किया, कहा मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा कि क्या नबी करीम (ﷺ) अपनी जूतियाँ पहनकर नमाज़ पढ़ते थे? तो उन्होंने फ़र्माया, कि हाँ!

(दीगर मक़ाम : 5850)

٣٨٦- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو مَسْلَمَةَ سَعِيدُ بْنُ يَزِيْدَ الأَزْدِيُّ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ: أَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي فِي نَعْلَيْهِ؟ قَالَ : نَعَمْ.[طرفه في : ٥٨٥٠].

तश्रीह : अब दाऊद और हाकिम की ह़दीष़ में यूं है कि यहूदियों के ख़िलाफ़ करो, वो जूतियों में नमाज़ नहीं पढ़ते। ह़ज़रत उमर (रज़ि.) नमाज़ में जूते उतारना मकरूह जानते थे और अबू अ़म्र शैबानी कोई नमाज़ में जूता उतारे तो उसे मारा करते थे मगर ये शर्त ज़रूरी है कि जूता पाक साफ हो। बाज़ लोग कहते हैं कि नअ़ल अ़रबों का एक ख़ास़ जूता था और इन आम जूतों में नमाज़ जाइज़ नहीं। ख़्वाह वो पाक-साफ़ भी हो। दलाइल की रु से ऐसा कहना सही नहीं है। जूतों में नमाज़ बिला कराहत जाइज़ दुरुस्त है। बशर्ते कि वो पाक व साफ़ सुथरे हो, गन्दगी का ज़रा भी शुबहा हो तो उनको उतार देना चाहिए।

बाब 25 : मौज़े पहने हुए नमाज़ पढ़ना (जाइज़ है)

٢٥- بَابُ الصَّلاَةِ فِي الْخِفَافِ

(387) हमसे आदम बिन अबी इयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने अअमश के वास्ते से, उसने कहा मैंने इब्राहीम नख़ई से सुना। वो हम्माम बिन ह़ारिष़ से रिवायत करते थे, उन्होंने कहा कि मैंने जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह को देखा, उन्होंने पेशाब किया फिर वुज़ू किया और अपने मौज़ों पर मसह किया। फिर खड़े हुए और (मौज़ों समेत) नमाज़ पढ़ी। आपसे जब इसके बारे में पूछा गया तो फ़र्माया कि, मैंने नबी करीम (ﷺ) को ऐसा करते हुए देखा है। इब्राहीम नख़ई ने कहा कि ये ह़दीष़ लोगों की नज़र में बहुत पसंदीदा थी, क्योंकि जरीर (रज़ि.) आख़िर में इस्लाम लाए थे।

٣٨٧- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ: سَمِعْتُ إِبْرَاهِيْمَ يُحَدِّثُ عَنْ هَمَّامِ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: رَأَيْتُ جَرِيْرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ بَالَ، ثُمَّ تَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى، فَسُئِلَ فَقَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ صَنَعَ مِثْلَ هَذَا. قَالَ إِبْرَاهِيْمُ فَكَانَ يُعْجِبُهُم، لأَنَّ جَرِيْرًا كَانَ مِنْ آخِرِ مَنْ أَسْلَمَ.

(388) हमसे इस्ह़ाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया अअमश के वास्ते से, उन्होंने मुस्लिम बिन स़बीह़ से, उन्होंने मसरूक़ बिन अज्दअ से, उन्होंने मुग़ीरह बिन शुअबा से, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को वुज़ू कराया। आपने अपने

٣٨٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنِ الْمُغِيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: وَضَّأْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ

से रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम बुरे लोगों में रह जाओगे इस तरह़। (यानी आप (ﷺ) ने एक हाथ की उँगलियाँ दूसरे हाथ में करके दिखाईं) (राजेअ़ : 475)

يَقُولُ: قَالَ عَبْدُ اللهِ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو، وَكَيْفَ بِكَ إِذَا بَقِيتَ فِي حُثَالَةٍ مِنَ النَّاسِ . بِهَذَا)). [راجع: ٤٧٥]

तश्रीह़ : आप (ﷺ) ने हाथों को कैंची करने से इसलिये रोका कि ये एक लग़्व (बेकार) ह़रकत है लेकिन अगर किसी मक़्सद के पेशेनज़र ऐसा कभी किया जाये तो कोई ह़र्ज नहीं है जैसा कि इस ह़दीष़ में ज़िक्र है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने मक़्सद की वज़ाहत के लिये हाथों को क़ैंची करके दिखलाया। इस ह़दीष़ में आगे यूँ है कि न उनके इक़रार का ऐ़तबार होगा, न उनमें अमानतदारी होगी। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर फ़र्माते हैं कि आसिम बिन अ़ली की दूसरी रिवायत जो इमाम बुख़ारी (रह.) ने मुअ़ल्लक़न बयान की उसको इब्राहीम ह़रबी ने ग़रीबुल ह़दीष़ में वस़्ल किया है, बाब के इन्इक़ाद से इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़्सद ये है तश्बीक की कराहिय्यत के बारे में जो अह़ादीष़ वारिद हुई है वो ष़ाबित नहीं है बाज़ ने मुमानअ़त को हालते नमाज़ पर मह़मूल किया है।

(481) हमसे ख़ल्लाद बिन यह़्या ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने अबी बुर्दा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़बी बुर्दा से, उन्होंने अपने दादा (अबू बुर्दा) से, उन्होंने अबू मूसा अशअ़री से। उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये इमारत की तरह़ है कि उसका एक ह़िस़्सा दूसरे ह़िस़्से को कुव्वत पहुँचाता है और आप (ﷺ) ने एक हाथ की उँगलियों को दूसरे हाथ की उँगलियों में दाख़िल किया। (दीगर मक़ाम : 2446, 6026)

٤٨١- حَدَّثَنَا خَلَّادُ بْنُ يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ جَدِّهِ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((إِنَّ الْمُؤْمِنَ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا)) وَشَبَّكَ أَصَابِعَهُ. [طرفاه في : ٢٤٤٦، ٦٠٢٦].

तश्रीह़ : आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुसलमानों को बाहमी तौर पर मिल—जुलकर रहने की मिष़ाल बयान फ़र्माई और हाथों को कैंची करके बतलाया कि मुसलमान भी बाहमी तौर पर ऐसे ही मिले जुले रहते हैं जिस तरह इमारत के पत्थर एक-दूसरे को थामे रहते हैं । ऐसे ही मुसलमानों को भी एक-दूसरे का कुव्वते बाज़ू होना चाहिए। एक मुसलमान पर कहीं ज़ुल्म हो तो सारे मुसलमानों को उसकी इमदाद के लिये उठना चाहिए। काश! उम्मते मुस्लिमा अपने प्यारे रसूले मक़बूल (ﷺ) की इस प्यारी नस़ीहत को याद रखती तो आज ये तबाहकुन हालात न देखने पड़ते।

(482) हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र बिन शुमैल ने, उन्होंने कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह इब्ने औ़न ने ख़बर दी, उन्होंने मुह़म्मद बिन सिरीन से, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमें दोपहर के बाद की दो नमाज़ों में से कोई नमाज़ पढ़ाई(ज़ुहर या अ़स्र की) इब्ने सिरीन ने कहा कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने उनका नाम तो लिया था लेकिन मैं भूल गया। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बतलाया कि आप (ﷺ) ने हमें दो रकअ़त नमाज़ पढ़ा कर सलाम फेर दिया। इसके बाद एक लकड़ी की लाठी से जो मस्जिद में रखी हुई थी आप (ﷺ) टेक लगाकर खड़े हो गए। ऐसा मा'लूम होता

٤٨٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ شُمَيْلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ إِحْدَى صَلَاتَيِ الْعَشِيِّ - قَالَ ابْنُ سِيرِينَ: قَدْ سَمَّاهَا أَبُوهُرَيْرَةَ، وَلَكِنْ نَسِيتُ أَنَا، قَالَ - فَصَلَّى بِنَا رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، فَقَامَ إِلَى خَشَبَةٍ مَعْرُوضَةٍ فِي الْمَسْجِدِ فَاتَّكَأَ عَلَيْهَا كَأَنَّهُ

(482) हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र बिन शुमैल ने, उन्होंने कहा कि हमें अब्दुल्लाह इब्ने औन ने ख़बर दी, उन्होंने मुहम्मद बिन सिरीन से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमें दोपहर के बाद की दो नमाज़ों में से कोई नमाज़ पढ़ाई (ज़ुहर या अस्र की) इब्ने सिरीन ने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने उनका नाम तो लिया था लेकिन मैं भूल गया। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बतलाया कि आप (ﷺ) ने हमें दो रकअत नमाज़ पढ़ा कर सलाम फेर दिया। इसके बाद एक लकड़ी की लाठी से जो मस्जिद में रखी हुई थी आप (ﷺ) टेक लगाकर खड़े हो गए। ऐसा मा'लूम होता

٤٨٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ شُمَيْلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ إِحْدَى صَلاَتَيِ الْعَشِيِّ - قَالَ ابْنُ سِيرِينَ: قَدْ سَمَّاهَا أَبُو هُرَيْرَةَ، وَلَكِنْ نَسِيتُ أَنَا، قَالَ - فَصَلَّى بِنَا رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، فَقَامَ إِلَى خَشَبَةٍ مَعْرُوضَةٍ فِي الْمَسْجِدِ فَاتَّكَأَ عَلَيْهَا كَأَنَّهُ

M-09825696131

था कि आप बहुत ही ख़फ़ा हों । और आप (ﷺ) ने अपने दाएँ हाथ को बाएँ हाथ पर रखा। और उनकी उँगलियों को एक—दूसरे में दाख़िल किया। और आपने अपने दाएँ रुख़सार को बाएँ हाथ की हथेली से सहारा दिया। जो लोग नमाज़ पढ़कर जल्दी निकल जाया करते थे वो मस्जिद के दरवाज़ों से पार हो गए। फिर लोग कहने लगे कि क्या नमाज़ कम कर दी गई है। हाज़िरीन में अबूबक्र और उमर (रज़ि.) भी मौजूद थे। लेकिन उन्हें भी आपसे बोलने की हिम्मत न हुई। उन्हीं में एक शख़्स थे जिनके हाथ लम्बे थे और उन्हें ज़ुलयदैन कहा जाता था। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आप (ﷺ) भूल गए या नमाज़ कम कर दी गई है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि न मैं भूला हूँ और न नमाज़ कम हुई है। फिर आप (ﷺ) ने लोगों से पूछा, क्या ज़ुलयदैन सहीह कह रहे हैं। हाज़िरीन बोले कि जी हाँ! ये सुनकर आप (ﷺ) आगे बढ़े और बाक़ी रकअतें पढ़ीं। फिर सलाम फेरा, फिर तक्बीर कही और सह्व का सज्दा किया। मअमूल के मुताबिक़ या उससे भी लम्बा सज्दा। फिर सर उठाया और तक्बीर कही। फिर तक्बीर कही और दूसरा सज्दा किया। मअमूल के मुताबिक़ या उससे भी लम्बा फिर सर उठाया और तक्बीर कही, लोगों ने बार-बार इब्ने सिरीन से पूछा कि क्या फिर सलाम फेरा तो वो जवाब देते कि मुझे ख़बर दी गई है कि इमरान बिन हुसैन कहते थे कि फिर सलाम फेरा।

(दीगर मक़ाम : 714, 715, 1227, 1228, 1229, 6051, 7250)

غَضْبَانُ وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى، وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ، وَوَضَعَ خَدَّهُ الأَيْمَنَ عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ الْيُسْرَى، وَخَرَجَتِ السَّرَعَانُ مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ فَقَالُوا: قَصُرَتِ الصَّلاَةُ. وَفِي الْقَوْمِ أَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ فَهَابَا أَنْ يُكَلِّمَاهُ، وَفِي الْقَوْمِ رَجُلٌ فِي يَدَيْهِ طُولٌ يُقَالُ لَهُ ذُو الْيَدَيْنِ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَنَسِيتَ أَمْ قُصِرَتِ الصَّلاَةُ؟ قَالَ: ((لَمْ أَنْسَ وَلَمْ تُقْصَرْ)) فَقَالَ: ((أَكَمَا يَقُولُ ذُو الْيَدَيْنِ؟)) فَقَالُوا: نَعَمْ. فَتَقَدَّمَ فَصَلَّى مَا تَرَكَ ثُمَّ سَلَّمَ. ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ. ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ، ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ، فَرُبَّمَا سَأَلُوهُ : ثُمَّ سَلَّمَ؟ فَيَقُولُ: نُبِّئْتُ أَنَّ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ قَالَ: ثُمَّ سَلَّمَ.

[أطرافه في : ٧١٤، ٧١٥، ١٢٢٧، ١٢٢٨، ١٢٢٩، ٦٠٥١، ٧٢٥٠].

M-09825696131

था कि आप बहुत ही ख़फ़ा हों । और आप (ﷺ) ने अपने दाएँ हाथ को बाएँ हाथ पर रखा। और उनकी उँगलियों को एक-दूसरे में दाख़िल किया। और आपने अपने दाएँ रुख़सार को बाएँ हाथ की हथेली से सहारा दिया। जो लोग नमाज़ पढ़कर जल्दी निकल जाया करते थे वो मस्जिद के दरवाज़ों से पार हो गए। फिर लोग कहने लगे कि क्या नमाज़ कम कर दी गई है । हाज़िरीन में अबूबक्र और उमर (रज़ि.) भी मौजूद थे। लेकिन उन्हें भी आपसे बोलने की हिम्मत न हुई। उन्हीं में एक शख़्स थे जिनके हाथ लम्बे थे और उन्हें ज़ुलयदैन कहा जाता था। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आप (ﷺ) भूल गए या नमाज़ कम कर दी गई है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि न मैं भूला हूँ और न नमाज़ कम हुई है। फिर आप (ﷺ) ने लोगों से पूछा, क्या ज़ुलयदैन सहीह कह रहे हैं। हाज़िरीन बोले कि जी हाँ! ये सुनकर आप (ﷺ) आगे बढ़े और बाक़ी रकअ़तें पढ़ीं। फिर सलाम फेरा, फिर तक्बीर कही और सह्व का सज्दा किया। मअ़मूल के मुताबिक़ या उससे भी लम्बा सज्दा। फिर सर उठाया और तक्बीर कही। फिर तक्बीर कही और दूसरा सज्दा किया। मअ़मूल के मुताबिक़ या उससे भी लम्बा फिर सर उठाया और तक्बीर कही, लोगों ने बार-बार इब्ने सिरीन से पूछा कि क्या फिर सलाम फेरा तो वो जवाब देते कि मुझे ख़बर दी गई है कि इमरान बिन हुसैन कहते थे कि फिर सलाम फेरा।

(दीगर मक़ाम : 714, 715, 1227, 1228, 1229, 6051, 7250)

غَضْبَانُ وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى، وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ، وَوَضَعَ خَدَّهُ الأَيْمَنَ عَلَى ظَهْرِ كَفِّهِ الْيُسْرَى، وَخَرَجَتِ السَّرَعَانُ مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ فَقَالُوا: قَصُرَتِ الصَّلاَةُ. وَفِي الْقَومِ أَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ فَهَابَا أَنْ يُكَلِّمَاهُ، وَفِي الْقَوْمِ رَجُلٌ فِي يَدَيْهِ طُولٌ يُقَالُ لَهُ ذُو الْيَدَيْنِ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَنَسِيتَ أَمْ قَصُرَتِ الصَّلاَةُ؟ قَالَ: ((لَمْ أَنسَ وَلَمْ تُقْصَرْ)) فَقَالَ: ((أَكَمَا يَقُولُ ذُو الْيَدَينِ؟)) فَقَالُوا: نَعَمْ. فَتَقَدَّمَ فَصَلَّى مَا تَرَكَ ثُمَّ سَلَّمَ. ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ. ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ، ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ، فَرُبَّمَا سَأَلُوهُ : ثُمَّ سَلَّمَ؟ فَيَقُولُ: نُبِّئْتُ أَنَّ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ قَالَ: ثُمَّ سَلَّمَ.

[أطرافه في : ٧١٤، ٧١٥، ١٢٢٧، ١٢٢٨، ١٢٢٩، ٦٠٥١، ٧٢٥٠].

तश्रीह : ये ह़दीष़ **'ह़दीष़े ज़ुलयदैन'** के नाम से मशहूर है। एक बुज़ुर्ग सहाबी ख़रबाक़ (रज़ि.) नामी के हाथ लम्बे-लम्बे थे इसलिये उनको ज़ुलयदैन कहा जाता था। इस ह़दीष़ से ष़ाबित हुआ कि सह्वन बात कर लेने से या मस्जिद से निकल जाने से या नमाज़ की जगह से चले जाने से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती। यहाँ भी आँह़ज़रत (ﷺ) का हाथों की उंगलियों को कैंची करना मज़कूर है जिससे इस ह़ालत का जवाज़ मस्जिद और ग़ैर मस्जिद में ष़ाबित हुआ। यही ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़सद है। बाक़ी इस ह़दीष़ के मुता'ल्लिक़ दीगर बहष़ें अपने मक़ामात में आएँगी।

बाब 89 : उन मसाजिद का बयान जो मदीना के रास्ते में वाक़ेअ हैं और वो जगहें जहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ अदा फ़र्माई है

٨٩- بَابُ الْمَسَاجِدِ الَّتِي عَلَى طُرُقِ الْمَدِينَةِ وَالْمَوَاضِعِ الَّتِي صَلَّى فِيهَا النَّبِيُّ ﷺ

(483) हमसे मुह़म्मद बिन अबीबक्र मक़द्दमी ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ल बिन सुलैमान ने, कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा

٤٨٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمَقْدَمِيُّ قَالَ : حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ

M-09825696131

तश्रीह : इमाम क़स्तलानी शारेह बुख़ारी लिखते हैं कि इन मक़ामात में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की नमाज़ पढ़ना तबर्रुक ह़ासिल करने के लिये था और ये उसके ख़िलाफ़ नहीं जो ह़ज़रत उमर (रज़ि.) से मरवी है क्योंकि ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने इस हाल में उसको मकरूह रखा जब कोई वाजिब और ज़रूरी समझकर ऐसा करें। यहाँ जिन--जिन मक़ामात की मसाजिद का ज़िक्र है उनमें से अकषर अब नापैद हो चुकी है, चन्द बाक़ी है। ज़ुलहुलैफ़ा एक मशहूर मक़ाम है जहाँ से अहले मदीना एह़राम बाँधा करते थे। बतहा वो जगह है जहाँ पानी का बहाव है और वहाँ बारीक-बारीक कंकरिया है। रुवैषा मदीना से सत्रह फर्स के फ़ासले पर एक गाँव का नाम है। यहां से अर्ज नामी गाँव तेरह चौदह मील पड़ता है। ह़ज़्बह भी मदीना के रास्ते में एक पहाड़ है जो ज़मीन पर फैला हुआ है। हरशी जोह़फ़ह के क़रीब मदीना और शाम के रास्तों में एक पहाड़ का नाम है। मर्रुज्जहरान एक मशहूर मक़ाम है, स़फ़रावात वो नदी नाले और पहाड़ जो मर्रुज्जहरान के बाद आते हैं।

इस बाब में नौ ह़दीषें मज़कूर है। इनको ह़सन बिन सुफ़यान ने मुतफर्रिक तौर पर अपनी मुसनद में निकाला है मगर तीसरी को नहीं निकाला और मुस्लिम ने आखरी ह़दीष़ को किताबुल ह़ज्ज में निकाला है।

अब उन मसाजिद का पता नहीं चलता, न वो दरख्त और निशानात बाक़ी है। खुद मदीना मुनव्वरा में आँह़ज़रत (ﷺ) ने जिन-जिन मसाजिद में नमाज़ पढ़ी है उनको अमर बिन शैबा ने अख़बारे मदीना में ज़िक्र किया है। ह़ज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) ने अपने अहदे ख़िलाफ़त में उनको मा'लूम करके नक़्शी पत्थरों से ता'मीर करा दिया था उनमें से मस्जिदे क़ुबा, मस्जिदे फ़ज़ीख़, मस्जिदे बनी क़ुरैज़ा, मस्जिद बग़ला, मस्जिद बनी मुआविया, मस्जिदे फ़तह, मस्जिद क़िब्लतैन वग़ैरह अभी तक बाक़ी है। मौजूदा हुकूमते सऊदिया ने अकषर मसाजिद को उम्दा त़ौर पर मुस्तह़कम (मज़बूत, सुदृढ़) कर दिया है।

इस ह़दीष़ में जिस सफ़र की नमाज़ों का ज़िक्र है वो सात दिन तक जारी रहा था और आपने उसमें 35 नमाज़ें अदा की थी। राविंयाने ह़दीष़ ने अकषर का ज़िक्र नहीं किया। वादी–ए–रौहा की तफ़्सील पहले गुज़र चुकी है।

'क़ालश्शैख़ुब्नु हजर हाज़िहिल मसाजिदु ला युअरफ़ुल यौम हाहुना ग़ैर मस्जिदि ज़िल्ह़लीफ़ति वल मसाजिदिल्लती बिर्रौहा अहलु तिल्कन्नाहियति इन्तहा व इन्नमा कानब्नु उ़मर युसल्ली फ़ी तिल्कल मवाज़िइ तबर्रूकन बिहा व लम यजलिन्नासु यतबर्रकून बिमवाजिअस्सुलहाइ व अम्मा मा रूविय अन उमर अन्नहू करिह ज़ालिक फ़लिअन्नहू ख़शिय अंय्यल्तज़िमन्नासुस्सलात फ़ी तिल्कल मवाज़िअ व यम्बग़ी लिल आलिमि इज़ा राअन्नास यल्तजिमून बिन्नवाफ़िली इल्तिज़ामन शदीदन अंय्यन्हाहुम अ़न्हु'

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर की इस तक़रीर का ख़ुलासा वही है जो ऊपर ज़िक्र हुआ है यानी उन मक़ामात पर नमाज़ महज़ तबर्रुकन पढ़ते थे मगर अवाम इसका इन्तिज़ाम करने लगी तो उलमा के लिये ज़रूरी है कि उनको रोके।

बाब 90 : इमाम का सुतरा मुक़्तदियों को भी किफ़ायत करता है

٩٠- باب سُتْرَةُ الإِمَامِ سُتْرَةُ مَنْ خَلْفَهُ

(493) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने इब्ने शिहाब के वास्ते से बयान किया, उन्होंने उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा से कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं एक गधी पर सवार होकर आया। उस ज़माने में बालिग़ होने वाला ही था। रसूलुल्लाह (ﷺ) मिना में लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे। लेकिन दीवार आप (ﷺ) के सामने न थी। मैं स़फ़ के कुछ ह़िस्से से गुज़र कर सवारी से उतरा। और मैंने गधी को चरने के लिये छोड़ दिया

٤٩٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أَقْبَلْتُ رَاكِبًا عَلَى حِمَارٍ أَتَانٍ وَأَنَا يَوْمَئِذٍ قَدْ نَاهَزْتُ الاحْتِلاَمَ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ يُصَلِّي بِالنَّاسِ بِمِنًى إِلَى غَيْرِ جِدَارٍ، فَمَرَرْتُ بَيْنَ يَدَيْ بَعْضِ الصَّفِّ

नमाज़ को कोई चीज़ तोड़ देती है? तो उन्होंने फ़र्माया कि नहीं! उसे कोई चीज़ नहीं तोड़ती। क्योंकि मुझे उ़र्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी (ﷺ) की बीवी मुतह्हरह ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) खड़े होकर रात को नमाज़ पढ़ते और मैं आपके सामने आपके क़िब्ले के बीच अ़र्ज़ में बिस्तर पर लेटी रहती थी।

(राजेअ : 382)

ابْنِ شِهَابٍ أَنَّهُ سَأَلَ عَمَّهُ عَنِ الصَّلاَةِ يَقْطَعُهَا شَيْءٌ؟ فَقَالَ: لاَ يَقْطَعُهَا شَيْءٌ. أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: لَقَدْ كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَقُومُ فَيُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ وَإِنِّي لَمُعْتَرِضَةٌ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ عَلَى فِرَاشِ أَهْلِهِ.

[راجع: ٣٨٢]

तफ़्सील तोह़फ़तुल अह़वज़ी के हवाले से गुज़र चुका है।

बाब 106 : इस बारे में कि नमाज़ में अगर कोई अपनी गर्दन पर किसी बच्ची को उठा ले तो क्या हुक्म है?

١٠٦ - بَابُ إِذَا حَمَلَ جَارِيَةً صَغِيرَةً عَلَى عُنُقِهِ فِي الصَّلاَةِ

(516) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से ख़बर दी, उन्होंने अ़म्र बिन सुलैम ज़र्क़ी से, उन्होंने अबू क़तादा अंसारी (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उमामा बिन्ते ज़ैनब बिन्ते रसूलुल्लाह (ﷺ) (कुछ औक़ात) को नमाज़ पढ़ते वक़्त उठाए होते थे। अबुल आ़स़ बिन रबीआ बिन अ़ब्दे शम्स की ह़दीष़ में है कि जब सज्दे में जाते तो उतार देते और जब क़याम करते तो उठा लेते।

(दीगर मक़ाम : 5996)

٥١٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ الأَنْصَارِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي وَهُوَ حَامِلٌ أُمَامَةَ بِنْتَ زَيْنَبَ بِنْتِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَلأَبِي الْعَاصِ بْنِ رَبِيعَةَ بْنِ عَبْدِ شَمْسٍ، فَإِذَا سَجَدَ وَضَعَهَا وَإِذَا قَامَ حَمَلَهَا. [طرفه في : ٥٩٩٦]

तश्रीह : ह़ज़रत उमामा बिन्ते अबुल आ़स़ (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) की बड़ी मह़बूब (लाडली) नवासी थी। बाज़ औक़ात इस फ़ितरी मुह़ब्बत की वजह से आँह़ज़रत (ﷺ) उनको, जबकि ये बहुत छोटी थी, नमाज़ में कंधे पर बिठा लिया करते थे। ह़ज़रत उमामा का निकाह़ ह़ज़रत अ़ली कर्रमहुल्लाहु वज्हु से हुआ जबकि ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का इन्तिक़ाल हो चुका था और वो उनसे निकाह़ करने की वसिय्यत भी फ़र्मा गई थी। ये 11 हिजरी का वाक़िआ है। 40 हिजरी में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) शहीद कर दिये गये तो आपकी वसिय्यत के मुताबिक़ ह़ज़रत उमामा (रज़ि.) का अ़क़्दे षानी मुग़ीरा बिन नौफ़ल से हुआ जो ह़ज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब के पोते होते थे। इन्हीं के पास आपने वफ़ात पाई।

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) अह़कामे इस्लाम में वुसअ़त के पेशेनज़र बतलाना चाहते हैं कि ऐसे किसी ख़ास़ मौके पर अगर किसी शख़्स़ ने नमाज़ में अपने किसी प्यारे मासूम बच्चे को कंधे पर बिठा लिया तो इससे नमाज़ फ़ासिद न होगी।

बाब 107 : ऐसे बिस्तर की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ना जिस पर हाइज़ा औरत हो

١٠٧ - بَابُ إِذَا صَلَّى إِلَى فِرَاشٍ فِيهِ حَائِضٌ

M-09825696131

(636) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी ज़िब ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम ज़ुहरी ने सईद बिन मुसय्यिब से बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से (दूसरी सनद) और ज़ुहरी ने अबू सलमा से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से, आपने फ़र्माया कि तुम लोग तक्बीर की आवाज़ सुन लो तो नमाज़ के लिए (मा'मूली चाल से) चल पड़ो। सुकून और वक़ार को (बहरहाल) लाज़िम पकड़े रहो और दौड़कर मत आओ। फिर नमाज़ का जो हिस्सा मिले उसे पढ़ लो, और जो न मिल सके उसे बाद में पूरा कर लो। (दीगर मक़ाम : 908)

٦٣٦- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. ح وَعَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا سَمِعْتُمُ الإِقَامَةَ فَامْشُوا إِلَى الصَّلاَةِ وَعَلَيْكُمْ بِالسَّكِيْنَةِ وَالْوَقَارِ، وَلاَ تُسرِعُوا، فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا، وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوا)).

[طرفه في : ٩٠٨].

बाब 22 : नमाज़ की तक्बीर के वक़्त जब लोग इमाम को देखे तो किस वक़्त खड़े हों

٢٢- بَابُ مَتَى يَقُومُ النَّاسُ إِذَا رَأَوُا الإِمَامَ عِنْدَ الإِقَامَةِ؟

(637) हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा मुझे यह्या ने अ़ब्दुल वह्हाब बिन अबी क़तादा से ये ह़दीष़ लिखकर भेजी कि वो अपने बाप से बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब नमाज़ के लिए तक्बीर कही जाए तो उस वक़्त तक न खड़े हो जब तक मुझे निकलते हुए न देख लो। (दीगर मक़ाम : 638, 909)

٦٣٧- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ: كَتَبَ إِلَيَّ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أُقِيْمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ تَقُومُوا حَتَّى تَرَوْنِي)).

[طرفاه في : ٦٣٨، ٩٠٩].

तश्रीह़ : इस मसले में कई क़ौल है, इमाम शाफ़िई (रह.) के नज़दीक तकबीर ख़त्म होने के बाद मुक़्तदियों को उठना चाहिये, इमाम मालिक (रह.) कहते हैं तकबीर शुरू होते ही– इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) कहते हैं कि जब मुअज़्ज़िन **ह़य्य अ़लस्सलाह** कहे और जब मुअज़्ज़िन **क़द क़ामतिस्सलाह** कहे तो इमाम नमाज़ शुरू कर दे। इमाम अह़मद बिन ह़ंबल (रह.) फ़र्माते हैं कि **ह़य्य अ़लस्सलाह** पर उठें। इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब की ह़दीष़ लाकर ये इशारा किया कि जब इमाम मस्जिद में न हो तो मुक़्तदियों को चाहिए कि बैठे रहे और जब इमाम को देख ले तब नमाज़ के लिये खड़े हो।

बाब 23 : नमाज़ के लिए जल्दी न उठे बल्कि इत्मीनान और सुकून व सहूलत के साथ उठे

٢٣- بَابُ لاَ يَسْعَى إِلَى الصَّلاَةِ مُسْتَعْجِلاً، وَلْيَقُمْ إِلَيْهَا بِالسَّكِيْنَةِ وَالْوَقَارِ

(638) हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहाकि हमसे शैबान ने यह्या बिन अबी कष़ीर से बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा से, उन्होंने अपने बाप अबू

٦٣٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي

क़तादा हारिष़ बिन रुबई (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि नमाज़ की तक्बीर हो तो जब तक मुझे देख न लो खड़े न हो और आहिस्तगी को लाज़िम रखो। शैबान के साथ इस हदीष़ को यह्या से अ़ली बिन मुबारक ने भी रिवायत किया है। (राजेअ़ : 637)

قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ تَقُومُوا حَتَّى تَرَوْنِي، وَعَلَيْكُمْ بِالسَّكِينَةِ)) تَابَعَهُ عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ. [راجع: ٦٣٧]

जिसे ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुल जुमुआ में निकाला है। मा'लूम हुआ कि शिरकते जमाअ़त के लिये भागदौड़ मुनासिब नहीं बल्कि सुकून और वक़ार के साथ चलकर शरीके जमाअ़त होना चाहिए। फिर जो नमाज़ छूट जाए वो बाद में पढ़ ले। जमाअ़त का ष़वाब बहरहाल हासिल होगा, इन्शाअल्लाह।

बाब 24 : क्या मस्जिद से किसी ज़रूरत की वजह से अज़ान या इक़ामत के बाद भी कोई शख़्स निकल सकता है?

٢٤- بَابُ هَلْ يَخْرُجُ مِنَ الْمَسْجِدِ لِعِلَّةٍ؟

(639) हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, वो स़ालेह बिन कैसान से, वो इब्ने शिहाब से, वो अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान से, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (एक दिन हुज्रे से) बाहर तशरीफ़ लाए, इक़ामत कही जा चुकी थी और सफ़ें बराबर की जा चुकी थीं। आप जब मुसल्ले पर खड़े हुए तो हम इंतिज़ार कर रहे थे कि अब आप तक्बीर कहें। लेकिन आप वापस तशरीफ़ ले गए और फ़र्माया कि अपनी अपनी जगह पर ठहरे रहो। हम उसी हालत में ठहरे रहे यहाँ तक कि आप दोबारा तशरीफ़ लाए, तो सरे मुबारक से पानी टपक रहा था, आपने ग़ुस्ल किया था। (राजेअ़ : 275)

٦٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ خَرَجَ وَقَدْ أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ وَعُدِّلَتِ الصُّفُوفُ، حَتَّى إِذَا قَامَ فِي مُصَلاَّهُ انْتَظَرْنَا أَنْ يُكَبِّرَ، انْصَرَفَ قَالَ: ((عَلَى مَكَانِكُمْ)). فَمَكَثْنَا عَلَى هَيْئَتِنَا، حَتَّى خَرَجَ إِلَيْنَا يَنْطِفُ رَأْسُهُ مَاءً وَقَدِ اغْتَسَلَ. [راجع: ٢٧٥]

तश्रीह : आप हालते ज़नाबत में थे मगर याद न रहने की वजह से (नमाज़ के लिये) तशरीफ़ ले आए। बाद में मा'लूम हुआ तो वापस तशरीफ़ ले गये। इस हदीष़ से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये मसला ष़ाबित किया कि कोई ऐसी ही सख़्त ज़रूरत दरपेश आ जाए तो अज़ान व तकबीर के बाद भी आदमी मस्जिद के बाहर निकल सकता है। जिस हदीष़ में मुमानअ़त आई है वहां बिला ज़रूरत महज़ बिला वजहे नफ़्सानी ख़्वाहिश के बाहर निकलना मुराद है।

मुमानअ़त वाली हदीष़ स़ह़ी मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैराह (रज़ि.) से मरवी है और मुसनद अह़मद में भी है। इन अहादीष़ को नक़ल करने के बाद ह़ज़रत अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं–

'वल हदीष़ानि यदुल्लानि अला तहरीमिल ख़ुरूजि मिनल मस्जिदि बअ़द सिमाइल अज़ानि लिग़ैरिल वुज़ूइ व क़ज़ाइल हाज़ति व मा तदउ़ज़्ज़रूरतु इलैहि हत्ता युस़ल्लिय फ़ीहि तिल्कस्सलात लिअन्न ज़ालिकल मस्जिद क़द तअय्युनुन लितिल्कस्सलाति' (नैलुल औतार)

यानी मस्जिद से अज़ान सुनने के बाद निकलना हराम है मगर वुज़ू या क़ज़ा–ए–ह़ाजत या और कोई ज़रूरी काम हो तो इजाज़त है वर्ना जिस मस्जिद में रहते हुए अज़ान सुन ली अब उसी मस्जिद में नमाज़ की अदायगी लाज़िम है क्योंकि उस नमाज़ के लिये वही मस्जिद मुतअय्यिन (निर्धारित) हो चुकी है। इस हदीष़ से ये भी ष़ाबित हुआ कि अह़कामे शरीअ़त व त़रीक़–ए–इबादत में भूल हो सकती है ताकि वो वह्ये–आसमानी के मुत़ाबिक़ उस भूल का सुधार कर सकें।

बाब 25 : अगर इमाम मुक़्तदियों से कहे कि तुम लोग इसी हालत में ठहरे रहो तो जब तक वो लौटकर आए उसका इंतिज़ार करें (और अपनी हालत पर ठहरे रहें)

٢٥- بَابُ إِذَا قَالَ الإِمَامُ ((مَكَانَكُمْ)) حَتَّى يَرْجِعَ انْتَظَرُوهُ

(640) हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा कि हमें मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने ख़बर दी कि कहा हमसे औज़ाई ने इब्ने शिहाब ज़ुह्री से बयान किया, उन्होंने अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान से उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि उन्होंने फ़र्माया कि नमाज़ के लिए इक़ामत कही जा चुकी थी और लोगों ने सफ़ें सीधी कर ली थीं। फिर रसूले करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए और आगे बढ़े। लेकिन हालते जनाबत में थे (मगर पहले ख़्याल न रहा) इसलिए आपने फ़र्माया कि तुम लोग अपनी-अपनी जगहों पर ठहरे रहो। फिर आप (ﷺ) वापस तशरीफ़ लाए तो आप ग़ुस्ल किये हुए थे और सर से पानी टपक रहा था। फिर आप (ﷺ) ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई। (राजेअ़ : 275)

٦٤٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ، فَسَوَّى النَّاسُ صُفُوفَهُمْ، فَخَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَتَقَدَّمَ وَهُوَ جُنُبٌ. ثُمَّ قَالَ: ((عَلَى مَكَانِكُمْ)). فَرَجَعَ فَاغْتَسَلَ، ثُمَّ خَرَجَ وَرَأْسُهُ يَقْطُرُ مَاءً، فَصَلَّى بِهِمْ.
[راجع: ٢٧٥]

तश्रीह : हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मां साहब फ़र्माते हैं कि बाज़ नुस्ख़ों में यहाँ इतनी इबारत ज़ायद (अधिक) है– 'क़ील लिअबी अ़ब्दिल्लाहि अय अल बुख़ारी अन्न बदअ लिअहदिना मिस़्ल हाज़ा यफ़अलु कमा यफ़अलुन्नबिय्यु ﷺ फ़अय्यु शैइन यस्नउ फ़ क़ील यन्तजिरूनहू क़ियामन औ क़ुऊदन क़ाल इन कान क़ब्लत्तक्बीरि लिल इहरामि फ़ला बास अंय्यक़ऊदू व इन कान बअ़दत्तक्बीरि इन्तज़िरूहु हाल कौनिहिम क़ियामन'

यानी लोगों ने इमाम बुख़ारी (रह.) से कहा अगर हममें किसी को ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो तो वो क्या करें? उन्होंने कहा कि जैसा आँहज़रत (ﷺ) ने किया वैसा करें। लोगों ने कहा तो मुक़्तदी इमाम का इन्तिज़ार खड़े रहकर करते रहे या बैठ जाये। उन्होंने कहा अगर तकबीर तहरीमा हो चुकी है तो खड़े खड़े इन्तिज़ार करें वर्ना बैठ जाने में कोई क़बाहत नहीं है।

बाब 26 : आदमी यूँ कहे कि हमने नमाज़ नहीं पढ़ी तो इस तरह कहने में कोई क़बाहत नहीं है

٢٦- بَابُ قَوْلِ الرَّجُلِ: مَا صَلَّيْنَا

(641) हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शैबान ने यह्या के वास्ते से बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सलमा से सुना, वो कहते थे कि हमें जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ग़ज़्व–ए–ख़ंदक़ के दिन हाज़िर हुए और कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़सम अल्लाह की सूरज ग़ुरूब होने को ही था कि मैं अब अ़स्र की नमाज़ पढ़ सका हूँ। आप जब हाज़िरे

٦٤١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ يَقُولُ: أَخْبَرَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ جَاءَهُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَوْمَ الْخَنْدَقِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَاللهِ مَا كِدْتُ أَنْ أُصَلِّيَ حَتَّى كَادَتِ الشَّمْسُ تَغْرُبُ،

M-09825696131

सुबह शाम बार-बार हाज़िरी देता है। अल्लाह तआला जन्नत में उसकी मेहमानी का सामान करेगा। वो सुबह शाम जब भी मस्जिद में जाएगा।

قَالَ: ((مَنْ غَدَا إِلَى الْمَسْجِدِ وَرَاحَ أَعَدَّ اللهُ لَهُ نُزُلَهُ مِنَ الْجَنَّةِ كُلَّمَا غَدَا أَوْ رَاحَ)).

बाब 38 : जब नमाज़ की तक्बीर होने लगे तो फ़र्ज़ नमाज़ के सिवा और कोई नमाज़ नहीं पढ़ सकता

٣٨- بَابُ إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَلاَ صَلاَةَ إِلاَّ الْمَكْتُوبَةَ

(663) हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने अपने बाप सअ़द बिन इब्राहीम से बयान किया, उन्होंने ह़फ़्स बिन आ़सिम से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बुहैना से, कहा कि नबी करीम (ﷺ) का गुज़र एक शख़्स पर हुआ (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन बिश्र ने बयान किया, कहा कि हमसे बह्ज़ बिन असद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझे सअ़द बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा कि मैंने ह़फ़्स बिन आ़सिम से सुना, कहा कि मैंने क़बीला अज़्द के एक स़ाहब से जिनका नाम मालिक बिन बुहैना (रज़ि.) था, सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की नज़र एक ऐसे नमाज़ी पर पड़ी जो तक्बीर के बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़ रहा था। आँहुज़ूर (ﷺ) जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो लोग उस शख़्स के इर्द-गिर्द जमा हो गए और आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया क्या सुबह की चार रकअ़तें पढ़ता है? क्या सुबह की चार रकअ़तें हो गईं? इस ह़दीष़ की मुताबअ़त गुंदर और मुआ़ज़ ने शुअ़बा से की है जो मालिक से रिवायत करते हैं।

٦٦٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَالِكٍ ابْنِ بُحَيْنَةَ قَالَ: ((مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ بِرَجُلٍ.)) ح قَالَ : وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ: حَدَّثَنَا بَهْزُ بْنُ أَسَدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعْدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: سَمِعْتُ حَفْصَ بْنَ عَاصِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلاً مِنَ الأَزْدِ يُقَالُ لَهُ مَالِكُ ابْنُ بُحَيْنَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَأَى رَجُلاً وَقَدْ أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ، فَلَمَّا انْصَرَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لاَثَ بِهِ النَّاسُ، وَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الصُّبْحَ أَرْبَعًا، الصُّبْحَ أَرْبَعًا)) تَابَعَهُ غُنْدَرٌ وَمُعَاذٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مَالِكٍ.

इब्ने इस्हाक़ ने सअ़द से, उन्होंने ह़फ़्स से, वो अ़ब्दुल्लाह बिन बुहैना से और ह़म्माद ने कहा कि हमें सअ़द ने ह़फ़्स के वास्ते से ख़बर दी और वो मालिक के वास्ते से।

وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ: عَنْ سَعْدٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ بُحَيْنَةَ. وَقَالَ حَمَّادٌ: أَخْبَرَنَا سَعْدٌ عَنْ حَفْصٍ عَنْ مَالِكٍ.

तश्रीह : ह़ज़रत सय्यिदुना इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ जिन लफ़्ज़ों में बाब मुनअ़क़िद किया है ये लफ़्ज़ ही ख़ुद इस ह़दीष में वारिद हुआ है, जिसे इमाम मुस्लिम और सुनन वालों ने निकाला है। मुस्लिम बिन ख़ालिद की रिवायत में इतना ज़्यादा और है कि फ़ज्र की सुन्नतें भी न पढ़ें।

ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज्ज़मा स़ाह़ब मुह़द्दिष हैदराबादी (रह.) फ़र्माते हैं– हमारे इमाम अह़मद बिन ह़ंबल और अहले ह़दीष का यही क़ौल है कि जब फ़र्ज़ की तकबीर शुरू हो जाये तो फिर कोई नमाज़ न पढ़े न फ़ज्र की सुन्नतें न और कोई सुन्नत या फ़र्ज़, बस उसी फ़र्ज़ में शरीक हो जाये जिसकी तकबीर हो रही है।

और उसके हाथ में खाने की चीज़ हो तो वो क्या करे?

الصَّلَاةِ وَبِيَدِهِ مَا يَأْكُلُ

(675) हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने सालेह बिन कैसान से बयान किया, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने कहा कि मुझको जा'फ़र बिन अम्र बिन उमय्या ने ख़बर दी कि उनके बाप अम्र बिन उमय्या ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि आप बकरी की रान का गोश्त काट–काटकर खा रहे थे। इतने में आप नमाज़ के लिए बुलाए गए। आप खड़े हो गए और छुरी डाल दी, फिर आपने नमाज़ पढ़ाई और वुज़ू नहीं किया। (राजेअ : 208)

٦٧٥ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَعْفَرُ بْنُ عَمْرِو بْنِ أُمَيَّةَ أَنَّ أَبَاهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَأْكُلُ ذِرَاعًا يَحْتَزُّ مِنْهَا، فَدُعِيَ إِلَى الصَّلَاةِ فَقَامَ فَطَرَحَ السِّكِّينَ فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. [راجع: ٢٠٨]

तश्रीह : इस बाब और इसके तहत इस हदीष के लाने से हज़रत इमाम बुख़ारी (रज़ि.) को ये षाबित करना मन्ज़ूर है कि पिछली हदीष का हुक्म इस्तिहबाबन था वुजूबन न था वर्ना आँहज़रत (ﷺ) खाना छोड़कर नमाज़ के लिए क्यों जाते। बाज़ कहते हैं इमाम का हुक्म अलग है उसे खाना छोड़कर नमाज़ के लिये जाना चाहिए। हदीष से ये भी षाबित हुआ कि गोश्त खाने से वुज़ू नहीं टूटता।

बाब 44 : उस आदमी के बारे में जो अपने घर के कामकाज में मसरूफ़ था कि तक्बीर हुई और वो नमाज़ के लिए निकल खड़ा हुआ

٤٤ - بَابُ مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ أَهْلِهِ فَأُقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَخَرَجَ

(676) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे हकम बिन उत्बा ने इब्राहीम नख़ई से बयान किया, उन्होंने अस्वद बिन ज़ैद से, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा कि रसूलल्लाह (ﷺ) अपने घर में क्या–क्या करते रहे थे। आपने बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने घर के काम–काज यानी अपने घरवालियों की मदद किया करते थे और जब नमाज़ का वक़्त होता तो फ़ौरन (काम–काज छोड़कर) नमाज़ के लिए चले जाते थे। (दीगर मक़ाम : 5363, 6039)

٦٧٦ - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا الْحَكَمُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْنَعُ فِي بَيْتِهِ؟ قَالَتْ: كَانَ يَكُونُ فِي مِهْنَةِ أَهْلِهِ - تَعْنِي فِي خِدْمَةِ أَهْلِهِ - فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ خَرَجَ إِلَى الصَّلَاةِ. [طرفاه في: ٥٣٦٣، ٦٠٣٩].

बाब 45 : कोई शख़्स सिर्फ़ ये बतलाने के लिए कि आँहज़रत (ﷺ) नमाज़ क्यूँकर पढ़ा करते थे और आपका तरीक़ा क्या था नमाज़ पढ़ाए तो कैसा है?

٤٥ - بَابُ مَنْ صَلَّى بِالنَّاسِ وَهُوَ لَا يُرِيدُ إِلَّا أَنْ يُعَلِّمَهُمْ صَلَاةَ النَّبِيِّ ﷺ وَسُنَّتَهُ

(677) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने अबू क़िलाबा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद से बयान किया, उन्होंने कहा कि मालिक बिन हुवैरिष (सहाबी) एक बार हमारी

٦٧٧ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ قَالَ: جَاءَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ فِي

बाब 55 : अगर इमाम अपनी नमाज़ को पूरा न करे और मुक़्तदी पूरा करें

٥٥- بَابُ إِذَا لَمْ يُتِمَّ الإِمَامُ وَأَتَمَّ مَنْ خَلْفَهُ

(694) हमसे फ़ज़ल बिन सहल ने बयान किया, कहा कि हमसे हसन बिन मूसा अश्यब ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया ज़ैद बिन असलम से, उन्होंने अ़ता बिन यसार से, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह

٦٩٤- حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُوسَى الأَشْيَبُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ

(रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि इमाम लोगों को नमाज़ पढ़ाते हैं। पस अगर इमाम ने ठीक नमाज़ पढ़ाई तो उसका ष़वाब तुम्हें मिलेगा और अगर ग़लती की तो भी (तुम्हारी नमाज़ का) ष़वाब तुमको मिलेगा और ग़लती का वबाल उन पर रहेगा।

عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يُصَلُّونَ لَكُمْ، فَإِنْ أَصَابُوا فَلَكُمْ، وَإِنْ أَخْطَأُوا فَلَكُمْ وَعَلَيْهِمْ)).

M-09825696131

यानी इमाम की नमाज़ में नुक़्स रह जाने से मुक़्तदियों की नमाज़ में कोई ख़लल न होगा जब उन्होंने तमाम शरायत और अरकान को पूरा किया हो।

बाब 56 : बाग़ी और बिदअ़ती की इमामत का बयान

٥٦- بَابُ إِمَامَةِ الْمَفْتُونِ وَالْمُبْتَدِعِ

और बिदअ़ती के बारे में इमाम हसन बस़री (रह.) ने कहा कि तू उसके पीछे नमाज़ पढ़ ले उसकी बिदअ़त उसके सर रहेगी।

وَقَالَ الْحَسَنُ : صَلِّ وَعَلَيْهِ بِدْعَتُهُ.

(695) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़र्याबी ने कहा कि हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, कहा हमसे इमाम ज़ुहरी ने हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान से नक़ल किया। उन्होंने उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी बिन ख़ियार से कि वो ख़ुद ह़ज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) के पास गए। जबकि बाग़ियों ने उनको घेर रखा था। उन्होंने कहा कि आप ही आ़म मुसलमानों के इमाम हैं मगर आप पर जो मुसीबत है वो आपको मा'लूम है। इन हालात में बाग़ियों का मुक़र्रर किया हुआ इमाम नमाज़ पढ़ा रहा है। हम डरते हैं कि उसके पीछे नमाज़ पढ़कर गुनहगार न हो जाएँ। ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने जवाब दिया नमाज़ तो जो लोग काम करते हैं उन कामों में सबसे ज़्यादा बेहतरीन काम है। तो वो जब अच्छा काम करें तुम भी उनके साथ मिलकर अच्छा काम करो और जब वो बुरा काम करें तो तुम उनकी बुराई से अलग रहो और मुहम्मद बिन यज़ीद ज़ुबैदी ने कहा कि इमाम ज़ुहरी ने फ़र्माया हम तो ये समझते हैं कि हिजड़े के पीछे नमाज़ न पढ़ें। मगर ऐसी ही लाचारी हो तो और बात है जिसके बग़ैर कोई चारा न हो।

٦٩٥- قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: وَقَالَ لَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَدِيِّ بْنِ خِيَارٍ أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَهُوَ مَحْصُورٌ فَقَالَ : إِنَّكَ إِمَامُ عَامَّةٍ، وَنَزَلَ بِكَ مَا تَرَى، وَيُصَلِّي لَنَا إِمَامُ فِتْنَةٍ وَنَتَحَرَّجُ. فَقَالَ: الصَّلاَةُ أَحْسَنُ مَا يَعْمَلُ النَّاسُ، فَإِذَا أَحْسَنَ النَّاسُ فَأَحْسِنْ مَعَهُمْ، وَإِذَا أَسَاؤُوا فَاجْتَنِبْ إِسَاءَتَهُمْ. وَقَالَ الزُّبَيْدِيُّ: قَالَ الزُّهْرِيُّ: لاَ نَرَى أَنْ يُصَلَّى خَلْفَ الْمُخَنَّثِ إِلاَّ مِنْ ضَرُورَةٍ لاَ بُدَّ مِنْهَا.

तश्रीह : मफ़्तून का तर्जुमा बाग़ी किया है जो सच्चे बरहक़ इमाम से फिर जाये और बिदअ़ती से आम बिदअ़ती मुराद है ख्वाह उसकी बिदअ़त ए'तिक़ादी हो जैसे शीआ़, ख्वारिज, मुर्जिया, मुअ़तज़ला वग़ैरह की, ख्वाह अ़मली हो जैसे सेहरा बान्धने वाले, तीजा, दसवां करने वाले, ता'ज़िया या अ़लम उठाने वाले, क़ब्रों पर चराग़ां करने वाले, मीलाद या ग़िना या मरषिया की मजलिस करने वाले की, बशर्ते कि उनकी बिदआ़त कुफ़्र और शिर्क की हद तक न पहुँचे। अगर कुफ़्र या शिर्क के दर्जे पर पहुंच जाए तो उनके पीछे नमाज़ दुरुस्त नहीं। तसहील में हैं कि सुन्नत कहते हैं हदीष़ को और जमाअ़त से मुराद सहाबा और ताबेईन है जो लोग हदीष शरीफ़ पर चलते हैं और ए'तिक़ाद और अ़मल में सहाबा और ताबेईन के तरीक पर है वह अहले सुन्नत वल जमाअ़त है बाक़ी सब बिदअ़ती हैं। (मौलाना वहीदुज़्ज़मा)

M-09825696131

बाब 75 : इस बारे में कि स़फ़ें पूरी न करने वालों पर (कितना गुनाह है)

٧٥- بَابُ إِثْمِ مَنْ لَمْ يُتِمَّ الصُّفُوفَ

(724) हमसे मुआज़ बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे फ़ज़ल बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन उबैद ताई ने बयान किया बिश्र बिन यसार अंसारी से, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि जब वो (बसरा से) मदीना आए, तो आपसे पूछा गया कि नबी करीम (ﷺ) के अहदे मुबारक और हमारे इस दौर में आपने क्या फ़र्क़ पाया। फ़र्माया कि और तो कोई बात नहीं सिर्फ़ लोग स़फ़ें बराबर नहीं करते।

٧٢٤- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ أَسَدٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا الْفَضْلُ بْنُ مُوسَى قَالَ: أَخْبَرَنَا سَعِيْدُ بْنُ عُبَيْدٍ الطَّائِيُّ عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ الأَنْصَارِيِّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّهُ قَدِمَ الْمَدِيْنَةَ، فَقِيْلَ لَهُ، مَا أَنْكَرْتَ مِنَّا مُنْذُ يَوْمَ عَهِدْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: مَا أَنْكَرْتُ شَيْئًا إِلاَّ أَنَّكُمْ لاَ تُقِيْمُونَ الصُّفُوفَ.

और उक़्बा बिन उबैद ने बशीर बिन यसार से यूँ रिवायत किया कि अनस (रज़ि.) हमारे पास मदीना आए। फिर यही हदीष़ बयान की।

وَقَالَ عُقْبَةُ بْنُ عُبَيْدٍ عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ: قَدِمَ عَلَيْنَا أَنَسُ الْمَدِيْنَةِ.. بِهَذَا.

तश्रीह : इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये हदीष लाकर सफ़ बराबर करने का वुजूब षाबित किया क्योंकि सुन्नत के तर्क को हज़रत रसूले करीम (ﷺ) के ख़िलाफ़ करना नहीं कह सकते और हज़रत रसूले करीम (ﷺ) के ख़िलाफ़ करना क़ुर्आन की रोशनी में सज़ा का मुस्तहिक़ होगा। **'फ़ल्यहज़रिल्लज़ीन युख़ालिफ़ून अन अम्रिही अन तुसीबहुम फ़ित्नतुन औ युसीबुहुम अज़ाबन अलीमुन'** (सूरह नूर : 63) तसहीलुल क़ारी में ह कि हमारे ज़माने में लोगों ने सुन्नत के मुवाफ़िक़ सफ़ें बराबर करना छोड़ दी है। कहीं तो ऐसा होता है कि आगे पीछे बेतरतीब खड़े होते हैं, कहीं बराबर भी करते हैं तो मोंढे से मोंढा और टखने से टखना नहीं मिलाते बल्कि ऐसा करने को नाज़ैबा जानते हैं। ख़ुदा की मार उनकी शक्लऔर तहज़ीब पर। नमाज़ी लोग परवरदिगार की फ़ौज हैं। फ़ौज में जो कोई क़ायदे की पाबन्दी न करे वो सख़्त सज़ा के क़ाबिल होता है। (मौलाना वहीदुज़्ज़मा मरहूम)

बाब 76 : स़फ़ में मोंढा और क़दम से क़दम मिलाकर खड़े होने का बयान

٧٦- بَابُ إِلْزَاقِ الْمُنْكِبِ بِالْمُنْكِبِ وَالْقَدَمِ بِالْقَدَمِ فِي الصَّفِّ

और नोअमान बिन बशीर स़हाबी ने कहा कि मैंने देखा (स़फ़ में) एक आदमी हममें से अपना टख़ना अपने पास वाले दूसरे आदमी के टख़ने से मिलाकर खड़ा होता।

وَقَالَ النُّعْمَانُ بْنُ بَشِيْرٍ : رَأَيْتُ الرَّجُلَ مِنَّا يُلْزِقُ كَعْبَهُ بِكَعْبِ صَاحِبِهِ.

(725) हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ुहैर बिन मुआविया ने हमीद से बयान किया, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से, उन्होंने नबी अकरम (ﷺ) से कि आपने फ़र्माया, स़फ़ें बराबर कर लो। मैं तुम्हें अपने पीछे से भी देखता रहता हूँ और हममें से हर शख़्स ये करता कि (स़फ़ में)

٧٢٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((أَقِيْمُوا صُفُوفَكُمْ، فَإِنِّي أَرَاكُمْ مِنْ وَرَاءِ ظَهْرِيْ. وَكَانَ أَحَدُنَا يُلْزِقُ

M-09825696131

अपना मोंढा अपने साथी के मोंढे से और अपना क़दम उसके क़दम से मिलाता था। (राजेअ: 718)

مَنْكِبَهُ بِمَنْكِبِ صَاحِبِهِ وَقَدَمَهُ بِقَدَمِهِ)).

[راجع: ٧١٨]

तश्रीह : हज़रत इमामुद्दुन्या फ़िल हदीष इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ मुतफ़र्रिक़ अबवाब मुनअ़क़िद फ़र्माकर और उनके तहत अनेक अहादीष लाकर सफ़ों को सीधा करने की अहमियत पर रोशनी डाली है। इस सिलसिले का ये आख़री बाब है जिसमें आपने बतलाया है कि सफ़ों की सीधी करने का मतलब ये है कि सफ़ में हर नमाज़ी अपने करीब वाले नमाज़ी के मोंढे से मोंढा और क़दम से क़दम और टख़ने से टख़ना मिलाकर खड़ा हो जैसा कि हज़रत नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि.) का बयान नक़ल हुआ कि हम अपने साथी के टख़ने से टख़ना मिलाकर खड़े हुआ करते थे। हज़रत अनस (रज़ि.) का बयान भी मौजूद है।

नीज़ फ़तहुलबारी, जिल्द 2/स: 176 पर हज़रत अनस (रज़ि.) ही के ये अल्फ़ाज़ भी मन्क़ूल है कि **'लौ फ़अ़लतु ज़ालिक बिअहदिहिमिल यौम लि नफ़र कअन्नहू बग़्लुन शमूसुन'** अगर मैं आज के नमाज़ियों के साथ क़दम से क़दम और टखने से टख़ना मिलाने की कोशिश करता हूँ तो वो इससे सरकश खच्चर की तरह दूर भागते हैं। इससे मा'लूम होता है कि अहदे सहाबा के खत्म होते होते मुसलमान इस दर्जा ग़ाफ़िल होने लगे थे कि हिदायते नबवी के मुताबिक़ सफ़ों को सीधा करने और क़दमों से क़दम मिलाने का अ़मल एक अजनबी अ़मल बनने लग गया था। जिस पर हज़रत अनस (रज़ि.) को ऐसा कहना पड़ा। इस बारे में और भी कई अहादीष वारिद हुई हैं,

'रवा अबू दाऊद वल इमामु अहमद अनिब्नि उमर अन्नहू अलैहिस्सलातु वस्सलाम क़ाल अक़ीमू सुफ़ूफ़कुम व हाज़ू बैनल मनाकिबि व सद्दुलख़िलल व लय्यिनू बिअयदी इख़्वानिकुम ला तज़िरु फ़ुरूजातिश्शैतानि मन वसल सफ़्फ़न व वसलहुल्लाहु व मन क़तअ सफ़्फ़न क़तअहुल्लाहु व रवल्बज़्ज़ारु बिइस्नादिन हसनिन अन्हु अलैहिस्सलातु वस्सलाम मन सद्द फ़ुर्जतम्मिनस्सफ़्फ़ि ग़फ़रल्लाहु लहू व फ़ी अबी दाऊद अन्हु अलैहिस्सलातु वस्सलाम क़ाल खियारुकुम अल्यनुकुम मनाकिब फ़िस्सलाति' यानी अबू दाऊद और मुसनद अहमद में अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से मरवी है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि सफ़ें सीधी करो और कन्धों को बराबर करो। यानी कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़े हो जाओ और जो सुराख़ दो नमाज़ियों के दर्मियान नज़र आये उसे बन्द कर दो और अपने भाईयों के साथ नर्मी इख़्तियार करो और शैतान के घुसने के लिये सुराख़ की जगह न छोड़ो। याद रखो जिसने सफ़ को मिलाया अल्लाह उसको भी मिला देगा और जिसने सफ़ को क़तअ़ किया ख़ुदा उसको भी काट देगा। बज़्ज़ार में सनद हसन से है कि जिसने सफ़ की दरार को बन्द किया अल्लाह उसको बख़्शे। अबू दाऊद में ह कि तुममें वही बेहतर है जो नमाज़ में कन्धों को नरमी के साथ मिलाये रखे।

'व अनिन्नुअमानिब्नि बशीरिन क़ाल कान रसूल ﷺ युसव्वी सुफ़ूफ़ना कअन्नमा युसव्वी बिहिलक़दाहु हत्ता राअ इन्न क़द अक़ल्ना अन्हु षुम्म ख़रज यौमन फ़क़ाम हत्ता क़ाद अंय्युकब्बिर फ़राअ रजुलन बादियन सदरहू मिनस्सफ़्फ़ि फ़क़ाल इबादल्लाहि लतुसव्वुन सुफ़ूफ़कुम औ लियुख़ालिफ़न्नल्लाहु बैन वुजूहिकुम रवाहुल जमाअतु इल्लल बुख़ारी फ़इन्न लहू मिन्हु लतुसव्वुन सुफ़ूफ़कुम औ लयुख़ालिफ़न्नल्लाहु बैन वुजूहिकुम व लि अहमद व अबी दाऊद फ़ी रिवायतिन क़ाल फ़राइतुर्रजुल युल्ज़िक़ु कअबहू बिकअबि साहिबिही व रुक्बतहू बिरुक्बतिही व मन्कबहू बिमन्किबिही' (नैलुल औतार जिल्द 3 स. 199)

यानी नोअ़मान बिन बशीर से रिवायत है कि रसूले करीम (ﷺ) हमारी सफ़ों को इस तरह सीधा कराते, गोया उसके साथ तीर को सीधा किया जायेगा। यहाँ तक कि आपको इत्मीनान हो गया कि हमने इस मसले को आपसे ख़ूब समझ लिया है। एक दिन आप मुसल्ला पर तशरीफ़ लाये और एक आदमी को देखा कि उसका सीना सफ़ से बाहर निकला हुआ है। आपने फ़र्माया, अल्लाह के बन्दों! अपनी सफ़ों को बराबर कर लो वर्ना अल्लाह तआ़ला तुम्हारे बाहमी तौर पर इख़्तिलाफ़ डाल देगा। बुख़ारी शरीफ़ में यूँ कि अपनी सफ़ों को बिल्कुल बराबर कर लिया करो। वर्ना तुम्हारे चेहरों में आपस में अल्लाह मुख़ालफ़त डाल देगा और अहमद और अबू दाऊद की रिवायत में है मैंने देखा कि हर नमाज़ी अपने साथी के कन्धे से कन्धा और क़दम से क़दम और टख़ने से टख़ना मिलाया करता था।

(734) हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि अबुज़्ज़िनाद ने मुझसे बयान किया अअ़रज के वास्ते से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इमाम इसलिए है कि उसकी पैरवी की जाए, इसलिए जब वो तक्बीर कहे तो तुम भी तक्बीर कहो। जब वो रुकूअ़ करे तो तुम भी रुकूअ़ करो और जब वो समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह कहे तो तुम रब्बना व लकल हम्द कहो और जब वो सज्दा करे तो तुम भी सज्दा करो और जब वो बैठकर नमाज़ पढ़े तो तुम सब भी बैठकर नमाज़ पढ़ो।

(राजेअ़ : 722)

٧٣٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّمَا جُعِلَ الإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ، فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا، وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا، وَإِذَا قَالَ: سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقُولُوا: رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، وَإِذَا سَجَدَ فَاسْجُدُوا، وَإِذَا صَلَّى جَالِسًا فَصَلُّوا جُلُوسًا أَجْمَعُونَ)). [راجع: ٧٢٢]

तश्रीह : इस बारे में भी क़दरे इख़्तिलाफ़ है बेहतर यही है कि इमाम व मुक़्तदी दोनों **समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह** कहें और फिर दोनों **रब्बना व लकल हम्द** कहें। हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब शैख़ुल हदीष मुबारकपुरी हदीषे अबू हुरैरह (रज़ि.) **'षुम्मा यक़ूलु समिअ़ल्लाहु लिनन हमिदहू हीन यर्फ़उ सुल्बहू मिनर्रक्अ़ति षुम्मा यक़ूलु व हुम क़ाइमुन रब्बना व लकल हम्द'** के तहत फ़र्माते हैं।

'रब्बना लकल हम्दु बिहज़्फ़िल्वावि व फ़ी रिवायतिन बिइष्बातिहा व क़द तक़द्दम अन्नर्रिवायत बिषुबूतिल वावि अर्जहू व हिय आतिफ़तुन अला मुक़द्दरिन अय रब्बना अतअ़नाक व हमदनाक व लकल हम्दु व क़ील ज़ाइदतुन क़ालल अस्मई सअलतु अबा अम्रिन मिन्हा फ़क़ाल ज़ाइदतुन तक़ूलुल अरबु यअ़नी हाज़ा फ़यक़ूलुल मुख़ातबु नअ़म व हुव लक बिदिरहमिन फ़ल्वावु ज़ाइदतुन व क़ील हिय वावुल हालि क़ालहुब्नुल अषीर व ज़अ़अफ़ मा अदाहू व फ़ीहि अन्नत्तस्मीअ़ ज़िक्रुन्नुहूज़ि वर्रफ़इ वत्तहमीदु ज़िक्रुल इअ़तिदालि वस्तुदिल्ल बिही अला अन्नहू युशरिउल जम्अ बैनत्तस्मीइ वत्तहमीदि लिकुल्लि मुस़ल्लिन मिन इमामिन व मुन्फ़रिदिन व मुतमिन इज़ हुव हिक़ायतु लिमुतलक़ि सलातिही ﷺ' (मिर्आतुल मफ़ातीह जि: 1/स:559) **रब्बना लकद हम्द** हज़्फ़े वाव के साथ और बाज़ रिवायात में **इष्बाते वाव** के साथ मरवी है और तरजीह **इष्बाते वाव** को ही है जो **वावे–अत्फ़** है और मअ़तूफ़ अलैह मुक़द्दर है। यानी ऐ रब हमारे! हमने तेरी इताअ़त की, तेरी ता'रीफ़ की और ता' रीफ़ तेरे ही लिए है। बाज़ लोगों ने अ़रब के मुहावरे के मुताबिक़ इसे **वावे ज़ाइद** भी कहा है। बाज़ ने वाव हाल के लिए माना है, इस हदीष अबू हुरैरह (रज़ि.) से मा'लूम हुआ कि **समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह** कहना, ये रुकूअ़ में झुकने और इससे सर उठाने का ज़िक्र है और **रब्बना व लकल हम्द** कहना ये खड़े होकर ए'तिदाल पर आ जाने के वक़्त का ज़िक्र है। इसीलिए मशरुअ़ है कि इमाम हो या मुक़्तदी या मुनफ़रिद सब ही **समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह** फिर **रब्बना व लकल हम्द** कहें। इसलिये कि हज़रत (ﷺ) की नमाज़ इसी तरह नक़ल की गई है और आपका इर्शाद है कि तुम उसी तरह नमाज़ पढ़ो जैसे तुमने मुझको पढ़ते हुए देखा है।

बाब तक्बीरे तहरीमा में नमाज़ शुरू करते ही बराबर दोनों हाथों का (कँधों या कानों तक) उठाना

٨٣- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي التَّكْبِيرَةِ الأُولَى مَعَ الافْتِتَاحِ سَوَاءً

(735) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक से, उन्होंने इब्ने शिहाब ज़ुह्री से, उन्होंने सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह से, उन्होंने अपने बाप (अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से कि रसूलल्लाह नमाज़ शुरू करते वक़्त अपने दोनों

٧٣٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ: (أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ

M-09825696131

हाथों को मोंढों तक उठाते, उसी तरह जब रुकूअ के लिए अल्लाहु अकबर कहते और जब अपना सर रुकूअ से उठाते तो दोनों हाथ भी उठाते और रुकूअ से सर मुबारक उठाते हुए समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना व लकल हम्द कहते थे। सज्दे में जाते वक़्त रफ़उल यदैन नहीं करते थे।

(दीगर मक़ाम : 736, 738, 739)

يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلاَةَ، وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ أَيْضًا وَقَالَ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ)). وَكَانَ لاَ يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ.

[أطرافه في : ٧٣٦، ٧٣٨، ٧٣٩].

बाब 84 : रफ़उल यदैन तक्बीरे तहरीमा के वक़्त, रुकूअ में जाते और रुकूअ से सर उठाते वक़्त (सुन्नत है)

٨٤- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ إِذَا كَبَّرَ، وَإِذَا رَكَعَ، وَإِذَا رَفَعَ

(736) हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा कि हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी। कहा कि हमको यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने ज़ुह्री से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से ख़बर दी, उन्होंने बतलाया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि जब आप नमाज़ के लिए खड़े हुए तो तक्बीरे तहरीमा के वक़्त आपने रफ़उल यदैन किया। आपके दोनों हाथ उस वक़्त मोंढों तक उठे और उसी तरह जब आप रुकूअ के लिए तक्बीर कहते उस वक़्त भी रफ़उल यदैन करते और जब रुकूअ से सर उठाते उस वक़्त भी करते। उस वक़्त आप कहते समिअल्लाहु लिमन हमिदह। अलबत्ता सज्दे में आप रफ़उल यदैन नहीं करते थे। (राजेअ : 735)

٧٣٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ قَالَ: أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ إِذَا قَامَ فِي الصَّلاَةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى تَكُونَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ، وَكَانَ يَفْعَلُ ذَلِكَ حِيْنَ يُكَبِّرُ لِلرُّكُوعِ، وَيَفْعَلُ ذَلِكَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ وَيَقُولُ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ)) وَلاَ يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ.

[راجع: ٧٣٥]

(737) हमसे इस्हाक़ बिन शाहीन वास्ती ने बयान किया, कहा कि हमसे ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह त्हिान ने बयान किया ख़ालिद हुज़्ज़ाअ से। उन्होंने अबू क़िलाबा से कि उन्होंने मालिक बिन हुवैरिष़ सहाबी को देखा कि जब वो नमाज़ शुरू करते तो तक्बीरे तहरीमा के साथ रफ़उल यदैन करते, फिर जब रुकूअ में जाते तो उस वक़्त भी रफ़उल यदैन करते और जब रुकूअ से सर उठाते तब भी करते और उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) भी इसी

٧٣٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ: أَنَّهُ رَأَى مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ إِذَا صَلَّى كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَحَدَّثَ أَنَّ رَسُولَ

M-09825696131

تَرَه किया करते थे।

اللهِ ﷺ صَنَعَ هَكَذَا.

٨٥- بَابُ إِلَى أَيْنَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ؟

बाब 85 : हाथों को कहाँ तक उठाना चाहिए

وَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ فِي أَصْحَابِهِ: ((رَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ)).

और अबू हुमैद सअ़दी (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने दोनों हाथों को मोंढों तक उठाया

٧٣٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ افْتَتَحَ التَّكْبِيرَ فِي الصَّلاَةِ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ يُكَبِّرُ حَتَّى يَجْعَلَهُمَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ، وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَهُ، وَإِذَا قَالَ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ)) فَعَلَ مِثْلَهُ وَقَالَ: رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، وَلاَ يَفْعَلُ ذَلِكَ حِينَ يَسْجُدُ وَلاَ حِينَ يَرْفَعُ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ.

[راجع: ٧٣٥]

(738) हमसे अबुल यमान ह़कम बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने ज़ुह्री से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को देखा कि आप नमाज़ तक्बीरे तह़रीमा से शुरू करते और तक्बीर कहते वक़्त अपने दोनों हाथों को मोंढों तक उठा कर ले जाते और जब रुकूअ के लिये तक्बीर कहते तब भी उसी तरह़ करते और जब समिअ़ल्लाहु लिमन ह़मिदह् कहते तब भी उसी तरह़ करते और रब्बना व लकल ह़म्द कहते। सज्दा करते वक़्त या सज्दा से सर उठाते वक़्त इस तरह़ रफ़उ़ल यदैन नहीं करते थे।

(राजेअ़ : 735)

٨٦- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ

बाब 86 : (चार रकअ़त नमाज़ में) क़अ़दा ऊला से उठने के बाद रफ़उ़ल यदैन करना

٧٣٩- حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ: (أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلاَةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا قَالَ: سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ. وَرَفَعَ ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللهِ ﷺ).

[راجع: ٧٣٥]

(739) हमसे अ़याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल आ़ला बिन अ़ब्दुल आ़ला ने बयान किया, कहा कि हमसे उ़बैदुल्लाह उ़मरी ने नाफ़ेअ़ से बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) जब नमाज़ में दाख़िल होते तो पहले तक्बीरे तह़रीमा कहते और साथ ही रफ़उ़ल यदैन करते। इसी तरह़ जब वो रुकूअ़ करते तब और जब समिअ़ल्लाहु लिमन ह़मिदह् कहते तब भी दोनों हाथों को उठाते और जब क़अ़द-ए-ऊला से उठते तब भी रफ़उ़ल यदैन करते। आपने इस काम को नबी करीम (ﷺ) तक पहुँचाया। (कि आँह़ज़रत ﷺ इसी तरह़ नमाज़ पढ़ा करते थे) (राजेअ़ : 735)

तश्रीह : तकबीरे तहरीमा के वक़्त और रुकूअ़ में जाते और रुकूअ़ से सर उठाते वक़्त और आख़री रकअ़त के

बाब 87 : नमाज़ में दायाँ हाथ बाएँ पर रखना

M-09825696131

٨٧- بَابُ وَضْعِ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى فِي الصَّلَاةِ

(740) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अ़नी ने बयान किया इमाम मालिक (रह.) से, उन्होंने अबू ह़ाज़िम बिन दीनार से, उन्होंने सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से कि लोगों को हुक्म दिया जाता था कि नमाज़ में दायाँ हाथ बाईं कलाई पर रखें। अबू ह़ाज़िम बिन दीनार ने बयान किया कि मुझे अच्छी तरह़ याद है कि आप उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) तक पहुँचाते थे। इस्माईल बिन अबी उवैस ने कहा ये बात आँह़ज़रत (ﷺ) तक पहुँचाई जाती थी यूँ नहीं कहा कि पहुँचाते थे।

٧٤٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: كَانَ النَّاسُ يُؤْمَرُونَ أَنْ يَضَعَ الرَّجُلُ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى ذِرَاعِهِ الْيُسْرَى فِي الصَّلَاةِ. قَالَ أَبُو حَازِمٍ لاَ أَعْلَمُهُ إِلاَّ يَنْمِي، ذَلِكَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ إِسْمَاعِيْلُ: ((يُنْمَى ذَلِكَ)) وَلَمْ يَقُلْ ((يَنْمِي)).

तश्रीह़ : शैख़ुल ह़दीष़ ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब मद्दज़िल्लुहू फ़र्माते हैं, **'लम यज़्कुर सहलुब्नु सअ़दिन फ़ी हदीष़िही महल्ल वज़्इल्यदैनि मिनल जसद्दि व हुव इन्दना अलस्स़दरि लिमा वरद फ़ी ज़ालिक मिन अहादीष़ स़रीहतिन क़विय्यतिन फ़मिन्हा हदीषु वाइलिब्नि हुज्र क़ाल स़ल्लैतु मअ़न्नबिय्यि ﷺ फ़वुज़ूअ यदहुल्युम्ना अ़ला यदिहिल्युस्रा अ़ला स़दरिही अख़्रजहुब्नु ख़ुज़ैमत फ़ी स़ह़ीह़िही ज़करहुल्हाफ़िज़ु बुलूग़ुल्मरामि वद्दिरायति वत्तल्ख़ीसि़ व फ़तहिल बारी वन्नववी फ़िल्ख़ुलास़ति व शर्हिल्मुहज़्ज़बि व शर्हि मुस्लिम लिल इहतिजाजि बिही अ़ला मा ज़हबत इलैहिश्शाफ़िइय्यतु मिन वज़्इल्यदैनि अलस्स़दरि व ज़िक्रुहुमा हाज़ल हदीष़ फ़ी मअ़रज़िल इहतिजाजि बिही सुकूतुहुमा अनिल कलामि फ़ीहि यदुल्लु अ़ला अन्न हदीष़ वाइलिन हाज़ाइन्दहुमा स़ह़ीह़ुन औ हसनुन क़ाबिलुन लिल्इहतिजाजि अल्ख़'** (मिर्आतुल मफ़ातीह़)

यानी ह़ज़रत सहल बिन सअ़द ने इस ह़दीष़ में हाथों के बाँधने की जगह का ज़िक्र नहीं किया और वो हमारे नज़दीक सीना है। जैसा कि इस बारे में कई अह़ादीषे क़वी और स़रीह़ मौजूद हैं। जिनमें एक ह़दीष़ वाइल बिन हुज्र की है। वो कहते हैं कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) के पीछे नमाज़ पढ़ी। आपने अपना दायाँ, हाथ बाएँ के ऊपर बाँधा और उनको सीने पर रखा। इस रिवायत को मुह़द्दिष़ इब्ने ख़ुज़ैमा ने अपनी स़ह़ीह़ में नक़ल किया है और ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर ने अपनी किताब बुलूग़ुल मराम और दिराया और तल्ख़ीस़ और फ़त्हुल बारी मे ज़िक्र फ़र्माया है। और इमाम नववी (रह़) ने अपनी किताब ख़ुलास़ा और शरह़े मुहज़्ज़ब और शरह़े मुस्लिम में ज़िक्र किया है और शाफ़िय्या ने इसी से दलील पकड़ी है कि हाथों को सीने पर बाँधना चाहिए। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर और अ़ल्लामा नववी (रह़) ने इस बारे में ह़दीष़ से दलील ली है और इस ह़दीष़ की सनद में उन्होंने कोई कलाम नहीं किया, लिहाज़ा ये ह़दीष़ उनके नज़दीक स़ह़ीह़ या ह़सन हुज्जत पकड़ने के क़ाबिल है।

इस बारे में दूसरी दलील वो ह़दीष़ है जिसे इमाम अह़मद ने अपनी मुस्नदे अह़मद में रिवायत किया है। चुनाँचे फ़र्माते हैं, **'हद्दषना यह्यब्नु सइदिन अन सुफ़्यान हद्दषना सम्माक अ़ न क़बीसा इब्नि हल्ब अ़न अबीहि क़ाल राइतु रसूलल्लाहि ﷺ यन्स़रिफ़ अन यमीनिही व अन यसरिही व राइतुहू यज़उ हाज़िही अ़ला स़दरिही व वस़फ़ यह्या अल्युम्ना अलल युस्रा फ़ौ क़ल्मफ़्स़ लि व रुवातु हाज़ल हदीषि कु ल्लुहुम षिकातुन व इस्नादुहू मुत्तसिलुन'** (तुह़फ़तुल अह़वुज़ी पेज नं. 216)

यानी हमसे यह़्या बिन सईद ने सुफ़यान ष़ौरी से बयान किया। वो कहते हैं कि हमसे सिमाक ने क़ुबैसा इब्ने वहब से बयान किया। वो अपने बाप से रिवायत करते हैं कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) को देखा। आप अपने दाएँ और बाएँ जानिब सलाम

يَفْتَتِنُوا فِي صَلاَتِهِمْ، فَأَشَارَ إِلَيْهِمْ أَتِمُّوا صَلاَتَكُمْ، فَأَرْخَى السِّتْرَ، وَتُوُفِّيَ مِنْ آخِرِ ذَلِكَ الْيَوْمَ. [راجع: ٦٨٠]

नमाज़ पूरी कर लो और पर्दा डाल लिया। उसी दिन चाश्त को आपने वफ़ात पाई।

M-09825696131

(राजेअ़ : 680)

तश्रीह : बाब का तर्जुमा यूँ निकला कि सहाबा ने ऐन नमाज़ में इल्तिफ़ात किया क्योंकि अगर वो इल्तिफ़ात न करते तो आपका पर्दा उठाना क्यूँकर देखते और उनका इशारा कैसे समझते। बल्कि ख़ुशी के मारे हाल ये हुआ कि क़रीब था वो नमाज़ को भूल जाएँ और आँहज़रत (ﷺ) के दीदार के लिए दौड़ें। इसी हालत को उन लफ़्ज़ों से ता'बीर किया गया कि मुसलमानों ने ये क़स्द (इरादा) किया कि वो फ़ित्ने में पड़ जाएँ। बहरहाल ये मख़्सूस हालात हैं। वरना आम तौर पर नमाज़ में इल्तिफ़ात जाइज़ नहीं जैसा कि हदीषे साबिक़ा में गुज़रा। क़ुर्आन मजीद में इर्शादे बारी है **वक़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन** (अल् बक़र : 238) यानी नमाज़ में अल्लाह के लिए दिली तवज्जह के साथ फ़र्मांबरदार बन्दे बनकर खड़े हुआ करो। नमाज़ की रूह यही है कि अल्लाह को हाज़िर नाज़िर यक़ीन करके उससे दिल लगाया जाए। आयते शरीफ़ा **अल्लज़ीन हुम फ़ी सलातिहिम ख़ाशिऊन** (अल् मोमिनून : 2) का यही तक़ाज़ा है।

٩٥- بَابُ وُجُوبِ الْقِرَاءَةِ لِلإِمَامِ وَالْمَأْمُومِ فِي الصَّلَوَاتِ كُلِّهَا فِي الْحَضَرِ وَالسَّفَرِ، وَمَا يُجْهَرُ فِيهَا وَمَا يُخَافَتُ

बाब 95 इमाम और मुक़्तदी के लिए क़िरअत का वाजिब होना, हज़र और सफ़र हर हालत में, सिर्री और जह्री सब नमाज़ों में

क़िरअत से सूरह फ़ातिहा का पढ़ना मुराद है। जैसा कि अगली हदीस में आ रही है कि सूरह फ़ातिहा पढ़े बग़ैर नमाज़ नहीं होती

٧٥٥- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عُمَيْرٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: شَكَا أَهْلُ الْكُوفَةِ سَعْدًا إِلَى عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، فَعَزَلَهُ، وَاسْتَعْمَلَ عَلَيْهِمْ عَمَّارًا، فَشَكَوا حَتَّى ذَكَرُوا أَنَّهُ لاَ يُحْسِنُ يُصَلِّي. فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ فَقَالَ: يَا أَبَا إِسْحَاقَ إِنَّ هَؤُلاَءِ يَزْعُمُونَ أَنَّكَ لاَ تُحْسِنُ تُصَلِّي. قَالَ أَمَّا أَنَا وَاللهِ فَإِنِّي كُنْتُ أُصَلِّي بِهِمْ صَلاَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ مَا أَخْرِمُ عَنْهَا، أُصَلِّي صَلاَةَ الْعِشَاءِ فَأَرْكُدُ فِي الأُولَيَيْنِ وَأُخِفُّ فِي الأُخْرَيَيْنِ. قَالَ: ذَاكَ الظَّنُّ بِكَ يَا أَبَا إِسْحَاقَ. فَأَرْسَلَ مَعَهُ رَجُلاً - أَوْ رِجَالاً -

(755) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू अवाना वज़ाह यश्करी ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन उमैर ने जाबिर बिन समुरा (रज़ि.) से बयान किया, कहा कि अहले कूफ़ा ने हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) की हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) से शिकायत की। इसलिए हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनको अलग करके हज़रत अ़म्मार (रज़ि.) को कूफ़ा का हाकिम बनाया, तो कूफ़ा वालों ने सअ़द के बारे में यहाँ तक कह दिया कि वो तो अच्छी तरह नमाज़ भी नहीं पढ़ा सकते। चुनाँचे हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनको बुला भेजा। आपने उनसे पूछा कि ऐ अबू इस्हाक़! इन कूफ़ावालों का ख़्याल है कि तुम अच्छी तरह नमाज़ नहीं पढ़ा सकते हो। इस पर आपने जवाब दिया कि अल्लाह की क़सम! मैं तो इन्हें नबी करीम (ﷺ) ही की तरह नमाज़ पढ़ाता था, उसमें कोताही नहीं करता इशा की नमाज़ पढ़ाता तो उसकी पहली दो रकअ़त में (क़िरअत) लम्बी करता और दूसरी दो रकअ़तें हल्की पढ़ाता। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि ऐ अबू इस्हाक़! मुझको तुमसे उम्मीद भी यही थी। फिर आपने हज़रत सअ़द (रज़ि.) के साथ एक या कई

बाब 95 इमाम और मुक़्तदी के लिए क़िरअत का वाजिब होना, हज़र और सफ़र हर हालत में, सिर्री और जह्री सब नमाज़ों में

٩٥- بَابُ وُجُوبِ الْقِرَاءَةِ لِلإِمَامِ وَالْـمَأْمُومِ فِي الصَّلَوَاتِ كُلِّهَا فِي الْحَضَرِ وَالسَّفَرِ، وَمَا يُجْهَرُ فِيهَا وَمَا يُخَافَتُ

क़िरअत से सूरह फ़ातिहा का पढ़ना मुराद है। जैसा कि अगली हदीस में आ रही है कि सूरह फ़ातिहा पढ़े बग़ैर नमाज़ नहीं होती

M-09825696131

(756) हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ुहरी ने बयान किया महमूद बिन रबीआ़ से, उन्होंने हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़ि.) से कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स ने सूरह फ़ातिहा न पढ़ी उसकी नमाज़ नहीं हुई।

٧٥٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ مَحْمُودِ بْنِ الرَّبِيعِ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ صَلاَةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ)).

तश्रीह : इमाम के पीछे जहरी और सिर्री नमाज़ों में सूरह फ़ातिहा पढ़ना एक ऐसा मसला है जिसके षुबूत बहुत सी अहादीषे सहीहा से षाबित है। बावजूद इस हक़ीक़त के फिर ये एक मअरका आरा बहष चली आ रही है। जिस पर बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं। जो हज़रात इसके क़ाइल नहीं है। उनमें कुछ का ग़ुलू तो यहाँ तक बढ़ा हुआ है कि वो इसे हरामे मुत्लक़ क़रार देते हैं और इमाम के पीछे सूरह फ़ातिहा पढ़ने वालों के बारे में यहाँ तक कह जाते हैं कि क़यामत के दिन उनके मुँह मे आग के अंगारे भरे जाएँगे। नऊ़ज़ुबिल्लाह मिन्हु। इसीलिए मुनासिब मा'लूम हुआ कि इस मसले की कुछ वज़ाहत कर दी जाए ताकि क़ाइलीन और मानेईन के दरम्यान निफ़ाक़ की ख़लीज़ कुछ न कुछ कम हो सके।

यहाँ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) जो हदीष लाए हैं उसके ज़ेल में हज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह साहब शैख़ुल हदीष मुबारकपुरी मद्दज़िल्लुहू फ़र्माते हैं,

'व सुम्मियत फ़ातिहतुल किताबि लिअन्नहू युब्दउ बिकिताबतिहा फ़िल्मुसाहिफ़ि व युब्दउ बिक़िरअतिहा फ़िस्सलाति व फ़ातिहतु कुल्लि शैइन मब्दउहूल्लज़ी युफ़्तहु बिही मा बअदहू इफ़्ततह फ़ुलानुन कज़ा इब्तदअ बिही क़ालब्नु ज़रीर फ़ी तफ़्सीरिही (जिल्द 1 स. 25) व सुम्मियत फ़ातितुल किताबि लिअन्नहा युफ़्ततहु बिकिताबतिहल मुसाहिफ़ व युक़्रा बिहा फ़िस्सलाति फ़हिय फ़वातिहु लिमा यतलूहा मिन सुवरिल क़ुर्आनि फिल किताबि वल किराति व सुम्मियत उम्मुल क़ुआनि लितक़दुमिहा अ़ला सुवरि साइरिल क़ुर्आनि ग़ैरहा व तअख़्ख़रा मा सिवाहा फ़िल क़िराति वल किताबति अल्ख़' (अल् मिर्आत जिल्द नं. पेज नं. 583)

ख़ुलासा इस इबारत का ये कि सूरह अल्हम्दु शरीफ़ का नाम फ़ातिहातुल किताब इसलिए रखा गया कि क़ुर्आन मजीद की किताबत इसी से शुरू होती है और नमाज़ में क़िरात की इब्तिदा भी इसी से की जाती है। अ़ल्लामा इब्ने जरीर ने भी अपनी तफ़्सीर में यही लिखा है। इसको उम्मुल क़ुर्आन इसलिए कहा गया कि किताबत और क़िरात मे ये इसकी तमाम सूरतों पर मुक़द्दम है और सारी सूरतें इसके बाद हैं। ये हदीष इस अम्र पर दलील है कि नमाज़ में सूरह फ़ातिहा फ़र्ज़ है और ये नमाज़ के अरकान में से है। जो इसे न पढ़े उसकी नमाज़ सहीह न होगी। शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देह्लवी ने भी अपनी मशहूर किताब **हज्जतुल्लाहिल बालिग़ा** (जिल्द 2 पेज नं. 4) पर इसे नमाज़ का अहम रुक्न तस्लीम किया है। इसलिए कि ये हदीष आम है। नमाज़ चाहे फ़र्ज़ हो चाहे नफ़्ल, और वो शख़्स इमाम हो या मुक़्तदी, या अकेला। यानी किसी शख़्स की कोई नमाज़ भी बग़ैर फ़ातिहा पढ़े नहीं होगी।

चुनाँचे मशहूर शारेहे बुख़ारी हज़रत अ़ल्लामा क़स्तलानी (रह) शरह सहीह बुख़ारी जिल्द 2 पेज नं. 439 में इस हदीष की वज़ाहत करते हुए लिखते हैं। **'अय फ़ी कुल्लि रकअतिन मुन्फ़रिदन औ इमामन औ मामूमन सवाउन असर्रल्इमामु औ जहर'** यानी इस हदीष का मक़्सद ये है कि हर रकअत में (हर नमाज़ी को) ख़्वाह अकेला हो या इमाम, या मुक़्तदी, ख़्वाह आहिस्ता पढ़े या बुलन्द आवाज़ से सूरह फ़ातिहा पढ़ना ज़रूरी है।

नीज़ इसी तरह अ़ल्लामा किरमानी (रह) फ़र्माते हैं,

'व फ़िल हदीषि (अय हदीषु उ़बादत) दलीलुन अ़ला अन्न क़िरातल्फ़ातिहति वाजिबतुन अलल इमामि वल मुन्फ़रिदि वल मामूमि फ़िस्सलवाति कुल्लिहा' (उ़म्दतुल क़ारी शरह सहीह बुख़ारी जिल्द नं. 3 पेज नं. 63) यानी हज़रत उबादा (रज़ि) की ये हदीष इस अम्र पर साफ़ दलील है कि सूरह फ़ातिहा का पढ़ना इमाम और अकेले और मुक़्तदी सबके लिए तमाम नमाज़ों मे वाजिब है। नीज़ उ़म्दतुल क़ारी शरह सहीह बुख़ारी जिल्द 3 पेज नं. 64 में लिखते हैं। हन्फ़ियों के मशहूर शारेह

M-09825696131

(756) हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ुहरी ने बयान किया मह़मूद बिन रबीअ़ा से, उन्होंने ह़ज़रत उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) से कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स़ ने सूरह फ़ातिह़ा न पढ़ी उसकी नमाज़ नहीं हुई।

٧٥٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ مَحْمُودِ بْنِ الرَّبِيْعِ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ صَلاَةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ)).

तश्रीह़ : इमाम के पीछे जहरी और सिर्री नमाज़ों में सूरह फ़ातिह़ा पढ़ना एक ऐसा मसला है जिसके षुबूत बहुत सी अह़ादीषे स़ह़ीह़ा से षाबित है। बावजूद इस ह़क़ीक़त के फिर ये एक मअ़रका आरा बह़ष चली आ रही है। जिस पर बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं। जो ह़ज़रात इसके क़ाइल नहीं है। उनमें कुछ का ग़ुलू तो यहाँ तक बढ़ा हुआ है कि वो इसे ह़रामे मुत्लक़ क़रार देते हैं और इमाम के पीछे सूरह फ़ातिह़ा पढ़ने वालों के बारे में यहाँ तक कह जाते हैं कि क़यामत के दिन उनके मुँह मे आग के अंगारे भरे जाएँगे। नऊ़ज़ुबिल्लाह मिन्हु। इसीलिए मुनासिब मा'लूम हुआ कि इस मसले की कुछ वज़ाह़त कर दी जाए ताकि क़ाइलीन और मानेईन के दरम्यान निफ़ाक़ की ख़लीज़ कुछ न कुछ कम हो सके।

यहाँ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) जो ह़दीष़ लाए हैं उसके ज़ेल में ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब शैख़ुल ह़दीष़ मुबारकपुरी मद्दज़िल्लुहू फ़र्माते हैं,

'व सुम्मियत फ़ातिहतुल किताबि लिअन्नहू युब्दउ बिकिताबतिहा फ़िल्मुसाहिफ़ि व युब्दउ बिक़िरअतिहा फ़िस्स़लाति व फ़ातिहतु कुल्लि शैइन मब्दउहूल्लज़ी युफ़्तहु बिही मा बअ़दहू इफ़्ततह फ़ुलानुन कज़ा इब्तदअ बिही क़ालब्नु ज़रीर फ़ी तफ़्सीरिही (जिल्द 1 स. 25) व सुम्मियत फ़ातितुल किताबि लिअन्नहा युफ़्ततहु बिकिताबतिहल मुसाहिफ़ व युक़्रा बिहा फ़िस्स़लाति फ़हिय फ़वातिहु लिमा यतलूहा मिन सुवरिल क़ुर्आनि फिल किताबि वल किराति व सुम्मियत उम्मुल क़ुआनि लितक़द्दुमिहा अ़ला सुवरि साइरिल क़ुर्आनि ग़ैरहा व तअख़्ख़ुरा मा सिवाहा फ़िल क़िराति वल किताबति अल्ख़' (अल् मिर्आत जिल्द नं. पेज नं. 583)

ख़ुलास़ा इस इ़बारत का ये कि सूरह अल्ह़म्दु शरीफ़ का नाम फ़ातिह़ातुल किताब इसलिए रखा गया कि क़ुर्आन मजीद की किताबत इसी से शुरू होती है और नमाज़ में क़िरात की इब्तिदा भी इसी से की जाती है। अ़ल्लामा इब्ने जरीर ने भी अपनी तफ़्सीर में यही लिखा है। इसको उम्मुल क़ुर्आन इसलिए कहा गया कि किताबत और क़िरात मे ये इसकी तमाम सूरतों पर मुक़द्दम है और सारी सूरतें इसके बाद हैं। ये ह़दीष़ इस अम्र पर दलील है कि नमाज़ में सूरह फ़ातिह़ा फ़र्ज़ है और ये नमाज़ के अरकान में से है। जो इसे न पढ़े उसकी नमाज़ स़ह़ीह़ न होगी। शाह वलीउल्लाह मुह़द्दिष़ देह्लवी ने भी अपनी मशहूर किताब **ह़ुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा** (जिल्द 2 पेज नं. 4) पर इसे नमाज़ का अहम रुक्न तस्लीम किया है। इसलिए कि ये ह़दीष़ आ़म है। नमाज़ चाहे फ़र्ज़ हो चाहे नफ़्ल, और वो शख़्स़ इमाम हो या मुक़्तदी, या अकेला। यानी किसी शख़्स़ की कोई नमाज़ भी बग़ैर फ़ातिह़ा पढ़े नहीं होगी।

चुनाँचे मशहूर शारेहे बुख़ारी ह़ज़रत अ़ल्लामा क़स्तलानी (रह़) शरह़ स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द 2 पेज नं. 439 में इस ह़दीष़ की वज़ाह़त करते हुए लिखते हैं। **'अय फ़ी कुल्लि रकअ़तिन मुन्फ़रिदन औ इमामन औ मामूमन सवाउन असर्रल्इमामु औ जहर'** यानी इस ह़दीष़ का मक़्स़द ये है कि हर रकअ़त में (हर नमाज़ी को) ख़्वाह अकेला हो या इमाम, या मुक़्तदी, ख़्वाह आहिस्ता पढ़े या बुलन्द आवाज़ से सूरह फ़ातिह़ा पढ़ना ज़रूरी है।

नीज़ इसी त़रह़ अ़ल्लामा किरमानी (रह़) फ़र्माते हैं,

'व फ़िल हदीषि (अय हदीषु उ़बादत) दलीलुन अ़ला अन्न क़िरातल्फ़ातिहति वाजिबतुन अ़लल इमामि वल मुन्फ़रिदि वल मामूमि फ़िस्स़लवाति कुल्लिहा' (उ़म्दतुल क़ारी शरह़ स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द नं. 3 पेज नं. 63) यानी ह़ज़रत उबादा (रज़ि) की ये ह़दीष़ इस अम्र पर स़ाफ़ दलील है कि सूरह फ़ातिह़ा का पढ़ना इमाम और अकेले और मुक़्तदी सबके लिए तमाम नमाज़ों मे वाजिब है। नीज़ उ़म्दतुल क़ारी शरह़ स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द 3 पेज नं. 64 में लिखते हैं। ह़न्फ़ियों के मशहूर शारेह़

M-09825696131

ख़बर दी। आप (ﷺ) ने उनको बुलाकर पूछा कि ऐ फ़लाँ! तुम्हारे साथी जिस तरह़ कहते हैं इस पर अ़मल करने से तुमको कौनसी रुकावट है और हर रकअ़त में इस सूरह को ज़रूरी क़रार देने का सबब क्या है। उन्होंने कहा कि हु़ज़ूर! मैं इस सूरह से मुह़ब्बत करता हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस सूरह की मुह़ब्बत तुम्हें जन्नत में ले जाएगी।

أنْ يَؤُمَّهُمْ غَيْرُهُ- فَلَمَّا أَتَاهُمُ النَّبِيُّ ﷺ أَخبرُوهُ الْخَبَرَ، فَقَالَ: ((يَا فُلاَنُ، مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تَفْعَلَ مَا يَأْمُرُكَ بِهِ أَصْحَابُكَ، وَمَا يَحْمِلُكَ عَلَى لُزُومِ هَذِهِ السُّورَةِ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ؟)) فَقَالَ: إِنِّي أُحِبُّهَا. قَالَ: ((حُبُّكَ إِيَّاهَا أَدْخَلَكَ الْجَنَّةَ)).

आपने उनके इस फ़ेअ़ल पर सुकूत फ़र्माया बल्कि तह़सीन फ़र्माई। ऐसी अह़ादीष़ को तक़रीरी कहा गया है।

(775) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़म्र बिन मुर्रह़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबुल वाइल शक़ीक़ बिन मुस्लिम से सुना कि एक शख़्स़ अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और कहा कि मैंने रात एक रकअ़त में मुफ़स्सल की कोई सूरत पढ़ी। आपने फ़र्माया कि क्या इस तरह़ (जल्दी-जल्दी) पढ़ी जैसे शे'र पढ़े जाते हैं। मैं उन हम—मा'नी सूरतों को जानता हूँ जिन्हें नबी करीम (ﷺ) एक साथ मिलाकर पढ़ते थे। आपने मुफ़स्सल की बीस सूरतों का ज़िक्र किया। हर रकअ़त के लिए दो-दो सूरतें।

(दीगर मक़ाम : 4996, 5043)

٧٧٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى ابْنِ مَسْعُودٍ فَقَالَ: قَرَأْتُ الْمُفَصَّلَ اللَّيْلَةَ فِي رَكْعَةٍ. فَقَالَ: هَذًا كَهَذِّ الشِّعْرِ. لَقَدْ عَرَفْتُ النَّظَائِرَ الَّتِي كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرُنُ بَيْنَهُنَّ. فَذَكَرَ عِشْرِيْنَ سُورَةً مِنَ الْمُفَصَّلِ، سُورَتَيْنِ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ.

[طرفاه في : ٤٩٩٦، ٥٠٤٣].

बाब 107 : पिछली दो रकअ़ात में सिर्फ़ सूरह फ़ातिह़ा पढ़ना

١٠٧- بَابُ يَقْرَأُ فِي الأُخْرَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ

(776) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माम बिन यह़्या ने बयान किया, उन्होंने यह़्या बिन अबी कष़ीर के वास्ते से बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा से, उन्होंने अपने बाप अबू क़तादा (रज़ि.) से कि नबी (ﷺ) ज़ुहर की पहली दो रकअ़तों में सूरह फ़ातिह़ा और दो सूरतें पढ़ते थे और आख़िरी दो रकअ़तों में सिर्फ़ सूरह फ़ातिह़ा पढ़ते। कभी-कभी हमें एक आयत सुना भी दिया करते थे और पहली रकअ़त में क़िरअत दूसरी रकअ़त से ज़्यादा करते थे। अ़स्र और सुबह़ की नमाज़ों मे भी आपका यही मअ़मूल था (ह़दीष़ और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है)

٧٧٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ فِي الظُّهْرِ فِي الأُولَيَيْنِ بِأُمِّ الْكِتَابِ وَسُورَتَيْنِ، وَفِي الرَّكْعَتَيْنِ الأُخْرَيَيْنِ بِأُمِّ الْكِتَابِ، وَيُسْمِعُنَا الآيَةَ، وَيُطَوِّلُ فِي الرَّكْعَةِ الأُولَى مَا لاَ يُطَوِّلُ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ، وَهَكَذَا فِي الْعَصْرِ، وَهَكَذَا فِي

M-09825696131

लम्बी करते थे और दूसरी रकअ़त में हल्की। सुबह की नमाज़ में भी आप उसी तरह करते थे। (राजेअ़ : 759)

وَيُقَصِّرُ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ، وَيَفْعَلُ ذَٰلِكَ فِي صَلَاةِ الصُّبْحِ. [راجع: ٧٥٩]

बाब 111 : (जहरी नमाज़ों में) इमाम का बुलन्द आवाज़ से आमीन कहना

١١١- بَابُ جَهْرِ الإِمَامِ بِالتَّأْمِينِ

मस्नून है और अ़ता बिन अबी रबाह ने कहा कि आमीन एक दुआ है और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) और उन लोगों ने जो आपके पीछे (नमाज़ पढ़ रहे) थे, इस ज़ोर से आमीन कही कि मस्जिद गूंज उठी और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) इमाम से कह दिया करते थे कि आमीन से हमें महरूम न रखना और नाफ़ेअ़ ने कहा कि इब्ने उ़मर (रज़ि.) आमीन कभी नहीं छोड़ते थे और लोगों को उसकी तर्ग़ीब भी दिया करते थे। मैंने आपसे उसके बारे में एक हदीष़ भी सुनी थी।

وَقَالَ عَطَاءٌ: آمِينَ دُعَاءٌ. أَمَّنَ ابْنُ الزُّبَيْرِ وَمَنْ وَرَاءَهُ حَتَّى إِنَّ لِلْمَسْجِدِ لَلَجَّةً. وَكَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يُنَادِي الإِمَامَ: لاَ تَفُتْنِي بِآمِينَ. وَقَالَ نَافِعٌ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ لاَ يَدَعُهُ، وَيَحُضُّهُمْ، وَسَمِعْتُ مِنْهُ فِي ذَٰلِكَ خَيْرًا.

(780) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान के वास्ते से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो क्योंकि जिसकी आमीन मलाइका की आमीन के साथ हो गई उसके तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएँगे। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) आमीन कहते थे।

(दीगर मक़ाम : 2402)

٧٨٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُمَا أَخْبَرَاهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَمَّنَ الإِمَامُ فَأَمِّنُوا، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ تَأْمِينُهُ تَأْمِينَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). قَالَ ابْنُ شِهَابٍ وَكَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((آمِيْنَ)).

[طرفه في : ٢٤٠٢].

बाब 112 : आमीन कहने की फ़ज़ीलत

١١٢- بَابُ فَضْلِ التَّأْمِينِ

(781) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने अबुज़्ज़िनाद से ख़बर दी, उन्होंने अअ़रज से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब कोई तुममें से आमीन कहे और फ़रिश्तों ने भी उसी वक़्त आसमान पर आमीन कही। इस तरह एक की आमीन दूसरे की आमीन के साथ मिल गई तो उसके

٧٨١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ أَحَدُكُمْ آمِيْنَ، وَقَالَتِ الْمَلاَئِكَةُ فِي السَّمَاءِ آمِيْنَ، فَوَافَقَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ

पिछले तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। M-09825696131 ذَنْبِه)).

अलहम्दु शरीफ़ के ख़ात्मे पर फ़रिश्ते भी आमीन कहते हैं। सिर्री में पस्त आवाज़ से और जहरी में बुलन्द आवाज़ से, पस जिस नमाज़ी की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के साथ मिल गई, उसका बेड़ा पार हो गया। अल्लाह पाक हर मुसलमान का बेड़ा पार लगाए।

बाब 113 : मुक़्तदी का आमीन बुलन्द आवाज़ से कहना

١١٣ - بَابُ جَهْرِ الْمَأْمُومِ بِالتَّأْمِينِ

(782) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अ़नी ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक (रह.) से, उन्होंने अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रह्मान के गुलाम सुमय से, उन्होंने अबू स़ालेह़ सम्मान से, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब इमाम 'ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन' कहे तो तुम भी आमीन कहो क्योंकि जिसने फ़रिश्तों के साथ आमीन कही उसके पीछे के तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं। सुमय के साथ इस ह़दीष़ को मुहम्मद बिन अ़म्र ने भी अबू सलमा से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया। और नुऐम मज्मर ने भी अबू हुरैरह (रज़ि .) से, उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से।

(दीगर मक़ाम : 4475)

٧٨٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ سُمَيٍّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ الإِمَامُ: ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ﴾ فَقُولُوا: آمِينَ، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). تَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَنُعَيْمٌ الْمُجْمِرُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفه في : ٤٤٧٥].

मुक़्तदी इमाम की आमीन सुनकर आमीन कहेंगे, इसी से मुक़्तदियों के लिए आमीन बिल जहर का इष्बात हुआ। बनज़रे इंस़ाफ़ मुत़ालअ़ा करने वालों के लिए यही काफ़ी है। तअ़स्सुबे मसलकी का दुनिया में कोई इ़लाज नहीं।

तश्रीह़ : जहरी नमाज़ों में सूरह फ़ातिह़ा के इख़्तिमाम पर इमाम और मुक़्तदियों के लिए बुलन्द आवाज़ से आमीन कहना ये भी एक ऐसी बह़ष़ है जिस पर फ़रीक़ेन ने कितने ही स़फ़्ह़ात स्याह (कागज़ काले) कर डाले हैं। यही नहीं बल्कि इस पर बड़े–बड़े फ़सादात भी हो चुके हैं। मुह़्तरम बिरादराने अह़नाफ़ ने कितनी मसाजिद से आमीन बिल जहर के आ़मिलीन को निकाल दिया, मारा-पीटा और मामला सरकारी अ़दालतों तक पहुँचा है। यही वजह हुई कि इस जंग को ख़त्म करने के लिए अहले ह़दीष़ ह़ज़रात ने अपनी मसाजिद अलग ता'मीर कीं और इस त़रह़ ये फ़साद कम हुआ। अगर ग़ौर किया जाए तो अ़क़्लन व नक़्लन ये झगड़ा हर्गिज़ न होना चाहिए था। लफ़्ज़े आमीन का मत़लब ये है कि ऐ अल्लाह! मैंने जो दुआएँ तुझसे की हैं उनको क़ुबूल फ़र्मा ले। ये लफ़्ज यहूद व नस़ारा में भी मुस्तअ़मल (प्रयुक्त Used) रहा और इस्लाम में भी इसे इस्ते'माल किया गया। जहरी नमाज़ों मे इसका ज़ोर से कहना कोई अम्रे क़बीह़ न था। मगर स़द अफ़सोस कि कुछ उ़लम–ए–सू ने राई को पहाड़ बना दिया। नतीजा ये हुआ कि मुसलमानों में सर फ़ुटव्वल हुई और अ़र्से के लिये दिलों में काविश पैदा हो गई।

सय्यदना ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने यहाँ बाब मुनअ़क़िद करके और उसके तह़त अह़ादीष़ लाकर इस बहष़ का ख़ात्मा कर दिया। फिर भी बहुत से लोग तफ़्स़ीलात का शौक़ रखते हैं। लिहाज़ा हम इस बारे में एक तफ़्स़ीली मक़ाला पेश कर रहे हैं जो मुत्तह़िदा (अखण्ड) भारत के एक ज़बरदस्त फ़ाज़िल उस्ताज़ ह़ज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल्लाह स़ाह़ब रोपड़ी (रह़) के ज़ोरे क़लम का नतीजा है। इसमें दलाइल के साथ साथ उन पर ए'तिराज़ाते वारिदा के भी काफ़ी शाफ़ी जवाबात दिये गये हैं। चुनाँचे ह़ज़रत मौलाना स़ाह़ब क़द्दस सिर्रुहु फ़र्माते हैं :

बुलन्द आवाज़ से आमीन कहने के बारे में अहादीष़ व आष़ार और उलम-ए-अहनाफ़ के फ़तावे

M-09825696131

अहादीष़ : हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि) फ़र्माते हैं, **'कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ा तला ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन क़ाल आमीन हत्ता यस्मअ मंय्यलीहि मिनस्सफ़्फ़िल अव्वलि'** (अबू दाऊद पेज नं. 134 तबअ देहली)

तर्जुमा : रसूलुल्लाह (ﷺ) जब **ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन** पढ़ते तो आमीन कहते। यहाँ तक कि जो पहली सफ़ में आपके नज़दीक थे, वो सुन लेते।

इस हदीष़ पर हनफ़िया की तरफ़ से दो ए'तिराज़ होते हैं,

एक ये कि इस हदीष़ की इस्नाद में बिश्र बिन राफ़ेअ अल हारिष़ी अबुल अस्बात एक रावी है। इसके बारे में नस्बुर्राया जिल्द 1 पेज नं. 371 में अल्लामा ज़ेलई हनफ़ी लिखते हैं, **'ज़अ्अफ़हुल् बुख़ारी वत्तिर्मिज़ी वन्नसइ व अहमद वब्नु मईन वब्नु हिब्बान'** इसको इमाम बुख़ारी, तिर्मिज़ी, नसाई, अहमद, इब्ने मुईन और इब्ने हिब्बान (रह) ने ज़ईफ़ कहा है।

दूसरा ए'तिराज़ ये है कि एक रावी अबू अब्दुल्लाह इब्ने अम्मे अबू हुरैरह (रज़ि) है। जो बिश्र बिन राफ़ेअ का उस्ताज़ है, इसके बारे में ज़ेलई (रह) लिखते हैं : कि उसका हाल मा'लूम नहीं और बिश्र बिन राफ़ेअ के सिवा उससे किसी ने रिवायत नहीं की। यानी ये मज्हूलुल ऐन है, उसकी शख़्सियत का पता नहीं।

जवाब ए'तिराज़े अव्वल : ख़ुलासा तज़हीबुल कमाल के पेज नं. 41 में बिश्र बिन राफ़ेअ के बारे में लिखा है, **वष़्ष़कहू इब्नु मईन व इब्नु अदी व कालल बुख़ारी वला युताबउ अलैहि** यानी इब्ने मुईन और इब्ने अदी ने इसको ष़िक़ा कहा है और इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा है। इसकी मुवाफ़क़त नहीं की जाती।

इससे मा'लूम हुआ कि कोई ज़ईफ़ कहता है और कोई ष़िक़ा और ये भी मा'लूम हुआ कि ज़ईफ़ कहने वालों ने ज़ुअफ़ की वजह बयान नहीं की और ऐसी जरह को जरहे मुब्हम कहते हैं और उसूल का क़ायदा है :

ष़िक़ा कहने वालों के मुक़ाबले में ऐसी जरह का ए'तिबार नहीं। हाँ अगर वजह ज़ुअफ़ बयान कर दी जाती तो ऐसी जरह बेशक तअदील पर मुक़द्दम होती और ऐसी जरह को जरहे मुफ़स्सर कहते हैं।

फिर इमाम बुख़ारी (रह) का कहना कि इसकी मुवाफ़क़त नहीं की जाती। ये बहुत हल्की जरह है। ऐसे रावी की हदीष़ हसन दर्जे से नहीं गिरती। ग़ालिबन इसी लिए अबू दाऊद (रह) और मुंज़री ने इस पर सुकूत किया है और इससे दूसरे ए'तिराज़ का जवाब भी निकल आया क्योंकि अबू दाऊद जिस हदीष़ पर सुकूत करते हैं। वो उनके नज़दीक अच्छी होती है और मज्हूलुल ऐन की रिवायत ज़ईफ़ होती है। पस अबू अब्दुल्लाह मज्हुलुल ऐन न हुआ, वरना सुकूत न करते। अलावा उसके अल्लामा ज़ेलई (रह) को ग़लती लगी है, ये मज्हूल नहीं। हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) तक़रीब में लिखते हैं। मक़्बूल यानी उसकी हदीष़ मोतबर है।

इमाम दारे क़ुत्नी (रह) कहते हैं। इस हदीष़ की इस्नाद हसन है। मुस्तदरक हाकिम में है कि ये हदीष़ बुख़ारी मुस्लिम की शर्त पर सहीह है। इमाम बैहक़ी कहते हैं। हसन सहीह है। (नैलुल औतार जिल्द 2 पेज नं. 117 तबअ मिस्र)

तम्बीह : नसबुर्राया जिल्द 1 पेज नं. 371 के हाशिये में लिखा है कि इसकी इस्नाद में इस्हाक़ बिन इब्राहीम बिन अल्अला ज़ुबैदी ज़ईफ़ है।

मगर जो जरह मुफ़स्सर ष़ाबित नहीं हुई। इसलिए दारे क़ुत्नी ने इसको हसन कहा है और हाकिम ने सहीह और बैहक़ी

M-09825696131

फ़र्मा रहे हैं।

ग़ालिबन उस ज़माने का वाक़िया है कि जब आप फ़ज्र में अ़ब्दुल मलिक पर कुनूत पढ़ते थे। अ़ब्दुल मलिक भी इब्ने ज़ुबैर (रज़ि) पर कुनूत पढ़ता था और जिस तरह के हालात इस ज़माने में थे उसमें मुबालग़ा और बेएहतियात़ उ़मूमन हो जाया करती है। (तफ़्हीमुल बुख़ारी पारा 3 पेज नं. 135)

इस बेतुकी राय ज़नी पर अहले इंसाफ़ ख़ुद नज़र डाल सकेंगे कि ये कहाँ तक दुरुस्त है। अव्वल तो अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि) का आमीन बिल जेहर कहना ख़ास नमाज़े फ़ज्र में किसी रिवायत में मज़्कूर नहीं है। हो सकता है कि इस वाक़िये का ता'ल्लुक़ मग़्रिब या इशा से भी हो। फिर अल्हम्दु शरीफ़ के ख़ात्मे पर आमीन बिल जेहर का अ़ब्दुल मलिक पर कुनूत पढ़ने से क्या ता'ल्लुक़? कुनूत का महल दूसरा है फिर मुबालग़ा और बे एहतियाती को हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि) जैसे जलीलुल क़द्र सहाबी की तरफ़ मन्सूब करना एक बड़ी जुर्अत है और भी इसी क़िस्म की बेतुकी बातें की जाती हैं। अल्लाह पाक ऐसे उ़लम-ए- किराम को नेक हिदायत दे कि वो अम्रे हक़ को तस्लीम करने के लिए दिल खोलकर तैयार हों और बेजा तावीलात से काम लेकर आज के ता'लीमयाफ़्ता रोशन ख़्याल लोगों को हंसने का मौक़ा न दें **अल्लाहुम्म वफ़्फ़िक़्ना लिमा तुहिब्बु व तर्ज़ा, आमीन।**

बाब 114 : जब सफ़ तक पहुँचने से पहले ही किसी ने रुकूअ़ कर लिया (तो उसके बारे में क्या हुक्म है?)

١١٤- بَابُ إِذَا رَكَعَ دُوْنَ الصَّفِّ

(783) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माम बिन यह्या ने ज़ियाद बिन हस्सान अअ़लम से बयान किया, उन्होंने हज़रत हसन (रह.) से, उन्होंने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ (नमाज़ पढ़ने के लिए) गए, आप उस वक़्त रुकूअ़ में थे। इसलिए सफ़ तक पहुँचने से पहले ही उन्होंने रुकूअ़ कर लिया, फिर इसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह तुम्हारा शौक़ और ज़्यादा करे लेकिन दोबारा ऐसा न करना।

٧٨٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنِ الأَعْلَمِ - وَهُوَ زِيَادٌ - عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ : أَنَّهُ انْتَهَى إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ رَاكِعٌ فَرَكَعَ قَبْلَ أَنْ يَصِلَ إِلَى الصَّفِّ، فَذَكَرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((زَادَكَ اللهُ حِرْصًا، وَلاَ تَعُدْ)).

तश्रीह : तबरानी की रिवायत में यूँ है कि अबूबक्र उस वक़्त मस्जिद में पहुँचे कि नमाज़ की तक्बीर हो चुकी थी, ये दौड़े और तहावी की रिवायत में है कि दौड़ते हुए हांपने लगे, उन्होंने मारे जल्दी के सफ़ में शरीक होने से पहले ही रुकूअ़ कर दिया। नमाज़ के बाद जब आँहज़रत (ﷺ) को ये हाल मा'लूम हुआ तो आपने फ़र्माया कि आइन्दा ऐसा न करना।

कुछ अहले इल्म ने इससे रुकूअ़ में आने वालों के लिए रकअ़त के हो जाने पर दलील पकड़ी है। औ़नुल मा'बूद शरहे अबू दाऊद पेज नं. 332 में है, **'क़ालश्शौकानी फ़िन्नैलि लैस फ़ीहि मा यदुल्लु अ़ला मा ज़हबू इलैहि लिअन्नहू कमा लम यामुर्हु बिल आ़दति लम युन्क़ल अयज़न अन्नहू इअ़तद्द बिहा वद्दुआउ लहू बिल्हिर्सि ला यस्तल्ज़िमुल इअ़तिदादु बिहा लिअन्नल्कौन मअ़इमामि मामूरुन बिही सवाउन कानश्शैउल्लज़ी युदरिकुहुल्मूतिम मुअ़तद्दन बिही अम ला कमा फ़िल्हदीष़ इजाजिअ़तुम इलस्सलाति व नहनु सुजूदुन फ़स्जुदू औ ला तउद्दूहा शैअन अ़ला अन्नन्नबिय्यु ﷺ क़द नहा अबा बक्रत अनिल्ऊदि इला मिष्लि ज़ालिक वल्इहतिजाजु बिशैइन क़द नहा अन्हु ला यस्लिहु व क़द अज़ाब इब्नु हज्म फ़िल्मुहल्ला अ़न हदीष़ि अबी बक्रत फ़क़ाल अन्नहू ला हुज्जत लहुम फ़ीहि लिअन्नहू लैस फ़ीहि इज्तिराउन बितिल्कर्रअ़ति'**

ख़ुलासा ये कि बक़ौले अ़ल्लामा शौकानी इस हदीष़ से ये इस्तिदलाल सहीह नहीं है क्योंकि अगर हदीष़ में ये सराहत नहीं है कि आपने इसे उस रकअ़त के लौटाने का हुक्म नहीं फ़र्माया तो साथ ही मन्क़ूल ये भी नहीं कि इस रकअ़त को काफ़ी

तआला ने मुहम्मद (ﷺ) को पैदा किया था। (राजेअ : 389) M-09825696131 الله مُحَمَّدًا ﷺ. [راجع: ٣٨٩]

यानी तेरा ख़ात्मा मआज़ल्लाह कुफ़्र पर होगा। जो लोग सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) की मुख़ालफ़त करते हैं उनको इस तरह ख़राबी ख़ात्मे से डरना चाहिए। सुब्हानल्लाह अहले हदीष़ का जीना और मरना दोनों अच्छा। मरने के बाद आँहज़रत (ﷺ) के सामने कुछ शर्मिन्दगी नहीं। आपकी हदीष़ पर चलते रहे जब तक जिये ख़ात्मा भी हदीष़ पर हुआ। (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम रह)

बाब 120 : रुकूअ में पीठ को बराबर करना। (सर ऊँचा-नीचा न रखना) अबू हमद (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने रुकूअ किया, फिर अपनी पीठ पूरी तरह झुका दी।

١٢٠ - بَابُ اسْتِوَاءِ الظُّهْرِ فِي الرُّكُوعِ وَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ فِي أَصْحَابِهِ: رَكَعَ النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ هَصَرَظَهْرَهُ

बाब 121 : रुकूअ पूरी तरह करने की और उसमें ए'तिदाल व तमानियत की (हद क्या है?)

١٢١ - بَابُ حَدِّ إِتْمَامِ الرُّكُوعِ وَالاِعْتِدَالِ فِيهِ، وَالاطْمَأْنِينَةِ

कुछ नुस्ख़ों में ये बाब अलग नहीं है और दरहक़ीक़त ये अगले ही बाब का एक जुज़ है और अबू हुमैद (रज़ि) की तअलीक़ इसके अव्वल जुज़ के बारे में है और बराअ की हदीष़ पिछले जुज़ से। अब इब्ने मुनीर का ए'तिराज़ दूर हो गया कि हदीष़ बाब के मुताबिक़ नहीं है, कज़ा क़ालल हाफ़िज़।

(792) हमसे बदल बिन महब्बर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे हकम ने इब्ने अबी लैला से ख़बर दी, उन्होंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से, उन्होंने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) के रुकूअ व सुजूद, दोनों सज्दों के बीच का वक़्फ़ा और जब रुकूअ से सर उठाते तो तक़रीबन सब बराबर थे। सिवा क़ियाम और तशह्हुद के क़ुऊद के। (दीगर मक़ाम : 801, 820)

٧٩٢ - حَدَّثَنَا بَدَلُ بْنُ الْمُحَبَّرِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي الْحَكَمُ عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: (كَانَ رُكُوعُ النَّبِيِّ ﷺ وَسُجُودُهُ وَبَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ وَإِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ - مَا خَلاَ الْقِيَامَ وَالْقُعُودَ - قَرِيبًا مِنَ السَّوَاءِ).

[طرفاه في : ٨٠١، ٨٢٠].

क़ियाम से मुराद क़िरात का क़याम है और तशह्हुद का क़ुऊद, लेकिन बाक़ी चार चीज़ें यानी रुकूअ और सज्दा और दोनों सज्दों के बीच में क़अदा और रुकूअ के बाद क़ोमा ये सब क़रीब क़रीब बराबर होते। हज़रत अनस (रज़ि) की रिवायत में है कि आप (ﷺ) रुकूअ से सर उठाकर इतनी देर तक खड़े रहते कि कहने वाला कहता आप भूल गये हैं। हदीष़ के मुताबक़त बाब के तर्जुमा से इस तरह है कि इससे रुकूअ में देर तक ठहरना षाबित होता है। तो बाब का एक जुज़ यानी इत्मीनान इससे निकल आया और ए'तिदाल यानी रुकूअ के बाद सीधा खड़ा होना वो भी इस रिवायत से षाबित हो चुका। हाफ़िज़ फ़र्माते हैं कि इस हदीष़ के कुछ तरीक़ों में जिनको मुस्लिम ने निकाला है ए'तिदाल लम्बा करने का ज़िक्र है। तो इससे तमाम अरकान का लम्बा करना षाबित हो गया।

बाब 122 : नबी करीम (ﷺ) का उस शख़्स को नमाज़ दोबारा पढ़ने का हुक्म देना जिसने रुकूअ पूरी तरह नहीं किया था

١٢٢ - بَابُ أَمْرِ النَّبِيِّ ﷺ الَّذِي لاَ يُتِمُّ رُكُوعَهُ بِالإِعَادَةِ

बाब 122 : नबी करीम (ﷺ) का उस शख़्स को नमाज़ दोबारा पढ़ने का हुक्म देना जिसने रुकूअ पूरी तरह नहीं किया था

١٢٢- بَابُ أَمْرِ النَّبِيِّ ﷺ الَّذِي لَا يُتِمُّ رُكُوعَهُ بِالإِعَادَةِ

(793) हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने उबैदुल्लाह उमरी से बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सईद बिन अबी सईद मक़्बरी ने अपने वालिद से बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ ले गए। इतने में एक शख़्स आया और नमाज़ पढ़ने लगा। नमाज़ के बाद उसने आकर नबी करीम (ﷺ) को सलाम किया। आप (ﷺ) ने सलाम का जवाब देकर कहा कि वापस जाकर दोबारा नमाज़ पढ़, क्योंकि तूने नमाज़ नहीं पढ़ी। चुनाँचे उसने दोबारा नमाज़ पढ़ी और वापस आकर फिर आपको सलाम किया। आपने इस बार भी यही फ़र्माया कि दोबारा जाकर नमाज़ पढ़, क्योंकि तूने नमाज़ पढ़ी। तीन बार इसी तरह हुआ। आख़िर उस शख़्स ने कहा कि उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ मबऊ़ष फ़र्माया। मैं तो इससे अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता। इसलिए आप मुझे सिखलाइए। आपने फ़र्माया जब तू नमाज़ के लिए खड़ा हो तो (पहले) तक्बीर कह फिर क़ुर्आन मजीद में से जो कुछ तुझसे हो सके पढ़, उसके बाद रुकूअ कर और पूरी तरह रुकूअ में चला जा। फिर सर उठा और पूरी तरह खड़ा हो जा। फिर जब तू सज्दा करे तो पूरी तरह सज्दा में चला जा। फिर (सज्दा से) सर उठाकर अच्छी तरह बैठ जा। दोबारा भी इसी तरह सज्दा कर। यही त़रीक़ा नमाज़ की तमाम (रकअ़तों में) रख। (राजेअ : 757)

٧٩٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيْدٌ الْمَقْبُرِيُّ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَدَخَلَ رَجُلٌ فَصَلَّى، ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَرَدَّ عَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ السَّلاَمَ فَقَالَ: ((ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ))، فَصَلَّى، ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ)) ثَلاَثًا. فَقَالَ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ فَمَا أُحْسِنُ غَيْرَهُ فَعَلِّمْنِي. قَالَ: ((إِذَا قُمْتَ إِلَى الصَّلاَةِ فَكَبِّرْ، ثُمَّ اقْرَأْ مَا تَيَسَّرَ مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ، ثُمَّ ارْكَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ رَاكِعًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَعْتَدِلَ قَائِمًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ افْعَلْ ذَلِكَ فِي صَلاَتِكَ كُلِّهَا)). [راجع: ٧٥٧]

तशरीह़ : इसी ह़दीष़ को बरिवायत रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ इब्ने अबी शैबा ने यूँ रिवायत किया है कि उस शख़्स ने रुकूअ और सज्दा पूरे त़ौर पर अदा नहीं किया था। इसलिए आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे नमाज़ लौटाने का हुक्म फ़र्माया। यही बाब का तर्जुमा है। ष़ाबित हुआ कि ठहर ठहरकर इत्मीनान से हर रुक्न का अदा करना फ़र्ज़ है। उस रिवायते बुख़ारी में ये है कि आपने उसे फ़र्माया कि पढ़ जो तुझे क़ुर्आन से आसान हो। मगर रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ की रिवायत इब्ने अबी शैबा में साफ़ यूँ मज़्कूर है, **ष़ुम्म इक़्रः बिउम्मिल क़ुर्आन व माशाअल्लाहु** यानी पहले सूरह फ़ातिह़ा पढ़ फिर जो आसान हो क़ुर्आन की तिलावत कर। इस तफ़्सील के बाद इस रिवायत से सूरह फ़ातिह़ा की अ़दमे रुक्नियत पर दलील पकड़ने वाला या तो तफ़्सीली रिवायात से नावाक़िफ़ है या फिर तअ़स्सुब का शिकार है।

اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللهُ اغْفِرْ لِيْ)). يَتَأَوَّلُ الْقُرْآنَ. [راجع: ٧٩٤]

अल्लाहुम्मग़्फ़िरली (इस दुआ को पढ़कर) आप क़ुर्आन के हुक्म पर अ़मल करते थे। (राजेअ़ : 714)

M-09825696131

तश्रीह : सूरह **'इज़ा जाअ नस्रूल्लाहि'** में है, **'फ़सब्बिह बिहम्दि रब्बिक वस्तग़्फ़िरहु'** (अपने रब की पाकी बयान करो और उससे बख़्शिश मांगो); इस हुक्म की रोशनी में आप (ﷺ) सज्दा और रुकूअ़ में ज़िक्र की गई दुआ पढ़ा करते थे। जिसका तर्जुमा ये है कि या अल्लाह! मैं तेरी ह़म्द के साथ तेरी पाकी बयान करता हूँ। या अल्लाह! तू मुझको बख़्श दे। इस दुआ में तस्बीह़ और तह़्मीद और इस्तिग़्फ़ार तीनों मौजूद हैं, इसलिये रुकूअ़ और सज्दा में इसका पढ़ना अफ़ज़ल है इसके अलावा रुकूअ़ में **सुब्ह़ान रब्बियल्अ़ज़ीम** और सज्दा में **सुब्ह़ान रब्बियल्आला** मसनूना दुआएँ भी आयाते क़ुर्आनिया ही की ता'मील हैं जैसा कि मुख़्तलिफ़ आयात में हुक्म है। एक रिवायत में है कि सूरह **'इज़ा जाआ नस्रूल्लाह'** के नुज़ूल के बाद आप (ﷺ) हमेशा रुकूअ़ और सज्दों में इस दुआ को पढ़ते रहे। या'नी **सुब्ह़ानक अल्लाहुम्म रब्बना व बिह़म्दिक अल्लाहुम्मग़्फ़िरली** अ़ल्लामा इमाम शौकानी (रह़.) इसका मतलब यूँ बयान फ़र्माते हैं कि **बितौफ़ीक़ि ली व हिदायतिक व फ़ज़्लिक अ़लय्या सुब्ह़ानक ला बिहौली व क़ुव्वती** या'नी या अल्लाह! मैं सिर्फ़ तेरी तौफ़ीक़ और हिदायत और फ़ज़्ल से तेरी पाकी बयान करता हूँ। अपनी त़रफ़ से इस कारे अ़ज़ीम के लिये मुझमें कोई त़ाक़त नहीं है। कुछ रिवायात में रुकूअ़ और सज्दों में ये दुआ पढ़नी भी आँह़ज़रत (ﷺ) से ष़ाबित है, **'सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुल मलाइकति वर्रूह'** (अह़मद, मुस्लिम वग़ैरह) या'नी मेरा रुकूअ़ या सज्दा उस ज़ाते वाहिद के लिये है जो तमाम नुक़्सों और शरीकों से पाक है वो मुक़द्दस है वो फ़रिश्तों का और जिब्रईल का भी रब है।

١٤٠- بَابُ الْمُكْثِ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ

बाब 140 : दोनों सज्दों के बीच ठहरना

٨١٨- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ أَنَّ مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ قَالَ لأَصْحَابِهِ: أَلاَ أُنَبِّئُكُمْ صَلاَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ- قَالَ وَذَاكَ فِي غَيْرِ حِيْنِ صَلاَةٍ - فَقَامَ، ثُمَّ رَكَعَ فَكَبَّرَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَقَامَ هُنَيَّةً، ثُمَّ سَجَدَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ هُنَيَّةً -ثُمَّ سَجَدَ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ هُنَيَّةً فَصَلَّى صَلاَةَ عَمْرِو بْنِ سَلِمَةَ شَيْخِنَا هَذَا - قَالَ أَيُّوبُ: كَانَ يَفْعَلُ شَيْئًا لَمْ أَرَهُمْ يَفْعَلُونَهُ، كَانَ يَقْعُدُ فِي الثَّالِثَةِ أَوِ الرَّابِعَةِ. [راجع: ٦٧٧]

(818) हमसे अबुन नोअ़मान मुहम्मद बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने अय्यूब सुख़्तियानी से बयान किया, उन्होंने अबू क़िलाबा अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद से, कि मालिक बिन हुवैरिष़ (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि मैं तुम्हें नबी करीम (ﷺ) की नमाज़ क्यों न सिखा दूँ। अबू क़तादा ने कहा ये नमाज़ का वक़्त नहीं था (मगर आप हमें सिखाने के लिये) खड़े हुए। फिर रुकूअ़ किया और तकबीर कही फिर सर उठाया और थोड़ी देर खड़े रहे। फिर सज्दा किया और थोड़ी देर के लिये सज्दे से सर उठाया और फिर सज्दा किया और सज्दे से थोड़ी देर के लिये सर उठाया। उन्होंने हमारे शैख़ ड़मर बिन सलमा नमाज़ में एक ऐसी चीज़ किया करते थे कि दूसरे लोगों को इसी त़रह करते मैंने नहीं देखा। आप तीसरी या चौथी रकअ़त पर (सज्दे से फ़ारिग़ होकर खड़े होने से पहले) बैठते थे (या'नी जल्सा-ए-इस्तिराहत करते थे फिर नमाज़ सिखलाने के बाद) (राजेह : 688)

٨١٩- فَأَتَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ فَأَقَمْنَا عِنْدَهُ فَقَالَ

السَّجْدَتَيْنِ حَتَّى يَقُولَ الْقَائِلُ قَدْ نَسِيَ.
[راجع: ٨٠٠]

समझता कि भूल गये हैं और इसी तरह दोनों सज्दों के दरम्यान इतनी देर तक बैठे रहते कि देखने वाला समझता कि भूल गये हैं। (राजेअ : 800)

M-09825696131

तश्रीह : हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम फ़र्माते हैं कि हमारे इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) ने इसी पर अमल किया है और दोनों सज्दों के बीच में बार-बार '**रब्बिग़्फ़िरली**' कहना मुस्तहब जाना है जैसे हुज़ैफ़ा (रज़ि.) की हदीष़ में वारिद है कि हाफ़िज़ (रह.) ने कहा इस हदीष़ से मा'लूम होता है कि जिन लोगों से षाबित ने ये बातचीत की वो दोनों सज्दों के बीच न बैठते होंगे; लेकिन हदीष़ पर चलने वाला जब हदीष़ सही हो जाए तो किसी के विरोध की परवाह नहीं करता। हज़रत अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, '**व क़द तरकन्नासु हाज़िहिस्सुन्नत्तष्षाबितत बिल्अहादीष़िस्सहीहति मुहद्दिषुहुम व फ़क़ीहुम व मुज्तहिदुहुम व मुक़ल्लिदुहुम फ़ लैतशिअ्री मल्लज़ी अवौव अलैहि ज़ालिक वल्लाहुल्मुस्तआन**' या'नी सद अफ़सोस कि लोगों ने इस सुन्नत को जो अहादीष़े सहीहा से षाबित है, छोड़ रखा है यहाँ तक कि उनके मुहद्दिष़ और फ़क़ीह और मुज्तहिद और मुक़ल्लिद सब ही इस सुन्नत के छोड़ने वाले नज़र आते हैं मुझे नहीं मा'लूम कि इसके लिये उन लोगों ने कौनसा बहाना तलाश किया है और अल्लाह ही मददगार है।

दोनों सज्दों के बीच ये दुआ भी मसनून है, '**अल्लाहुम्मग़्फ़िरली वर्हम्नी वज्बुर्नी वहदिनी वर्ज़ुक्नी।**

बाब 141 : इस बारे में कि नमाज़ी सज्दे में अपने दोनों बाज़ुओं को (जानवर की तरह) ज़मीन पर न बिछाए और हुमैद ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने सज्दा किया और दोनों हाथ ज़मीन पर रखे बाज़ू नहीं बिछाए, न उनको पहलू से मिलाया

١٤١ – بَابُ لاَ يَفْتَرِشُ ذِرَاعَيْهِ فِي السُّجُودِ

وَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ: سَجَدَ النَّبِيُّ ﷺ وَوَضَعَ يَدَيْهِ غَيْرَ مُفْتَرِشٍ وَلاَ قَابِضُهُمَا.

٨٢٢– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اعْتَدِلُوا فِي السُّجُودِ وَلاَ يَبْسُطْ أَحَدُكُمْ ذِرَاعَيْهِ انْبِسَاطَ الْكَلْبِ)). [راجع: ٦٤١]

(822) हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने क़तादा से सुना, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि सज्दे में ए'तिदाल को मल्हूज़ रखे और अपने बाज़ू कुत्तों की तरह न फैलाया करो। (राजेअ : 691)

तश्रीह : क्योंकि इस तरह बाज़ू बिछा देना सुस्ती और काहिली की निशानी है। कुत्ते के साथ तश्बीह (तुलना करना) और भी मुज़म्मत की बात है। उसका पूरा लिहाज़ रखना चाहिये। इमाम क़स्तलानी ने कहा कि अगर कोई ऐसा करे तो नमाज़ मकरूहे तंजीही होगी।

बाब 142 : उस शख़्स के बारे में जो शख़्स नमाज़ की ताक़ रकअत (पहली और तीसरी) में थोड़ी देर बैठे और उठ जाए

١٤٢ – بَابُ مَنِ اسْتَوَى قَاعِدًا فِي وِتْرٍ مِنْ صَلاَتِهِ ثُمَّ نَهَضَ

٨٢٣– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ قَالَ: أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ

(823) हमसे मुहम्मद बिन सब्बाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें हुशैम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा ख़ालिद हज़्ज़ा ने ख़बर दी, अबू क़तादा से, उन्होंने बयान किया कि मुझे मालिक बिन हुवैरिष़

बाब 142 : उस शख़्स के बारे में जो शख़्स नमाज़ की ताक़ रकअ़त (पहली और तीसरी) में थोड़ी देर बैठे और उठ जाए

١٤٢- بَابُ مَنِ اسْتَوَى قَاعِدًا فِي وِتْرٍ مِنْ صَلاَتِهِ ثُمَّ نَهَضَ

(823) हमसे मुहम्मद बिन स़ब्बाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें हुशैम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा ख़ालिद हज़्ज़ा ने ख़बर दी, अबू क़तादा से, उन्होंने बयान किया कि मुझे मालिक बिन हुवैरिष़

٨٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ قَالَ: أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ

लैष़ी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आपने नबी करीम (ﷺ) को नमाज़ पढ़ते देखा, आप (ﷺ) जब ताक़ रकअ़त में होते, उस वक़्त तक न उठते जब तक थोड़ी देर बैठ न लेते।

اللَّيْثِيُّ (أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي، فَإِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلاَتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا).

M-09825696131

ताक़ रकअ़तों के बाद या'नी पहली और तीसरी रकअ़त के दूसरे सज्दे से जब उठे तो थोड़ी देर बैठकर फिर उठना; इसको जल्स-ए-इस्तिराह़त कहते हैं जो सुन्नते स़ह़ीह़ा से षाबित है।

लैष़ी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आपने नबी करीम (ﷺ) को नमाज़ पढ़ते देखा, आप (ﷺ) जब ताक़ रकअ़त में होते, उस वक़्त तक न उठते जब तक थोड़ी देर बैठ न लेते।

اللَّيْثِيُّ (أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي، فَإِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلاَتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا).

M-09825696131

ताक़ रकअ़तों के बाद या'नी पहली और तीसरी रकअ़त के दूसरे सज्दे से जब उठे तो थोड़ी देर बैठकर फिर उठना; इसको जल्स-ए-इस्तिराहृत कहते हैं जो सुन्नते सह़ीह़ा से ष़ाबित है।

बाब 143 : इस बारे में कि रकअ़त से उठते वक़्त ज़मीन का किस त़रह से सहारा लें

١٤٣ – بَابُ كَيْفَ يَعْتَمِدُ عَلَى الأَرْضِ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَةِ

(824) हमसे मअ़ली बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, उन्होंने अय्यूब सुख़ियानी से, उन्होंने अबू क़तादा से, उन्होंने बयान किया कि ह़ज़रत मालिक बिन हुवैरिष़ (रज़ि.) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए और आपने हमारी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ाई। आपने फ़र्माया कि मैं नमाज़ पढ़ा रहा हूँ लेकिन मेरी निय्यत किसी फ़र्ज़ की अदायगी नहीं है बल्कि मैं सिर्फ तुम को ये दिखाना चाहता हूँ कि नबी करीम (ﷺ) किस त़रह नमाज़ पढ़ा करते थे। अय्यूब सुख़ियानी ने बयान किया कि मैंने अबू क़तादा से पूछा कि मालिक (रज़ि) किस त़रह नमाज़ पढ़ते थे? तो उन्होंने फ़र्माया कि हमारे शैख़ अ़म्र बिन सलमा की त़रह। अय्यूब सुख़ियानी ने बयान किया कि शैख़ तमाम तकबीरात कहते थे और जब दूसरे सज्दे से सर उठाते तो थोड़ी देर बैठते और ज़मीन का सहारा लेकर फिर उठते। (राजेअ़ : 688)

٨٢٤ – حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ قَالَ: جَاءَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ فَصَلَّى بِنَا فِي مَسْجِدِنَا هَذَا فَقَالَ: إِنِّي لأُصَلِّي بِكُمْ وَمَا أُرِيْدُ الصَّلاَةَ، لَكِنْ أُرِيْدُ أَنْ أُرِيَكُمْ كَيْفَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي. قَالَ أَيُّوبُ: فَقُلْتُ لأَبِي قِلاَبَةَ وَكَيْفَ كَانَتْ صَلاَتُهُ؟ قَالَ: مِثْلَ صَلاَةِ شَيْخِنَا هَذَا – يَعْنِي عَمْرَو بْنَ سَلِمَةَ – قَالَ أَيُّوبُ : وَكَانَ ذَلِكَ الشَّيْخُ يُتِمُّ التَّكْبِيْرَ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ عَنِ السَّجْدَةِ الثَّانِيَةِ جَلَسَ وَاعْتَمَدَ عَلَى الأَرْضِ، ثُمَّ قَامَ. [راجع: ٦٧٧]

तशरीह़ : या'नी जलस-ए-इस्तिराह़त करके फिर दोनों हाथ ज़मीन पर टेककर उठते जैसे बूढ़ा शख़्स दोनों हाथों पर आटा गूंधने में टेका देता है। हन्फ़िया ने जो इसके ख़िलाफ़ तिर्मिज़ी की ह़दीष़ से दलील ली कि आँह़ज़रत (ﷺ) अपने पांव की उँगलियों पर खड़े होते थे; ये ह़दीष़ ज़ईफ़ है। इसके अ़लावा इससे ये निकलता है कि कभी आप (ﷺ) ने जलस-ए-इस्तिराह़त किया और कभी नहीं किया। अहले ह़दीष़ का यही मज़हब है और जलस-ए-इस्तिराह़त को मुस्तह़ब कहते हैं। और इसकी कोई दलील नहीं है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने कमज़ोरी या बीमारी की वजह से ऐसा किया और ये कहना कि नमाज़ का मौज़ूअ़ इस्तिराह़त नहीं है क़यास है, बमुक़ाबले दलील और वो फ़ासिद है। (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ)

बाब 144 : जब दो रकअ़त पढ़कर उठ तो तकबीर कहे और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) तीसरी रकअ़त के लिये उठते वक़्त तकबीर कहा करते थे

١٤٤ – بَابُ يُكَبِّرُ وَهُوَ يَنْهَضُ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ وَكَانَ ابْنُ الزُّبَيْرِ يُكَبِّرُ فِي نَهْضَتِهِ

أَهْلِ الْمَدِينَةِ)). [راجع: ٥٦٦]

इसलिये कि इस्लाम सिर्फ़ मदीना तक ही महदूद था, ख़ास तौर से बा-जमाअत का सिलसिला मदीना ही में था।

इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष़ से बाब का मतलब यूँ निकाला कि उस वक़्त इशा की नमाज़ पढ़ने के लिये बच्चे भी आते रहते होंगे, तभी तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि औरतें और बच्चे सो गए। पस जमाअत में औरतों का बच्चों के साथ शरीक होना भी षाबित हुआ, **'वज़्ज़ाहिरू मिन कलामि उमर अन्नहू शाहदन्निसाअल्लाती हज़र्न फिलमस्जिदि क़द निम्न व स़िब्यानुहुन्न मअहुन्न.'** (हाशिया बुख़ारी) या'नी ज़ाहिरे कलामे उमर से यही है कि उन्होंने उन औरतों का मुशाहिदा किया जो मस्जिद में अपने बच्चों समेत नमाज़े इशा के लिये आई थीं और वो सो गईं जबकि उनके बच्चे भी उनके साथ थे।

٨٦٣- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَابِسٍ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ لَهُ رَجُلٌ: شَهِدْتَ الْخُرُوجَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: نَعَمْ، وَلَوْ لاَ مَكَانِي مِنْهُ مَا شَهِدْتُهُ - يَعْنِي مِنْ صِغَرِهِ - ((الْعَلَمَ الَّذِي عِنْدَ دَارِ كَثِيرِ بْنِ الصَّلْتِ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ فَوَعَظَهُنَّ وَذَكَّرَهُنَّ وَأَمَرَهُنَّ أَنْ يَتَصَدَّقْنَ، فَجَعَلَتِ الْمَرْأَةُ تَهْوِي بِيَدِهَا إِلَى حَلْقِهَا تُلْقِي فِي ثَوْبِ بِلاَلٍ، ثُمَّ أَتَى هُوَ وَبِلاَلٌ الْبَيْتَ)).

[راجع: ٩٨]

863. हमसे उमर बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़्यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा कि मुझ से अब्दुर्रहमान बिन आबिस ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना और उनसे एक शख़्स ने ये पूछा था कि क्या तुमने (औरतों का) निकलना ईद के दिन आँहज़रत (ﷺ) के साथ देखा है? उन्होंने कहा हाँ, देखा है। अगर मैं आप का रिश्तेदार-अज़ीज़ न होता तो कभी न देखता। (या'नी मेरी कमसिनी और क़राबत की वजह से आँहज़रत मुझ को अपने साथ रखते थे) कष़ीर बिन स़ल्त के मकान के पास जो निशान हैं, पहले वहाँ आप (ﷺ) तशरीफ़ लाए, वहाँ आप (ﷺ) ने ख़ुत्बा सुनाया फिर आप औरतों के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें भी वा'ज़ व नसीहत की। आप (ﷺ) ने उनसे ख़ैरात करने के लिये कहा। चुनाँचे औरतों ने अपने छल्ले और अंगूठियाँ उतार-उतार कर बिलाल (रज़ि.) के कपड़े में डालनी शुरू कर दी। आख़िर आप (ﷺ) बिलाल (रज़ि.) के साथ घर तशरीफ़ लाए। (राजेअ : 98)

तश्रीह : हज़रत इब्ने अब्बास कमसिन थे, बावजूद उसके ईद में शरीक हुए यहीं से बाब का तर्जुमा निकलता है और उससे औरतों का ईदगाह में जाना भी षाबित हुआ। चुनाँचे अह्नाफ़ के यहाँ ईदगाह में औरतों का जाना जाइज़ नहीं है, इसीलिये एक बुख़ारी शरीफ़ के देवबन्दी नुस्ख़े में तर्जुमा ही बदल दिया गया है। चुनाँचे वो तर्जुमा यूँ करते हैं कि 'उनसे एक शख़्स ने यूँ पूछा कि क्या नबी करीम (ﷺ) के साथ आप ईदगाह गए थे। हालाँकि पूछा ये जा रहा था कि क्या तुमने ईद के दिन नबी करीम (ﷺ) के साथ औरतों का निकलना देखा है, उन्होंने कहा कि हाँ ज़रूर देखा है। ये बदला हुआ तर्जुमा देवबन्दी तफ़्हीमुल बुख़ारी पारा नं. 4 पेज नं. 32 पर देखा जा सकता है। ग़ालिबन ऐसे ही हज़रात के लिये कहा गया है कि ख़ुद बदलते नहीं क़ुर्आन को बदल देते हैं। **वफ़्फ़क़नल्लाहु लिमा युहिब्बु व यर्ज़ा आमीन।**

बाब 162 : औरतों का रात में और (सुबह के वक़्त) अंधेरे में मस्जिद में जाना

١٦٢- بَابُ خُرُوجِ النِّسَاءِ إِلَى الْمَسَاجِدِ بِاللَّيْلِ وَالْغَلَسِ

864. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने ज़ुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे उ़र्वा बिन यज़ीद ने आइशा (रज़ि.) से बयान किया, आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक मर्तबा इशा की नमाज़ में इतनी देरी की कि उ़मर (रज़ि.) को कहना पड़ा कि औरतें और बच्चे सो गये। फिर नबी करीम (ﷺ) (हुज्रे से) बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि देखो रूए-ज़मीन पर इस नमाज़ का (इस वक़्त) तुम्हारे सिवा और कोई इन्तिज़ार नहीं कर रहा है। उन दिनों मदीना के सिवा और कहीं नमाज़ नहीं पढ़ी जाती थी और लोग इशा की नमाज़ शफ़क़ डूबने के बाद से रात की पहली तिहाई गुज़रने तक पढ़ा करते थे।

(राजेअ़ : 566)

٨٦٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: (أَعْتَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْعَتَمَةِ حَتَّى نَادَاهُ عُمَرُ: نَامَ النِّسَاءُ وَالصِّبْيَانُ، فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَا يَنْتَظِرُهَا أَحَدٌ غَيْرُكُمْ مِنْ أَهْلِ الأَرْضِ)). وَلاَ يُصَلِّي يَوْمَئِذٍ إِلاَّ بِالْمَدِينَةِ، وَكَانُوا يُصَلُّونَ الْعَتَمَةَ فِيمَا بَيْنَ أَنْ يَغِيبَ الشَّفَقُ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ الأَوَّلِ.

[راجع: ٥٦٦]

तशरीह : मा'लूम हुआ कि औरतें भी नमाज़ के लिये ह़ाज़िर थीं, तभी तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ये जुम्ला बाआवाज़े बुलन्द फ़र्माया ताकि आप (ﷺ) तशरीफ़ लाएँ और नमाज़ पढ़ाएँ। बाब का तर्जुमा इसी से निकलता है कि औरतें और बच्चे सो गए क्योंकि इससे मा'लूम होता है कि औरतें भी रात को नमाज़े इशा के लिये मस्जिद में आया करती थीं। उसके बाद जो ह़दीष़ इमाम बुख़ारी (रह़.) ने बयान की उससे भी यही निकलता है कि रात को औरत मस्जिद में जा सकती है। दूसरी ह़दीष़ में है कि अल्लाह की बन्दियों को मस्जिद में जाने से न रोको, ये ह़दीष़ें इसको ख़ास़ करती हैं या'नी रात को रोकना मना है। अब औरतों का जमाअ़त में आना मुस्तह़ब है या मुबाह़ इसमें इख़्तिलाफ़ है। कुछ ने कहा जवान औरत को मुबाह़ है और बूढ़ी को मुस्तह़ब है। ह़दीष़ से ये भी निकला कि औरतें ज़रूरत के लिये बाहर निकल सकती हैं। इमाम अबू ह़नीफ़ा ने कहा कि मैं औरतों का जुम्अ़े में आना मकरूह जानता हूँ और बुढ़िया इशा और फ़ज्र की जमाअ़त में आ सकती है और नमाज़ों में न आए और अबू यूसुफ़ ने कहा बुढ़िया हर एक नमाज़ के लिये मस्जिद में आ सकती है और जवान का आना मकरूह है। क़स्तलानी (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम) ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) का क़ौल ख़िलाफ़े ह़दीष़ होने की वजह से हुज्जत नहीं जैसा कि ख़ुद ह़ज़रत इमाम की वसिय्यत है कि मेरा क़ौल ख़िलाफ़े ह़दीष़ हो तो छोड़ दो।

865. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने हन्ज़ला बिन अबी सुफ़्यान से बयान किया, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने, उनसे उनके बाप इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने, वो नबी करीम (ﷺ) से रिवायत करते थे कि आपने फ़र्माया कि अगर तुम्हारी बीवियाँ तुमसे रात में मस्जिद आने की इजाज़त माँगे तो तुम लोग उन्हें इसकी इजाज़त दे दिया करो।

उ़बैदुल्लाह के साथ इस ह़दीष़ को शुअ़बा ने भी आ'मश से रिवायत किया, उन्होंने मुजाहिद से, उन्होंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

(दीगर मक़ामात : 873, 899, 900, 5238)

٨٦٥- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ حَنْظَلَةَ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِذَا اسْتَأْذَنَكُمْ نِسَاءُكُمْ بِاللَّيْلِ إِلَى الْمَسْجِدِ فَأْذَنُوا لَهُنَّ)).

تَابَعَهُ شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[أطرافه في : ٨٧٣، ٨٩٩، ٩٠٠،

[٥٢٣٨.

बाब 163 : लोगों का नमाज़ के बाद इमाम के उठने का इन्तिज़ार करना

١٦٣ - بَابُ انْتِظَارِ النَّاسِ قِيَامَ الإِمَامِ الْعَالِمِ

866. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे उ़ष्मान बिन उ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें यूनुस बिन यज़ीद ने ज़ुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे हिन्द बिन्त हारिष़ ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजः मुतह्हरा उम्मे सलमा (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में औरतें फ़र्ज़ नमाज़ से सलाम फेरने के फौरन बाद (बाहर आने के लिये) उठ जाती थी। रसूलुल्लाह (ﷺ) और मर्द नमाज़ के बाद अपनी जगह बैठे रहते। जब तक अल्लाह को मन्ज़ूर होता। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) उठते तो दूसरे मर्द भी खड़े हो जाते।

٨٦٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَتْنِي هِنْدُ بِنْتُ الْحَارِثِ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا ((أَنَّ النِّسَاءَ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ كُنَّ إِذَا سَلَّمْنَ مِنَ الْمَكْتُوبَةِ قُمْنَ وَثَبَتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَنْ صَلَّى مِنَ الرِّجَالِ مَا شَاءَ اللهُ، فَإِذَا قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَامَ الرِّجَالُ)).

इस ह़दीष़ से भी औ़रतों का जमाअ़त में शरीक होना ष़ाबित हुआ।

867. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक (रह.) से बयान किया। (दूसरी सनद) और हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्हें इमाम मालिक (रह.) ने यह्या बिन सईद अन्सारी से ख़बर दी, उन्हें उ़म्रा बिन्त अ़ब्दुर्रह्मान ने, उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ पढ़ लेते फिर औ़रतें चादर में लिपट कर (अपने घरों को) वापस हो जाती थी। अंधेरे से उनकी पहचान न हो सकती।

(राजेअ़ : 372)

٨٦٧ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ ح. وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((إِنْ كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَيُصَلِّي الصُّبْحَ فَيَنْصَرِفُ النِّسَاءُ مُتَلَفِّعَاتٍ بِمُرُوطِهِنَّ مَا يُعْرَفْنَ مِنَ الْغَلَسِ)).

[راجع: ٣٧٢]

868. हमसे मुहम्मद बिन मिस्कीन ने बयान किया, कहा कि हमसे बिश्र बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम औज़ाई ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा अन्सारी ने, उनसे उनके वालिद अबू क़तादा अन्सारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं नमाज़ के लिये खड़ा होता हूँ, मेरा इरादा ये होता है कि नमाज़ लम्बी करूँ लेकिन किसी बच्चे के

٨٦٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْكِيْنٍ قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرٌ قَالَ أَخْبَرَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيْرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ الأَنْصَارِيِّ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنِّي لأَقُومُ إِلَى الصَّلاَةِ

मंज़ूर करते हो तुम जानो अपने पैग़म्बर को जो जवाब क़यामत के दिन देना हो वो दे लेना। **वमा अलैना इल्लल बलाग़** (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ)

M-09825696131

बाब 164 : औरतों का मर्दों के पीछे नमाज़ पढ़ना

١٦٤- بَابُ صَلاَةِ النِّسَاءِ خَلْفَ الرِّجَالِ

870. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने ज़ुहरी से बयान किया, उनसे हिन्द बिन्त हारिष़ ने बयान किया, उनसे उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सलाम फेरते तो आपके सलाम फेरते ही औरतें जाने के लिये उठ जाती थीं और आँहज़रत (ﷺ) थोड़ी देर ठहरे रहते, खड़े न होते। ज़ुहरी ने कहा कि हम ये समझते हैं, आगे अल्लाह जाने, ये इसलिये था ताकि औरतें मर्दों से पहले निकल जाएँ।

٨٧٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ هِنْدَ بِنْتِ الْحَارِثِ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: (كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا سَلَّمَ قَامَ النِّسَاءُ حِيْنَ يَقْضِي تَسْلِيْمَهُ، وَيَمْكُثُ هُوَ فِي مَقَامِهِ يَسِيْرًا قَبْلَ أَنْ يَقُومَ. قَالَ : نَرَى - وَاللهُ أَعْلَمُ - أَنَّ ذَلِكَ كَانَ لِكَيْ يَنْصَرِفَ النِّسَاءُ قَبْلَ أَنْ يُدْرِكَهُنَّ الرِّجَالِ.

871. हमसे अबू नुऐम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़्यान इब्ने उयैना ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने (मेरी माँ) उम्मे सुलैम के घर में नमाज़ पढ़ाई। मैं और यतीम मिलकर आप (ﷺ) के पीछे खड़े हुए और उम्मे सुलैम (रज़ि.) हमारी पीछे थीं। (राजेअ : 380)

٨٧١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: (صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ فِي بَيْتِ أُمِّ سُلَيْمٍ فَقُمْتُ وَيَتِيْمٌ خَلْفَهُ. وَأُمُّ سُلَيْمٍ خَلْفَنَا). [راجع: ٣٨٠]

बाब 165 : सुबह की नमाज़ पढ़कर औरतों का जल्दी से चला जाना और मस्जिद में कम ठहरना

١٦٥- بَابُ سُرْعَةِ انْصِرَافِ النِّسَاءِ مِنَ الصُّبْحِ وَقِلَّةِ مُقَامِهِنَّ فِي الْمَسْجِدِ

872. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन मन्सूर ने बयान किया, कहा कि हमसे फ़ुलैज बिन सुलैमान ने अब्दुर्रह्मान बिन क़ासिम से बयान किया, उनसे उन के बाप (क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबी बकर) ने उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ मुँह अंधेरे पढ़ते थे। मुसलमानों की औरतें जब (नमाज़ पढ़कर) वापस होतीं तो अंधेरे की वजह से उनकी पहचान न होती या वो एक दूसरे को न

٨٧٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا : ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي الصُّبْحَ بِغَلَسٍ فَيَنْصَرِفْنَ نِسَاءُ الْمُؤْمِنِيْنَ لاَ يُعْرَفْنَ مِنَ الْغَلَسِ، أَوْ

पहचान सकतीं। (राजेअ : 382) M-09825696131 لاَ يَعْرِفُ بَعْضُهُنَّ بَعْضًا)). [راجع: ٣٧٢]

तश्रीह : नमाज़ ख़त्म होते ही औरतें वापस हो जाती थीं इसलिये उनकी वापसी के वक़्त भी इतना अँधेरा रहता था कि एक–दूसरी को पहचान नहीं सकती थी। लेकिन मर्द फ़ज्र के बाद आम तौर से नमाज़ के बाद मस्जिद में कुछ देर के लिये ठहरते थे। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) को अल्लाह पाक ने इज्तिहाद का दर्जे-ए-कामिल अ़ता फ़र्माया था। इसी आधार पर आपने अपनी जामिउ़स्सह़ीह़ में एक–एक ह़दीष़ से बहुत से मसाइल का इस्तिख़राज फ़र्माया है। ह़दीष़े मज़कूर पीछे भी कई बार ज़िक्र हो चुकी है। ह़ज़रत इमाम ने इससे फ़ज्र की नमाज़ अव्वले वक़्त ग़लस (अंधेरे) में पढ़ने का इष़्बात फ़र्माया है और यहाँ औरतों का शरीके जमाअ़त होना और सलाम के बाद उनका फ़ौरन मस्जिद से चले जाना वग़ैरह मसाइल बयान फ़र्माएँ हैं। ता'ज्जुब है उन अ़क़्ल के दुश्मनों पर जो ह़ज़रत इमाम जैसे मुज्तहिदे मुत्लक़ की दिरायत का इंकार करते हैं और आपको सिर्फ़ रिवायात का इमाम तस्लीम करते हैं। हालाँकि रिवायत और दिरायत दोनों में आपकी महारते ताम्मा ष़ाबित है और मज़ीद ख़ूबी ये है कि आपकी दिरायत व तफ़क़्क़ुह की बुनियाद सिर्फ़ क़ुर्आन और ह़दीष़ पर है, राय और क़यास पर नहीं। जैसा कि दूसरे अइम्म-ए-मुज्तहिदीन में से कुछ ह़ज़रात का ह़ाल है जिनके तफ़क़्क़ुह की बुनियाद सिर्फ़ राय और क़यास पर है। ह़ज़रत इमामे बुख़ारी (रह़.) को अल्लाह ने जो मुक़ाम अ़ता फ़र्माया था वो उम्मत में बहुत कम लोगों के ह़िस्से में आया है। अल्लाह ने आपको पैदा ही इसलिये फ़र्माया था कि शरीअ़ते मुह़म्मदिया को क़ुर्आनो–सुन्नत की बुनियाद पर इस दर्ज़ा मुंज़बित फ़र्माएं कि क़यामत के लिये उम्मत इससे बेनियाज़ होकर बेधड़क शरीअ़त पर अ़मल करती रहे। आयते शरीफ़ा, **'व आख़रीन मिन्हुम लम्मा यलह़क़ू बिहिम'** (अल जुम्आ 3) की मिस्दाक़ बेशक व शुब्हा इन्हीं मुह़द्दिष़ीने किराम (रह़.) अज्मईन की जमाअ़त है।

बाब 166 : औ़रत मस्जिद में जाने के लिये अपने ख़ाविन्द से इजाज़त ले

١٦٦– بَابُ اسْتِئْذَانِ الْمَرْأَةِ زَوْجَهَا بِالْخُرُوجِ إِلَى الْمَسْجِدِ

873. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने, उनसे उनके बाप ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है कि आपने फ़र्माया कि जब तुम में से किसी की बीवी (नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद में आने की) उससे इजाज़त माँगे तो शौहर को चाहिये कि उसको न रोके। (राजेअ़ : 865)

٨٧٣– حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا اسْتَأْذَنَتِ امْرَأَةُ أَحَدِكُمْ فَلاَ يَمْنَعْهَا)). [راجع: ٨٦٥]

तश्रीह : इजाज़त दे इसलिये कि बीवी कोई हमारी लौण्डी नहीं है हमारी तरह वो भी आज़ाद है सिर्फ़ निकाह के मुआहिदे की वजह से वो हमारे मातह़त है। शरीअ़ते मुह़म्मदी में औ़रत और मर्द के (इन्सानी) हुक़ूक़ बराबर तस्लीम किये गए हैं। अब अगर इस ज़माने के मुसलमान अपनी शरीअ़त के बरख़िलाफ़ औ़रतों को क़ैदी और लौण्डी बनाकर रखें तो उसका इल्ज़ाम उन पर है न कि शरीअ़ते मुह़म्मदी पर। जिन पादरियों ने शरीअ़ते मुह़म्मदी को बदनाम किया कि इस शरीअ़त में औ़रतों को मुत्लक आज़ादी नहीं, उनकी नादानी है। (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरह़ूम)

ह़न्फ़िया के यहाँ मसाजिद में नमाज़ के लिये औ़रतों का आना दुरुस्त नहीं है इस सिलसिले में उनकी बड़ी दलील ह़ज़रते आइशा (रज़ि.) की ह़दीष़ है जिनके अल्फ़ाज़ ये हैं **क़ालत लौ अदरकन्नबिय्यु (ﷺ) मा अह़दष़न्निसाउ लमनअ़हुन्नल्मस्जिद कमा मुनिअ़त निसाउ बनी इस्राईल अख़रजहुश्शैख़ानि** या'नी ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) उन चीज़ों को पा लेते जो आज औ़रतों ने नई ईजाद कर ली है तो आप उनको मसाजिद आने से मना फ़र्मा देते जैसा कि बनी इस्राईल की औ़रतों को रोक दिया गया था। इसके जवाब में अल मुह़द्दिष़ुल कबीर अल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान मुबारकपुरी (रह़.) अपनी मशहूर किताब

उमूर में हिस्से लेने का कोई मौक़ा न मिला कि हज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म अपने ख़ानदान व क़बीला के अफ़राद को अलग रखते रहे। अहदे उ़ष्मानी में आपकी क़ाबिलियत के मद्देनज़र आपको अहदे क़ज़ा पेश किया गया (क़ाज़ी बनाने की पेशकश की गई) लेकिन आपने ये फ़र्माकर इंकार कर दिया कि क़ाज़ी तीन क़िस्म के होते हैं जाहिल, आलिमे मसाइल अलद्दुनिया (दुनियवी मसाइल के आलिम) कि ये दोनों जहन्नमी है। तीसरे वो हैं जो सहीह इज्तिहाद करते हैं उन्हें न अज़ाब है न ष़वाब और साफ़ कह दिया कि मुझे कहीं का आमिल न बनाइए। उसके बाद अमीरुल मोमिनीन ने भी इस़रार न किया अलबत्ता उस अहद के जिहाद के मोर्चों में ज़रूर शरीक रहे। ट्यूनिश, अल जज़ाइर (अल्जीरिया), मराकश, ख़ुरासान और त़ब्रिस्मान के युद्धों में लड़े। जिस क़दर मनास़िब (पदों) और ओहदों की क़ुबूलयित से घबराते थे, जिहादों में उसी क़दर ज़ोश–ख़रोश और शौक़ व दिल बस्तगी के साथ हिस़्सा लेते थे।

आख़िर ज़मान-ए-उ़ष्मानी में जो फ़ित्ने रूनुमा (प्रकट) हुए आप उनसे बिल्कुल किनाराकश रहे। उनकी शहादत के बाद आपकी ख़िदमत में ख़िलाफ़त का ए'जाज़ पेश किया और अदमे क़ुबूलियत के सिलसिले में क़त्ल की धमकी दी गई लेकिन आपने फ़ित्नों (उपद्रवों) को देखते हुए इस अ़ज़ीमुश्शान ए'जाज़ से भी इंकार कर दिया और कोई इअ़तिनाअ न की। उसके बाद आपनेइस शर्त पर हज़रत अ़ली (रज़ि.) के हाथ पर बेअ़त कर ली कि वो खाना–जंगियों (गृहयुद्धों) में कोई हिस़्सा न लेंगे। चुनाँचे जंगे जमल व स़िफ़्फ़ीन में शिर्कत न की। ताहम अफ़सोस करने वाले थे और कहा करते थे कि :–

'गो मैंने हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू की त़रफ़ से अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाता लेकिन हक़ पर मुक़ाबला भी अफ़ज़ल है।' (मुस्तदरक)

फ़ैस़ला ष़ालिष़ी सुनने के लिये दूमतुल जन्दाल में तशरीफ़ ले गए। हज़रत अ़ली करमुल्लाह वज्हू के बाद अमीर मुआविया (रज़ि.) के हाथ पर बेअ़त कर ली और शौक़े जिहाद में उस अहद के तमाम मअ़रकों में नीज़ मुहिमे क़ुस्तुन्तुनिया में शामिल हुए। यज़ीद के हाथ पर फ़ित्न-ए-इख़्तिलाफ़े उम्मत से दामन बचाए रखने के लिये बिला तामील बेअ़त कर ली और फ़र्माया कि ये ख़ैर है तो हम इस पर राज़ी हैं और अगर ये शर है तो हमने स़ब्र किया। आजकल लोग फ़ित्नों से बचना तो दरकिनार अपने ज़ाती मक़ास़िद के लिये फ़ित्ने पैदा करते हैं और अल्लाह के ख़ौफ़ से उनके जिस्म पर लरज़ा त़ारी नहीं होता। फिर ये बेअ़त हक़ीक़तन न किसी डर के आधार पर थी और न आप किसी लालच में आए थे। त़नत़ना और हक़परस्ती का ये आलम था कि अम्रे हक़ के मुक़ाबले में किसी बड़ी से बड़ी शख़्स़ियत को भी ख़ात़िर में नहीं लाते थे।

बाब 167 : औरतों का मर्दों के पीछे नमाज़ पढ़ना

١٦٧– بَابُ صَلَاةِ النِّسَاءِ خَلْفَ الرِّجَالِ

874. हमसे अबू नुऐम फ़ुज़ैल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़्यान इब्ने उ़यय्ना ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़ल्हा ने, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने (मेरी माँ) उम्मे सुलैम के घर में नमाज़ पढ़ाई। मैं और यतीम मिलकर आप (ﷺ) के पीछे खड़े हुए और उम्मे सुलैम (रज़ि.) हमारे पीछे थीं।

٨٧٤– حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ (صَلَّى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَيْتِ أُمِّ سُلَيْمٍ، فَقُمْتُ وَيَتِيمٌ خَلْفَهُ. وَأُمُّ سُلَيْمٍ خَلْفَنَا).

875. हमसे यह्या बिन क़ज़अ़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने ज़ुहरी से बयान किया, उनसे हिन्द बिन्त हारिष़ ने बयान किया, उनसे उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सलाम फेरते तो आपके सलाम फेरते ही औरतें जाने के लिये उठ जाती थीं

٨٧٥– حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ هِنْدٍ بِنْتِ الْحَارِثِ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: (كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا سَلَّمَ قَامَ النِّسَاءُ حِينَ

और आँहज़रत (ﷺ) थोड़ी देर ठहरे रहते, खड़े न होते। ज़ुहरी ने कहा कि हम ये समझते हैं, आगे अल्लाह जाने, ये इसलिये था कि औरतें मर्दों से पहले निकल जाएँ।

(राजेअ : 380)

يَقْضِي تَسْلِيمَهُ، وَهُوَ يَمْكُثُ فِي مَقَامِهِ يَسِيرًا قَبْلَ أَنْ يَقُومَ. قَالَتْ تُرَى - وَاللهُ أَعْلَمُ - أَنَّ ذَلِكَ كَانَ لِكَيْ يَنْصَرِفَ النِّسَاءُ قَبْلَ أَنْ يُدْرِكَهُنَّ الرِّجَالُ.

[راجع: ٣٨٠]

11. किताबुल जुमुआ

किताब जुम्आ के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तश्रीह : लफ़्ज़े जुम्आ मीम के साकिन के साथ और जुम्आ मीम की फ़तह के साथ दोनों त़रह से बोला गया। अ़ल्लामा शौकानी फ़र्माते हैं, **'क़ाल फिल्फतहि कदिख़्तुलिफ फी तस्मिय्यतिल्यौमि बिलजुम्अति मअ़ल्इत्तिफ़ाक़ि अ़लाअन्नहू कान लयुसम्मा फिल्जाहिलिय्यति वल्अ़रूबति बिफत्हिल्ऐनि व ज़म्मिर्राइ व बिल्वहदति अल्ख़'** या'नी जुम्अे की वजहे तस्मिया में इख़्तिलाफ़ है इस पर सबका इत्तिफ़ाक़ है कि अ़हदे जाहिलियत में उसको यौमे अ़रूबा कहा करते थे। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया है कि उस दिन मख़्लूक़ की ख़िल्क़त तक्मील को पहुँची इसलिये उसे जुम्आ कहा गया। कुछ लोग कहते हैं कि तख़्लीक़े आदम की तक्मील इसी दिन हुई इसलिये इसे जुम्आ कहा गया। इब्ने हुमैद में सनदे सह़ीह़ से मरवी है कि ह़ज़रत असद बिन ज़रारह के साथ अंस़ार ने जमा होकर नमाज़ अदा की और ह़ज़रत असद बिन ज़रारह ने उनको वा'ज़ फ़र्माया। पस उसका नाम उन्होंने जुम्आ रख दिया क्योंकि वो सब इसमें जमा हुए। ये भी है कि कअ़ब बिन लवी उस दिन अपनी क़ौम को ह़रमे शरीफ़ में जमा करके उनको वा'ज़ किया करता था और कहा करता था कि इस ह़रम से एक नबी का ज़ुहूर होने वाला है। यौमे अ़रूबा का नाम सबसे पहले यौमे जुम्आ कअ़ब बिन लवी ही ने रखा। ये दिन बड़ी फ़ज़ीलत रखता है। इसमें एक घड़ी ऐसी है जिसमें जो नेक दुआ की जाए क़ुबूल होती है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अपने रविश के मुत़ाबिक़ नमाज़े जुम्आ की फ़र्ज़ियत के लिये आयते क़ुर्आनी से इस्तिदलाल फ़र्माया जैसा कि नीचे के बाब से ज़ाहिर है कि ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब शैख़ुल ह़दीष़ मुबारक पुरी फ़र्माते हैं, **'व ज़कर इब्नुल क़य्यिम फिल्हुदा सफ़ा 102, 118 जिल्द-01 लियौमिल्जुम्अति षलाषव्व षलाषीन ख़ुसूसिय्यतन ज़कर बअ़्ज़हल्हाफ़िज़ु फिल्फतहि मुलख़्ख़िसम्मिन अह़ब्बिल्वुक़ूफ़ि अ़लैहा फल्यर्जिअ़ इलैहिमा'** (मिर्आत जिल्द नं. 2, पेज नं. 272) या'नी जुम्अे के दिन 33 ख़ुसूस़ियात हैं जैसा कि अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम ने ज़िक्र किया है कुछ उनमें से ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर ने फ़त्हुल बारी में भी नक़ल की हैं। तफ़्सीलात का शौक़ रखनेवाले उन किताबों की त़रफ़ रुजूअ़ फ़र्माएँ।

M.09825696131

तबरानी की रिवायत है कि आप हमेशा ऐसा किया करते थे। उन सूरतों में इंसान की पैदाइश और क़यामत वग़ैरह का ज़िक्र है और ये जुम्आ के दिन ही वाक़ेअ होगी। इस ह़दीष़ से मालिकिया का रद्द हुआ जो नमाज़ में सज्दे वाली सूरत पढ़ना मकरूह जानते हैं। अबू दाऊद की रिवायत है कि नमाज़ में भी सज्दे की सूरत पढ़ी और सज्दा किया। (वह़ीदी) अल्लामा शौकानी इस बारे में कई अह़ादीष़ नक़ल करने के बाद फ़र्माते हैं, **'व हाज़िहिल्अह़ादीषु फीहा मश्रूइय्यतु किराति तन्ज़ीलिस्सज्दति व हल अता अलल्इन्सानि क़ालल्इराक़ी व मिम्मन कान यफ़अलुहू मिनस़्स़हाबति अ़ब्दुल्लाहिब्नि अ़ब्बास व मिनत्ताबिईन इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ व हुव मज़्हबश्शाफ़िई व अह़मद व अस्ह़ाबुल्अह़ादीष़'** (नैलुल औतार) या'नी इन अह़ादीष़ से ष़ाबित हुआ कि जुम्अे के दिन फ़ज्र की नमाज़ की पहली रकअ़त में अलिफ़ लाम तंज़ील सज्दा दूसरी में हल अता अ़लल इंसान पढ़ना अफ़ज़ल है। स़ह़ाबा में से ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) और ताबेई़ में से इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान का यही अ़मल था और इमाम शाफ़िई और इमाम अह़मद और अहले ह़दीष़ का यही मज़हब है।

अ़ल्लामा क़स्तलानी फ़र्माते हैं कि **'वत्तअ़्बीरू बिकान यश्उरू बिमवाज़बतिही अ़लैहिस्सलाम अलल्किराति बिहिमा फीहा'** या'नी ह़दीष़े मज़्कूर में लफ़्ज़े काना बतला रहा है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने जुम्अ़े के दिन फ़ज्र की नमाज़ में इन सूरतों पर मवाज़बत या'नी हमेशगी फ़र्माई है। अगरचे कुछ उ़लमा मवाज़बत को नहीं मानते मगर तबरानी में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से **'युदीमु बिज़ालिक'** लफ़्ज़ मौजूद है। या'नी आप (ﷺ) ने इस अ़मल पर मुदावमत फ़र्माई (क़स्तलानी) कुछ लोगों ने दा'वा किया था कि अहले मदीना ने ये अ़मल छोड़ दिया था, इसका जवाब अ़ल्लामा इब्ने ह़जर (रह़.) इन लफ़्ज़ों में दिया है, **'व अम्मा दअ़्वाहू अन्ननास तरकुल्अमल बिही फ़ बातिलतुन लिअम्मन अक्ष़र अहलिल्इल्मि मिनस़्स़हाबति वत्ताबिईन क़द क़ालू बिही कमा नक़लहुब्नुल्मुन्ज़िर व गैरहू हत्ता अन्नहू ष़ाबितुन अन इब्राहीम इब्नि औ़फ़ वल्अस्अद व हुव मिन किबारित्ताबिईन मिन अहलिल्मदीनति अन्नहू अम्मन्नास बिल्मदीनति बिहिमा फिल्फज्रि यौमल्जुम्अति अख़्रजहू इब्नु अबी शैबत बिइस्नादिन सहीहिन'** अल्ख़ (फ़त्हुल बारी) या'नी ये दा'वा कि लोगों ने इस पर अ़मल करना छोड़ दिया था झूठ है। इसलिये कि अकष़र अहले इल्म स़ह़ाबा व ताबेई़न इसके क़ाइल हैं जैसा कि इब्ने मुंज़िर वग़ैरह ने नक़ल किया है यहाँ तक कि इब्राहीम इब्ने औ़फ़ से भी ष़ाबित है जो मदीना के बड़े ताबेई़न में से हैं कि उन्होंने जुम्अ़े के दिन लोगों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई और इन्हीं दो सूरतों को पढ़ा। इब्ने अबी शैबा ने इसे सह़ीह़ सनद से रिवायत किया है।

बाब 11 : गांव और शहर दोनों जगह जुम्आ दुरुस्त है

١١- بَابُ الْجُمُعَةِ فِي الْقُرَى وَالْمُدُنِ

(892) हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू आ़मिर अ़क़्दी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन त़ह्मान ने बयान किया, उनसे अबू जम्रह नज़्र बिन अ़ब्दुर्रह़मान ज़ब्ग़ी ने, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने, आपने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) की मस्जिद के बाद सबसे पहला जुम्आ बनू क़ैस की मस्जिद में हुआ जो बेहरीन के मुल्क जुवाष़ी में थी।

(दीगर मक़ाम : 4371)

٨٩٢- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الْعَقَدِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ الضُّبَعِيِّ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((إِنَّ أَوَّلَ جُمُعَةٍ جُمِّعَتْ - بَعْدَ جُمُعَةٍ فِي مَسْجِدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ - فِي مَسْجِدِ عَبْدِ الْقَيْسِ بِجُوَاثَى مِنَ الْبَحْرَيْنِ)).

[طرفه في : ٤٣٧١].

(893) हमसे बिश्र बिन मुह़म्मद मर्वज़ी ने बयान किया, कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमें यूनुस बिन

٨٩٣- حَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَرْوَزِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا يُونُسُ

M-09825696131

عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنَا سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ)). وَزَادَ اللَّيْثُ قَالَ يُونُسُ كَتَبَ رُزَيْقُ بْنُ حُكَيْمٍ إِلَى ابْنِ شِهَابٍ- وَأَنَا مَعَهُ يَوْمَئِذٍ بِوَادِي الْقُرَى - : هَلْ تَرَى أَنْ أُجَمِّعَ؟ وَرُزَيْقٌ عَامِلٌ عَلَى أَرْضٍ يَعْمَلُهَا وَفِيْهَا جَمَاعَةٌ مِنَ السُّوْدَانِ وَغَيْرِهِمْ، وَرُزَيْقٌ يَوْمَئِذٍ عَلَى أَيْلَةَ، فَكَتَبَ ابْنُ شِهَابٍ - وَأَنَا أَسْمَعُ - يَأْمُرُهُ أَنْ يُجَمِّعَ، يُخْبِرُهُ أَنَّ سَالِمًا حَدَّثَهُ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ، وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ: الإِمَامُ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي أَهْلِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا وَمَسْؤُولَةٌ عَنْ رَعِيَّتِهَا، وَالْخَادِمُ رَاعٍ فِي مَالِ سَيِّدِهِ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ)) - قَالَ: وَحَسِبْتُ أَنْ قَدْ قَالَ: ((وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي مَالِ أَبِيهِ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ)).

[أطرافه في : ٢٤٠٩، ٢٥٥٤، ٢٧٥١،

यज़ीद ने ज़ुह्री से ख़बर दी, उन्हें सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने इब्ने आमिर से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को ये कहते हुए सुना कि तुममें से हर शख़्स निगहबान है और लैष़ ने इसमें ये ज़्यादती की कि यूनुस ने बयान किया कि रुज़ैक़ बिन ह़कीम ने इब्ने शिहाब को लिखा। उन दिनों मैं भी वादिउल क़ुरा में इब्ने शिहाब के पास ही था कि क्या मैं जुम्आ पढ़ सकता हूँ। रुज़ैक़ (ऐला के आसपास) एक ज़मीन काश्त करवा रहे थे। वहाँ ह़ब्शा वग़ैरह के कुछ लोग मौजूद थे। उस ज़माने में रुज़ैक़ ऐला में (ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की त़रफ़ से) ह़ाकिम थे। इब्ने शिहाब (रह़.) ने उन्हें लिखवाया, मैं वहीं सुन रहा था कि रुज़ैक़ जुम्आ पढ़ाएँ। इब्ने शिहाब रुज़ैक़ को ये ख़बर दे रहे थे कि सालिम ने उनसे ह़दीष़ बयान की कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया कि तुममें से हर एक निगराँ हैं और उसके मातह़तों के बारे में उससे सवाल होगा। इमाम निगराँ हैं और उससे सवाल उसकी रिआ़या के बारे में होगा। इंसान अपने घर का निगराँ हैं और उससे उसकी रइयत (प्रजा) के बारे में सवाल होगा। औ़रत अपने शौहर के घर की निगराँ हैं और उससे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा। ख़ादिम अपने आक़ा के माल का निगराँ है और उससे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा। इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मेरा ख़याल है कि आप (ﷺ) ने ये भी फ़र्माया कि इंसान अपने बाप के माल का निगराँ है और उससे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा और तुममें से हर शख़्स निगराँ हैं और सबसे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा।

(दीगर मक़ाम : 2409, 2554, 2751)

तश्रीह: मुज्तहिदे मुत्लक़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने उन लोगों का रद्द फ़र्माया है जो जुम्अ़े की स़िह़त के लिये शहर और ह़ाकिम वग़ैरह की क़ुयूद लगाते हैं और गांव में जुम्अ़े के लिये इंकार करते हैं। ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ स़ाह़ब शारेह़े बुख़ारी फ़र्माते हैं कि इससे इमाम बुख़ारी (रह़.) ने उन लोगों का रद्द किया जो जुम्अ़े के लिये शहर की क़ैद करते हैं। अहले ह़दीष़ का मज़हब ये है कि जुम्अ़े की शर्तें जो ह़न्फ़ियों ने लगाई हैं वो सब बेदलील हैं और जुम्आ दूसरी नमाज़ों की त़रह़ है सिर्फ़ जमाअ़त इसमें शर्त है। इमाम के सिवा एक आदमी और होना और नमाज़ से पहले दो ख़ुत्बे पढ़ना सुन्नत है बाक़ी

इब्ने सीरीन से मरवी है कि मदीने के लोग आँह़ज़रत (ﷺ) के आने से पहले जबकि अभी सूरह जुम्आ भी नाज़िल नहीं हुई थी एक दिन जमा हुए और कहने लगे कि यहूद और नसारा ने एक दिन जमा होकर इबादत के लिये मुक़र्रर किये हुए हैं क्यूँ न हम भी एक दिन मुक़र्रर करके अल्लाह की इबादत किया करें। सो उन्होंने अ़रूबा का दिन मुक़र्रर किया और असअ़द बिन ज़रारह को इमाम बनाया और जुम्आ अदा किया। उस दिन ये आयत नाज़िल हुई, **'इज़ा नूदिय लिस्सलाति मिंय्यौमिल जुम्अ़ति फ़स्औ इला ज़िक्रिल्लाहि'** (अल जुम्आ, आयत नं. 9) इसको अ़ल्लामा इब्ने ह़जर ने सह़ीह़ सनद के साथ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ से नक़ल फ़र्माया और कहा है कि इसका शाहिद इस्नाद ह़सन के साथ अह़मद, अबू दाऊद, इब्ने माज़ा ने निकाला।

उस्ताज़ुना व मौलाना ह़ज़रत मुह़द्दिष़ अ़ब्दुर्रह़मान मुबारकपुरी (रह़.) फ़र्माते हैं कि **'सुम्मियतिल्जुम्अ़तु लिइज्तिमाइन्नासि फीहा व कान यौमल्जुम्अ़ति युसम्मल्अ़रूबा'** या'नी जुम्आ इसलिये नाम पड़ा कि लोग इसमें जमा होते हैं और ज़मान-ए-जाहिलियत में इसका नाम यौमे अ़रूबा था। इसकी फ़ज़ीलत के बारे में इमामे तिर्मिज़ी (रह़.) ह़दीष़ लाए हैं, **'अन अबी हुरैरत अनिन्नबिय्यि (ﷺ) क़ाल खैरु यौमिन त़लअ़त फीहिश्शम्सु यौमल्जुम्अ़ति फीहि खुलिक आदमु व फीहि उदखिलल्जन्नत व फीहि उख़रेज मिन्हा व ला तक़ूमुस्साअ़तु इल्ला फी यौमिल्जुम्अ़ति'** 'या'नी तमाम दिनों में बेहतरीन दिन जिसमें सूरज तुलूअ़ होता है वो जुम्अ़े का दिन है, इसमें आदम अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए और इसी दिन में जन्नत में दाख़िल किये गए और इस दिन उनका जन्नत से निकलना हुआ और क़यामत भी इस दिन क़ायम होगी।'

फ़ज़ाइले जुम्आ पर मुस्तक़िल किताबें लिखी गईं हैं। ये उम्मत की हफ़्तावारी ईद है मगर स़द अफ़सोस कि जिन ह़ज़रात ने देहात में जुम्आ बन्द कराने की तह़रीक चलाई इससे कितने ही देहात के मुसलमान जुम्आ से इस दर्जा ग़ाफ़िल हो गए कि उनको ये भी ख़बर नहीं कि आज जुम्अ़े का दिन है। इसकी ज़िम्मेदारी उन उ़लमा पर आइद होती है। काश! ये लोग ह़ालाते मौजूदा का जाइज़ा लेकर मफ़ादे उम्मत पर ग़ौर कर सकते।

बाब 13 :

١٣ - بَابٌ

(899) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हमसे शबाबा ने बयान किया, कहा कि हमसे वरक़ा बिन अ़म्र ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि औरतों को रात के वक़्त मस्जिदों में आने की इजाज़त दे दिया करो। (राजेअ़ : 865)

٨٩٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ قَالَ حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((ائْذَنُوا لِلنِّسَاءِ بِاللَّيْلِ إِلَى الْمَسَاجِدِ)). [راجع: ٨٦٥]

(900) हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया कि कहा हमसे उ़बैदुल्लाह इब्ने उ़मर ने बयान किया। उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की एक बीवी थीं जो सुबह़ और इशा की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ने के लिये मस्जिद में आया करती थीं। उनसे कहा गया कि बावजूद यह जानते हुए कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) इस बात को मकरूह जानते हैं और वो ग़ैरत मह़सूस करते हैं फिर आप मस्जिद में क्यूँ जाती हैं। इस पर उन्होंने कहा कि

٩٠٠ - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَتِ امْرَأَةٌ لِعُمَرَ تَشْهَدُ صَلاَةَ الصُّبْحِ وَالْعِشَاءِ فِي الْجَمَاعَةِ فِي الْمَسْجِدِ. فَقِيْلَ لَهَا : لِمَ تَخْرُجِيْنَ وَقَدْ تَعْلَمِيْنَ أَنَّ عُمَرَ يَكْرَهُ ذَلِكَ وَيَغَارُ؟ قَالَتْ: وَمَا يَمْنَعُهُ أَنْ يَنْهَانِي؟ قَالَ:

يَمْنَعُهُ قَوْلُ رَسُولِ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَمْنَعُوا إِمَاءَ اللهِ مَسَاجِدَ اللهِ)). [راجع: ٨٦٥]

फिर वो मुझे मना क्यूँ नहीं कर देते। लोगों ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की उस ह़दीष़ की वजह से कि अल्लाह की बन्दियों को अल्लाह की मस्जिदों में आने से न रोको। (राजेअ़ : 865)

١٤- بَابُ الرُّخْصَةِ إِنْ لَمْ يَحْضُرِ الْجُمُعَةَ فِي الْمَطَرِ

बाब 14 : अगर बारिश हो रही हो तो जुम्अ़े में ह़ाज़िर होना वाजिब नहीं

٩٠١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ صَاحِبُ الزِّيَادِيِّ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْحَارِثِ ابْنُ عَمِّ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ لِمُؤَذِّنِهِ فِي يَوْمٍ مَطِيرٍ: إِذَا قُلْتَ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ فَلاَ تَقُلْ: حَيَّ عَلَى الصَّلاَةِ، قُلْ: صَلُّوا فِي بُيُوتِكُمْ. فَكَأَنَّ النَّاسَ اسْتَنْكَرُوا، فَقَالَ: فَعَلَهُ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي، إِنَّ الْجُمُعَةَ عَزْمَةٌ، وَإِنِّي كَرِهْتُ أَنْ أُخْرِجَكُمْ فَتَمْشُونَ فِي الطِّينِ وَالدَّحْضِ. [راجع: ٦١٦]

(901) हमसे मुसद्दद बिन मुसरहद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इस्माईल बिन अ़लिया ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें स़ाहिबुज़्ज़ियादी अ़ब्दुल ह़मीद ने ख़बर दी, कहा कि हमसे मुह़म्मद बिन सीरीन के चचाज़ाद भाई अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिष़ ने बयान किया, कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने अपने मुअज़्ज़िन को एक बार बारिश के दिन कहा कि 'अशहदुअन्ना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह' के बाद ह़य्या अ़लस़्स़लाह (नमाज़ की तरफ़ आओ) न कहना बल्कि ये कहना 'स़ल्लू फ़ी बुयुतिकुम' (अपने घरों में नमाज़ पढ़ लो) लोगों ने इस बात पर ता'ज्जुब किया तो आपने फ़र्माया कि इसी त़रह़ मुझसे बेहतर इंसान (रसूलुल्लाह (ﷺ)) ने किया था। बेशक जुम्आ फ़र्ज़ है और मैं मकरूह जानता हूँ कि तुम्हें घरों से बाहर निकालकर मिट्टी और कीचड़ फिसलान में चलाऊँ। (राजेअ़ : 616)

तश्रीह : ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का ये मत़लब था कि बेशक जुम्आ फ़र्ज़ है मगर ह़ालते बारिश में ये अ़ज़ीमत रुख़्स़त से बदल जाती है। लिहाज़ा क्यूँ न इस रुख़्स़त से तुमको फ़ायदा पहुँचाऊँ कि तुम कीचड़ में फिसलने और बारिश में भीगने से बच जाओ।

١٥- بَابُ مِنْ أَيْنَ تُؤْتَى الْجُمُعَةُ، وَعَلَى مَنْ تَجِبُ؟

बाब 15 : जुम्अ़े के लिये कितनी दूर वालों को आना चाहिये और किन लोगों पर जुम्आ वाजिब है?

لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِذَا نُودِيَ لِلصَّلاَةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ﴾ [سُورَةُ الْجُمُعَةِ: ٩].

وَقَالَ عَطَاءٌ: إِذَا كُنْتَ فِي قَرْيَةٍ جَامِعَةٍ فَنُودِيَ بِالصَّلاَةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَحَقٌّ عَلَيْكَ أَنْ تَشْهَدَهَا، سَمِعْتَ النِّدَاءَ أَوْ لَمْ

क्योंकि अल्लाह तआ़ला का (सूरह जुम्आ में) इर्शाद है 'जब जुम्अ़े के दिन नमाज़ के लिये अज़ान हो (तो अल्लाह का ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो) अ़त़ा बिन रिबाह़ ने कहा कि जब तुम ऐसी बस्ती में हो जहाँ जुम्आ हो रहा हो और जुम्अ़े के दिन नमाज़ के लिये अज़ान दी जाए तो तुम्हारे लिये जुम्अ़े की नमाज़ पढ़ने आना वाजिब है। अज़ान सुनी हो या न सुनी हो। और ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.)

طِيبٍ، ثُمَّ رَاحَ وَلَمْ يُفَرِّقْ بَيْنَ اثْنَيْنِ فَصَلَّى مَا كُتِبَ لَهُ، ثُمَّ إِذَا خَرَجَ الإِمَامُ أَنْصَتَ، غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجُمُعَةِ الأُخْرَى)). [راجع: ٨٨٣]

और जितनी उसकी क़िस्मत में थी, नमाज़ पढ़ी, फिर जब इमाम बाहर आया और ख़ुत्बा शुरू किया तो ख़ामोश हो गया, उसके उस जुम्अे में से दूसरे जुम्अे तक के तमाम गुनाह बख़्श दिए जाएँगे। (राजेअ : 883)

तश्रीह : आदाबे जुम्आ में से ज़रूरी अदब है कि आने वाला निहायत ही अदब व मतानत के साथ जहाँ जगह पाए बैठ जाए। किसी की गर्दन फलाँगकर आगे न बढ़ें क्योंकि ये शरअ़न मम्नूअ और मअ़यूब है। इससे ये भी वाज़ेह हो गया कि शरीअ़ते इस्लामी में किसी को तकलीफ़ देना ख़्वाह वो तकलीफ़ बनाम इबादते नमाज़ ही में क्यूँ न हों। वो अल्लाह के नज़दीक गुनाह है। इसी मज़्मून की अगली ह़दीष़ में मज़ीद तफ़्सील आ रही है।

٢٠- بَابُ لَا يُقِيمُ الرَّجُلُ أَخَاهُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَيَقْعُدُ فِي مَكَانِهِ

बाब 20 : जुम्अे के दिन किसी मुसलमान भाई को उसकी जगह से उठाकर खुद वहाँ न बैठे

٩١١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَخْلَدُ بْنُ يَزِيدَ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: سَمِعْتُ نَافِعًا قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُقِيمَ الرَّجُلُ أَخَاهُ مِنْ مَقْعَدِهِ وَيَجْلِسَ فِيهِ)). قُلْتُ لِنَافِعٍ: الْجُمُعَةَ؟ قَالَ: الْجُمُعَةَ وَغَيْرَهَا.

[طرفاه في : ٦٢٦٩، ٦٢٧٠].

(911) हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी (रह.) ने बयान किया, कहा कि हमें मुख़्लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मैंने नाफ़ेअ से सुना, उन्होंने कहा मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना किया है कि कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई को उठाकर उसकी जगह ख़ुद बैठ जाए। मैंने नाफ़ेअ से पूछा कि क्या ये जुम्अे के लिये है तो उन्हों ने जवाब दिया कि जुम्अे और ग़ैर जुम्आ सबके लिये यही हुक्म है। (दीगर मक़ाम : 6269, 6270)

ता'ज्जुब है उन लोगों पर जो अल्लाह की मसाजिद यहाँ तक कि का'बा मुअज्जमा और मदीनतुल मुनव्वरा में ष़वाब के लिये दौड़ते हैं और दूसरों को तकलीफ़ पहुँचाकर उनकी जगह पर क़ब्ज़ा करते हैं। बल्कि कुछ मर्तबा झगड़ा–फ़साद तक नौबत पहुँचाकर फिर वहाँ नमाज़ पढ़ते और अपने नफ़्स को ख़ुश करते हैं कि वो इबादते इलाही कर रहे हैं। उनको मा'लूम होना चाहिये कि उन्होंने इबादत का सही मफ़हूम नहीं समझा बल्कि कुछ नमाज़ी तो ऐसे हैं कि उनको ह़क़ीक़ते इबादत का पता नहीं है। **'अल्लाहुम्मर्हम अ़ला उम्मति ह़बीबिक (ﷺ)'**

यहाँ मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम फ़र्माते हैं कि मस्जिद अल्लाह की है। किसी के बाबा–दादा की मिल्कियत नहीं जो नमाज़ी पहले आया और किसी जगह बैठ गया वही उसी जगह का ह़क़दार है। अब बादशाह या वज़ीर भी आए तो उसको उठाने का ह़क़ नहीं रखता। (वह़ीदी)

٢١- بَابُ الأَذَانِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

बाब 21 : जुम्अे के दिन अज़ान का बयान

٩١٢- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: ((كَانَ النِّدَاءُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ أَوَّلُهُ إِذَا

(912) हमसे आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने अबी ज़िब ने ज़ुह्री के वास्ते से बयान किया, उनसे साइब बिन यज़ीद ने कि नबी करीम (ﷺ) और ह़ज़रत अबूबक्र और ह़ज़रत

جَلَسَ الإِمَامُ عَلَى الْمِنبَرِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا. فَلَمَّا كَانَ عُثْمَانُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، وَكَثُرَ النَّاسُ - زَادَ النِّدَاءَ الثَّالِثَ عَلَى الزَّوْرَاءِ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ الزَّوْرَاءُ مَوْضِعٌ بِالسُّوقِ بِالْمَدِينَةِ. [أطرافه في: ٩١٣، ٩١٥، ٩١٦].

उमर (रज़ि.) के ज़माने में जुम्अे की पहली अज़ान उस वक़्त दी जाती थी जब इमाम मिम्बर पर ख़ुत्बा के लिये बैठते लेकिन ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के ज़माने में जब मुसलमानों की कष़रत हो गई तो वो मुक़ामे ज़ौरा से एक और अज़ान दिलवाने लगे। अबू अ़ब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते हैं कि ज़ौरा मदीना के बाज़ार में एक जगह है। (दीगर मक़ाम : 913, 915, 916)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि अस़ल अज़ाने जुम्आ वही थी जो आँह़ज़रत (ﷺ) और शैख़ेन के मुबारक ज़मानों में इमाम के मिम्बर पर आने के वक़्त दी जाती थी। बाद में ह़ज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) ने लोगों को आगाह करने के लिये बाज़ार में एक अज़ान का और इज़ाफ़ा कर दिया ताकि वक़्त से लोग जुम्आ के लिये तैयार हो सकें। ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) की त़रह़ बवक़्ते ज़रूरत मस्जिद से बाहर किसी मुनासिब जगह पर ये अज़ान अगर अब भी दी जाए तो जाइज़ है मगर जहाँ ज़रूरत न हो वहाँ सुन्नत के मुत़ाबिक़ सिर्फ़ ख़ुत्बा ही के वक़्त ख़ूब आवाज़ से एक ही अज़ान देनी चाहिये।

٢٢- بَابُ الْمُؤَذِّنِ الْوَاحِدِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

बाब 22 : जुम्अे के लिये एक मुअज़्ज़िन मुक़र्रर करना

٩١٣- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ الْمَاجِشُونُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ: (أَنَّ الَّذِي زَادَ التَّأْذِينَ الثَّالِثَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ- حِينَ كَثُرَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ - وَلَمْ يَكُنْ لِلنَّبِيِّ ﷺ مُؤَذِّنٌ غَيْرَ وَاحِدٍ، وَكَانَ التَّأْذِينُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ حِينَ يَجْلِسُ الإِمَامُ) يَعْنِي عَلَى الْمِنبَرِ.

[راجع: ٩١٢]

(913) हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू सलमा माजिशून ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे साइब बिन यज़ीद ने कि जुम्अे में तीसरी अज़ान ह़ज़रत उ़ष्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) ने बढ़ाई जबकि मदीना में लोग ज़्यादा हो गए थे जबकि नबी करीम (ﷺ) के एक ही मुअज़्ज़िन थे। (आप (ﷺ) के दौर में) जुम्अे की अज़ान उस वक़्त दी जाती थी जब इमाम मिम्बर पर बैठता।

(राजेअ़ : 912)

इससे उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि आँह़ज़रत (ﷺ) जब मिम्बर पर जाते तो तीन मुअज़्ज़िन एक के बाद एक अज़ान देते। एक मुअज़्ज़िन का मत़लब ये है कि जुम्अे की अज़ान ख़ास़, एक मुअज़्ज़िन ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) ही दिया करते थे वरना वैसे तो ज़मान-ए-नबवी में कई मुअज़्ज़िन मुक़र्रर थे जो बारी—बारी अपने वक़्तों पर अज़ान दिया करते थे।

٢٣- بَابُ يُجِيبُ الإِمَامُ عَلَى الْمِنبَرِ إِذَا سَمِعَ النِّدَاءَ

बाब 23 : इमाम मिम्बर पर बैठे बैठे अज़ान सुनकर उसका जवाब दे

٩١٤- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا

(914) हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने

लिसुन्नतिर्रातिबति व अदबिल्ख़ुत्बति जमीअ़न बिक़दरिल्इम्कानि व ला तग़तर फी हाज़िहिल्मस्अलति बिमा यल्हजु बिही अहलु बलदिक फइन्नल्हदीष़ स़हीहुन वाजिबुन इत्तिबाउहू' (हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा : जिल्द नं. 2, पेज नं. 101) या'नी जब कोई नमाज़ी ऐसे ह़ाल में मस्जिद में आए कि इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो तो दो हल्की रकअ़त पढ़ ले ताकि सुन्नते रातिबा और अदबे ख़ुत्बा दोनों की रिआ़यत हो सके और इस मसले के बारे में तुम्हारे शहर के लोग जो शोर करते हैं (और इन रकअ़तों के पढ़ने से रोकते हैं, उनके धोखे में न आना क्योंकि इस मसले के ह़क़ में ह़दीषे़ स़ह़ीह़ वारिद है जिसकी इत्तेबा (पैरवी) वाजिब है, वबिल्लाहित्तौफ़ीक़।

बाब 34 : ख़ुत्बा में दोनों हाथ उठाकर दुआ माँगना

٣٤- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي الْخُطْبَةِ

(932) हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहद ने बयान किया, कहा कि हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अनस ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, (दूसरी सनद) और ह़म्माद ने यूनुस से भी रिवायत की अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ और यूनुस दोनों ने ष़ाबित से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) जुम्अ़े का ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक शख़्स खड़ा हो गया और कहने लगा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मवेशी और बकरियाँ हलाक हो गईं (बारिश न होने की वजह से) आप (ﷺ) दुआ फ़र्माएँ कि अल्लाह तआ़ला बारिश बरसाए। चुनाँचे आप (ﷺ) ने दोनों हाथ फैलाए और दुआ की।

(दीगर मक़ाम : 933, 1013, 1014, 1015, 1016, 1017, 1018, 1019, 1021, 1029, 1033, 3582, 6093, 6342)

٩٣٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيْزِ عَنْ أَنَسٍ، وَعَنْ يُونُسَ عَنْ ثَابِتٍ بْنِ أَنَسٍ قَالَ: ((بَيْنَمَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِذْ قَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ هَلَكَ الْكُرَاعُ، هَلَكَ الشَّاءُ، فَادْعُ اللهَ أَنْ يَسْقِيَنَا. فَمَدَّ يَدَيْهِ وَدَعَا)).

[أطرافه في : ٩٣٣، ١٠١٣، ١٠١٤، ١٠١٥، ١٠١٦، ١٠١٧، ١٠١٨، ١٠١٩، ١٠٢١، ١٠٢٩، ١٠٣٣، ٣٥٨٢، ٦٠٩٣، ٦٣٤٢].

बाब 35 : जुम्अ़े के ख़ुत्बे में बारिश के लिये दुआ करना

٣٥- بَابُ الاِسْتِسْقَاءِ فِي الْخُطْبَةِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

933. हमसे इब्राहीम बिन मुन्ज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम अबू अ़म्र औज़ाई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में क़हत (अकाल) पड़ा, आप (ﷺ) ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक देहाती ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! जानवर मर गये और अहलो—अ़याल दानों को तरस गये। आप हमारे लिये अल्लाह तआ़ला से दुआ फ़र्माएँ। आप (ﷺ) ने दोनों

٩٣٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرٍو قَالَ حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: أَصَابَتِ النَّاسَ سَنَةٌ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ فَبَيْنَمَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ قَامَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، هَلَكَ الْمَالُ، وَجَاعَ الْعِيَالُ، فَادْعُ اللهَ لَنَا. ((فَرَفَعَ

يَدَيْهِ)) – وَمَا نَرَى فِي السَّمَاءِ قَزَعَةً – فَوَ الَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا وَضَعَهَا حَتَّى ثَارَ السَّحَابُ أَمْثَالَ الْجِبَالِ، ثُمَّ لَمْ يَنْزِلْ عَنْ مِنْبَرِهِ حَتَّى رَأَيْتُ الْمَطَرَ يَتَحَادَرُ عَلَى لِحْيَتِهِ ﷺ. فَمُطِرْنَا يَوْمَنَا ذَلِكَ، وَمِنَ الْغَدِ، وَبَعْدَ الْغَدِ، وَالَّذِي يَلِيهِ حَتَّى الْجُمُعَةِ الأُخْرَى.

हाथ उठाए, बादल का एक टुकड़ा भी आसमान पर नज़र नहीं आ रहा था। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अभी आप (ﷺ) ने हाथों को नीचे भी नहीं किया था कि पहाड़ों की तरह घटा उमड़ आई और आप (ﷺ) अभी मिम्बर से उतरे भी नहीं थे कि मैंने देखा कि बारिश का पानी आप (ﷺ) की रीशे मुबारक से टपक रहा था। उस दिन उसके बाद और लगातार अगले जुम्अे तक बारिश होती रही।

فَقَامَ ذَلِكَ الأَعْرَابِيُّ – أَوْ قَالَ غَيْرُهُ – فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ تَهَدَّمَ الْبِنَاءُ، وَغَرِقَ الْمَالُ، فَادْعُ اللهَ لَنَا. فَرَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلاَ عَلَيْنَا)). فَمَا يُشِيرُ بِيَدِهِ إِلَى نَاحِيَةٍ مِنَ السَّحَابِ إِلاَّ انْفَرَجَتْ، وَصَارَتِ الْمَدِينَةُ مِثْلَ الْجَوْبَةِ. وَسَالَ الْوَادِي قَنَاةُ شَهْرًا، وَلَمْ يَجِيءْ أَحَدٌ مِنْ نَاحِيَةٍ إِلاَّ حَدَّثَ بِالْجَوْدِ)).

[راجع: ٩٣٢]

(दूसरे जुम्अे को) यही देहाती फिर खड़ा हुआ या कहा कि कोई दूसरा शख़्स खड़ा हुआ और कहने लगा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इमारतें मुनहदिम हो गईं और जानवर डूब गए। आप (ﷺ) हमारे लिये अल्लाह से दुआ कीजिए। आप (ﷺ) ने दोनों हाथ उठाए और दुआ की कि ऐ अल्लाह! अब दूसरी तरफ़ बारिश बरसा और हमसे रोक दे। आप (ﷺ) हाथ से बादल के लिये जिस तरफ़ इशारा करते, उधर मतलअ साफ़ हो जाता। सारा मदीना तालाब की तरह बन गया था और क़नात का नाला महीना भर बहता रहा और आसपास से आने वाले भी अपने यहाँ भरपूर बारिश की ख़बर देते रहे। (राजेअ : 932)

तश्रीह : बाब और नक़लकर्दा हदीष़ से ज़ाहिर है कि इमाम बवक़्ते ज़रूरत जुम्अे के ख़ुत्बा में भी बारिश के लिये दुआ कर सकता है और ये भी ष़ाबित हुआ कि किसी ऐसी अवामी ज़रूरत के लिये दुआ करने की दरख़्वास्त बहालते ख़ुत्बा इमाम से की जा सकती है और ये भी कि इमाम ऐसी दरख़्वास्त पर ख़ुत्बा ही में तवज्जह कर सकता है। जिन हज़रात ने ख़ुत्बा को नमाज़ का दर्जा देकर उसमें बवक़्ते ज़रूरत तकल्लुम को भी मना बतलाया है। इस हदीष़ से ज़ाहिर है कि उनका ये ख़्याल सही नहीं है।

अल्लामा शौकानी (रह.) इस वाक़िअे पर लिखते हैं, **'व फिल्हदीष़ि फवाइदुम्मिन्हा जवाज़ुल्मुकालमति मिनल्ख़तीबि हालल्ख़ुत्बति व तकरारहुआइ व इद्ख़ालल्इस्तिस्काइ फी ख़ुत्बतिन वहुआउ बिही अलल्मिम्बरि व तर्कु तहवीलिर्रिदाई वल्इस्तिक़बालि वल्इज्तिजाइ बिस़लातिल्जुम्अति अन स़लातिल्इस्तिस्काइ कमा तक़द्दम व फीहि इल्मुम्मिन अलामिन्नुबुव्वति फ़ीहि इजाबतुल्लाहि तआला दुआअ नबिय्यिही व इम्तिषालस्सहाबि अम्मरहू कमा वक़अ कष़ीरुम्मिनर्रिवायाति व गैर ज़ालिक मिनल्फवाइदि'** (नैलुल औतार) या'नी इस हदीष़ से बहुत से मसाइल निकलते हैं मष़लन हालते ख़ुत्बा में ख़तीब से बात करने का जवाज़ नीज़ दुआ करना (और उसके लिये हाथों को उठाकर दुआ करना) और ख़ुत्ब-ए-जुम्आ में इस्तिस्क़ाअ की दुआ और इस्तिस्क़ाअ के लिये ऐसे मौक़े पर चादर उलटने-पलटने को छोड़ देना और का'बा की ओर रुख़ भी न होना और नमाज़े जुम्आ को नमाज़े इस्तिस्क़ाअ के बदले में काफ़ी समझना। और उसमें आपकी नुबुव्वत की एक अहम दलील भी है कि अल्लाह ने आपकी दुआ क़ुबूल फ़र्माई और बादलों को आपका फ़र्मान तस्लीम करने पर मामूर फ़र्मा दिया और भी बहुत से फ़वाइद हैं। आपने किन लफ़्ज़ों में दुआ-ए-इस्तिस्क़ाअ की। इस बारे में भी कई रिवायात हैं जिनमें जामेअ दुआएँ ये है, **'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिलआलमीनर्रहमानिर्रहीम मालिकि यौमिद्दीन ला इलाहा इल्लल्लाहु यफ़्अलुल्लाहु मा युरीदु अल्लाहुम्मा अन्त अल्लाह ला इलाहा इल्लाअन्त अन्तल्गनी व नहनुल्फ़ुक़राउ अन्ज़िल अलैनल्गैष़ मा अन्ज़ल्त लना क़ुव्वतन व बलागन इला हीन**

अल्लाहुम्मस्किना ग़ैषन मुग़ीष़न मरीअन मरीअन तबक़न गदकन आज़िलन ग़ैर राइष़िन अल्लाहुम्म अस्क़ी इबादक व बहाइमक वन्शुर रहमतक वहइ बलदकल्मय्यत' ये भी मशरूअ अम्र है कि ऐसे मौक़ों पर अपने में से किसी नेक बुज़ुर्ग को दुआ के लिये आगे किया जाए और वो अल्लाह से रो–रोकर दुआ करे और लोग पीछे से आमीन–आमीन कहकर गिरया व ज़ारी के साथ अल्लाह से पानी का सवाल करें।

बाब 36 : जुम्अे के दिन ख़ुत्बा के वक़्त चुप रहना

٣٦- بَابُ الإِنْصَاتِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَالإِمَامُ يَخْطُبُ

और ये भी लग़्व हरकत है कि अपने पास बैठे हुए शख़्स से कोई कहे कि 'चुप रह' सलमान फ़ारसी (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि इमाम जब ख़ुत्बा शुरू करे तो ख़ामोश हो जाना चाहिये।

وَإِذَا قَالَ لِصَاحِبِهِ أَنْصِتْ فَقَدْ لَغَا. وَقَالَ سَلْمَانُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَنْصِتُ إِذَا تَكَلَّمَ الإِمَامُ)).

(934) हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष़ बिन सअद ने अक़ील से बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो और तू अपने पास बैठे हुए आदमी से कहे कि 'चुप रह' तो तूने ख़ुद एक लग़्व हरकत की।

٩٣٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قُلْتَ لِصَاحِبِكَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ: أَنْصِتْ - وَالإِمَامُ يَخْطُبُ - فَقَدْ لَغَوْتَ)).

बाब 37 : जुम्अे के दिन वो घड़ी जिसमें दुआ क़ुबूल होती है

٣٧- بَابُ السَّاعَةِ الَّتِي فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ

(935) हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अम्बी ने इमाम मालिक (रह.) से बयान किया, उनसे अबुज़िनाद ने, उनसे अब्दुर्रहमान अअरज ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि .) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जुम्अे के ज़िक्र में एक बार फ़र्माया कि इस दिन एक ऐसी घड़ी आती है जिसमें अगर कोई मुसलमान बन्दा खड़ा नमाज़ पढ़ रहा हो और कोई चीज़ अल्लाह पाक से मांग रहा हो तो अल्लाह पाक उसे वो चीज़ ज़रूर देता है। हाथ के इशारे से आपने बतलाया कि वो साअत बहुत थोड़ी सी है। (दीगर मक़ाम : 5294, 6400)

٩٣٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ ذَكَرَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَقَالَ: ((فِيْهِ سَاعَةٌ لاَ يُوَافِقُهَا عَبْدٌ مُسْلِمٌ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي يَسْأَلُ اللهَ شَيْئًا إِلاَّ أَعْطَاهُ إِيَّاهُ)) وَأَشَارَ بِيَدِهِ يُقَلِّلُهَا.

[طرفاه في : ٥٢٩٤، ٦٤٠٠]

तश्रीह : इस घड़ी की तअय्युन (निर्धारण) में इख़्तिलाफ़ है कि ये घड़ी किस वक़्त आती है कुछ रिवायत में इसके लिये वो वक़्त बतलाया गया है जब इमाम नमाज़े जुम्आ शुरू करता है। गोया नमाज़ ख़त्म होने तक बीच में ये घड़ी आती है कुछ रिवायात में तुलूअे फ़ज्र से उसका वक़्त बतलाया गया है। कुछ रिवायात में अस्र से मग़्रिब तक का वक़्त बतलाया गया है। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह़.) फ़त्हुल बारी में बहुत तफ़्सील के साथ इन सारी रिवायात पर रोशनी डाली है और इस बारे

M-09825696131

बाब 4 : ईदुल फ़ितर में नमाज़ के लिये जाने से पहले कुछ खा लेना

٤- بَابُ الأَكْلِ يَوْمَ الْفِطْرِ قَبْلَ الْخُرُوجِ

953. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहीम ने बयान किया कि हम को सईद बिन सुलैमान ने ख़बर दी कि हमें हुशैम बिन बशीर ने ख़बर दी, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अनस ने ख़बर दी और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, आपने बतलाया कि रसूले-करीम (ﷺ) ईदुल-फ़ितर के दिन न निकलते जब तक कि आप (ﷺ) चन्द खजूर न खा लेते और मुरजी बिन रजाअ ने कहा कि मुझ से उबैदुल्लाह बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा कि मुझ से अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से, फिर यही हदीष बयान की कि आप ताक़ अदद खजूरें खाते थे।

٩٥٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيْمِ أَخْبَرَنَا سَعِيْدُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ قَالَ : أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لاَ يَغْدُو يَوْمَ الْفِطْرِ حَتَّى يَأْكُلَ تَمَرَاتٍ)). وَقَالَ مُرَجًّا بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنِ أَبِيْ بَكْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَأْكُلُهُنَّ وِتْرًا)).

मा'लूम हुआ कि ईदुल फ़ित्र में नमाज़ के लिये निकलने से पहले चंद खजूरें अगर मयस्सर हों तो खा लेना सुन्नत है।

बाब 5 : बक़र ईद के दिन खाना

٥- بَابُ الأَكْلِ يَوْمَ النَّحْرِ

इस बाब में हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने वो साफ़ हदीष न ला सके जो इमाम अहमद व तिर्मिज़ी (रह.) ने रिवायत की है कि बक़र ईद के दिन आप(ﷺ) लौटकर अपनी कुर्बानी में से खाते। वो हदीष भी थी मगर उन शराइत के मुताबिक़ न थी जो हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) के शराइत हैं, इसलिये आप (रह.) उसको न ला सके।

945. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहद ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन अला ने अय्यूब सुख़ितयानी से, उन्होंने मुहम्मद बिन सीरीन से बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स नमाज़ से पहले क़ुर्बानी कर दे उसे दोबारा क़ुर्बानी करनी चाहिये। इस पर एक शख़्स (अबू बुर्दा) ने खड़े होकर कहा कि ये ऐसा दिन है जिस दिन गोश्त की ख़्वाहिश ज़्यादा होती है और उसने अपने पड़ौसियों की तंगी का बयान किया। नबी करीम (ﷺ) ने उसको सच्चा समझा, उस शख़्स ने कहा कि मेरे पास एक साल की पठिया है जो गोश्त की दो बकरियों से भी मुझे ज़्यादा प्यारी है। नबी करीम (ﷺ) ने इस पर उसे इजाज़त दे दी कि वही क़ुर्बानी करे। अब मुझे मा'लूम नहीं कि ये इजाज़त दूसरों के लिये भी है या नहीं।

(दीगर मक़ामात : 984, 5546, 5549, 5561)

٩٥٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيْرِيْنَ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَلْيُعِدْ)). فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: هَذَا يَوْمٌ يُشْتَهَى فِيْهِ اللَّحْمُ، وَذَكَرَ مِنْ جِيْرَانِهِ، فَكَأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَدَّقَهُ، قَالَ: وَعِنْدِي جَذَعَةٌ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتَيْ لَحْمٍ. فَرَخَّصَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ، فَلاَ أَدْرِي أَبَلَغَتِ الرُّخْصَةُ مَنْ سِوَاهُ أَمْ لاَ.

[أطرافه في: ٩٨٤، ٥٥٤٦، ٥٥٤٩، ٥٥٦١].

ये इजाज़त ख़ास अबू बुर्दा (रज़ि.) के लिये थी जैसा कि आगे आ रहा है। हज़रत अनस (रज़ि.) को उनकी ख़बर नहीं हुई इसलिये उन्होंने ऐसा कहा।

955. हमसे उ़स्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे शुअ़बी ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने, आपने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने ईदुल अज़्हा की नमाज़ के बाद ख़ुत्बा देते हुए फ़र्माया कि जिस शख़्स ने हमारी नमाज़ की सी नमाज़ पढ़ी और हमारी क़ुर्बानी की तरह क़ुर्बानी की उसकी क़ुर्बानी स़ह़ीह़ हुई। लेकिन जो शख़्स नमाज़ से पहले क़ुर्बानी करे, वो नमाज़ से पहले ही गोश्त खाता है मगर वो क़ुर्बानी नहीं। बराअ के मामूं अबू बुर्दा बिन नियार ये सुनकर बोले कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने अपनी बकरी की क़ुर्बानी नमाज़ से पहले कर दी, मैंने सोचा कि ये खाने-पीने का दिन है। मेरी बकरी अगर घर पर पहला ज़बीहा बने तो बहुत अच्छा हो। इस ख़्याल से मैंने बकरी ज़िब्ह कर दी और नमाज़ से पहले ही उसका गोश्त भी खा लिया। इस पर आपने फ़र्माया कि फिर तुम्हारी बकरी गोश्त की बकरी हुई। अबू बुर्दा बिन नियार ने अ़र्ज़ किया कि मेरे पास एक साल की पठिया है और वो मुझे गोश्त की दो बकरियों से भी अ़ज़ीज़ है। क्या उससे मेरी क़ुर्बानी हो जाएगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ, लेकिन तुम्हारे बाद किसी की क़ुर्बानी इस उ़म्र के नीचे से नाकाफ़ी होगी।

(राजेअ़ : 951)

٩٥٥ - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَطَبَنَا النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ الأَضْحَى بَعْدَ الصَّلاَةِ فَقَالَ: ((مَنْ صَلَّى صَلاَتَنَا وَنَسَكَ نُسُكَنَا فَقَدْ أَصَابَ النُّسُكَ، وَمَنْ نَسَكَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَإِنَّهُ قَبْلَ الصَّلاَةِ وَلاَ نُسُكَ لَهُ)). فَقَالَ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ خَالُ الْبَرَاءِ: يَا رَسُولَ اللهِ فَإِنِّي نَسَكْتُ شَاتِي قَبْلَ الصَّلاَةِ وَعَرَفْتُ أَنَّ الْيَومَ يَومُ أَكْلٍ وَشُرْبٍ، وَأَحْبَبْتُ أَنْ تَكُونَ شَاتِي أَوَّلَ شَاةٍ تُذْبَحُ فِي بَيْتِي، فَذَبَحْتُ شَاتِي وَتَغَدَّيْتُ قَبْلَ أَنْ آتِيَ الصَّلاَةَ. قَالَ: ((شَاتُكَ شَاةُ لَحْمٍ)). قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ فَإِنَّ عِنْدَنَا عَنَاقًا لَنَا جَذَعَةً أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتَيْنِ أَفَتَجْزِي عَنِّي؟ قَالَ: ((نَعَمْ. وَلَنْ تَجْزِيَ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)).

[راجع: ٩٥١]

तश्रीह़ : क्योंकि क़ुर्बानी में मुसन्ना बकरी ज़रूरी है जो दूसरे साल में हो और दाँत निकाल चुकी हो। बग़ैर दाँत निकाले बकरी क़ुर्बानी के लायक़ नहीं होती। अ़ल्लामा शौकानी (रह़.) नैलुल औतार में इस ह़दीष़ की शरह़ में फ़र्माते हैं, **'क़ौलुहू अल्मुसन्नतु कालल्उलमाउ अल्मुसुन्नतु हियष़्ष़निय्यतु मिन कुल्लि शैइन मिनल्इबिलि वल्बक़रि वल्गनमि फमा फौक़हा'** मस्जिद में है, **'अष़्ष़नियतु जम्उहू ष़नाया वहिय इस्नानि मुक़द्दमुल्फमि ष़नतानि मिन फौक़िन व ष़नतानि मिन अस्फल'** या'नी ष़नाया के सामने के ऊपर—नीचे के दाँत को कहते हैं। इस लिहाज़ से ह़दीष़ के ये मा'नी होते हैं दाँत वाले जानवरों को क़ुर्बानी करो। इससे लाज़िम यही नतीजा निकला कि खीरे की क़ुर्बानी न करो इसलिये एक रिवायत में है, **'युन्फा मिनज़्ज़हाया अल्लती लम तुसन्निन'** क़ुर्बानी के जानवरों में से वो जानवर निकाल डाला जाएगा जिसके दाँत न उगे होंगे, अगर मजबूरी की ह़ालत में मुसन्ना न मिले मुश्किल व दुश्वार हो तो **जिज़्अतुम मिनज़्ज़ान्न** भी कर सकते हैं। जैसा कि इसी ह़दीष़ के आख़िर में आप (ﷺ) ने फ़र्माया, **'इल्ला अय्यअ़स्रि अ़लैकुम फतज़्बहू जिज़्अतम्मिनज़्ज़ानि लुगातुल्हदीष़'** में लिखा है कि पांचवें बरस में जो ऊँट लगा हो और दूसरे बरस में जो गाय—बकरी लगी हो और चौथे बरस में जो घोड़ा लगा हो। कुछ ने कहा जो गाय तीसरे बरस में लगी हो, जो भेड़ एक बरस की हो गई। जैसा कि ह़दीष़ में है,

'ज़हैना मिन रसूलिल्लाहि (ﷺ) बिल्जिज़्इ मिनज़्ज़ानि वष़्ष़निय्यि मिनल्मअ़ज़ि' हमने आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ एक बरस की भेड़ और दो बरस की (जो तीसरे में लगी हैं) बकरी क़ुर्बानी की और तफ़्सीर इब्ने कष़ीर में है कि बकरी ष़न्ना वो है कि जो दो साल गुज़ार चुकी हो और जिज़्आ उसको कहते हैं जो साल भर का हो गया हो।

कि हमसे अबू उसामा हम्माद बिन अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल्लाह ने नाफ़ेअ से बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ईदैन की नमाज़ ख़ुत्बे से पहले पढ़ा करते थे।

(राजेअ : 957)

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يُصَلُّونَ الْعِيْدَيْنِ قَبْلَ الْخُطْبَةِ)).

[راجع: ٩٥٧]

964. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उन्होंने अ़दी बिन ष़ाबित से, उन्होंने सईद बिन जुबैर से, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ईदुल फ़ित्र के दिन दो रकअ़तें पढ़ीं न उनसे पहले कोई नफ़्ल पढ़ा न उनके बाद, फिर (ख़ुत्बा पढ़कर) आप औ़रतों के पास आए और बिलाल आप के साथ थे। आपने औ़रतों से फ़र्माया, ख़ैरात करो। वो ख़ैरात देने लगीं, कोई अपनी बाली पेश करने लगी कोई अपना हार देने लगी।

(राजेअ : 98)

٩٦٤- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى يَوْمَ الْفِطْرِ رَكْعَتَيْنِ لَمْ يُصَلِّ قَبْلَهَا وَلاَ بَعْدَهَا. ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ وَمَعَهُ بِلاَلٌ، فَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ، فَجَعَلْنَ يُلْقِيْنَ، تُلْقِي الْمَرْأَةُ خُرْصَهَا وَسِخَابَهَا)).

[راجع: ٩٨]

965. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ैद ने बयान किया, कहा कि मैंने शुअ़बी से सुना, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम इस दिन पहले नमाज़ पढ़ेंगे फिर ख़ुत्बा देने के बाद वापस होकर क़ुर्बानी करेंगे। जिसने इस त़रह किया उसने हमारी सुन्नत के मुताबिक़ अ़मल किया और जिसने नमाज़ से पहले क़ुर्बानी की तो उसका ज़बीहा गोश्त का जानवर है, जिसे वो घरवालों के लिये लाया है। क़ुर्बानी से उसका कोई भी ता'ल्लुक़ नहीं। एक अन्सारी (रज़ि.) जिनका नाम अबू बुर्दा बिन नियार था, बोले कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने तो (नमाज़ से पहले ही) क़ुर्बानी करदी लेकिन मेरे पास एक साल की पठिया है जो दूँदी हुई बकरी से भी अच्छी है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा इसी को बकरी के बदले में क़ुर्बानी कर लो और तुम्हारे बाद ये किसी और के लिये काफ़ी न होगी।

(राजेअ : 901)

٩٦٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا زُبَيْدٌ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ أَوَّلَ مَا نَبْدَأُ فِي يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نُصَلِّيَ ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَنْحَرَ. فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ أَصَابَ سُنَّتَنَا، وَمَنْ نَحَرَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَإِنَّمَا هُوَ لَحْمٌ قَدَّمَهُ لأَهْلِهِ، لَيْسَ مِنَ النُّسُكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ يُقَالُ لَهُ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ: يَا رَسُولَ اللهِ ذَبَحْتُ وَعِنْدِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّةٍ. قَالَ: ((اجْعَلْهُ مَكَانَهُ وَلَنْ تُوفِيَ - أَوْ تَجْزِيَ - عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)). [راجع: ٩٥١]

तश्रीह : रिवायत में लफ़्ज़े अव्वल **मा नब्दउ फ़ी यौमिना हाज़ा** से बाब का तर्जुमा निकलता है क्योंकि जब पहला काम नमाज़ हुआ तो मा'लूम हुआ कि नमाज़ ख़ुत्बे से पहले पढ़नी चाहिये।

M-09825696131

ने जो ख़लीफ़-ए-वक़्त था, ने हज्जाज को ये कहला भेजा था कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) की इत़ाअ़त करता रहे। ये अम्र उस मरदूद पर शाक गुज़रा और उसने चुपके से एक शख़्स को इशारा कर दिया। उसने ज़हर आलूद बर्छा अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के पांव में घुसेड़ दिया। ख़ुद ही तो ये शरारत की और ख़ुद ही क्या मिस्कीन बनकर अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) की इ़यादत को आया? वाह रे मक्कार! अल्लाह को क्या जवाब देगा। आख़िर अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने जो अल्लाह के बड़े मक़्बूल बन्दे और बड़े आ़लिम और आ़बिद और ज़ाहिद और सहाबी-ए-रसूल (ﷺ) थे, उनका फ़रेब पहचान लिया और फ़र्माया कि तुमने ही तो मारा है और तू ही कहता है हम मुजरिम को पा लें तो उसको सख़्त सज़ा दें,

जफ़ा कर दी वो ख़ुदकश्ती ब तेग़े ज़ुल्म मारा
बहाना में बराए पुरशिसे बीमारी आई (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम)

इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि दुनियादार मुसलमानों ने किस–किस त़रह से उ़लम-ए-इस्लाम को तकलीफ़ दी है फिर भी वो मर्दाने ह़क़–परस्त अम्रे ह़क़ की दा'वत देते रहे, आज भी उ़लमा को इन बुज़ुर्गों की इक़्तिदा लाज़िमी है।

बाब 10 : ईद की नमाज़ के लिये सवेरे जाना

١٠- بَابُ التَّبْكِيْرِ إِلَى الْعِيْدِ

और अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र सहाबी ने (मुल्के शाम में इमाम के देर से निकलने पर ए'तिराज़ किया) फ़र्माया कि हम तो नमाज़ से इस वक़्त फ़ारिग़ हो जाया करते थे। या'नी जिस वक़्त नफ़्ल नमाज़ पढ़ना दुरुस्त होता है।

وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنِ بُسْرٍ : إِنْ كُنَّا فَرَغْنَا فِي هَذِهِ السَّاعَةِ. وَذَلِكَ حِيْنَ التَّسْبِيْحِ.

तश्रीह : या'नी इश्राक़ की नमाज़ मत़लब ये है कि सूरज एक नेज़ा या दो नेज़ा हो जाए। बस यही ईद की नमाज़ का अफ़ज़ल वक़्त है और जो लोग ईद की नमाज़ में देर करते हैं वो बिदअ़ती हैं ख़ुसूसन ईदुल अज़्हा की नमाज़ और जल्द पढ़नी चाहिये ताकि लोग क़ुर्बानी वग़ैरह से जल्दी फ़ारिग़ हो जाएँ और सुन्नत के मुवाफ़िक़ क़ुर्बानी में से खाएँ। ह़दीष़ में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ईदुल फ़ित्र की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते जब सूरज दो नेज़े बलन्द होता और ईदुल अज़्हा की नमाज़ जब एक नेज़ा बलन्द होता। (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ)

968. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने ज़ैद से बयान किया, उनसे शुअ़बी ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने क़ुर्बानी के दिन ख़ुत्बा दिया और आपने फ़र्माया कि इस दिन सबसे पहले हमें नमाज़ पढ़नी चाहिये, फिर (ख़ुत्बे के बाद) वापस आकर क़ुर्बानी करनी चाहिये, जिसने इस त़रह किया उसने हमारी सुन्नत के मुताबिक़ किया और जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर दिया तो ये एक ऐसा गोश्त होगा जिसे उसने अपने घरवालों के लिये जल्दी से तैयार कर लिया है। ये क़ुर्बानी क़त्अ़न नहीं। इस पर मेरे मामू अबू बुर्दा बिन नियार ने खड़े होकर कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने तो नमाज़ के पढ़ने से पहले ही ज़िब्ह कर दिया। अल्बत्ता मेरे पास एक साल की एक पठिया है, जो दाँत निकली हुई बकरी से भी ज़्यादा बेहतर है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसके बदले में इसे समझ लो या ये फ़र्माया कि इसे ज़िब्ह कर लो और तुम्हारे बाद ये

٩٦٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ زُبَيْدٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: خَطَبَنَا النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ فَقَالَ ((إِنَّ أَوَّلَ مَا نَبْدَأُ بِهِ فِي يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نُصَلِّيَ، ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَنْحَرَ، فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ أَصَابَ سُنَّتَنَا، وَمَنْ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ فَإِنَّمَا هُوَ لَحْمٌ عَجَّلَهُ لأَهْلِهِ لَيْسَ مِنَ النُّسُكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَامَ خَالِي أَبُوبُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَنَا ذَبَحْتُ قَبْلَ أَنْ أُصَلِّيَ، وَعِنْدِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّةٍ. قَالَ: ((اجْعَلْهَا مَكَانَهَا))

एक साल की पठिया किसी के लिये काफ़ी नहीं होगी।

(राजेअ : 951)

M-09825696131

-أَوْ قَالَ: ((اذْبَحْهَا - وَلَنْ تَجْزِيَ جَذَعَةٌ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)). [راجع: ٩٥١]

तश्रीह : इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब के तर्जुमा से यूँ है कि आपने फ़र्माया कि उस दिन पहले जो काम हम करते हैं वो नमाज़ है। इससे ये निकला कि ईद की नमाज़ सुबह़ सवेरे पढ़ना चाहिये क्योंकि जो कोई देर करके पढ़ेगा और वो नमाज़ से पहले दूसरे काम करेगा तो पहला काम उसका उस दिन नमाज़ न होगा। ये इस्तिम्बात ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) की गहरी बस़ीरत की दलील है। (रहिमहुल्लाह)

इस सूरत में आपने ख़ास़ उन्हीं अबू बुर्दा बिन नियार नामी स़ह़ाबी के लिये जिज़्आ की क़ुर्बानी की इजाज़त बख़्शी। साथ ही ये भी फ़र्मा दिया कि तेरे बाद ये किसी और के लिये काफ़ी न होगी। यहाँ जिज़्आ से एक साल की बकरी मुराद है। लफ़्ज़े जिज़्आ एक साल की भेड़—बकरी पर बोला जाता है। ह़ज़रत अ़ल्लामा शौकानी (रह़.) फ़र्माते हैं , **'अल जिज़्अतु मिनज़्ज़ानि मा लहू सनतुन ताम्मतुन हाज़ा हुवल अश्हरू अ़न अहलिल लुग़ति व जुम्हूरि अहलिल इल्मि मिन ग़ैरिहिम'** या'नी जिज़्आ वो है जिसकी उम्र पर पूरा एक साल गुज़र चुका हो। अहले सुन्नत और जुम्हूर अहले इल्म से यही मन्क़ूल है। कुछ छ: और आठ और दस माह की बकरी पर भी जिज़्आ बोलते हैं।

देवबन्दी तराजिमे बुख़ारी में इस मुक़ाम पर जगह—जगह जिज़्आ का तर्जुमा चार महीने की बकरी का किया गया है तफ़्हीमुल बुख़ारी में एक जगह नहीं बल्कि बहुत से मुक़ामात पर चार महीने की बकरी लिखा हुआ मौजूद है। अ़ल्लामा शौकानी (रह़.) की ऊपर लिखी तशरीह़ के मुत़ाबिक़ ये ग़लत़ है। इसलिये अहले ह़दीष़ तराजिमे बुख़ारी में हर जगह एक साल की बकरी के साथ तर्जुमा किया गया है।

लफ़्ज़े ज़िज्ज़्आ का इत़्लाक़ मसलके ह़न्फ़ी में भी छ: माह की बकरी पर किया गया है। देखो तस़्हीलुल क़ारी, पारा नं. 4, पेज नं. 400) मगर चार माह की बकरी पर लफ़्ज़े जिज़्आ ये ख़ुद मसलके ह़न्फ़ी के भी ख़िलाफ़ है। क़स्तलानी (रह़.) ने शरह बुख़ारी, पेज नं. 117 मत़्बूआ नवल किश्वर में है, **'जिज़्अतुम्मिनल्मअ़ज़ि ज़ात सनतिन'** या'नी जिज़्आ एक साल की बकरी को कहा जाता है।

बाब 11 : अय्यामे-तशरीक़ में अ़मल करने की फ़ज़ीलत का बयान

١١ - بَابُ فَضْلِ الْعَمَلِ فِي أَيَّامِ التَّشْرِيقِ

और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (इस आयत) और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र मा'लूम दिनों में करो। में अय्यामे-मा'लूमात से मुराद ज़िल्हिज्जा के दस दिन हैं और अय्यामे-मअ़दूदात से मुराद अय्यामे-तशरीक़ हैं। इब्ने उ़मर और अबू हुरैरह (रज़ि.) इन दस दिनों में बाज़ार की त़रफ़ निकल जाते और लोग इन बुज़ुर्गों की तकबीरात सुनकर तकबीर कहते और मुह़म्मद बिन बाक़िर (रज़ि.) नफ़्ल नमाज़ों के बाद भी तकबीर कहते थे।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ وَذَكَرُوا اللهَ فِي أَيَّامٍ مَعْلُومَاتٍ ﴿وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللهِ فِي أَيَّامٍ مَعْلُومَاتٍ﴾. أَيَّامُ الْعَشْرِ. وَالأَيَّامُ الْمَعْدُودَاتِ : أَيَّامُ التَّشْرِيقِ. وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ وَأَبُوهُرَيْرَةَ يَخْرُجَانِ إِلَى السُّوقِ فِي أَيَّامِ الْعَشْرِ يُكَبِّرَانِ وَيُكَبِّرُ النَّاسُ بِتَكْبِيرِهِمَا وَكَبَّرَ مُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ خَلْفَ النَّافِلَةِ.

969. हमसे मुह़म्मद बिन अ़रअ़रा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअ़बा ने सुलैमान के वास्ते से बयान किया, उनसे

٩٦٩ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ مُسْلِمٍ

972. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने बयान किया, कहा कि हमसे उ़बैदुल्लाह उ़मरी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के सामने ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा की नमाज़ के लिये बरछी आगे-आगे उठाई जाती और वो ईदगाह में आपके सामने गाड़ दी जाती। आप उसी की आड़ में नमाज़ पढ़ते। (राजेअ़ : 494)

٩٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ تُرْكَزُ لَهُ الْحَرْبَةُ قُدَّامَهُ يَوْمَ الْفِطْرِ وَالنَّحْرِ، ثُمَّ يُصَلِّي. [راجع: ٤٩٤]

तश्रीह : क्योंकि ईद मैदान में पढ़ी जाती थी और मैदान में नमाज़ पढ़ने के लिये सुत्रा ज़रूरी है इसलिये छोटा सा नेज़ा ले लेते थे जो सुत्रा के लिये काफ़ी हो सके और उसे आँहुज़ूर (ﷺ) के सामने गाड़ देते थे। नेज़ा इसलिये लेते थे कि उसे गाड़ने में आसानी होती थी। इमाम बुख़ारी (रह़.) इससे पहले लिख आएँ हैं कि ईदगाह में हथियार न ले जाना चाहिये। यहाँ ये बताना चाहते हैं कि ज़रूरत हो तो ले जाने में कोई मुज़ायक़ा नहीं कि ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) के सुत्रे के लिये नेज़ा ले जाया जाता था। (तफ़्हीमुल बुख़ारी)

बाब 14 : इमाम के आगे-आगे ईद के दिन अ़न्ज़ा या ह़रबा लेकर चलना

١٤- بَابُ حَمْلِ الْعَنَزَةِ - أَوِ الْحَرْبَةِ بَيْنَ يَدَيِ الإِمَامِ يَوْمَ الْعِيدِ

973. हमसे इब्राहीम बिन मुन्ज़िद ह़ज़ामी ने बयान किया, कहा कि हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू उ़मर औज़ाई ने बयान किया, कहा कि हमसे नाफ़ेअ़ ने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से बयान किया, उन्होंने फ़र्माया नबी करीम (ﷺ) ईदगाह जाते तो बरछा (डण्डा जिसके नीचे लोहे का फल लगा हुआ हो) आप (ﷺ) के आगे-आगे ले जाया जाता था, फिर ये ईदगाह में आप (ﷺ) के सामने गाड़ दिया जाता और आप (ﷺ) उसकी आड़ में नमाज़ पढ़ते। (राजेअ़ :494)

٩٧٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرٍو قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَغْدُو إِلَى الْمُصَلَّى وَالْعَنَزَةُ بَيْنَ يَدَيْهِ تُحْمَلُ وَتُنْصَبُ بِالْمُصَلَّى بَيْنَ يَدَيْهِ، فَيُصَلِّي إِلَيْهَا. [راجع: ٤٩٤]

तश्रीह : ऊपर गुज़र चुकी है। इससे ये भी ष़ाबित हुआ कि आँह़ज़रत (ﷺ) ईदैन की नमाज़ जंगल (मैदान) में पढ़ा करते थे। पस मसनून यही है जो लोग बिला उ़ज्र बारिश वग़ैरह के मस्जिद में ईदैन की नमाज़ पढ़ते हैं वो सुन्नत के ष़वाब से महरूम रहते हैं।

बाब 15 : औरतों और ह़ैज़ वालियों का ईदगाह में जाना

١٥- بَابُ خُرُوجِ النِّسَاءِ وَالْحُيَّضِ إِلَى الْمُصَلَّى

974. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा कि हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे मुह़म्मद ने, उनसे उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने, आपने फ़र्माया कि हमें हुक्म था कि पर्दा वाली दो शैज़ाओं को ईदगाह के लिये निकालें और अय्यूब सुख़्तियानी ने ह़फ़्सा (रज़ि.) से भी इसी त़रह रिवायत की है। ह़फ़्सा (रज़ि.) की

٩٧٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: أُمِرْنَا أَنْ نُخْرِجَ الْعَوَاتِقَ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ. وَعَنْ أَيُّوبَ عَنْ حَفْصَةَ بِنَحْوِهِ. وَزَادَ فِي حَدِيثِ

M-09825696131

ह़दीष़ में ये ज़्यादती है कि दोशीज़ाएँ (लड़कियाँ) और पर्देवालियाँ ज़रूर (ईदगाह जाएँ) और ह़ाइज़ा नमाज़ की जगह से अलग रहें।

(राजेअ़ : 324)

حَفْصَةَ قَالَ: أَوْ قَالَتْ: الْعَوَاتِقَ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ، وَيَعْتَزِلْنَ الْحُيَّضُ الْمُصَلَّى.

[راجع: ٣٢٤]

तश्रीह़ : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने औ़रतों के ईदैन में शिर्कत करने के बारे में तफ़्स़ील से स़ह़ीह़ अह़ादीष़ को नक़ल किया है जिनमें कुछ क़ीलो–क़ाल की गुंजाइश नहीं। अनेक रिवायतों में मौजूद है कि आँह़ज़रत (ﷺ) अपनी तमाम बीवियों और स़ाह़िबज़ादियों को ईदैन के लिये निकालते थे यहाँ तक कि फ़र्मा दिया कि ह़ैज़ वाली भी निकलें और वो नमाज़ से दूर रहकर मुसलमानों की दुआओं में शिर्कत करें और वो भी निकलें जिनके पास चादर न हों। चाहिये कि उनकी हमजोलियाँ उनको अपनी चादर या दुपट्टा दे दें। बहरह़ाल औ़रतों का ईदगाह में शिर्कत करना एक अहमतरीन सुन्नत और इस्लामी शिआ़र है जिससे शौकते इस्लाम का मुज़ाहिरा (प्रदर्शन) होता है और मर्द–औ़रत और बच्चे मैदाने ईदगाह में अल्लाह के सामने सज्दा-रेज़ होकर दुआएँ करते हैं जिनमें से किसी एक की भी दुआ अगर क़ुबूलियत का दर्जा ह़ासिल कर ले तो आ़म ह़ाज़िरीन के लिये बाइ़षे स़द बरकत हो सकती है।

इस बारे में कुछ लोगों ने फ़र्ज़ी शुकूक व शुब्हात और मफ़रूज़ा ख़त़रात की बिना पर औ़रतों का ईदगाह में जाना मकरूह क़रार दिया है मगर ये सारी मफ़रूज़ा (फ़र्ज़ी) बातें हैं जिनकी शरअ़न कोई अस़ल नहीं है। ईदगाह के मुंतज़िमीन का फ़र्ज़ है कि वो पर्दे का इंतिज़ाम करें और हर फ़साद व ख़त़रात के इंसेदाद (रोकने) के लिये पहले ही से बन्दोबस्त कर ले।

ह़ज़रत अ़ल्लामा शौकानी (रह़.)ने इस बारे में मुफ़स्स़ल व मुदल्लल बहष़ के बाद फ़र्माया है, **'अम्मा फ़ी मअ़नाहू मिनल्अह़ादीष़ि काज़ियतुन बिमश्रूइय्यति ख़ुरुजिन्निसाइ फ़िल्ईदैनि इलल्मुस़ल्ला मिन ग़ैरि फ़र्क़िन बैनल्बिक्रि वष़्ष़य्यिबि वश्शाब्बति वल्अ़जूज़ि वल्ह़ाइज़ि व ग़ैरहा मालम तकुन मुअ़तद्दतुन औ कान फ़ी ख़ुरुजिहा फ़ितनतुन औ कान लहा उज़्रुन'** या'नी अह़ादीष़ इसमें फ़ैस़ला दे रही हैं कि औ़रतों को ईदैन में मर्दों के साथ ईदगाह में शिर्कत करना मश्रूअ़ है। और इस बारे में शादीशुदा और कुँवारी और बूढ़ी और जवान और ह़ाइज़ा वग़ैरह का कोई इम्तियाज़ नहीं है जब तक उनमें से कोई इ़द्दत में न हो या उनके निकलने में कोई फ़ित्ने का डर न हो या कोई और उ़ज़्र न हो तो बिला शक तमाम मुसलमान औ़रतों को ईदगाह में जाना मश्रूअ़ हैं। फिर फ़र्माते हैं, **'वल्क़ौलु बिकराहिय्यतिल्ख़ुरूजि अलल्इ़त़्लाक़ि रद्दुन लिल्अहादीष़िस्स़ह़ीह़ति बिल्अराइल्फ़ासिदति'** या'नी मुत्लक़न औ़रतों के लिये ईदगाह में जाने को मकरूह क़रार देना या अपनी फ़ासिद रायों की बिना पर अह़ादीष़ स़ह़ीह़ा को रद्द करना है।

आजकल के जो उ़लमा ईदैन में औ़रतों की शिर्कत को नाजाइज़ क़रार देते हैं उनको इतना ग़ौर करने की तौफ़ीक़ नहीं होती कि यही मुसलमान औ़रतें बेतहाशा बाज़ारों में आती–जाती हैं; मेलों–उ़र्सों में शरीक होतीं हैं और बहुत सी ग़रीब औ़रतें जो मेह़नत मज़दूरी करती हैं। जब उन सारे ह़ालात में ये मफ़ासिदे मफ़रूज़ा से बालातर हैं तो ईदगाह की शिर्कत में जबकि वहाँ जाने के लिये बापर्दा और बाअदब होना ज़रूरी है कौनसे फ़र्ज़ी ख़त़रात का तसव्वुर करके उनके लिये अ़दमे-जवाज़ का फ़त्वा लगाया जा सकता है।

शैख़ुल ह़दीष़ ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब मुबारकपुरी दामत फ़ैज़ुहू फ़र्माते हैं, औ़रतों का ईदगाह में ईद की नमाज़ के लिये जाना सुन्नत है। शादीशुदा हों या कुँवारी, जवान हो या अधेड़ हो या बूढ़ी। **'अन उम्मि अ़तिय्यत अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) कान युख़्रिजुल अब्कार वल्अ़वातिक़ व ज़वातिल्ख़ुदूरि वल्हुय्यज़ु फ़िल्ईदैनि फ़अम्मल्हुय्यज़ु लयअ़तज़िल्नल मुस़ल्ला व यशहदन दअ़वतल मुस्लिमीन क़ालत इह़दाहुन्न या रसूलल्लाहि इल्लम यकुल्लहा जल्बाबुन क़ाल फ़लितुसिर्हा उख़्तहा मिन जल्बाबिहा'** (स़ह़ीह़ैन वग़ैरह) आँह़ज़रत (ﷺ) ईदैन में दोशीज़ा, जवान कुँवारी, ह़ैज़वाली औ़रतों को ईदगाह जाने का हुक्म देते थे। ह़ैज़वाली औ़रतें नमाज़ से अलग रहतीं और मुसलमानों की दुआओं में शरीक रहती। एक औ़रत ने कहा कि अगर किसी औ़रत के पास चादर न हो तो आपने फ़र्माया कि उसकी मुसलमान बहन

अपनी चादर में ले जाए। जो लोग कराहृत के क़ायल हैं या जवान या बूढ़ी के बीच फ़र्क़ करते हैं दरअस़ल वो स़हीह़ ह़दीष़ को अपनी फ़ासिद और बात़िल रायों से रद्द करते हैं। ह़ाफ़िज इब्ने ह़जर (रह़.) फ़त्हुल बारी में और इब्ने ह़ज़म ने अपनी मुह़ल्ला में बित्तफ़्स़ील मुख़ालिफ़ीन के जवाबात ज़िक्र किये हैं। औरतों को ईदगाह में सख़्त पर्दा के साथ बग़ैर किसी क़िस्म की ख़ुश्बू लगाए और बग़ैर बजने वाले ज़ेवर और ज़ीनत के लिबास के जाना चाहिये ताकि फ़ित्ने का सबब न बनें। **'क़ाल शैख़ुना फ़ी शर्हित्तिर्मिज़ी अ़ला मनइल्ख़ुरूजि इलल्इदि लिश्शवाब्बि मअ़ल्अम्नि मिनल्मफ़ासिदि मिम्मा ह़द्दष़न फ़ी हाज़ज़्ज़मानि बल हुव मश्रूउन लहुन्न व हुवल्क़ौलुर्राजिह इन्तिहा'** या'नी अम्न की ह़ालत में जवान औरतों को शिर्क़ते ईदैन से रोकना उसके बारे में मानेईन (मना करने वालों) के पास कोई दलील नहीं है बल्कि वो मश्रूअ़ है और क़ौले राज़ेह़ यही है।

बाब 16 : बच्चों का ईदगाह जाना

١٦– بَابُ خُرُوجِ الصِّبْيَانِ إِلَى الْمُصَلَّى

975. हमसे अ़मर बिन अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुर्रह़्मान बिन महदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़्यान ष़ौरी ने अ़ब्दुर्रह़्मान बिन आ़बिस से बयान किया, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि मैंने ईदुल फ़ित्र या ईदुल अज़्हा के दिन नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी। आप (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ने के बाद ख़ुत्बा दिया फिर औरतों की त़रफ़ आए और उन्हें नस़ीह़त फ़र्माई और स़दक़े के लिये हुक्म फ़र्माया। (राजेअ़ : 98)

٩٧٥ – حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ قَالَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ : حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَابِسٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ فِطْرٍ أَوْ أَضْحَى، فَصَلَّى الْعِيْدَ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ فَوَعَظَهُنَّ وَذَكَّرَهُنَّ، وَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ. [راجع: ٩٨]

बाब 17 : इमाम ईद के ख़ुत्बे में लोगों की त़रफ़ मुँह करके खड़ा हो

١٧– بَابُ اسْتِقْبَالِ الإِمَامِ النَّاسَ فِي خُطْبَةِ الْعِيْدِ

976. हमसे अबू नुऐ़म फ़ुज़ैल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे मुह़म्मद बिन त़ल्हा ने बयान किया, उनसे ज़ैद ने, उनसे शुअ़बी ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ईदुल अज़्हा के दिन बक़ीअ़ की त़रफ़ तशरीफ़ ले गये और दो रकअ़त ईद की नमाज़ पढ़ाई। फिर हमारी त़रफ़ चेहर-ए-मुबारक करके फ़र्माया कि सबसे मुक़द्दम इबादत हमारे इस दिन की ये है कि पहले हम नमाज़ पढ़ें, फिर (नमाज़ और ख़ुत्बे से लौट) कर क़ुर्बानी करें। इसलिये जिसने इस त़रह किया उसने हमारी सुन्नत के मुताबिक़ किया और जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर दिया तो वो ऐसी चीज़ है जिसे उसने अपने घरवालों के खिलाने के लिये जल्दी से मुहैया कर दिया है और उसका क़ुर्बानी से कोई ता'ल्लुक़ नहीं। इस पर एक शख़्स ने खड़े होकर अ़र्ज किया कि

٩٧٦ – حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ طَلْحَةَ عَنْ زُبَيْدٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ أَضْحَى إِلَى بَقِيعِ فَصَلَّى الْعِيْدَ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ وَقَالَ: ((إِنَّ أَوَّلَ نُسُكِنَا فِي يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نَبْدَأَ بِالصَّلاَةِ ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَنْحَرَ. فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ وَافَقَ سُنَّتَنَا، وَمَنْ ذَبَحَ قَبْلَ ذَلِكَ فَإِنَّمَا هُوَ شَيْءٌ عَجَّلَهُ لأَهْلِهِ لَيْسَ مِنَ النُّسُكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي ذَبَحْتُ

M-09825696131

या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैंने तो पहले ही ज़िब्ह कर दिया लेकिन मेरे पास एक साल की पठिया है और वो दो-दंदी बकरी से ज़्यादा बेहतर है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़ैर तुम उसी को ज़िब्ह करलो लेकिन तुम्हारे बाद किसी की तरफ़ से ऐसी पठिया जाइज़ न होगी। (राजेअ़ : 951)

وَعِنْدِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّةٍ. قَالَ: ((اذْبَحْهَا، وَلاَ تَفِي عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)). [راجع: ٩٥١]

सवाल करने वाले अबू बुर्दा बिन नियार अंसारी थे। ह़दीष़ और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है।

बाब 18 : ईदगाह में निशान लगाना

١٨- بَابُ الْعَلَمِ الَّذِي بِالْمُصَلَّى

या'नी कोई ऊँची चीज़ जैसे लकड़ी वग़ैरह उससे ये ग़र्ज़ थी कि ईदगाह का मक़ाम मा'लूम रहे।

977. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने सुफ़्यान ष़ौरी से बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़्मान बिन आ़बिस ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना। उनसे दरयाफ़्त किया गया था कि आप नबी करीम (ﷺ) के साथ ईदगाह गये थे? उन्होंने फ़र्माया कि हाँ! और अगर बावजूद कमउम्री के मेरी क़द्रो-मन्ज़िलत आपके यहाँ न होती तो मैं जा नहीं सकता था। आप उस निशान पर आए जो कष़ीर बिन सुल्त के घर के क़रीब है। आपने वहाँ नमाज़ पढ़ाई फिर ख़ुत्बा सुनाया। उसके बाद औरतों की तरफ़ आए, आप के साथ बिलाल (रज़ि.) भी थे। आप (ﷺ) ने उन्हें वा'ज़ और नसीहत की और सदक़ा के लिये कहा। चुनाँचे मैंने देखा कि औरतें अपने हाथों से बिलाल (रज़ि.) के कपड़े में डाले जा रही थीं। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) और बिलाल (रज़ि.) घर वापस हुए। (राजेअ़ : 98)

٩٧٧ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَابِسٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ قِيْلَ لَهُ: أَشَهِدْتَ الْعِيْدَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: نَعَمْ، وَلَوْ لاَ مَكَانِي مِنَ الصِّغَرِ مَا شَهِدْتُهُ، حَتَّى أَتَى الْعَلَمَ الَّذِي عِنْدَ دَارِ كَثِيْرِ بْنِ الصَّلْتِ فَصَلَّى ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ وَمَعَهُ بِلاَلٌ فَوَعَظَهُنَّ وَذَكَّرَهُنَّ وَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ فَرَأَيْتُهُنَّ يَهْوِيْنَ بِأَيْدِيْهِنَّ يَقْذِفْنَهُ فِي ثَوْبِ بِلاَلٍ، ثُمَّ انْطَلَقَ هُوَ وَبِلاَلٌ إِلَى بَيْتِهِ. [راجع: ٩٨]

कष़ीर बिन सुल्त का मकान आँह़ज़रत (ﷺ) के ब'ाद बनाया गया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने लोगों को ईदगाह का मकान बताने के लिये उसका पता दिया।

बाब 19 : इमाम का ईद के दिन औरतों को नसीहत करना

١٩- بَابُ مَوْعِظَةِ الإِمَامِ النِّسَاءَ يَومَ الْعِيْدِ

978. हमसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम बिन नस्र ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़ता ने ख़बर दी कि जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को मैंने ये कहते सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने ईदुल फ़ित्र की नमाज़ पढ़ी। पहले आपने नमाज़ पढ़ी उसके

٩٧٨ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ بْنِ نَصْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ: أَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: [قَامَ

M-09825696131

था। (राजेअ : 57)

كَانَتْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ. [راجع: ٥٧]

तश्रीह : अगरचे ज़मान-ए-नबवी में ईदगाह के लिये कोई इमारत नहीं थी और जहाँ ईदैन की नमाज़ पढ़ी जाती थीं वहाँ कोई मिम्बर भी नहीं था लेकिन इस लफ़्ज़ **फ़लम्मा फ़रज़ नज़लह** से मा'लूम होता है कि कोई बुलन्द जगह थी जिस पर आप (ﷺ) ख़ुत्बा देते थे।

आँहुज़ूर (ﷺ) मर्दों के सामने ख़ुत्बा दे चुके तो लोगों ने समझा कि अब ख़ुत्बा ख़त्म हो गया है और उसे वापस जाना चाहिये। चुनाँचे लोग वापसी के लिये उठे लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें हाथ के इशारे से रोका कि अभी बैठे रहें क्योंकि आप (ﷺ) औरतों को ख़ुत्बा देने जा रहे थे। दूसरी रिवायतों से मा'लूम होता है कि जवाब देने वाली ख़ातून अस्मा बिन्ते यज़ीद थीं जो अपनी फ़साहत व बलाग़त की वजह से ख़तीबतुन्निसा के नाम से मशहूर थीं। उन्हीं की एक रिवायत में है कि जब नबी करीम (ﷺ) औरतों की तरफ़ आए तो मैं भी उनमें मौजूद थी। आपने फ़र्माया कि औरतों तुम जहन्नम का ईंधन ज़्यादा बनोगी। मैंने आप (ﷺ) को पुकारकर कहा, क्योंकि मैं आपके बहुत क़रीब थी, क्यों या रसूलल्लाह! ऐसा क्यूँ होगा? आपने फ़र्माया इसलिये कि तुम लोग लान–तान बहुत ज़्यादा करती हो और अपने शौहर की नाशुक्री करती हो।

बाब 20 : अगर किसी औरत के पास ईद के दिन दुपट्टा (चादर) न हो

٢٠- بَابُ إِذَا لَمْ يَكُنْ لَهَا جِلْبَابٌ فِي الْعِيْدِ

980. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अय्यूब सुख़ितयानी ने ह़फ़्सा बिन्त सीरीन के वास्ते से बयान किया, उन्होंने कहा कि हम अपनी लड़कियों को ईदगाह जाने से मना करते थे। फिर एक ख़ातून बाहर से आई और क़स्रे बनू ख़लफ़ में उन्होंने क़याम किया कि उनकी बहन के शौहर नबी करीम (ﷺ) के साथ बारह लड़ाइयों में शरीक रहे और ख़ुद उनकी बहन अपने शौहर के साथ छह लड़ाइयों में शरीक हुई थीं। उनका बयान था कि हम मरीज़ों की ख़िदमत किया करते थे और जख़्मियों की मरहम-पट्टी करते थे। उन्होंने पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम में से अगर किसी के पास चादर न हो और उसकी वजह से ईद के दिन (ईदगाह) न जा सकें तो कोई हर्ज है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी सहेली अपनी चादर का एक हिस्सा उसे ओढ़ा दे और फिर वो ख़ैर और मुसलमानों की दुआ में शरीक हों। ह़फ़्सा ने बयान किया कि फिर जब उम्मे अ़तिया यहाँ तशरीफ़ लाई तो मैं उनकी ख़िदमत में भी हाज़िर हुई और दरयाफ़्त किया कि आपने फलाँ-

٩٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيْرِيْنَ قَالَتْ: ((كُنَّا نَمْنَعُ جَوَارِيَنَا أَنْ يَخْرُجْنَ يَومَ الْعِيْدِ، فَجَاءَتِ امْرَأَةٌ فَنَزَلَتْ قَصْرَ بَنِي خَلَفٍ، فَأَتَيْتُهَا، فَحَدَّثَتْ أَنَّ زَوْجَ أُخْتِهَا غَزَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ غَزْوَةً، فَكَانَتْ أُخْتُهَا مَعَهُ فِي سِتِّ غَزَوَاتٍ، قَالَتْ: فَكُنَّا نَقُومُ عَلَى الْمَرْضَى، وَنُدَاوِي الْكَلْمَى. فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، عَلَى إِحْدَانَا بَأْسٌ - إِذَا لَمْ يَكُنْ لَهَا جِلْبَابٌ - أَنْ لاَ تَخْرُجَ؟ فَقَالَ: ((لِتُلْبِسْهَا صَاحِبَتُهَا مِنْ جِلْبَابِهَا، فَلْيَشْهَدْنَ الْخَيْرَ وَدَعْوَةَ الْمُؤْمِنِيْنَ)). قَالَتْ حَفْصَةُ : فَلَمَّا قَدِمَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ أَتَيْتُهَا فَسَأَلْتُهَا: أَسَمِعْتِ فِي كَذَا وَكَذَا؟

M-09825696131

फलाँ बात सुनी है। उन्होंने फ़र्माया कि हाँ! मेरे माँ-बाप आप (ﷺ) पर फ़िदा हो। उम्मे अ़तिया (रज़ि.) जब भी नबी करीम (ﷺ) का ज़िक्र करती तो ये ज़रूर कहती कि मेरे माँ-बाप आप पर फिदा हो, हाँ! तो उन्होंने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जवान पर्देवाली या जवान और पर्दे वाली बाहर निकलें। शुब्हा अय्यूब को था। अलबत्ता ह़ाइज़ा औरतें ईदगाह से अलग होकर बैठें, उन्हें ख़ैर और मुसलमानों की दुआ़ में ज़रूर शरीक होना चाहिये। ह़फ़्सा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने उम्मे अ़तिया (रज़ि.) से दरयाफ़्त किया कि ह़ाइज़ा औरतें भी? उन्होंने फ़र्माया क्या ह़ाइज़ा औरतें अ़रफ़ात नहीं जातीं और क्या वो फलाँ-फलाँ जगहों में शरीक नहीं होतीं। (फिर इज्तेमाअ़े-ईद ही की शिर्कत में कौनसी क़बाह़त है) (राजेअ़ : 324)

فَقَالَتْ: نَعَمْ، بِأَبِي - وَقَلَّمَا ذَكَرَتِ النَّبِيَّ ﷺ إِلاَّ قَالَتْ: بِأَبِي - قَالَ: ((لِيَخْرُجِ الْعَوَاتِقُ ذَوَاتُ الْخُدُورِ - أَوْ قَالَ: الْعَوَاتِقُ وَذَوَاتُ الْخُدُورِ، شَكَّ أَيُّوبُ - وَالْحُيَّضُ، تَعْتَزِلُ الْحُيَّضُ الْمُصَلَّى، وَلْيَشْهَدْنَ الْخَيْرَ وَدَعْوَةَ الْمُؤْمِنِينَ)). قَالَتْ: فَقُلْتُ لَهَا: آلْحُيَّضُ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، أَلَيْسَ الْحَائِضُ تَشْهَدُ عَرَفَاتٍ وَتَشْهَدُ كَذَا وَتَشْهَدُ كَذَا؟.

[راجع: ٣٢٤]

तश्रीह : ह़फ़्सा (रज़ि.) के सवाल की वजह ये थी कि जब ह़ाइज़ा पर नमाज़ ही फ़र्ज़ नहीं और न वो नमाज़ पढ़ सकती है तो ईदगाह में उसकी शिर्कत से क्या फ़ायदा होगा? इस पर ह़ज़रत उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने कहा कि जब ह़ैज़ वाली अ़रफ़ात और दीगर मुक़ामाते मुक़द्दसा में जा सकती है और जाती हैं तो ईदगाह में क्यूँ न जाएँ? इस जवाब पर आजकल के उन ह़ज़रात को ग़ौर करना चाहिये जो औ़रतों का ईदगाह में जाना नाजाइज़ क़रार देते हैं और उसके लिये सौ ह़ीले और बहाने तलाशते हैं, ह़ालाँकि मुसलमानों की औ़रतें मेलों में और फ़िस्को—फ़ुजूर में धड़ल्ले से शरीक होती हैं।

ख़ुलासा ये है कि ह़ैज़वाली औ़रतों को भी ईदगाह जाना चाहिये और वो नमाज़ से अलग रहें मगर दुआ़ओं में शरीक हों। इससे मुसलमानों की इज्तिमाई दुआ़ओं की अहमियत भी ष़ाबित होती हैं। बिला शक दुआ़ मोमिन का हथियार है और जब मुसलमान मर्द—औ़रत मिलकर दुआ़ करें तो न मा'लूम किस की दुआ़ क़ुबूल होकर तमाम अहले इस्लाम के लिये बाइ़षे बरकत हो सकती है। बह़ालाते मौजूदा जबकि मुसलमान हर त़रफ़ से मसाइब (परेशानियों) का शिकार हैं, बिज़्ज़रूर दुआ़ओं का सहारा ज़रूरी है। इमामे ईद का फ़र्ज़ है कि ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ इस्लाम की सरबुलन्दी के लिये दुआ़एँ करे। ख़ास़ त़ौर पर क़ुर्आनी दुआ़एँ ज़्यादा मुअष्षिर (प्रभावशाली) है; फिर अह़ादीष़ में भी बड़ी पाकीज़ा दुआ़एँ वारिद हुई हैं। उनके बाद सामेईन की मादरी ज़ुबान (मातृभाषा) में भी दुआ़एँ की जा सकती है। (वबिल्लाहित्तौफ़ीक़)

बाब 21 : ह़ाइज़ा औ़रतें ईदगाह से अलग रहें

٢١- بَابُ اعْتِزَالِ الْحُيَّضِ بِالْمُصَلَّى

981. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुह़म्मद बिन इब्राहीम इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने कि उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हमें हुक्म था कि ह़ाइज़ा औ़रतों, दोशीज़ाओं और पर्देवालियों को ईदगाह ले जाएँ... इब्ने औ़न ने कहा कि या (ह़दीष़) में पर्देवाली दोशीज़ाएँ है। अलबत्ता

٩٨١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ عَنْ مُحَمَّدٍ قَالَ: قَالَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ: أُمِرْنَا أَنْ نَخْرُجَ فَنُخْرِجَ الْحُيَّضَ وَالْعَوَاتِقَ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ - قَالَ ابْنُ عَوْنٍ: أَوِ الْعَوَاتِقَ

M-09825696131

हाइज़ा औरतें मुसलमानों की जमाअ़त और दुआओं में शरीक हो और (नमाज़ से) अलग रहें।

(राजेअ़ : 324)

ذَوَاتِ الْخُدُورِ - فَأَمَّا الْحُيَّضُ فَيَشْهَدْنَ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَدَعْوَتَهُمْ وَيَعْتَزِلْنَ مُصَلاَّهُمْ. [راجع: ٣٢٤].

बाब 22 : ईदुल अज़्हा के दिन ईदगाह में नह्र और ज़िब्ह करना

٢٢- بَابُ النَّحْرِ وَالذَّبْحِ بِالْمُصَلَّى يَوْمَ النَّحْرِ

982. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष़ ने बयान किया, कहा कि मुझ से कष़ीर बिन फ़रक़द ने नाफ़ेअ़ से बयान किया, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ईदगाह ही में नह्र और ज़िब्ह किया करते।

(दीगर मक़ामात : 1710, 1711, 5551, 5552)

٩٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي كَثِيرُ بْنُ فَرْقَدٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَنْحَرُ - أَوْ يَذْبَحُ - بِالْمُصَلَّى)).

[أطرافه في : ١٧١٠، ١٧١١، ٥٥٥١، ٥٥٥٢].

नह्र ऊँट का होता है बाक़ी जानवरों को लिटाकर ज़िबह करते हैं। ऊँट को खड़े–खड़े उसके सीने में ख़ंज़र मार देते हैं। उसका नाम नह्र है। क़ुर्बानी शआइरे इस्लाम (इस्लाम की निशानियों) में से है। हस्बे मौक़ा व महल बिला शुबहा ईदगाह में भी नह्र और क़ुर्बानी मसनून है। मगर बहालाते मौजूदा अपने घरों या मुक़र्ररा मुक़ामात पर ये सुन्नत अदा करनी चाहिये। हालात की मुनासबत के लिये इस्लाम में गुंजाइश रखी गई है।

बाब 23 : ईद के ख़ुत्बे में इमाम का और लोगों का बातें करना

٢٣- بَابُ كَلاَمِ الإِمَامِ وَالنَّاسِ فِي خُطْبَةِ الْعِيدِ

और इमाम का जवाब देना जब ख़ुत्बे में उससे कुछ पूछा जाए

وَإِذَا سُئِلَ الإِمَامُ عَنْ شَيْءٍ وَهُوَ يَخْطُبُ

983. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबुल अह्वस़ सलाम बिन सलीम ने बयान किया, कहा कि हमसे मन्सूर बिन मुअ़तमिर ने बयान किया कि उनसे आ़मिर शुअ़बी ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने बक़र ईद के दिन नमाज़ के बाद ख़ुत्बा सुनाया और फ़र्माया कि जिसने हमारी त़रह की नमाज़ पढ़ी और हमारी त़रह की क़ुर्बानी की, उसकी क़ुर्बानी दुरुस्त हुई। लेकिन जिसने नमाज़ से पहले क़ुर्बानी की तो वो ज़बीहा सिर्फ़ गोश्त खाने के लिये होगा। इस पर अबू बुर्दा बिन नियार ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ) क़सम अल्लाह की! मैंने तो नमाज़ के लिये आने से पहले क़ुर्बानी कर ली, मैंने ये समझा कि आज का दिन खाने-पीने का दिन है,

٩٨٣ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ قَالَ: حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ الْمُعْتَمِرِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: خَطَبَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ بَعْدَ الصَّلاَةِ وَ قَالَ: ((مَنْ صَلَّى صَلاَتَنَا، وَنَسَكَ نُسُكَنَا، فَقَدْ أَصَابَ النُّسُكَ. وَمَنْ نَسَكَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَتِلْكَ شَاةُ لَحْمٍ)). فَقَامَ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَاللهِ لَقَدْ نَسَكْتُ قَبْلَ أَنْ أَخْرُجَ

إِلَى الصَّلَاةِ، وَعَرَفْتُ أَنَّ الْيَوْمَ يَوْمُ أَكْلٍ وَشُرْبٍ، فَتَعَجَّلْتُ، وَأَكَلْتُ وَأَطْعَمْتُ أَهْلِي وَجِيرَانِي. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تِلْكَ شَاةُ لَحْمٍ)). قَالَ: فَإِنَّ عِنْدِي عَنَاقَ جَذَعَةٍ لَهِيَ خَيْرٌ مِنْ شَاتَيْ لَحْمٍ، فَهَلْ تَجْزِي عَنِّي؟ قَالَ: ((نَعَمْ، وَلَنْ تَجْزِيَ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)) [راجع: ٩٥١].

इसलिये मैंने जल्दी की और ख़ुद भी खाया और घरवालों को और पड़ौसियों को भी खिलाया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि बहरहाल ये गोश्त (खाने का) हुआ (क़ुर्बानी नहीं) उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरे पास एक बकरी का सालभर का बच्चा है वो दो बकरियों के गोश्त से ज़्यादा बेहतर है। क्या मेरी (त़रफ़ से उसकी) क़ुर्बानी दुरुस्त होगी? आपने फ़र्माया कि हाँ! मगर तुम्हारे बाद किसी की त़रफ़ से ऐसे बच्चे की क़ुर्बानी काफ़ी न होगी।

(राजेअ : 951)

इससे ये ष़ाबित फ़र्माया कि इमाम और लोग ईद के ख़ुत्बे में मसाइल की बात कर सकते हैं और आगे के फ़िक़रों से ये ष़ाबित होता है कि ख़ुत्बे की ह़ालत में अगर इमाम से कोई शख़्स मसला पूछे तो वो जवाब दे।

٩٨٤- حَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ : ((إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ صَلَّى يَوْمَ النَّحْرِ، ثُمَّ خَطَبَ فَأَمَرَ مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلَاةِ أَنْ يُعِيدَ ذَبْحَهُ. فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، جِيرَانٌ لِي - إِمَّا قَالَ: بِهِمْ خَصَاصَةٌ، وَإِمَّا قَالَ: بِهِمْ فَقْرٌ - وَإِنِّي ذَبَحْتُ قَبْلَ الصَّلَاةِ، وَعِنْدِي عَنَاقٌ لِي أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتَيْ لَحْمٍ. فَرَخَّصَ لَهُ فِيهَا)). [راجع: ٩٥٤]

984. हमसे हामिद बिन उ़मर ने बयान किया, उनसे हम्माद बिन ज़ैद ने, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे मुहम्मद ने, उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बक़्र ईद के दिन नमाज़ पढ़कर ख़ुत्बा दिया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस शख़्स ने नमाज़ से पहले जानवर ज़िब्ह कर लिया उसे दोबारा क़ुर्बानी करनी होगी। इस पर अन्सार में से एक स़हाबी उठे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे कुछ ग़रीब-भूखे पड़ौसी हैं या यूँ कहा कि वो मुह़्ताज हैं। इसलिये मैंने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर दिया अलबत्ता मेरे पास एक साल की एक पठिया है जो दो बकरियों के गोश्त से भी ज़्यादा मुझे पसन्द है। आप (ﷺ) ने उन्हें इजाज़त दे दी। (राजेअ : 954)

٩٨٥ - حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ جُنْدَبٍ قَالَ: ((صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ ذَبَحَ وَقَالَ: مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ فَلْيَذْبَحْ أُخْرَى مَكَانَهَا، وَمَنْ لَمْ يَذْبَحْ فَلْيَذْبَحْ بِاسْمِ اللهِ)).[أطرافه في: ٥٥٠٠، ٥٥٦٢، ٦٦٧٤، ٧٤٠٠].

985. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने, उनसे जुन्दब ने, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने बक़्र ईद के दिन नमाज़ पढ़ाने के बाद ख़ुत्बा दिया फिर क़ुर्बानी की। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर लिया हो तो उसे दूसरा जानवर बदले में क़ुर्बानी करना चाहिये और जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह न किया हो वो अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह करे।

(दीगर मक़ामात : 5500, 5562, 6674, 7400)

M-09825096131

(1009) और अम्र बिन हम्ज़ा ने बयान किया कि हमसे सालिम ने अपने वालिद से बयान किया वो कहा करते थे कि अकष़र मुझे शाइर (अबू तालिब) का शे'र याद आ जाता है। मैं नबी करीम (ﷺ) के मुँह को देख रहा था कि आप दुआ-ए-इस्तिस्क़ाअ (मिम्बर पर) कर रहे थे और अभी (दुआ से फ़ारिग़ होकर) उतरे भी नहीं थे कि तमाम नाले लबरेज़ हो गए। (राजेअ: 1008)

١٠٠٩- وَقَالَ عُمَرُ بْنُ حَمْزَةَ: حَدَّثَنَا سَالِمٌ عَنْ أَبِيهِ: وَ رُبَّمَا ذَكَرْتُ قَوْلَ الشَّاعِرِ وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَى وَجْهِ النَّبِيِّ ﷺ يَسْتَسْقِى، فَمَا يَنْزِلُ حَتَّى يَجِيْشَ كُلُّ مِيْزَابِ: وَأَبْيَضَ يُسْتَسْقَى الْغَمَامُ بِوَجْهِهِ ثِمَالُ الْيَتَامَى عِصْمَةٌ لِلأَرَامِلِ هُوَ قَوْلُ أَبِي طَالِبٍ. [راجع: ١٠٠٨]

ये अबू तालिब का शे'र है जिसका तर्जुमा है कि गोरा रंग उनका, वो हामी यतीमों, बेवाओं के; लोग पानी मांगते हैं उनके मुँह के सदक़े से।

(1010) हमसे हसन बिन मुहम्मद बिन सबाह ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन मुषन्ना अंसारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप अब्दुल्लाह बिन मुषन्ना ने बयान किया, उनसे षुमामा बिन अब्दुल्लाह बिन अनस (रज़ि.) ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि जब कभी हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने में क़हत पड़ता तो उमर (रज़ि.) हज़रत अब्बास (रज़ि.) बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) के वसीले से दुआ करते और फ़र्माते कि ऐ अल्लाह! पहले हम तेरे पास अपने नबी (ﷺ) का वसीला लाया करते थे तो तू पानी बरसाता था। अब हम अपने नबी करीम (ﷺ) के चचा को वसीला बनाते हैं तो तू हम पर पानी बरसा। अनस (रज़ि.) ने कहा कि चुनाँचे बारिश ख़ूब ही बरसती। (दीगर मक़ाम: 371)

١٠١٠- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُثَنَّى عَنْ ثُمَامَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ: ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ كَانَ إِذَا قَحَطُوا اسْتَسْقَى بِالْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّا كُنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا ﷺ فَتَسْقِيْنَا، وَإِنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّنَا فَاسْقِنَا. قَالَ: فَيُسْقَوْنَ)). [طرفه في : ٣٧١].

तश्रीह: ख़ैरुल क़ुरून में दुआ का यही तरीक़ा था और सलफ़ का अमल भी इसी पर रहा कि मुर्दों को वसीला बनाकर वो दुआ नहीं करते थे कि उन्हें तो आम हालात में दुआ का शुऊर भी नहीं होता बल्कि किसी ज़िन्दा मुक़र्रब बारगाहे एज़्दी को आगे बढ़ा देते थे। आगे बढ़कर वो दुआ करते जाते थे और लोग उनकी दुआ पर आमीन कहते जाते।

हज़रत अब्बास (रज़ि.) के ज़रिये इस तरह तवस्सुल किया गया। इस हदीष से मा'लूम होता है कि ग़ैर मौजूद या मुर्दों को वसीला बनाने की कोई सूरत हज़रत उमर (रज़ि.) के सामने नहीं थी। सलफ़ का यही मा'मूल था और हज़रत उमर (रज़ि.) का तर्ज़े अमल इस मसले में बहुत ज़्यादा वाज़ेह है।

हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) ने हज़रत अब्बास (रज़ि.) की दुआ भी नक़ल की है। आपने इस्तिस्क़ाअ की दुआ इस तरह की थी, या अल्लाह! आफ़त और मुसीबत बग़ैर गुनाह के नाज़िल नहीं होती और तौबा के बग़ैर नहीं छूटती। आपके नबी के यहाँ मेरी क़द्रो-मंज़िलत थी इसलिये क़ौम मुझे आगे बढ़ाकर तेरी बारगाह में हाज़िर हुई है; ये हमारे हाथ हैं जिनसे हमने गुनाह किये थे और तौबा के लिये हमारी पेशानियाँ सज्दा रेज़ हैं; बाराने रहमत से सैराब कर। दूसरी रिवायत में है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने इस मौक़े पर ख़ुत्बा देते हुए फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का हज़रत अब्बास (रज़ि.) के साथ ऐसा मामला था जैसे बेटे

था और यही मसनून है।

बाब 16 : नबी करीम (ﷺ) का रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में रात को नमाज़ पढ़ना

١٦- بَابُ قِيَامِ النَّبِيِّ ﷺ بِاللَّيْلِ فِي رَمَضَانَ وَغَيْرِهِ

1147. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उनहोंने कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन अबू सईद मक़्बरी ने ख़बर दी, उन्हें अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) से उन्होंने पूछा कि नबी करीम (ﷺ) रमज़ान में (रात को) कितनी रकअ़तें पढ़ते थे। आपने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (रात में) ग्यारह रकअ़तों से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे, ख़्वाह रमज़ान का महीना होता या कि कोई और, पहले आप (ﷺ) चार रकअ़त पढ़ते, उनकी ख़ूबी और लम्बाई का क्या पूछना फिर आप (ﷺ) चार रकअ़त और पढ़ते उनकी ख़ूबी और लम्बाई का क्या पूछना। फिर तीन रकअ़तें पढ़ते। आ़इशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप वित्र पढ़ने से पहले ही सो जाते हैं? इस पर आप (ﷺ) फ़र्माया कि आ़इशा, मेरी आँखें सोती हैं लेकिन मेरा दिल नहीं सोता।

(दीगर मक़ाम : 2013, 3549)

١١٤٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي سَعِيْدِ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((كَيْفَ كَانَتْ صَلاَةُ رَسُولِ اللهِ فِي رَمَضَانَ؟ فَقَالَتْ: مَا كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَزِيْدُ فِي رَمَضَانَ وَلاَ فِي غَيْرِهِ عَلَى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً: يُصَلِّي أَرْبَعًا، فَلاَ تَسَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُولِهِنَّ. ثُمَّ يُصَلِّي أَرْبَعًا، فَلاَ تَسَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُولِهِنَّ، ثُمَّ يُصَلِّي ثَلاَثًا. قَالَتْ عَائِشَةُ : فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ أَتَنَامُ قَبْلَ أَنْ تُوتِرَ؟ فَقَالَ: ((يَا عَائِشَةُ إِنَّ عَيْنَيَّ تَنَامَانِ وَلاَ يَنَامُ قَلْبِي)).

[طرفاه في: ٢٠١٣، ٣٥٦٩].

तश्रीह : इन्हीं ग्यारह रकअ़तों को तरावीह़ क़रार दिया है और आँह़ज़रत (ﷺ) से रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में बरिवायत स़ह़ीह़ा यही ग्यारह रकअ़तें षाबित हैं। रमज़ान शरीफ़ में ये नमाज़े तरावीह़ के नाम से मौसूम हुई और ग़ैर रमज़ान में तहज्जुद के नाम से पुकारी गई। पस सुन्नते नबवी (ﷺ) सिर्फ़ आठ रकअ़तें तरावीह़ इस त़रह़ कुल ग्यारह रकअ़तें अदा करनी षाबित है। जैसा कि नीचे लिखी अह़ादीष़ से मज़ीद वज़ाह़त होती है,

अ़न जाबिरिन (रज़ि.) क़ाल सल्ला बिना रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी रमज़ान षमान रकआतिन वल्वित्र अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन नस्र मरवज़ी ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमको रमज़ान में आठ रकअ़त तरावीह़ और वित्र पढ़ा दिया (या'नी कुल ग्यारह रकआ़त)

नेज़ ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की ह़दीष़ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) **मा कान यज़ीदु फ़ी रमज़ान व ला फ़ी ग़ैरिही अला इहदा अशरत रकअ़तिन** रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में ग्यारह रकअ़त से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे।

कुछ लोगों को इससे ग़लतफ़हमी हो गई कि ये तहज्जुद के बारे में है तरावीह़ के बारे में नहीं। लिहाज़ा मा'लूम हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रमज़ान में तरावीह़ और तहज्जुद अलग दो नमाज़ें क़ायम नहीं कीं। वही क़यामे रमज़ान (तरावीह़) या दीगर लफ़्ज़ों में तहज्जुद; ग्यारह रकअ़त पढ़ते और क़यामे रमज़ान (तरावीह़) को ह़दीष़ शरीफ़ में क़यामुललैल (तहज्जुद) भी फ़र्माया।

रमज़ान में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) को तरावीह़ पढ़ा कर फ़र्माया, 'मुझको डर हुआ कि तुम पर स़लातुललैल (तहज्जुद) फ़र्ज़ न हो जाए।' देखिए आप (ﷺ) ने तरावीह़ को तहज्जुद फ़र्माया। इससे मा'लूम हुआ कि रमज़ान में क़यामे रमज़ान (तरावीह़) और स़लातुल्लैल (तहज्जुद) एक ही नमाज़ है।

तरावीह़ व तहज्जुद के एक होने की दूसरी दलील :

अन अबी ज़र्रिन क़ाल सुम्ना मअ रसूलिल्लाहि (ﷺ) रमज़ान फलम यक़ुम बिना शैअम्मिन्हु हत्ता बक़िय सब्अ लयालिन फ़क़ाम बिना लैलतस्साबिअति हत्ता मज़ा नहवु मिन षुलुषिल्लैलि षुम्म कानतिल्लैलतुस् सादिसतुल्लती तलीहा फलम यक़ुम बिना हत्ता कानत खामिसतल्लती तलीहा क़ाम बिना ह़त्ता मज़ा नहवुम्मिन शतरिल्लैलि फकुल्तु या रसूलल्लाहि लौ नफ़ल्तुना बक़िय्यत लैलतिना हाज़िहि फ़क़ाल अन्नहू मन क़ाम मअल्इमामि हत्ता यन्सरिफ़ फ़इन्नहू यअदिलु क़ियामुल्लैलति षुम्म कानतिर्राबिअतुल्लती तलीहा फ़लम यक़ुम्हा हत्ता कानतिष़्षालिषतुल्लती तलीहा क़ाल फजमअ निसाअहू व अहलह वज्तमअन्नासु क़ाल फ़क़ाम बिना हत्ता खशीना अंय्यफ़ूतनल्फ़लाहु क़ीला व मल्फलाह क़ाल अस्सुहूरू षुम्म लम यकुम बिना शैअन मिम्बक़िय्यतिश् शहरि (रवाहु इब्ने माजा) ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हमने रमज़ान के रोज़े रखे, आप (ﷺ) ने हमको आख़िर के हफ़्ते में तीन त़ाक़ रातों में तरावीह़ इस तर्तीब से पढ़ाई कि पहली रात को अव्वल वक़्त में, दूसरी रात को निस्फ़ शब में, और फिर निस्फ़े बक़िया से। सवाल हुआ कि और नमाज़ पढ़ाइये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो इमाम के साथ नमाज़ अदा करे उसका पूरी रात का क़याम होगा। फिर तीसरी रात को आख़िर शब में अपने अहले बैत को जमा करके सब लोगों की जमईयत में तरावीह़ पढ़ाईं, यहाँ तक कि हम डरे कि जमाअत ही में सेह़री का वक़्त न चला जाए। इस ह़दीष़ को इब्ने माजा ने रिवायत किया है और बुख़ारी शरीफ़ में ये ह़दीष़ मुख़्तस़र लफ़्ज़ों में कई जगह नक़ल हुई है।

इससे मा'लूम हुआ कि आप (ﷺ) ने उसी एक नमाज़े तरावीह़ को रात के तीन ह़िस्सों में पढ़ाया है और इस तरावीह़ का वक़्त इशा के बाद अख़ीर रात तक अपने फ़ेअल (उस्वा-ए-ह़सना) से बता दिया जिसमें तहज्जुद का वक़्त आ गया। पस फ़ेअ़ले रसूलुल्लाह (ﷺ) से ष़ाबित हो गया है कि इशा के बाद आख़िर रात तक एक ही नमाज़ है।

नीज़ इसकी ताईद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के उस क़ौल से होती है जो आपने फ़र्माया **वल्लती तनामून अ़न्हा अफ़्ज़लु मिनल्लती तक़ूमून** ये तरावीह़ पिछली रात में कि जिसमें तुम सोते हो पढ़ना बेहतर है अव्वल वक़्त पढ़ने से।' मा'लूम हुआ कि नमाज़े तरावीह़ व तहज्जुद एक ही है और यही मत़लब ह़ज़रते आ़इशा (रज़ि.) वाली ह़दीष़ का है।

नीज़ ह़दीष़ पर इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब बाँधा है कि **बाबुन: फ़ज़्लुम्मन क़ाम रमज़ान** और इमाम बैहक़ी (रह.) ने ह़दीष़ मज़्कूर पर यूँ बाब मुनअ़क़िद किया है। **बाबुन मा रूविय फ़ी अ़ददि रक्आतिल्क़ियामि फ़ी शहरि रमज़ान** और इसी त़रह़ इमाम मुह़म्मद (रह.) शागिर्द इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) ने **बाबु क़यामि शहरि रमज़ान** के तह़्त ह़दीष़े मज़्कूर को नक़ल किया है। इन सब बुज़ुर्गों की मुराद भी ह़दीष़े आ़इशा (रज़ि.) से तरावीह़ ही है और ऊपर मुफ़स़्स़ल गुज़र चुका है कि अव्वल रात से आख़िर रात तक एक ही नमाज़ है। अब रहा कि इन तीनों रातों में कितनी रकअ़तें पढ़ाई थीं? सो अ़र्ज़ है कि अ़लावा वित्र आठ ही रकअ़तें पढ़ाई थीं। इसके षुबूत में कई रिवायाते स़ह़ीह़ा आई हैं जो दर्ज़ ज़ैल हैं,

उ़लमा व फ़ुक़हा-ए-ह़नफ़िया ने फ़र्मा दिया कि आठ रकअ़त तरावीह़ सुन्नते नबवी है:

(1) अ़ल्लामा ऐनी हनफ़ी (रह.) उम्दतुलक़ारी (जिल्द : 3, पेज नं. 597) में फ़र्माते हैं, **फ़इन क़ुल्तु लम युबय्यिन फ़िर्रिवायातिल्मज़्कूरति अददुस़्स़लालिल्लती सल्लहा रसूलुल्लाहि (ﷺ) फी तिल्कल्लयालि क़ुल्तु रवाहु इब्नु खुज़ैमः व इब्नु हिब्बान मिन हदीषि जाबिरिन क़ाल स़ल्ला बिना रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी रमज़ान ष़मान रक्आतिन षुम्म औतर** 'अगर तू सवाल करे कि जो नमाज़ आप (ﷺ) ने तीन रातों में पढ़ाई थी उसमें ता'दाद का ज़िक्र नहीं तो मैं उसके जवाब में कहूँगा कि इब्ने खुज़ैमा और इब्ने ह़िब्बान ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अ़लावा वित्र के आठ रकअ़तें पढ़ाईं थीं।'

(2) ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह.) फ़त्हुल बारी (जिल्द: 1, पेज नं. 597) में फ़र्माते हैं, **लम अरा फ़ी शैइन मिन तुरुकिही बयानु अ़ददि सलातिही फ़ी तिल्कल्लयाली लाकिन रवाहुब्नु ख़ुज़ैमा वब्नु हिब्बान मिन हदीष़ि जाबिरिन क़ाल सल्ला बिना रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी रमज़ान ष़मान रक्आतिन षुम्म औतर** 'मैंने ह़दीष़े मज़्कूरा बाला की किसी सनद में नहीं देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन तीन रातों में कितनी रकअ़त पढ़ाई थीं। लेकिन इब्ने ख़ुज़ैमा और इब्ने ह़िब्बान ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अ़लावा वित्र के आठ रकअ़त पढ़ाई थीं।

(3) अ़ल्लामा ज़ेलई ह़नफ़ी (रह.) ने नस़्बुर्राया फ़ी तख़रीजे अह़ादीष़ अल हिदाया (जिल्द : 1, पेज नं. 293) में इस ह़दीष़ को नक़ल किया है कि **इन्दब्नि हिब्बान फ़ी स़हीहिही अन जाबिरिनब्नि अब्दिल्लाहि अन्नहू अलैहिस्सलाम सल्ला बिहिम ष़मान रक्आतिन वल्वित्र** इब्ने ह़िब्बान ने अपनी स़ह़ीह़ में जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने स़ह़ाबा (रज़ि.) को आठ रकअ़त और वित्र पढ़ाए या'नी कुल ग्यारह रकअ़त।

(4) इमाम मुह़म्मद, शागिर्द इमामे आज़म (रह.) अपनी किताब मौत़ा इमाम मुह़म्मद (पेज नं. 93) में बाबे तरावीह़ के तह़त फ़र्माते हैं **अन अबी सल्मतब्नि अब्दिर्रहमानि अन्नहू सअल आइशत कैफ़ कानत स़लातु रसूलिल्लाहि (ﷺ) क़ालत मा कान रसूलुल्लाहि यज़ीदु फ़ी रमज़ान व ला फ़ी गैरिही अ़ला इहदा अशरत रकअ़तन** अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान से मरवी है कि उन्होंने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की रात की नमाज़ कैसी थी तो बतलाया कि रमज़ान व ग़ैर रमज़ान में आप ग्यारह रकअ़त से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे। रमज़ान व ग़ैर रमजान की तह़क़ीक़ पहले गुज़र चुकी है। फिर इमाम मुह़म्मद (रह.) इस ह़दीष़ शरीफ़ को नक़ल करने के बाद फ़र्माते हैं **मुहम्मद व बिहाज़ा नाख़ुज़ूहू कुल्लहू** हमारा भी इन सब ह़दीष़ों पर अ़मल है, हम इन सब को लेते हैं।

(5) हिदाया जिल्द अव्वल के ह़ाशिये पर है, **अस्सुन्नतु मा वाज़ब अलैहिर्रसूलु (ﷺ) फहसबु फ़अला हाज़िहित्तअ़रीफ़ि यकूनुस्सुन्नतु हुव ज़ालिकल्कदरूल्मज़्कूरू व मा जाद अलैहि यकूनु मुस्तहब्बन** सुन्नत स़िर्फ़ वही है जिसको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमेशा किया हो। पस इस ता'रीफ़ के मुत़ाबिक़ स़िर्फ़ मिक़्दार मज़्कूर (आठ रकअ़त ही) सुन्नत होगी और जो उससे ज़्यादा हो वो नमाज़ मुस्तह़ब होगी।

(6) इमाम इब्नुल हुमाम हनफ़ी (रह.) फ़त्हुल क़दीर शरह़ हिदाया में फ़र्माते हैं **फतहस्सल मिन हाज़ा कुल्लिही अन्न क़ियाम रमज़ान सुन्नतुन इहदा अशरत रक्अतन बिल्वित्र फ़ी जमाअ़तिन फअलहुन्नबिय्यु (ﷺ)** इन तमाम का ख़ुलास़ा ये है कि रमज़ान का क़याम (तरावीह़) सुन्नत मअ़ वित्र ग्यारह रकअ़त बाजमाअ़त रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़ेअ़ल (उस्व-ए-ह़सना) से ष़ाबित है।

(7) अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी ह़नफ़ी (रह.) अपनी किताब मिरक़ात शरह़े मिश्कात में फ़र्माते हैं, **अन्नत्तराहीव फ़िल्अस़्लि इहदा अशरत रक्अतन फ़अलहु रसूलुल्लाहि (ﷺ) षुम्म तरकहू लिउज़्रिन** दरअस़ल तरावीह़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़ेअ़ल से ग्यारह ही रकअ़त ष़ाबित है। जिनको आप (ﷺ) ने पढ़ा बाद में उ़ज़्र की वजह से छोड़ दिया।

(8) मौलाना अ़ब्दुल ह़य्यि ह़नफ़ी लख़नवी (रह.) तअ़लीकुल मुम्जिद शरह़ मौत़ा इमाम मुह़म्मद (रह.) में फ़र्माते हैं **व अख़रजब्नु हिब्बान फ़ी स़हीहिही मिन हदीष़ि जाबिरिन अन्नहू स़ल्ला बिहिम ष़मान रक्आतिन षुम्म औतर व हाज़ा अस़ह्हु** और इब्ने ह़िब्बान ने अपनी स़ह़ीह़ में जाबिर (रज़ि.) की ह़दीष़ से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सह़ाबा किराम (रज़ि.) को अ़लावा वित्र आठ रकअ़तें पढ़ाईं। ये ह़दीष़ बहुत स़ह़ीह़ है।

इन ह़दीष़ों से स़ाफ़ ष़ाबित हुआ कि रसूले अकरम (ﷺ) आठ रकअ़त तरावीह़ पढ़ते और पढ़ाते थे। जिन रिवायात में आप (ﷺ) का बीस रकआ़त पढ़ना मज़्कूर है वो सब ज़ईफ़ और नाक़ाबिले इस्तिदलाल हैं।

स़ह़ाबा (रज़ि.) और स़ह़ाबियात (रज़ि.) का हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने में आठ रकअ़त तरावीह़ पढ़ना :

(9) इमाम मुह़म्मद बिन नस्र मरवज़ी (रह.) ने क़यामुललैल में ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत की है **जाअ उबय इब्नि कअ़बिन फ़ी रमज़ान फ़क़ाल या रसूलल्लाहि (ﷺ) कानल्लैलत शैउन क़ाल व मा ज़ाक या उबय क़ाल**

निस्वतुदारी क़ुल्न इन्ना ला नक़्रदुल्क़ुर्आन फनुसल्ली ख़ल्फ़क बिस़लातिक फ़सल्लैतु बिहिन्न ष़मान रकआतिन वल्वित्र फसकत अन्हू शिब्हुर्रिज़ा उबय बिन कअब (रज़ि.) रमज़ान में रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास ह़ाज़िर हुए और कहा कि आज रात को एक ख़ास़ बात हो गई है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ उबय! वो क्या बात है? उन्होंने कहा कि मेरे घराने की औरतों ने कहा कि हम क़ुर्आन नहीं पढ़ती हैं इसलिये तुम्हारे पीछे नमाज़े (तरावीह़) तुम्हारी इक़्तिदा में पढ़ेंगी तो मैंने उनको आठ रकअत और वित्र पढ़ा दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने ये सुनकर सुकूत फ़र्माया। गोया इस बात को पसंद फ़र्माया, इस ह़दीष़ से ष़ाबित हुआ कि स़ह़ाबा (रज़ि.) आप (ﷺ) के ज़माने में आठ रकअत (तरावीह़) पढ़ते थे।

ह़ज़रत उमर ख़लीफ़-ए-ष़ानी (रज़ि.) की नमाज़े तरावीह़ मय वित्र ग्यारह रकअत :

(10) **अन साइबिब्नि यज़ीदिन क़ाल अमर उमरु उबय इब्न कअबिन व तमीमद्दारी अंय्यक़ूमा लिन्नासि फ़ी रमज़ान इह़दा अशरत रकअतन** साइब बिन यज़ीद ने कहा कि उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने उबय बिन कअब और तमीम दारी (रज़ि.) को हुक्म दिया कि रमज़ान शरीफ़ में लोगों को ग्यारह रकअत पढ़ाएँ। (मौत़ा इमाम मालिक)

वाज़ेह़ हुआ कि आठ और ग्यारह में वित्र का फ़र्क़ है और अलावा आठ रकअत तरावीह़ के वित्र एक तीन पाँच पढ़ना ह़दीष़ शरीफ़ में आए हैं और बीस तरावीह़ की रिवायत ह़ज़रत उमर (रज़ि.) से ष़ाबित नहीं और जों रिवायत उनसे नक़ल की जाती है वो मुन्क़त़अुस्सनद (सनद कटी हुई) है। इसलिये कि बीस का रावी यज़ीद बिन रुम्मान है। उसने ह़ज़रत उमर (रज़ि.) का ज़माना नहीं पाया। चुनाँचे अल्लामा ऐनी ह़नफ़ी व अल्लामा ज़ेलई ह़नफ़ी (रह.) उम्दतुल क़ारी और नस़बुर्राया में फ़र्माते हैं कि **यज़ीदुब्नु रूमान लम युदरिक उमर** 'यज़ीद बिन रूम्मान ने ह़ज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) का ज़माना नहीं पाया।' और जिन लोगों ने सय्यिदना उमर (रज़ि.) को पाया है उनकी रिवायात बिल इत्तिफ़ाक़ ग्यारह रकअत की हैं, उनमें ह़ज़रत साइब (रज़ि.) की रिवायत ऊपर गुज़र चुकी है।

और ह़ज़रत अअरज हैं जो कहते हैं **कानल्क़ारी यक़्रउ सूरतल्बक़्रति फ़ी ष़मानी रकआतिन** क़ारी सूरह बक़रा आठ रकअ़त में ख़त्म करता था (मौत़ा इमाम मालिक)। फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) ने उबय बिन कअब व तमीम दारी और सुलैमान बिन अबी ह़ष़्मा (रज़ि.) को साथ वित्र ग्यारह रकअत पढ़ाने का हुक्म दिया था (मुस़न्निफ़ इब्ने अबी शैबा)। ग़र्ज़ ह़ज़रत उमर (रज़ि.) का ये हुक्म ह़दीष़े रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुवाफ़िक़ है। लिहाज़ा **अलैकुम बिसुन्नती व सुन्नतिल्ख़ुल्फ़ाइर्राशिदीन** से भी ग्यारह पर अमल करना षाबित हुआ।

फ़ुक़हा से आठ का षुबूत और बीस का ज़ुअ़फ़ :—

(11) अल्लामा इब्नुल हमाम ह़नफ़ी (रह.) फ़तहुल क़दीर शरह़ हिदाया (जिल्द : 1, पेज नं. 205) में फ़र्माते हैं बीस रकअ़त तरावीह़ की ह़दीष़ ज़ईफ़ है। **अन्नहू मुख़ालिफ़ुल्लिल ह़दीष़िस्स़ह़ीह़ि अन अबी सलमतब्नि अब्दिर्रहमानि अन्नहू सअल आइशत अल्हदीष़** अलावा बरीं ये (बीस की रिवायत) स़ह़ीह़ ह़दीष़ के भी ख़िलाफ़ है जो अबू सलमा बिन अब्दुर्रह़मान ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रमज़ान व ग़ैर रमज़ान में ग्यारह रकअत से ज़ाइद न पढ़ते थे।

(12) शैख़ अब्दुल ह़क़ स़ाह़ब ह़नफ़ी मुह़द्दिष़ देहलवी (रह.) फ़त्हु सिर्रुल मन्नान में फ़र्माते हैं **वलम यष़्बुत रिवायतु इश्रीन मिन्हु (ﷺ) कमा हुवल्मुताअरफ़ु अल्आन इल्ला फ़ी रिवायतिब्नि अबी शैबत व हुव ज़ईफ़ुन व क़द आरज़हू हदीषु आइशत व हुव हदीषुन स़हीहुन** जो बीस तरावीह़ मशहूर व मअरूफ़ हैं और आँहज़रत (ﷺ) से ष़ाबित नहीं और जो इब्ने अबी शैबा में बीस की रिवायत है वो ज़ईफ़ है और ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की सह़ीह़ ह़दीष़ के भी मुख़ालिफ़ है (जिसमें मय वित्र ग्यारह रकअत षाबित हैं)।

(13) शैख़ अब्दुल ह़क़ ह़नफ़ी मुह़द्दिष़ देहलवी (रह.) अपनी किताब **मा ष़बत बिस्सुन्नह** (पेज नं. 217) में फ़र्माते हैं **वस़्स़हीहु मा रवत्हु आइशतु अन्नहू (ﷺ) स़ल्ला इह़दा अशरत रकअतन कमा हुव आदतुहू फ़ी क़ियामिल्लैलि व रूविय अन्नहू कान बअ़ज़ुस्सलफ़ि फ़ी अहदि उमरब्नि अब्दिलअज़ीज़ि युसल्लून इह़दा अशरत रकअतन क़स़दन तश्बीहन बिरसूलिल्लाहि (ﷺ)** स़ह़ीह़ ह़दीष़ वो है जिसको ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने रिवायत किया है कि आप

(ﷺ) ग्यारह रकअत पढ़ते थे। जैसा कि आप (ﷺ) की क़ियामुल्लैल की आदत थी और रिवायत है कि कुछ सलफ़ अमीरुल मोमिनीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में ग्यारह रकअत तरावीह पढ़ा करते थे ताकि आँहज़रत (ﷺ) की सुन्नत से मुशाबिहत पैदा करें।

इससे मा'लूम हुआ कि शैख़ साहब (रह.) ख़ुद आठ रकअत तरावीह के क़ाइल थे और सलफ़ सालेहीन में भी ये मशहूर था कि आठ रकअत तरावीह सुन्नते नबवी है और क्यूँ न हो जबकि ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आठ रकअत तरावीह पढ़ीं और सहाबा किराम (रज़ि.) को पढ़ाईं। नीज़ उबय बिन कअब (रज़ि.) ने औरतों को आठ रकअत तरावीह पढ़ाईं तो हुज़ूर (ﷺ) ने पसंद फ़र्माया। इसी तरह हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने में वित्र के साथ ग्यारह रकअत तरावीह पढ़ने का हुक्म था और लोग उस पर अमल करते थे। नीज़ हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) के वक़्त में लोग आठ रकअत तरावीह पर सुन्नते रसूल (ﷺ) समझकर अमल करते थे और इमाम मालिक (रह.) ने भी मय वित्र ग्यारह रकअत ही को सुन्नत के मुताबिक़ इख़्तियार किया है।

(14) अल्लामा ऐनी हनफ़ी (रह.) फ़र्माते हैं कि **इहदा अशरत रकअतन व हुव इख़्वार मालिक लिनफ़्सिही** 'ग्यारह रकअत को इमाम मालिक (रह.) ने अपने लिये इख़्तियार किया है।'

इसी तरह फ़ुक़हा व उलमा जैसे अल्लामा ऐनी हनफ़ी, अल्लामा ज़ेलई हनफ़ी, हाफ़िज़ इब्ने हजर, अल्लामा मुहम्मद बिन नस्र मरवज़ी, शैख़ अब्दुल हई साहब हनफ़ी मुहद्दिष देहलवी, मौलाना अब्दुल हक़ हनफ़ी लखनवी (रह.) वग़ैरह ने अलावा वित्र के आठ रकअत तरावीह को सहीह और सुन्नते नबवी (ﷺ) फ़र्माया है जिनके हवाले पहले गुज़र चुके हैं। और इमाम मुहम्मद शागिर्दे रशीद इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने तो फ़र्माया कि **व बिहाज़ा नाख़ुज़ु कुल्लहू** 'हम इन सब हदीषों को लेते हैं।' या'नी इन ग्यारह रकअत की हदीषों पर हमारा अमल है। फ़ल्हम्दुलिल्लाह कि वित्र के साथ ग्यारह रकअत तरावीह का मस्नून होना षाबित हो गया।

इसके बाद सलफ़े उम्मत में कुछ ऐसे हज़रात भी मिलते हैं जो बीस रकअत और तीस रकआत और चालीस रकआत बतौरे नफ़्ल नमाज़े तरावीह पढ़ा करते थे। लिहाज़ा ये दा'वा कि बीस रकअत पर इज्माअ हो गया, बातिल है। अस्ल सुन्नते नबवी आठ रकअत तरावीह तीन रकअत वित्र कुल ग्यारह रकअत हैं। नफ़्ल के लिये हर वक़्त इख़्तियार है कोई जिस क़दर चाहे पढ़ सकता है। जिन हज़रात ने रमज़ान में आठ रकअत तरावीह को ख़िलाफ़े सुन्नत कहने का मश्ग़ला बना लिया है और ऐसा लिखना या कहना उनके ख़्याल में ज़रूरी है वो सख़्त ग़लती में मुब्तला हैं बल्कि उसे भी एक तरह से तल्बीसे इब्लीस कहा जा सकता है। अल्लाह तआला सबको नेक समझ अता करे, आमीन।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने जो रात के नवाफ़िल चार-चार रकआत मिलाकर पढ़ना अफ़ज़ल कहा है, वो उसी हदीष से दलील लेते हैं। हालाँकि उससे इस्तिदलाल सहीह नहीं क्योंकि उसमें ये तस्रीह नहीं है कि आप (ﷺ) चार-चार रकअत के बाद सलाम फेरते। मुम्किन है कि पहले आप (ﷺ) चार रकअत (दो सलाम के साथ) बहुत लम्बी पढ़ते हों फिर दूसरी चार रकअतें (दो सलाम के साथ) उनसे हल्की पढ़ते हों। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने इस तरह इन चार-चार रकअतों को अलग-अलग जिक्र किया है और ये भी मुम्किन है कि चार रकअतों का एक सलाम के साथ पढ़ना मुराद हो। इसलिये अल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते है कि **व अम्मा मा सबक मिन अन्नहू कान युसल्ली मष्ना मष्ना षुम्म वाहिदतन फ़महमूलुन अला वक़्तिन आख़र फल्अम्रानि जाइज़ानि** या'नी पिछली रिवायात में जो आप (ﷺ) की दो रकअत पढ़ना मज़्कूर हुआ है। फिर एक रकअत वित्र पढ़ना तो वो दूसरे वक़्त पर महमूल है और ये चार चार करके पढ़ना फिर तीन वित्र पढ़ना दूसरे वक़्त पर महमूल है इसलिये दोनों अम्र जाइज़ हैं।

1148. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, और उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया कि मुझे मेरे बाप उर्वा ने ख़बर दी कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा ने

١١٤٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ هِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا

قَالَتْ: ((مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي شَيْءٍ مِنْ صَلاَةِ اللَّيْلِ جَالِسًا، حَتَّى إِذَا كَبِرَ قَرَأَ جَالِسًا، فَإِذَا بَقِيَ عَلَيْهِ مِنَ السُّورَةِ ثَلاَثُونَ أَوْ أَرْبَعُونَ آيَةً قَامَ فَقَرَأَهُنَّ، ثُمَّ رَكَعَ)). [راجع: ١١١٨]

बतलाया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को रात की किसी नमाज़ में बैठकर क़ुर्आन पढ़ते नहीं देखा। यहाँ तक कि आप (ﷺ) बूढ़े हो गए तो बैठ कर क़ुर्आन पढ़ते थे। लेकिन जब तीस-चालीस आयतें रह जाती तो खड़े हो जाते फिर उनको पढ़कर रुकूअ करते थे। (राजेअ: 1118)

١٧- بَابُ فَضْلِ الصَّلاَةِ بَعْدَ الْوُضُوءِ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ

बाब 18 : दिन और रात में बावुज़ू रहने की फ़ज़ीलत और वुज़ू के बाद रात और दिन में नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत का बयान

١١٤٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ أَبِي حَيَّانَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِبِلاَلٍ عِنْدَ صَلاَةِ الْفَجْرِ: ((يَا بِلاَلُ حَدِّثْنِي بِأَرْجَى عَمَلٍ عَمِلْتَهُ فِي الإِسْلاَمِ، فَإِنِّي سَمِعْتُ دَفَّ نَعْلَيْكَ بَيْنَ يَدَيَّ فِي الْجَنَّةِ)). قَالَ: مَا عَمِلْتُ عَمَلاً أَرْجَى عِنْدِي أَنِّي لَمْ أَتَطَهَّرْ طُهُورًا فِي سَاعَةِ لَيْلٍ أَوْ نَهَارٍ إِلاَّ صَلَّيْتُ بِذَلِكَ الطُّهُورِ مَا كُتِبَ لِي أَنْ أُصَلِّيَ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: دَفَّ نَعْلَيْكَ، يَعْنِي تَحْرِيْكَ.

1149. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, उनसे अबू हय्यान यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) से फ़ज्र के वक़्त पूछा कि ऐ बिलाल! मुझे अपना सबसे ज़्यादा उम्मीद वाला नेक काम बताओ, जिसे तुमने इस्लाम लाने के बाद किया है, क्योंकि मैंने जन्नत में अपने आगे तुम्हारे जूतों की चाप सुनी है। ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया मैंने तो अपने नज़दीक इससे ज़्यादा उम्मीद का कोई काम नहीं किया कि जब मैंने रात या दिन में किसी वक़्त भी वुज़ू किया तो मैं उस वुज़ू से नफ़्ल नमाज़ पढ़ता रहता, जितनी मेरी तक़दीर में लिखी गई थी।

तश्रीह : या'नी जैसे तू जन्नत में चल रहा है और तेरी जूतियों की आवाज़ निकल रही है। ये अल्लाह तआ़ला ने आप (ﷺ) को दिखला दिया जो नज़र आया वो होने वाला था। ड़लमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जन्नत में बेदारी के आ़लम में इस दुनिया में रहकर आँह़ज़रत (ﷺ) के सिवा और कोई नहीं गया, आप (ﷺ) मेअ़राज की शब में वहाँ तशरीफ़ ले गए। इसी त़रह दोज़ख़ में और ये जो कुछ फ़ुक़रा से मन्क़ूल है कि उनका ख़ादिम हुक़्क़ा की आग लेने जहन्नम में गया ये मह़ज़ ग़लत़ है। बिलाल (रज़ि.) दुनिया में भी बत़ौरे ख़ादिम के आँह़ज़रत (ﷺ) के आगे सामान वग़ैरह लेकर चला करते, वैसे ही अल्लाह तआ़ला ने अपने पैग़म्बर को दिखला दिया कि बहिश्त में भी होगा। इस ह़दीष़ से बिलाल (रज़ि.) की फ़ज़ीलत निकली और उनका जन्नती होना षाबित हुआ। (वह़ीदी)

١٨- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّشْدِيدِ فِي الْعِبَادَةِ

बाब 18 : इबादत में बहुत सख़्ती उठाना मकरूह है

١١٥٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ

1150. हमसे अबू मअ़मर अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल वारिष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि

M-09825696131

हमसे यह़्या बिन सईद क़त्तान ने, कहा कि हमसे शुअ़बा ने, उनसे इब्राहीम बिन मुह़म्मद बिन मुन्तशिर ने, उनसे उनके बाप मुह़म्मद बिन मुन्तशिर ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ज़ुहर से पहले चार रकअ़त सुन्नत और सुबह की नमाज़ से पहले दो रकअ़त सुन्नत नमाज़ पढ़ना नहीं छोड़ते थे यह़्या के साथ इस ह़दीष़ को इब्ने अबी अ़दी और अ़म्र बिन मरज़ूक़ ने शुअ़बा से रिवायत किया है।

قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْتَشِرِ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ لاَ يَدَعُ أَرْبَعًا قَبْلَ الظُّهْرِ، وَرَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الْغَدَاةِ)). تَابَعَهُ ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ وَعَمْرٌو عَنْ شُعْبَةَ.

ये ह़दीष़ बाब के मुताबिक़ नहीं क्योंकि बाब में दो रकअ़तें ज़ुहर से पहले पढ़ने का ज़िक्र है और शायद बाब के तर्जुमा का ये मत़लब हो कि ज़ुहर से पहले दो ही रकअ़तें पढ़ना ज़रूरी नहीं, चार भी पढ़ सकता है।

बाब 35 : मग़रिब से पहले सुन्नत पढ़ना

٣٥- بَابُ الصَّلاَةِ قَبْلَ الْمَغْرِبِ

1173. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे हुसैन मुअ़मल ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मुज़नी (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया कि मग़रिब के फ़र्ज़ से पहले (सुन्नत की दो रकअ़त) पढ़ा करो। तीसरी मर्तबा आपने यूँ फ़र्माया कि जिसका जी चाहे क्योंकि आपको ये बात पसन्द न थी कि लोग इसे लाज़मी समझ बैठें। (दीगर मक़ाम : 7368)

١١٨٣- حَدَّثَنَا أَبُومَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنِ الْحُسَيْنِ وَهُوَ الْمُعَلِّمُ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ بُرَيْدَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ الْمُزَنِيُّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((صَلُّوا قَبْلَ صَلاَةِ الْمَغْرِبِ)) - قَالَ فِي الثَّالِثَةِ:- ((لِمَنْ شَاءَ)). كَرَاهِيَةَ أَنْ يَتَّخِذَهَا النَّاسُ سُنَّةً. [طرفه في: ٧٣٦٨].

ह़दीष़ और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है कि मग़रिब की जमाअ़त से पहले इन दो रकअ़तों को पढ़ना चाहें तो पढ़ सकता है।

1184. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन अबी अय्यूब ने बयान किया, कहा कि मुझसे यज़ीद बिन अबी ह़बीब से बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मरष़द बिन अ़ब्दुल्लाह यज़नी से सुना कि मैं उ़क़्बा बिन आ़मिर जुहनी स़हाबी (रज़ि.) के पास आया और अ़र्ज़ किया आप को अबू तमीम अ़ब्दुल्लाह बिन मालिक पर ता'ज्जुब नहीं आया कि वो मग़रिब की नमाज़े-फ़र्ज़ से पहले दो रकअ़त नफ़्ल पढते हैं। इस पर उ़क़्बा ने फ़र्माया कि हम भी रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में इसे पढ़ते थे। मैंने कहा फिर अब इसके छोड़ने की क्या वजह है? उन्होंने फ़र्माया कि दुनिया का कारोबार मानेअ़ है।

١١٨٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيْدَ قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ: حَدَّثَنِي يَزِيْدُ بْنُ أَبِي حَبِيْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ مَرْثَدَ بْنَ عَبْدِ اللهِ الْيَزَنِيَّ قَالَ: ((أَتَيْتُ عُقْبَةَ بْنَ عَامِرٍ الْجُهَنِيَّ فَقُلْتُ: أَلاَ أُعَجِّبُكَ مِنْ أَبِي تَمِيْمٍ، يَرْكَعُ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ صَلاَةِ الْمَغْرِبِ. فَقَالَ عُقْبَةُ : إِنَّا كُنَّا نَفْعَلُهُ عَلَى عَهْدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، قُلْتُ : فَمَا يَمْنَعُكَ الآنَ؟ قَالَ: الشُّغْلُ)).

तशरीह़ : दोनों अह़ादीष़ से ष़ाबित हुआ कि अब भी मौक़ा मिलने पर मग़रिब से पहले उन दो रकअ़तों को पढ़ा जा सकता है, अगरचे पढ़ना ज़रूरी नहीं मगर कोई पढ़ ले तो यक़ीनन मोजिबे अज्रो-ष़वाब होगा। कुछ लोगों ने कहा कि

20. किताब फ़ज़्लुस्सलात फ़ी मक्का वल मदीना

मक्का और मदीना में नमाज़ की फ़ज़ीलत

بِسۡمِ اللهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

बाब 1 : मक्का और मदीना (ज़ादहुमल्लाह शरफ़न व ता'ज़ीमन) की मसाजिद में नमाज़ की फ़ज़ीलत का बयान

١ - بَابُ فَضْلِ الصَّلاَةِ فِي مَسْجِدِ مَكَّةَ والْمَدِيْنَةِ

1188. हमसे हफ़्स बिन ड़मर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अ़ब्दुल मलिक ने क़ज़्आ से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सईद (रज़ि.) से चार बातें सुनीं और उन्होंने बतलाया कि मैंने उन्हें नबी करीम (ﷺ) से सुना था, आपने नबी करीम (ﷺ) के साथ बारह जिहाद किये थे। (राजेअ़ : 582)

١١٨٨ - حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ عَنْ قَزَعَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَرْبَعًا قَالَ سَمِعْتُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ، وَكَانَ غَزَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثِنْتَي عَشْرَةَ غَزْوَةً. [راجع: ٥٨٦]

1189. (दूसरी सनद) हमसे अ़ली बिन मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तीन मस्जिदों के सिवा किसी के लिये कजावे न बाँधें (या'नी सफ़र न किया जाए) एक मस्जिदे हराम, दूसरी रसूलुल्लाह (ﷺ) की मस्जिद (मस्जिदे नबवी) और तीसरी मस्जिदे अक़्सा या'नी बैतुल मक़्दिस। (उन चार बातों का बयान आगे आ रहा है)

١١٨٩ - ح وَحَدَّثَنَا عَلِيٌّ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيْدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تُشَدُّ الرِّحَالُ إِلاَّ إِلَى ثَلاَثَةِ مَسَاجِدَ: الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ، وَمَسْجِدِ الرَّسُوْلِ ﷺ وَمَسْجِدِ الأَقْصَى)).

तश्रीह : मस्जिदे अक़्सा की वजहे तस्मिया क़स्तलानी के लफ़्ज़ों में ये है। **व सुम्मिय बिही लिबुअ़ दिही अ़न मस्जिदि मक्कत फ़िल मसाफ़ति** या'नी इसलिये उसका नाम मस्जिदे अ़क़्सा रखा गया कि मस्जिद मक्का से मुसाफ़त में ये दूर वाक़ेअ़ है। लफ़्ज़े रिह़ाल ये रह़ल की जमा है ये लफ़्ज़ ऊँट के कज़ावा पर बोला जाता है। उस ज़माने में सफ़र के लिये ऊँट का इस्ते'माल ही आ़म था। इसलिये यही लफ़्ज़ इस्ते'माल किया गया।

मत़लब ये हुआ कि ये तीन मसाजिद ही ऐसा मन्सब रखती हैं कि उनमें नमाज़ पढ़ने के लिये, उनकी ज़ियारत करने

बाब 10 : नमाज़ में कौन–कौन से काम दुरुस्त है?

١٠- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الْعَمَلِ فِي الصَّلاَةِ

1209. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़नबी ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे अबुन्नज़र सालिम बिन अबू उमय्या ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह्मान ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं अपना पाँव नबी करीम (ﷺ) के सामने फैला लेती थी और आप नमाज़ पढ़ते होते। जब आप (ﷺ) सज्दा करने लगते तो आप मुझे हाथ लगाते मैं पाँव समेट लेती। फिर जब आप (ﷺ) खड़े हो जाते तो मैं फिर फैला लेती। (राजेअ : 382)

١٢٠٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كُنْتُ أَمُدُّ رِجْلَيَّ فِي قِبْلَةِ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ يُصَلِّي، فَإِذَا سَجَدَ غَمَزَنِي، فَرَفَعْتُهَا، فَإِذَا قَامَ مَدَدْتُهَا)).

[راجع: ٣٨٢]

1210. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा कि हमसे शबाबा ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि आप (ﷺ) ने एक मर्तबा एक नमाज़ पढ़ी फिर फ़र्माया कि मेरे सामने एक शैतान आ गया और कोशिश करने लगा कि मेरी नमाज़ तोड़ दे। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उसको मेरे क़ाबू में कर दिया, मैंने उसका गला घोंटा और उसको धकेल दिया। आख़िर में मेरा इरादा हुआ कि उसे मस्जिद के एक सुतून से बाँध दूँ और जब सुबह हो तो तुम भी देखो। लेकिन मुझे सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ याद आ गई, ऐ अल्लाह! मुझे ऐसी सल्तनत अ़ता कीजियो, जो मेरे बाद किसी और को न मिले। (इसलिये मैंने उसे छोड़ दिया) और अल्लाह तआ़ला ने उसे ज़िल्लत के साथ भगा दिया। इसके बाद नज़र बिन शुमैल ने कहा कि ज़अतुहू ज़ाल से है जिसके मा'नी है कि मैंने उसका गला घोंट दिया और दअ़त अल्लाह तआ़ला के इस क़ौल से लिया गया है यौम युदऔन जिस के मा'नी हैं क़यामत के दिन वो दोज़ख़ की तरफ़ धकेले जाएंगे। दुरुस्त पहला ही लफ़्ज़ है। अलबत्ता शुअ़बा ने इसी तरह ऐन और ताअ की तश्दीद के साथ बयान किया है।

(राजेअ़ : 461)

١٢١٠ - حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ قَالَ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ صَلَّى صَلاَةً قَالَ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ عَرَضَ لِي فَشَدَّ عَلَيَّ يَقْطَعُ الصَّلاَةَ عَلَيَّ، فَأَمْكَنَنِي اللهُ مِنْهُ فَذَعَتُّهُ، وَلَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أُوثِقَهُ إِلَى سَارِيَةٍ حَتَّى تُصْبِحُوا فَتَنْظُرُوا إِلَيْهِ، فَذَكَرْتُ قَوْلَ سُلَيْمَانَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ: ﴿رَبِّ هَبْ لِي مُلْكًا لاَ يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي﴾ فَرَدَّهُ اللهُ خَاسِئًا)) ثُمَّ قَالَ النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ: فَذَعَتُّهُ بِالذَّالِ، أَيْ خَنَقْتُهُ. وَفَدَعَّتُّهُ مِنْ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿يَوْمَ يُدَعُّونَ﴾ أَيْ يُدْفَعُونَ. وَالصَّوَابُ الأَوَّلُ، إِلاَّ أَنَّهُ كَذَا قَالَ بِتَشْدِيدِ الْعَيْنِ وَالتَّاءِ.

[راجع: ٤٦١]

तश्रीह : यहाँ ये ए'तिराज़ न होगा कि दूसरी ह़दीष़ में है कि शैत़ान उ़मर के साये से भी भागता है। जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से शैत़ान डरता है तो आँह़ज़रत (ﷺ) के पास क्योंकर आया? आँह़ज़रत (ﷺ) उ़मर (रज़ि.) से कहीं ज़्यादा

जो ऊपर गुज़र चुकी है और आगे भी आएगी।

बाब 14 : इस बारे में कि अगर नमाज़ी से कोई कहे कि आगे बढ़ जा या ठहर जा और वो आगे बढ़ जाए या ठहर जाए तो कोई क़बाहत नहीं है

١٤- بَابُ إِذَا قِيلَ لِلْمُصَلِّي: تَقَدَّمْ أَوِ انْتَظِرْ فَانْتَظَرَ - فَلاَ بَأْسَ

1215. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा कि हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें अबू हाज़िम ने, उनको सह्ल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बतलाया कि लोग नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ त़रह पढ़ते कि तहबन्द छोटे होने की वजह से उन्हें अपनी गर्दनों से बाँधे रखते और औ़रतों को (जो मर्दों के पीछे जमाअ़त में शरीक रहती थीं) कह दिया जाता कि जब तक मर्द पूरी त़रह सिमट पर न बैठ जाए, तुम अपने सर (सज्दे से) न उठाना। (राजेअ़ : 362)

١٢١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّاسُ يُصَلُّونَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُمْ عَاقِدُو أُزْرِهِمْ مِنَ الصِّغَرِ عَلَى رِقَابِهِمْ، فَقِيلَ لِلنِّسَاءِ: لاَ تَرْفَعْنَ رُؤُوسَكُنَّ حَتَّى يَسْتَوِيَ الرِّجَالُ جُلُوسًا)). [راجع: ٣٦٢]

तश्रीह : इमाम नमाज़ में भूल जाए या किसी दीगर ज़रूरी अम्र पर उसे आगाह करना हो जो मर्द सुब्हानल्लाह कहें और औरते ताली बजाएँ अगर किसी मर्द ने नादानी की वजह से तालियाँ बजाईं तो उसकी नमाज़ नहीं टूटेगी। चुनाँचे सहल (रज़ि.) की ह़दीष़ में जो दो बाबों के बाद आ रही है कि स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) ने नादानी की वजह से ऐसा किया और आप (ﷺ) ने उनको नमाज़ लौटाने का हुक्म नहीं दिया। ह़दीष़ और बाब में यूँ मुत़ाबक़त हुई कि ये बात औ़रतों को ह़ालते नमाज़ में कही गई या नमाज़ से पहले। शक़ अव्वल में मा'लूम हुआ कि नमाज़ी को मुख़ातिब करना और नमाज़ के लिये किसी का इंतिज़ार करना जाइज़ है और शक़े ष़ानी में मा'लूम हुआ कि नमाज़ में इंतिज़ार करना जाइज़ है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) के कलाम का ह़ासिल ये है कि किसी का इंतिज़ार अगर शरई है तो जाइज़ है वरना नहीं। (फ़त्हुलबारी)

बाब 15 : नमाज़ में सलाम का जवाब (ज़बान से) न दे

١٥- بَابُ لاَ يَرُدُّ السَّلاَمَ فِي الصَّلاَةِ

1216. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अ़लक़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि (इब्तिदाए-इस्लाम में) नबी करीम (ﷺ) जब नमाज़ में होते तो मैं आपको सलाम करता तो आप (ﷺ) जवाब देते थे। मगर जब हम (ह़ब्शा से, जहाँ हिजरत की थी) वापस आये तो मैंने (पहले की त़रह नमाज़ में) सलाम किया। मगर आप (ﷺ) ने कोई जवाब नहीं दिया (क्योंकि अब नमाज़ में बातचीत वग़ैरह की मुमानअ़त नाज़िल हो गई थी) और फ़र्माया कि नमाज़ में इससे मशग़ूलियत होती है। (राजेअ़ : 1199)

١٢١٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: ((كُنْتُ أُسَلِّمُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ فِي الصَّلاَةِ فَيَرُدُّ عَلَيَّ، فَلَمَّا رَجَعْنَا سَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيَّ وَقَالَ: ((إِنَّ فِي الصَّلاَةِ لَشُغْلاً)). [راجع: ١١٩٩]

या'नी जब ज़ुबान पर तस्बीह़ जारी हो और दिल घर के जानवरों में लगा हुआ हो तो ऐसी तस्बीह़ क्या अष़र पैदा कर सकती है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के अष़रे मज़कूर को इब्ने अबी शैबा ने बइस्नादे स़ह़ीह़ रिवायत किया है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को अल्लाह ने अपने दीन की ख़िदमत व नुस़रत के लिये पैदा फ़र्माया था। उनको नमाज़ में भी वही ख़्यालात दामनगीर रहते थे, नमाज़ में जिहाद के लिये फ़ौजकशी और जंगी तदबीरें सोचते थे चूँकि नमाज़ नफ़्स और शैत़ान के साथ जिहाद है और उन ह़र्बी तदाबीर को सोचना भी अज़ क़िस्मे जिहाद है लिहाज़ा मुफ़्सिदे नमाज़ नहीं। (ह़वाशी सल्फ़िया, पारा नं. 5 पेज नं. 443)

١٢٢١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ حَدَّثَنَا رَوْحٌ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُ هُوَ ابْنُ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْعَصْرَ فَلَمَّا سَلَّمَ قَامَ سَرِيْعًا وَدَخَلَ عَلَى بَعْضِ نِسَائِهِ، ثُمَّ خَرَجَ وَرَأَى مَا فِي وُجُوهِ الْقَوْمِ مِنْ تَعَجُّبِهِمْ لِسُرْعَتِهِ فَقَالَ: ((ذَكَرْتُ - وَأَنَا فِي الصَّلاَةِ - تِبْرًا عِنْدَنَا فَكَرِهْتُ أَنْ يُمْسِيَ - أَوْ يَبِيْتَ - عِنْدَنَا، فَأَمَرْتُ بِقِسْمَتِهِ)). [راجع: ٨٥١]

1221. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मन्स़ूर ने बयान किया, कहा कि हमसे रौह़ बिन उ़बादा ने, कहा कि हमसे उ़मर ने जो सईद के बेटे हैं, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के साथ अ़स्र की नमाज़ पढ़ी, आप (ﷺ) सलाम फेरते ही बड़ी तेज़ी से उठे और अपनी एक बीवी के हुज्रे में तशरीफ़ ले गये, फिर बाहर तशरीफ़ लाए। आपने अपनी जल्दी पर इस ता'ज्जुब व ह़ैरत को मह़सूस किया जो स़ह़ाबा के चेहरे से ज़ाहिर हो रहा था, इसलिये आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि नमाज़ में मुझे सोने का एक डला याद आ गया जो हमारे पास तक़्सीम से बाक़ी रह गया था। मुझे बुरा मा'लूम हुआ कि हमारे पास वो शाम तक या रात तक रह जाए। इसलिये मैंने उसे तक़्सीम करने का हुक्म दे दिया। (राजेअ: 851)

नमाज़ में आँह़ज़रत (ﷺ) को सोने का बक़ाया डला तक़्सीम के लिये याद आ गया यहीं से बाब का मत़लब ष़ाबित होता है।

١٢٢٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ جَعْفَرٍ عَنِ الأَعْرَجِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أُذِّنَ بِالصَّلاَةِ أَدْبَرَ الشَّيْطَانُ لَهُ ضُرَاطٌ حَتَّى لاَ يَسْمَعَ التَّأْذِيْنَ، فَإِذَا سَكَتَ الْمُؤَذِّنُ أَقْبَلَ، فَإِذَا ثُوِّبَ أَدْبَرَ، فَإِذَا سَكَتَ أَقْبَلَ، فَلاَ يَزَالُ بِالْمَرْءِ يَقُولُ لَهُ اذْكُرْ مَا لَمْ يَكُنْ يَذْكُرُ حَتَّى لاَ يَدْرِي كَمْ صَلَّى)). قَالَ أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ: إِذَا فَعَلَ أَحَدُكُمْ ذَلِكَ فَلْيَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ قَاعِدٌ،

1222. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष़ ने उनसे जा'फ़र बिन रबीआ़ ने और उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब नमाज़ के लिये अज़ान दी जाती तो शैतान पीठ मोड़ कर हवा ख़ारिज करता हुआ भाग जाता है ताकि अज़ान न सुन सके। जब मुअज़्ज़िन चुप हो जाता है तो मर्दूद फिर आ जाता है और जब जमाअ़त खड़ी होने लगती है (और तक्बीर कही जाती है) तो फिर भाग जाता है। लेकिन जब मुअज़्ज़िन चुप हो जाता है, फिर आ जाता है और आदमी के दिल में बराबर वस्वसा पैदा करता रहता है। कहता है कि (फलाँ-फलाँ बात) याद कर। कमबख़्त वो बातें याद दिलाता है जो उस नमाज़ी के ज़हन में भी न थी। इस तरह नमाज़ी को ये भी याद नहीं रहता कि उसने कितनी रकअ़तें पढ़ी है। अबू सलमा अ़ब्दुर्रह़मान न

(दीगर मक़ाम : 3667, 3669, 4452, 4455, 5710, 3668, 3680, 4453, 4454, 4457, 5711)

[أطرافه في: ٣٦٦٧، ٣٦٦٩، ٤٤٥٢، ٤٤٥٥، ٥٧١٠].

[أطرافه في: ٣٦٦٨، ٣٦٧٠، ٤٤٥٣، ٤٤٥٤، ٤٤٥٧، ٥٧١١].

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने आप (ﷺ) का चेहर-ए-मुबारक खोला और आप को बोसा दिया। यहीं से बाब का तर्जुमा ष़ाबित हुआ। वफ़ाते नबवी पर सहाबा किराम में एक तहलका मच गया था। मगर बरवक़्त हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उम्मत को सम्भाला और हक़ीक़ते हाल का इज़्हार फ़र्माया जिससे मुसलमानों में एकबारगी सुकून हो गया और सबको इस बात पर पूरा इत्मीनान हासिल हो गया कि इस्लाम अल्लाह का सच्चा दीन है वो अल्लाह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है। आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात से इस्लाम की बक़ा पर कोई अष़र नहीं पड़ सकता, आप (ﷺ) रसूलों की जमाअत के एक फ़र्दे–फ़रीद हैं और दुनिया में जो भी रसूल आएँ हैं अपने अपने वक़्त पर सब दुनिया से रुख़्सत हो गये। ऐसे ही आप भी अपना मिशन पूरा करके मलअे आला से जा मिले। सल्लल लाहु अलैहि व सल्लम, अला हबीबिही व बारिक व सल्लिम। कुछ सहाबा किराम (रज़ि.) का ये ख़्याल भी हो गया था कि आँहज़रत (ﷺ) दोबारा ज़िन्दा होंगे। इसीलिये हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अल्लाह पाक आप (ﷺ) पर दो मौत तारी नहीं करेगा। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद व बारिक व सल्लिम।

1243. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष़ बिन सअद ने कहा, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने फ़र्माया कि मुझे ख़ारजा बिन ज़ैद बिन ष़ाबित ने ख़बर दी कि उम्मे अलअलाअ अन्सार की एक औरत ने, जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) से बैअत की थी, ने उन्हें ख़बर दी कि मुहाजिरीन क़ुर्आ डालकर अन्सार में बाँट दिये गये तो हज़रत उष़्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) हमारे हिस्से में आए। चुनाँचे हमने उन्हें अपने घर में रखा। आख़िर वो बीमार हुए और उसी में वफ़ात पा गये। वफ़ात के बाद ग़ुस्ल दिया गया और कफ़न में लपेट दिया गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए। मैंने कहा, अबू साइब! आप पर अल्लाह की रहमतें हों मेरी आपके मुता'ल्लिक़ शहादत ये है कि अल्लाह तआला ने आपकी इज़्ज़त फ़र्माई है। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें कैसे मा'लूम हुआ कि अल्लाह तआला ने इनकी इज़्ज़त फ़माई है? मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हो, फिर किसकी अल्लाह तआला इज़्ज़त-अफ़ज़ाई करेगा? आपने फ़र्माया, इसमें शुब्हा नहीं कि उनकी मौत आ चुकी, क़सम अल्लाह की कि मैं भी इनके लिये ख़ैर की उम्मीद रखता हूँ, लेकिन वल्लाह! मुझे खुद अपने मुता'ल्लिक़ भी मा'लूम नहीं कि मेरे साथ क्या मामला होगा। हालाँकि मैं

١٢٤٣ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ أُمَّ الْعَلاَءِ - امْرَأَةً مِنَ الأَنْصَارِ بَايَعَتِ النَّبِيَّ ﷺ - أَخْبَرَتْهُ أَنَّهُ اقْتُسِمَ الْمُهَاجِرُونَ قُرْعَةً، فَطَارَ لَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَظْعُونٍ فَأَنْزَلْنَاهُ فِي أَبْيَاتِنَا، فَوَجِعَ وَجَعَهُ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ، فَلَمَّا تُوُفِّيَ وَغُسِّلَ وَكُفِّنَ فِي أَثْوَابِهِ دَخَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَقُلْتُ، رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ، فَشَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا يُدْرِيكِ أَنَّ اللهَ قَدْ أَكْرَمَهُ؟)) فَقُلْتُ: بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ، فَمَنْ يُكْرِمُهُ اللهُ؟ فَقَالَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ: ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ الْيَقِينُ. وَاللهِ إِنِّي لأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ، وَاللهِ مَا أَدْرِي - وَأَنَا رَسُولُ اللهِ - مَا يُفْعَلُ بِي)). قَالَتْ:

अल्लाह का रसूल हूँ। उम्मे अल-अलाअ ने कहा कि ख़ुदा की क़सम! अब मैं कभी किसी के मुता'ल्लिक़ (इस तरह की) गवाही नहीं दूँगी।

فَوَ اللهِ لاَ أُزَكِّي أَحَدًا بَعْدَهُ أَبَدًا.

तश्रीह : इस रिवायत में कई उमूर का बयान है। एक तो उसका कि जब मुहाजिरीन मदीना में आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी परेशानी दूर करने के लिये अंसार से उनका भाईचारा क़ायम करा दिया। इस बारे में क़ुर्आ-अंदाज़ी की गई और जो मुहाजिर जिस अंसारी के हिस्से में आया वो उसके हवाले कर दिया गया। उन्होंने सगे भाई से ज़्यादा उनकी ख़ातिर तवाजोअ की। बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आँहज़रत (ﷺ) ने ग़ुस्ल व कफ़न के बाद उ़ष्मान बिन मज़्ऊन को देखा। ह़दीष़ से ये भी निकला कि किसी भी बन्दे के बारे में ह़क़ीक़त का इ़ल्म अल्लाह ही को ह़ासिल है। हमें अपने ज़न्न के मुताबिक़ उनके ह़क़ में नेक गुमान करना चाहिये। ह़क़ीक़ते ह़ाल को अल्लाह के ह़वाले करना चाहिये।

कई मुआनिदीने इस्लाम ने यहाँ ए'तिराज़ किया है कि जब आँहज़रत (ﷺ) को ख़ुद अपनी भी नजात का यक़ीन न था तो आप अपनी उम्मत की क्या सिफ़ारिश करेंगे।

इस ए'तिराज़ के जवाब में पहली बात जो ये है कि आँहज़रत (ﷺ) का ये इर्शाद गिरामी इब्तिदा-ए-इस्लाम का है, बाद में अल्लाह ने आपको सूरह फ़तह़ में ये बशारत दी कि आपके अगले और पिछले गुनाह बख़्श दिये गये तो ये ए'तिराज़ ख़ुद दूर हो गया और ष़ाबित हुआ कि उसके बाद आपको अपनी नजात के बारे में यक़ीने कामिल ह़ासिल हो गया था। फिर भी शाने बन्दगी उसको मुस्तलज़िम है कि परवारदिगार की शाने स़मदियत हमेशा मल्हूज़े ख़ातिर रहे। आप (ﷺ) का शफ़ाअ़त करना बरहक़ है बल्कि शफ़ाअ़ते कुबरा का मुक़ामे मह़मूद आप (ﷺ) को ह़ासिल है।

हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया और उनसे लैष़ ने साबिक़ा रिवायत की त़रह बयान किया, नाफ़ेअ बिन यज़ीद ने अ़क़ील से (मा युफ़्अलु बी के बजाय) मा युफ़्अलु बिही के अल्फ़ाज़ नक़ल किये हैं और इस रिवायत की मुताबअ़त शुऐब, अ़म्र बिन दीनार और मअ़मर ने की है।

(दीगर मक़ाम : 2678, 3929, 7003, 7004, 7018)

حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ..مِثْلَهُ. وَقَالَ نَافِعُ بْنُ يَزِيْدَ عَنْ عُقَيْلٍ: مَا يُفْعَلُ بِهِ. وَتَابَعَهُ شُعَيْبٌ وَعَمْرُو بْنُ دِيْنَارٍ وَمَعْمَرٌ.

[أطرافه في : ٢٦٨٧، ٣٩٢٩، ٧٠٠٣، ٧٠٠٤، ٧٠١٨].

इस सूरत में तर्जुमा ये होगा कि क़सम अल्लाह की मैं नहीं जानता कि उसके साथ क्या मुआमला किया जाएगा। ह़ालाँकि उसके ह़क़ में मेरा गुमान नेक है।

1244. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मुह़म्मद बिन मुन्कदिर से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि जब मेरे वालिद शहीद कर दिये गये तो उनके चेहरे पर पड़ा हुआ कपड़ा खोलता और रोता था। दूसरे लोग तो मुझे इससे रोकते थे लेकिन नबी करीम (ﷺ) कुछ नहीं कह रहे थे। आख़िर मेरी चची फ़ातिमा (रज़ि.) भी रोन

١٢٤٤ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا قُتِلَ أَبِي جَعَلْتُ أَكْشِفُ الثَّوْبَ عَنْ وَجْهِهِ أَبْكِي، وَيَنْهَوْنِي عَنْهُ، وَالنَّبِيُّ ﷺ لاَ يَنْهَانِي، فَجَعَلَتْ عَمَّتِي

1303. हमसे ह़सन बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन ह़स्सान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे क़ुरैश ने जो ह़य्यान के बेटे हैं, ने बयान किया और उनसे षाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ अबू यूसुफ़ लोहार के यहाँ गये। ये इब्राहीम (रसूलुल्लाह ﷺ के स़ाहबज़ादे) को दूध पिलाने वाली आया के ख़ाविन्द थे। आँह़ज़रत ने इब्राहीम (रज़ि.) को गोद में लिया और प्यार किया और सूंघा। फिर इसके बाद हम उनके यहाँ घर गये। देखा कि उस वक़्त इब्राहीम (रज़ि.) दम तोड़ रहे हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) की आँखें आँसुओं से भर आईं तो अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) बोल पड़े कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप भी लोगों कि त़रह बेस़ब्री करने लगे? हुज़ूरे-अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ इब्ने औ़फ़! ये बेस़ब्री नहीं, ये तो रह़मत है। फिर आप (ﷺ) दोबारा रोए और फ़र्माया, आँखों से आँसू जारी है और दिल ग़म से निढाल है, पर ज़बान से हम कहेंगे वही जो हमारे परवरदिगार को पसन्द है और ऐ इब्राहीम! हम तुम्हारी ज़ुदाई से ग़मगीन हैं। इस ह़दीष़ को मूसा बिन इस्माईल ने सुलैमान बिन मुग़ीरा से, उनसे ष़ाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है।

١٣٠٣ - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ قَالَ حَدَّثَنَا قُرَيْشٌ هُوَ ابْنُ حَيَّانَ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((دَخَلْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَلَى أَبِي سَيْفٍ الْقَيْنِ - وَكَانَ ظِئْرًا لإِبْرَاهِيْمَ - فَأَخَذَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِبْرَاهِيْمَ فَقَبَّلَهُ وَشَمَّهُ ثُمَّ دَخَلْنَا عَلَيْهِ بَعْدَ ذَلِكَ - وَإِبْرَاهِيْمُ يَجُودُ بِنَفْسِهِ - فَجَعَلَتْ عَيْنَا رَسُولِ اللهِ ﷺ تَذْرِفَانِ. فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: وَأَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ فَقَالَ: ((يَا ابْنَ عَوْفٍ إِنَّهَا رَحْمَةٌ)). ثُمَّ أَتْبَعَهَا بِأُخْرَى فَقَالَ ﷺ: ((إِنَّ الْعَيْنَ تَدْمَعُ، وَالْقَلْبَ يَحْزَنُ، وَلاَ نَقُولُ إِلاَّ مَا يَرْضَى رَبُّنَا، وَإِنَّا بِفِرَاقِكَ يَا إِبْرَاهِيْمُ لَمَحْزُونُونَ)). رَوَاهُ مُوسَى عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ الْمُغِيْرَةِ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

तश्रीह: ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ये बतलाना चाहते हैं कि इस त़रह़ आँखों से आंसू निकल आएँ और दिल ग़मगीन हो और ज़ुबान से कोई अल्फ़ाज़ अल्लाह की नाराज़गी का न निकले तो ऐसा रोना बेस़ब्री नहीं ये आंसू रह़मत हैं और ये भी षाबित हुआ कि मरने वाले को मुह़ब्बत आमेज़ लफ़्ज़ों से मुख़ात़ब करके उसके ह़क़ में कलिम-ए-ख़ैर कहना चाहिये। आँह़ज़रत (ﷺ) के ये स़ाहबज़ादे मारिया क़िब्तिया (रज़ि.) के बत़न से पैदा हुए थे जो मशिय्यते ऐज़दी के तह़त ह़ालते शीर-ख़्वारगी (दूध पीने की उ़म्र में) ही में इंतिक़ाल कर गए। (रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहा)

बाब 44 : मरीज़ के पास रोना कैसा है?

٤٤- بَابُ الْبُكَاءِ عِنْدَ الْمَرِيْضِ

1304. हमसे अस़्बग़ बिन फ़रज ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन वुहैब ने कहा कि मुझे ख़बर दी अ़म्र बिन ह़ारिष़ ने, उन्हें सईद बिन ह़ारिष़ अन्सारी ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) किसी मर्ज़ में मुब्तला हुए। नबी करीम (ﷺ) इयादत के लिये अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, सअ़द बिन अबी वक़्क़ास और

١٣٠٤ - حَدَّثَنَا أَصْبَغُ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْحَارِثِ الأَنْصَارِيِّ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((اشْتَكَى سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ شَكْوَى لَهُ، فَأَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُهُ

कि मय्यत को मस्जिद में दाख़िल करना और वहाँ उसका जनाज़ा पढ़ना सही है। इमाम शाफ़िई और अह्मद और इस्हाक़ और जुम्हूर का भी यही क़ौल है। जो लोग मय्यत के नापाक होने का ख़्याल रखते हैं उनके नज़दीक मस्जिद में न मय्यत का लाना दुरुस्त है और न वहाँ नमाज़े जनाज़ा जाइज़। मगर ये ख़्याल बिलकुल ग़लत़ है। मुसलमान मुर्दा और जिन्दा नजिस नहीं हुआ करता। जैसा कि ह़दीष़ में स़ाफ़ मौजूद है, **इन्नल मूमिन ला युन्जिसु हय्यन व ला मय्यितन** बेशक मोमिन मुर्दा और जिन्दा नजिस नहीं होता या'नी नजासते ह़क़ीक़ी से वो दूर होता है।

बनू बैज़ा तीन भाई थे। सहल व सुहैल और स़फ़्वान उनकी वालिदा को बत़ौरे वस्फ़ बैज़ा कहा गया। उसका नाम दअ़द था और उनके वालिद का नाम वहब बिन रबीआ़ क़ुरैशी फ़ह्री था।

इस बह़ष़ के आख़िर में ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब (रह.) फ़र्माते हैं, **वल्हक़्क़ु अन्नहू यजूज़ुस्सलातु अलल्जनाइज़ि फिलमस्जिदि मिन गैरि कराहतिन वल्अफ़ज़लु अस्सलातु अलैहा खारिजलमस्जिदि लिअन्न अक्ष़र स़लवातिही (ﷺ) अलल्जनाइज़ि कान फिलमुसल्ला** (मिर्आ़त) या'नी ह़क़ यही है कि मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा बिला कराहत दुरुस्त है और अफ़ज़ल ये है कि मस्जिद से बाहर पढ़ी जाए क्योंकि अक्ष़र नबी करीम (ﷺ) ने इसको ईदगाह में पढ़ा है।

इस ह़दीष़ से ये भी ष़ाबित होता है कि इस्लामी अ़दालत में अगर कोई ग़ैर–मुस्लिम का कोई मुक़द्दमा दायर हो तो फ़ैसला बहरह़ाल इस्लामी क़ानून के तह़त किया जाएगा। आप (ﷺ) ने उन यहूदी ज़ानियों के लिये संगसारी का हुक्म इसलिये भी स़ादिर फ़र्माया कि ख़ुद तौरात में भी यही हुक्म था जिसे ज़ुलम-ए-यहूद ने बदल दिया था। आप (ﷺ) ने गोया उन ही की शरीअ़त के मुत़ाबिक़ फ़ैसला फ़र्माया। (ﷺ)

बाब 61 : क़ब्रों पर मस्जिद बनाना मकरूह है

٦١- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنِ اتِّخَاذِ الْمَسَاجِدِ عَلَى الْقُبُورِ

और जब ह़सन बिन ह़सन बिन अ़ली (रज़ि.) गुज़र गये तो उनकी बीवी (फ़ातिमा बिन्ते हुसैन) ने एक साल तक क़ब्र पर ख़ैमा लगाए रखा। आख़िर ख़ैमा उठाया गया तो लोगों ने एक आवाज़ सुनी, क्या लोगों ने जिनको खोया था, उनको पा लिया? दूसरे ने जवाब दिया नहीं बल्कि नाउम्मीद होकर लौट गये।

وَلَمَّا مَاتَ الْحَسَنُ بْنُ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ ضَرَبَتِ امْرَأَتُهُ الْقُبَّةَ عَلَى قَبْرِهِ سَنَةً، ثُمَّ رُفِعَتْ، فَسَمِعُوا صَائِحًا يَقُولُ: أَلاَ هَلْ وَجَدُوا مَا فَقَدُوا؟ فَأَجَابَهُ آخَرُ: بَلْ يَئِسُوا فَانْقَلَبُوا.

तश्रीह: ये ह़सन, ह़ज़रत ह़सन बिन अ़ली (रज़ि.) के बेटे और बड़े ष़िक़ात ताबेई़न में से थे। उनकी बीवी फ़ातिमा ह़ज़रत हुसैन (रज़ि.) की बेटी थीं और उनके एक लड़का था उनका नामे-नामी भी ह़सन था। गोया तीन पुश्त तक यही मुबारक नाम रखा गया। उनकी बीवी ने अपने दिल को तसल्ली देने और ग़म ग़लत़ करने के लिये साल भर तक अपने मह़बूब शौहर की क़ब्र के पास डेरा रखा। इस पर उनको हातिफ़े ग़ैब से मलामत हुई और वो वापस हो गईं।

1330. **हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे शैबान ने, उनसे हिलाल वज़्ज़ान ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने मर्ज़े-वफ़ात में फ़र्माया कि यहूद और नस़ारा पर अल्लाह की लअ़नत हो कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि अगर ऐसा डर न होता तो आपकी क़ब्र खुली रहती (और हुज्रे में न होती) क्योंकि मुझ**

١٣٣٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ شَيْبَانَ عَنْ هِلاَلٍ هُوَ الْوَزَّانُ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ: ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ

مَسْجِدًا)). قَالَتْ : وَلَوْ لاَ ذَلِكَ لأَبْرَزُوا قَبْرَهُ، غَيْرَ أَنِّي أَخْشَى أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا.

[راجع: ٤٣٥]

डर इसका है कि कहीं आपकी क़ब्र भी मस्जिद न बनाली जाए।
(राजेअ : 430)

तश्रीह : या'नी ख़ुद क़ब्रों को पूजने लगे या क़ब्रों पर मस्जिद और गिर्जाघर बनाकर वहाँ अल्लाह की इबादत करने लगे तो बाब की मुताबक़त हासिल हो गई। इमाम इब्ने क़य्यिम ने कहा कि जो लोग क़ब्रों पर वक़्त मुअय्यन (निर्धारित) करके जमा होते हैं वो भी गोया क़ब्र को मस्जिद बनाते हैं। दूसरी हदीष़ में है मेरी क़ब्र को ईद न कर लेना या'नी ईद की तरह वहाँ मेले और मजमा न करना। जो लोग ऐसा करते हैं वो भी उन यहूदियों और नसरानियों की तरह हैं जिन पर आँहज़रत (ﷺ) ने लअनत की।

अफ़सोस! हमारे जमाने में क़ब्रपरस्ती ऐसी शाए हो रही है कि ये नाम के मुसलमान अल्लाह और रसूल से ज़रा भी नहीं शर्माते, क़ब्रों को इस क़दर पुख़्ता शानदार बनाते हैं कि उनकी इमारत को देखकर मसाजिद का शुब्हा होता है। हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) ने सख़्ती के साथ क़ब्रों पर ऐसी ता'मीरात के लिये मना किया है। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने अबू हियाज अस्दी को कहा था **अब्अषुक अ़ला मा बअष़नी अ़लैहि रसूलुल्लाहि (ﷺ) ला तदउतिम्षालन इल्ला तमस्तहू वला कब्रन मुश्रफ़न इल्ला सव्वैतहू रवाहुल्जमाअतु इल्लल्बुख़ारी वब्नु माजा** या'नी क्या मैं तुमकों उस ख़िदमत के लिये न भेजूँ जिसके लिये मुझे आँहज़रत (ﷺ) ने भेजा था। वो ये कि कोई मूरत ऐसी न छोड़ जिसे तू मिटा न दे और कोई ऊँची क़ब्र न रहे जिसे तू बराबर न कर दे।

इस हदीष़ से मा'लूम होता है क़ब्रों का हद से ज़्यादा ऊँचा करना भी शारेअ़ (ﷺ) को नापसंद है। अ़ल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, **फ़ीहि अन्नस्सुन्नत इन्नल्कब्र ला युर्फ़उ रफ़अन कष़ीरा मिन गैरि फर्क़िन बैन कान फ़ाज़िलन व मन कान गैर फ़ाज़िलिन वज़्ज़ाहिरू अन्न रफअल्कुबूरि ज़ियादतुन अलल्कद्रिल्माज़ूबि हरामुन** या'नी सुन्नत यही है कि क़ब्र को हद से ज़्यादा बुलन्द न बनाया जाए ख़्वाह वो किसी फ़ाज़िल, आलिम या सूफ़ी की हो या किसी ग़ैर फ़ाज़िल की और ज़ाहिर है कि शरई इजाज़त से ज़्यादा क़ब्रों को ऊँचा करना हराम है। आगे अ़ल्लामा फ़र्माते हैं,

व मिन रफ़इल्कुबूरि अद्दाखिलु तहतल्हदीषि दुख़ूलन औलियाउ अल्कुब्बु वल्मशाहिदुल्मअ़मूरतु अलल्कुबूरि व अयज़न हुव मिन इत्तिख़ाज़िल्कुबूरि मसाजिदु व कद लअनन्नबिय्यु (ﷺ) फ़ाइल ज़ालिक कमा सयाती व कम क़द सराअ़न तशईदि अब्नियतिल्कुबूरि व तहसीनिहा मिम्मफ़ासिदिन यब्की लहलइस्लामु मिन्हा इतिकादुल्जहलति लहा कइतिकादिल्कुफ़्फ़ारि लिल्अस्नामि व अ़ज़ुम ज़ालिक फज़न्नू अन्नहा क़ादिरतुन अ़ला जलबिल्मनाफ़िइ व दफ़इज़्ज़ररि फजअलूहा मक्सदत्तलबि क़ज़ाअल्हवाइजि व मल्जअलिनजाहिल्मतालिबि व सालू मिन्हा मा यस्अलुहूल्इबादु मिन रब्बिहिम व शद्दू इलयहरिहाल व तम्सहू बिहा वस्तगाषू व बिल्जुम्लति अन्नहुम लम यदऊ शयअम्मिम्मा कानतिल्ज़ाहिलिय्यतु तफ़्अलुहू बिलअस्नामि इल्ला फअलुहू फ़इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन व मअ हाजल्मुन्करिश्शनीइ वल्कुफ़्रिल्फ़जीइ ला नजिदु मंय्यगजबु लिल्लाहि व युगारू हमिय्यल लिद्दीनिल्हनीफ़ि ला आलिमन व ला मुतअ़ल्लिमन व ला अमीरन व ला वज़ीरन व ला मलिकन तुवारिदु इलैना मिनल्अख़्बारि मा ला यशुक्कु मअहू अन्न कष़ीरम्मिन हाउलाइल्मकबूरीन औ अक्षरूहुम इज़ा तवज्जहत अ़लैहि यमीनुन मिन जिहति खस्मिही हलफ़ बिल्लाहि फ़ाज़िरन व इज़ा कील लहू बअद ज़ालिक इलहफ़ बिशैखिफ़ व मुअतकदिकल्वलियल्फ़ुलानी तल्अषिमु व तल्कउ व अ बा वअतरफ बिल्हक़्क़ि व हाज़ा मिन अब्यनिल्अदिल्लतिद्दाल्लति अ़ला अन्न शिर्कहुम क़द बलग़ फौक शिर्किम्मन क़ाल अन्नहू तआला षानियष्नैनि औ षालिषु षलाषतिन फ या उलमाअद्दीनि व या मुलूकल्मुस्लिमीन अय्यु रजदूनलिल्इस्लामि अशद्दु मिनल्कुफ़्रि व अय्यु बलाइन लिहाज़द्दीनि अज़रू अ़लैहि मिन इबादिही गैरल्लाहि व अय्यु मुसीबतिन युसाबु बिहल्मुस्लिमून तअदिलु हाज़िहिल्मुसीबत व अय्यु मन्करिन इन्कारहू इन लम यकुन इन्कार हाज़शिर्किल्बय्यिन वाजिबन

लक़द अस्मअत लौ नादैत हय्यन — व ला किन ला हयात लिमन तुनादी
व लौ नारन नफ़ख़्त बिहा अजाअत — व ला किन अन्त तन्फ़ख़ु फ़िरिमादि

M-09825696131

बाब 64 : नमाज़े जनाज़ा में चार तक्बीरें कहना

٦٤- بَابُ التَّكْبِيرِ عَلَى الْجَنَازَةِ

और हुमैद त़वील ने बयान किया कि हमें ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने नमाज़ पढ़ाई तो तीन तक्बीरें कहीं फिर सलाम फेर दिया। इस पर उन्हें लोगों ने याददिहानी करवाई तो दोबारा क़िब्ला रुख़ होकर चौथी तक्बीर भी कही फिर सलाम फेरा।

أَرْبَعًا وَ قَالَ حُمَيْدٌ: صَلَّى بِنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَكَبَّرَ ثَلاَثًا ثُمَّ سَلَّمَ، فَقِيْلَ لَهُ: فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ، ثُمَّ كَبَّرَ الرَّابِعَةَ، ثُمَّ سَلَّمَ.

तश्रीह : अकष़र उ़लमा जैसे इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम अह़मद (रह.) और इस्हाक़ (रह.) और सुफ़यान ष़ौरी (रह.) और अबू ह़नीफ़ा (रह.) और इमाम मालिक (रह) का यही क़ौल है और सलफ़ का इसमें इख़्तिलाफ़ है। किसी ने पाँच तक्बीरें कहीं, किसी ने तीन, किसी ने सात। इमाम अह़मद (रह.) ने कहा कि चार से कम न हो और सात से ज़्यादा न हो। बैहक़ी ने रिवायत किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) के ज़माने में जनाज़ा पर लोग सात और छः और पाँच और चार तक्बीरें कहा करते थे। ह़ज़रत उ़मर ने चार पर लोगों का इत्तिफ़ाक़ करा दिया।

1333. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने, उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नज्जाशी का जिस दिन इन्तिक़ाल हुआ उसी दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनकी वफ़ात की ख़बर दी और आप (ﷺ) सह़ाबा के साथ ईदगाह गये। फिर आप (ﷺ) ने स़फ़बन्दी करवाई और चार तक्बीरें कहीं। (राजेअ : 1240)

١٣٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَعَى النَّجَاشِيَّ فِي الْيَومِ الَّذِي مَاتَ فِيْهِ، وَخَرَجَ بِهِمْ إِلَى الْمُصَلَّى فَصَفَّ بِهِمْ وَكَبَّرَ عَلَيْهِ أَرْبَعَ تَكْبِيْرَاتٍ)). [راجع: ١٢٤٥]

1334. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा कि हमसे सुलैम बिन ह़य्यान ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन मैनाअ ने बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अस्ह़मा नज्जाशी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई तो चार तक्बीरें कहीं। यज़ीद बिन हारून वास्ती और अ़ब्दुस्समद ने सुलैम से अस्ह़मा नाम नक़ल किया है और अ़ब्दुल वारिष़ ने इसकी मुताबअ़त की है।

(राजेअ : 1317)

١٣٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَلِيْمُ بْنُ حَيَّانَ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ مِيْنَاءَ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى عَلَى أَصْحَمَةَ النَّجَاشِيِّ فَكَبَّرَ أَرْبَعًا)). وَقَالَ يَزِيْدُ بْنُ هَارُونَ وَعَبْدُ الصَّمَدِ عَنْ سَلِيْمٍ ((أَصْحَمَةَ)).

[راجع: ١٣١٧]

नज्जाशी ह़ब्श के हर बादशाह का लक़ब हुआ करता था। जैसा कि मुल्क में बादशाहों के ख़ास लक़ब हुआ करते हैं शाहे ह़ब्श का अस़ल नाम अस्ह़मा था।

बाब 65 : नमाज़े जनाज़ा में सूरह फ़ातिहा पढ़ना (ज़रूरी है)

٦٥- بَابُ قِرَاءَةِ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ عَلَى الْجَنَازَةِ

وَقَالَ الْحَسَنُ: يَقْرَأُ عَلَى

और इमाम ह़सन बस़री (रह.) ने फ़र्माया कि बच्चे की नमाज़े जनाज़ा में पहले सूरह फ़ातिहा पढ़ी जाए, फिर ये दुआ पढ़ी जाए

M-09825696131

अल्लाहुम्मज्अल्हू लना फ़रतन व सलफ़न व अज्रन; ऐ अल्लाह! इस बच्चे को हमारा अमीरे सामान कर दे और आगे चलने वाला, ष़वाब देने वाला।

الطِّفْلِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَيَقُولُ: اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا سَلَفًا وَفَرَطًا وَأَجْرًا.

1335. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर (मुहम्मद बिन जा'फ़र) ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने और उनसे त़ल्हा ने कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की इक़्तिदा में नमाज़े (जनाज़ा) पढ़ी (दूसरी सनद) हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा कि हमें सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें सअ़द बिन इब्राहीम ने, उन्हें त़ल्हा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन औफ़ ने, उन्होंने बतलाया कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ी तो आपने सूरह फ़ातिहा (ज़रा पुकार कर) पढ़ी। फिर फ़र्माया कि तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि यही तरीक़-ए-नबवी है।

١٣٣٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدٍ، عَنْ طَلْحَةَ قَالَ: ((صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا)) وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَوفٍ: قَالَ ((صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَلَى جَنَازَةٍ فَقَرَأَ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ. قَالَ : لِيَعْلَمُوا أَنَّهَا سُنَّةٌ)).

तश्रीह: जनाज़े की नमाज़ में सूरह फ़ातिहा ऐसे ही वाजिब है जैसा कि दूसरी नमाज़ों में क्योंकि ह़दीष़ **ला स़लात लमल्लम यक़्रा बिफ़ातिहतिल किताब** हर नमाज़ को शामिल है। इसकी तफ़्सील ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब (रह.) के लफ़्ज़ों में ये है,

वल्हक़्क़ु वस़्स़वाबु अन्नकिरातल्फ़ातिहति फ़ी स़लातिल्जनाज़ति वाजिबतुन कमा जहब इलैहिश्शाफ़िई व अहमद व इस्हाक़ व गैरूहुम लिअन्नहुम अज्मऊ अ़ला अन्नहा स़लातुन व क़द ष़बत हदीष़ु ला स़लात इल्ला बिफ़ातिहतिल्किताबि फहिय दाख़िलतुन तहतल्उमूमि व इख़राजुहा मिन्हु यहताजु इला दलीलिन व लिअन्नहा सलातुन यजिबु फीहल्क़ियामु फवजबत फीहल्किरातु कसाइरिस़्सलवाति व लिअन्नहू वरदल्अम्रू बिकिरातिहा फक़द रवा इब्नु माजा बिइस्नादिन फीहि ज़ुअफ़ुन यसीरून अ़न उम्मि शरीकिन कालत अमरना रसूलुल्लाहि (ﷺ) अन नक़्रअ अ़ला मय्यितिना बिफ़ातिहतिल्किताबि व रवत्तबरानी फिल्कबीर मिन हदीष़ि उम्मि अ़फ़ीफ़िन क़ालत अमरना रसूलुल्लाहि (ﷺ) अन नक़्रअ अ़ला मय्यितिना बिफ़ातिहतिल्किताब कालल्हैष़मी व फीहि अ़ब्दुलमुन्इम अबू सईद व हुव जईफ़ुन इन्तिहा

वल्अम्रू मिन अदिल्लतिल्वुजूबि व रवत्तब्रानी फिल्कबीर ईज़ाउन मिन हदीष़ि अस्मा बिन्ति यज़ीद क़ालत क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ा सल्लैतुम अ़लल्जनाज़ति फक़्रऊ बिफ़ातिहतिल्किताब क़ालल्हैष़मी व फीहि मुअ़ला बिन हम्रान व लम अजिद मन जकरहू व बक़िय्यत रिजालिही मूष़कून व फ़ी बअ़ज़िहिम कलामु हाज़ा क़द सन्नफ़ हसन अश्शर्नब्लानी मिम्मुतअख़िखरिल्हनफिय्यति फी हाज़िहिल्यस्अलति रिसालतन इस्मुहा अन्नज्मुल्मुस्तताब लिहुक्मिल्किराति फ़ी स़लातिल्जनाज़ति उम्मुल्किताब व हक़्क़क़ फ़ीहा अन्नल्किरात औला मिन तर्किल्क़िरात व ला दलील अ़लल्कराहति व हुवल्लज़ी इख़्तारहुश्शैखु अ़ब्दुल्हय अल्लक्नवी फ़ी तस़ानीफ़िही लि उम्दतिर्रिआयति वत्तअ़लीक़िल्मुम्जिदि व इमामुल्कलामि षुम्म अन्नहू इस्तदल्ल बिहदीष़ि इब्नि अब्बास अलल्जहरि बिल्क़िराति फ़िस़्स़लाति अ़लल्जनाज़ति लिअन्नहू यदुल्लु अ़ला अन्हू जहर बिहा हत्ता समिअ ज़ालिक मन सल्ला मअ़हू व अस़्रहु मिन ज़ालिक मा जकर्नाहु मिन रिवायतिन्नसई बिलफ़्ज़ि सल्लैतु ख़ल्फ इब्नि अब्बास अ़ला जनाज़तिन फक़रअ बिफ़ातिहतिल्किताब व सूरतन व जहर हत्ता अस्मअन फलम्मा फरग अख़ज़्तु बियदिही फसअल्तुहू फ़क़ाल सुन्नतुन व हक़्क़ुन व फ़ी रिवायतिन उख़्रा लहू अयज़न सल्लैतु ख़ल्फ़ इब्नि अ़ब्बास अ़ला जनाज़ति फ़समिअ़तु यक़्रउ बिफ़ातिहतिल्किताब व यदुल्लु अ़लल्जहरि बिहुआइ हदीषु औफ़िब्नि मालिक अल्आती फइनज़्ज़ाहिर अन्नहू हफ़िज़दुआअल्मज़्कूर लम्मा जहर बिहिन्नबिय्य (ﷺ) फिस्सलाति अलल्जनाज़ति अस़्रहु मिन्हु हदीषु वाष़िला फिल्फस्लिष़्ष़ानी

रिवायाते बाला में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वग़ैरह ने जो ये फ़र्माया कि ये सुन्नत और ह़क़ है उसकी वज़ाह़त ह़ज़रत मौलाना शैख़ुल ह़दीष़ (रह.) ने यूँ फ़र्माई है,

वल्मुरादु बिस्सुन्नतित्तरीक़तिल्मालूफ़ति अन्हु (ﷺ) ला मा युक़ाबिलुल्फ़रीज़त फ़इन्नहू इस्तिलाहुन उर्फ़ियुन हादिषुन फ़क़ाल अल्अशरफ़ुज़्ज़मीरुल्मुअन्नषु लिकिरातिल्फ़ातिहति वलैसल्मुरादु बिसुन्नति इन्नहा लैसत बिवाजिबतिन बल मा युकाबिलुल्बिदअत अय इन्नहा तरीकतुन मर्बिय्यतुन व कालल्कस्तलानी अन्नहा अय किरातल्फ़ातिहति फ़िल्जनाजति सुन्नतुन अय तरीक़तुश्शारिइ फला युनाफ़ी कौनुह वाजिबतन व क़द उलिम अन्न कौलस्सहाबी मिनस्सुन्नति कज़ा हदीषुन मर्फ़ूउन इन्दल्अक्षरि क़ालश्शाफ़िइ फिल्उम्मि व अस्हाबुन्नबिय्यि (ﷺ) ला यकूलून अस्सुन्नतु रसूलिल्लाहि (ﷺ) इन्शाअल्लाहु इन्तिहा (मिर्आतुल मफ़ातीह, पेज 477)

या'नी यहाँ लफ़्ज़े सुन्नत से त़रीक़-ए-मालूफ़ा नबी करीम (ﷺ) मुराद है न वो सुन्नत जो फ़र्ज़ के मुक़ाबले पर होती है। ये एक उ़र्फ़ी इस्तिलाह़ इस्ते'माल की गई है ये मुराद नहीं कि ये वाजिब नहीं है बल्कि सुन्नत मुराद है जो बिदअ़त के मुक़ाबले पर बोली जाती है। या'नी ये त़रीक़ा मरविया है और क़स्त़लानी (रह) ने कहा कि जनाज़ा में सूरह फ़ातिह़ा पढ़नी सुन्नत है या'नी शारेअ़ का त़रीक़ा है और ये वाजिब होने की मनाफ़ी नहीं है। इमाम शाफ़िई (रह) ने किताबुल उम्म में फ़र्माया है कि सह़ाबा किराम (रिज़.) लफ़्ज़े सुन्नत का इस्ते'माल सुन्नत त़रीक़ा रसूलुल्लाह (ﷺ) पर करते थे। अक़्वाले स़ह़ाबा में ह़दीषे मर्फ़ूअ़ पर भी सुन्नत का लफ़्ज़ बोला गया। बहरह़ाल यहाँ सुन्नत से मुराद ये है कि सूरह फ़ातिह़ा नमाज़ में पढ़ना त़रीक़-ए-नबवी है और ये वाजिब है कि उसके पढ़े बग़ैर नमाज़ नहीं होती जैसा कि ऊपर वाली तफ़्सील में बयान किया गया है।

बाब 66 : मुर्दे को दफ़न करने के बाद क़ब्र पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना

٦٦- بَابُ الصَّلاَةِ عَلَى الْقَبْرِ بَعْدَ مَا يُدْفَنُ

1336. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान शैबानी ने बयान किया, कहा कि मैंने शुअ़बी से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझे उस स़ह़ाबी ने ख़बर दी जो नबी करीम (ﷺ) के साथ एक अलग-थलग क़ब्र से गुज़र रहे थे। क़ब्र पर आप (ﷺ) इमाम बने और स़ह़ाबा ने आपके पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। शैबानी ने कहा कि मैंने शुअ़बी से पूछा कि अबू अ़म्र! आप से किस स़ह़ाबी ने बयान किया था, तो उन्होंने बतलाया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने। (राजेअ़ : 875)

١٣٣٦- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ قَالَ: ((أَخْبَرَنِي مَنْ مَرَّ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى قَبْرٍ مَنْبُوذٍ فَأَمَّهُمْ وَصَلَّوا خَلْفَهُ. قُلْتُ: مَنْ حَدَّثَكَ هَذَا يَا أَبَا عَمْرٍو؟ قَالَ: ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا)). [راجع: ٨٥٧]

1337. हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने बयान किया, उनसे अबू राफ़ेअ़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि काले रंग का एक मर्द या काले रंग की एक औ़रत मस्जिद में ख़िदमत किया करती थी, उनकी वफ़ात हो गई। लेकिन नबी करीम (ﷺ) को किसी ने ख़बर नहीं दी। एक दिन आपने खुद याद फ़र्माया कि वो शख़्स दिखाई नहीं देता। स़ह़ाबा ने

١٣٣٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ أَسْوَدَ - رَجُلاً أَوْ امْرَأَةً - كَانَ يَقُمُّ الْمَسْجِدَ، فَمَاتَ، وَلَمْ يَعْلَمِ النَّبِيُّ ﷺ بِمَوْتِهِ، فَذَكَرَهُ ذَاتَ يَوْمٍ فَقَالَ عَلَيْهِ

M-09825696131

कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! उनका इन्तिक़ाल हो गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर तुमने मुझे ख़बर क्यों नहीं दी? सहाबा ने अर्ज़ किया कि ये वजह थी (इसलिये आपको तकलीफ़ नहीं दी गई) गोया लोगों ने उनको हक़ीर जानकर क़ाबिले तवज्जह नहीं समझा। लेकिन आपने फ़र्माया कि चलो मुझे उनकी क़ब्र बता दो। चुनाँचे आप उसकी क़ब्र पर तशरीफ़ लाए और उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। (राजेअ : 458)

السَّلَامُ وَالسَّلَامُ: مَا فَعَلَ ذَلِكَ الإِنْسَانُ؟ قَالُوا: مَاتَ يَا رَسُولَ اللهِ. قَالَ: ((أَفَلاَ آذَنْتُمُونِي؟)) فَقَالُوا : إِنَّهُ كَانَ كَذَا وَكَذَا - قِصَّتُهُ - قَالَ فَحَقَّرُوا شَأْنَهُ. قَالَ: ((فَدُلُّونِي عَلَى قَبْرِهِ)). فَأَتَى قَبْرَهُ فَصَلَّى عَلَيْهِ. [راجع: ٤٥٨]

तश्रीह : ये काला मर्द या काली औरत मस्जिदे नबवी की जारूबकश बड़े-बड़े बादशाहाने हफ़्ते अक़्लीम से अल्लाह के नज़दीक मर्तबे और दर्जे में ज़ाइद थी। हबीबुल्लाह (ﷺ) ने ढूँढ़कर उसकी क़ब्र पर नमाज़ पढ़ी। वाह रे क़िस्मत! आपकी कफ़श-बरदारी अगर हमको बहिश्त में नसीब हो जाए तो ऐसी दुनिया की लाखों सल्तनतें इस पर तस्दीक़ कर दें। (वहीदी)

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने उससे षाबित फ़र्माया कि अगर किसी मुसलमान मर्द या औरत का जनाज़ा न पढ़ा गया हो तो क़ब्र पर दफ़न करने के बाद भी पढ़ा जा सकता है। कुछ ने उसे नबी करीम (ﷺ) के साथ ख़ास कर दिया है मगर दा'वा बेदलील है।

बाब 68 : इस बयान में कि मुर्दा लौटकर जाने वालों के जूतों की आवाज़ सुनता है

٦٧- بَابُ الْمَيِّتُ يَسْمَعُ خَفْقَ النِّعَالِ

यहाँ से ये निकला कि क़ब्रिस्तान में जूते पहनकर जाना जाइज़ है। इब्ने मुनीर ने कहा कि इमाम बुख़ारी (रह) ने ये बाब इसलिये क़ायम किया कि दफ़न के आदाब का लिहाज़ रखें और शोरो-गुल और ज़मीन पर ज़ोर-ज़ोर से चलने से परहेज़ करें जैसे ज़िन्दा सोते आदमी के साथ करता है।

1338. हमसे अय्याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी ने कहा कि मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन ज़रिअ ने, उनसे सईद बिन अबी अरूबा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि आदमी जब क़ब्र में रखा जाता है और दफ़न करके उसके लोग-बाग पीठ मोड़कर रुख़सत होते हैं तो उनके जूतों की आवाज़ सुनता है। फिर दो फ़रिश्ते आते हैं, उसे उठाते हैं और पूछते हैं कि उस शख़्स (मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ) के मुता'ल्लिक़ तुम्हारा क्या एतिक़ाद है? वो जब जवाब देता है कि मैं गवाही देता हूँ कि वो अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। इस जवाब पर उससे कहा जाता है कि ये देख जहन्नम का अपना एक ठिकाना लेकिन अल्लाह तआला ने जन्नत में तेरे लिये एक मकान इसके बदले में बना दिया है। नबी करीम

١٣٣٨- حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ ح.. وَقَالَ لِي خَلِيْفَةُ: قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((الْعَبْدُ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ وَتُوُلِّيَ وَذَهَبَ أَصْحَابُهُ - حَتَّى إِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ - أَتَاهُ مَلَكَانِ فَأَقْعَدَاهُ، فَيَقُولاَنِ لَهُ : مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ مُحَمَّدٍ ﷺ؟ فَيَقُولُ: أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ. فَيُقَالُ: اُنْظُرْ إِلَى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ، أَبْدَلَكَ اللهُ بِهِ مَقْعَدًا مِنَ الْجَنَّةِ)). قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَيَرَاهُمَا

M-09825696131

हालत शुरू हो गई थी तो ये अबू तालिब की ख़ुसूसियत होगी जैसे आपकी दुआ से उसके अ़ज़ाब में तख़फ़ीफ़ हो जाएगी।

1360. हमसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा कि हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा कि मुझे मेरे बाप (इब्राहीम बिन सअ़द) ने स़ालेह बिन कैसान से ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्होंने बयान किया कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने अपने बाप (मुसय्यिब बिन ह़ज़्न रज़ि.) से ख़बर दी, उनके बाप ने उन्हें ख़बर दी कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके पास तशरीफ़ लाए। देखा तो उनके पास उस वक़्त अबू जहल बिन हिशाम और अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या बिन मुग़ीरह मौजूद थे। आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि चचा! आप एक कलिमा ला इलाह इल्लल्लाह (अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं) कह दीजिए ताकि मैं अल्लाह तआ़ला के यहाँ इस कलिमे की वजह से आपके हक़ में गवाही दे सकूँ। इस पर अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या वग़ैरह ने कहा अबू तालिब! क्या तुम अपने बाप अ़ब्दुल मुत्तलिब के दीन से फिर जाओगे? रसूलुल्लाह (ﷺ) बार-बार कलिम-ए-इस्लाम उन पर पेश करते रहे। अबू जहल और इब्ने अबी उमय्या भी अपनी बात दोहराते रहे। आख़िर अबू तालिब की आख़िरी बात ये थी कि वो अ़ब्दुल मुत्तलिब के दीन पर ही रहे। उन्होंने ला इलाह इल्लल्लाह कहने से इन्कार कर दिया फिर भी रसूलुल्लाह ने फ़र्माया कि मैं आपके लिये इस्तग़फ़ार करता रहूँगा। यहाँ तक कि मुझे मना न कर दिया जाए। इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयत व मा कान लिन्नबिय्यि नाज़िल फ़र्माई। (सूरह तौबा : 113)

(दीगर मक़ाम : 3884, 4670, 4882, 6681)

١٣٦٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ ((أَنَّهُ لَمَّا حَضَرَتْ أَبَا طَالِبٍ الْوَفَاةُ جَاءَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَوَجَدَ عِنْدَهُ أَبَا جَهْلِ بْنَ هِشَامٍ وَعَبْدَ اللهِ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ بْنِ الْمُغِيرَةِ، قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لأَبِي طَالِبٍ : ((يَا عَمِّ، قُلْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ كَلِمَةً أَشْهَدُ لَكَ بِهَا عِنْدَ اللهِ)). فَقَالَ أَبُوجَهْلٍ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أُمَيَّةَ : يَا أَبَا طَالِبٍ: أَتَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ؟ فَلَمْ يَزَلْ رَسُولُ اللهِ يَعْرِضُهَا عَلَيْهِ وَيَعُودَانِ بِتِلْكَ الْمَقَالَةِ حَتَّى قَالَ أَبُوطَالِبٍ آخِرَ مَا كَلَّمَهُمْ : هُوَ عَلَى مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، وَأَبَى أَنْ يَقُولَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَمَا وَاللهِ لأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ مَا لَمْ أُنْهَ عَنْكَ)) فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى فِيهِ: ﴿ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ ﴾ الآيَةَ.

[أطرافه في: ٣٨٨٤، ٤٦٧٥، ٤٧٧٢، ٦٦٨١].

तशरीह : जिसमें कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन के लिये इस्तिग़फ़ार की मुमानअ़त कर दी गई थी। अबू तालिब के आँहज़रत (ﷺ) पर बड़े एहसानात थे। उन्होंने अपने बच्चों से ज़्यादा आँहज़रत (ﷺ) को पाला और परवरिश की और काफ़िरों की ईज़ादेही से आपको बचाते रहे। इसलिये मुहब्बत की वजह से आपने ये फ़र्माया कि ख़ैर में तुम्हारे लिये दुआ करता रहूँगा और आपने उनके लिये दुआ शुरू की। जब सूरह तौबा की आयत **व मा लिन्नबिय्यि** नाज़िल हुई कि पैग़म्बर और ईमानवालों को चाहिये कि मुश्रिकों के लिये दुआ न करें, उस वक़्त आप रुक गए। हदीष़ से ये निकला कि मरते वक़्त भी अगर मुश्रिक शिर्क से तौबा कर ले तो उसका ईमान सही होगा। बाब का यही मतलब है। मगर ये तौबा सकरात से पहले होनी चाहिये। सकरात की तौबा कुबूल नहीं जैसा कि कुर्आनी आयत **फ़लम यकु यन्फ़उहुम ईमानुहुम लम्मा रऔ बासना** (ग़ाफ़िर : 85) में मज़्कूर है।

قَالَ أَبُوعَبْدِ اللهِ الْهُوْنُ: هُوَ الْهَوَانُ. وَالْهَوْنُ الرِّفْقُ.

इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि लफ़्ज़ हून क़ुर्आन में हवान के मा'नी में है। या'नी ज़िल्लत और रुस्वाई और हून का मा'नी नर्मी और मलामत है।

وَقَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿سَنُعَذِّبُهُمْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَى عَذَابٍ عَظِيمٍ﴾ [التوبة: ۱۰۱]. وَقَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ، النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا، وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ﴾ [غافر: ٤٥].

और अल्लाह ने सूरह तौबा में फ़र्माया कि मैं इनको दो बार अ़ज़ाब दूंगा (या'नी दुनिया में और क़ब्र में) फिर बड़े अ़जाब में लौटाए जाएंगे। और सूरह मोमिन में फ़र्माया फ़िऔन वालों को बुरे अ़ज़ाब ने घेर लिया, सुबह-शाम आग के सामने लाए जाते हैं और क़यामत के दिन तो फ़िऔन वालों के लिये कहा जाएगा कि इनको सख़्त अ़ज़ाब में ले जाओ। (ग़ाफ़िर : 45)

इमाम बुख़ारी (रह) ने इन आयतों से क़ब्र का अ़ज़ाब षाबित किया है। उसके सिवा और आयतें भी हैं। आयत युषब्बितुल्लाहुल्लज़ीन आमनू बिल क़ौलिष्षाबित (इब्राहीम: 27) आख़िर तक। ये बिल इत्तिफ़ाक़ सवाले क़ब्र के बारे में नाज़िल हुई है। जैसा कि आगे मज़्कूर है।

١٣٦٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أُقْعِدَ الْمُؤْمِنُ فِي قَبْرِهِ أُتِيَ ثُمَّ شَهِدَ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ، فَذَلِكَ قَوْلُهُ: ﴿يُثَبِّتُ اللهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ﴾)).

1369. हमसे हफ़्स बिन उ़मर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने, उनसे अ़लक़मा बिन मर्षद ने, उनसे सअ़द बिन उ़बैदा ने और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मोमिन जब अपनी क़ब्र में बैठाया जाता है तो उसके पास फ़रिश्ते आते हैं। वो शहादत देता है कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं। तो ये अल्लाह के फ़र्मान की ताबीर है जो सूरह इब्राहीम में है कि अल्लाह ईमान वालों को दुनिया की ज़िन्दगी और आख़िरत में ठीक बात या'नी तौहीद पर मज़बूत रखता है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ بِهَذَا، وَزَادَ: ﴿يُثَبِّتُ اللهُ الَّذِينَ آمَنُوا﴾ نَزَلَتْ فِي عَذَابِ الْقَبْرِ. [طرفه في: ٤٦٩٩].

हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने कहा कि हमसे शुअ़बा ने यही ह़दीष़ बयान की। उनसे रिवायत में ये ज़्यादती भी है कि आयत व युषब्बितुल्लाहुल्लज़ीन आमनू अल्लाह मोमिनों को षाबितक़दमी बख़्शता है। अ़ज़ाबे-क़ब्र के बारे में नाज़िल हुई है।

١٣٧٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ صَالِحٍ قَالَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ قَالَ: ((اطَّلَعَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى أَهْلِ الْقَلِيبِ فَقَالَ: وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا)). فَقِيلَ لَهُ:

1370. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे स़ालेह ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने कि इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) कुएँ (जिसमें बद्र के मुश्रिक मक़्तूलीन को डाल दिया गया था) वालों के क़रीब आए और फ़र्माया तुम्हारे मालिक ने जो तुमसे सच्चा वा'दा किया था उसे तुम लोगों ने पा लिया। लोगों ने अ़र्ज़ किया कि आप मुर्दों को

أتدعو أمواتا؟ فقال: ((ما أنتم بأسمع منهم، ولكن لا يجيبون)).

[طرفه في : ٣٩٨٠، ٤٠٢٦].

ख़िताब करते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम कुछ उनसे ज़्यादा सुनने वाले नहीं हो, बल्कि वो जवाब नहीं दे सकते।

(दीगर मक़ाम : 3980, 4026)

١٣٧١ - حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا سفيان عن هشام بن عروة عن أبيه عن عائشة رضي الله عنها قالت: ((إنما قال النبي ﷺ: إنهم ليعلمون الآن أن ما كنت أقول حق، وقد قال الله تعالى: ﴿فإنك لا تسمع الموتى﴾)).

[طرفاه في : ٣٩٧٩، ٣٩٨١].

1371. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बद्र के काफ़िरों को ये फ़र्माया था कि मैं जो उनसे कहा करता था अब उनको मा'लूम हुआ होगा कि वो सच्चे हैं। और अल्लाह ने सूरह रूम में फ़र्माया, ऐ पैग़म्बर! तू मुर्दों को नहीं सुना सकता।

(दीगर मक़ाम : 3979, 3981)

١٣٧٢ - حدثنا عبدان قال أخبرني أبي عن شعبة قال سمعت الأشعث عن أبيه عن مسروق عن عائشة رضي الله عنها ((أن يهودية دخلت عليها فذكرت عذاب القبر فقالت لها: أعاذك الله من عذاب القبر. فسألت عائشة رسول الله ﷺ عن عذاب القبر فقال: نعم، عذاب القبر. قالت عائشة رضي الله عنها : فما رأيت رسول الله ﷺ بعد صلى صلاة إلا تعوذ من عذاب القبر)). زاد غندر: ((عذاب القبر حق)).

1372. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा मुझको मेरे बाप (उ़श्मान) ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्होंने अश्अ़ष से सुना, उन्होंने अपने वालिद अबू अश्अ़शा से, उन्होंने मस्रूक़ से और उन्होंने आ़इशा (रज़ि.) से कि एक यहूदी औ़रत उनके पास आई। उसने अ़ज़ाबे-क़ब्र का ज़िक्र छेड़ दिया और कहा कि अल्लाह तुझको अ़ज़ाबे-क़ब्र से महफ़ूज़ रखे। इस पर आ़इशा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अ़ज़ाबे-क़ब्र के बारे में दरयाफ़्त किया। आप (ﷺ) ने इसका जवाब ये दिया कि हाँ! अ़ज़ाबे-क़ब्र बरहक़ है। आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने कभी ऐसा नहीं देखा कि आपने कोई नमाज़ पढ़ी हो और उसमें अ़ज़ाबे-क़ब्र से अल्लाह की पनाह न माँगी हो। ग़ुन्दर ने अ़ज़ाबे क़ब्र बरहक़ के अल्फ़ाज़ ज़्यादा किये।

١٣٧٣ - حدثنا يحيى بن سليمان قال حدثنا ابن وهب قال : أخبرني يونس عن ابن شهاب قال: أخبرني عروة بن الزبير أنه سمع أسماء بنت أبي بكر رضي الله عنهما تقول: ((قام رسول الله ﷺ خطيبا فذكر فتنة القبر التي يفتتن فيها المرء.

1373. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वुहैब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे यूनुस ने इब्ने शिहाब से ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी, उन्होंने अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ुत्बे के लिये खड़े हुए तो आप (ﷺ) ने क़ब्र के इम्तिहान का ज़िक्र किया जहाँ इन्सान जाँचा जाता है। जब हुज़ूरे-अकरम (ﷺ) उसका ज़िक्र कर रहे थे तो मुसलमाना

की हिचकियाँ बँध गई।

(राजेअ : 86)

1374. हमसे अ़याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल आ़ला ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि आदमी जब अपनी क़ब्र में रखा जाता है और जनाज़े में शरीक होने वाले लोग उससे रुख़सत होते हैं तो अभी वो उनके जूतों की आवाज़ सुनता होता है कि दो फ़रिश्ते (मुन्कर नकीर) उसके पास आते हैं, वो उसे बैठाकर पूछते हैं कि उस शख़्स या'नी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (ﷺ) के बारे में तू क्या ए'तिक़ाद रखता था? मोमिन तो ये कहेगा कि मैं गवाही देता हूँ कि आप (ﷺ) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। उससे कहा जाएगा कि तू ये देख अपना जहन्नम का ठिकाना लेकिन अल्लाह तआ़ला ने इसके बदले में तुम्हारे लिये जन्नत में ठिकाना दे दिया। उस वक़्त उसे जहन्नम और जन्नत दोनों ठिकाने दिखाए जाएँगे। क़तादा ने बयान किया कि उसकी क़ब्र ख़ूब कुशादा कर दी जाएगी (जिससे आराम व राहत मिले)। फ़िर क़तादा ने अनस (रज़ि.) की ह़दीष़ बयान करनी शुरू की, फ़र्माया और मुनाफ़िक़ व काफ़िर से जब कहा जाएगा कि उस शख़्स के बारे में तू क्या कहता था तो वो जवाब देगा कि मुझे कुछ मा'लूम नहीं, मैं भी वही कहता था जो दूसरे लोग कहते थे। फिर उससे कहा जाएगा कि न तूने जानने की कोशिश की और न समझने वालों की राय पर चला। फिर उसे लोहे की गरज़ों से बड़ी ज़ोर से मारा जाएगा कि वो चीख पड़ेगा और उसकी चीख को जिन्न और इन्सानों के सिवा इसके आसपास की तमाम मख़्लूक़ सुनेगी।

(राजेअ : 1338)

बाब 87 : क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह माँगना

1375. हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, कहा हमसे शुअबा ने, कहा कि मुझसे औन बिन अबी जुहैफ़ा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद अबू जुहैफ़ा ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब ने और उनसे

فَلَمَّا ذَكَرَ ذَلِكَ ضَجَّ الْمُسْلِمُونَ ضَجَّةً)). [راجع: ٨٦]

١٣٧٤- حَدَّثَنَا عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ حَدَّثَهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ وَتَوَلَّى عَنْهُ أَصْحَابُهُ- وَإِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ - أَتَاهُ مَلَكَانِ فَيُقْعِدَانِهِ فَيَقُولاَنِ: مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ؟ لِمُحَمَّدٍ ﷺ. فَأَمَّا الْمُؤْمِنُ فَيَقُولُ أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ. فَيُقَالُ لَهُ: أُنْظُرْ إِلَى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ، قَدْ أَبْدَلَكَ اللهُ بِهِ مَقْعَدًا مِنَ الْجَنَّةِ، فَيَرَاهُمَا جَمِيعًا)) قَالَ قَتَادَةُ: ((وَذُكِرَ لَنَا أَنَّهُ يُفْسَحُ فِي قَبْرِهِ)). ثُمَّ رَجَعَ إِلَى حَدِيثِ أَنَسٍ قَالَ: ((وَأَمَّا الْمُنَافِقُ وَالْكَافِرُ فَيُقَالُ لَهُ: مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ؟ فَيَقُولُ: لاَ أَدْرِي، كُنْتُ أَقُولُ مَا يَقُولُهُ النَّاسُ. فَيُقَالُ: لاَ دَرَيْتَ وَلاَ تَلَيْتَ. وَيُضْرَبُ بِمَطَارِقَ مِنْ حَدِيدٍ ضَرْبَةً، فَيَصِيحُ صَيْحَةً يَسْمَعُهَا مَنْ يَلِيهِ غَيْرَ الثَّقَلَيْنِ)). [راجع: ١٣٣٨]

٨٧- بَابُ التَّعَوُّذِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

١٣٧٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَوْنُ بْنُ أَبِي جُحَيْفَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ الْبَرَاءِ

है, इसलिये कि उसका ख़ास् एहतिमाम है और इसलिये कि अकष़र त़ौर पर गुनाहगारों और जुम्ला काफ़िरों के लिये अ़ज़ाब ही मुक़द्दर है।

M-09825696131

मैं कहता हूँ कि ह़ासिल ये है कि बरज़ख़ उस आ़लम का नाम है जिसमें दुनिया से इंसान ज़िन्दगी मुन्क़त़अ करके इब्तिदाए दारे आख़िरत में पहुँच जाता है। पस दुनियावी ज़िन्दगी के इन्क़िताअ के बाद वो पहला जज़ा और सज़ा का घर है फिर क़यामत के दिन हर नफ़्स को उसका पूरा-पूरा बदला जन्नत या जहन्नम की शक्ल में दिया जाएगा और बरज़ख़ के अ़ज़ाब व ष़वाब को क़ब्र की त़रफ़ इसलिये मन्सूब किया गया है कि इंसान उसी के अंदर दाख़िल होता है और इसलिये भी कि ज़्यादातर मरने वाले क़ब्र ही में दाख़िल किये जाते हैं वरना काफ़िर और गुनाहगार जिनको अल्लाह अजाब करना चाहे इस सूरत में भी वो अ़ज़ाब कर सकता है कि वो दफ़न न किये जाएँ। ये अ़ज़ाब मख़्लूक़ से पर्दा में होता है। (इल्ला मनशाअल्लाह)

और ये भी कहा गया है कि ज़रूरत नहीं है क्योंकि क़ब्र उसी जगह का नाम है जहाँ मय्यत का ज़मीन में मकान बने और इसमें कोई शक नहीं कि मरने के बाद इंसान का आख़िरी मकान ज़मीन ही है। जैसा कि क़ुर्आन मजीद में है कि हमने तुम्हारे लिये ज़मीन को ज़िन्दगी और मौत हर ह़ाल में ठिकाना बनाया है। वो ज़िन्दा और मुर्दा सबको जमा करती है और सबको शामिल है पस मय्यत डूबने वाले की हो या जलने वाले की या हैवानों के पेट में जाने वाले की ख़्वाह ज़मीन के भेड़ियों के पेट में जाए या हवा में परिन्दों के पेट में या दरिया में मछलियों के पेट में, सबका नतीजा मिट्टी में मिलना है और जान लो कि किताब व सुन्नत के ज़ाहिर दलाइल की बिना पर अ़ज़ाबे क़ब्र बरह़क़ है जिस पर तमाम अहले इस्लाम का इज्माअ है और इस बारे में इस क़दर तवातुर के साथ अह़ादीष़ मरवी हैं कि अगर उनको भी सह़ीह़ न तस्लीम करें तो दीन का फिर कोई भी अम्र स़ह़ीह़ नहीं क़रार दिया जा सकता। मज़ीद तफ़्सील के लिये **किताबुर्रुह़** अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम का मुत़ालआ कीजिए।

बाब 88 : ग़ीबत और पेशाब की आलूदगी से क़ब्र का अ़ज़ाब होना

٨٨- بَابُ عَذَابِ الْقَبْرِ مِنَ الْغِيبَةِ وَالْبَوْلِ

1378. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे ताऊस ने कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का गुज़र दो क़ब्रों पर हुआ। आपने फ़र्माया कि उन दोनों के मुर्दों पर अ़ज़ाब हो रहा है और ये भी नहीं कि किसी बड़ी अहम बात पर हो रहा है। फिर आप ने फ़र्माया कि हाँ! उनमें एक शख़्स़ तो चुग़लख़ोरी किया करता था और दूसरा पेशाब से बचने के लिये एह़तियात़ नहीं करता था। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आप (ﷺ) ने एक हरी टहनी ली और उसके दो टुकड़े करके दोनों क़ब्रों पर गाड़ दिया और फ़र्माया कि शायद जब तक ये ख़ुश्क न हों इन पर अ़ज़ाब कम हो जाए। (राजेअ : 216)

١٣٧٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى قَبْرَيْنِ فَقَالَ: ((إِنَّهُمَا لَيُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيْرٍ. ثُمَّ قَالَ: بَلَى، أَمَّا أَحَدُهُمَا فَكَانَ يَسْعَى بِالنَّمِيْمَةِ، وَأَمَّا الآخَرُ فَكَانَ لاَ يَسْتَتِرُ مِنْ بَوْلِهِ)). قَالَ: ((ثُمَّ أَخَذَ عُوْدًا رَطْبًا فَكَسَرَهُ بِاثْنَتَيْنِ، ثُمَّ غَرَزَ كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا عَلَى قَبْرٍ ثُمَّ قَالَ: لَعَلَّهُ يُخَفَّفُ عَنْهُمَا، مَا لَمْ يَيْبَسَا)).

[راجع: ٢١٦]

तश्रीह : हाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह) फ़र्माते हैं , क़ालज़्ज़ीनुब्नुल्मुनीर अल्मुरादु बितख़सीसि हाज़ैनिल्अम्रैनि बिज़िज़्क्रि तअज़ीमु अम्रिहिमा ला नफ़्युल्हुक्मि अम्मा अ़दाहुमा फ़अला हाज़ा ला यल्ज़िमु मिन ज़िक्रिहिमा ह़स्रू अ़ज़ाबिक़ब्रि फीहिमा लाकिन्नज़्ज़ाहिर मिनल्इक्तिसारि अ़ला ज़िक्रिहिमा अन्नहुमा अम्कन फ़ी ज़ालिक मिन गैरिहिमा व कद रवा अस्ह़ाबुस्सुनिन मिन हदीषि अबी हुरैरत इस्तन्जहू मिनल्बौलि

तरोताज़गी नसीब फ़र्मा और क़यामत के दिन जन्नत में दाख़िल फ़र्माइयो और दोज़ख़ से हम सबको महफ़ूज़ रखियो। आमीन!

बाब 90 : मय्यित का चारपाई पर बात करना

٩٠- بَابُ كَلَامِ الْمَيِّتِ عَلَى الْجَنَازَةِ

1380. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि रसूले-करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब जनाज़ा तैयार हो जाता है, फिर मर्द उसको अपनी गर्दनों पर उठा लेते हैं तो अगर वो मुर्दा नेक हो तो कहता है कि हाँ आगे ले चलो, मुझे बढ़ाए चलो और अगर नेक नहीं होता तो कहता है, हाय रे ख़राबी! मेरा जनाज़ा कहाँ ले जा रहे हो। इस आवाज़ को इन्सान के सिवा तमाम मख़लूक़ सुनती है। अगर कहीं इन्सान सुन पाए तो बेहोश हो जाएँ।

(राजेअ़ : 1314)

١٣٨٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي سَعِيْدٍ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيْدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا وُضِعَتِ الْجَنَازَةُ فَاحْتَمَلَهَا الرِّجَالُ عَلَى أَعْنَاقِهِمْ، فَإِنْ كَانَتْ صَالِحَةً قَالَتْ: قَدِّمُوْنِي، قَدِّمُوْنِي. وَإِنْ كَانَتْ غَيْرَ صَالِحَةٍ قَالَتْ: يَا وَيْلَهَا، أَيْنَ تَذْهَبُوْنَ بِهَا؟ يَسْمَعُ صَوْتَهَا كُلُّ شَيْءٍ إِلاَّ الإِنْسَانَ، وَلَوْ سَمِعَهَا الإِنْسَانُ لَصَعِقَ)). [راجع: ١٣١٤]

तश्रीह : जनाज़ा उठाए जाते वक़्त अल्लाह पाक बरज़ख़ी ज़ुबान मय्यत को अ़ता कर देता है। जिसमें वो अगर जन्नती है तो जन्नत के शौक़ में कहता है कि मुझको जल्दी-जल्दी ले चलो ताकि जल्द अपनी मुराद को ह़ासिल करूँ और अगर वो जहन्नमी है तो वो घबराकर कहता है कि हाय मुझे कहाँ लिये जा रहे हो। उस वक़्त अल्लाह पाक उनको इस त़ौर पर मख़्फ़ी (पोशीदा, गुप्त) त़रीक़े से बोलने की त़ाक़त देता है और उस आवाज़ को इंसान और जिन्न के अ़लावा तमाम मख़्लूक़ात सुनती है।

इस ह़दीष़ से सिमाअ़े-मौता पर कुछ लोगों ने दलील पकड़ी है जो बिल्कुल ग़लत़ है। क़ुर्आन मजीद में स़ाफ़ सिमाअ़े मौता की नफ़ी मौजूद है। **इन्नक ला तुस्मिउल मौता** (अन् नम्ल : 80) अगर मरनेवाले हमारी आवाज़ें सुन पाते तो उनको मय्यत ही न कहा जाता। इसीलिये तमाम अइम्म-ए-हुदा ने सिमाअ़े मौता का इंकार किया है। जो लोग सिमाअ़े मौता के क़ायल हैं उनके दलाइल बिल्कुल बेवज़न हैं । दूसरे मक़ाम पर उसका तफ़्सीली बयान होगा।

बाब 91 : मुसलमानों की नाबालिग़ औलाद कहाँ रहेगी?

٩١- بَابُ مَا قِيْلَ فِي أَوْلاَدِ الْمُسْلِمِيْنَ

और ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि जिस के तीन नाबालिग़ बच्चे मर जाएँ तो ये बच्चे उसके लिये दोज़ख़ से रोक बन जाएँगे या ये कहा कि वो जन्नत में दाख़िल होगा।

قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ مَاتَ لَهُ ثَلاَثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ لَمْ يَبْلُغُوا الْحِنْثَ كَانَ لَهُ حِجَابًا مِنَ النَّارِ أَوْ دَخَلَ الْجَنَّةَ)).

उसमें कोई क़बाहत नहीं है।

आपके अख़्लाक़े हस्ना में से है कि आप बीमारी के दिनों में दूसरी बीवियों से हज़रत आइशा (रज़ि.) के घर में जाने के लिये मअज़रत फ़र्माते रहे। यहाँ तक कि तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात ने आपको हुज्र-ए-आइशा (रज़ि.) के लिये इजाज़त दे दी और आख़िरी वक़्त में आपने वहीं बसर किये। इससे हज़रत आइशा (रज़ि.) की भी कमाले फ़ज़ीलत षाबित होती है। तुफ़ (अफ़सोस) है उन नामो–निहाद मुसलमानों पर जो हज़रत आइशा (रज़ि.) जैसी माय-ए-नाज़ इस्लामी ख़ातून की फ़ज़ीलत का इंकार करते हैं। अल्लाह तआला उनको हिदायत अ़ता करे।

1390. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन हुमैद ने, उनसे उ़र्वा और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने उस मर्ज़ के मौक़े पर फ़र्माया था, जिससे आप जाँबर (तंदुरुस्त) न हो सके थे कि अल्लाह तआला की यहूदो-नसारा पर ला'नत हो, उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया। अगर ये डर न होता तो आपकी क़ब्र खुली रहने दी जाती। लेकिन डर इसका है कि कहीं उसे भी लोग सज्दागाह न बना लें। और हिलाल से रिवायत है कि उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने मेरी कुन्नियत (अबू अ़वाना या अ़वाना के वालिद) रख दी थी, वर्ना मेरी कोई औलाद न थी। (राजेअ : 435)

١٣٩٠ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ هِلاَلٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي مَرَضِهِ الَّذِي لَمْ يَقُمْ مِنْهُ: ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ)). لَوْ لاَ ذَلِكَ أُبْرِزَ قَبْرُهُ، غَيْرَ أَنَّهُ خَشِيَ - أَوْ خُشِيَ - أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا)). وَعَنْ هِلاَلٍ قَالَ: كَنَّانِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ وَلَمْ يُولَدْ لِي. [راجع: ٤٣٥]

हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा कि हमें अबूबक्र बिन अयास ने ख़बर दी, उनसे सुफ़यान तम्मार ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की क़ब्रे-मुबारक देखी जो कोहान-नुमा थी

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُوبَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ عَنْ سُفْيَانَ التَّمَّارِ أَنَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ رَأَى قَبْرَ النَّبِيِّ ﷺ مُسَنَّمًا.

हमसे फ़र्वा बिन अबी मुग़ीरा ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने कि वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान के अहदे हुकूमत में (जब नबी करीम ﷺ के हुज्रे मुबारक की) दीवार गिरी और लोग उसे (ज़्यादा ऊँची) उठाने लगे तो वहाँ एक क़दम ज़ाहिर हुआ। लोग ये समझकर घबरा गये कि ये नबी करीम (ﷺ) का क़दम मुबारक है। कोई शख़्स ऐसा नहीं था जो क़दम को पहचान सकता। आख़िर उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बताया कि नहीं अल्लाह गवाह है ये रसूलुल्लाह का क़दम नहीं बल्कि ये तो उ़मर (रज़ि.) का क़दम है।

حَدَّثَنَا فَرْوَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَلِيٌّ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ لَمَّا سَقَطَ عَلَيْهِمُ الْحَائِطُ فِي زَمَانِ الْوَلِيدِ بْنِ عَبْدِ الْمَلِكِ أَخَذُوا فِي بِنَائِهِ، فَبَدَتْ لَهُمْ قَدَمٌ، فَفَزِعُوا وَظَنُّوا أَنَّهَا قَدَمُ النَّبِيِّ ﷺ، فَمَا وَجَدُوا أَحَدًا يَعْلَمُ ذَلِكَ حَتَّى قَالَ لَهُمْ عُرْوَةُ: لاَ وَاللهِ، مَا هِيَ قَدَمُ النَّبِيِّ ﷺ، مَا هِيَ إِلاَّ قَدَمُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ.

रिवायत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल क़ुद्दूस ने आ'मश और मुहम्मद बिन अनस ने भी आ'मश से की है।

(दीगर मक़ाम : 5616)

شُعْبَةُ وَ رَوَاهُ عَبْدُ اللهِ بْنِ عَبْدِالْقُدُّوسِ عَنِ الأَعْمَشِ وَ مُحَمَّدُ بْنُ أَنَسٍ عَنِ الأَعْمَشِ. [طرفه في: ٥٦١٦].

या'नी मुसलमान जो मर जाएँ उनका मरने के बाद ऐ़ब न बयान करना चाहिये। अब उनको बुरा कहना उनके अ़ज़ीज़ों को ईज़ा (तकलीफ़) देना है।

बाब 98 : बुरे मुर्दों की बुराई बयान करना दुरुस्त है

٩٨- بَابُ ذِكْرِ شِرَارِ الْمَوْتَى

1394. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया आ'मश से, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़म्र बिन मुर्रह ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने, और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू लहब ने नबी करीम (ﷺ) से कहा कि सारे दिन तुझ पर बर्बादी हो। इस पर ये आयत उतरी (तब्बत यदा अबी लहबिंव व तब्ब) या'नी टूट गये हाथ अबू लहब के और वो खुद ही बर्बाद हो गया।

(दीगर मक़ाम : 3525, 3526, 4770, 4801, 4971, 4972, 4973)

١٣٩٤- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ أَبُولَهَبٍ عَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ لِلنَّبِيِّ ﷺ: تَبًّا لَكَ سَائِرَ الْيَوْمِ، فَنَزَلَتْ: ﴿تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ﴾.

[أطرافه في: ٣٥٢٥، ٣٥٢٦، ٤٧٧٠، ٤٨٠١، ٤٩٧١، ٤٩٧٢، ٤٩٧٣].

तश्रीह : जब ये आयत उतरी **वन्ज़िर अशीरतकबल अकरबीन** (अश्शुअ़रा : 214) या'नी अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ तो आप कोहे स़फ़ा पर चढ़े और क़ुरैश के लोगों को पुकारा, वो सब इकट्ठे हुए। फिर आपने उनको अल्लाह के अ़ज़ाब से डराया तब अबू लहब मर्दूद कहने लगा तेरी ख़राबी हो सारे दिन क्या तूने हमको उसी बात के लिये इकट्ठा किया था? उस वक़्त ये सूरत उतरी **तब्बत यदा अबी लहबिंव् व तब्ब** या'नी अबू लहब ही के दोनों हाथ टूटे और वो हलाक हुआ। मा'लूम हुआ कि बुरे लोगों काफ़िरों, मुल्ह़िदों को उनके बुरे कामों के साथ याद करना दुरुस्त है। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह.) फ़र्माते हैं :

अय वस़लू इला मा अमिलु मिन खैरिन व शर्रिन वशतद्द बिही अ़ला मनइ सबबिल्अम्वाति मुतलकन व क़द तकद्दम अन्न उमूमहू मख़सूसुन व असह्हु मा क़ील फ़ी ज़ालिक अन्न अम्वातल्कु फ़्फ़ारि वल्फुस्साक़ियजूज़ु ज़िक्रू मसावीहिम लित्तहज़ीरि मिन्हुम वत्तन्फ़ीरि अ़न्हुम व क़द अज्मअ़ल उलमाउ अ़ला जवाज़ि जर्हिल्मज्रूहीन मिनरूवाति अहयाअन व अम्वातन. या'नी उन्होंने जो कुछ बुराई भलाई की वो सब कुछ उनके सामने आ गया। अब उनकी बुराई करना बेकार है और उससे दलील पकड़ी गई है कि मर चुके लोगों को बुराइयों से याद करना मुत्लक़न मना है और पीछे गुज़र चुका है कि उसका उ़मूमन मख़्सूस है और इस बारे में स़हीह़तरीन ख़्याल ये है कि मरे हुए काफ़िरों और फ़ासिक़ों की बुराइयों का ज़िक्र करना जाइज़ है। ताकि उनके जैसे बुरे कामों से नफ़रत पैदा हो और उ़लमा ने इज्माअ़ किया है कि राविय़ाने ह़दीष़ ज़िन्दों मुर्दों पर जरह़ करना जाइज़ है।

M-09825696131

1562. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुल अस्वद मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन नौफ़िल ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम ह़ज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चले। कुछ लोगों ने उ़म्रह का एह़राम बाँधा था, कुछ ने ह़ज्ज और उ़म्रह दोनों का और कुछ ने सिर्फ़ ह़ज्ज का। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (पहले) सिर्फ़ ह़ज्ज का एह़राम बाँधा था, फिर आपने उ़म्रह भी शरीक कर लिया, फिर जिन लोगों ने ह़ज्ज का एह़राम बाँधा था या ह़ज्ज या उ़म्रह दोनों का, उनका एह़राम दसवीं तारीख़ तक न खुल सका।

(राजेअ़ 294)

١٥٦٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوْفَلٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ، فَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِعُمْرَةٍ، وَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِحَجَّةٍ وَعُمْرَةٍ: وَمِنَّا مِنْ أَهَلَّ بِالْحَجِّ، وَأَهَلَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْحَجِّ. فَأَمَّا مَنْ أَهَلَّ بِالْحَجِّ أَوْ جَمَعَ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةِ لَمْ يَحِلُّوا حَتَّى كَانَ يَوْمُ النَّحْرِ)). [راجع: ٢٩٤]

1563. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने, उनसे अ़ली बिन ह़ुसैन (ह़ज़रत ज़ैनुल आ़बेदीन) ने और उनसे मरवान बिन ह़कम ने बयान किया कि ह़ज़रत उ़ष्मान और अ़ली (रज़ि.) को मैंने देखा है। उ़ष्मान (रज़ि.) ह़ज्ज और उ़म्रह को एक साथ करने से रोकते थे लेकिन ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने उसके वाबजूद दोनों का एक साथ एह़राम बाँधा और कहा लब्बैक बिउ़म्रतिन व ह़ज्जतिन आपने फ़र्माया था कि मैं किसी एक शख़्स की बात पर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ह़दीष़ को नहीं छोड़ सकता।

١٥٦٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ مَرْوَانَ بْنِ الْحَكَمِ قَالَ: ((شَهِدْتُ عُثْمَانَ وَعَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، وَعُثْمَانُ يَنْهَى عَنِ الْمُتْعَةِ وَأَنْ يُجْمَعَ بَيْنَهُمَا، فَلَمَّا رَأَى عَلِيٌّ، أَهَلَّ بِهِمَا: لَبَّيْكَ بِعُمْرَةٍ وَحَجَّةٍ، قَالَ: مَا كُنْتُ لأَدَعَ سُنَّةَ النَّبِيِّ ﷺ لِقَوْلِ أَحَدٍ)). [طرفه في : ١٥٦٩].

तश्रीह़ : ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) शायद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की तक़्लीद से तमत्तोअ़ को बुरा समझते थे उनको भी यही ख़्याल हुआ आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज्ज को फ़स्ख़ कराकर जो हुक्म उ़म्रह का दिया था वो ख़ास़ था स़ह़ाबा (रज़ि.) से। कुछ ने कहा मकरूहे तंज़ीही समझा और चूँकि ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) का ये ख़्याल ह़दीष़ के ख़िलाफ़ था। इसलिये ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने इस पर अ़मल नहीं किया और फ़र्माया कि मैं आँह़ज़रत (ﷺ) की ह़दीष़ को किसी के क़ौल से नहीं छोड़ सकता।

मुसलमान भाइयों! ज़रा ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के इस क़ौल को ग़ौर से देखो, ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ख़लीफ़-ए-वक़्त और ख़लीफ़ा भी कैसे? ख़लीफ़ा-ए-राशिद और अमीरुल मोमिनीन। लेकिन ह़दीष़ के ख़िलाफ़ उनका क़ौल भी फैंक दिया गया और ख़ुद उनके सामने उनका ख़िलाफ़ किया गया। फिर तुमको क्या हो गया है जो तुम इमाम अबू ह़नीफ़ा या शाफ़िई के क़ौल को लिये रहते हो और स़ह़ीह़ ह़दीष़ के ख़िलाफ़ उनके क़ौल पर अ़मल करते हो, ये स़रीह़ गुमराही है। अल्लाह के लिये

बाब 113 : कुत्ते की क़ीमत के बारे में

١١٣- بَابُ ثَمَنِ الْكَلْبِ

इमाम शाफ़िई (रह.) और जुम्हूर उ़लमा का ये क़ौल है कि मुत्लक़न किसी कुत्ते की बेअ़ जाइज़ नहीं, सिखाया हुआ हो या बिन सिखाया हुआ और अगर कोई उसको मार डाले तो उस पर ज़िमान लाज़िम नहीं आता और इमाम मालिक (रह.) के नज़दीक ज़िमान लाज़िम होगा। और ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) के नज़दीक शिकारी और फ़ायदेमन्द कुत्ते की बेअ़ दुरुस्त है।

2237. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अबीबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उन्हें अबू मसऊ़द अंसारी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुत्ते की क़ीमत, ज़ानिया की उज्रत और काहिन की उज्रत से मना फ़र्माया था।

(दीगर मक़ाम : 2282, 5346, 5761)

٢٢٣٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ، وَمَهْرِ الْبَغِيِّ، وَحُلْوَانِ الْكَاهِنِ)).

[أطرافه في: ٢٢٨٢، ٥٣٤٦، ٥٧٦١].

अ़रब में काहिन लोग बहुत थे जो आइन्दा की बातें लोगों को बताया करते थे। आजकल भी ऐसे दावेदार बहुत हैं। उनको उज्रत देना या शीरीनी पेश करना जाइज़ नहीं है न उनका पैसा खाना जाइज़ है।

2238. हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझे औ़न बिन अबी जुहैफ़ा ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अपने वालिद को देखा कि एक पछना लगाने वाले (गुलाम) को ख़रीद रहे हैं। उस पर मैंने उसके बारे में पूछा उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ून की क़ीमत, कुत्ते की क़ीमत, बांदी की (नाजाइज़) कमाई से मना फ़र्माया था और गोदने वालियों और गुदवाने वालियों सूद लेने वालों और देने वालों पर लअ़नत की थी, और तस्वीर बनाने वाले पर भी लअ़नत की थी।

(राजेअ़ : 2086)

٢٢٣٨- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَوْنُ بْنُ أَبِي جُحَيْفَةَ قَالَ: ((رَأَيْتُ أَبِي اشْتَرَى حَجَّامًا فَأَمَرَ بِمَحَاجِمِهِ فَكُسِرَتْ فَسَأَلْتُهُ عَنْ ذَلِكَ، فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنْ ثَمَنِ الدَّمِ وَثَمَنِ الْكَلْبِ، وَكَسْبِ الأَمَةِ. وَلَعَنَ الْوَاشِمَةَ وَالْمُسْتَوْشِمَةَ، وَآكِلَ الرِّبَا وَمُوكِلَهُ، وَلَعَنَ الْمُصَوِّرَ)).

[راجع: ٢٠٨٦]

तश्रीह : ख़ून की क़ीमत से पछना लगाने वाले की उज्रत मुराद है। इस ह़दीष से अदम जवाज़ ज़ाहिर हुआ मगर दूसरी ह़दीष जो मज़्कूर हुई उससे ये ह़दीष मन्सूख़ हो गई है। इस ह़दीष में साफ़ मज़्कूर है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ख़ुद पछना लगवाया और उस पछना लगाने वाले को उज्रत अदा फ़र्माई। जिससे जवाज़ षाबित हुआ। कुत्ते की क़ीमत के बारे में अबू दाऊद में मर्फ़ूअ़न मौजूद है कि जो कोई तुमसे कुत्ते की क़ीमत त़लब करे उसके हाथ में मिट्टी डाल दो, मगर निसाई में जाबिर (रज़ि.) की रिवायत है कि आपने शिकारी कुत्ते को मुस्तफ़्ना फ़र्माया कि उसकी ख़रीद व फ़रोख़्त जाइज़ है। ज़ानिया की उज्रत जो वो ज़िना कराने पर ह़ासिल करती है, उसका खाना भी मुसलमान के लिये क़त्अ़न ह़राम है, मिजाज़न यहाँ उस उज्रत को लफ़्ज़े महर से ता'बीर किया गया। काहिन से मुराद फ़ाल खोलने वाले, हाथ देखने वाले, ग़ैब की ख़बरें बतलाने वाले और इस क़िस्म के

(ﷺ) की राफ्त और रहमत पर भी रोशनी पड़ती है कि आप (ﷺ) को किसी का भूखा रहना गवारा न था। एक अल्लाह वाले बुज़ुर्ग इंसान की यही शान होनी चाहिये।

बाब 15 : अल्लाह तआला का सूरह बक़र: में ये फ़र्माना, और वो बड़ा सख़्त झगड़ालू है

١٥- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ﴾ [البقرة: ٢٠٤]

2457. हमसे अबू आ़सिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला के यहाँ सबसे ज़्यादा नापसन्द वो आदमी है जो सख़्त झगड़ालू हो। (दीगर मक़ाम : 4523, 7188)

٢٤٥٧- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ أَبْغَضَ الرِّجَالِ إِلَى اللهِ الأَلَدُّ الْخَصِمُ)).

[طرفاه في: ٤٥٢٣، ٧١٨٨].

कुछ बदबख़्तों की फ़ितरत होती है कि वो ज़रा–ज़रा सी बातों में झगड़ा फ़साद करते रहते हैं। ऐसे लोग अल्लाह के नज़दीक बहुत ही बुरे हैं। पूरी आयत का तर्जुमा यूँ है, लोगों में कोई ऐसा है जिसकी बात दुनिया की ज़िन्दगी में तुझको भली लगती है और अपने दिल की हालत पर अल्लाह को गवाह करता है हालाँकि वो सख़्त झगड़ालू है। कहते हैं ये आयत अख़नस बिन शुरैक़ के हक़ में उतरी। वो आँहज़रत (ﷺ) के पास आया और इस्लाम का दा'वा करके मीठी बातें करने लगा। जबकि दिल में निफ़ाक़ रखता था (वहीदी)

बाब 16 : उस शख़्स का गुनाह, जो जान–बूझकर झूठ के लिये झगड़ा करे

١٦- باب إِثْمِ مَنْ خاصَمَ فِي باطِلٍ وهوَ يَعلمُه

2458. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह बिन कैसान ने और उनसे इब्ने शिहाब ने कि मुझे उ़र्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने हुज्रे के दरवाज़े के सामने झगड़े की आवाज़ें सुनी और झगड़ा करने वालों के पास तशरीफ़ लाए। आपने उनसे फ़र्माया कि मैं भी एक इंसान हूँ। इसलिये जब मेरे यहाँ कोई झगड़ा लेकर आता है तो हो सकता है कि (फ़रीक़ेन में से) एक फ़रीक़ की बह़ष़ दूसरे फ़रीक़ से ज़्यादा बेहतर हो, मैं समझता हूँ कि वो सच्चा है। और इस त़रह में उसके ह़क़ में फ़ैसला कर देता हूँ। लेकिन अगर मैं उसको (उसके ज़ाहिरी बयान पर भरोसा करके) किसी मुसलमान का ह़क़ दिला दूँ तो दोज़ख़ का एक टुकड़ा उसको दिला रहा हूँ, वो ले ले या छोड़ दे।

٢٤٥٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ زَيْنَبَ بِنْتَ أُمِّ سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أُمَّهَا أُمَّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ: أَنَّهُ سَمِعَ خُصُومَةً بِبَابِ حُجْرَتِهِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ فَقَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ، وَإِنَّهُ يَأْتِينِي الْخَصْمُ، فَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَنْ يَكُونَ أَبْلَغَ مِنْ بَعْضٍ، فَأَحْسِبُ أَنَّهُ صَدَقَ فَأَقْضِي لَهُ بِذَلِكَ، فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ بِحَقِّ مُسْلِمٍ فَإِنَّمَا هِيَ قِطْعَةٌ مِنَ النَّارِ، فَلْيَأْخُذْهَا أَوْ فَلْيَتْرُكْهَا)).

इस्लाम ने मुक़द्दमात में बुनियादी त़ौर पर गवाहों के आ़दिल और नेक चलन होने पर बहुत ज़ोर दिया है क्योंकि मुक़द्दमात में फ़ैस़ले की बुनियाद गवाह ही होते हैं। गवाहों की तअ़दील के लिये एक तो यही रास्ता है कि ह़ाकिम की अ़दालत में कोई मुअ़तमद (भरोसेमन्द) आदमी उस गवाह की अ़दालत और नेक चलनी की गवाही दे। दूसरा ये कि हुकूमत के ख़ुफ़िया आदमी उस गवाह के बारे में पूरी मा'लूमात ह़ासिल करके हुकूमत को ख़बर करें। गवाही में झूठ बोलने वालों की बुराइयों में बहुत सी अह़ादीष़ वारिद हुई हैं और झूठी गवाही को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है।

2637. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर नुमैरी ने बयान किया, कहा हमसे षौबान ने बयान किया और लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़र्वा, इब्ने मुसय्यिब, अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास़ और उ़बैदुल्लाह ने आ़इशा (रज़ि.) की ह़दीष़ के बारे में ख़बर दी और उनकी बाहम एक की बात दूसरे की बात की तस्दीक़ करती है कि जब उन पर तोहमत लगाने वालों ने तोहमत लगाई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अ़ली और उसामा (रज़ि.) को अपनी बीवी (आ़इशा रज़ि) को अपने से जुदा करने के बारे में मश्वरा करने के लिये बुलाया, क्योंकि आप पर अब तक (इस सिलसिले मे) वह्य नहीं आई थी। उसामा (रज़ि.) ने तो ये कहा कि आपकी बीवी मुत़ह्हरा (आ़इशा रज़ि.) में हम सिवाय ख़ैर के और कुछ नहीं जानते। और बरीरा (रज़ि.) (उनकी ख़ादिमा) ने कहा कि मैं कोई ऐसी चीज़ नहीं जानती जिससे उन पर ऐ़ब लगाया जा सके। इतनी बात ज़रूर है कि वो नौ उ़म्र लड़की हैं कि आटा गूंधती और फिर जा के सो रहती है और बकरी आकर उसे खा लेती है। रसूले करीम (ﷺ) ने (तोहमत के झूठ ष़ाबित होने के बाद) फ़र्माया कि ऐसे शख़्स़ की त़रफ़ से कौन उ़ज़्र ख़्वाही करेगा जो मेरी बीवी के बारे में मुझे अज़िय्यत पहुँचाता है। क़सम अल्लाह की! मैंने अपने घर में ख़ैर के सिवा और कुछ न पाया और लोग एक ऐसे शख़्स़ का नाम लेते हैं जिसके बारे में भी मुझे ख़ैर के सिवा और कुछ मा'लूम नहीं। (राजेअ़ : 2593)

٢٦٣٧- حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ النُّمَيْرِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا ثَوبَانُ، وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ وَابْنُ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةُ بْنُ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَنْ حَدِيْثِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا - وَبَعْضُ حَدِيْثِهِمْ يُصَدِّقُ بَعْضًا - حِيْنَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ مَا قَالُوا فَدَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلِيًّا وَأُسَامَةَ حِيْنَ اسْتَلْبَثَ الْوَحْيُ يَسْتَأْمِرُهُمَا فِي فِرَاقِ أَهْلِهِ، فَأَمَّا أُسَامَةُ فَقَالَ: أَهْلُكَ وَلاَ نَعْلَمُ إِلاَّ خَيْرًا. وَقَالَتْ بَرِيْرَةُ: إِنْ رَأَيْتُ عَلَيْهَا أَمْرًا أَغْمِصُهُ أَكْثَرَ مِنْ أَنَّهَا جَارِيَةٌ حَدِيْثَةُ السِّنِّ تَنَامُ عَنْ عَجِيْنِ أَهْلِهَا فَتَأْتِي الدَّاجِنُ فَتَأْكُلُهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ يَعْذِرُنَا فِي رَجُلٍ بَلَغَنِي أَذَاهُ فِي أَهْلِ بَيْتِي، فَوَ اللهِ مَا عَلِمْتُ مِنْ أَهْلِي إِلاَّ خَيْرًا، وَلَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلاً مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلاَّ خَيْرًا)).

[راجع: ٢٥٩٣]

तश्रीह : उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) पर तोहमत का वाक़िया इस्लामी तारीख़ का एक मशहूरतरीन ह़ादष़ा है। जिसमें आँह़ज़रत (ﷺ) और ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) और बहुत से अकाबिर स़ह़ाबा को बहुत तकलीफ़ का सामना करना पड़ा। आख़िर इस बारे में सूरह नूर नाज़िल हुई और अल्लाह पाक ने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की पाकदामनी ज़ाहिर करने के सिलसिले में कई शानदार बयानात दिये। इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का मत़लब इससे निकाला है कि ह़ज़रत उसामा (रज़ि.) ने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की तअ़दील उन लफ़्ज़ों में बयान की जो मक़्स़दे बाब है।

इस इल्ज़ाम का बानी अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ मर्दूद था जो इस्लाम से दिल में सख़्त कीना रखता था। इल्ज़ाम

करा दिया। (राजेअ : 88) [راجع: ٨٨]

M-09825696131

बाब का तर्जुमा इस तरह साबित हुआ कि उक़्बा और उसकी अहलिया के अज़ीज़ का बयान नफ़ी में था और दूध पिलाने वाली औरत का बयान इस्बात में था। आँहज़रत (ﷺ) ने उसी औरत की गवाही क़ुबूल फ़र्माई। मा'लूम हुआ कि गवाही में इस्बात नफ़ी पर मुक़द्दम है।

बाब 5 : गवाह आदिल, मो'तबर होने ज़रूरी हैं

٥- بَابُ الشُّهَدَاءِ الْعُدُولِ

और अल्लाह तआला ने सूरह तलाक़ में फ़र्माया, कि अपने में से दो आदिल आदमियों को गवाह बना लो, और अल्लाह तआला ने सूरह बक़र: में फ़र्माया कि) गवाहों में से जिन्हें तुम पसन्द करो।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَأَشْهِدُوا ذَوِي عَدْلٍ مِنْكُمْ﴾ -وَ- ﴿مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ﴾ [الطلاق: ٢ والبقرة: ٢٨٢]

2641. हमसे हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी ज़ुह्री से, कहा कि मुझसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने और उन्होंने उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में लोगों का वह्य के ज़रिये मुआख़ज़ा हो जाता था। लेकिन अब वह्य का सिलसिला ख़त्म हो गया और हम सिर्फ़ उन्हीं उमूर में मुआख़िज़ा करेंगे जो तुम्हारे अमल से हमारे सामने ज़ाहिर होंगे। इसलिये जो कोई ज़ाहिर में हमारे सामने ख़ैर करेगा, हम उसे अमन देंगे और अपने क़रीब रखेंगे। उसके बातिन से हमें कोई सरोकार नहीं होगा। उसका हिसाब तो अल्लाह तआला करेगा और जो कोई हमारे सामने ज़ाहिर में बुराई करेगा तो हम भी उसे अमन नहीं देंगे और न हम उसकी तस्दीक़ करेंगे ख़्वाह वो यही कहता रहे कि उसका बातिन अच्छा है।

٢٦٤١- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُتْبَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((إِنَّ أُنَاسًا كَانُوا يُؤْخَذُونَ بِالْوَحْيِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَإِنَّ الْوَحْيَ قَدِ انْقَطَعَ، وَإِنَّمَا نَأْخُذُكُمُ الآنَ بِمَا ظَهَرَ لَنَا مِنْ أَعْمَالِكُمْ، فَمَنْ أَظْهَرَ لَنَا خَيْرًا أَمِنَّاهُ وَقَرَّبْنَاهُ وَلَيْسَ إِلَيْنَا مِنْ سَرِيرَتِهِ شَيْءٌ، اللهُ يُحَاسِبُهُ فِي سَرِيرَتِهِ. وَمَنْ أَظْهَرَ لَنَا سُوءًا لَمْ نَأْمَنْهُ وَلَمْ نُصَدِّقْهُ وَإِنْ قَالَ إِنَّ سَرِيرَتَهُ حَسَنَةٌ)).

तश्रीह : हज़रत उमर (रज़ि.) के क़ौल से उनके बुक़ूफ़ों का रद्द हुआ जो एक बदकार फ़ासिक़ को दरवेश और वली समझें और ये दा'वा करें कि ज़ाहिर आमाल से किया होता है, दिल अच्छा होना चाहिये। कहो, जब हज़रत उमर (रज़ि.) ऐसे शख़्स को दिल का हाल मा'लूम नहीं हो सकता था तो तुम बेचारे किस खेत की मूली है। दिल का हाल बजुज़ अल्लाह करीम के कोई नहीं जानता। नबी करीम (ﷺ) को भी उसका इल्म वह्य या'नी अल्लाह के बतलाने से होता। हज़रत उमर (रज़ि.) ने क़ायदा बयान किया कि ज़ाहिर की रू से जिसके आमाल शरअ के मुवाफ़िक़ हों उसको अच्छा समझो और जिसके आमाल शरअ के ख़िलाफ़ हों उनको बुरा समझो। अब अगर उसका दिल बिल फ़र्ज़ अच्छा भी होगा जब भी हम उसके बुरा समझने में कोई मुआख़िज़ा वार न होंगे क्योंकि हमने शरीअत के क़ायदे पर अमल किया। अल्बत्ता हम अगर उसको अच्छा समझेंगे तो गुनाहगार होंगे। (वहीदी)

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि फ़ासिक़, बदकार की बात न मा'नी जाएगी या'नी उसकी शहादत मक़्बूल न होगी। मा'लूम हुआ कि शाहिद के लिये अदालत ज़रूरी है। अदालत से मुराद ये है कि मुसलमान आज़ाद, आक़िल, बालिग़, नेक

ये भी मक़्सद है कि आदिल गवाह के ज़ाहिरी हालात का दुरुस्त होना ज़रूरी है वरना उसको आदिल न माना जाएगा। इस्लाम का फ़त्वा ज़ाहिरी हालत पर है। बातिन अल्लाह के हवाले है। उसमें उन नामनिहाद सूफ़ियों की भी तर्दीद है जिनका ज़ाहिर सरासर ख़िलाफ़े शरअ होता है और बातिन में वो ईमानदार आशिक़े अल्लाह व रसूल बनते हैं। ऐसे मक्कार नामनिहाद सूफ़ियों ने एक ख़िल्क़त को गुमराह कर रखा है। उनमें से कुछ तो इतने बेह्या वाक़ेअ हुए हैं कि नमाज़, रोज़ा की खुले लफ़्ज़ों में तह्क़ीर करते हैं, उलमा की बुराइयाँ करते हैं, शरीअत और तरीक़त को अलग अलग बतलाते हैं। ऐसे लोग सरासर गुमराह हैं। हर्गिज़-हर्गिज़ क़ाबिले क़ुबूलियत नहीं हैं बल्कि वो ख़ुद गुमराह और मख़्लूक़ के गुमराह करने वाले हैं।

हज़रत जुनैद बग़दादी (रह.) का मशहूर क़ौल है कि **कुल्लु हक़ीक़तिन ला यशहदु लहुश्शरउ फहुव ज़िन्दिकतुन** हर वो हक़ीक़त जिसकी शहादत शरीअत से न मिले वो बद्दीनी और बेईमानी और ज़िन्दीक़ियत है। **नऊज़ुबिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना मिन सय्यआति आमालिना.**

बाब 6 : किसी गवाह को आदिल षाबित करने के लिये कितने आदमियों की गवाही ज़रूरी है?

٦- بَابُ تَعْدِيْلُ كَمْ يَجُوز؟

2642. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया षाबित से और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास से एक जनाज़ा निकला तो लोगों ने उस मय्यत की ता'रीफ़ की, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वाजिब हो गई। फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा तो लोगों ने उसकी बुराई की या उसके सिवा और अल्फ़ाज़ (उसी मफ़्हूम को अदा करने के लिये) कहे (रावी को शुब्हा है) आप (ﷺ) ने उस पर भी फ़र्माया कि वाजिब हो गई। अर्ज़ किया गया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने उस जनाज़े के बारे में भी फ़र्माया कि वाजिब हो गई और पहले जनाज़े पर भी यही फ़र्माया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ईमानवाली क़ौम की गवाही (बारगाहे इलाही में मक़्बूल है) ये लोग ज़मीन पर अल्लाह के गवाह हैं। (राजेअ : 1367)

٢٦٤٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مُرَّ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ بِجِنَازَةٍ، فَأَثْنَوا عَلَيْهَا خَيْرًا، فَقَالَ: ((وَجَبَتْ)). ثُمَّ مُرَّ بِأُخْرَى فَأَثْنَوا عَلَيْهَا شَرًّا - أَوْ قَالَ : غَيْرَ ذَلِكَ- فَقَالَ: ((وَجَبَتْ)). فَقِيْلَ يَا رَسُولَ اللهِ قُلْتَ لِهَذَا وَجَبَتْ وَلِهَذَا وَجَبَتْ. قَالَ: ((شَهَادَةُ الْقَومِ. الْمُؤْمِنُونَ شُهَدَاءُ اللهِ فِي الأَرْضِ)). [راجع: ١٣٦٧]

2643. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे दाऊद बिन अबी फ़रात ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने बयान किया अबुल अस्वद से कि मैं मदीना आया तो यहाँ वबा फैली हुई थी, लोग बड़ी तेज़ी से मर रहे थे। मैं हज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िदमत में था कि एक जनाज़ा गुज़रा। लोगों ने उस मय्यत की ता'रीफ़ की तो हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि वाजिब हो गई। फिर दूसरा गुज़रा लोगों ने उसकी ता'रीफ़ की, हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा वाजिब हो गई। फिर तीसरा गुज़रा तो लोगों ने उसकी बुराई की, हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उसके लिये भी यही कहा कि वाजिब हो गई। मैंने पूछा अमीरुल मोमिनीन! क्या

٢٦٤٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفُرَاتِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ ابْنُ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ قَالَ: ((أَتَيْتُ الْمَدِيْنَةَ وَقَدْ وَقَعَ بِهَا مَرَضٌ وَهُمْ يَمُوتُونَ مَوتًا ذَرِيْعًا، فَجَلَسْتُ إِلَى عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، فَمَرَّتْ جِنَازَةٌ فَأُثْنِيَ خيرٌا، فَقَالَ عُمَرُ : وَجَبَتْ. ثُمَّ مُرَّ بِأُخْرَى فَأُثْنِيَ خَيْراً فَقَالَ عُمَرُ وَجَبَتْ ثُمَّ

हराम बिन अ़म्र बिन ज़ैद, मनात बिन अ़दी बिन अ़म्र बिन मालिक बिन नज्जार हस्सान और अबू त़लहा को मिला देता है और उबई बिन कअ़ब छठी पुश्त में या'नी अ़म्र बिन मालिक में अबू त़लहा से मिलते हैं, उबई बिन कअ़ब के बेटे, वो क़ैस के, वो उ़बैद के, वो ज़ैद के, वो मुआ़विया के, वो अ़म्र बिन मालिक बिन नज्जार के तो अ़म्र बिन मालिक हस्सान और अबू त़लहा और उबई तीनों को मिला देता है और कुछ ने (इमाम अबू यूसुफ़ इमाम अबू हनीफ़ा के शागिर्द ने) कहा अ़ज़ीज़ों के लिये वसिय्यत करे तो जितने मुसलमान बाप दादा गुज़रे हैं वो सब दाख़िल होंगे।

عَمْرِو بْنِ زَيْدِ مَنَاةَ بْنِ عَدِيِّ بْنِ عَمْرِو بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّجَّارِ، فَهُوَ يُجَامِعُ حَسَّانَ وَأَبَا طَلْحَةَ وَأُبَيٌّ إِلَى سِتَّةِ آبَاءٍ إِلَى عَمْرِو بْنِ مَالِكٍ، وَهُوَ أُبَيُّ بْنُ كَعْبِ بْنِ قَيْسِ بْنِ عُبَيْدِ زَيْدِ بْنِ مُعَاوِيَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّجَّارِ، فَعَمْرُو بْنُ مَالِكٍ يَجْمَعُ حَسَّانَ وَأَبَا طَلْحَةَ وَأُبَيًّا. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِذَا أَوْصَى لِقَرَابَتِهِ فَهُوَ إِلَى آبَائِهِ فِي الإِسْلاَمِ.

2752. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्होंने इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने अबू त़लहा से फ़र्माया, (जब उन्होंने अपना बाग़ बीरे हाअ अल्लाह की राह में देना चाहा) मैं मुनासिब समझता हूँ तू ये बाग़ अपने अ़ज़ीज़ों को दे दे। अबू त़लहा ने कहा बहुत ख़ूब ऐसा ही करूँगा। फिर अबू त़लहा ने वो बाग़ अपने अ़ज़ीज़ों और चचा के बेटों में बांट दिया और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा जब (सूरह शुअ़रा की) ये आयत उतरी और अपने क़रीब के नाते वालों को (अल्लाह के अ़ज़ाब से) डराओ तो आँहज़रत (ﷺ) क़ुरैश के ख़ानदानों में बनी फ़हर, बनी अ़दी को पुकारने लगे (उनको डराया) और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा जब ये आयत उतरी वन्ज़िर अ़शीरतकल अक़्रबीन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ क़ुरैश के लोगों! (अल्लाह से डरो) (राजेअ़ : 1461)

٢٧٥٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأَبِي طَلْحَةَ: ((أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الأَقْرَبِينَ))، قَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَفْعَلُ يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَسَمَهَا أَبُو طَلْحَةَ فِي أَقَارِبِهِ وَبَنِي عَمِّهِ)). وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ﴾ جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يُنَادِي: ((يَا بَنِي فِهْرٍ: يَا بَنِي عَدِيٍّ، لِبُطُونِ قُرَيْشٍ)). وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ﴾ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ)). [راجع: ١٤٦١]

बाब 11 : क्या अ़ज़ीज़ों मे औरतें और बच्चे भी दाख़िल होंगे

١١- بَابُ هَلْ يَدْخُلُ النِّسَاءُ وَالْوَلَدُ فِي الأَقَارِبِ؟

2753. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्होंने ज़ुहरी से, कहा मुझको सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा जब (सूरह शुअ़रा की) ये आयत अल्लाह तआ़ला ने उतारी

٢٧٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ

أَبَاهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِيْنَ أَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَأَنذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ قَالَ: ((يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ - أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا - اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ، لاَ أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ لاَ أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا عَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ لاَ أُغْنِي عَنْكَ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا صَفِيَّةُ عَمَّةَ رَسُولِ اللهِ لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللهِ شَيْئًا. وَيَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَلِيْنِي مَا شِئْتِ مِنْ مَالِي لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللهِ شَيْئًا)). تَابَعَهُ أَصْبَغُ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ. [طرفاه في: ٣٥٢٧، ٤٧٧١].

और अपने नज़दीक नातेदारों को अल्लाह के अ़ज़ाब से डरा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुरैश के लोगों ! या ऐसा ही कोई और कलिमा तुम लोग अपनी अपनी जानों को (नेक आमाल के बदल) मोल ले लो (बचा लो) मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा (या'नी उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मैं कुछ नहीं कर सकने का) अ़ब्दे मुनाफ़ के बेटों ! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। अ़ब्बास बिन मुत्तलिब के बेटे! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। स़फ़िया मेरी फूफी! अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। फ़ातिमा (रज़ि.) बेटी तू चाहे मेरा माल मांग ले लेकिन अल्लाह के सामने तेरे कुछ काम नहीं आएगा। अबुल यमान के साथ हदीष़ को अस्बग़ ने भी अ़ब्दुल्लाह बिन वहब से, उन्होंने यूनुस से, उन्होंने इब्ने शिहाब से रिवायत किया। (दीगर मक़ाम : 3527, 4771)

तश्रीह : पिछली ह़दीष़ में पहले आपने क़ुरैश के कुल लोगों को मुख़ातब किया जो ख़ास़ आपकी क़ौम के लोग थे। फिर अ़ब्दे मुनाफ़ अपने चौथे दादा की औलाद को। फिर ख़ास़ अपने चचा और फूफी या'नी दादा की औलाद को फिर ख़ास़ अपनी औलाद को। इस ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि क़राबत वालों मे औरतें दाख़िल हैं क्योंकि ह़ज़रत स़फ़िया अपनी फूफी को भी आप (ﷺ) ने मुख़ातब किया और बच्चे भी इसलिये कि ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) जब ये आयत उतरी कमसिन बच्ची थीं, आप (ﷺ) ने उनको भी मुख़ातब किया।

बाब 12 : क्या वक़्फ़ करने वाला अपने वक़्फ़ से ख़ुद भी वो फ़ायदा उठा सकता है?

١٢- بَابُ هَلْ يَنْتَفِعُ الْوَاقِفُ بِوَقْفِهِ؟

وَقَدِ اشْتَرَطَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: لاَ جُنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهُ أَنْ يَأْكُلَ. وَقَدْ يَلِي الْوَاقِفُ وَغَيْرُهُ. وَكَذَلِكَ كُلُّ مَنْ جَعَلَ بَدَنَةً أَوْ شَيْئًا للهِ فَلَهُ أَنْ يَنْتَفِعَ بِهِ كَمَا يَنْتَفِعُ غَيْرُهُ وَإِنْ لَمْ يَشْتَرِطْ.

और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने शर्त लगाई थी (अपने वक़्फ़ के लिये) कि जो शख़्स़ उसका मुतवल्ली हो उसके लिये उस वक़्फ़ में से खा लेने से कोई ह़र्ज न होगा। (दस्तूर के मुताबिक़) वाक़िफ़ ख़ुद भी वक़्फ़ का मुहतमिम हो सकता है और दूसरा शख़्स़ भी। इसी तरह़ अगर किसी शख़्स़ ने ऊँट या कोई और चीज़ अल्लाह के रास्ते में वक़्फ़ की तो जिस तरह़ दूसरे उससे फ़ायदा उठा सकते हैं ख़ुद वक़्फ़ करने वाला भी उठा सकता है अगरचे (वक़्फ़ करते वक़्त) उसकी शर्त न लगाई हो।

तश्रीह : वाक़िफ़ अपने वक़्फ़ से फ़ायदा उठा सकता है जब उस चीज़ को ख़ुद अपने ऊपर और नीज़ दूसरों पर वक़्फ़ कर दिया हो या वक़्फ़ में ऐसी शर्त कर ली हो या उसमें से एक ह़िस्सा अपने लिये ख़ास़ कर लिया हो या मुतवल्ली

استيقظ يتبسم، فقلت: ما أضحكك؟ قال: ((أناس من أمتي عرضوا علي يركبون هذا البحر الأخضر كالملوك على الأسرة))، قال: فادع الله أن يجعلني منهم، فدعا لها. ثم نام الثانية، ففعل مثلها، فقالت: مثل قولها، فأجابها مثلها، فقالت: ادع الله أن يجعلني منهم، فقال: ((أنت من الأولين)). فخرجت مع زوجها عبادة بن الصامت غازيا أول ما ركب المسلمون البحر مع معاوية، فلما انصرفوا من غزوهم قافلين فنزلوا الشام فقربت إليها دابة لتركبها فصرعتها فماتت)).

[راجع: ٢٧٨٨، ٢٧٨٩]

मुस्कुरा रहे थे, मैंने अ़र्ज़ किया कि आप (ﷺ) किस बात पर हंस रहे हैं? फ़र्माया मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने पेश किये गये जो ग़ज़्वा करने के लिये उस बहते दरिया पर सवार होकर जा रहे थे जैसे बादशाह तख़्त पर चढ़ते हैं। मैंने अ़र्ज़ किया फिर आप (ﷺ) मेरे लिये भी दुआ़ कर दीजिए कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उन्हीं में से बना दे। आप (ﷺ) ने उनके लिये दुआ़ की। फिर दोबारा आप (ﷺ) सो गए और पहले की त़रह इस बार भी किया (बेदार होते हुए मुस्कुराए) उम्मे ह़राम (रज़ि.) ने पहले ही की त़रह इस बार भी अ़र्ज़ किया और आप (ﷺ) ने वही जवाब दिया। उम्मे ह़राम (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया आप दुआ़ कर दें कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उन्हीं में से बना दे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम सबसे पहले लश्कर के साथ होगी चुनाँचे वो अपने शौहर उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) के साथ मुसलमानों के सबसे पहले बह़री (समन्दरी) बेड़े में शरीक हुईं। मुआ़विया (रज़ि.) के ज़माने में ग़ज़्वा से लौटते वक़्त जब शाम के साहिल पर लश्कर उतरा तो उम्मे ह़राम (रज़ि.) के क़रीब एक सवारी लाई गई ताकि उस पर सवार हो जाएँ लेकिन जानवर ने उन्हें गिरा दिया और उसी में उनका इंतिक़ाल हो गया। (राजेअ़ : 2788, 2789)

अंबिया के ख़्वाब भी वह्य और इल्हाम होते हैं। आपने ख़्वाब में देखा कि आपकी उम्मत के कुछ लोग बड़ी शान और शौकत के साथ बादशाहों की त़रह समुन्दर पर सवार हो रहे हैं। आख़िर आप (ﷺ) का ये ख़्वाब पूरा हुआ और मुसलमानों ने अ़हदे मुआ़विया (रज़ि.) में बह़री बेड़े तैयार करके शाम (सीरिया) पर ह़मला किया, बाब का तर्जुमा इस त़रह़ निकला कि उम्मे ह़राम (रज़ि.) अगरचे जानवर से गिरकर मरीं मगर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको मुजाहिदीन में शामिल फ़र्माया और अन्त मिनल् अव्वलीन से आपने पेशीनगोई फ़र्माई।

٩- باب من ينكب أو يطعن في سبيل الله

बाब 9 : जिसको अल्लाह की राह में तकलीफ़ पहुँचे (या'नी उसके किसी अ़ज़्व को स़दमा हो)

٢٨٠١- حدثنا حفص بن عمر الحوضي، حدثنا همام عن إسحاق عن أنس رضي الله عنه قال: ((بعث النبي صلى الله عليه وسلم أقواما من بني سليم إلى بني عامر في سبعين، فلما قدموا قال لهم خالي: أتقدمكم، فإن

2801. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर हौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने, उनसे इस्ह़ाक़ ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बनू सुलैम के सत्तर आदमी (जो क़ारी थे) बनू आ़मिर के यहाँ भेजे। जब ये सब ह़ज़रात (बीरे मऊ़ना पर) पहुँचे तो मेरे मामू ह़राम बिन मिलह़ान (रज़ि.) ने कहा मैं (बनू सुलैम के यहाँ) आगे जाता हूँ अगर मुझे उन्हों ने इस बात का अमन दे दिया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें उन तक

पहुँचाऊँ ता बेहतर वरना तुम लोग मेरे क़रीब तो हो ही। चुनाँचे वो उनके यहाँ गये और उन्होंने अमन भी दे दिया। अभी वो क़बीले के लोगों को रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें सुना ही रहे थे कि क़बीले वालों ने अपने एक आदमी (आ़मिर बिन तुफ़ैल) को इशारा किया और उसने आप (रज़ि.) के बरछा मारा जो जिस्म में आर-पार हो गया। उस वक़्त उनकी ज़ुबान से निकला, अल्लाहु अकबर! मैं कामयाब हो गया का'बा के रब की क़सम! उसके बाद क़बीले वाले ह़राम (रज़ि.) के दूसरे साथियों की त़रफ़ (जो सत्तर की ता'दाद में थे) बढ़े और सबको क़त्ल कर दिया। अल्बत्ता एक स़ाहब जो लंगड़े थे, पहाड़ पर चढ़ गए। हम्माम (ह़दीष़ के रावी) ने बयान किया मैं समझता हूँ कि एक साह़ब और उनके साथी (पहाड़ पर चढ़े थे) (अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी) उसके बाद जिब्रईल ने नबी करीम (ﷺ) को ख़बर दी कि आपके साथी अल्लाह तआ़ला से जा मिले हैं, पस अल्लाह ख़ुद भी उनसे ख़ुश है और उन्हें भी ख़ुश कर दिया है। उसके बाद हम (क़ुर्आन की दूसरी आयतों के साथ ये आयत भी) पढ़ते थे (तर्जुमा) हमारी क़ौम के लोगों को ये पैग़ाम पहुँचा दो कि हम अपने रब से आ मिले हैं, पस हमारा रब ख़ुद भी ख़ुश है और हमें भी ख़ुश कर दिया है। उसके बाद ये मन्सूख़ हो गई, नबी करीम (ﷺ) ने चालीस दिन तक सुबह की नमाज़ में क़बीला रअ़ल, ज़क्वान, बनी लह्यान और बनी उ़सय्या के लिये बद दुआ़ की थी जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह (ﷺ) की नाफ़र्मानी की थी। (राजेअ़: 1001)

أَمَّنُونِي حَتَّى أُبَلِّغَهُمْ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِلاَّ كُنْتُمْ مِنِّي قَرِيبًا. فَتَقَدَّمَ فَأَمَّنُوهُ، فَبَيْنَمَا يُحَدِّثُهُمْ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَوْمَؤُوا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ فَطَعَنَهُ فَأَنْفَذَهُ، فَقَالَ: اللهُ أَكْبَرُ، فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ. ثُمَّ مَالُوا عَلَى بَقِيَّةِ أَصْحَابِهِ فَقَتَلُوهُمْ إِلاَّ رَجُلاً أَعْرَجَ صَعِدَ الْجَبَلَ، قَالَ هَمَّامٌ: فَأُرَاهُ آخَرَ مَعَهُ. فَأَخْبَرَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُمْ قَدْ لَقُوا رَبَّهُمْ فَرَضِيَ عَنْهُمْ وَأَرْضَاهُمْ، فَكُنَّا نَقْرَأُ أَنْ بَلِّغُوا قَوْمَنَا أَنْ قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَأَرْضَانَا، ثُمَّ نُسِخَ بَعْدُ، فَدَعَا عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ صَبَاحًا؛ عَلَى رِعْلٍ وَذَكْوَانَ وَبَنِي لِحْيَانَ وَبَنِي عُصَيَّةَ الَّذِينَ عَصَوُا اللهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)).

[راجع: ١٠٠١]

तशरीह: ह़ाफ़िज़ ने कहा उसमें ह़फ़्स़ बिन उ़मर इमाम बुख़ारी के शैख़ से सह्व हो गया है और स़ह़ीह़ यूँ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उम्मे सुलैम के एक भाई या'नी ह़राम बिन मिल्ह़ान को सत्तर आदमियों के साथ बनी आमिर की त़रफ़ भेजा था। ये सत्तर आदमी अंसार के क़ारी थे और आपने दीन की ता'लीम फैलाने के लिये क़बीला बनी आ़मिर के यहाँ भेजे थे जिनके लिये ख़ुद उस क़बीला ने दरख़्वास्त की लेकिन रास्ते में बनू सुलैम ने दग़ा की और उन ग़रीब क़ारियों को नाह़क़ क़त्ल कर दिया। बनू सुलैम का सरदार आमिर बिन तुफ़ैल था। लुग़त के सिलसिले में जिन क़बीलों का ज़िक्र रिवायत में आया है ये सब बनू सुलैम की शाख़ें हैं। आयत जिसका ज़िक्र रिवायत में आया है उन आयतों में से है जिनकी तिलावत मन्सूख़ हो गई।

2802. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने और उनसे जुन्दब बिन सुफ़यान (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) किसी लड़ाई के मौक़े पर मौजूद थे और आप (ﷺ) की उँगली जख़्मी हो गई थी।

٢٨٠٢– حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ جُنْدَبِ بْنِ سُفْيَانَ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ

हमने रवानगी का इरादा किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने तुम्हें हुक्म दिया था कि फ़लाँ और फ़लाँ को जला देना। लेकिन आग एक ऐसी चीज़ है जिसकी सज़ा सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही दे सकता है। इसलिये अगर वो तुम्हें मिलें तो उन्हें क़त्ल करना (आग में न जलाना)। (राजेअ़ : 2954)

فُلَانًا وَفُلَانًا فَأَحْرِقُوهُمَا بِالنَّارِ)). ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ أَرَدْنَا الْخُرُوجَ: ((إِنِّي أَمَرْتُكُمْ أَنْ تُحَرِّقُوا فُلَانًا وَفُلَانًا، وَإِنَّ النَّارَ لَا يُعَذِّبُ بِهَا إِلَّا اللهُ، فَإِنْ وَجَدْتُمُوهُمَا فَاقْتُلُوهُمَا)). [راجع: ٢٩٥٤]

तश्रीह : कुछ सह़ाबा (रज़ि.) ने उसको मुत्लक़न मना जाना है गो बतौरे क़िसास के हो, कुछ ने जाइज़ रखा है जैसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) और ह़ज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) से मन्क़ूल है। मुहल्लिब ने कहा कि ये मुमानअ़त तह़रीमो नहीं, बल्कि बतौर तवाज़ाअ़ के है। हमारे ज़माने में तो आलाते ह़र्ब तोप और बन्दूक़ और डायनामाइट, मिसाइल वग़ैरह सब अंगार हैं और चूँकि काफ़िरों ने उनका इस्ते'माल शुरू कर दिया है, लिहाज़ा मुसलमानों को भी उनका इस्ते'माल दुरुस्त है। (वह़ीदी)

मुतर्जिम के ख़्याले-नाक़िस में उन जदीद हथियारों का इस्ते'माल अम्रे दीगर है और मुत्लक़ आग में जलाना अम्रे दीगर है जिसे शरअ़न व अख़्लाक़न पसन्द नहीं किया जा सकता।

3017. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इक्रिमा ने कि अ़ली (रज़ि.) ने एक क़ौम को (जो अ़ब्दुल्लाह बिन सबा की पैरोकार थी और ह़ज़रत अ़ली रज़ि. को अपना ख़ुदा कहती थी) जला दिया था। जब ये ख़बर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) को मिली तो आपने कहा कि अगर मैं होता तो कभी उन्हें न जलाता क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया है कि अल्लाह के अ़ज़ाब की सज़ा किसी को न दो, अल्बत्ता मैं उन्हें क़त्ल ज़रूर करता क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया है जो शख़्स अपना दीन तब्दील कर दे उसे क़त्ल कर दो। (दीगर मक़ाम : 6922)

٣٠١٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ أَنَّ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَرَّقَ قَوْمًا، فَبَلَغَ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ: لَوْ كُنْتُ أَنَا لَمْ أُحَرِّقْهُمْ، لِأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَا تُعَذِّبُوا بِعَذَابِ اللهِ))، وَلَقَتَلْتُهُمْ كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ بَدَّلَ دِينَهُ فَاقْتُلُوهُ)). [طرفه في : ٦٩٢٢].

ये लोग सबाइया थे। अ़ब्दुल्लाह बिन सबा यहूदी के ताबेदार जो मुसलमानों को ख़राब कर डालने के लिये बज़ाहिर मुसलमान हो गया था और अंदर से काफ़िर था। उस मर्दूद ने अपने ताबेदारों को ये ता'लीम की थी कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) मआ़ज़अल्लाह आदमी नहीं हैं बल्कि वो ख़ुद अल्लाह हैं। कुछ कहते हैं कि ये बुतों की परस्तिश करते थे। राफ़ज़ियों में एक फ़िर्क़ा नसीरी है जो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को ख़ुदा-ए-बुज़ुर्ग और इमाम जा'फ़र सादिक़ को ख़ुदा-ए-ख़ौरिद कहता है, **ला ह़ौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह.** (वह़ीदी)

बाब 150 : (अल्लाह तआ़ला का सूरह मुह़म्मद में ये फ़र्माना) कि क़ैदियों को मुफ़्त एह़सान रखकर छोड़ दो या फ़िदया लेकर

١٥٠- بَابُ ﴿فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً﴾ [محمد : ٤]

इस बाब में ष़मामा की ह़दीष़ है और अल्लाह तआ़ला का इर्शाद कि, नबी के लिये मुनासिब नहीं कि क़ैदी अपने पास रखे, जब तक काफ़िरों का ख़ूब सत्यानास न कर दे।

فِيهِ حَدِيثُ ثُمَامَةَ. وَقَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ تَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّى يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ -حَتَّى يَغْلِبَ فِي الْأَرْضِ-

हज़रत सअ़द (रज़ि.) का फ़ैसला हालाते हाज़िरा के तहत बिलकुल मुनासिब था और उसके बग़ैर क़यामे अमन नामुम्किन था। वो बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों की फ़ित्रत से वाक़िफ़ थे, उनका ये फ़ैसला यहूदी शरीअ़त के मुताबिक़ था।

बाब 169 : क़ैदी को क़त्ल करना और किसी को खड़ा करके निशाना बनाना

١٦٩- بَابُ قَتْلِ الأَسِيرِ وَقَتْلِ الصَّبْر

जिसको अ़रबी में क़त्ले सब्र कहते हैं। वो ये है कि जानदार आदमी हो या जानवर उसको किसी झाड़ या पेड़ से बाँध देना और तीर या गोली का निशाना बनाना, इस बाब को लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने उन लोगों का रद्द किया है जो क़ैदियों को क़त्ल करना जाइज़ नहीं रखते।

3044. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़तहे मक्का के दिन जब शहर में दाख़िल हुए तो आपके सरे मुबारक पर ख़ूद था। आप जब उसे उतार रहे थे तो एक शख़्स़ (अबूबर्ज़ा असलमी) ने आकर आपको ख़बर दी कि इब्ने ख़त़्तल (इस्लाम का बदतरीन दुश्मन) का'बा के पर्दे से लटका हुआ है। आपने फ़र्माया उसे वहीं क़त्ल कर दो। (राजेअ़ : 1864)

٣٠٤٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ دَخَلَ عَامَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْمِغْفَرُ، فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنَّ ابْنَ خَطَلٍ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ: ((اقْتُلُوهُ)).

[راجع: ١٨٤٦]

ये अ़ब्दुल्लाह बिन ख़त़्तल कमबख़्त मुर्तद होकर एक मुसलमान का ख़ून करके काफ़िरों में मिल गया था और आँहज़रत (ﷺ) की और मुसलमानों की हिज्व (निन्दा) वेश्याओं से गवाता। ये ह़दीष़ उस ह़दीष़ की मुख़स़्स़स है कि जो शख़्स़ मस्जिदे ह़राम में आ जाए वो बेख़ौफ़ है और इससे ये निकला कि मस्जिदे ह़राम में ह़द्दे क़िसास़ लिया जा सकता है। ख़ूद, लोहे का टोप जो मैदाने जंग में सर के बचाने के लिये इस्ते'माल किया जाता था जिस त़रह़ लोहे के कुर्ते (ज़िरह) से बाक़ी बदन को बचाया जाता था।

बाब 170 : अपने तईं क़ैद करा देना और जो शख़्स़ क़ैद न कराये उसका हुक्म

١٧٠- بَابُ هَلْ يَسْتَأْسِرُ الرَّجُلُ؟ وَمَنْ لَمْ يَسْتَأْسِرْ، وَمَنْ رَكَعَ رَكْعَتَيْنِ عِنْدَ الْقَتْلِ

और क़त्ल के वक़्त दो रकअ़त नमाज़ पढ़ना.

3045. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें अ़म्र बिन अबी सुफ़यान बिन उसैद बिन जारिया ष़क़फ़ी ने ख़बर दी, वो बनी ज़ुहरा के हलीफ़ थे और ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के दोस्त, उन्होंने कहा कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दस स़हाबा की एक जमाअ़त कुफ़्फ़ार की जासूसी के लिये भेजी, उस जमाअ़त का अमीर आ़स़िम बिन उ़मर बिन ख़त़्ताब (रज़ि.) के नाना आ़स़िम बिन ष़ाबित अंस़ारी (रज़ि.) को बनाया और जमाअ़त रवाना हो गई। जब ये लोग मुक़ामे हिदात पर पहुँचे जो उ़स्फ़ान और मक्का के बीच में है तो क़बीला हुज़ैल की

٣٠٤٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ أَبِي سُفْيَانَ بْنِ أَسِيْدِ بْنِ جَارِيَةَ الثَّقَفِيُّ - وَهُوَ حَلِيفٌ لِبَنِي زُهْرَةَ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ أَبِي هُرَيْرَةَ - أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشَرَةَ رَهْطٍ سَرِيَّةً عَيْنًا، وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَاصِمَ

एक शाख़ बनु लह्यान को किसी ने ख़बर दे दी और उस क़बीले के दो सौ तीरंदाज़ों की एक जमाअ़त उनकी तलाश में निकली, ये सब स़हाबा के क़दमों के निशानों से अंदाज़ा लगाते हुए चलते-चलते आख़िर एक ऐसी जगह पर पहुँच गये जहाँ स़हाबा ने बैठकर खजूरें खाई थीं, जो वो मदीना मुनव्वरा से अपने साथ लेकर चले थे। पीछा करने वालों ने कहा कि ये (गुठलियाँ) तो यष़रिब (मदीना) की (खजूरों की) हैं और फिर क़दम के निशानों से अंदाज़ा करते हुए आगे बढ़ने लगे। आख़िर आ़सिम (रज़ि.) और उनके साथियों ने जब उन्हें देखा तो उन सबने एक पहाड़ की चोटी पर पनाह ली, मुश्रिकीन ने उनसे कहा कि हथियार डालकर नीचे उतर आओ, तुमसे हमारा अ़हद व पैमान है। हम किसी शख़्स को भी क़त्ल नहीं करेंगे। आ़सिम बिन ष़ाबित (रज़ि.) मुहिम के अमीर ने कहा कि मैं तो आज किसी सूरत में भी एक काफ़िर की पनाह में नहीं उतरूँगा। ऐ अल्लाह! हमारी हालत से अपने नबी को ख़बर कर दे। इस पर उन काफ़िरों ने तीर बरसाने शुरू कर दिये और आ़सिम (रज़ि.) और सात दूसरे स़हाबा को शहीद कर डाला और बाक़ी तीन स़हाबी उनके अ़हद व पैमान पर उतर आए, ये ख़ुबैब अंस़ारी (रज़ि.), इब्ने दष़िना (रज़ि.) और एक तीसरे सहाबी (अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ बलवी रज़ि.) थे। जब ये स़हाबी उनके क़ाबू में आ गये तो उन्होंने अपनी कमानों के तांत उतारकर उनको उनसे बाँध लिया, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! ये तुम्हारी पहली ग़द्दारी है। मैं तुम्हारे साथ हर्गिज़ न जाऊँगा बल्कि मैं तो उन्हीं ह़ज़रत का उस्वा इख़्तियार करूँगा, उनकी मुराद शुह्दा से थी, मगर मुश्रिकीन उन्हें खींचने लगे और ज़बरदस्ती अपने साथ ले जाना चाहा। जब वो किसी त़रह न गये तो उनको भी शहीद कर दिया। अब ये ख़ुबैब (रज़ि.) और इब्ने दष़िना (रज़ि.) को साथ लेकर चले और उनको मक्का में ले जाकर बेच दिया। ये जंगे बद्र के बाद का वाक़िया है। ख़ुबैब (रज़ि.) को ह़ारिष़ बिन आ़मिर बिन नौफ़िल बिन अ़ब्दे मुनाफ़ के लड़कों ने ख़रीद लिया, ख़ुबैब (रज़ि.) ने ही बद्र की लड़ाई में ह़ारिष़ बिन आ़मिर को क़त्ल किया था। आप उनके यहाँ कुछ दिनों तक क़ैदी बनकर रहे, (ज़ुह्री ने बयान किया) कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़याज़ ने ख़बर दी और उन्हें ह़ारिष़ की बेटी (ज़ैनब

بْنَ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيَّ - جَدَّ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ - فَانْطَلَقُوا، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِالْهَدْأَةِ - وَهُوَ بَيْنَ عُسْفَانَ وَمَكَّةَ - وَذُكِرُوا لِحَيٍّ مِنْ هُذَيْلٍ يُقَالُ لَهُمْ بَنُو لِحْيَانَ، فَنَفَرُوا لَهُمْ قَرِيبًا مِنْ مِائَتَيْ رَجُلٍ كُلُّهُمْ رَامٍ، فَاقْتَصُّوا آثَارَهُمْ حَتَّى وَجَدُوا مَأْكَلَهُمْ تَمْرًا تَزَوَّدُوهُ مِنَ الْمَدِينَةِ فَقَالُوا هَذَا تَمْرُ يَثْرِبَ فَاقْتَصُّوا آثَارَهُمْ. فَلَمَّا رَآهُمْ عَاصِمٌ وَأَصْحَابُهُ لَجَؤُوا إِلَى فَدْفَدٍ، وَأَحَاطَ بِهِمُ الْقَوْمُ، فَقَالُوا لَهُمْ: انْزِلُوا وَأَعْطُونَا بِأَيْدِيكُمْ، وَلَكُمُ الْعَهْدُ وَالْمِيثَاقُ وَلاَ نَقْتُلُ مِنْكُمْ أَحَدًا. قَالَ عَاصِمُ بْنُ ثَابِتٍ أَمِيرُ السَّرِيَّةِ: أَمَّا أَنَا فَوَ اللهِ لاَ أَنْزِلُ الْيَوْمَ فِي ذِمَّةِ كَافِرٍ، اللَّهُمَّ أَخْبِرْ عَنَّا نَبِيَّكَ، فَرَمَوْهُمْ بِالنَّبْلِ، فَقَتَلُوا عَاصِمًا فِي سَبْعَةٍ. فَنَزَلَ إِلَيْهِمْ ثَلاَثَةُ رَهْطٍ بِالْعَهْدِ وَالْمِيثَاقِ، مِنْهُمْ خُبَيْبٌ الأَنْصَارِيُّ وَابْنُ دَثِنَةَ وَرَجُلٌ آخَرُ. فَلَمَّا اسْتَمْكَنُوا مِنْهُمْ أَطْلَقُوا أَوْتَارَ قِسِيِّهِمْ فَأَوْثَقُوهُمْ، فَقَالَ الرَّجُلُ الثَّالِثُ: هَذَا أَوَّلُ الْغَدْرِ، وَاللهِ لاَ أَصْحَبُكُمْ، إِنَّ فِي هَؤُلاَءِ لأُسْوَةً - يُرِيدُ الْقَتْلَى - فَجَرَّرُوهُ وَعَالَجُوهُ عَلَى أَنْ يَصْحَبَهُمْ فَأَبَى، فَقَتَلُوهُ، فَانْطَلَقُوا بِخُبَيْبٍ وَابْنِ دَثِنَةَ حَتَّى بَاعُوهُمَا بِمَكَّةَ بَعْدَ وَقِيعَةِ بَدْرٍ، فَابْتَاعَ خُبَيْبًا بَنُو الْحَارِثِ بْنِ عَامِرِ بْنِ نَوْفَلِ بْنِ عَبْدِ

(राजेअ : 97)

وَشَعْبَانَ)). [راجع: ٦٧]

तश्रीह : हुआ ये था कि अरबों की ये भी एक जहालत थी कि वो कभी मुहर्रम को सफ़र कर देते। कहीं अपने अग़राज़े फ़ासिदा के तहत ज़िल्हिज्ज को मुहर्रम बना देते। ग़र्ज़ कुछ अजीब ख़ब्त मचा रखा था। आँहज़रत (ﷺ) को अल्लाह पाक ने सहीह महीना बतला दिया। ज़माना के घूम आने से यही मतलब है कि जो असल महीना उस दिन से शुरू हुआ था, जिस दिन उसने ज़मीन आसमान पैदा किये थे। इसी हिसाब से अब सहीह महीना क़ायम हो गया। उससे क़मरी महीनों की फ़ज़ीलत भी षबित हुई, जिनसे माह व साल का हिसाब ऐन फ़ितरत के मुताबिक़ है। जिसका दिन शाम को ख़त्म होता और सुबह से शुरू होता है। उसका महीना कभी तीस दिन का और कभी 29 दिन का होता है। उसका हिसाब हर मुल्क में रूइयते हिलाल पर मौक़ूफ़ है।

٣١٩٨- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ سَعِيْدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ: أَنَّهُ خَاصَمَتْهُ أَرْوَى - فِي حَقٍّ زَعَمَتْ أَنَّهُ انْتَقَصَهُ لَهَا - إِلَى مَرْوَانَ، فَقَالَ سَعِيْدٌ: أَنَا أَنْتَقِصُ مِنْ حَقِّهَا شَيْئًا؟ أَشْهَدُ لَسَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((مَنْ أَخَذَ شِبْرًا مِنَ الأَرْضِ ظُلْمًا فَإِنَّهُ يُطَوَّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ سَبْعِ أَرَضِيْنَ)). قَالَ ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: لِي سَعِيْدُ بْنُ زَيْدٍ: ((دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ...)). [راجع: ٢٤٥٢]

3198. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) ने कि अर्वा बिन्ते अबी औस से उनका एक (ज़मीन के) बारे में झगड़ा हुआ। जिसके बारे में अरवा कहती थी कि सईद ने मेरी ज़मीन छीन ली। ये मुक़द्दमा ख़लीफ़ा मरवान के यहाँ फ़ैसला के लिये गया जो मदीना का हाकिम था। सईद (रज़ि.) ने कहा भला क्या मैं उनका हक़ दबा लूँगा, मैं गवाही देता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना है कि जिसने एक बालिश्त ज़मीन भी ज़ुल्म से किसी की दबा ली तो क़यामत के दिन सातों ज़मीनों का तौक़ उसकी गर्दन में डाला जाएगा। इब्ने अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, और उनसे सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मौजूद था (तब आपने ये हदीष बयान की थी)। (राजेअ : 2452)

٣- بَابُ فِي النُّجُوم

बाब 3 : सितारों का बयान

وَقَالَ قَتَادَةُ ﴿وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ﴾ [الملك:٥]: خُلِقَ هَذِهِ النُّجُوم لِثَلاَثٍ: جَعَلَهَا زِيْنَةً لِلسَّمَاءِ، وَرُجُومًا لِلشَّيَاطِيْنِ، وَعَلاَمَاتٍ يُهْتَدَي بِهَا، فَمَنْ تَأَوَّلَ فِيْهَا بِغَيْرِ ذَلِكَ أَخْطَأَ وَأَضَاعَ نَصِيْبَهُ وَتَكَلَّفَ مَا لاَ عِلْمَ لَهُ بِهِ.

क़तादा ने (क़ुर्आन मजीद की इस आयत के बारे में), कि मैंने ज़ीनत दी आसमाने दुनिया को (तारों के) चराग़ों से कहा कि अल्लाह तआला ने उन सितारों को तीन फ़ायदे के लिये पैदा किया है। उन्हें आसमान की ज़ीनत बनाया, शयातीन पर मारने के लिये बनाया। और (रात की अंधेरियों मे) उन्हें सहीह रास्ते पर चलते रहने के लिये निशानात क़रार दिया। पस जिस शख़्स ने उनके सिवा दूसरी बातें कहीं, उसने ग़लती की, अपना हिस्सा तबाह

किया (अपना वक़्त ज़ाया किया या अपना ईमान खोया) और जो बात ग़ैब की मा'लूम नहीं हो सकती उसको उसने मा'लूम करना चाहा। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि सूरह कहफ़ में लफ़्ज़ हशीम है उसका मा'नी मवेशियों का चारा। ये लफ़्ज़ सूरह अ़बस में है और सूरह रहमान में लफ़्ज़ अल अनाम बामा'नी मख़्लूक़ है और लफ़्ज़ बरज़ख़ बमा'नी पर्दा है। और मुजाहिद ताबेई ने कहा कि लफ़्ज़ अल्फ़ाफ़ा बमा'नी मुतल्लफ़ा है। उसके मा'नी गहरे लिपटे हुए। अल ग़लब भी बमा'नी अल् मुतल्लफा और लफ़्ज़ फ़िराशा बमा'नी मिहादा है। जैसे अल्लाह तआला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया। वलकुम फ़िल् अरज़ि मुस्तक़र्र (मुस्तक़र्र भी बमा'नी मिहाद है) और सूरह अअराफ़ में जो लफ़्ज़ नकिदा है उसका मा'नी थोड़ा है।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿هَشِيمًا﴾ مُتَغَيِّرًا. وَالأَبُّ: مَا يَأْكُلُ الأَنْعَامُ. وَالأَنَامُ الْخَلْقُ. بَرْزَخٌ: حَاجِبٌ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿أَلْفَافًا﴾: مُلْتَفَّةً. وَالْغُلْبُ: الْمُلْتَفَّةُ. فِرَاشًا: مِهَادًا. كَقَوْلِهِ: ﴿وَلَكُمْ فِي الأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ﴾، ﴿نَكِدًا﴾: قَلِيلاً.

तश्रीह: हज़रत क़तादा के क़ौल को अ़ब्द बिन हुमैद ने वस्ल किया है। उससे सितारा शनासों (ज्योतिषियों) का रद्द हुआ जो गुमान करते हैं कि सितारों से लोगों पर असर पड़ता है। सच फ़र्माया कि **कज़िबल्मुन्जिमून व रब्बिल कअ़बति** का'बा के रब की क़सम नजूमी झूठे हैं जो सितारों को जुम्ला ताष़ीरात का मालिक बताते हैं।

बाब 4 : सूरह रहमान की उस आयत की तफ़्सीर कि सूरज और चाँद दोनों ह़िसाब से चलते हैं

٤- بَابُ صِفَةِ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ ﴿بِحُسْبَانٍ﴾

मुजाहिद ने कहा या'नी चक्की की तरह घूमते हैं और दूसरे लोगों ने यूँ कहा या'नी ह़िसाब से मुक़र्ररह मंजिलों में फ़िरते हैं, ज़्यादा नहीं बढ़ सकते। लफ़्ज़े हुस्बान हिसाब की जमा है। जैसे लफ़्ज़ शिहाब की जमा शह्बान है। और सूरह वश् शम्स मे जो लफ़्ज़ ज़ुहाहा आया है। ज़ुहा रोशनी को कहते हैं और सूरह यासीन में जो ये आया है कि सूरज चाँद को नहीं पा सकता, या'नी एक की रोशनी दूसरे को मांद नहीं कर सकती न उनको ये बात सज़ावार है और उसी सूरत में जो अल्फ़ाज़ वल्लैलु साबिक़ुन्नहार हैं उनका मत़लब ये कि दिन और रात हर एक-दूसरे के त़ालिब होकर लपके जा रहे हैं और उसी सूरह में लफ़्ज़ अन्सलख़ा का मा'नी ये है कि दिन को रात से और रात को दिन से मैं निकाल लेता हूं और सूरह हाक़्क़ा में जो वाहिया का लफ़्ज़ है। वहिया के मा'नी फट जाना, और उसी सूरत में जो ये है (वल मलकु अ़ला अरजाइहा) या'नी फ़रिश्ते आसमानों के किनारों पर होंगे जब तक वो फटेगा नहीं। जैसे कहते हैं वो कुँए के किनारे पर है और वन् नाज़िआत में जो लफ़्ज़ व अग़्तशा और सूरह

قَالَ مُجَاهِدٌ كَحُسْبَانِ الرَّحَى. وَقَالَ غَيْرُهُ: بِحِسَابٍ وَمَنَازِلَ لاَ يَعْدُوَانِهَا. حُسْبَانٌ: جَمَاعَةُ الْحِسَابِ، مِثْلُ شِهَابٍ وَشُهْبَانٍ. ضُحَاهَا: ضَوْؤُهَا. أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ: لاَ يَسْتُرُ ضَوْءُ أَحَدِهِمَا ضَوْءَ الآخَرِ، وَلاَ يَنْبَغِي لَهُمَا ذَلِكَ. سَابِقُ النَّهَارِ: يَتَطَالَبَانِ حَثِيثَانِ. نَسْلَخُ: نُخْرِجُ أَحَدَهُمَا مِنَ الآخَرِ، وَنُجْرِي كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا: وَاهِيَةٌ: وَهْيُهَا تَشَقُّقُهَا. أَرْجَائِهَا: مَا لَمْ يَنْشَقَّ مِنْهَا، فَهِيَ عَلَى حَافَتَيْهَا كَقَوْلِكَ: عَلَى أَرْجَاءِ الْبِئْرِ. أَغْطَشَ وَجَنَّ: أَظْلَمَ. وَقَالَ الْحَسَنُ: كُوِّرَتْ تُكَوَّرُ حَتَّى يَذْهَبَ ضَوْؤُهَا. وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ:

जुदा चलने वाली हवाएँ लवाक़िह़ लाक़ितुन की जमा है या'नी वो हवाएँ जो पानी को उठाए हुए चलती हैं गोया ह़ामला हैं। मौलाना जमालुद्दीन अफ़ग़ानी कहते हैं कि ह़ामला करने वाली हवा का मा'नी उसूले नबातात की रू से ठीक है क्योंकि इल्मे नबातात में ष़ाबित हुआ है कि हवा नर पेड़ का माद्दा उड़ाकर मादा पेड़ पर ले जाती है। इस वजह से पेड़ ख़ूब फलता फूलता है गोया हवा दरख़्तों को ह़ामला करती है। तह़क़ीक़ात से भी यही मुशाहिदा हुआ है।

3205. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने, उनसे मुजाहिद ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बादे स़बा (मश्रिक़ी हवा) के ज़रिया मेरी मदद की गई और क़ौमे आ़द, बादे दबूर (मग़्रिबी हवा) से हलाक कर दी गई थी। (राजेअ़ : 1035)

٣٢٠٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((نُصِرْتُ بِالصَّبَا أُهْلِكَتْ عَادٌ بِالدَّبُورِ))

[راجع: ١٠٣٥]

3206. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अ़ता ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) बादल का कोई ऐसा टुकड़ा देखते जिससे बारिश की उम्मीद होती तो आप कभी आगे आते, कभी पीछे जाते, कभी घर के अंदर तशरीफ़ लाते, कभी बाहर आ जाते और चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल जाता लेकिन जब बारिश होने लगती तो फिर ये क़ैफ़ियत बाक़ी न रहती। एक बार ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने उसके बारे में आपसे पूछा। तो आपने फ़र्माया। मैं नहीं जानता मुम्किन है ये बादल भी वैसा ही हो जिसके बारे में क़ौमे आ़द ने कहा था, जब उन्होंने बादल को अपनी वादियों की तरफ़ आते देखा था। आख़िर आयत तक (कि उनके लिये रह़मत का बादल आया है, ह़ालाँकि वो अ़ज़ाब का बादल था)। (दीगर मक़ाम : 4829)

٣٢٠٦- حَدَّثَنَا مَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا رَأَى مَخِيلَةً فِي السَّمَاءِ أَقْبَلَ وَأَدْبَرَ وَدَخَلَ وَخَرَجَ وَتَغَيَّرَ وَجْهُهُ، فَإِذَا أَمْطَرَتِ السَّمَاءُ سُرِّيَ عَنْهُ، فَعَرَّفَتْهُ عَائِشَةُ ذَلِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا أَدْرِي! كَمَا قَالَ قَوْمٌ: ﴿فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ﴾)) الآية [الأحقاف : ٢٤].

[طرفه في : ٤٨٢٩].

तश्रीह़: हवा भी अल्लाह की एक मख़्लूक़ है जो मुख़्तलिफ़ ताष़ीर रखती है और मख़्लूक़ात की ज़िन्दगी में जिसका क़ुदरत ने बड़ा दख़ल रखा है। क़ौमे आद पर अल्लाह ने क़ह़त का अ़ज़ाब नाज़िल किया। उन्होंने अपने कुछ लोगों को मक्का शरीफ़ भेजा कि वहाँ जाकर बारिश की दुआ़ करें। मगर वहाँ वो लोग ऐ़श व इ़शरत में पड़कर दुआ़ करना भूल गये इधर क़ौम की बस्तियों पर बादल छाये। क़ौम ने समझा कि ये हमारे उन आदमियों की दुआ़ओं का अष़र है। मगर उस बादल ने अ़ज़ाब की शक्ल इख़्तियार करके उस क़ौम को तबाह कर दिया।

बाब 6 : फ़रिश्तों का बयान

٦- بَابُ ذِكْرِ الْمَلاَئِكَةِ

मिन जुम्ला उसूले ईमान में एक ये भी है कि अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान लाए। वो अल्लाह के मुअ़ज़्ज़ज़ बन्दे हैं। उनके जिस्म लत़ीफ़ हैं वो हर शक्ल में जाहिर हो सकते हैं। वो सब नेक और अल्लाह के ताबेदार बन्दे हैं। फ़रिश्तों का इंकार करना कुफ़्र है। उनके वजूद पर तमाम कुतुबे आसमानी व अंबिया-ए-किराम का इत्तिफ़ाक़ है।

क़ाल जुम्हूरू अहलिल्कलामि मिनल्मुस्लिमीन अल्मलाइकतु अज्सामुन लत़ीफतुन उअ़्तीयत क़ुदरतुन अलत्तशक्कुलि बिअश्कालिन मुख़्तलिफतिन व मसाकिनुहा अस्समावातव अब्त़लमन क़ाल इन्नहल्कवाकिबु औ इन्नहल्अन्फसुल्ख़ैरतुल्लती फारकत अज्सादहा व ग़ैरहू ज़ालिक मिनल्अक़्वालिल्लती ला यूजदु

आमादा किया। अल्लाह पाक उन सबको बरकाते दारेन से नवाज़ियो। आमीन षुम्म आमीन।

3209. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुख़लद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे मूसा बिन उ़क़्बा ने ख़बर दी, उन्हे नाफ़ेअ ने, उन्होंने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। और इस रिवायत की मुताबअ़त अबू आ़सिम ने इब्ने जुरैज से की है कि मुझे मूसा बिन उ़क़्बा ने ख़बर दी उन्हें नाफ़ेअ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से फ़र्माता है कि अल्लाह तआ़ला फ़लाँ शख़्स से मुहब्बत करता है। तुम भी इससे मुहब्बत रखो, चुनाँचे जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) भी उससे मुहब्बत रखने लगते हैं। फिर जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) तमाम अहले आसमान को पुकार कर कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़लाँ शख़्स से मुहब्बत रखता है। इसलिये तुम सब लोग उससे मुहब्बत रखो, चुनाँचे तमाम आसमान वाले उससे मुहब्बत रखने लगते हैं। उसके बाद रूए ज़मीन वाले भी उसको मक़्बूल समझते हैं। (दीगर मक़ाम : 6040, 7485)

٣٢٠٩– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا مَخْلَدٌ، قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: قَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَتَابَعَهُ أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِيْ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَحَبَّ اللهُ الْعَبْدَ نَادَى جِبْرِيْلَ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحْبِبْهُ، فَيُحِبُّهُ جِبْرِيْلُ. فَيُنَادِي جِبْرِيْلُ فِي أَهْلِ السَّمَاءِ. إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحِبُّوهُ، فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ. ثُمَّ يُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي الأَرْضِ)).
[طرفاه في : ٦٠٤٠، ٧٤٨٥].

तश्रीह : इस्माईल की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि जब अल्लाह किसी बन्दे से दुश्मनी करता है तो जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से ज़ाहिर करता है फिर जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) और सारे फ़रिश्ते उसके दुश्मन हो जाते हैं यहाँ तक कि रूए ज़मीन पर उसके लिये बुराई फैल जाती है। इस ह़दीष़ से अल्लाह के कलाम में आवाज़ और पुकार षाबित हुई और उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि अल्लाह के कलाम में स़ौत (आवाज़) और हुरूफ़ नहीं हैं।

3210. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें लैष़ ने ख़बर दी, उनसे इब्ने अबी जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हहरा आइशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया था कि फ़रिश्ते अ़नान मे उतरते हैं और अ़नान से मुराद बादल हैं। यहाँ फ़रिश्ते उन कामों का ज़िक्र करते हैं जिनका फ़ैस़ला आसमान में हो चुका होता है। और यहीं से शयात़ीन कुछ बातें चोरी छुपे उड़ा लेते हैं। फिर काहिनों को उसकी ख़बर कर देते

٣٢١٠– حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ الْمَلاَئِكَةَ تَنْزِلُ فِي الْعَنَانِ – وَهُوَ السَّحَابُ – فَتَذْكُرُ الأَمْرَ قُضِيَ فِي السَّمَاءِ، فَتَسْتَرِقُ الشَّيَاطِيْنُ السَّمْعَ

3210. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें लैष़ ने ख़बर दी, उनसे इब्ने अबी जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हहरा आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया था कि फ़रिश्ते अ़नान मे उतरते हैं और अ़नान से मुराद बादल हैं। यहाँ फ़रिश्ते उन का़मों का ज़िक्र करते हैं जिनका फ़ैसला आसमान में हो चुका होता है। और यहीं से शयातीन कुछ बातें चोरी छुपे उड़ा लेते हैं। फिर काहिनों को उसकी ख़बर कर देते

٣٢١٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ الْمَلاَئِكَةَ تَنْزِلُ فِي الْعَنَانِ - وَهُوَ السَّحَابُ - فَتَذْكُرُ الأَمْرَ قُضِيَ فِي السَّمَاءِ، فَتَسْتَرِقُ الشَّيَاطِيْنُ السَّمْعَ

हैं और ये काहिन सौ झूठ अपनी त़रफ़ से मिलाकर बयान करते हैं।

(दीगर मक़ाम : 3288, 5762, 6213, 7561)

فَتَسْمَعُهُ فَتُوحِيْهِ إِلَى الْكُهَّانِ، فَيَكْذِبُوْنَ مَعَهَا مِائَةَ كَذِبَةٍ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ)).

[أطرافه في: ٣٢٨٨، ٥٧٦٢، ٦٢١٣،

فَتَسْمَعُهُ فَتُوحِيهِ إِلَى الْكُهَّانِ، فَيَكْذِبُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَذِبَةٍ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ)).

[أطرافه في: ٣٢٨٨، ٥٧٦٢، ٦٢١٣، ٧٥٦١].

हैं और ये काहिन सौ झूठ अपनी तरफ़ से मिलाकर बयान करते हैं। (दीगर मक़ाम : 3288, 5762, 6213, 7561)

٣٢١١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَالأَغَرِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((إِذَا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ كَانَ عَلَى كُلِّ بَابٍ مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ الْمَلاَئِكَةُ يَكْتُبُونَ الأَوَّلَ فَالأَوَّلَ، فَإِذَا جَلَسَ الإِمَامُ طَوَوا الصُّحُفَ وَجَاؤُوا يَسْتَمِعُونَ الذِّكْرَ)). [راجع: ٩٢٩]

3211. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा और अग़र ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब जुमा का दिन आता है तो मस्जिद के हर दरवाज़े पर फ़रिश्ते खड़े हो जाते हैं और सबसे पहले आने वाले और फिर उसके बाद आने वालों को नम्बर वार लिखते जाते हैं। फिर जब इमाम (ख़ुत्बे के लिये मिम्बर पर) बैठ जाता है तो ये फ़रिश्ते अपने रजिस्टर बन्द कर लेते हैंऔर ज़िक्र सुनने लग जाते हैं (ये ह़दीष़ किताबुल जुम्आ में मज़्कूर हो चुकी है यहाँ फ़रिश्तों का वजूद ष़ाबित करना मक़्सूद है)। (राजेअ़ : 929)

٣٢١٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ قَالَ: ((مَرَّ عُمَرُ فِي الْمَسْجِدِ وَحَسَّانُ يُنْشِدُ فَقَالَ: كُنْتُ أُنْشِدُ فِيهِ وَفِيهِ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنْكَ. ثُمَّ الْتَفَتَ إِلَى أَبِي هُرَيْرَةَ فَقَالَ: أَنْشُدُكَ بِاللهِ أَسَمِعْتَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((أَجِبْ عَنِّي، اللَّهُمَّ أَيِّدْهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ؟)) قَالَ : نَعَمْ)).

[راجع: ٤٥٣]

3212. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो ह़स्सान (रज़ि.) शे'र पढ़ रहे थे। उन्होंने मस्जिद में शे'र पढ़ने पर नापसन्दीदगी फ़र्माई तो ह़स्सान (रज़ि.) ने कहा कि मैं उस वक़्त यहाँ शे'र पढ़ा करता था जब आपसे बेहतर शख़्स (आँह़ज़रत ﷺ) यहाँ तशरीफ़ रखते थे। फिर ह़ज़रत ह़स्सान (रज़ि.) ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहा कि मैं तुमसे अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूँ क्या रसूलल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते तुमने नहीं सुना था कि ऐ ह़स्सान! (कुफ़्फ़ारे मक्का को) मेरी तरफ़ से जवाब दे। ऐ अल्लाह! रूहुल क़ुदस के ज़रिये ह़स्सान की मदद कर। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि हाँ बेशक (मैंने सुना था)। (राजेअ़ : 453)

इससे ह़म्दो—नअ़त के अश्अ़ार पढ़ने और कहने का जवाज़ ष़ाबित हुआ।

٣٢١٣- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنِ الْبَرَاءِ

3213. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी बिन ष़ाबित ने और उनसे बराअ बिन

हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि अल्लाह के रास्ते में जो शख़्स किसी चीज़ का भी जोड़ा दे, तो जन्नत के चौकीदार फ़रिश्ते उसे बुलाएँगे कि ऐ फ़लाँ इस दरवाज़े से अंदर आ जा। अबूबक्र (रज़ि.) ने इस पर कहा कि ये तो वो शख़्स होगा जिसे कोई नुक़्सान न होगा। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे उम्मीद है कि तू भी उन्हीं में से होगा। (राजेअ : 1897)

قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ فِي سَبِيْلِ اللهِ دَعَتْهُ خَزَنَةُ الْجَنَّةِ: أَيْ فُلُ هَلُمَّ)). فَقَالَ أَبُوبَكْرٍ ذَاكَ الَّذِي لاَ تَوَى عَلَيْهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَرْجُو أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ)). [راجع: ١٨٩٧]

अल्लाह की राह में जो चीज़ भी ख़र्च की जाए वो जोड़े की शक्ल में ज़्यादा बेहतर है जैसे कपड़ों के दो जोड़े या दो रुपये या दो क़ुर्आन शरीफ़ वग़ैरह वग़ैरह। ये बेहतरीन स़दक़ा होगा। यहाँ फ़रिश्तों का अहले जन्नत को बुलाना उनका वजूद और उनका हम कलाम होना ष़ाबित करना मक़्सूद है।

3217. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अबू सलमा ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया, ऐ आइशा! ये जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आए हैं, तुमको सलाम कह रहे हैं। आइशा (रज़ि.) ने जवाब में कहा, व अलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाहि बरकातुहू। आप वो चीज़ें देखते हैं जिन्हे मैं नहीं देख सकती, आइशा (रज़ि.) की मुराद नबी करीम (ﷺ) से थी। (दीगर मक़ाम : 3768, 6201, 6249, 6153)

٣٢١٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: ((يَا عَائِشَةُ، هَذَا جِبْرِيْلُ يَقْرَأُ عَلَيْكِ السَّلاَمَ))، فَقَالَتْ وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ تَرَى مَا لاَ أَرَى. تُرِيْدُ النَّبِيَّ ﷺ)).

[أطرافه في: ٣٧٦٨، ٦٢٠١، ٦٢٤٩، ٦١٥٣].

3218. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे उ़मर बिन ज़र्र ने बयान किया, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि मुझसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे उ़मर बिन ज़र्र ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (अलै.) से एक मर्तबा फ़र्माया, हमसे मुलाक़ात के लिये जितनी मर्तबा आप आते हैं उससे ज़्यादा क्यूँ नहीं आते? बयान किया कि उस पर ये आयत नाज़िल हुई, और हम नहीं उतरते लेकिन तेरे रब के हुक्म से, उसी का है जो कुछ कि हमारे सामने है और जो कुछ हमारे पीछे है, आख़िर आयत तक। (दीगर मक़ाम : 4731, 7455)

٣٢١٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ. ح. قَالَ: وَحَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيْعٌ عَنْ عُمَرَ بْنِ ذَرٍّ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِجِبْرِيْلَ: ((أَلاَ تَزُورُنَا أَكْثَرَ مِمَّا تَزُورُنَا؟ قَالَ : فَنَزَلَتْ : ﴿وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلاَّ بِأَمْرِ رَبِّكَ، لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا﴾)). [مريم: ٦٤]. [طرفاه في: ٤٧٣١،

कि हमसे इब्ने मसऊद (रज़ि.) न बयान किया था आँहज़रत (ﷺ) हज़रत जिब्राइल (अलैहिस्सलाम) को (अपनी असली सूरत में) देखा, तो उनके छः सौ बाज़ू थे। (दीगर मक़ाम : 4856, 4857)

قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ مَسْعُودٍ أَنَّهُ رَأَى جِبْرِيْلَ لَهُ سِتُّمِائَةِ جَنَاحٍ.

[طرفاه في: ٤٨٥٦، ٤٨٥٧].

3233. हमसे हफ़्स बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने (अल्लाह तआ़ला के इर्शाद) लक़द रआ मन आयाति रब्बिहिल कुब्रा के बारे में बतलाया कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक सब्ज़ रंग का बिछौना देखा था जो आसमान में सारे किनारों को घेरे हुए था। (दीगर मक़ाम : 4858)

٣٢٣٣ - حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ﴿لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى﴾ قَالَ: ((رَأَى رَفْرَفًا أَخْضَرَ سَدَّ أُفُقَ السَّمَاءِ)).

[طرفه في: ٤٨٥٨].

इस पर हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) बैठे हुए थे या उनके पर थे।

3234. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, उनसे इब्ने औ़न ने, कहा हमको क़ासिम ने ख़बर दी और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जिसने गुमान किया कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा था तो उसने बड़ी झूठी बात ज़ुबान से निकाली, लेकिन आप (ﷺ) ने जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) को (मेअ़राज की रात में) उनकी असल सूरत में देखा था। उनके वजूद आसमान का किनारा ढांप लिया था। (दीगर मक़ाम : 3235, 4612, 4855, 7380, 7531)

٣٢٣٤ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ قَالَ أَنْبَأَنَا الْقَاسِمُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((مَنْ زَعَمَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ أَعْظَمَ، وَلَكِنْ قَدْ رَأَى جِبْرِيْلَ فِي صُوْرَتِهِ وَخَلْقِهِ سَادًّا مَا بَيْنَ الأُفُقِ)).

[أطرافه في : ٣٢٣٥، ٤٦١٢، ٤٨٥٥، ٧٣٨٠، ٧٥٣١].

3235. मुझसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया बिन अबी ज़ाइदा ने बयान किया, उनसे सईद बिन अल अश्वअ़ ने, उनसे शअ़बी ने और उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा (उनके उस कहने पर कि आँहज़रत (ﷺ) ने अल्लाह तआ़ला को देखा नहीं था) फिर अल्लाह तआ़ला के उस इर्शाद (षुम्मा दना फ़तदल्ला फ़कान क़ाब कौसेनि औ अदना) के बारे में आपका क्या ख़्याल है? उन्होंने कहा कि ये आयत तो जिब्राईल (अलै.) के बारे में है, वो इंसानी शक्ल मे आँहज़रत (ﷺ) के पास आया करते थे और इस मर्तबा अपनी इस शक्ल में

٣٢٣٥ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوْسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنِ ابْنِ الأَشْوَعِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ مَسْرُوْقٍ قَالَ: ((قُلْتُ لِعَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: فَأَيْنَ قَوْلُهُ: ﴿ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى، فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى﴾؟ قَالَتْ: ذَاكَ جِبْرِيْلُ كَانَ يَأْتِيْهِ فِي صُوْرَةِ الرَّجُلِ، وَإِنَّمَا أَتَاهُ هَذِهِ الْمَرَّةَ فِي صُوْرَتِهِ

आए थे जो असली थी और उन्होंने ने तमाम आसमान के किनारों को ढांप लिया था। (राजेअ : 3234)

الَّتِيْ هِيَ صُوْرَتُهُ، فَسَدَّ الأُفُقَ)).
[راجع: ٣٢٣٤]

तश्रीह : शबे मेअराज में आँहज़रत (ﷺ) ने अल्लाह को देखा था या नहीं, उस बारे में उलमा में इख़्तिलाफ़ है। हज़रत आइशा (रज़ि.) का ख़्याल यही है कि आपने अल्लाह पाक को नहीं देखा। बहरहाल आयते मज़्कूरा के बारे में हज़रत आयशा (रज़ि.) ने उन लोगों का रद्द किया जो उससे आपका दीदारे इलाही षाबित करते हैं। फ़र्माया कि आयत में जिसकी क़ुर्बत का ज़िक्र है। इससे हज़रत ज़िब्रईल (अलैहिस्सलाम) मुराद हैं।

व क़ालन्नववी अर्राजिह अल्मुख़्तार इन्द अक्षरिल्उलमाइ अन्नहू रअहू बि बस्रिही वल्लाहु आलम वत्तवक़्क़ुफ़ फ़ीहा लिअदमिद्दलाइलिल्वाज़िहति अला अहदिल्जानिबैनि खैर या'नी इमाम नववी (रह.) ने कहा कि अकषर उलमा के नज़दीक यही राजेह है कि आप (ﷺ) ने अपनी आँखों से अल्लाह तआला को देखा चूँकि किसी ख़्याल की ताईद में वाज़ेह दलाइल नहीं हैं, इसलिये इस मसले में ख़ामोश रहना बेहतर है।

3236. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे अबू रजाअ ने बयान किया, उनसे समुरह बिन जुन्दब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने आज रात (ख़्वाब में) देखा कि दो शख़्स मेरे पास आए। उन दोनों ने मुझे बताया कि वो जो आग जला रहा है। वो जहन्नम का दारोग़ा मालिक नामी फ़रिश्ता है। मैं जिब्रईल (अलै.) हूँ और ये मीकाइल हैं। (राजेअ : 845)

٣٢٣٦- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءَ عَنْ سَمُرَةَ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ رَجُلَيْنِ أَتَيَانِيْ قَالاَ : الَّذِيْ يُوقِدُ النَّارَ مَالِكٌ خَازِنُ النَّارِ، وَأَنَا جِبْرِيْلُ، وَهَذَا مِيْكَائِيْلُ)).
[راجع: ٨٤٥]

ये एक तवील हदीष का टुकड़ा है जो पारा नम्बर छः में गुज़र चुकी है। यहाँ उससे फ़रिश्तों का वजूद षाबित करना मक़्सूद है।

3237. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर किसी मर्द ने अपनी बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाया, लेकिन उसने आने से इंकार कर दिया और मर्द उस पर ग़ुस्सा होकर सो गया, तो सुबह तक फ़रिश्ते उस औरत पर ला'नत करते रहते हैं। इस रिवायत की मुताबअत, अबू हम्ज़ा, इब्ने दाऊद और अबू मुआविया ने आ'मश के वास्ते से की है। (दीगर मक़ाम : 5193, 5194)

٣٢٣٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا قَالَ أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا دَعَا الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ إِلَى فِرَاشِهِ فَأَبَتْ، فَبَاتَ غَضْبَانَ عَلَيْهَا، لَعَنَتْهَا الْمَلاَئِكَةُ حَتَّى تُصْبِحَ)). تَابَعَهُ شُعْبَةُ وَأَبُو حَمْزَةَ وَابْنُ دَاوُدَ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ. [طرفاه في : ٥١٩٣، ٥١٩٤].

तश्रीह : अबू अवाना के साथ इस हदीष को शुअबा और अबू हम्ज़ा और अब्दुल्लाह बिन दाऊद और अबू मुआविया ने भी आ'मश से रिवायत किया है। शुअबा की रिवायत ख़ुद मुअल्लिफ़ ने किताबुन्निकाह में वस्ल की है और अबू हम्ज़ा की रिवायत मौसूलन नहीं मिली और इब्ने दाऊद की रिवायत मुसद्दद ने अपनी बड़ी मुस्नद में वस्ल की और अबू मुआविया की रिवायत इमाम मुस्लिम और निसाई ने मौसूलन निकाली है।

इस हदीष को यहाँ लाने से फ़रिश्तों का वजूद षाबित करना मक़्सूद है कि वो ऐसी नाफ़र्मान औरत पर अल्लाह के हुक्म से रात भर ला'नत भेजते रहते हैं। इससे ये भी षाबित होता कि मर्द की इताअत औरत के लिये कितनी ज़रूरी है। मर्द की ख़्वाहिश

किया, उनसे यह्या ने, उनसे अबू सलमा ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्यूँ न मैं तुम्हें दज्जाल के बारे में एक ऐसी बात बता दूँ जो किसी नबी ने अपनी क़ौम को नहीं बताई। वो काना होगा और जन्नत और जहन्नम जैसी चीज़ लाएगा। पस जिसे वो जन्नत कहेगा दरह क़ीक़त वही जहन्नम होगी और मैं तुम्हें उसके फ़ित्ने से इसी तरह डराता हूँ, जैसे नूह (अलै.) ने अपनी क़ौम को डराया था। (राजेअ़ : 3057)

يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ أُحَدِّثُكُمْ حَدِيْثًا عَنِ الدَّجَّالِ مَا حَدَّثَ بِهِ نَبِيٌّ قَوْمَهُ: إِنَّهُ أَعْوَرُ، وَإِنَّهُ يَجِيْءُ مَعَهُ بِمِثَالِ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، فَالَّتِي يَقُولُ إِنَّهَا الْجَنَّةُ هِيَ النَّارُ، وَإِنِّي أُنْذِرُكُمْ كَمَا أَنْذَرَ بِهِ نُوحٌ قَوْمَهُ)). [راجع: ٣٠٥٧]

तश्रीह : अल्लाह पाक अपने बन्दों को आज़माने के लिये दज्जाल को पहले कुछ कामों की त़ाक़त दे देगा फिर बाद में उसकी आजिज़ी ज़ाहिर कर देगा, ऐसी सूरत ख़ुद बता देगी कि वो अल्लाह नहीं है। अह़ादीष़ में नूह़ (अलै.) का ज़िक्र आया है बाब से यही मुनासबत है।

3339. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ियाद ने बयान किया, हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (क़यामत के दिन) नूह़ (अलै.) बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होंगे। अल्लाह तआ़ला दरयाफ़्त करेगा, क्या (मेरा पैग़ाम) तुमने पहुँचा दिया था? नूह़ (अलै.) अ़र्ज़ करेंगे मैंने तेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था, ऐ रब्बुल इ़ज़्ज़त! अब अल्लाह तआ़ला उनकी उम्मत से पूछेगा, क्या (नूह़ अलै. ने) ने तुम तक मेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो जवाब देंगे नहीं, हमारे पास तेरा कोई नबी नहीं आया। इस पर अल्लाह तआ़ला नूह़ (अलै.) से पूछेगा, इसके लिये आपकी त़रफ़ से कोई गवाही भी दे सकता है? वो अ़र्ज़ करेंगे कि मुह़म्मद (ﷺ) और उनकी उम्मत (के लोग मेरे गवाह हैं) चुनाँचे हम उस बात की शहादत देंगे कि नूह़ (अलै.) ने पैग़ामे अल्लाह अपनी क़ौम तक पहुँचा दिया था और यही मफ़्हूम अल्लाह जल्ला ज़िक्रुहू के इस इर्शाद का है कि, और इसी त़रह हमने तुम्हें उम्मते वस्त़ बनाया, ताकि तुम लोगों पर गवाही दो और वस्त़ के मा'नी दरम्यानी के हैं। (दीगर मक़ाम : 4487, 7349)

٣٣٣٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنِ زِيَادٍ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَجِيْءُ نُوحٌ وَأُمَّتُهُ. فَيَقُولُ اللهُ تَعَالَى: هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ أَيْ رَبِّ. فَيَقُولُ لأُمَّتِهِ: هَلْ بَلَّغَكُمْ؟ فَيَقُولُونَ: لاَ، مَا جَاءَنَا مِنْ نَبِيٍّ. فَيَقُولُ لِنُوحٍ مَنْ يَشْهَدُ لَكَ؟ فَيَقُولُ: مُحَمَّدٌ ﷺ وَأُمَّتُهُ، فَنَشْهَدُ أَنَّهُ قَدْ بَلَّغَ، وَهُوَ قَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ﴾ [البقرة: ١٤٣] وَالْوَسَطُ الْعَدْلُ. [طرفاه في : ٤٤٨٧، ٧٣٤٩].

3340. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन नस़र ने बयान किया, हमसे मुह़म्मद बिन उ़बैद ने बयान किया, हमसे अबू ह़य्यान यह़्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.)

٣٣٤٠- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا أَبُو حَيَّانَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ:

3369. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मालिक बिन अनस ने ख़बर दी। उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन मुहम्मद बिन अ़म्र बिन हज़्म ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें अ़म्र बिन सुलैम ज़रक़ी ने, उन्होंने कहा मुझको अबू हुमैद साएदी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि सहाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम आप पर किस तरह दरूद भेजा करें? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ कहा करो ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और उनकी बीवियों पर और उनकी औलाद पर जैसा कि तू ने रहमत नाज़िल फ़र्माई आले इब्राहीम पर और अपनी बरकत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और उनकी बीवियों और औलाद पर जैसा कि तूने बरकत नाज़िल फ़र्माई आले इब्राहीम पर। बेशक तो इंतिहाई ख़ूबियों वाला और अ़ज़्मत वाला है। (दीगर मक़ाम : 6360)

٣٣٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَمْرِو بْنُ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ أَخْبَرَنِي أَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّهُمْ قَالُوا: ((يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: قُولُوا: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ: إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ)). [طرفه في : ٦٣٦٠].

आल से मुराद वो लोग हैं जिन पर ज़कात हराम है। आपके अहले बैत या'नी हज़रत अ़ली और हज़रत फ़ातिमा और हज़रत हसन व हुसैन (रज़ि.) हैं। दरूद से मुराद ये है कि आपकी नस्ल बरकत के साथ दुनिया में हमेशा बाक़ी रहे।

3370. हमसे क़ैस बिन हफ़्स और मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू क़ुर्रह मुस्लिम बिन सालिम हम्दानी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा कअ़ब बिन उ़ज्रह (रज़ि.) से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्होंने कहा क्यूँ न मैं तुम्हें (हदीष़ का) एक तोहफ़ा पहुँचा दूँ जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था। मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ मुझे ये तोहफ़ा ज़रूर इनायत फ़र्माइये। उन्होंने बयान किया कि हमने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा था या रसूलल्लाह (ﷺ) हम आप पर और आपके अहले बैत पर किस तरह दरूद भेजा करें? अल्लाह तआ़ला ने सलाम भेजने का तरीक़ा तो हमें ख़ुद ही सिखा दिया है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ कहा करो, ऐ अल्लाह! अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद (ﷺ) पर और आले मुहम्मद (ﷺ) पर जैसा कि तूने अपनी रहमत नाज़िल फ़र्माई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम (ﷺ) पर। बेशक तू बड़ी ख़ूबियों वाला और बुज़ुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और

٣٣٧٠- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ وَمُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالاَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ حَدَّثَنَا أَبُو قُرَّةَ مُسْلِمُ بْنُ سَالِمٍ الْهَمْدَانِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عِيسَى سَمِعَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي لَيْلَى قَالَ: لَقِيَنِي كَعْبُ بْنُ عُجْرَةَ فَقَالَ: أَلاَ أُهْدِي لَكَ هَدِيَّةً سَمِعْتُهَا مِنَ النَّبِيِّ ﷺ؟ فَقُلْتُ: بَلَى فَأَهْدِهَا لِي، فَقَالَ: سَأَلْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ الصَّلاَةُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ، فَإِنَّ اللهَ قَدْ عَلَّمَنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ. قَالَ : ((قُولُوا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ

إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ)).

[طرفاه في : ٤٧٩٧، ٦٣٥٧].

आले मुहम्मद पर जैसा कि तू ने बरकत नाज़िल फ़र्माई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर। बेशक तू बड़ी ख़ूबियों वाला और बड़ी अ़ज़्मत वाला है। (दीगर मक़ाम : 4797, 6357)

तश्रीह : अहले बैत या'नी ह़ज़रत अ़ली और ह़ज़रत फ़ातिमा और ह़स्नैन मुराद हैं।

٣٣٧١- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنِ الْمِنْهَالِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعَوِّذُ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ وَيَقُولُ: إِنَّ أَبَاكُمَا كَانَ يُعَوِّذُ بِهَا إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ، مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لاَمَّةٍ)).

3371. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मिन्हाल ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ह़ज़रत ह़सन व ह़ुसैन (रज़ि.) के लिये पनाह त़लब किया करते थे और फ़र्माते थे कि तुम्हारे बुज़ुर्ग दादा (इब्राहीम अलै.) भी उन कलिमात के ज़रिये अल्लाह की पनाह इस्माईल और इस्ह़ाक़ (अलै.) के लिये मांगा करते थे, मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह के पूरे पूरे कलिमात के ज़रिये हर एक शैत़ान से और हर ज़हरीले जानवर से और हर नुक़्सान पहुँचाने वाली नज़रे बद से।

तश्रीह : मुज्तहिदे मुत्लक़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ तक जिस क़दर अह़ादीष़ इस बाब के तह़त में बयान की हैं उन सब में किसी न किसी पहलू से ह़ज़रत इब्राहीम और आले इब्राहीम का ज़िक्र मौजूद है और बाब और अह़ादीष़ में यही वजहे मुनासबत है। ज़िम्नी त़ौर पर अह़ादीष़ में और भी बहुत से मसाइल का ज़िक्र आ गया है जो तदबीर करने से मा'लूम किये जा सकते हैं। दरूद से मुराद दीन व दुनिया की वो बरकतें जो अल्लाह पाक ने ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) और उनकी औलाद को अ़त़ा फ़र्माई कि आज भी बेशतर अक़्वामे आ़लम का नस्ली ता'ल्लुक़ ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) से मिलता है और बिला शक अल्लाह पाक ने यही बरकात ह़ज़रत सय्यदना मुह़म्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) को अ़त़ा की हैं कि आपका कलिमा पढ़ने वाले आज रूए ज़मीन पर करोड़ों-करोड़ की ता'दाद में मौजूद हैं और रोज़ाना पंजवक़्ता फ़िज़ाए आसमानी में आपकी रिसालते ह़क़्क़ा का ऐलान इस शान से किया जाता है कि दुनिया के तमाम पेशवायाने मज़हब में नज़ीर नामुम्किन है। **अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिंव्व अ़ला आलि मुहम्मद व बारिक व सल्लिम आमीन**

١١- بَابُ قَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ﴾ الآيَةَ [الحجر: ٥١] ﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ: رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى﴾ إِلَى قَوْلِهِ : ﴿وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي﴾ الآيَةَ [البقرة : ٢٦٠]

बाब 11 : अल्लाह तआ़ला ने सूरह ह़िज्र में फ़र्माया, ऐ नबी! उन लोगों को इब्राहीम (अलै.) के मेहमानों का क़िस्स़ा सुनाइये

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया, ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को ज़िन्दा किस त़रह करेगा लेकिन ये स़िर्फ़ मैं इसलिये चाहता हूँ कि मेरे दिल को और ज़्यादा इत्मीनान हो जाए तक।

ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हज़रत दाऊद (अलै.) के लिये क़ुर्आन (या'नी ज़बूर) की क़िरअत बहुत आसान कर दी गई थी। चुनाँचे वो अपनी सवारी पर ज़ीन कसने का हुक्म देते और ज़ीन कसी जाने से पहले ही पूरी ज़बूर पढ़ लेते थे और आप सिर्फ़ अपने हाथों की कमाई खाते थे। उसकी रिवायत मूसा बिन उक़्बा ने की, उनसे सफ़्वान ने, उनसे अता बिन यसार ने, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ : 2073)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خُفِّفَ عَلَى دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ الْقُرْآنُ، فَكَانَ يَأْمُرُ بِدَوَابِّهِ فَتُسْرَجُ، فَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ قَبْلَ أَنْ تُسْرَجَ دَوَابُّهُ، وَلاَ يَأْكُلُ إِلاَّ مِنْ عَمَلِ يَدِهِ)) رَوَاهُ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ صَفْوَانَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٢٠٧٣]

तश्रीह : इस क़दर जल्द ज़बूर पढ़ लेना हज़रत दाऊद (अलै.) का एक मुअजिज़ा था। लेकिन अब आम मुसलमानों के लिये क़ुर्आन का ख़त्म तीन दिन से पहले करना सुन्नत के ख़िलाफ़ है। जिसने क़ुर्आन पाक तीन दिन से पहले और तीन से कम में ख़त्म किया उसने क़ुर्आन फ़हमी का हक़ अदा नहीं किया। हज़रत दाऊद (अलै.) अपने सब भाइयों में पस्त क़द थे इसलिये लोग उनको हिक़ारत की नज़र से देखते थे। लेकिन अल्लाह पाक ने हज़रत दाऊद (अलै.) को उनके भाइयों पर फ़ज़ीलत दी और उन पर ज़बूर नाज़िल फ़र्माई। इस तरह इंजील का फ़िक़रा सहीह हुआ कि जिस पत्थर को मेअमारों ने ख़राब देखकर फेंक दिया था, वही महल के कोने का सदरे नशीन हुआ। हज़रत दाऊद (अलै.) को अल्लाह तआला ने लोहे का काम बतौरे मुअजज़ा अता फ़र्माया कि लोहा उनके हाथ में मोम हो जाता और वो उनसे ज़िरहें और मुख़्तलिफ़ सामान बनाते। यही उनका ज़रिया-ए-मआश था। हदीष शरीफ़ में उनके रोज़े की भी ता'रीफ़ की गई है और क़ुर्आन मजीद में उनकी इबादत व रियाज़त और इनाबत इलल्लाह को बड़े अच्छे अंदाज़ में बयान किया गया है।

3418. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़बर मिली कि मैंने कहा है कि अल्लाह की क़सम! जब तक मैं ज़िन्दा रहूँगा, दिन में रोज़े रखूँगा और रात भर इबादत किया करूँगा । रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे पूछा कि क्या तुम्हीं ने ये कहा है कि अल्लाह की क़सम जब तक ज़िन्दा रहूँगा दिन भर रोज़े रखूँगा और रात भर इबादत करूँगा? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ मैंने ये जुम्ला कहा है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उसे निभा नहीं सकोगे, इसलिये रोज़ा भी रखा करो और बग़ैर रोज़े के भी रहा करो और रात मे इबादत भी किया करो और सोया भी करो। हर महीने में तीन दिन रोज़ा रखा करो, क्योंकि हर नेकी का बदला दस गुना मिलता है इस तरह रोज़े का ये तरीक़ा भी (षवाब के ए'तिबार से) ज़िन्दगी भर के रोज़े जैसा हो जाएगा। मैंने कहा कि मैं इससे अफ़ज़ल तरीक़ा की ताक़त रखता हूँ, ऐ अल्लाह के रसूल

٣٤١٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَعِيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ أَخْبَرَهُ وَأَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا قَالَ: أُخْبِرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنِّي أَقُولُ : وَاللهِ لأَصُومَنَّ النَّهَارَ وَلأَقُومَنَّ اللَّيْلَ مَا عِشْتُ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَنْتَ الَّذِي تَقُولُ : وَاللهِ لأَصُومَنَّ النَّهَارَ وَلأَقُومَنَّ اللَّيْلَ مَا عِشْتَ؟)) قُلْتُ : قَدْ قُلْتُهُ. قَالَ : ((إِنَّكَ لاَ تَسْتَطِيْعُ ذَلِكَ، فَصُمْ وَأَفْطِرْ، وَقُمْ وَنَمْ، وَصُمْ مِنَ الشَّهْرِ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ فَإِنَّ الْحَسَنَةَ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا، وَذَلِكَ مِثْلُ صِيَامِ الدَّهْرِ)).

فَقُلْتُ: إِنِّي أُطِيقُ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((فَصُمْ يَوْمًا وَأَفْطِرْ يَوْمَيْنِ)). قَالَ: قُلْتُ: إِنِّي أُطِيقُ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ)). قَالَ: ((فَصُمْ يَوْمًا وَأَفْطِرْ يَوْمًا، وَذَلِكَ صِيَامُ دَاوُدَ وَهُوَ أَعْدَلُ الصِّيَامِ)). قُلْتُ: إِنِّي أُطِيقُ أَفْضَلَ مِنْهُ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: ((لاَ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ)).

[راجع: ١١٣١]

(ﷺ)! आपने उस पर फ़र्माया कि फिर एक दिन रोज़ा रखा करो और दो दिन बग़ैर रोज़े के रहा करो। उन्होंने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया कि मैं इससे भी अफ़ज़ल तरीक़े की ताक़त रखता हूँ। आपने फ़र्माया कि फिर एक दिन रोज़ा रखा करो और एक दिन बग़ैर रोज़ा के रहा करो, हज़रत दाऊद (अलै.) के रोज़े का तरीक़ा भी यही था और यही सबसे अफ़ज़ल तरीक़ा है। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं इससे भी अफ़ज़ल तरीक़े की ताक़त रखता हूँ। आपने फ़र्माया कि उससे अफ़ज़ल और कोई तरीक़ा नहीं। (राजेअ : 1131)

٣٤١٩- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ أَبِي الْعَبَّاسِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلَمْ أُنَبَّأْ أَنَّكَ تَقُومُ اللَّيْلَ وَتَصُومُ النَّهَارَ؟ فَقُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ: فَإِنَّكَ إِذَا فَعَلْتَ هَجَمَتِ الْعَيْنُ، وَنَفِهَتِ النَّفْسُ، صُمْ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ، فَذَلِكَ صَوْمُ الدَّهْرِ، أَوْ كَصَوْمِ الدَّهْرِ. قُلْتُ: إِنِّي أَجِدُ بِي - قَالَ مِسْعَرٌ: يَعْنِي قُوَّةً - قَالَ: فَصُمْ صَوْمَ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ، وَكَانَ يَصُومُ يَوْمًا وَيُفْطِرُ يَوْمًا، وَلاَ يَفِرُّ إِذَا لاَقَى)).

[راجع: ١١٣١]

3419. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे मिस्अर ने बयान किया, कहा हमसे हबीब बिन अबी षाबित ने बयान किया, उनसे अबुल अब्बास ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया, क्या मेरी ये ख़बर सहीह है कि तुम रात भर इबादत करते हो और दिन भर (रोज़ाना) रोज़ा रखते हो? मैंने अर्ज़ किया कि जी हाँ। आपने फ़र्माया लेकिन अगर तुम इसी तरह करते रहे तो तुम्हारी आँखें कमज़ोर हो जाएँगी और तुम्हारा जी उकता जाएगा। हर महीने मे तीन रोज़े रखा करो कि यही (षवाब के ए'तिबार से) ज़िन्दगी भर का रोज़ा है, या (आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि) ज़िन्दगी भर के रोज़े की तरह है। मैंने अर्ज़ किया कि मैं अपने में महसूस करता हूँ, मिस्अर ने बयान किया कि आपकी मुराद क़ुव्वत से थी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर हज़रत दाऊद (अलै.) के रोज़े की तरह रोज़े रखा करो। वो एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन बग़ैर रोज़े के रहा करते थे और अगर दुश्मन से मुक़ाबला करते तो मैदान से भागा नहीं करते थे। (राजेअ : 1131)

अहादीषे मज़्कूरा में हज़रत दाऊद (अलै.) का ज़िक्र है। बाब से यही वजहे मुताबक़त है।

٣٨- بَابُ أَحَبُّ الصَّلاَةِ إِلَى اللهِ صَلاَةُ دَاوُدَ،

बाब 38 : हज़रत दाऊद (अलै.) का बयान

وَأَحَبُّ الصِّيَامِ إِلَى اللهِ صِيَامُ دَاوُدَ: كَانَ

सूरह बनी इस्राईल में अल्लाह ने फ़र्माया कि उसकी बारगाह में सबसे पसन्दीदा नमाज़ दाऊद (अलै.) की नमाज़ है और सबसे

शख़्स) जन्नत के आठ दरवाज़ों में से जिससे चाहे (दाख़िल होगा)।

جَنَادَةَ وزاد منْ أَبْوابِ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةِ أَيُّها شاءَ.

बाब 48 : सूरह मरयम में अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया (उस) किताब में मरयम का ज़िक्र कर जब वो अपने घरवालों से अलग होकर

एक पूरब रुख़ मकान में चली गई। लफ़्ज़ अम्बज़त नबज़ा से निकला है जैसे ह़ज़रत यूनुस के क़िस्से में फ़र्माया नबज़्नाहू या'नी मैंने उनको डाल दिया। शरक़िया पूरब रुख़ (या'नी मस्जिद से या उनके घर से पूरब की त़रफ़) फ़ा जाउहा के मा'नी उसको लाचार और बेक़रार कर दिया। तसाक़त़ गिरेगा। क़ज़िया दूर। फ़रिया बड़ा या बुरा। नसिय्या नाचीज़। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने ऐसा ही कहा। दूसरों ने कहा नसी कहते हैं ह़क़ीर चीज़ को (ये सदी से मन्क़ूल है) अबू वाइल ने कहा कि मरयम ये समझी कि परहेज़गार वही होता है जो अ़क़्लमन्द होता है। जब उन्होंने कहा (जिब्रईल अलै. को एक जवान मर्द की शक्ल में देखकर) अगर तू परहेज़गार है अल्लाह से डरता है। वकीअ़ ने इस्राईल से नक़ल किया, उन्होंने अबू इस्ह़ाक़ से, उन्होंने बराअ बिन आ़ज़िब से सरिय्या सुरयानी ज़ुबान में छोटी नहर को कहते हैं।

٤٨- باب ﴿وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذْ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا﴾ [مريم : ١٦]. فَنبذْناهُ : أَلْقَيْناهُ : اعْتَزَلَتْ شَرْقِيًّا: مِمَّا يَلِي الشَّرْق. ﴿فَأَجَاءَهَا﴾: أَفعَلْتُ من جِئْتُ، وَيُقَالُ: أَلْجَأَهَا اضْطَرَّهَا، ﴿تَسَّاقَطْ﴾ : تَسْقُطْ. ﴿قَصِيًّا﴾ : قَاصِيًا. ﴿فَرِيًّا﴾ عَظِيْمًا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : ﴿نَسِيًّا﴾ : لَمْ أَكُنْ شَيْئًا. وَقَالَ غَيْرُهُ النَّسِيُّ : الْحَقِيرُ. وَقَالَ أَبُو وَائِلٍ : عَلِمتْ مَرْيَمُ أَنَّ التَّقِيَّ ذُو نُهْبَةٍ حِيْنَ قَالَتْ : ﴿إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا﴾. وَقَالَ وَكِيْعٌ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ: ﴿سَرِيًّا﴾ نَهْرٌ صَغِيْرٌ بِالسُّرْيَانِيَةِ.

3436. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया गोद में तीन बच्चों के सिवा और किसी ने बात नहीं की। अव्वल ईसा (अलै.) (दूसरे का वाक़िया ये है कि) बनी इस्राईल में एक बुज़ुर्ग थे, नाम जुरैज था। वो नमाज़ पढ़ रहे थे कि उनकी माँ ने उन्हें पुकारा। उन्होंने (अपने दिल में) कहा कि मैं वालिदा का जवाब दूँ या नमाज़ पढ़ता रहूँ? उस पर उनकी वालिदा ने (गुस्सा होकर) बद् दुआ की, ऐ अल्लाह! उस वक़्त तक उसे मौत न आए जब तक ये ज़ानिया औरतों का मुँह न देख ले। जुरैज अपने इबादतख़ाने में रहा करते थे। एक मर्तबा उनके सामने एक फ़ाह़िशा औरत आई और उनसे बदकारी चाही लेकिन उन्होंने (उसकी ख़्वाहिश पूरी

٣٤٣٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا جَرِيْرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيْرِيْنَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لَمْ يَتَكَلَّمْ فِي الْمَهْدِ إِلاَّ ثَلاَثَةٌ: عِيْسَى. وَكَانَ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ جُرَيْجٌ كَانَ يُصَلِّي، جَاءَتْهُ أُمُّهُ فَدَعَتْهُ، فَقَالَ : أُجِيْبُهَا أَوْ أُصَلِّي؟ فَقَالَتْ: اللَّهُمَّ لاَ تُمِتْهُ حَتَّى تُرِيَهُ وُجُوهَ الْمُومِسَاتِ، وَكَانَ جُرَيْجٌ فِي صَوْمَعَتِهِ، فَتَعَرَّضَتْ لَهُ امْرَأَةٌ وَكَلَّمَتْهُ فَأَبَى، فَأَتَتْ رَاعِيًا فَأَمْكَنَتْهُ مِنْ نَفْسِهَا،

उनसे सफ़्वान बिन सुलैम ने, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। (राजेअ़ : 3443)

عُقْبَةَ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ. [راجع: ٣٤٤٣]

अ़लाती भाई वो जिनका बाप एक हो, माँ जुदा जुदा हों। इसी त़रह़ तमाम अंबिया का दीन एक है और फ़ुरूई मसाइल जुदा जुदा हैं।

3444. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ईसा इब्ने मरयम (अलै.) ने एक शख़्स को चोरी करते हुए देखा फिर उससे दरयाफ़्त फ़र्माया तूने चोरी की है? उसने कहा कि हर्गिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा और कोई मा'बूद नहीं। ह़ज़रत ईसा (अलै.) ने फ़र्माया कि मैं अल्लाह पर ईमान लाया और मेरी आँखों को धोखा हुआ।

٣٤٤٤- وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((رَأَى عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَجُلاً يَسْرِقُ، فَقَالَ لَهُ: أَسَرَقْتَ؟ قَالَ: كَلاَّ وَاللهِ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ. فَقَالَ عِيْسَى: آمَنْتُ بِاللهِ، وَكَذَّبْتُ عَيْنِي)).

तश्रीह : या'नी मोमिन झूठी क़सम नहीं खा सकता जब उसने क़सम खा ली तो मा'लूम हुआ कि वो सच्चा है। आँख से ग़लती मुम्किन है मष़लन उसके जैसा कोई दूसरा शख़्स हो। या दरह़क़ीक़त उसका फ़ेअ़ल चोरी न हो। उस माल में उसका कोई ह़क़ मुतअ़य्यन हो। बहुत से एह़तिमाल हो सकते हैं। कुछ ने कहा ऐसा कहने से ह़ज़रत ईसा की मुराद ये थी कि मोमिन को मोमिन की क़सम पर ऐसा भरोसा होना चाहिये जैसे आँख से देखने पर बल्कि इससे ज़्यादा। कुछ ने ये कहा मत़लब ये था कि क़ाज़ी को अपने इल्म और मुशाहिदे पर हुक्म देना दुरुस्त नहीं जब तक बाक़ायदा जुर्म के लिये षुबूत मुहय्या न हो जाए। (वह़ीदी)

3445. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुह्री से सुना, वो बयान करते थे कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने, उन्होंने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को मिम्बर पर ये कहते सुना था कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, मुझे मेरे मर्तबे से ज़्यादा न बढ़ाओ जैसे ईसा इब्ने मरयम (अलै.) को नस़ारा ने उनके मर्तबे से ज़्यादा बढ़ा दिया है। मैं तो स़िर्फ़ अल्लाह का बन्दा हूँ, इसलिये यही कहा करो (मेरे बारे में) कि मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ। (राजेअ़ : 2462)

٣٤٤٥- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ سَمِعَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ عَلَى الْمِنْبَرِ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ تُطْرُونِي كَمَا أَطْرَتِ النَّصَارَى ابْنَ مَرْيَمَ، فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ، فَقُولُوا : عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ)). [راجع: ٢٤٦٢]

तश्रीह : अल्लाह का ग़ुलाम, अल्लाह के ह़बीब, अल्लाह के ख़लील, अशरफ़ुल अंबिया आपकी ता'रीफ़ की ह़द यही है। जब क़ुर्आन में आपको अल्लाह का बन्दा फ़र्माया ये आयत उतरी, **लम्मा क़ाम अब्दुल्लाहि** (अल जिन्न : 19) तो आप निहायत ही ख़ुश हुए अल्लाह की उ़बूदियते ख़ालिस़ा बहुत बड़ा मर्तबा है। ये जाहिल क्या जानें। उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) की नअ़त यही समझ रखी है कि आपको अल्लाह बना दें या अल्लाह से भी एक दर्जा आगे चढ़ा दें। **कबुरत कलिमतन तख़रूजु मिन अफ़्वाहिहिम.** (वहीदी)

बिन यूसुफ़ ने बयान किया अबू अ़ब्दुल्लाह से रिवायत है और उनसे क़ुबैसा ने बयान किया कि ये वो मुर्तदीन हैं जिन्होंने ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के अ़हदे ख़िलाफ़त में कुफ़्र इख़्तियार किया था, और जिनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने जंग की थी। (राजेअ़ : 3349)

الْعَزِيزُ الْحَكِيمِ﴾. قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ الْفِرَبْرِيُّ: ذُكِرَ عِنْدَ أَبِي عَبْدِ اللهِ عَنْ قَبِيصَةَ قَالَ: ((هُمُ الْمُرْتَدُّونَ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوا عَلَى عَهْدِ أَبِي بَكْرٍ، فَقَاتَلَهُمْ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ)). [راجع: ٣٣٤٩]

और वो अहले बिदअ़त भी धुत्कार दिये जाएँगे जिन्होंने क़िस्म क़िस्म की बिदआ़त से इस्लाम को मस्ख़ कर डाला था जैसा कि दूसरी रिवायत में है कि उनको ह़ौज़े कौष़र से रोक दिया जाएगा। ख़ुद मा'लूम होने पर आँह़ज़रत (ﷺ) फ़र्माएँगे, **सुह़क़न लिमन ग़य्यर बअ़दी दीनन** उनके लिये दूरी हो जिन्होंने मेरे बाद मेरे दीन को बदल डाला। इन तमाम बयान की गई अह़ादीष़ में किसी न किसी त़रह़ से ह़ज़रत ईसा (अलै.) का ज़िक्र आया है। इसलिये उनको यहाँ लाया गया और यही बाब से वजहे मुनासबत है।

बाब 49 : ह़ज़रत ईसा बिन मरयम (अलै.) का आसमान से उतरना

٤٩ - بَابُ نُزُولِ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ

3448. हमसे इस्ह़ाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा हमको यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हों ने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, वो ज़माना क़रीब है कि ईसा बिन मरयम (अलै.) तुम्हारे दरम्यान एक आ़दिल ह़ाकिम की ह़ैषियत से नाज़िल होंगे। वो स़लीब को तोड़ देंगे, सुअर को मार डालेंगे और जिज़्या मौक़ूफ़ कर देंगे। उस वक़्त माल की इतनी क़षरत हो जाएगी कि कोई उसे लेने वाला नहीं मिलेगा। उस वक़्त का एक सज्दा दुनिया व मा फ़ीहा से बढ़कर होगा। फिर ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम्हारा जी चाहे तो ये आयत पढ़ लो, और कोई अहले किताब ऐसा नहीं होगा जो ईसा की मौत से पहले उस पर ईमान न लाए और क़यामत के दिन वो उन पर गवाह होंगे। (राजेअ़ : 2222)

٣٤٤٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَعِيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَيُوشِكَنَّ أَنْ يَنْزِلَ فِيْكُمْ ابْنُ مَرْيَمَ حَكَمًا عَدْلاً، فَيَكْسِرَ الصَّلِيْبَ، وَيَقْتُلَ الْخِنْزِيْرَ، وَيَضَعَ الْجِزْيَةَ، وَيَفِيْضَ الْمَالُ حَتَّى لاَ يَقْبَلَهُ أَحَدٌ، حَتَّى تَكُونَ السَّجْدَةُ الْوَاحِدَةُ خَيْرًا مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا)). ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: وَاقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ ﴿وَإِنْ مِن أَهلِ الْكِتَابِ إِلاَّ لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ، وَيَومَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا﴾.
[راجع: ٢٢٢٢]

आयत का मत़लब ये हुआ कि क़यामत के क़रीब जो यहूद व नस़ारा होंगे और ह़ज़रत ईसा उनके ज़माने में नाज़िल होंगे तो उस ज़माने के अहले किताब उनके ऊपर ईमान ले आएँगे। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से ऐसा ही मन्क़ूल है।

3449. हमसे इब्ने बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे ह़ज़रत अबू क़तादा अंस़ारी (रज़ि.) के गुलाम नाफ़ेअ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारा उस वक़्त क्या ह़ाल होगा जब ईसा इब्ने मरयम तुममें उतरेंगे (तुम नमाज़ पढ़ रहे होगे) और तुम्हारा इमाम तुम ही में से होगा। इस रिवायत की मुताबअ़त अ़क़ील और औज़ाई ने की। (राजेअ़ : 2222)

٣٤٤٩- حَدَّثَنَا ابْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ الأَنْصَارِيِّ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيكُمْ وَإِمَامُكُمْ مِنْكُمْ)) تَابَعَهُ عُقَيْلٌ وَالأَوْزَاعِيُّ. [راجع: ٢٢٢٢]

तश्रीह : आख़िर ज़माने में ह़जरत ईसा बिन मरयम (अलै.) के आसमान से नाज़िल होने पर उम्मते इस्लामिया का इज्माअ़ है। आयते क़ुर्आनी **व इन्ना मिन अहलिल किताब** अल्ख़ इस अ़क़ीदा पर नस़्से क़त़ई है और अह़ादीष़े स़ह़ीह़ा इस बारे में मौजूद हैं। उस आख़री ज़माने में चन्द नेचरिस्ट (प्रकृतिवादी) क़िस्म के लोगों ने इस अ़क़ीदे का इंकार किया और पंजाब के एक शख़्स मिर्ज़ा क़ादयानी ने इस इंकार को बहुत कुछ उछाला और तमाम मुसलमानाने सलफ़ व ख़लफ़ के ख़िलाफ़ उनकी मौत का झूठा अ़क़ीदा मशहूर किया, जो स़रीह़ बात़िल है। किसी भी रासिख़ुल ईमान मुसलमान को ऐसे बद अ़क़ीदा लोगों की हफ़्वात से मुताष़्ष़िर नहीं होना चाहिये।

बाब 50 : बनी इस्राईल के वाक़ियात का बयान

٥٠- بَابُ مَا ذُكِرَ عَنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ

3450. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, उनसे रबई बिन ह़िराश ने बयान किया कि ह़ज़रत उ़क़्बा बिन अ़म्र (रज़ि.) ने ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से कहा, क्या आप वो ह़दीष़ हमसे नहीं बयान करेंगे जो आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी थी? उन्होंने कहा कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि जब दज्जाल निकलेगा तो उसके साथ आग और पानी दोनों होंगे लेकिन लोगों को जो आग दिखाई देगी वो ठण्डा पानी होगा और लोगों को जो ठण्डा पानी दिखाई देगा तो वो जलाने वाली आग होगी। इसलिये तुममें से जो कोई उसके ज़माने में हो तो उसे उसमें गिरना चाहिये जो आग होगी क्योंकि वही इंतिहाई शीरीं और ठण्डा पानी होगा। (दीगर मक़ाम : 7130)

٣٤٥٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عُمَيْرٍ عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ قَالَ: قَالَ عُقْبَةُ بْنُ عَمْرٍو لِحُذَيْفَةَ: أَلاَ تُحَدِّثُنَا مَا سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((إِنَّ مَعَ الدَّجَّالِ إِذَا خَرَجَ مَاءً وَنَارًا، فَأَمَّا الَّذِي يَرَى النَّاسُ أَنَّهَا النَّارُ فَمَاءٌ بَارِدٌ. وَأَمَّا الَّذِي يَرَى النَّاسُ أَنَّهُ مَاءٌ بَارِدٌ فَنَارٌ تُحْرِقُ. فَمَنْ أَدْرَكَ مِنْكُمْ فَلْيَقَعْ فِي الَّذِي يَرَى أَنَّهَا نَارٌ، فَإِنَّهُ عَذْبٌ بَارِدٌ)). [طرفه في : ٧١٣٠].

3451. ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि पहले ज़माने में एक शख़्स के पास मलकुल मौत उनकी रूह क़ब्ज़ करने आए तो उनसे पूछा गया कोई अपनी नेकी तुम्हें याद है? उन्होंने कहा कि मुझे तो याद नहीं पड़ती,

٣٤٥١- قَالَ حُذَيْفَةُ: ((وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: إِنَّ رَجُلاً كَانَ فِيمَنْ قَبْلَكُمْ أَتَاهُ الْمَلَكُ لِيَقْبِضَ رُوحَهُ، فَقِيلَ لَهُ : هَلْ عَمِلْتَ مِنْ

उनसे दोबारा कहा गया कि याद करो? उन्होंने कहा कि मुझे कोई अपनी नेकी याद नहीं, सिवा उसके कि मैं दुनिया में लोगों के साथ ख़रीद व फ़रोख़्त किया करता था और लेन-देन किया करता था, जो लोग ख़ुशहाल होते उन्हें तो मैं (अपना क़र्ज़ वसूल करते वक़्त) मुहलत दिया करता था और तंग हाथ वालों को मुआफ़ कर दिया कर था। अल्लाह तआला ने उन्हें उसी पर जन्नत में दाख़िल किया। (राजेअ : 2077)

خَيْرٍ؟ قَالَ: مَا أَعْلَمُ. قِيْلَ لَهُ : انْظُرْ. قَالَ : مَا أَعْلَمُ شَيْئًا، غَيْرَ أَنِّي كُنْتُ أُبَايِعُ النَّاسَ فِي الدُّنْيَا فَأُجَازِيْهِمْ، فَأُنْظِرُ الْمُوسِرَ وَأَتَجَاوَزُ عَنِ الْمُعْسِرِ، فَأَدْخَلَهُ اللهُ الْجَنَّةَ)). [راجع: ٢٠٧٧]

3452. और हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना कि एक शख़्स की मौत का जब वक़्त आ गया और वो अपनी ज़िन्दगी से बिलकुल मायूस हो गया तो उसने अपने घरवालों को वसिय्यत की कि जब मेरी मौत हो जाए तो मेरे लिये बहुत सारी लकड़ियाँ जमा करना और उनमें आग लगा देना। जब आग मेरे गोश्त को जला चुके और आख़िर हड्डी को भी जला दे तो उन जली हुई हड्डियों को पीस डालना और किसी तेज़ हवा वाले दिन का इंतिज़ार करना और (ऐसे किसी दिन) मेरी राख को दरिया में बहा देना। उसके घरवालों ने ऐसा ही किया। लेकिन अल्लाह तआला ने उसकी राख को जमा किया और उससे पूछा ऐसा तूने क्यूँ करवाया था? उसने जवाब दिया कि तेरे ही डर से ऐ अल्लाह! अल्लाह तआला ने उसी वजह से उसकी मग़्फ़िरत फ़र्मा दी। हज़रत उक़्बा बिन अम्र (रज़ि.) ने कहा कि मैंने आपको ये फ़र्माते सुना था कि ये शख़्स कफ़न चोर था। (दीगर मक़ाम : 3479, 6480)

٣٤٥٢- فَقَالَ: ((وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ : إِنَّ رَجُلاً حَضَرَهُ الْمَوْتُ، فَلَمَّا يَئِسَ مِنَ الْحَيَاةِ أَوْصَى أَهْلَهُ: إِذَا أَنَا مِتُّ فَاجْمَعُوا لِي حَطَبًا كَثِيْرًا أَوقِدُوا فِيْهِ نَارًا، حَتَّى إِذَا أَكَلَتْ لَحْمِي وَخَلَصَتْ إِلَى عَظْمِي فَامْتَحَشَتْ، فَخُذُوهَا فَاطْحَنُوهَا ثُمَّ انْظُرُوا يَوْمًا رَاحًا فَاذْرُوهُ فِي الْيَمِّ. فَفَعَلُوا. فَجَمَعَهُ فَقَالَ لَهُ : لِمَ فَعَلْتَ ذَلِكَ؟ قَالَ : مِنْ خَشْيَتِكَ. فَغَفَرَ اللهُ لَهُ)) قَالَ عُقْبَةُ بْنُ عَمْرٍو: ((وَأَنَا سَمِعْتُهُ يَقُولُ ذَاكَ، وَكَانَ نَبَّاشًا)).

[طرفاه في : ٣٤٧٩، ٦٤٨٠].

जिस शख़्स का ज़िक्र हुआ है वो बनी इस्राईल से था, बाब से यही वजहे मुनासबत है। मुर्दों को जलाना ऐसे ही ग़लत तसव्वुरात का नतीजा है जो ख़िलाफ़े फ़ितरत है। इंसान की असल मिट्टी से है लिहाज़ा मरने के बाद उसे मिट्टी में दफ़न करना फ़ितरत का तक़ाज़ा है।

3452,54. मुझसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझको मअमर और यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि हज़रत आइशा (रज़ि.) और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) पर नज़अ की हालत तारी हुई तो आप अपनी चादर चेहरा मुबारक पर बार-बार डाल लेते फिर जब शिद्दत बढ़ती तो उसे हटा देते थे। हुज़ूर (ﷺ) ने उसी हालत में फ़र्माया था, अल्लाह तआला की ला'नत हो

٣٤٥٣، ٣٤٥٤- حَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنِي مَعْمَرٌ وَيُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَائِشَةَ وَابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالاَ : لَمَّا نَزَلَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ طَفِقَ يَطْرَحُ خَمِيصَةً عَلَى وَجْهِهِ، فَإِذَا اغْتَمَّ كَشَفَهَا عَنْ وَجْهِهِ فَقَالَ وَهُوَ

यहूद व नसारा पर कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लिया। आँहुज़ूर (ﷺ) इस उम्मत को उनके किये से डराना चाहते थे। (राजेअ : 435, 436)

كَذَلِكَ: ((لَعْنَةُ اللهِ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى، اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ. يُحَذِّرُ مَا صَنَعُوا)).

[راجع: ٤٣٥، ٤٣٦]

3455. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे फ़रात क़ज़ार ने बयान किया, उन्होंने अबू हाज़िम से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की मज्लिस में पाँच साल तक बैठा हूँ। मैंने उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) की ये ह़दीष़ बयान करते सुना कि आपने फ़र्माया बनी इस्राईल के अंबिया उनकी सियासी रहनुमाई भी किया करते थे, जब भी उनका कोई नबी हलाक हो जाता तो दूसरे उनकी जगह आ मौजूद होते, लेकिन याद रखो मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा। हाँ मेरे नाइब होंगे और बहुत होंगे। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि उनके बारे में आपका हमें क्या हुक्म है। आपने फ़र्माया कि सबसे पहले जिससे बेअ़त कर लो, बस उसी की वफ़ादारी पर क़ायम रहो और उनका जो ह़क़ है उसकी अदायगी में कोताही न करो क्योंकि अल्लाह तआला उनसे क़यामत के दिन उनकी रिआया के बारे में सवाल करेगा।

٣٤٥٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ فُرَاتٍ الْقَزَّازِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا حَازِمٍ قَالَ: قَاعَدْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ خَمْسَ سِنِينَ، فَسَمِعْتُهُ يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كَانَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ تَسُوسُهُمُ الأَنْبِيَاءُ، كُلَّمَا هَلَكَ نَبِيٌّ خَلَفَهُ نَبِيٌّ، وَإِنَّهُ لاَ نَبِيَّ بَعْدِي، وَسَيَكُونُ خُلَفَاءُ فَيَكْثُرُونَ)). قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: ((فُوا بِبَيْعَةِ الأَوَّلِ فَالأَوَّلِ، أَعْطُوهُمْ حَقَّهُمْ، فَإِنَّ اللهَ سَائِلُهُمْ عَمَّا اسْتَرْعَاهُمْ)).

ख़ुलफ़ा की इताअ़त के साथ ख़ुलफ़ा को भी उनकी ज़िम्मेदारियों के अदा करने पर तवज्जह दिलाई गई है। अगर वो ऐसा न करेंगे, उनको अल्लाह की अ़दालत में सख़्ततरीन रुस्वाई का सामना करना होगा, आज नामोनिहाद जुम्हूरियत के दौर में कुर्सियों पर आने वाले लोगों के लिये भी यही हुक्म है कि वो अपनी ज़िम्मेदारियों का एह़सास करें मगर कितने कुर्सीनशीन हैं जो अपनी ज़िम्मेदारियों को सोचते हैं, उनको सिर्फ़ वोट मांगने के वक़्त कुछ याद आता है बाद में सब भूल जाते हैं इल्ला माशा अल्लाह।

3456. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम लोग पहली उम्मतों के तरीक़ों की क़दम-ब-क़दम पैरवी करोगे यहाँ तक कि अगर वो लोग किसी साहिना के सूराख़ में दाख़िल हुए हों तो तुम भी उसमें दाख़िल होगे। हमने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आपकी

٣٤٥٦- حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ : حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَتَتْبَعُنَّ سَنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُم شِبْرًا بِشِبْرٍ وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ، حَتَّى لَوْ سَلَكُوا جُحْرَ ضَبٍّ

को कहते हैं, कुछ आमाले स़ालेहा (नेक आमाल) का ष़वाब दस से भी ज़्यादा कई सौ गुना तक मिलता है।

3460. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने, उनसे त़ाऊस ने, उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से सुना उन्होंने कहा अल्लाह तआ़ला फ़लाँ को तबाह करे। उन्हें क्या मा'लूम नहीं कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था, यहूद पर अल्लाह की ला'नत हो, उनके लिये चर्बी ह़राम हुई तो उन्होंने उसे पिघलाकर बेचना शुरू कर दिया। इस रिवायत को इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के साथ जाबिर और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ : 2223)

٣٤٦٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَاتَلَ اللهُ فُلاَنًا، أَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ حُرِّمَتْ عَلَيْهِمُ الشُّحُومُ فَجَمَّلُوهَا فَبَاعُوهَا)). تَابَعَهُ جَابِرٌ وَأَبُوهُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.
[راجع: ٢٢٢٣]

तश्रीह़ फ़लाँ से मुराद समुरह़ बिन जुन्दब हैं जिन्होंने काफ़िरों से जिज़्या में शराब वसूल कर ली थी और उसको बेचकर उसका पैसा बैतुलमाल को रवाना कर दिया, समुरह़ ने अपनी राय से ये इज्तिहाद किया था कि उसमें कोई क़बाह़त नहीं, उन्होंने ये ह़दीष़ नहीं सुनी थी, इसलिये ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उनको कोई सज़ा नहीं दी। (वह़ीदी)

3461. हमसे अबू आ़स़िम ज़िह़ाक बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमको औज़ाई ने ख़बर दी, कहा हमसे ह़स्सान बिन अ़तिया ने बयान किया, उनसे अबू कब्शा ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरा पैग़ाम लोगों को पहुँचाओ! अगरचे एक ही आयत हो और बनी इस्राईल के वाक़ियात तुम बयान कर सकते हो, उसमें कोई ह़र्ज नहीं और जिसने मुझ पर क़स्दन झूठ बाँधा तो उसे अपने जहन्नम के ठिकाने के लिये तैयार रहना चाहिये।

٣٤٦١- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ أَخْبَرَنَا الأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنَا حَسَّانُ بْنُ عَطِيَّةَ عَنْ أَبِي كَبْشَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً، وَحَدِّثُوا عَنْ بَنِي إِسْرَائِيْلَ وَلاَ حَرَجَ، وَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

वाक़ियाते बनी इस्राईल बयान करने में कोई ह़र्ज नहीं है मगर इस ख़्याल से कि न उनकी तस्दीक़ हो न तक्ज़ीब सिवा उनके जो स़ह़ीह़ सनद से ष़ाबित हों।

3462. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ॉलेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, यहूद व नस़ारा (दाढ़ी वग़ैरह) में ख़िज़ाब नहीं लगाते, तुम लोग उसके ख़िलाफ़ त़रीक़ा इख़्तियार करो (या'नी ख़िज़ाब लगाया करो)।

(दीगर मक़ाम : 5799)

٣٤٦٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: قَالَ أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى لاَ يَصْبُغُونَ، فَخَالِفُوهُمْ)).
[طرفه في : ٥٨٩٩].

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

चौदहवां पारा

बाब 3 : ग़ार वालों का क़िस्सा

٥٣- بَابُ حَدِيْثُ الْغَارِ

तश्रीह : पारा नम्बर 13 के ख़ात्मे पर अस्हाबे कहफ़ का वाक़िया बयान किया गया। इसलिये मुनासिब हुआ कि पारा नम्बर 14 को ग़ार वालों के ज़िक्र से शुरू किया जाए। कुछ उलमा ने आयते शरीफ़ा, **अम हसिब्त अन्न अस्हाबल्कहफ़ि वर्रक़ीमि कानू** (अल कहफ़ : 9) में रक़ीम वालों से ये लोग जिनका बयान इस हदीष़ में है ये मुराद लिये, वाक़िया बहुत ही अजीब है मगर **इन्नल्लाहा अला कुल्लि शैइन क़दीर** के तहत क़ुदरते इलाही से कुछ दूर भी नहीं है। मज़ीद तफ़्सील आगे आ रही है। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **अकिबल्मुसन्निफ़ किस्सत अस्हाबल्कहफ़ि बिहदीषिल्गारि इशारतन इला मा वरद अन्नहू क़द क़ील अन्नर्रक़ीमल्मज़्कूर फी कौलिही तआला अम हसब्ति अन्न अस्हाबल्कहफि वर्रक़ीमि हुवल्गारुल्लज़ी असाब फीहिष़्षलाष़तु मा अस़ाबहुम व ज़ालिक फीम अख़्रजहुल्बज़्ज़ार वत्तबरानी बिइस्नादिन हसनिन अनिन्नुअमानि बिन बशीर अन्नहू मअन्नबिय्यि (ﷺ) यज़्कूरुर्रक़ीम काल इन्तलक़ ष़लाषतुन फकानु फी कहफिन फवक़अल्जबलु अला बाबिल्कहफि फऔसद अलैहिम फज़करल्हदीष़** (फ़त्हुल्बारी) या'नी हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने अस्हाबे कहफ़ के बयान के बाद हदीषे ग़ार का ज़िक्र किया जिसमें आपने इशारा फ़र्माया कि आयते करीमा, **अम् हसिब्त अन्ना अस्हाबल कहफ़ि वर्रक़ीम** में रक़ीम वालों से वो ग़ार वाले मुराद हैं जो तीन थे और अचानक वो पहाड़ की चट्टान गिरने से उस मुसीबत में फंस गये थे जैसा कि बज़्ज़ार व तबरानी ने सनदे हसन के साथ नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से रिवायत की है कि उन्होंने सुना रसूलुल्लाह (ﷺ) से आप रक़ीम वालों का ज़िक्र फ़र्मा रहे थे कि तीन साथी चले जा रहे थे। उन्होंने जब एक ग़ार में पनाह ली तो उन पर पहाड़ की एक चट्टान गिरी और उनको वहाँ बन्द होना पड़ा। फिर अल्लाह ने उनकी दुआओं को क़ुबूल किया और वहाँ से उनको नजात बख़्शी।

3465. हमसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमको अली बिन मिस्हर ने ख़बर दी, उन्हें उबैदुल्लाह बिन उमर ने, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, पिछले ज़माने में (बनी इस्राईल में से) तीन आदमी कहीं रास्ते में जा रहे थे कि अचानक बारिश ने उन्हें आ लिया। वो तीनों पहाड़ के एक कोह (ग़ार) में घुस गये (जब वो अंदर चले गये) तो ग़ार का मुँह बन्द हो गया। अब तीनों आपस में यूँ कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! हमें इस मुसीबत से अब तो सिर्फ़ सच्चाई ही नजात दिलाएगी। बेहतर ये है कि अब हर शख़्स अपने किसी ऐसे अमल को बयान करके दुआ करे

٣٤٦٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ خَلِيْلٍ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((بَيْنَمَا ثَلاَثَةُ نَفَرٍ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ يَمْشُوْنَ إِذْ أَصَابَهُمْ مَطَرٌ، فَأَوَوْا إِلَى غَارٍ فَانْطَبَقَ عَلَيْهِمْ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: إِنَّهُ وَاللهِ يَا هَؤُلاَءِ لاَ يُنْجِيْكُمْ إِلاَّ

जिसके बारे में उसे यक़ीन हो कि वो ख़ालिस़ अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी के लिये किया था। चुनाँचे एक ने इस त़रह दुआ़ की, ऐ अल्लाह! तुझको ख़ूब मा'लूम है कि मैंने एक मज़दूर रखा था जिसने एक फ़रक़ (तीन स़ाअ़) चावल की मज़दूरी पर मेरा काम किया था लेकिन वो शख़्स़ (गुस्स़े में आकर) चला गया और अपने चावल छोड़ गया। फिर मैंने उस एक फ़रक़ चावल को लिया और उसकी काश्त की। उससे इतना कुछ हो गया कि मैंने पैदावार में से गाय–बैल ख़रीद लिये। उसके बहुत दिन बाद वही शख़्स़ मुझसे अपनी मज़दूरी मांगने आया। मैंने कहा कि ये गाय–बैल खड़े हैं, उनको ले जा। उसने कहा कि मेरा तो स़िर्फ़ एक फ़रक़ चावल तुम पर होना चाहिये था। मैंने उससे कहा कि ये सब गाय–बैल ले जा क्योंकि उसी एक फ़रक़ की आमदनी है। आख़िर वो गाय–बैल लेकर चला गया। पस ऐ अल्लाह! अगर तू जानता है कि ये ईमानदारी मैंने सिर्फ़ तेरे डर से की थी तो तू ग़ार का मुँह खोल दे। चुनाँचे उसी वक़्त वो पत्थर कुछ हट गया। फिर दूसर ने इस त़रह दुआ़ की, ऐ अल्लाह! तुझे ख़ूब मा'लूम है कि मेरे माँ–बाप जब बूढ़े हो गये तो मैं उनकी ख़िदमत में रोज़ाना रात में अपनी बकरियों का दूध लाकर पिलाया करता था। एक दिन इत्तिफ़ाक़ से मैं देर से आया तो वो सो चुके थे। इधर मेरे बीवी और बच्चे भूख से बिलबिला रहे थे लेकिन मेरी आ़दत थी कि जब तक वालिदैन को दूध न पिला लूँ, बीवी–बच्चों को नहीं देता था। मुझे उन्हें बेदार करना भी पसन्द नहीं था और छोड़ना भी पसन्द न था (क्योंकि यही उनका शाम का खाना था और उसके न पीने की वजह से वो कमज़ोर हो जाते) पस मैं उनका वहीं इंतिज़ार करता रहा यहाँ तक कि सुबह़ हो गई। पस अगर तेरे इल्म में भी मैंने ये काम तेरे डर की वजह से किया था तो तू हमारी मुश्किल दूर कर दे। उस वक़्त वो पत्थर कुछ और हट गया और अब आसमान नज़र आने लगा। फिर तीसरे शख़्स़ ने यूँ दुआ़ की, ऐ अल्लाह! मेरी एक चचाज़ाद बहन थी जो मुझे सबसे ज़्यादा महबूब थी। मैंने एक बार उससे सुहबत करनी चाही, उसने इंकार किया मगर उस शर्त़ पर तैयार हुई कि मैं उसे सौ अशरफ़ी लाकर दे दूँ। मैंने ये रक़म ह़ासिल करने के लिये

الصِّدْقَ، فَلْيَدْعُ كُلُّ رَجُلٍ مِنْكُمْ بِمَا يَعْلَمُ أَنَّهُ قَدْ صَدَقَ فِيْهِ. فَقَالَ وَاحِدٌ مِنْهُمْ : اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّهُ كَانَ لِي أَجِيْرٌ عَمِلَ لِي عَلَى فَرَقٍ مِنْ أُرْزٍ، فَذَهَبَ وَتَرَكَهُ، وَأَنِّي عَمَدْتُ إِلَى ذَلِكَ الْفَرَقِ فَزَرَعْتُهُ، فَصَارَ مِنْ أَمْرِهِ أَنِّي اشْتَرَيْتُ مِنْهُ بَقَرًا، وَأَنَّهُ أَتَانِي يَطْلُبُ أَجْرَهُ، فَقُلْتُ لَهُ : اعْمِدْ إِلَى تِلْكَ الْبَقَرِ فَسُقْهَا، فَقَالَ لِيْ: إِنَّمَا لِيْ عِنْدَكَ فَرَقٌ مِنْ أُرْزٍ. فَقُلْتُ لَهُ : اعْمَدْ إِلَى تِلْكَ الْبَقَرِ، فَإِنَّهَا مِنْ ذَلِكَ الْفِرَقِ. فَسَاقَهَا. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ مِنْ خَشْيَتِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا. فَانْسَاخَتْ عَنْهُمُ الصَّخْرَةُ. فَقَالَ الآخَرُ : اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ كَانَ لِي أَبَوَانِ شَيْخَانِ كَبِيْرَانِ، فَكُنْتُ آتِيْهِمَا كُلَّ لَيْلَةٍ بِلَبَنِ غَنَمٍ لِي، فَأَبْطَأْتُ عَلَيْهِمَا لَيْلَةً، فَجِئْتُ وَقَدْ رَقَدَا، وَأَهْلِي وَعِيَالِي يَتَضَاغَوْنَ مِنَ الْجُوعِ، فَكُنْتُ لاَ أَسْقِيْهِمْ حَتَّى يَشْرَبَ أَبَوَايَ، فَكَرِهْتُ أَنْ أُوْقِظَهُمَا، وَكَرِهْتُ أَنْ أَدَعَهُمَا فَيَسْتَكِنَّا لِشَرْبَتِهِمَا، فَلَمْ أَزَلْ أَنْتَظِرُ حَتَّى طَلَعَ الْفَجْرُ. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنْ فَعَلْتُ ذَلِكَ مِنْ خَشْيَتِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا. فَانْسَاخَتْ عَنْهُمُ الصَّخْرَةُ حَتَّى نَظَرُوا إِلَى السَّمَاءِ. فَقَالَ الآخَرُ : اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّهُ كَانَ لِي ابْنَةُ عَمٍّ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ، وَأَنِّي رَاوَدْتُهَا عَنْ نَفْسِهَا فَأَبَتْ إِلاَّ أَنْ آتِيَهَا

कोशिश की। आख़िर वो मुझे मिल गई तो मैं उसके पास आया और वो रक़म उसके हवाले कर दी। उसने मुझे अपने नफ़्स पर क़ुदरत दे दी। जब मैं उसके ऐन क़रीब बैठ चुका तो उसने कहा कि अल्लाह से डर और मुहर को बग़ैर हक़ के न तोड़। मैं (ये सुनते ही) खड़ा हो गया और सौ अशरफ़ी भी वापस नहीं ली। पस अगर तेरे इल्म में भी मैंने ये अमल तेरे डर की वजह से किया था तो तू हमारी मुश्किल आसान कर दे। अल्लाह तआला ने उनकी मुश्किल दूर कर दी और वो तीनों बाहर निकल आए।

(राजेअ : 2215)

بِمِائَةِ دِيْنَارٍ، فَطَلَبْتُهَا حَتَّى قَدَرْتُ، فَأَتَيْتُهَا بِهَا فَدَفَعْتُهَا إِلَيْهَا، فَأَمْكَنَتْنِي مِنْ نَفْسِهَا، فَلَمَّا قَعَدْتُ بَيْنَ رِجْلَيْهَا فَقَالَتِ اتَّقِ اللهَ وَلاَ تَفُضَّ الْخَاتَمَ إِلاَّ بِحَقِّهِ. فَقُمْتُ وَتَرَكْتُ الْمِائَةَ دِيْنَارٍ. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ مِنْ خَشْيَتِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا، فَفَرَّجَ اللهُ عَنْهُمْ فَخَرَجُوا)).

[راجع: ٢٢١٥]

तश्रीह : इस हदीष के ज़ेल में हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) फ़र्माते हैं, **व फीहि फ़ज़्लुल्इख़्लासि फिल्अमलि व फ़ज़्लु बिर्रिल्वालिदैनि व ख़िदमतिहा व ईषारिहिमा अलल्वलदि व तहम्मुलल्मशक़्क़ति लिअजलिहिमा व क़द इस्तश्कल तर्कुहू औलादहुस्सिगार यब्कून मिनल्जूइ तूल लैलतिहिमा मअ कुदरतिही अला तस्कीनि जूइहिम फक़ील कान शर्उहुम तक़्दीमु नफ़्क़तिन गैरहुम व क़ील यहतमिलु अन्न बुकाअहुम लैस अनिल्जुइ क़द तक़द्दम मा यरूदुहू व क़ील लअल्लहुम कानू यत्लुबून ज़ियादत अला सद्दिर्रमक़ि व हाज़ा औला व फीहि व फ़ज़्लुल्इफ़्फ़ति वल्इनकाफ़ि अनिल्हरामि मअल्कुदरति व अन्न तर्कल्मअसियति यम्हू मुक़द्दमाति तलबिहा व अन्नत्तौबत तजिबु मा क़ब्लहा व फीहि जवाज़ुल्इजाज़ति बित्तआमिल्मअलूमि बैनल्मुताजिरीन व फ़ज़्लु अदाइल्अमानति व इष्बातिल्करामति लिस्सालिहीन** (फ़त्हुल्बारी) या'नी इस हदीष से अमल में इख़्लास की फ़ज़ीलत षाबित हुई और माँ–बाप के साथ नेक सुलूक की और ये कि माँ–बाप की रज़ाजूई के लिये हर मुम्किन मशक़्क़त को बर्दाश्त करना औलाद का फ़र्ज़ है। उस शख़्स ने अपने बच्चों को रोने दिया और उनको दूध नहीं पिलाया, उसकी कई वुजूहात बयान की गई हैं। कहा गया है कि उनकी शरीअत का हुक्म ही ये था कि ख़र्च में माँ–बाप को दूसरों पर मुक़द्दम रखा जाए। ये भी अन्देशा है कि उन बच्चों को दूध थोड़ा ही पिलाया गया इसलिये वो रोते रहे, और इस हदीष से पाकबाज़ी की भी फ़ज़ीलत षाबित हो गई और ये भी मा'लूम हुआ कि तौबा करने से पहली ग़ल्तियाँ भी मुआफ़ हो जाती हैं और उससे ये भी जवाज़ निकला कि मज़दूर को तआम की उजरत पर भी मज़दूर रखा जा सकता है और अमानत की अदायगी की भी फ़ज़ीलत षाबित हुई और सालिहीन की करामतों का भी इष्बात हुआ कि अल्लाह पाक ने उन सालेह बन्दों की दुआओं के नतीज़े में उस पत्थर को चट्टान के मुँह से हटा दिया और ये लोग वहाँ से नजात पा गये। रहिमहुमुल्लाह अज्मईन। नीज़ हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) फ़र्माते हैं कि इमाम बुख़ारी (रह) ने वाक़िया अस्हाबे कहफ़ के बाद हदीषे ग़ार का ज़िक्र फ़र्माया जिसमें इशारा है कि आयते क़ुर्आनी **अम् हसिब्त अन्ना अस्हाबल कहफ़ि वर्रक़ीम** (अल कहफ़ : 9) में रक़ीम से यही ग़ार वाले मुराद हैं जैसा कि तबरानी और बज़्ज़ार ने सनदे हसन के साथ नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से रिवायत किया है कि उन्होंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना। रक़ीम का बयान फ़र्माते हुए आपने उन तीनों शख़्सों का ज़िक्र फ़र्माया जो एक ग़ार में पनाह गुज़ीं हो गये थे और जिन पर पत्थर की चट्टान गिर गई थी और उसने ग़ार का मुँह बन्द कर दिया था। तीनों में मज़दूरी पर ज़राअत का काम कराने वाले का ज़िक्र है। इमाम अहमद की रिवायत में उसका क़िस्सा यूँ मज़्कूर है कि मैंने कई मज़दूर उनकी मज़दूरी ठहराकर काम पर लगाए। एक शख़्स दोपहर को आया मैंने उसको आधी मज़दूरी पर रखा लेकिन उसने इतना काम किया जितना औरों ने सारे दिन में किया था। मैंने कहा कि मैं उसको भी सारे दिन की मज़दूरी दूँगा। इस पर पहले मज़दूरों में से एक शख़्स गुस्से में हुआ। मैंने कहा भाई! तुझे क्या मतलब है, तू अपनी मज़दूरी पूरी ले ले। उसने गुस्से में अपनी मज़दूरी भी नहीं ली और चल दिया। फिर आगे वो हुआ जो रिवायत में मज़्कूर है। क़स्तलानी (रह) ने कहा कि उन तीनों में अफ़ज़ल तीसरा शख़्स था। इमाम ग़ज़ाली (रह) ने कहा शह्वत आदमी पर बहुत ग़लबा करती है और जो शख़्स सब सामान होते हुए महज़ अल्लाह के डर से बदकारी से बाज़ रह गया उसका दर्जा सिद्दीक़ीन

कि वहाँ ताऊन है, वापस लौट आए। लोगों ने कहा आप अल्लाह की तक़्दीर से भागते हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने जवाब दिया कि हम अल्लाह की तक़्दीर से अल्लाह की तक़्दीर ही की तरफ़ भागते रहे हैं। ताऊन में पहले शदीद बुख़ार होता है फिर बग़ल या गर्दन में गिल्टी निकलती है और आदमी मर जाता है। ताऊन की मौत शहादत है।

٣٤٧٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفُرَاتِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: ((سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنِ الطَّاعُونِ، فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ عَذَابٌ يَبْعَثُهُ اللهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ، وَأَنَّ اللهَ جَعَلَهُ رَحْمَةً لِلْمُؤْمِنِينَ، لَيْسَ مِنْ أَحَدٍ يَقَعُ الطَّاعُونُ فَيَمْكُثُ فِي بَلَدِهِ صَابِرًا مُحْتَسِبًا يَعْلَمُ أَنَّهُ لاَ يُصِيبُهُ إِلاَّ مَا كَتَبَ اللهُ لَهُ إِلاَّ كَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ شَهِيدٍ)). [طرفاه في: ٥٧٣٤، ٦٦١٩].

3474. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे दाऊद बिन अबी फ़ुरात ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन यअमर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) से ताऊन के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि ये एक अज़ाब है, अल्लाह तआला जिस पर चाहता है भेजता है लेकिन अल्लाह तआला ने उसको मोमिनों के लिये रहमत बना दिया है। अगर किसी शख़्स की बस्ती में ताऊन फैल जाए और वो सब्र के साथ अल्लाह की रहमत से उम्मीद लगाए हुए वहीं ठहरा रहे कि होगा वही जो अल्लाह तआला ने क़िस्मत में लिखा है तो उसे शहीद के बराबर ष़वाब मिलेगा।

(दीगर मक़ाम: 5734, 6619)

٣٤٧٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، أَنَّ قُرَيْشًا أَهَمَّهُمْ شَأْنُ الْمَرْأَةِ الْمَخْزُومِيَّةِ الَّتِي سَرَقَتْ، فَقَالُوا: وَمَنْ يُكَلِّمُ فِيهَا رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ فَقَالُوا: وَمَنْ يَجْتَرِىءُ عَلَيْهِ إِلاَّ أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ حِبُّ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَكَلَّمَهُ أُسَامَةُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَتَشْفَعُ فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللهِ؟)) ثُمَّ قَامَ فَاخْتَطَبَ، ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّمَا أَهْلَكَ الَّذِينَ قَبْلَكُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الضَّعِيفُ أَقَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ. وَايْمُ اللهِ! لَوْ أَنَّ فَاطِمَةَ ابْنَةِ

3475. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने, और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि मख़्ज़ूमिया ख़ातून (फ़ातिमा बिन्ते अस्वद) जिसने (ग़ज़्व-ए-फ़तह के मौक़े पर) चोरी कर ली थी, उसके मामले ने क़ुरैश को फ़िक्र में डाल दिया। उन्होंने आपस में मश्वरा किया कि उस मामला पर आँहज़रत (ﷺ) से बातचीत कौन करे? आख़िर ये तै पाया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) आपको बहुत अ़ज़ीज़ हैं। उनके सिवा और कोई उसकी हिम्मत नहीं कर सकता। चुनाँचे उसामा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से इस बारे में कुछ कहा तो आपने फ़र्माया। ऐ उसामा! क्या तू अल्लाह की हुदूद में से एक हद के बारे में मुझसे सिफ़ारिश करता है? फिर आप खड़े हुए और ख़ुत्बा दिया (जिसमें) आपने फ़र्माया। पिछली बहुत सी उम्मतें इसलिये हलाक हो गईं कि जब उनका कोई शरीफ़ आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते और अगर कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पर हद क़ायम करते और अल्लाह की क़सम! अगर

فَاطِمَةُ بِنْتُ مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعْتُ يَدَهَا)).
[راجع: ٢٦٤٨]

फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (ﷺ) भी चोरी करे तो मैं उसका भी हाथ काट डालूँ। (राजेअ : 2638)

इस हदीष़ की शरह किताबुल हुदूद में आएगी। चोर का हाथ काट डालना शरीअ़ते मूसवी में भी था। जो कोई उस सज़ा को वहशियाना बताए वो ख़ुद वहशी है और जो कोई मुसलमान होकर उस सज़ा को ख़िलाफ़े तहज़ीब कहे वो काफ़िर और इस्लाम के दायरे से ख़ारिज है। (वहीदी) हज़रत उसामा रसूलुल्लाह (ﷺ) के बड़े ही चहेते बच्चे थे क्योंकि उनके वालिद हज़रत ज़ैद बिन हारिषा की परवरिश रसूलुल्लाह (ﷺ) ने की थी। यहाँ तक कि कुछ लोग उनको रसूले करीम (ﷺ) का बेटा समझते और उसी तरह पुकारते मगर आयते करीमा **उदऊहुम लिआबाइहिम** (अल अहज़ाब : 5) ने उनको इस तरह पुकारने से मना कर दिया।

٣٤٧٦- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَيْسَرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّزَّالَ بْنَ سَبْرَةَ الْهِلاَلِيَّ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلاً قَرَأَ آيَةً وَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ خِلاَفَهَا، فَجِئْتُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَعَرَفْتُ فِي وَجْهِهِ الْكِرَاهِيَةَ وَقَالَ: كِلاَكُمَا مُحْسِنٌ، وَلاَ تَخْتَلِفُوا، فَإِنَّ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ اخْتَلَفُوا فَهَلَكُوا)).
[راجع: ٢٤١٠]

3476. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन मैसरह ने बयान किया, कहा कि मैंने नज़्ज़ाल बिन सब्रह हिलाली से सुना और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने एक सहाबी (अ़म्र बिन आ़स) को क़ुर्आन मजीद की एक आयत पढ़ते सुना। वही आयत नबी अकरम (ﷺ) से उसके ख़िलाफ़ क़िरात के साथ में सुन चुका था, इसलिये मैं उन्हें साथ लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे ये वाक़िया बयान किया लेकिन मैंने आँहज़रत (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक पर उसकी वजह से नाराज़ी के आष़ार देखे। आपने फ़र्माया तुम दोनों अच्छा पढ़ते हो। आपस में इख़्तिलाफ़ न किया करो। तुमसे पहले लोग इसी क़िस्म के झगड़ों से तबाह हो गये। (राजेअ : 2410)

तश्रीह : या'नी क़ुर्आन मजीद में जो इख़्तिलाफ़े क़िरात है, उसमें हर आदमी को इख़्तियार है जो किरात चाहे वो पढ़े। इस अम्र में लड़ना झगड़ना मना है। ऐसे ही फ़ुरूई और क़यासी मसाइल में लड़ना झगड़ना मना है और ख़ामख़्वाह किसी को क़यासी मसाइल के लिये मजबूर करना कि वो सिर्फ़ हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह) या सिर्फ़ हज़रत इमाम शाफ़िई (रह) के इज्तिहाद पर चले ये नाहक़ का तहाकुम और जबर और ज़ुल्म है।

٣٤٧٧- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي شَقِيقٌ قَالَ عَبْدُ اللهِ : كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَحْكِي نَبِيًّا مِنَ الأَنْبِيَاءِ ضَرَبَهُ قَوْمُهُ فَأَدْمَوْهُ، وَهُوَ يَمْسَحُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ وَيَقُولُ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لاَ يَعْلَمُونَ)). [طرفه في : ٦٩٢٩].

3477. हमसे उ़मर बिन हफ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे मेरे बाप हफ़्स़ बिन ग़यास़ ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे शक़ीक़ बिन सलमा ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा मैं गोया नबी करीम (ﷺ) को इस वक़्त देख रहा हूँ। आप बनी इस्राईल के एक नबी का वाक़िया बयान कर रहे थे कि उनकी क़ौम ने उन्हें मारा और ख़ून आलूद कर दिया। लेकिन वो नबी ख़ून साफ़ करते जाते और ये दुआ करते कि, ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम की मग़्फ़िरत फ़र्मा। ये लोग जानते नहीं हैं। (दीगर मक़ाम : 6929)

तश्रीह : कहते हैं किये हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) का वाक़िया है मगर उस सूरत में हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) इस हदीष़

दादों की तरफ़ अपनी निस्बत करना

الإِسْلَامِ وَالْجَاهِلِيَّةِ

या'नी ये बयान करना कि मैं फ़लाँ की औलाद में से हूँ अगरचे वो आबा व अज्दाद ग़ैर–मुस्लिम ही क्यूँ न हों मगर ऐसा बयान करना जाइज़ है। ये इस्लाम की वो ज़बरदस्त अख़्लाक़ी ता'लीम है जिस पर मुसलमान फ़ख़्र कर सकते हैं। हिन्दुस्तान की बेशतर क़ौमें नव-मुस्लिम हैं। वो भी अपने ग़ैर–मुस्लिम आबाअ व अज्दाद का ज़िक्र करें तो शरअ़न उसमें कोई क़बाहत नहीं है बशर्ते कि ये ज़िक्र हुदूदे शरई के अंदर हो।

और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन यअ़क़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अ़लैहिस्सलाम) थे। और बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं अ़ब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।

وَقَالَ عَبْدُ اللهِ ابْنُ عُمَرَ وَأَبُوهُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّ الْكَرِيْمَ ابْنَ الْكَرِيْمِ ابْنِ الْكَرِيْمِ ابْنِ الْكَرِيْمِ يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِ اللهِ)). وَقَالَ الْبَرَاءُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ)).

आँहज़रत (ﷺ) ने अपने आपको अ़ब्दुल मुत्तलिब की तरफ़ मन्सूब किया इससे बाब का मत़लब ष़ाबित हुआ।

3525. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने, कहा उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब (सूरह शुअ़रा की) ये आयत उतरी, ऐ पैग़म्बर! अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ तो नबी (ﷺ) ने क़ुरैश के क़रीबी रिश्तेदारों को डराया, तो नबी (ﷺ) ने क़ुरैश के मुख़्तलिफ़ क़बीलों को बुलाया, ऐ बनी फ़हर! ऐ बनी अ़दी! जो क़ुरैश के ख़ानदान थे। (राजेअ़ : 1394)

٣٥٢٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرِ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ [الشعراء: ٢١٤] جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يُنَادِي: ((يَا بَنِي فِهْرٍ، يَا بَنِي عَدِيٍّ)), بِبُطُونِ قُرَيْشٍ)).

[راجع: ١٣٩٤]

3526. (ह़ज़रत इमाम बुख़ारी रह.) ने) कहा कि हमसे क़बीस़ा ने बयान किया, उन्हें सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें ह़बीब बिन अबी ष़ाबित ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइये, उतरी तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने अलग अलग क़बीलों को (दीने इस्लाम की) दा'वत दी। (राजेअ़ : 1394)

٣٥٢٦- وَقَالَ لَنَا قَبِيْصَةُ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ حَبِيْبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَدْعُوهُمْ قَبَائِلَ قَبَائِلَ)).

[راجع: ١٣٩٤]

3527. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमको अबुज़्ज़िनाद ने ख़बर दी, उन्हें

٣٥٢٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ أَخْبَرَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي

अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अब्दे मुनाफ़ के बेटों! अपनी जानों को अल्लाह से ख़रीद लो (या'नी नेक काम करके उन्हें अल्लाह तआला के अज़ाब से बचा लो) ऐ अब्दुल मुत्तलिब के बेटों! अपनी जानों को अल्लाह तआला से ख़रीद लो। ऐ ज़ुबैर बिन अव्वाम की वालिदा! रसूलुल्लाह (ﷺ) की फूफी, ऐ फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद! तुम दोनों अपनी जानों को अल्लाह से बचा लो। मैं तुम्हारे लिये अल्लाह की बारगाह में कुछ इख़्तियार नहीं रखता। तुम दोनों मेरे माल में जितना चाहो मांग सकती हो। (राजेअ : 2753)

هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ، اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ اللهِ. يَا بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ اللهِ. يَا أُمَّ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ عَمَّةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، يَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ، اشْتَرِيَا أَنْفُسَكُمَا مِنَ اللهِ، لاَ أَمْلِكُ لَكُمَا مِنَ اللهِ شَيْئًا سَلاَنِي مِنْ مَالِي مَا شِئْتُمَا)). [راجع: ٢٧٥٣]

तश्रीह : बाब की मुनासबत ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उन ख़ानदानों को उनके पुराने आबा व अज्दाद ही के नामों से पुकारा, मा'लूम हुआ कि ऐसी निस्बत अल्लाह के नज़दीक मअयूब (बुरी) नहीं है जैसे यहाँ के बेशतर मुसलमान अपने पुराने ख़ानदानों ही के नाम से अपनी पहचान कराते हैं । दूसरी रिवायत में यूँ है ऐ आइशा! ऐ हफ़्सा! ऐ उम्मे सलमा! ऐ बनी हाशिम! अपनी अपनी जानों को दोज़ख़ से छुड़ाओ। मा'लूम हुआ कि अगर ईमान न हो तो पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) की रिश्तेदारी क़यामत में कुछ काम न आएगी। इस हदीष़ से इस शिर्किया शिफ़ाअत का बिलकुल रद्द हो गया जो कुछ नाम के मुसलमान अंबिया और औलिया की निस्बत ये ए'तिक़ाद रखते हैं कि जिसके दामन को चाहेंगे पकड़कर अपनी शिफ़ाअत कराके बख़्शवा लेंगे, ये अक़ीदा सरासर बातिल है।

बाब 14 : किसी क़ौम का भांजा या आज़ाद किया हुआ गुलाम भी उसी क़ौम में दाख़िल होता है

١٤- بَابُ ابْنُ أُخْتِ الْقَوْمِ، وَمَوْلَى الْقَوْمِ مِنْهُمْ

3528. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार को ख़ास तौर से एक मर्तबा बुलाया, फिर उनसे पूछा क्या तुम लोगों मे कोई ऐसा शख़्स भी रहता है जिसका ता'ल्लुक़ तुम्हारे क़बीले से न हो? उन्होंने अर्ज़ किया कि सिर्फ़ हमारा एक भांजा ऐसा है। आपने फ़र्माया कि भांजा भी उसी क़ौम में दाख़िल होता है।

٣٥٢٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ الأَنْصَارَ فَقَالَ: ((هَلْ فِيكُمْ أَحَدٌ مِنْ غَيْرِكُمْ؟)) قَالُوا: لاَ إِلاَّ ابْنُ أُخْتٍ لَنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ابْنُ أُخْتِ الْقَوْمِ مِنْهُمْ)).

तश्रीह : अंसार के इस बच्चे का नाम नोअमान बिन मुक़रिन था। इमाम अहमद की रिवायत में उसकी सराहत है। बाब का तर्जुमा में मौला का ज़िक्र है लेकिन इमाम बुख़ारी मौला (आज़ादकर्दा गुलाम) की कोई हदीष़ नहीं लाए। कुछ ने कहा उन्होंने मौला के बाब में कोई हदीष़ अपनी शर्त पर नहीं पाई होगी। हाफ़िज़ ने कहा ये सहीह नहीं है क्योंकि इमाम बुख़ारी (रह) ने फ़राइज़ में ये हदीष़ निकाली है कि किसी क़ौम का मौला भी उन ही में दाख़िल है और मुम्किन है कि इमाम बुख़ारी (रह) ने इस हदीष़ के दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया हो जिसको बज़्ज़ार ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से निकाला है। उसमें मौला और हलीफ़ और भांजे तीनों मज़्कूर हैं। तैसीर में है कि हनीफ़ा ने उसी हदीष़ से दलील ली है कि जब अस़्बा और ज़ुल् फ़ुरूज़ न हों तो भांजा मामूँ का वारिष़ होगा।

قَالَ : كَيْفَ بِنَسَبِي؟ فَقَالَ: لأَسُلَّنَّكَ مِنْهُمْ كَمَا تُسَلُّ الشَّعْرَةُ مِنَ الْعَجِيْنِ)).
وَعَنْ أَبِيْهِ قَالَ : ((ذَهَبْتُ أَسُبُّ حَسَّانَ عِنْدَ عَائِشَةَ فَقَالَتْ : لاَ تَسُبَّهُ، فَإِنَّهُ كَانَ يُنَافِحُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ)).

[طرفاه في: ٤١٤٥، ٦١٥٠].

फिर मैं भी तो उन ही के ख़ानदान से हूँ। इस पर हस्सान (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि मैं आपको (शे'र में) इस तरह साफ़ निकाल ले जाऊँगा जैसे आटे में से बाल निकाल लिया जाता है और (हिशाम ने) अपने वालिद से रिवायत किया कि उन्होंने कहा, हज़रत आइशा (रज़ि.) के यहाँ मैं हस्सान (रज़ि.) को बुरा कहने लगा तो उन्होंने फ़र्माया, उन्हें बुरा न कहो, वो नबी करीम (ﷺ) की तरफ़ से मुदाफ़िअत किया करते थे। (दीगर मक़ाम : 4145, 6150)

तश्रीह : हज़रत हस्सान (रज़ि.) एक मौक़े पर बहक गये थे। या'नी हज़रत आइशा (रज़ि.) पर तोहमत लगाने वालों के हम नवा हो गये थे बाद में ये ताईब हो गये मगर कुछ दिलों में ये वाक़िया याद रहा मगर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़ुद उनकी मदह (ता'रीफ़) की और उनको अच्छे लफ़्ज़ों से याद किया जैसा कि यहाँ मज़्कूर है। मुश्रिकीन जो आँहज़रत (ﷺ) की बुराइयाँ करते हज़रत हस्सान उनका जवाब देते और जवाब भी कैसा कि मुश्रिकीन के दिलों पर सांप लौटने लग जाता। हज़रत हस्सान (रज़ि.) के बहुत से क़सीदे मज़्कूर हुए हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने मुश्रिकीने क़ुरैश की बिला ज़रूरत हिज्व को पसन्द नहीं फ़र्माया, यही बाब का मक़सद है।

١٧- بَابُ مَا جَاءَ فِي أَسْمَاءِ رَسُولِ اللهِ ﷺ

बाब 17 : रसूलुल्लाह (ﷺ) के नामों का बयान

وَقَوْلُ اللهِ تَعَالَى ﴿مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ﴾ الآيَةَ وَقَوْلُهُ ﴿مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ، وَالَّذِيْنَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ﴾ [الفتح : ٢٩]. وَقَوْلُهُ: ﴿مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ﴾ [الصَّف : ٦]

और अल्लाह तआला का सूरह अहज़ाब में इर्शाद कि, मुहम्मद (ﷺ) तुममें से किसी मर्द के बाप नहीं हैं और अल्लाह तआला का सूरह फ़तह में इर्शाद कि, मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वो कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में इंतिहाई सख़्त होते हैं और सूरह सफ़्फ़ में अल्लाह तआला का इर्शाद है कि, मिम् बअदी इस्मुहू अहमद

तश्रीह : ये हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) का क़ौल है कि मेरे बाद आने वाले रसूल का नाम अहमद होगा। बाब का मतलब यूँ षाबित हुआ कि यहाँ आयतों में आपके नाम मुहम्मद और अहमद मज़्कूर हुए (ﷺ)। कुफ़्फ़ार से हर्बी काफ़िर जो बाज़ाब्ता इस्लाम और मुसलमानों के इस्तिहसाल (शोषण) के लिये जारेहाना हमलावर हों। मुराद है कि ऐसे लोगों के हमले का मुदाफ़िआना जवाब देना और सख़्ती के साथ फ़साद को मिटाकर अमन क़ायम करना ये सच्चे मुहम्मदियों की ख़ास अलामत है।

٣٥٣٢- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَعْنٌ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لِي خَمْسَةُ أَسْمَاءٍ: أَنَا مُحَمَّدٌ،

3532. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा कि मुझसे मअन ने कहा, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत्इम ने और उनसे उनके वालिद (जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे पाँच नाम हैं। मैं मुहम्मद, अहमद और माही हूँ (या'नी मिटाने वाला हूँ) कि अल्लाह तआला मेरे ज़रिये कुफ़्र को मिटाएगा

और मैं हाशिर हूँ कि तमाम इंसानों का (क़यामत के दिन) मेरे बाद हश्र होगा और मैं आक़िब हूँ या'नी ख़ातिमुन् नबिय्यीन हूँ, मेरे बाद कोई नया पैग़म्बर दुनिया में नहीं आएगा। (दीगर मक़ाम : 4896)

وَأَنَا أَحْمَدُ، وَأَنَا الْمَاحِيُ الَّذِيْ يَمْحُوا اللهُ بِهِ الْكُفْرَ، وَأَنَا الْحَاشِرَ الَّذِي يُحشَرُ النَّاسُ عَلَى قَدَمِي، وَأَنَا الْعَاقِبُ)).

[طرفه في : ٤٨٩٦].

इस हदीष़ से रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह है कि आप (ﷺ) के बाद कोई भी नुबुव्वत का दा'वा करे वो झूठा दज्जाल है।

3533. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें ता'ज्जुब नहीं होता कि अल्लाह तआ़ला क़ुरैश की गालियों और ला'नत मलामत को किस तरह दूर करता है, मुझे वो मुज़म्मम कहकर बुरा कहते, उस पर ला'नत करते हैं। हालाँकि मैं तो मुहम्मद हूँ। (ﷺ)

٣٥٣٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ تَعْجَبُونَ كَيْفَ يَصْرِفُ اللهُ عَنِّي شَتْمَ قُرَيْشٍ وَلَعْنَهُمْ؟ يَشْتِمُونَ مُذَمَّماً، وَيَلْعَنُونَ مُذَمَّماً، وَأَنَا مُحَمَّدٌ)).

तश्रीह: अरब के काफ़िर दुश्मनी से आपको मुहम्मद (ﷺ) नहीं कहते बल्कि उसकी ज़िद में मुज़म्मम नाम से आपको पुकारते या'नी मज़म्मत किया हुआ बुरा। आपने फ़र्माया कि मुज़म्मम मेरा नाम ही नहीं है। जो मुज़म्मम होगा उसी पर उनकी गालियाँ पड़ेंगीं। हाफ़िज़ (रह) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के और भी नाम वारिद हुए हैं जैसे रऊफ़, रहीम, बशीर, नज़ीर, मुबीन, दाई इलल्लाह, सिराज, मुनीर, मुज़क्किर, रहमत, नेअमत, हादी, शहीद, अमीन, मुज़म्मिल, मुद्दष्षिर, मुतवक्किल, मुख़्तार, मुस्तफ़ा, शफ़ीअ़, मुश्फ़िआ, सादिक़, मस्दूक़ वग़ैरह वग़ैरह, कुछ ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के नाम भी अस्माउल हुस्ना की तरह निन्नावे तक पहुँचते हैं, अगर मज़ीद तलाश किये जाएँ तो सौ तक मिल सकेंगे (ﷺ)। मुबारक नाम मुहम्मद (ﷺ) के बारे में हाफ़िज़ (रह) फ़र्माते हैं, **अय अल्लज़ी हमिद मर्रतिन बअ़द मर्तिन औ अल्लज़ी तकामलत फ़ीहिल्खिसालुल्महमूदतु क़ाल अयाज़ कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) अहमद क़ब्ल अंय्यकून मुहम्मद कमा वक़अ फ़िल्वुजूदि लिअन्न तस्मियत अहमद वक़अत फ़िल्कुतुबिस्सालिफ़ति व तस्मिय्यतु मुहम्मद वक़अत फ़िल्क़ुर्आनिल्अ़ज़ीम व ज़ालिक अन्नहू हमिद रब्बहू क़ब्ल अय्युहम्मिदहुन्नासु व कज़ालिक फ़िल्आख़िरति बिहम्दि रब्बिही फ़यश्फ़उहू फ़यहमिदुहुन्नासु व क़द ख़स्स बिसूरतिल्हम्दि व बिलवाइल्हम्दि व बिल्मक़ामिल्महमूदि व शरअ लहुल्हम्द बअ़दल्अक्लि वश्शुर्बि व बअ़दहुआइ व बअ़दल्क़ुदूमि मिनस्सफ़रि व सुम्मियत उम्मतुहू अल्हम्मादीन फ़जुमिअ़त लहू मआ़निल्हम्दि व अन्वाउहू (ﷺ)।** (फ़त्हुल बारी)

बाब 18 : आँहज़रत (ﷺ) का ख़ातिमुन्नबिय्यीन होना

١٨- بَابُ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ﷺ

तश्रीह: आँहज़रत (ﷺ) पर अल्लाह तआ़ला ने सिलसिल-ए-नुबुव्वत ख़त्म कर दिया, अब क़यामत तक कोई और नबी नहीं हो सकता न ज़िल्ली हो सकता है न बरौज़ी, न हक़ीक़ी हो सकता है, न मजाज़ी। आप क़यामत तक के लिये आख़िरी नबी हैं जैसे सूरज निकलने के बाद किसी चराग़ की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती। आप ऐसे कामिल व मुकम्मल नबी हैं कि अब न किसी नई शरीअ़त और नये पैग़म्बर की ज़रूरत है और न अब क़ुर्आन के बाद किसी नई किताब की ज़रूरत है। ये वोअ़क़ीदा है जिस पर चौदह सौ बरस से पूरी उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है मगर सद अफ़सोस कि इस मुल्क में पंजाब में मिर्ज़ा क़ादयानी ने इस अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ अपनी नुबुव्वत का चर्चा किया और वह्य व इल्हाम के मुद्दई हुए और वो आयात व अहादीष़ जिनसे आँहज़रत (ﷺ) का ख़ातिमुन्नबिय्यीन होना ष़ाबित होता है उनकी ऐसी ऐसी दूर अज़्कार तावीलाते फ़ासिदा कीं कि फ़िल् वाक़ेअ

दजल का ह़क़ अदा कर दिया। उ़लमा-ए-इस्लाम बिल ख़ुसूसन हमारे उस्ताज़ मरहूम ह़ज़रत मौलाना षनाउल्लाह साहब अमृतसरी ने उनके दा'वा-ए-नुबुव्वत की तर्दीद में बहुत सी फाज़िलाना किताबें लिखी हैं। ऐसे मुद्दइयाने नुबुव्वत इन अह़ादीषे नबवी के मिस्दाक़ हैं जिनमें आपने ख़बर दी है कि मेरी उम्मत में कुछ ऐसे दज्जाल लोग पैदा होंगे जो नुबुव्वत का दा'वा करेंगे। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ऐसे गुमराहकुन लोगों के ख़यालाते फासिदा से महफ़ूज़ रखे आमीन।

3534. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे सुलैम ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन मीनाअ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी और दूसरे अंबिया की मिषाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने कोई घर बनाया, उसे ख़ूब आरास्ता पैरास्ता करके मुकम्मल कर दिया। सिर्फ़ एक ईंट की जगह ख़ाली छोड़ दी। लोग उस घर में दाख़िल होते और ता'ज्जुब करते और कहते काश ये एक ईंट की जगह ख़ाली न रहती तो कैसा अच्छा मुकम्मल घर होता।

٣٥٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا سَلِيْمُ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ مِيْنَاءَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَثَلِي وَمَثَلُ الأَنْبِيَاءِ كَرَجُلٍ بَنَى دَارًا فَأَكْمَلَهَا وَأَحْسَنَهَا، إِلاَّ مَوضِعَ لَبِنَةٍ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَدْخُلُونَهَا وَيَتَعَجَّبُونَ وَيَقُولُونَ: لَو لاَ مَوضِعُ اللَّبِنَةِ)).

मेरी नुबुव्वत ने उस कमी को पूरा कर दिया। अब मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा।

3535. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे अबू स़ालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी और मुझसे पहले की तमाम अंबिया की मिषाल ऐसी है जैसे एक शख़्स ने एक घर बनाया और उसमें हर त़रह की ज़ीनत पैदा की लेकिन एक कोने में एक ईंट की जगह छूट गई। अब तमाम लोग आते हैं और मकान को चारों त़रफ़ से घूमकर देखते हैं और ता'ज्जुब करते हैं लेकिन ये भी कहते जाते हैं कि यहाँ पर एक ईंट क्यूँ न रखी गई? तो मैं ही वो ईंट हूँ और मैं खतिमुन्नबिय्यीन हूँ।

٣٥٣٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِيْنَارٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ مَثَلِي وَمَثَلِ الأَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِي كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى بَيْتًا فَأَحْسَنَهُ وَأَجْمَلَهُ، إِلاَّ مَوضِعَ لَبِنَةٍ مِنْ زَاوِيَةٍ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَطُوفُونَ بِهِ وَيَعْجَبُونَ لَهُ وَيَقُولُونَ : هَلاَّ وُضِعَتْ هَذِهِ اللَّبِنَةُ؟ قَالَ : فَأَنَا اللَّبِنَةُ، وَأَنَا خَاتِمُ النَّبِيِّينَ)).

बाब 19 : नबी अकरम (ﷺ) की वफ़ात का बयान

١٩- بَابُ وَفَاةِ النَّبِيِّ ﷺ

3536. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने 63 साल की उ़म्र में वफ़ात पाई और इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझसे सईद बिन मुसय्यिब ने इसी त़रह बयान किया।

٣٥٣٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّيْنَ)). وَقَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ مِثْلَهُ.

62. किताब फ़ज़ाइले अस्हाबुन्नबी (ﷺ)

नबी-करीम (ﷺ) के सहाबा की फ़ज़ीलत

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : नबी करीम (ﷺ) के सहाबियों की फ़ज़ीलत का बयान

١ – بَابُ فَضَائِلِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ، وَمَنْ صَحِبَ النَّبِيَّ ﷺ أَوْ رَآهُ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ فَهُوَ فِي أَصْحَابِهِ

(इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि) जिस मुसलमान ने भी आँहज़रत (ﷺ) की सुहबत उठाई या आपका दीदार उसे नसीब हुआ हो वो आप (ﷺ) का सहाबी है।

तश्रीह : जुम्हूर उलमा का यही क़ौल है कि जिसने अपनी ज़िन्दगी में आँहज़रत (ﷺ) को एक बार भी देखा हो वो सहाबी है बशर्ते कि वो मुसलमान हो। बस आँहज़रत (ﷺ) को एक बार देख लेना ऐसा शर्फ़ है कि सारी उम्र का मुजाहिदा उसके बराबर नहीं हो सकता। कुछ ने कहा कि औलिया अल्लाह जिन सहाबा के मर्तबे को नहीं पहुँच सकते उनसे मुराद वो सहाबा हैं जो आपकी सुहबत में रहे और आपसे इस्तिफ़ादा किया और आपके साथ जिहाद किया, मगर ये क़ौल मरजूह है। हमारे पीर व मुर्शिद महबूब सुब्हानी हज़रत सय्यद जीलानी (रह) फ़र्माते हैं कि कोई वली अदना सहाबी के मर्तबे के बराबर नहीं पहुँच सकता है। (वहीदी)

3649. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया और उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, एक ज़माना आएगा कि अहले इस्लाम की जमाअतें जिहाद करेंगी तो उनसे पूछा जाएगा कि क्या तुम्हारे साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) के कोई सहाबी भी हैं? वो कहेंगे कि हाँ हैं। तब उनकी फ़तह होगी। फिर एक ऐसा ज़माना आएगा कि मुसलमानों की जमाअतें जिहाद करेंगी और उस मौक़े पर ये पूछा जाएगा कि क्या यहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबी की सुहबत उठाने वाले (ताबेई) भी मौजूद हैं?

٣٦٤٩ – حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيْدٍ الْخُدْرِيُّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ، فَيَقُولُونَ: فِيكُمْ مَنْ صَاحَبَ رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ فَيَقُولُونَ لَهُمْ: نَعَمْ. فَيُفْتَحُ لَهُمْ. ثُمَّ يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ فَيُقَالُ: هَلْ فِيكُمْ مَنْ صَاحَبَ

जवाब होगा कि हाँ हैं और उनके ज़रिये फ़तह की दुआ़ मांगी जाएगी। उसके बाद एक ज़माना ऐसा आएगा कि मुसलमानों की जमाअ़तें जिहाद करेंगी और उस वक़्त सवाल उठेगा कि क्या यहाँ कोई बुज़ुर्ग ऐसे हैं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के स़हाबा के शागिर्दों में से किसी बुज़ुर्ग की सुह़बत में रहे हो? जवाब होगा कि हाँ हैं तो उनके ज़रिये फ़तह की दुआ़ मांगी जाएगी फिर उनकी फ़तह होगी। (राजेअ़ : 2897)

أَصْحَابَ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ لَهُمْ. ثُمَّ يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ فَيُقَالُ: هَلْ فِيكُمْ مَنْ صَاحَبَ مَنْ صَاحَبَ أَصْحَابَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ لَهُمْ)).
[راجع: ٢٨٩٧]

तश्रीह़ : आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन तीन ज़माने वालों की फ़ज़ीलत बयान की गोया वो ख़ैरुल क़ुरून ठहरे। इसीलिये उ़लमा ने बिदअ़त की ता'रीफ़ ये क़रार दी है कि दीन में जो काम नया निकाला जाए जिसका वजूद इन तीन ज़मानों में न हो। ऐसी हर बिदअ़त गुमराही है और जिन लोगों ने बिदअ़त की तक़्सीम की है और ह़स्ना और सय्या की तरफ़, उनकी मुराद बिदअ़त से बिदअ़ते लग़्वी है। हमारे मुर्शिद शैख़ अह़मद मुजद्दिद सरहिन्दी (रह.) फ़र्माते हैं कि मैं तो किसी बिदअ़त में सिवाय ज़ुल्मत और तारीकी के मुत्लक़ नूर नहीं पाता। (वह़ीदी)

3650. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें अबू जम्रह ने, कहा मैंने ज़ह्दम बिन मुज़र्रब से सुना, कहा कि मैंने ह़ज़रत इमरान बिन हु़स़ैन (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी उम्मत का सबसे बेहतरीन ज़माना मेरा ज़माना है। फिर उन लोगों का जो इस ज़माने के बाद आएँगे, फिर उन लोगों का जो उस ज़माने के बाद आएँगे। ह़ज़रत इमरान (रज़ि.) कहते हैं कि मुझे याद नहीं कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने दौर के बाद दो ज़मानों का ज़िक्र किया या तीन का। फिर आपने फ़र्माया कि तुम्हारे बाद एक ऐसी क़ौम पैदा होगी जो बग़ैर कहे गवाही देने के लिये तैयार हो जाया करेगी और उनमें ख़यानत और चोरी इतनी आम हो जाएगी कि उन पर किसी क़िस्म का भरोसा बाक़ी नहीं रहेगा, और नज़्रें मानेंगे लेकिन उन्हें पूरा नहीं करेंगे (ह़राम माल खा खाकर) उन पर मोटापा आ़म हो जाएगा। (राजेअ़ : 2651)

٣٦٥٠- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا النَّضْرُ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ سَمِعْتُ زَهْدَمَ بْنَ مُضَرِّبٍ سَمِعْتُ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((خَيْرُ أُمَّتِي قَرْنِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ)) قَالَ عِمْرَانُ : فَلاَ أَدْرِي أَذَكَرَ بَعْدَ قَرْنِهِ قَرْنَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا. ثُمَّ إِنَّ بَعْدَكُمْ قَوْمًا يَشْهَدُونَ وَلاَ يُسْتَشْهَدُونَ وَيَخُونُونَ وَلاَ يُؤْتَمَنُونَ، وَيَنْذُرُونَ وَلاَ يَفُونَ، وَيَظْهَرُ فِيهِمُ السِّمَنُ)).
[راجع: ٢٦٥١]

ख़ैरुल क़ुरून के बाद होने वाले दुनियादार नामो-निहाद मुसलमानों के बारे में ये पेशगोई है जो अख़्लाक़ और आ़माल के ए'तिबार से बदतरीन क़िस्म के लोग होंगे। जैसा कि इर्शाद हुआ है कि झूठ और बद दयानती और दुनियासाज़ी उनका रात दिन का मश्ग़ला होगा। **अल्लाहुम्म ला तज्अ़ल्ना मिन्हुम**, आमीन।

3651. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे उ़बैदा बिन क़ैस सलमानी ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि बेहतरीन

٣٦٥١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عُبَيْدَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ

हाज़िर हुआ। आप भी बेदार हो चुके थे। मैंने अ़र्ज़ किया-दूध पी लीजिए। आपने इतना पिया कि मुझे ख़ुशी हासिल हो गई। फिर मैंने अ़र्ज़ किया कि अब कूच का वक़्त हो गया है या रसूलल्लाह! आपने फ़र्माया हाँ ठीक है, चलो। चुनाँचे हम आगे बढ़े और मक्का वाले हमारी तलाश में थे लेकिन सुराक़ा बिन मालिक बिन जअ़शम के सिवा हमको किसी ने नहीं पाया। वो अपने घोड़े पर सवार था। मैंने उसे देखते ही कहा कि या रसूलल्लाह! हमारा पीछा करने वाला दुश्मन हमारे क़रीब आ पहुँचा है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि फिक्र न करो। अल्लाह तआ़ला हमारे साथ है। (राजेअ़ : 2439)

ﷺ فَوَافَقْتُهُ قَدِ اسْتَيْقَظَ، فَقُلْتُ: اشْرَبْ يَا رَسُولَ اللهِ، فَشَرِبَ حَتَّى رَضِيتُ. ثُمَّ قُلْتُ: قَدْ آنَ الرَّحِيلُ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: ((بَلَى)). فَارْتَحَلْنَا وَالْقَوْمُ يَطْلُبُونَنَا، فَلَمْ يُدْرِكْنَا أَحَدٌ مِنْهُمْ غَيْرُ سُرَاقَةَ بْنِ مَالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ عَلَى فَرَسٍ لَهُ، فَقُلْتُ: هَذَا الطَّلَبُ قَدْ لَحِقَنَا يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَالَ: ((لاَ تَحْزَنْ، إِنَّ اللهَ مَعَنَا)) ﴿تَرِيْحُونَ﴾

[راجع: ٢٤٣٩]

वाक़िय-ए-हिजरत ह़याते नबवी का एक अहम वाक़िया है जिसमें आपके बहुत से मुअजिज़ात का ज़ुहूर हुआ यहाँ भी चन्द मुअजिज़ात का बयान हुआ है चुनाँचे बाब मुहाजिरीन के फ़ज़ाइल के बारे में है, इसलिये उसमें हिजरत के इब्तिदाई वाक़ियात को बयान किया गया है। यही बाब और ह़दीष़ का ता'ल्लुक़ है।

3653. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने, उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने और उनसे ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम ग़ारे ष़ौर में छुपे थे तो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि अगर मुश्रिकीन के किसी आदमी ने अपने क़दमों पर नज़र डाली तो वो ज़रूर हमको देख लेगा। उस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अबूबक्र! उन दो का कोई क्या बिगाड़ सकता है जिनके साथ तीसरा अल्लाह तआ़ला है। (दीगर मक़ाम : 3922, 4663)

٣٦٥٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ عَنْ أَنَسٍ عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ لِلنَّبِيِّ ﷺ وَأَنَا فِي الْغَارِ: لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ نَظَرَ تَحْتَ قَدَمَيْهِ لأَبْصَرَنَا. فَقَالَ: ((مَا ظَنُّكَ يَا أَبَا بَكْرٍ بِاثْنَيْنِ اللهُ ثَالِثُهُمَا)).

[طرفاه في: ٣٩٢٢، ٤٦٦٣].

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) का हुक्म फ़र्माना कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के दरवाज़े को छोड़कर (मस्जिदे नबवी की त़रफ़ के) तमाम दरवाज़े बन्द कर दो. ये ह़दीष़ ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है.

٣- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((سُدُّوا الأَبْوَابَ إِلاَّ بَابَ أَبِي بَكْرٍ، قَالَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

3654. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आमिर ने बयान किया, उनसे फुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे सालिम अबुन् नज़्र ने बयान किया, उनसे

٣٦٥٤- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمٌ أَبُو النَّضْرِ عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ

बुस्र बिन सईद ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुत्बा दिया और फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने अपने एक बन्दे को दुनिया में और जो कुछ अल्लाह के पास आख़िरत में है उन दोनों में से किसी एक का इख़्तियार दिया तो उस बन्दे ने इख़्तियार कर लिया जो अल्लाह के पास था। उन्होंने बयान किया कि इस पर अबूबक्र (रज़ि.) रोने लगे। अबू सईद कहते हैं कि हमको उनके रोने पर हैरत हुई कि आँहज़रत (ﷺ) तो किसी बन्दे के बारे में ख़बर दे रहे हैं जिसे इख़्तियार दिया गया था। लेकिन बात ये थी कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) ही वो बन्दे थे जिन्हें इख़्तियार दिया गया था और (वाक़िअतन, वास्तव में) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) हममें सबसे ज़्यादा जानने वाले थे। आँहज़रत (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया कि अपनी सुहबत और माल के ज़रिये मुझ पर अबूबक्र का सबसे ज़्यादा एहसान है और अगर मैं अपने रब के सिवा किसी को जानी दोस्त बना सकता तो अबूबक्र को बनाता, लेकिन इस्लाम का भाईचारा और इस्लाम की मुहब्बत उनसे काफ़ी है, देखो मस्जिद की तरफ़ तमाम दरवाज़े (जो सहाबा के घरों की तरफ़ खुलते थे) सब बन्द कर दिये जाएँ सिर्फ़ अबूबक्र (रज़ि.) का दरवाज़ा रहने दो। (राजेअ: 466)

أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ النَّاسَ وَقَالَ: ((إِنَّ اللهَ خَيَّرَ عَبْدًا بَيْنَ الدُّنْيَا وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، فَاخْتَارَ ذَلِكَ الْعَبْدُ مَا عِنْدَ اللهِ)). قَالَ فَبَكَى أَبُوبَكْرٍ، فَعَجِبْنَا لِبُكَائِهِ أَنْ يُخْبِرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ عَبْدٍ خُيِّرَ، فَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ هُوَ الْمُخَيَّرُ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ أَعْلَمَنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ مَنْ أَمَنَّ الناس عليَّ فِي صُحْبَتِهِ وَمَالِهِ أَبَا بَكْرٍ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيْلاً غَيْرَ رَبِّي لاَتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ، وَلَكِنْ أُخُوَّةُ الإِسْلاَمِ وَمَوَدَّتُهُ، لاَ يَبْقَيَنَّ فِي الْمَسْجِدِ بَابٌ إِلاَّ سُدَّ، إِلاَّ بَابَ أَبِي بَكْرٍ)).

[راجع: ٤٦٦]

हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को एक मुम्ताज़ मुक़ाम अता फ़र्माया और आज तक मस्जिदे नबवी में ये तारीख़ी जगह महफ़ूज़ रखी गई है।

बाब 4 : नबी करीम (ﷺ) के बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की दूसरे सहाबा पर फ़ज़ीलत का बयान

٤- بَابُ فَضْلِ أَبِي بَكْرٍ بَعْدَ النَّبِيِّ ﷺ

3655. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने ही में जब हमें सहाबा के दरम्यान इंतिख़ाब के लिये कहा जाता तो सबमें अफ़ज़ल और बेहतर हम अबूबक्र (रज़ि.) को क़रार देते, फिर उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को फिर उष्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) को।

(दीगर मक़ाम : 3697)

٣٦٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنَّا نُخَيِّرُ بَيْنَ النَّاسِ فِي زَمَنِ النَّبِيِّ ﷺ فَنُخَيِّرُ أَبَا بَكْرٍ، ثُمَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ، ثُمَّ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ)).

[طرفه في : ٣٦٩٧].

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने मज़हबे जुम्हूर की तरफ़ इशारा किया है कि तमाम सहाबा मे हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को फ़ज़ीलत हासिल है। अकषर सलफ़ का यही क़ौल है और ख़ल्फ़ में से भी अकषर ने यही कहा है।

है (या'नी ज़ब मय्यत का बाप ज़िन्दा न हो तो बाप का हिस्सा दादा की तरफ़ लौट जाएगा या'नी बाप की जगह दादा वारिष होगा)।

أَنْزَلَهُ أَبًا، يَعْنِي أَبَا بَكْرٍ)).

3659. हमसे हुमैदी और मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुतइम ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि एक औरत नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आई तो आपने उनसे फ़र्माया कि फिर आइयो। उसने कहा, अगर मैं आऊँ और आपको न पाऊँ तो? गोया वो वफ़ात की तरफ़ इशारा कर रही थी। आपने फ़र्माया कि अगर तुम मुझे न पा सको तो अबूबक्र (रज़ि.) के पास चली आना। (दीगर मक़ाम : 7220, 7360)

٣٦٥٩- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالاَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: ((أَتَتِ امْرَأَةٌ النَّبِيَّ ﷺ فَأَمَرَهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ، قَالَتْ : أَرَأَيْتَ إِنْ جِئْتُ وَلَمْ أَجِدْكَ - كَأَنَّهَا تَقُولُ الْمَوتَ - قَالَ ﷺ: ((إِنْ لَمْ تَجِدِيْنِي فَأْتِي أَبَابَكْرٍ)). [طرفاه في : ٧٢٢٠، ٧٣٦٠].

तश्रीह : इस ह़दीष से ये निकलता है कि आपको बज़रिये वह्य मा'लूम हो चुका था कि आपके बाद ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आपके ख़लीफ़ा होंगे। तबरानी ने अ़स्मा बिन मालिक से निकाला, हमने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपके बाद अपने मालों की ज़कात किसको दें? आपने फ़र्माया अबूबक्र (रज़ि.) को देना, उसकी सनद ज़ईफ़ है। मुअ़जम में सहल बिन अबी खुषैमा से निकाला कि आपसे एक गंवार ने बेअ़त की और पूछा कि अगर आपकी वफ़ात हो जाए तो मैं किसके पास आऊँ? फ़र्माया, अबूबक्र के पास। उसने कहा अगर वो मर जाएँ तो फिर किसके पास? फ़र्माया उ़मर (रज़ि.) के पास। इन रिवायतों से शियाओं का रद्द होता है जो कहते हैं कि आँह़ज़रत (ﷺ) अपने बाद अ़ली (रज़ि.) को ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर गये थे।

3660. हमसे अह़मद बिन अबी त़य्यब ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी मुजालिद ने बयान किया, उनसे बयान बिन बिश्र ने कहा, उनसे वबरह बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे हम्माम ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अ़म्मार (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उस वक़्त देखा है जब आपके साथ (इस्लाम लाने वालों में सिर्फ़) पाँच ग़ुलाम, दो औरतों और अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के सिवा और कोई न था। (दीगर मक़ाम : 3857)

٣٦٦٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي الطَّيِّبِ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ مُجَالِدٍ حَدَّثَنَا بَيَانُ بْنُ بِشْرٍ عَنْ وَبْرَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ هَمَّامٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَمَّارًا يَقُولُ: ((رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَمَا مَعَهُ إِلاَّ خَمْسَةُ أَعْبُدٍ وَامْرَأَتَانِ وَأَبُو بَكْرٍ)). [طرفه في : ٣٨٥٧].

ग़ुलाम ये थे बिलाल, ज़ैद बिन ह़ारिषा, आमिर बिन फ़ुहैरा, अबू फ़कीह और उ़बैद बिन ज़ैद ह़ब्शी, औरतें ह़ज़रत ख़दीजा और उम्मे ऐमन थीं या सुमय्या। ग़र्ज़ आज़ाद मर्दों में सबसे पहले ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ईमान लाए। बच्चों में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) औरतो में ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि.)।

3661. मुझसे हिशाम बिन अ़म्मार ने बयान किया, कहा हमसे स़दक़ा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन वाक़िदने बयान किया, उनसे बुस्र बिन उ़बैदुल्लाह ने, उनसे आइज़ुल्लाह अबू इदरीस ने और उनसे ह़ज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर था कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि) अपने कपड़े का किनारा पकड़े हुए, घुटना खोले हुए आए।

٣٦٦١- حَدَّثَنِي هِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ وَاقِدٍ عَن بُسرِ بن عُبَيْدِ اللهِ عَنْ عَائِذِ اللهِ أَبِي إِدْرِيْسَ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ

हदीष़ में ये फ़र्माया था कि जो अपनी इज़ार घसीटते चले। तो उन्होंने कहा कि मैंने तो उनसे यही सुना कि जो कोई अपना कपड़ा लटकाए। (दीगर मक़ाम : 5783, 5791, 6062)

لَمْ أَسْمَعْهُ ذَكَرَ إِلاَّ ((ثَوْبَهُ)).

[أطرافه في : ٥٧٨٣، ٥٧٩١، ٦٠٦٢].

तश्रीह़ : मा'लूम हुआ कि **इन्नमल्आमालु बिन्नियात**, अगर कोई अपनी इज़ार टख़ने से ऊँची भी रखे और मग़रूर हो तो उसकी तबाही यक़ीनी है। अगर बिला क़स्द और बिला निय्यते गुरूर लटक जाए तो वो इस वईद में दाख़िल न होगा। ये हर कपड़े को शामिल है। इज़ार हो या पाजामा या कुर्ता की आस्तीन बहुत बड़ी बड़ी रखना, अगर गुरूर की राह से ऐसा करे तो सख़्त गुनाह और ह़राम है। आज के दौर में अज़्राहे किब्र व गुरूर कोट पतलून इस तरह़ पहनने वाले इसी वईद में दाख़िल हैं।

3666. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुऐब ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे ह मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औफ़ ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि जिसने अल्लाह के रास्ते में किसी चीज़ का एक जोड़ा ख़र्च किया (मष़लन दो रुपये, दो कपड़े, दो घोड़े अल्लाह तआ़ला के रास्ते में दिये) तो उसे जन्नत के दरवाज़ों से बुलाया जाएगा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! इधर आ, ये दरवाज़ा बेहतर है पस जो शख़्स़ नमाज़ी होगा उसे नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, जो शख़्स़ मुजाहिद होगा उसे जिहाद के दरवाज़े से बुलाया जाएगा। जो शख़्स़ अहले स़दक़ा में से होगा उसे स़दक़ा के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो शख़्स़ रोज़ेदार होगा उसे स़ियाम और रय्यान (सैराबी) के दरवाज़े से बुलाया जाएगा। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया जिस शख़्स़ को इन तमाम ही दरवाज़ों से बुलाया जाएगा फिर तो उसे किसी क़िस्म का डर बाक़ी नहीं रहेगा और पूछा क्या कोई शख़्स़ ऐसा भी होगा जिसे उन तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाए या रसूलल्लाह! आप (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ और मुझे उम्मीद है तुम भी उन्हीं में से होंगे ऐ अबूबक्र!

(राजेअ़ : 1897)

٣٦٦٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ: يَقُولُ : ((مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ مِنْ شَيْءٍ مِنَ الأَشْيَاءِ فِي سَبِيْلِ اللهِ دُعِيَ مِنْ أَبْوَابِ - يَعْنِي الْجَنَّةِ - يَا عَبْدَ اللهِ هَذَا خَيْرٌ. فَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّلاَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّلاَةِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجِهَادِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الْجِهَادِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّدَقَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّدَقَةِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصِّيَامِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصِّيَامِ وَبَابِ الرَّيَّانِ)). فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَا عَلَى هَذَا الَّذِي يُدْعَى مِنْ تِلْكَ الأَبْوَابِ مِنْ ضَرُورَةٍ. وَقَالَ : هَلْ يُدْعَى مِنْهَا كُلِّهَا أَحَدٌ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ : ((نَعَمْ، وَأَرْجُوا أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ يَا أَبَا بَكْرٍ)).

[راجع: ١٨٩٧]

3667. मुझसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन

٣٦٦٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ

उर्वा ने, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) की जब वफ़ात हुई तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) उस वक़्त मक़ामे सनह में थे। इस्माईल ने कहा या'नी अवाली के एक गाँव में। आपकी ख़बर सुनकर हज़रत उमर उठकर ये कहने लगे कि अल्लाह की क़सम रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात नहीं हुई। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत उमर (रज़ि.) कहा करते थे अल्लाह की क़सम! उस वक़्त मेरे दिल में यही ख़्याल आता था और मैं कहता था कि अल्लाह आपको ज़रूर इस बीमारी से अच्छा करके उठाएगा और आप उन लोगों के हाथ और पाँव काट देंगे (जो आपकी मौत की बातें करते हैं)। इतने में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) तशरीफ़ ले आए और अंदर जाकर आपकी नअशे मुबारक के ऊपर से कपड़ा उठाया और बोसा दिया और कहा, मेरे बाप और माँ आप पर फिदा हों, आप ज़िन्दगी में भी पाकीज़ा थे और वफ़ात के बाद भी और उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अल्लाह तआला आप पर दो मर्तबा मौत हर्गिज़ तारी नहीं करेगा। उसके बाद आप बाहर आए और उमर (रज़ि.) से कहने लगे ऐ क़सम खाने वाले! ज़रा ताम्मुल कर। फिर जब हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने बातचीत शुरू की तो हज़रत उमर (रज़ि.) खामोश होकर बैठ गये। (राजेअ : 1241)

عُرْوَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ مَاتَ وَأَبُو بَكْرٍ بِالسُّنْحِ - قَالَ إِسْمَاعِيْلُ : يَعْنِي بِالْعَالِيَةِ - فَقَامَ عُمَرُ يَقُولُ : وَاللهِ مَا مَاتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ. قَالَتْ وَقَالَ عُمَرُ: وَاللهِ مَا كَانَ يَقَعُ فِي نَفْسِي إِلاَّ ذَاكَ، وَلَيَبْعَثَنَّهُ اللهُ فَلَيَقْطَعَنَّ أَيْدِيَ رِجَالٍ وَأَرْجُلَهُمْ. فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ فَكَشَفَ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَبَّلَهُ فَقَالَ : بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، طِبْتَ حَيًّا وَمَيْتًا، وَاللهِ الَّذِيْ نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ يُذِيْقُكَ اللهُ الْمَوْتَتَيْنِ أَبَدًا. ثُمَّ خَرَجَ فَقَالَ : أَيُّهَا الْحَالِفُ، عَلَى رِسْلِكَ، فَلَمَّا تَكَلَّمَ أَبُو بَكْرٍ جَلَسَ عُمَرُ)). [راجع ١٢٤١]

3668. हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने पहले अल्लाह की हम्दो-षना बयान की। फिर फ़र्माया लोगों देखो अगर कोई मुहम्मद (ﷺ) को पूजता था (या'नी ये समझता था कि वो आदमी नहीं हैं, वो कभी नहीं मरेंगे) तो उसे मा'लूम होना चाहिये कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की वफ़ात हो चुकी है और जो शख़्स अल्लाह की पूजा करता था तो अल्लाह हमेशा ज़िन्दा है उसे मौत कभी नहीं आएगी (फिर अबूबक्र रज़ि. ने सूरह ज़ुमर की ये आयत पढ़ी) ऐ नबी! तुम भी मरने वाले हो और वो भी मरेंगे। (अन् नज्म : 30) और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि मुहम्मद (ﷺ) सिर्फ़ एक रसूल हैं। इससे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं। पस क्या अगर वो वफ़ात पा जाएँ या उन्हें शहीद कर दिया जाए तो तुम इस्लाम से फिर जाओगे और जो शख़्स अपनी ऐड़ियों के बल फिर जाए तो वो अल्लाह को कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेगा और अल्लाह अन्क़रीब शुक्रगुज़ार बन्दों का बदला देने वाला है। (आले इमरान

٣٦٦٨- ((فَحَمِدَ اللهَ أَبُو بَكْرٍ وَأَثْنَى عَلَيْهِ وَقَالَ: أَلاَ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللهَ فَإِنَّ اللهَ حَيٌّ لاَ يَمُوتُ وَقَالَ : ﴿إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ﴾ [الزمر: ٣٠]. وَقَالَ: ﴿وَمَا مُحَمَّدٌ إِلاَّ رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ، أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ؟ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللهَ شَيْئًا، وَسَيَجْزِي اللهُ الشَّاكِرِيْنَ﴾ [آل عمران: ١٤٤]. قَالَ :

(ﷺ) की नज़र (वफ़ात से पहले) उठी और आपने फ़र्माया ऐ अल्लाह! मुझे रफ़ीक़े आला में (दाख़िल कर) आपने ये जुम्ला तीन मर्तबा फ़र्माया और पूरी ह़दीष़ बयान की। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि ह़ज़रत अबूबक्र और उमर (रज़ि.) दोनों ही के ख़ुत्बों से नफ़ा पहुँचा। ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने लोगों को धमकाया क्योंकि उनमे कुछ मुनाफ़िक़ीन भी थे। इसलिये अल्लाह तआला ने इस तरह (ग़लत अफ़वाहें फैलाने से) उनको बाज़ रखा। (राजेअ: 1241)

قَالَتْ: ((شَخَصَ بَصَرُ النَّبِيِّ ﷺ ثُمَّ قَالَ: فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى (ثَلاَثًا) وَقَصَّ الْحَدِيثَ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَمَا كَانَ مِنْ خُطْبَتِهِمَا مِنْ خُطْبَةٍ إِلاَّ نَفَعَ اللهُ بِهَا، لَقَدْ خَوَّفَ عُمَرُ النَّاسَ وَإِنَّ فِيهِمْ لَنِفَاقًا فَرَدَّهُمُ اللهُ بِذَلِكَ)). [راجع: ١٢٤١]

3670. और बाद में ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने जो ह़क़ और हिदायत की बात थी वो लोगों को समझा दी और उनको बतला दिया जो उन पर लाज़िम था (या'नी इस्लाम पर क़ायम रहना) और वो ये आयत तिलावत करते हुए बाहर आए, मुह़म्मद (ﷺ) एक रसूल हैं और उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं । अश्शाकिरीन तक। (राजेअ: 1242)

٣٦٧٠- ((ثُمَّ لَقَدْ بَصَّرَ أَبُو بَكْرٍ النَّاسَ الْهُدَى، وَعَرَّفَهُمُ الْحَقَّ الَّذِي عَلَيْهِمْ، وَخَرَجُوا بِهِ يَتْلُونَ: ﴿وَمَا مُحَمَّدٌ إِلاَّ رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ - إِلَى - الشَّاكِرِينَ﴾. [راجع: ١٢٤٢]

तश्रीह़ : ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के इस अज़ीम ख़ुत्बा ने उम्मत केशीराज़े को मुंतशिर होने (बिखरने) से बचा लिया। अंसार ने जो दो अमीर मुक़र्रर करने की तज्वीज़ पेश की थी वो सह़ीह़ नहीं थी क्योंकि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रखी जा सकतीं। रिवायत में ह़ज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.) के लिये ह़ज़रत उमर (रज़ि.) की बद दुआ मज़्कूर है। वही दो अमीर मुक़र्रर करने की तज्वीज़ लेकर आए थे। अल्लाह न करे इस पर अमल होता तो नतीजा बहुत ही बुरा होता। कहते हैं कि ह़ज़रत उबादा उसके बाद शाम के मुल्क को चले गये और वहीं आपका इंतिक़ाल हुआ। इस ह़दीष़ से नस़बे ख़लीफ़ा का वुजूब ष़ाबित हुआ क्योंकि सह़ाबा किराम (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) की तज्हीज़ व तक्फ़ीन पर भी उसको मुक़द्दम रखा, सद अफ़सोस कि उम्मत ने जल्द ही इस फ़र्ज़ को फ़रामोश कर दिया। पहली ख़राबी ये पैदा हुई कि ख़िलाफ़त की जगह मलूकियत आ गई, फिर जब मुसलमानों ने क़तार आलम में क़दम रखा तो मुख़्तलिफ़ अक़्वामे आलम से उनका साबिक़ा पड़ा जिसे मुताष़्ष़िर होकर वो इस फ़रीज़-ए-मिल्लत को भूल गए और इंतिशार का शिकार हो गये। आज तो दौर ही दूसरा है अगरचे अब भी मुसलमानों की काफ़ी हुकूमतें दुनिया में क़ायम हैं मगर ख़िलाफ़ते राशिदा की झलक से अकष़र मह़रूम हैं। अल्लाह पाक इस पुरफ़ितन दौर में मुसलमानों को बाहमी इत्तिफ़ाक़ नसीब करे कि वो मुत्तह़िदा तौर पर जमा होकर मिल्लते इस्लामिया की ख़िदमत कर सकें। आमीन।

3671. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, कहा हमसे जामेअ बिन अबी राशिद ने बयान किया, कहा हमसे अबू यअला ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन ह़नीफ़ा ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद (अली रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद सबसे अफ़ज़ल स़ह़ाबी कौन हैं? उन्होंने बतलाया कि अबूबक्र (रजि)। मैंने पूछा फिर कौन हैं? उन्होंने बतलाया कि उसके बाद उमर (रज़ि.) हैं। मुझे इसका अंदेशा हुआ कि अब (फिर मैंने पूछा कि उसके बाद? तो कह देंगे कि उष़्मान (रज़ि.)। इसलिये मैंने ख़ुद कहा, उसके बाद आप हैं? ये सुनकर बोले कि मैं तो

٣٦٧١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ: حَدَّثَنَا جَامِعُ بْنُ أَبِي رَاشِدٍ: حَدَّثَنَا أَبُو يَعْلَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْحَنَفِيَّةِ قَالَ: قُلْتُ لأَبِي: أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ بَعْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: أَبُوبَكْرٍ، قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ثُمَّ عُمَرُ. وَ خَشِيتُ أَنْ يَقُولَ: عُثْمَانُ، قُلْتُ: ثُمَّ أَنْتَ؟ قَالَ: مَا أَنَا إِلاَّ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ.

सिर्फ़ आम मुसलमानों की जमाअ़त का एक शख़्स हूँ।

तश्रीह : हज़रत अ़ली (रज़ि.) के इस क़ौल से उन लोगों ने दलील ली है जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) के बाद सबसे अफ़ज़ल कहते हैं फिर उनके बाद हज़रत उमर (रज़ि.) को जैसे जुम्हूर अहले सुन्नत का क़ौल है। अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ मुहद्दिष़ फ़र्माते हैं कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने ख़ुद शैख़ेन को अपने ऊपर फ़ज़ीलत दी है लिहाज़ा मैं भी फ़ज़ीलत देता हूँ वरना कभी फ़ज़ीलत न देता। दूसरी रिवायत में हज़रत अ़ली (रज़ि.) से मन्कूल है कि जो कोई मुझको शैख़ेन के ऊपर फ़ज़ीलत दे मैं उसको मुफ़्तरी की हद लगाऊँगा। इससे उन सुन्नी हज़रात को सबक़ लेना चाहिये जो हज़रत अ़ली (रज़ि.) की तफ़्ज़ील के क़ाइल हैं जबकि ख़ुद हज़रत अ़ली (रज़ि.) ही उनको मुफ़्तरी क़रार दे रहे हैं।

٣٦٧٢ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْبَيْدَاءِ - أَوْ بِذَاتِ الْجَيْشِ - انْقَطَعَ عِقْدٌ لِيْ. فَأَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الْتِمَاسِهِ، وَأَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. فَأَتَى النَّاسُ أَبَا بَكْرٍ فَقَالُوا: أَلاَ تَرَى مَا صَنَعَتْ عَائِشَةُ؟ أَقَامَتْ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ وَبِالنَّاسِ مَعَهُ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ وَاضِعٌ رَأْسَهُ عَلَى فَخِذِيْ قَدْ نَامَ، فَقَالَ: حَبَسْتِ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَالنَّاسَ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. قَالَتْ: فَعَاتَبَنِي وَقَالَ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَقُولَ، وَجَعَلَ يَطْعُنُنِي بِيَدِهِ فِي خَاصِرَتِي فَلاَ يَمْنَعُنِي مِنَ التَّحَرُّكِ إِلاَّ مَكَانُ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَلَى فَخِذِيْ، فَنَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى أَصْبَحَ عَلَى غَيْرِ مَاءٍ، فَأَنْزَلَ اللهُ آيَةَ التَّيَمُّمِ ﴿فَتَيَمَّمُوا﴾ [النساء : ٤٣]، فَقَالَ أُسَيْدُ بْنُ الْحُضَيْرِ

3672. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सफ़र में हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चले जब हम मुक़ामे बैदा या मुक़ामे ज़ातुल जैश पर पहुँचे तो मेरा एक हार टूटकर गिर गया। इसलिये हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उसकी तलाश के लिये वहाँ ठहर गये और स़हाबा भी आपके साथ ठहरे लेकिन न उस जगह पर पानी था और न उनके साथ पानी था। लोग हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आकर कहने लगे कि आप मुलाहिज़ा नहीं फ़र्माते, आइशा (रज़ि.) ने क्या किया, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को यहीं रोक लिया है। इतने स़हाबा आपके साथ हैं, न तो यहाँ पानी है और न लोग अपने साथ लिये (पानी) हुए हैं। उसके बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अंदर आए। रसूलुल्लाह (ﷺ) उस वक़्त अपना सरे मुबारक मेरी रान पर रखे हुए सो रहे थे। वो कहने लगे, तुम्हारी वजह से आँहज़रत (ﷺ) को और सब लोगों को रुकना पड़ा। अब न यहाँ कहीं पानी है और न लोगों के साथ पानी है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हजरत अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझ पर गुस्सा किया और जो कुछ अल्लाह को मंज़ूर था उन्होंने कहा और अपने हाथ से मेरी कोख में कचूके लगाने लगे। मैं ज़रूर तड़प उठती मगर आँहज़रत (ﷺ) का सरे मुबारक मेरी रान पर था। आँहज़रत (ﷺ) सोते रहे। जब सुबह हुई तो पानी नहीं था और उसी मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ने तयम्मुम का हुक्म नाज़िल फ़र्माया और सबने तयम्मुम किया, इस पर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने कहा कि ऐ आले अबूबक्र (रज़ि.) तुम्हारी कोई पहली

बरकत नहीं है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हमने उस ऊँट को उठाया जिस पर मैं सवार थी तो हार उसी के नीचे हमें मिला। (राजेअ़ : 334)

: مَا هِيَ بِأَوَّلِ بَرَكَتِكُمْ يَا آلَ أَبِي بَكْرٍ فَقَالَتْ عَائِشَةُ : فَبَعَثْنَا الْبَعِيرَ الَّذِي كُنْتُ عَلَيْهِ فَوَجَدْنَا الْعِقْدَ تَحْتَهُ)).

[راجع: ٣٣٤]

तश्रीह : गुम होने वाला हार हज़रत अस्मा (रज़ि.) का था, इसलिये हज़रत आइशा (रज़ि.) को और भी ज़्यादा फ़िक्र हुआ, बाद में अल्लाह तआला ने उसे मिला दिया। हज़रत उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) के क़ौल का मतलब ये है कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की औलाद की वजह से मुसलमानों को हमेशा फ़वाइद व बरकात मिलते रहे हैं। ये ह़दीष़ किताबुत तयम्मुम में भी मज़्कूर हो चुकी है। यहाँ पर उसके लाने से ये ग़र्ज़ है कि इस ह़दीष़ से हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के ख़ानदान की फ़ज़ीलत षाबित होती है। उसैद (रज़ि.) ने कहा। **मा हिया बिअव्वलि बर्कतिकुम या आल अबीबक्र.**

3673. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा मैंने ज़क्वान से सुना और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे अस्हाब को बुरा भला मत कहो। अगर कोई शख़्स उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना (अल्लाह की राह में) खर्च कर डाले तो उनके एक मुद अनाज के बराबर भी नहीं हो सकता और न उनके आधे मुद के बराबर। शुअ़बा के साथ इस ह़दीष़ को जरीर, अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद, अबू मुआ़विया और मुहाजिर ने भी आ'मश से रिवायत किया है।

٣٦٧٣- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ : سَمِعْتُ ذَكْوَانَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَسُبُّوا أَصْحَابِي، فَلَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا مَا بَلَغَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلاَ نَصِيفَهُ)). تَابَعَهُ جَرِيْرٌ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ دَاوُدَ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ وَمُحَاضِرٌ عَنِ الأَعْمَشِ.

तश्रीह : इससे आ़म तौर पर सहाबा किराम (रज़ि.) की फ़ज़ीलत षाबित होती है ये वो बुज़ुर्गाने इस्लाम हैं । जिनको दीदारे रिसालत पनाह (ﷺ) नसीब हुआ। इसलिये उनकी अल्लाह के नज़दीक बड़ी अहमियत है। जरीर (रह.) की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने और मुहाज़िर की रिवायत को अबुल फ़तह ने अपने फ़वाइद में और अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद की रिवायत को मुसद्दद ने और अबू मुआ़विया की रिवायत को इमाम अह़मद ने वस्ल किया है। ख़िदमते इस्लाम में सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाह अ़न्हुम अज्मईन की माली क़ुर्बानियों को इसलिये फ़ज़ीलत ह़ासिल है कि उन्होंने ऐसे वक़्त में ख़र्च किया जब सख़्त ज़रूरत थी, काफ़िरों का ग़ल्बा था और मुसलमान मुह़्ताज थे। मक़्सूद मुहाजिरीने अव्वलीन और अंसार की फ़ज़ीलत बयान करना है। उनमें अबूबक्र (रज़ि.) भी थे, लिहाज़ा बाब की मुताबक़त ह़ासिल हो गई। ये ह़दीष़ आपने उस वक़्त फ़र्माई जब ख़ालिद बिन वलीद और अ़ब्दुर्रह़मान बिन औफ़ (रज़ि.) में कुछ तकरार हुई। ख़ालिद ने अ़ब्दुर्रह़मान को कुछ सख़्त कहा आपने ख़ालिद (रज़ि.) को मुख़ात़ब करके ये फ़र्माया। कुछ ने कहा कि ये ख़ित़ाब उन लोगों की त़रफ़ है जो सह़ाबा के बाद पैदा होंगे। उनको मौजूदा फ़र्ज़ करके उनकी त़रफ़ ख़ित़ाब किया। मगर ये क़ौल सह़ीह़ नहीं है क्योंकि ख़ालिद (रज़ि.) की त़रफ़ ख़ित़ाब करके आपने ये ह़दीष़ फ़र्माई थी और ख़ालिद (रज़ि.) ख़ुद सह़ाबा मे से हैं।

3674. हमसे अबुल ह़सन मुह़म्मद बिन मिस्कीन ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन ह़स्सान ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे शुरैक बिन अबी नम्रह ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया, कहा मुझको अबू मूसा अशअ़री

٣٦٧٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْكِينٍ أَبُو الْحَسَنِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ شَرِيكِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ عَنْ

(रज़ि.) के कुछ हालात पूछे, जो मैंने उन्हें बता दिये तो उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद मैंने किसी शख़्स को दीन में इतनी ज़्यादा कोशिश करने वाला और इतना ज़्यादा सख़ी नहीं देखा और ये ख़साइल हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) पर ख़त्म हो गये।

شَأْنِهِ - يَعْنِي عُمَرَ - فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ : مَا رَأَيْتُ أَحَدًا قَطُّ بَعْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِنْ حِيْنِ قُبِضَ كَانَ أَجَدَّ وَأَجْوَدَ حَتَّى انْتَهَى مِنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ)).

M-09825696131

मुराद ये है कि अपने अहदे ख़िलाफ़त में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) बहुत बड़े दिलदार, बहुत बड़े सख़ी और इस्लाम के अज़ीम सुतून थे। मन्क़बत का जहाँ तक ता'ल्लुक़ है हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का मुक़ाम तमाम सहाबा से आला व अरफ़अ है।

3688. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे षाबित ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक साहब (ज़ुल ख़ुवेसिर या अबू मूसा) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से क़यामत के बारे में पूछा कि क़यामत कब क़ायम होगी? इस पर आपने फ़र्माया, तुमने क़यामत के लिये तैयारी क्या की है? उन्हों ने अर्ज़ किया कुछ भी नहीं, सिवा उसके कि मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तुम्हारा हश्र भी उन्हीं के साथ होगा जिनसे तुम्हें मुहब्बत है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें कभी इतनी ख़ुशी किसी बात से भी नहीं हुई जितनी आपकी ये हदीष सुनकर हुई कि तुम्हारा हश्र उन्हीं के साथ होगा जिनसे तुम्हें मुहब्बत है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि मैं भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से और हज़रत अबूबक्र व उमर (रज़ि.) से मुहब्बत रखता हूँ और उनसे अपनी इस मुहब्बत की वजह से उम्मीद रखता हूँ कि मेरा हश्र उन्हीं के साथ होगा, अगरचे मैं उन जैसे अमल न कर सका। (दीगर मक़ाम : 167, 6171, 7153)

٣٦٨٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَجُلاً سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ السَّاعَةِ فَقَالَ: مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ: ((وَمَاذَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟)) قَالَ: لاَ شَيْءَ، إِلاَّ أَنِّي أُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ : ((أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ)). قَالَ: أَنَسٌ: فَمَا فَرِحْنَا بِشَيْءٍ فَرِحْنَا بِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ. قَالَ أَنَسٌ: فَأَنَا أُحِبُّ النَّبِيَّ ﷺ وَأَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ، وَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ مَعَهُمْ بِحُبِّي إِيَّاهُمْ، وَإِنْ لَمْ أَعْمَلْ بِمِثْلِ أَعْمَالِهِمْ)).

[أطرافه في : ١٦٧، ٦١٧١، ٧١٥٣].

हज़रत अनस (रज़ि.) के साथ मुतर्जिम व नाशिर की भी यही दुआ है।

3689. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे पहले उम्मतों में मुहद्दष हुआ करते थे, और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स है तो वो उमर हैं। ज़करिया बिन ज़ायदा ने अपनी रिवायत में सअद से ये बढ़ाया

٣٦٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيْمَا قَبْلَكُمْ مِنَ الأُمَمِ نَاسٌ مُحَدَّثُونَ، فَإِنْ يَكُ فِي أُمَّتِي أَحَدٌ فَإِنَّهُ عُمَرُ)) زَادَ زَكَرِيَّاءُ بْنُ أَبِي

3689. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे पहले उम्मतों में मुह़द्दष़ हुआ करते थे, और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स है तो वो उ़मर हैं। ज़करिया बिन ज़ायदा ने अपनी रिवायत में सअद से ये बढ़ाया

٣٦٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيمَا قَبْلَكُمْ مِنَ الأُمَمِ نَاسٌ مُحَدَّثُونَ، فَإِنْ يَكُ فِي أُمَّتِي أَحَدٌ فَإِنَّهُ عُمَرُ)) زَادَ زَكَرِيَّاءُ بْنُ أَبِي

कि उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमसे पहले बनी इस्राईल की उम्मतों में कुछ लोग ऐसे हुआ करते थे कि नबी नहीं होते थे और उसके बावजूद फ़रिश्ते उनसे कलाम किया करते थे और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स हो सकता है तो वो ह़ज़रत उ़मर हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने पढ़ा, मन नबिय्यि वला मुह़द्दिष़। (राजेअ : 3469)

زَائِدَةَ عَنْ سَعْدٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ رِجَالٌ يُكَلَّمُونَ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَكُونُوا أَنْبِيَاءَ، فَإِنْ يَكُنْ فِي أُمَّتِي مِنْهُمْ أَحَدٌ فَعُمَرُ)).
قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((مِنْ نَبِيٍّ وَلاَ مُحَدَّثٍ)). [راجع: ٣٤٦٩]

M-09825696131

तश्रीह : मुह़द्दष़ वो जिस पर अल्लाह की त़रफ़ से इल्हाम हो और ह़क़ उसकी ज़ुबान पर जारी हो जाए या फ़रिश्ते इससे बात करें या वो जिसकी राय बिलकुल स़ह़ीह़ ष़ाबित हो। मुह़द्दष़ वो भी हो सकता है जो स़ाह़िबे कशफ़ हो जैसे ह़ज़रत ईसा (रज़ि.) की उम्मत में ह़ज़रत यूह़न्ना ह़वारी गुज़रे हैं जिनके मकाशिफ़ात मशहूर हैं। यक़ीनन ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) भी ऐसे ही लोगों में से हैं। रिवायत के आख़िर में मज़्कूर है कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) सूरह ह़ज्ज की इस आयत को यूँ पढ़ते थे, **वमा अर्सल्ना मिन क़ब्लिक मिन रसूलिन व ला नबिय्यिन व ला मुह़द्दसुन** अल्ख़.

कि उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमसे पहले बनी इस्राईल की उम्मतों में कुछ लोग ऐसे हुआ करते थे कि नबी नहीं होते थे और उसके बावजूद फ़रिश्ते उनसे कलाम किया करते थे और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स हो सकता है तो वो हज़रत उमर हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने पढ़ा, मन नबिय्यि वला मुहद्दिष़। (राजेअ़ : 3469)

زَائِدَةَ عَنْ سَعْدٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ رِجَالٌ يُكَلَّمُونَ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَكُونُوا أَنْبِيَاءَ، فَإِنْ يَكُنْ فِي أُمَّتِي مِنْهُمْ أَحَدٌ فَعُمَرُ)). قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((مِنْ نَبِيٍّ وَلاَ مُحَدَّثٍ)). [راجع: ٣٤٦٩]

M-09825696131

तश्रीह : मुहद्दष़ वो जिस पर अल्लाह की तरफ़ से इल्हाम हो और हक़ उसकी ज़ुबान पर जारी हो जाए या फ़रिश्ते इससे बात करें या वो जिसकी राय बिलकुल सहीह ष़ाबित हो। मुहद्दष़ वो भी हो सकता है जो साहिबे कशफ़ हो जैसे हज़रत ईसा (रज़ि.) की उम्मत में हज़रत यूहन्ना हवारी गुज़रे हैं जिनके मकाशिफ़ात मशहूर हैं। यक़ीनन हज़रत उमर (रज़ि.) भी ऐसे ही लोगों में से हैं। रिवायत के आख़िर में मज़्कूर है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) सूरह हज्ज की इस आयत को यूँ पढ़ते थे, **वमा अर्सल्ना मिन क़ब्लिक मिन रसूलिन व ला नबिय्यिन व ला मुहद्दसुन** अल्ख़.

3690. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया कि हमने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक चरवाहा अपनी बकरियाँ चरा रहा था कि एक भेड़िये ने उसकी एक बकरी पकड़ ली। चरवाहे ने उसका पीछा किया और बकरी को उससे छुड़ा लिया। फिर भेड़िया उसकी तरफ़ मुतवज्जह होकर बोला। दरिन्दों के दिन उसकी हिफ़ाज़त करने वाला कौन होगा, जब मेरे सिवा उसका कोई चरवाहा न होगा। सहाबा (रज़ि.) इस पर बोल उठे सुब्हानल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं उस वाक़िये पर ईमान लाया और अबूबक्र व उमर (रज़ि.) भी। हालाँकि वहाँ अबूबक्र व उमर (रज़ि.) मौजूद नहीं थे। (राजेअ़ : 2324)

٣٦٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالاَ: سَمِعْنَا أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بَيْنَمَا رَاعٍ فِي غَنَمِهِ عَدَا الذِّئْبُ فَأَخَذَ مِنْهَا شَاةً، فَطَلَبَهَا حَتَّى اسْتَنْقَذَهَا، فَالْتَفَتَ إِلَيْهِ الذِّئْبُ فَقَالَ لَهُ: مَنْ لَهَا يَوْمَ السَّبُعِ، لَيْسَ لَهَا رَاعٍ غَيْرِي؟ فَقَالَ النَّاسُ: سُبْحَانَ اللهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: فَإِنِّي أُوْمِنُ بِهِ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ. وَمَا ثَمَّ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ)). [راجع: ٢٣٢٤]

ये हदीष़ ऊपर गुज़र चुकी है। उसमें गाय का भी ज़िक्र था। इससे भी हज़राते शैख़ेन की फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई।

3691. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील बिन हनीफ़ ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मैंने ख़्वाब में देखा

٣٦٩١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو أُمَامَةَ بْنُ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ عَنْ

बाब 16 : नबी करीम (ﷺ) के दामादों का बयान अबुल आ़स़ बिन रबीअ़ भी उन ही में से हैं

3729. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ली बिन हुसैन ने बयान किया और उनसे मिस्वर बिन मख़्रमा (रज़ि.) ने बयान किया कि अ़ली (रज़ि.) ने अबू जहल की लड़की को (जो मुसलमान थीं) पैग़ामे निकाह़ दिया। उसकी ख़बर जब ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को हुई तो वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आईं और अ़र्ज़ किया कि आपकी क़ौम का ख़याल है कि आपको अपनी बेटियों की ख़ातिर (जब उन्हें कोई तकलीफ़ दे) किसी पर ग़ुस़्सा नहीं आता। अब देखिए ये अ़ली अबू जहल की बेटी से निकाह़ करना चाहते हैं। इस पर आँहुज़ूर (ﷺ) ने स़ह़ाबा को ख़िताब फ़र्माया। मैने आपको ख़ुत्बा पढ़ते सुना, फिर आपने फ़र्माया, अम्मा बअ़द! मैंने अबुल आ़स़ बिन रबीअ़ से (ज़ैनब रज़ि. की, आपकी सबसे बड़ी बेटी) शादी की तो उन्होंने जो बात भी कही उसमें वो सच्चे उतरे और बिला शुब्हा फ़ातिमा भी मेरे

١٦- بَابُ ذِكْرِ أَصْهَارِ النَّبِيِّ ﷺ.
مِنْهُمْ أَبُو الْعَاصِ بْنِ الرَّبِيعِ

٣٧٢٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنِ مَخْرَمَةَ قَالَ: ((إِنَّ عَلِيًّا خَطَبَ بِنْتَ أَبِي جَهْلٍ، فَسَمِعَتْ بِذَلِكَ فَاطِمَةُ، فَأَتَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَزْعُمُ قَوْمُكَ أَنَّكَ لاَ تَغْضَبُ لِبَنَاتِكَ، وَهَذَا عَلِيٌّ نَاكِحٌ بِنْتَ أَبِي جَهْلٍ. فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَسَمِعْتُهُ حِيْنَ تَشَهَّدَ يَقُولُ: ((أَمَّا بَعْدُ أَنْكَحْتُ أَبَا الْعَاصِ بْنِ الرَّبِيعِ فَحَدَّثَنِي وَصَدَقَنِي، وَإِنَّ فَاطِمَةَ بَضْعَةٌ مِنِّي، وَإِنِّي أَكْرَهُ أَنْ يَسُوءَهَا. وَاللهِ لاَ تَجْتَمِعُ بِنْتُ

(जिस्म का) एक टुकड़ा है और मुझे ये पसन्द नहीं कि कोई भी उसे तकलीफ़ दे। अल्लाह की क़सम, रसूलुल्लाह (ﷺ) की बेटी और अल्लाह तआ़ला के एक दुश्मन की बेटी एक शख़्स के पास जमा नहीं हो सकतीं। चुनाँचे अ़ली (रज़ि.) ने उस शादी का इरादा तर्क कर दिया। मुहम्मद बिन अ़म्र बिन हल्हला ने इब्ने शिहाब से ये इज़ाफ़ा किया है। उन्होंने अ़ली बिन हुसैन से और उन्होंने मिस्वर (रज़ि.) से बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने बनी अ़ब्दे शम्स के अपने एक दामाद का ज़िक्र किया और हुक़ूक़े दामादी की अदायगी की ता'रीफ़ फ़र्माई। फिर फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे जो बात भी कही सच्ची कही और जो वा'दा भी किया पूरा कर दिखाया।

رَسُولِ اللهِ ﷺ وَبِنْتُ عَدُوِّ اللهِ عِنْدَ رَجُلٍ وَاحِدٍ)). فَتَرَكَ عَلِيٌّ الْخِطْبَةَ)).

وَزَادَ مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ حَلْحَلَةَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ مِسْوَرٍ ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَذَكَرَ صِهْرًا لَهُ مِنْ بَنِي عَبْدِ شَمْسٍ فَأَثْنَى عَلَيْهِ فِي مُصَاهَرَتِهِ إِيَّاهُ فَأَحْسَنَ، قَالَ: حَدَّثَنِي فَصَدَقَنِي، وَوَعَدَنِي فَوَفَى لِيْ)).

तश्रीह़ : ह़ज़रत अबुल आ़स़ मुक़्सम बिन अर् रबीअ़ हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) की स़ाह़बज़ादी ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) उनके निकाह़ में थीं। बद्र के दिन इस्लाम क़ुबूल करके मदीना की त़रफ़ हिजरत की। आँह़ज़रत (ﷺ) से सच्ची मुह़ब्बत रखते थे। जंगे यमामा में जामे शहादत नोश फ़र्माया। उनकी फ़ज़ीलत के लिये ये काफ़ी है कि ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी वफ़ादारी की ता'रीफ़ फ़र्माई। जब ह़ज़रत अबुल आ़स़ (रज़ि.) का ये ह़ाल है तो फिर अ़ली (रज़ि.) से तअ़ज्जुब है कि वो अपना वा'दा क्यूँ पूरा न करें ! हुआ ये था कि अबुल आस (रज़ि.) ने ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) से निकाह़ होते वक़्त ये शर्त कर ली थी कि उनके रहने तक मैं दूसरी बीवी न करूंगा। इस शर्त को अबुल आस ने पूरा किया। शायद ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने भी यही शर्त की हो लेकिन जुवैरिया को पयाम देते वक़्त वो भूल गये थे। जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने इ़ताब (ग़ुस़्से) का ये ख़ुत्बा पढ़ा तो उनको अपनी शर्त याद आ गई और वो इस इरादे से बाज़ आए। कुछ ने कहा कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से ऐसी कोई शर्त नहीं हुई थी लेकिन ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) बड़े रंजों में गिरफ़्तार थीं। वालिदा गुज़र गईं, तीनों बहनें गुज़र गईं, अकेली बाक़ी रह गई थीं। अब सौकन आने से वो परेशान होकर अंदेशा था कि उनकी जान को नुक़्सान पहुँचे। इसलिये आपने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) पर इ़ताब (ग़ुस़्सा) फ़र्माया था। (वह़ीदी)

भेजूँगा जो ह़क़ीक़ी मा'नों में अमीन होगा। ये सुनकर तमाम सहाबा किराम (रज़ि.) को शौक़ हुआ लेकिन आप (ﷺ) ने ह़ज़रत अबू उ़बैदह़ (रज़ि.) को भेजा।

(दीगर मक़ाम : 4380, 4381, 7354)

لأَهْلِ نَجْرَانَ: ((لأَبْعَثَنَّ - عَلَيْكُمْ، - أَمِينًا حَقَّ أَمِينٍ)). فَأَشْرَفَ أَصْحَابُهُ، فَبَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ.

[أطرافه في : ٤٣٨٠، ٤٣٨١، ٧٣٥٤].

बाब 21 : ह़ज़रत मुस्अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) का बयान

بَابُ ذِكْرِ مُصْعَبِ بْنِ عُمَيْرٍ

तश्रीह : ये क़ुरैशी अ़दवी बुज़ुर्ग सहाबा में से हैं। इस्लाम से पहले बड़े बाँकपन से रहा करते थे। उ़म्दातरीन लिबास ज़ैब तन किया करते। इस्लाम लाने के बाद दुनिया से बेनियाज़ हो गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको पहले ही मुबल्लिग़ बनाकर मदीना भेज दिया था। जब वहाँ इस्लाम की इशाअ़त हो गई तो हुज़ूर (ﷺ) की इजाज़त से उन्होंने मदीना में जुम्आ क़ायम कर लिया। जंगे उहुद में बउ़म्र 40 साल शहादत पाई। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) को अपनी शराइत़ के मुत़ाबिक़ कोई ह़दीष़ इस बाब के तह़त लाने को न मिली होगी। इसलिये ख़ाली बाब मुनअ़क़िद करके ह़ज़रत मुस्अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) के फ़ज़ाइल की त़रफ़ इशारा कर दिया कि उनके भी फ़ज़ाइल मुसल्लम हैं जैसा कि दूसरी अह़ादीष़ मौजूद हैं।

बाब 22 : ह़ज़रत ह़सन और ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

٢٢ - بَابُ مَنَاقِبِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

और नाफ़ेअ़ बिन जुबैर ने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) को गले से लगाया।

قَالَ نَافِعُ بْنُ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ((عَانَقَ النَّبِيُّ ﷺ الْحَسَنَ))

ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) की कुन्नियत अबू मुह़म्मद पैदाइश माहे रमज़ान 3 हिजरी में हुई। और वफ़ात 50 हिजरी में हुई। ह़ज़रत हुसैन (रज़ि.) की विलादत शाबान 4 हिजरी में हुई और शहादत 61 हिजरी में हुई। उनकी कुन्नियत अबू अ़ब्दुल्लाह थी।

3746. हमसे स़दक़ा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे अबू मूसा ने बयान किया, उनसे ह़सन ने, उन्होंने ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ फ़र्मा थे और ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) आप (ﷺ) के पहलू में थे। आप (ﷺ) कभी लोगों की त़रफ़ मुतवज्जह होते और फिर ह़सन (रज़ि.) की त़रफ़ और फ़र्माते, मेरा ये बेटा सरदार है और उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला उसके ज़रिये मुसलमानों की दो जमाअ़तों में सुलह़ कराएगा। (राजेअ़ : 2804)

٣٧٤٦- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى عَنِ الْحَسَنِ سَمِعَ أَبَا بَكْرَةَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ وَالْحَسَنُ إِلَى جَنْبِهِ، يَنْظُرُ إِلَى النَّاسِ مَرَّةً وَإِلَيْهِ مَرَّةً وَيَقُولُ: ((ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ، وَلَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ)). [راجع: ٢٧٠٤]

तश्रीह : ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) के बारे में पेशीनगोई ह़ज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) के ज़माने में पूरी हुई जबकि ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) और ह़ज़रत मुआविया (रज़ि.) की सुलह़ से जंग का एक बड़ा ख़त़रा टल गया। अल्लाह वालों की यही निशानी होती है कि वो ख़ुद नुक़्सान बर्दाश्त कर लेते हैं मगर फ़ित्ना फ़साद नहीं चाहते।

3747. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुअ़तमिर

٣٧٤٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ

ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे अबू उष्मान ने बयान किया और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) उन्हें और हसन (रज़ि.) को पकड़कर ये दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह! मुझे इनसे मुहब्बत है तू भी इनसे मुहब्बत रख। अव कमा क़ाल। (राजेअ: 3735)

قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يَأْخُذُهُ وَالْحَسَنَ وَيَقُولُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُمَا فَأَحِبَّهُمَا. أَوْ كَمَا قَالَ)). [راجع: ٣٧٣٥]

3748. मुझसे मुहम्मद बिन हुसैन बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मुझसे हुसैन बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि जब हज़रत हुसैन (रज़ि.) का सरे मुबारक उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के पास लाया गया और एक तश्त में रख दिया गया तो वो बदबख़्त उस पर लकड़ी से मारने लगा और आपके हुस्न और ख़ूबसूरती के बारे में भी कुछ कहा (कि मैंने इससे ज़्यादा ख़ूबसूरत चेहरा नहीं देखा) इस पर हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत हुसैन (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) से सबसे ज़्यादा मुशाब थे। उन्होंने वस्मा का ख़िज़ाब इस्ते'माल कर रखा था।

٣٧٤٨- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْحُسَيْنِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنِي حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أُتِيَ عُبَيْدُ اللهِ بْنِ زِيَادٍ بِرَأْسِ الْحُسَيْنِ فَجُعِلَ فِي طَسْتٍ فَجَعَلَ يَنْكُتُ وَقَالَ فِي حُسْنِهِ شَيْئًا، فَقَالَ أَنَسٌ: كَانَ أَشْبَهَهُمْ بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَكَانَ مَخْضُوبًا بِالْوَسْمَةِ)).

3749. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अदी ने ख़बर दी, कहा कि मैंने बरा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि हज़रत हसन (रज़ि.) आपके काँधे मुबारक पर थे और आप (ﷺ) ये फ़र्मा रहे थे कि ऐ अल्लाह! मुझे इससे मुहब्बत है तू भी इससे मुहब्बत रख।

٣٧٤٩- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ الْمِنْهَالِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيٌّ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، وَالْحَسَنُ عَلَى عَاتِقِهِ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ! إِنِّي أُحِبُّهُ فَأَحِبَّهُ)).

3750. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा कि मुझे उमर बिन सईद बिन अबी हुसैन ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे उक़्बा बिन हारिष़ ने बयान किया कि मैंने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को देखा कि आप (रज़ि.) हज़रत हसन (रज़ि.) को उठाए हुए हैं और फ़र्मा रहे हैं, मेरे बाप इन पर फ़िदा हों। ये नबी करीम (ﷺ) से मुशाबेह हैं, अली से नहीं और हज़रत अली (रज़ि.) वहीं मुस्कुरा रहे थे। (राजेअ: 3542)

٣٧٥٠- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: ((رَأَيْتُ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَحَمَلَ الْحَسَنَ وَهُوَ يَقُولُ: بِأَبِي شَبِيهٌ بِالنَّبِيِّ، وَلَيْسَ شَبِيهٌ بِعَلِيٍّ، وَعَلِيٌّ يَضْحَكُ)). [راجع: ٣٥٤٢]

3751. मुझसे यह्या बिन मुईन और सदक़ा ने बयान किया,

٣٧٥١- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ وَصَدَقَةُ

ज़माने तक यहाँ क़याम किया। हम उस पूरे अर्से में यही समझते रहे कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के घराने ही के एक फ़र्द हैं, क्योंकि हुज़ूर (ﷺ) के घर में अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) और उनकी वालिदा का (बकसरत) आना जाना हम ख़ुद देखा करते थे। (दीगर मक़ाम : 4384)

الْيَمَنِ، فَمَكَثْنَا حِينًا مَا نَرَى إِلاَّ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ ﷺ، لِمَا نَرَى مِنْ دُخُولِهِ وَدُخُولِ أُمِّهِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ)). [طرفه في: ٤٣٨٤].

बाब 28 : हज़रत मुआविया बिन अबू सुफ़यान (रज़ि.) का बयान

٢٨- بَابُ ذِكْرِ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ

(बड़ों की लग़्ज़िश) हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम की ख़िदमात सुनहरी हर्फ़ों से लिखने के क़ाबिल हैं मगर कोई इंसान भूल–चूक से मा'सूम नहीं है। सिर्फ़ अंबिया (अलैहिस्सलाम) की ज़ात है कि जिनकी हिफ़ाज़त अल्लाह पाक ख़ुद करता है। हज़रत मुआविया (रज़ि.) के ज़िक्र के सिलसिले में मौलाना मरहूम के क़लम से एक नामुनासिब बयान निकल गया है। अल्फ़ाज़ ये हैं, मुतर्जिम कहता है, सहाबियत का अदब हमको इससे मानेअ है कि हम मुआविया (रज़ि.) के बारे में कुछ कहें लेकिन सच्ची बात ये है कि उनके दिल में आँहज़रत (ﷺ) के अहले बैत की मुहब्बत न थी। मुख़्तसरन

दिलों का जानने वाला सिर्फ़ बारी तआला है। हज़रत मुआविया (रज़ि.) के हक़ में मरहूम का ये लिखना मुनासिब न था। ख़ुद ही सहाबियत के अदब का ए'तिराफ़ भी है और ख़ुद ही उनके ज़मीर पर हमला भी, **इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन**। अल्लाह तआला मरहूम की लग़्ज़िश को मुआफ़ करे और हश्र के मैदान में सबको आयते करीमा **व नज़अना मा फी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन** (अल आराफ़ : 43) का मिस्दाक़ बनाए आमीन। हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) के बेटे हैं और हज़रत अबू सुफ़यान रसूले करीम (ﷺ) के चचा होते हैं बउम्र 82 साल 60 हिजरी में हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) ने शहरे दमिश्क़ में वफ़ात पाई। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु।

3764. कहा हमसे हसन बिन बशीर ने बयान किया, उनसे उष्मान बिन अस्वद ने और उनसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने इशा के बाद वित्र की नमाज़ सिर्फ़ एक रकअत पढ़ी। वहीं हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के मौला (कुरैब) भी मौजूद थे। जब वो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो (हज़रत अमीर मुआविया रज़ि.) की एक रकअत वित्र का ज़िक्र किया) उस पर उन्होंने कहा, कोई हर्ज नहीं है। उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुहबत उठाई है। (दीगर मक़ाम : 3765)

٣٧٦٤- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ بَشِيرٍ حَدَّثَنَا الْمُعَافَى عَنْ عُثْمَانَ بْنِ الأَسْوَدِ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: ((أَوْتَرَ مُعَاوِيَةُ بَعْدَ الْعِشَاءِ بِرَكْعَةٍ وَعِنْدَهُ مَوْلًى لاِبْنِ عَبَّاسٍ، فَأَتَى ابْنَ عَبَّاسٍ، فَقَالَ: دَعْهُ فَإِنَّهُ صَحِبَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)). [طرفه في : ٣٧٦٥].

यक़ीनन उनके पास हुज़ूर (ﷺ) के क़ौल व फ़ेअल से कोई दलील होगी।

3765. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे नाफ़ेअ बिन उमर ने बयान किया, कहा मुझसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से कहा गया कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत मुआविया (रज़ि.) के बारे में आप (रज़ि.) क्या फ़र्माते हैं। उन्होंने वित्र की नमाज़ एक रकअत पढ़ी है? उन्होंने कहा कि वो ख़ुद फ़क़ीह हैं। (राजेअ : 3764)

٣٧٦٥- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنِي ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قِيلَ لاِبْنِ عَبَّاسٍ: هَلْ لَكَ فِي أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ مُعَاوِيَةَ فَإِنَّهُ مَا أَوْتَرَ إِلاَّ بِوَاحِدَةٍ، قَالَ: ((إِنَّهُ فَقِيهٌ)). [راجع: ٣٧٦٤]

इतने में एक छोटा बन्दर आया और बन्दरिया को इशारा किया उसने आहिस्ता से अपना हाथ बन्दर के सर के नीचे से खींच लिया और छोटे बन्दर के साथ चली गई उसने उससे सुह्बत की मैं देख रहा था फिर बन्दरिया लौटी और आहिस्ता से फिर अपना हाथ पहले बन्दर के सर के नीचे डालने लगी लेकिन वो जाग गया और एक चीख़ मारी तो सब बन्दर जमा हो गये। ये उस बन्दरिया की त़रफ़ इशारा करता और चीखता जाता था। आख़िर दूसरे बन्दर इधर उधर गये और उसे छोटे बन्दर को पकड़ लाए। मैं उसे पहचानता था फिर उन्होंने उनके लिये गड्ढा खोदा और दोनों को संगसार कर डाला तो मैंने ये रजम का अ़मल जानवरों में भी देखा।

3850. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने और उन्होंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि जाहिलियत की आ़दतों में से ये आ़दतें हैं नसब के मामले में त़अ़ना मारना और मय्यत पर नौहा करना, तीसरी आ़दत के बारे में (उ़बैदुल्लाह रावी) भूल गये थे और सुफ़यान ने बयान किया कि लोग कहते हैं कि वो तीसरी बात सितारों को बारिश की इल्लत समझना है।

٣٨٥٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((خِلاَلٌ مِنْ خِلاَلِ الْجَاهِلِيَّةِ: الطَّعْنُ فِي الأَنْسَابِ، وَالنِّيَاحَةُ - وَنَسِيَ الثَّالِثَةَ - قَالَ سُفْيَانُ: وَيَقُولُونَ إِنَّهَا الاِسْتِسْقَاءُ بِالأَنْوَاءِ)).

बाब 28 : नबी करीम (ﷺ) की बेअ़षत का बयान

٢٨- بَابُ مَبْعَثِ النَّبِيِّ ﷺ

आपका नाम मुबारक है मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मुनाफ़ बिन क़ुसई बिन किलाब बिन मुर्रह बिन कअ़ब बिन लुवी बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़्र बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मदरका बिन इल्यास बिन मुज़र बिन नज़्ज़ार बिन मअ़द बिन अ़दनान।

مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ بْنِ هَاشِمِ بْنِ عَبْدِ مَنَافِ بْنِ قُصَيِّ بْنِ كِلاَبِ بْنِ مُرَّةَ بْنِ كَعْبِ بْنِ لُؤَيِّ بْنِ غَالِبِ بْنِ فِهْرِ بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّضْرِ بْنِ كِنَانَةَ بْنِ خُزَيْمَةَ بْنِ مُدْرِكَةَ بْنِ إِلْيَاسَ بْنِ مُضَرَ بْنِ نِزَارِ بْنِ مَعَدِّ بْنِ عَدْنَانَ.

यहीं तक आप (ﷺ) ने अपना नसब बयान फ़र्माया है, अ़दनान के बाद रिवायतों में इख़्तिलाफ़ है ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने तारीख़ में आप (ﷺ) का नसब ह़ज़रत इब्राहीम तक बयान फ़र्माया है।

3851. हमसे अहमद बिन अबी रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र ने बयान किया, कहा उनसे हिशाम ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की चालीस साल की उ़म्र हुई तो आप (ﷺ) पर वह्य नाज़िल हुई, उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) तेरह साल मक्का मुकर्रमा में रहे फिर आप (ﷺ) को हिजरत का हुक्म हुआ और आप (ﷺ) मदीना मुनव्वरा हिजरत करके चले गये, वहाँ दस साल रहे फिर आपने वफ़ात फ़र्माई (ﷺ) इस हिसाब से कुल उ़म्र शरीफ़ आपकी 63 साल होती है और ये सहीह़ है।

٣٨٥١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ حَدَّثَنَا النَّضْرُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أُنْزِلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعِينَ، فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ سَنَةً، ثُمَّ أُمِرَ بِالْهِجْرَةِ، فَهَاجَرَ إِلَى الْمَدِينَةِ، فَمَكَثَ بِهَا عَشْرَ سِنِينَ، ثُمَّ تُوُفِّيَ ﷺ)).

(राजेअ़ : 1245) [راجع: ١٢٤٥]

इन तमाम अहादीष़ में किसी न किसी त़रह ह़ब्शा का ज़िक्र है इसीलिये ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) इन अहादीष़ को यहाँ लाए। इन तमाम अहादीष़ से नज्जाशी का नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना पढ़ा जाना भी ष़ाबित होते है अगरचे कुछ ह़ज़रात ने यहाँ मुख़्तलिफ़ तावीलें की हैं मगर उनमें कोई वज़न नहीं है स़ह़ीह़ वही है जो ज़ाहिर रिवायात के मन्कूला अल्फ़ाज़ से ष़ाबित होता है। वल्लाहु अ़ालम बिस्सवाब।

बाब 39 : नबी करीम (ﷺ) के ख़िलाफ़ मुश्रिकीन का अ़हद व पैमान करना

٣٩- بَابُ تَقَاسُمِ الْمُشْرِكِيْنَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

तश्रीह : हुआ ये कि जब क़ुरैश ने देखा कि आप (ﷺ) के अस्ह़ाब अमन की जगह या'नी मुल्के ह़ब्श पहुँच गये और इधर उ़मर (रज़ि.) ने इस्लाम क़ुबूल किया चारों त़रफ़ इस्लाम फैलने लगा तो अ़दावत व ह़सद के जोश में उन्होंने एक इक़रारनामा तैयार किया जिसका मज़्मून ये था कि बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब से निकाह़, ख़रीद व फरोख़्त कोई मामला उस वक़्त तक न करें जब तक वो आँह़ज़रत (ﷺ) को हमारे ह़वाले न कर दें। ये इक़रारनामा लिखकर का'बा के अंदर लटकाया गया। एक मुद्दत के बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने जो बनी हाशिम के साथ एक दूसरी घाटी में रहते थे और जहाँ पर बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब को सख़्त तक्लीफ़ें हो रही थीं अबू त़ालिब अपने चचा से फ़र्माया कि उस इक़रारनामे को दीमक चाट गई सिर्फ़ अल्लाह का नाम उसमें बाक़ी है। अबू त़ालिब ने क़ुरैश के कुफ्फ़ारों से कहा मेरा भतीजा ये कहता है कि तुम का'बा के अंदर उस इक़रारनामे को देखो अगर उसका बयाँ सच है तो हम मरने तक कभी इसको ह़वाले नहीं करने के और अगर उसका बयान झूठ निकले तो हम इसको तुम्हारे ह़वाले कर देंगे। तुम मारो या ज़िन्दा रखो जो चाहो करो। काफ़िरों ने का'बा खोला और उस इक़रार नामे को देखा तो वाक़ई सारे हुरूफ़ को दीमक चाट गई थी सिर्फ़ अल्लाह का नाम बाक़ी था। उस वक़्त क्या कहने लगे अबू त़ालिब तुम्हारा भतीजा जादूगर है। कहते हैं जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने अबू त़ालिब को ये क़िस्सा सुनाया तो उन्होंने पूछा तुमको कहाँ से मा'लूम हुआ। क्या तुमको अल्लाह ने ख़बर दी आपने फ़र्माया हाँ। (वह़ीदी)

7 नबवी में ये ह़ादष़ा पेश आया था तीन साल तक ये तर्के मवालात क़ायम रहा, उसके बाद अल्लाह ने अपने रसूले करीम (ﷺ) को उससे नजात बख्शी जिसकी मुख़्तस़र कैफ़ियत ऊपर मज़्कूर हुई है।

3882. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जब जंगे हुनैन का क़स्द किया तो फ़र्माया इंशाअल्लाह कल हमारा क़याम ख़ैफ़ बनी किनाना में होगा जहाँ मुश्रिकीन ने काफ़िर रहने के लिये अ़हदो—पैमान किया था।

(राजेअ़ : 1579)

٣٨٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِيْنَ أَرَادَ حُنَيْنًا: ((مَنْزِلُنَا غَدًا - إِنْ شَاءَ اللهُ - بَنِي كِنَانَةَ حَيْثُ تَقَاسَمُوا عَلَى الْكُفْرِ)). [راجع: ١٥٨٩]

बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि मुश्रिकीन ने ख़ैफ़ बनी किनाना में कुफ्र पर पुख्तगी का अ़हद किया था जिसे अल्लाह ने बाद में टुकड़े-टुकड़े करा दिया और उनकी नस्लें इस्लाम में दाख़िल हो गईं।

बाब 40 : अबू त़ालिब का वाक़िया

٤٠- بَابُ قِصَّةِ أَبِي طَالِبٍ

ये आँहज़रत (ﷺ) के सगे चचा थे। आप (ﷺ) के वालिद माजिद अ़ब्दुल्लाह के ह़क़ीक़ी भाई। ये जब तक ज़िन्दा रहे आप (ﷺ) की पूरी हिमायत और हिफ़ाज़त करते रहे मगर क़ौमी पासदारी की वजह से इस्लाम क़ुबूल करना नसीब नहीं हुआ।

3883. हमसे मुसद्दद ने बयान किया। कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन हारिष़ ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा आप (ﷺ) अपने चचा (अबू तालिब) के क्या काम आए कि वो आप (ﷺ) की हिमायत किया करते थे और आप (ﷺ) के लिये गुस्सा होते थे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया (इसी वजह से) वो सिर्फ़ टख़नों तक जहन्नम में हैं अगर मैं उनकी सिफ़ारिश न करता तो वो दोज़ख़ की तह में बिलकुल नीचे होते। (दीगर मक़ाम : 6208, 6572)

٣٨٨٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحيَى عَنْ سُفْيَانَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْحَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: مَا أَغْنَيْتَ عَنْ عَمِّكَ، فَوَ اللهِ كَانَ يَحُوطُكَ وَيَغْضَبُ لَكَ، قَالَ: ((هُوَ فِي ضَحْضَاحٍ مِنْ نَارٍ، وَلَوْ لاَ أَنَا لَكَانَ فِي الدَّرْكِ الأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ)).

[طرفاه في : ٦٢٠٨، ٦٥٧٢].

3884. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हें उनके वालिद मुसय्यिब बिन ह़ज़्न स़हाबी (रज़ि.) ने कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त क़रीब हुआ तो नबी करीम (ﷺ) उनके पास तशरीफ़ ले गये उस वक़्त वहाँ अबू जहल भी बैठा हुआ था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, चचा! कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह एक मर्तबा कह दीजिए, अल्लाह की बारगाह में (आपकी बख़्शिश के लिये) एक यही दलील मेरे हाथ आ जाएगी, इस पर अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या ने कहा, ऐ अबू तालिब! क्या अ़ब्दुल मुत्तलिब के दीन से तुम फिर जाओगे! ये दोनों उन ही पर ज़ोर देते रहे और आख़िरी कलिमा जो उनकी ज़ुबान से निकला, वो ये था कि मैं अ़ब्दुल मुत्तलिब के दीन पर क़ायम हूँ। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं उनके लिये उस वक़्त तक दुआए मग़्फ़िरत करता रहूँगा जब तक मुझे इससे मना न कर दिया जाएगा। चुनाँचे (सूरह बरात में) ये आयत नाज़िल हुई, नबी के लिये और मुसलमानों के लिये मुनासिब नहीं कि मुश्रिकीन के लिये दुआ-ए-मग़्फ़िरत करें ख़्वाह उनके नाते वाले ही क्यूँ न हों जबकि उनके सामने ये बात वाज़ेह हो गई कि वो दोज़ख़ी हैं, और सूरह क़सस़ में ये आयत नाज़िल हुई, बेशक जिसे आप चाहे हिदायत नहीं कर सकते।

٣٨٨٤- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ أَبَا طَالِبٍ لَمَّا حَضَرَتْهُ الْوَفَاةُ دَخَلَ عَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ - وَعِنْدَهُ أَبُو جَهْلٍ - فَقَالَ: ((أَيْ عَمِّ، قُلْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ كَلِمَةً أُحَاجُّ لَكَ بِهَا عِنْدَ اللهِ)). فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ وَعَبْدُ اللهِ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ: يَا أَبَا طَالِبٍ، تَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ؟ فَلَمْ يَزَالاَ يُكَلِّمَانِهِ حَتَّى قَالَ آخِرَ شَيْءٍ كَلَّمَهُمْ بِهِ: عَلَى مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ، مَا لَمْ أُنْهَ عَنْهُ)). فَنَزَلَتْ: ﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَى مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ﴾ [التوبة: ١١٣]، ونزلت: ﴿إِنَّكَ لاَ

تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ﴾ [القصص : ٥٦].
[راجع: ١٣٦٠]

(राजेअ: 1360)

٣٨٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ حَدَّثَنَا ابْنُ الْهَادِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خَبَّابٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ- وَذُكِرَ عِنْدَهُ عَمُّهُ فَقَالَ: ((لَعَلَّهُ تَنْفَعُهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُجْعَلَ فِي ضَحْضَاحٍ مِنَ النَّارِ يَبْلُغُ كَعْبَيْهِ يَغْلِي مِنْهُ دِمَاغُهُ)). حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ حَمْزَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ وَالدَّرَاوَرْدِيّ عَنْ يَزِيْدَ بِهَذَا وَقَالَ: تَغْلِي مِنْهُ أُمُّ دِمَاغِهِ.
[طرفه في : ٦٥٦٤].

3885. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह इब्ने इल्हाद ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) की मज्लिस में आप (ﷺ) के चचा का ज़िक्र हो रहा था तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया शायद क़यामत के दिन उन्हें मेरी शफ़ाअ़त काम आ जाए और उन्हें सिर्फ़ टख़नों तक जहन्नम में रखा जाए जिससे उनका दिमाग़ खौलेगा।

रिवायत में अबू त़ालिब का ज़िक्र है यही बाब से मुनासबत की वजह है।

हमसे इब्राहीम बिन ह़म्ज़ा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबू ह़ाज़िम और दरावर्दी ने बयान किया यज़ीद से इसी मज़्कूरा ह़दीष़ की त़रह़, अल्बत्ता इस रिवायत में ये भी है कि अबू त़ालिब के दिमाग़ का भेजा उससे खौलेगा। (दीगर मक़ाम: 6564)

٤١- بَابُ حَدِيْثِ الإِسْرَاءِ، وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلاً مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الأَقْصَى﴾

बाब 41 : बैतुल मक़्दिस तक जाने का क़िस़्सा

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बनी इस्राईल में फ़र्माया, पाक ज़ात है वो जो अपने बन्दे को रातों रात मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक ले गया।

٣٨٨٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِالرَّحْمَنِ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَمَّا كَذَّبَنِي قُرَيْشٌ قُمْتُ فِي الْحِجْرِ تَجَلِّي اللهُ لِي بَيْتَ الْمَقْدِسِ، فَطَفِقْتُ أُخْبِرُهُمْ عَنْ آيَاتِهِ، وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَيْهِ)).
[طرفه في : ٤٧١٠].

3886. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कि मुझसे कहा अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने कि मैंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया था कि जब क़ुरैश ने (मेअ़राज के वाक़िये के सिलसिले में) मुझको झुठलाया था तो मैं ह़तीम में खड़ा हो गया और अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिये बैतुल मक़्दिस को रोशन कर दिया और मैंने उसे देखकर क़ुरैश से उसके पते और निशान बयान करना शुरू कर दिये।

(दीगर मक़ाम: 4710)

बाब 45 : नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के अस्हाबे किराम का मदीना की तरफ़ हिजरत करना

٤٥- بَابُ هِجْرَةِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ

हज़रात अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि अगर हिजरत की फ़ज़ीलत न होती तो मैं अंसार का एक आदमी बनकर रहना पसन्द करता और ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि मैंने ख़्वाब देखा कि मैं मक्का से एक ऐसी ज़मीन की तरफ़ हिजरत करके जा रहा हूँ कि जहाँ खजूर के बाग़ात बकष़रत हैं, मेरा ज़हन उससे यमामा या हजर की तरफ़ गया, लेकिन ये ज़मीन शहरे यष़्रिब की थी।

وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ زَيْدٍ وَأَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوْ لاَ الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الأَنْصَارِ)). وَقَالَ أَبُو مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أُهَاجِرُ مِنْ مَكَّةَ إِلَى أَرْضٍ بِهَا نَخْلٌ، فَذَهَبَ وَهَلِي إِلَى أَنَّهَا الْيَمَامَةُ أَوْ هَجَرُ، فَإِذَا هِيَ الْمَدِينَةُ يَثْرِبُ)).

3897. हमसे (अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर) ह़ुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अअ़मश ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू वाईल शक़ीक़ बिन सलमा से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम ख़ब्बाब बिन अरम (रज़ि.) की अ़यादत के लिये गए तो उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) के साथ हमने सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशनूदी ह़ासिल करने के लिये हिजरत की थी, अल्लाह तआ़ला हमें उसका अज्र देगा। फिर हमारे बहुत से साथी इस दुनिया से उठ गये और उन्होंने (दुनिया में) अपने आ़माल का फल नहीं देखा। उन्हीं में ह़ज़रत मुस़अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) उहुद की लड़ाई में शहीद किये गये थे और सिर्फ़ एक धारीदार चादर छोड़ी थी। (कफ़न देते वक़्त) जब हम उनकी चादर से उनका सर ढांकते तो पाँव खुल जाते और पाँव ढाँकते तो सर खुल जाता। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया कि उनका सर ढाँक दें और पाँव पर इज़्ख़र घास डाल दें। (ताकि छुप जाए) और हममें ऐसे भी हैं कि (इस दुनिया में भी) उनके आ़माल का मेवा पक गया, पस वो उसको चुन रहे हैं।

(राजेअ़ : 1286)

٣٨٩٧- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ يَقُولُ: ((عُدْنَا خَبَّابًا فَقَالَ: هَاجَرْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نُرِيْدُ وَجْهَ اللهِ، فَوَقَعَ أَجْرُنَا عَلَى اللهِ، فَمِنَّا مَنْ مَضَى لَمْ يَأْخُذْ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا مِنْهُمْ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ، قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ وَتَرَكَ نَمِرَةً، فَكُنَّا إِذَا غَطَّيْنَا بِهَا رَأْسَهُ بَدَتْ رِجْلاَهُ، وَإِذَا غَطَّيْنَا رِجْلَيْهِ بَدَا رَأْسُهُ، فَأَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نُغَطِّيَ رَأْسَهُ وَنَجْعَلَ عَلَى رِجْلَيْهِ شَيْئًا مِنْ إِذْخِرٍ. وَمِنَّا مَنْ أَيْنَعَتْ لَهُ ثَمَرَتُهُ فَهُوَ يَهْدِبُهَا)).

[راجع: ١٢٧٦]

मत़लब ये है कि कुछ लोग तो ग़नीमत और दुनिया का माल व अस्बाब मिलने से पहले गुज़र चुके हैं और कुछ ज़िन्दा रहे, उनका मेवा ख़ूब फला फूला या'नी दीन के साथ उन्होंने इस्लामी तरक़्क़ी व कुशादगी का दौर भी देखा और वो आराम व राहत की ज़िन्दगी भी पा गये। सच है इन्ना मअ़ल उ़स्रि युस्रा बेशक तंगी के बाद आसानी होती है।

3898. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे

٣٨٩٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ

अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ अहद करके आता था, उस ख़तरे की वजह से कि कहीं वो फ़ित्ना में न पड़ जाए लेकिन अब अल्लाह तआला ने इस्लाम को ग़ालिब कर दिया है और आज (सर ज़मीने अरब में) इंसान जहाँ भी चाहे अपने रब की इबादत कर सकता है, अल्बत्ता जिहाद और जिहाद की निय्यत का स़वाब बाक़ी है। (राजेअ: 3080)

إِلَى اللهِ تَعَالَى إِلَى رَسُولِهِ ﷺ مَخَافَةَ أَنْ يُفْتَنَ عَلَيْهِ، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَقَدْ أَظْهَرَ اللهُ الإِسْلاَمَ، وَالْيَوْمَ يَعْبُدُ رَبَّهُ حَيْثُ شَاءَ، وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ)).

[راجع: ٣٠٨٠]

3901. मुझसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा कि हिशाम ने बयान किया कि उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) ने कहा कि ऐ अल्लाह! तू जानता है कि उससे ज़्यादा मुझे और कोई चीज़ पसन्दीदा नहीं कि तेरे रास्ते में, मैं उस क़ौम से जिहाद करूँ जिसने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया और उन्हें (उनके वतन मक्का से) निकाला, ऐ अल्लाह! लेकिन ऐसा मा'लूम होता है कि तूने हमारे और उनके बीच लड़ाई का सिलसिला ख़त्म कर दिया है। और अबान बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उन्हें ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि (ये अल्फ़ाज़ सअ़द रज़ि. फ़र्माते थे) मिन क़ौमिन कज़्ज़बू नबिय्यका व अख़्रजूहू मिन क़ुरैश या'नी जिन्होंने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया, बाहर निकाल दिया। इससे क़ुरैश के काफ़िर मुराद हैं।

(राजेअ: 463)

٣٩٠١- حَدَّثَنِي زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ قَالَ: هِشَامٌ: فَأَخْبَرَنِي أَبِي ((عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ سَعْدًا قَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ أَحَبَّ إِلَيَّ أَنْ أُجَاهِدَهُمْ فِيْكَ مِنْ قَوْمٍ كَذَّبُوا رَسُولَكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَخْرَجُوهُ، اللَّهُمَّ فَإِنِّي أَظُنُّ أَنَّكَ قَدْ وَضَعْتَ الْحَرْبَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ)).

وَقَالَ أَبَانُ بْنُ يَزِيْدَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيْهِ أَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ: ((مِنْ قَوْمٍ كَذَّبُوا نَبِيَّكَ وَأَخْرَجُوهُ مِنْ قُرَيْشٍ)).

[راجع: ٤٦٣]

ह़ज़रत सअ़द को ये गुमान हुआ कि जंगे अह़ज़ाब में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की पूरी त़ाक़त लग चुकी है और आख़िर में वो भाग निकले तो अब क़ुरैश में लड़ने की त़ाक़त नहीं रही। शायद अब हममें और उनमें जंग न हो।

3902. हमसे मत़र बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमसे रौह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को चालीस साल की उम्र में रसूल बनाया गया था। फिर आप (ﷺ) पर मक्का मुकर्रमा में तेरह साल तक वह्य आती रही उसके बाद आप (ﷺ) को हिजरत का हुक्म हुआ और आप (ﷺ) ने हिजरत की ह़ालत में दस साल गुज़ारे, (मदीना में) जब आप (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आप (ﷺ) की उम्र 63 साल की थी।

٣٩٠٢- حَدَّثَنِي مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا رَوْحٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بُعِثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لأَرْبَعِيْنَ سَنَةً، فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ سَنَةً يُوحَى إِلَيْهِ، ثُمَّ أُمِرَ بِالْهِجْرَةِ فَهَاجَرَ عَشْرَ سِنِيْنَ، وَمَاتَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّيْنَ)).

3903. मुझसे मत़र बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमसे रौह

٣٩٠٣- حَدَّثَنِي مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا

बिन उ़बादा ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया बिन इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नुबुव्वत के बाद मक्का में 13 साल क़याम किया और जब आप (ﷺ) की वफ़ात हुईतो आप (ﷺ) की उ़म्र 63 साल की थी।

رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((مَكَثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ، وَتُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ)).

3904. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मालिक ने बयान किया, उनसे उ़मर बिन उ़बैदुल्लाह के मौला अबुन् नज़्रने, उनसे उ़बैद या'नी इब्ने हुनैन ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर बैठे, फिर फ़र्माया अपने एक नेक बन्दे को अल्लाह तआ़ला ने इख़्तियार दिया कि दुनिया की नेअ़मतों में से जो वो चाहे उसे अपने लिये पसन्द कर ले या जो अल्लाह तआ़ला के यहाँ है (आख़िरत में) उसे पसन्द कर ले। उस बन्दे ने अल्लाह तआ़ला के यहाँ मिलने वाली चीज़ को पसन्द कर लिया। इस पर ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) रोने लगे और अ़र्ज़ किया हमारे माँ—बाप आप (ﷺ) पर फ़िदा हों। (ह़ज़रत अबू सईद रज़ि. कहते हैं) हमें ह़ज़रत अबूबक्र (रजि) के उस रोने पर हैरत हुई, कुछ लोगों ने कहा उन बुज़ुर्ग को देखिये, हुज़ूर (ﷺ) तो एक बन्दे के बारे में ख़बर दे रहे हैं जिसे अल्लाह तआ़ला ने दुनिया की नेअ़मतों और जो अल्लाह के पास है उसमें से किसी के पसन्द करने का इख़्तियार दिया था और ये कह रहे हैं कि हमारे माँ—बाप आप हुज़ूर पर फ़िदा हों। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ही को उन दो चीज़ों में से एक का इख़्तियार दिया गया और ह़ज़रत अबूबक्र (रजि) हममें सबसे ज़्यादा इस बात से वाक़िफ़ थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि लोगों में सबसे ज़्यादा अपनी सुह़बत और माल के ज़रिये मुझ पर सिर्फ़ एक अबूबक्र (रज़ि.) हैं अगर मैंने अपनी उम्मत में से किसी को ख़लील बना सकता तो अबूबक्र को बनाता अल्बत्ता इस्लामी रिश्ते उनके साथ काफ़ी है। मस्जिद में कोई दरवाज़ा खुला हुआ बाक़ी न रखा जाए सिवाए अबूबक्र (रज़ि.) के घर की त़रफ़ खुलने वाले दरवाज़े के।

(राजेअ़ : 466)

٣٩٠٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ عُبَيْدٍ - يَعْنِي ابْنَ حُنَيْنٍ - عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: إِنَّ عَبْدًا خَيَّرَهُ اللهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا مَا شَاءَ وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، فَاخْتَارَ مَا عِنْدَهُ. فَبَكَى أَبُو بَكْرٍ وَقَالَ: فَدَيْنَاكَ بِآبَائِنَا وَأُمَّهَاتِنَا. فَعَجِبْنَا لَهُ. وَقَالَ النَّاسُ: انْظُرُوا إِلَى هَذَا الشَّيْخِ، يُخْبِرُ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ عَبْدٍ خَيَّرَهُ اللهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، وَهُوَ يَقُولُ: فَدَيْنَاكَ بِآبَائِنَا وَأُمَّهَاتِنَا، فَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ هُوَ الْمُخَيَّرُ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ هُوَ أَعْلَمَنَا بِهِ. وَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ أَمَنِّ النَّاسِ عَلَيَّ فِي صُحْبَتِهِ وَمَا لِهِ أَبَابَكْرٍ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلاً مِنْ أُمَّتِي لاَتَّخَذْتُ أَبَابَكْرٍ، إِلاَّ خُلَّةَ الإِسْلاَمِ، لاَ تُبْقَيَنَّ فِي الْمَسْجِدِ خَوْخَةٌ إِلاَّ خَوْخَةَ أَبِي بَكْرٍ)).

[راجع: ٤٦٦]

तश्रीह : हुआ ये था कि मुसलमानों ने जो मस्जिदे नबवी के आसपास रहते थे अपने अपने घरों में एक एक खिड़की मस्जिद की त़रफ़ खोल ली थी ताकि जल्दी से मस्जिद की त़रफ़ चले जाएँ या जब चाहें आँह़ज़रत (ﷺ) की ज़ियारत अपने

3928. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अ़ब्दुर्रह्मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) मिना में अपने ख़ैमा की त़रफ़ वापस आ रहे थे, ये उ़मर (रज़ि.) के आख़िरी ह़ज्ज का वाक़िया है तो उनकी मुझसे मुलाक़ात हो गई। उन्होंने कहा कि (उ़मर (रज़ि.) ह़ाजियों को ख़ित़ाब करने वाले थे इसलिये) मैंने अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! मौसमे ह़ज्ज में मा'मूली सूझ बूझ रखने वाले सब त़रह़ के लोग जमा होते हैं और शोरो–ग़ुल बहुत होता है इसलिये मेरा ख़्याल है कि आप अपना इरादा मौक़ूफ़ कर दें और मदीना पहुँचकर (ख़ित़ाब फ़र्माएँ) क्योंकि वो हिजरत और सुन्नत का घर है और वहाँ समझदार मुअ़ज़्ज़ज़ और स़ाह़िबे अ़क़्ल लोग रहते हैं। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि तुम ठीक कहते हो, मदीना पहुँचते ही सबसे पहली फ़ुर्सत में लोगों को ख़ित़ाब करने के लिये ज़रूर खड़ा होऊँगा। (राजेअ़ : 2462)

٣٩٢٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ ح. وَأَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ رَجَعَ إِلَى أَهْلِهِ وَهُوَ بِمِنًى فِي آخِرِ حَجَّةٍ حَجَّهَا عُمَرُ، فَوَجَدَنِي فَقَالَ: عَبْدُ الرَّحْمَنِ. فَقُلْتُ: يَا أَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ إِنَّ الْمَوْسِمَ يَجْمَعُ رَعَاعَ النَّاسِ، وَإِنِّي أَرَى أَنْ تُمْهِلَ حَتَّى تَقْدَمَ الْمَدِيْنَةَ، فَإِنَّهَا دَارُ الْهِجْرَةِ وَالسُّنَّةِ، وَتَخْلُصَ لأَهْلِ الْفِقْهِ وَأَشْرَافِ النَّاسِ. وَذَوِي رَأْيِهِمْ. قَالَ عُمَرُ: لأَقُومَنَّ فِي أَوَّلِ مَقَامٍ أَقُومُهُ بِالْمَدِيْنَةِ)). [راجع: ٢٤٦٢]

तश्रीह : इस वाक़िया का पसे मंज़र ये है कि किसी नादान ने मिना में ऐन मौसमे ह़ज्ज में ये कहा था कि अगर उ़मर मर जाएँ तो मैं फ़लाँ शख़्स़ से बेअ़त करूँगा। अबूबक्र (रज़ि.) से लोगों ने बिन सोचे समझे बेअ़त कर ली थी। ये बात ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) तक पहुँच गई जिस पर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को ग़ुस्सा आ गया और उस शख़्स़ को बुलाकर तम्बीह का ख़्याल हुआ मगर ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह्मान बिन औ़फ़ ने ये स़लाह़ दी कि ये मौसमे ह़ज्ज है हर क़िस्म के दाना व नादान लोग यहाँ जमा हैं, यहाँ ये मुनासिब न होगा मदीना शरीफ़ पहुँचकर आप जो चाहें करें। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह्मान का ये मश्वरा क़ुबूल फ़र्मा लिया।

3929. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्हें इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें ख़ारिजा बिन ज़ैद बिन स़ाबित ने कि (उनकी वालिदा उम्मे उ़लाअ रज़ि. एक अंस़ारी ख़ातून जिन्होंने नबी करीम ﷺ से बेअ़त की थी) ने उन्हें ख़बर दी कि जब अंस़ार ने मुहाजिरीन की मेज़बानी के लिये क़ुर्आ डाला तो उ़स्मान बिन मज़ऊ़न उनके घराने के ह़िस्से में आए थे। उम्मे उ़लाअ (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर उ़स्मान (रज़ि.) हमारे यहाँ बीमार पड़ गये। मैंने उनकी पूरी त़रह़ तीमारदारी

٣٩٢٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ خَارِجَةَ بْنِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ أُمَّ الْعَلاَءِ - امْرَأَةٌ مِنْ نِسَائِهِمْ بَايَعَتِ النَّبِيَّ ﷺ - أَخْبَرَتْهُ أَنَّ عُثْمَانَ بْنِ مَظْعُونٍ طَارَ لَهُمْ فِي السُّكْنَى حِيْنَ اقْتَرَعَتِ الأَنْصَارُ عَلَى

سُكْنَى الْمُهَاجِرِيْنَ. قَالَتْ أُمُّ الْعَلَاءِ: فَاشْتَكَى عُثْمَانُ عِنْدَنَا، فَمَرَّضْتُهُ حَتَّى تُوُفِّيَ، وَجَعَلْنَاهُ فِي أَثْوَابِهِ. فَدَخَلَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ، فَقُلْتُ: رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ. شَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا يُدْرِيْكِ أَنَّ اللهَ أَكْرَمَهُ؟)) قَالَتْ: قُلْتُ: لَا أَدْرِي، بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُوْلَ اللهِ، فَمَنْ؟ قَالَ: ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ وَاللهِ الْيَقِيْنُ، وَاللهِ إِنِّي لَأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ، وَمَا أَدْرِي وَاللهِ – وَأَنَا رَسُوْلُ اللهِ – مَا يُفْعَلُ بِي)). قَالَتْ: فَوَاللهِ لَا أُزَكِّي بَعْدَهُ أَحَدًا. قَالَتْ: فَأَحْزَنَنِي ذَلِكَ، فَنِمْتُ. فَرَأَيْتُ لِعُثْمَانَ بْنِ مَظْعُوْنٍ عَيْنًا تَجْرِي، فَجِئْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: ((ذَلِكَ عَمَلُهُ)).

[راجع: ١٢٤٣]

की लेकिन वो न बच सके। हमने उन्हें उनके कपड़ों में लपेट दिया था। इतने में नबी करीम (ﷺ) भी तशरीफ़ ले आए तो मैंने कहा अबू साइब! (उ़ष्मान रज़ि. की कुन्नियत) तुम पर अल्लाह की रहमतें हों, मेरी तुम्हारे बारे में गवाही है कि अल्लाह तआला ने तुम्हें अपने इकराम से नवाज़ा है। ये सुनकर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हें ये कैसे मा'लूम हुआ कि अल्लाह तआला ने उन्हें अपने इकराम से नवाज़ा है? मैंने अ़र्ज़ किया मुझे तो इस सिलसिले में कुछ ख़बर नहीं है, मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों या रसूलल्लाह (ﷺ)! लेकिन और किसे नवाज़ेगा? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसमें तो वाकई कोई शक व शुब्हा नहीं कि एक यक़ीनी अम्र (मौत) उनको आ चुकी है, अल्लाह की क़सम! कि मैं भी उनके लिये अल्लाह तआला से ख़ैर–ख़्वाही की उम्मीद रखता हूँ लेकिन मैं हालाँकि अल्लाह का रसूल हूँ ख़ुद अपने बारे में नहीं जान सकता कि मेरे साथ क्या मामला होगा। उम्मे अ़लाअ (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया फिर अल्लाह की क़सम! इसके बाद मैं अब किसी के बारे में उसकी पाकी नहीं करूँगी। उन्होंने बयान किया कि इस वाक़िया पर मुझे बड़ा रंज हुआ। फिर मैं सो गई तो मैंने ख़्वाब में देखा कि उ़ष्मान बिन मज़्ऊ़न के लिये एक बहता हुआ चश्मा है। मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुई और आपसे अपना ख़्वाब बयान किया तो आपने फ़र्माया कि ये उनका अमल था। (राजेअ: 1243)

तश्रीह : एक रिवायत में यूँ है मैं ये नहीं जानता कि उ़ष्मान (रज़ि.) का हाल क्या होना है। इस रिवायत पर तो कोई अंदेशा नहीं लेकिन महफ़ूज़ यही रिवायत है कि मैं नही जानता कि मेरा हाल क्या होना है जैसे क़ुर्आन शरीफ़ में है। **व मा अदरी मा युफ़अलु बी व ला बिकुम** (अल अहक़ाफ़ : 9) कहते हैं ये आयत और ह़दीष़ उस ज़मान की है जब तक ये आयत नहीं उतरी थी **लियगफ़िरहु लकल्लाहु मा तक़द्दम मिन ज़म्बिक वमा तअख़्ख़र** (अल फ़त्ह : 2) और आपको क़त्अन ये नहीं बतलाया गया था कि आप सब अगले पिछले लोगों से अफ़ज़ल हैं। मैं कहता हूँ कि ये तौजोह उ़म्दा नहीं। अस़ल ये है कि ह़क़ तआला की बारगाह अजब मुस्तग़्ना बारगाह है आदमी कैसे ही दर्जे पर पहुँच जाए मगर उसके इस्तिग़्ना और किब्रियाई से बेडर नहीं हो सकता। वो एक ऐसा शहशाह है जो चाहे वो कर डाले, रत्ती बराबर उसको किसी का अंदेशा नहीं। ह़ज़रत शैख़ शर्फ़ुद्दीन यह़्या मुनीरी अपने मकातोब में फ़र्माते हैं वो ऐसा मुस्तग़्ना और बे परवाह है कि अगर चाहे तो सब पैग़म्बरों और नेक बन्दों को दम भर में दोज़ख़ी बना दे और सारे बदकार और कुफ़्फ़ार को बहिश्त मे ले जावे, कोई दम नहीं मार सकता। आख़िर ह़दीष़ में ज़िक्र है कि उनका नेक अ़मल चश्मा की सूरत में उनके लिये ज़ाहिर हुआ। दूसरी ह़दीष़ से मा'लूम होता है कि आमाले स़ालिहा ख़ूबसूरत आदमी की शक्ल में और बुरे अ़मल बदसूरत आदमी की शक्ल में ज़ाहिर होते हैं, दोनों ह़दीष़ बरह़क़ हैं और उनमें नेकों और बदों के मर्तबे आ़माल के मुताबिक़ कैफ़ियात बयान की गई हैं जो मज़्कूरा सूरतों में सामने आती हैं। बाक़ी अस़ल ह़क़ीक़त आख़िरत ही में हर इंसान पर मुंकशिफ़ होगी। जो अल्लाह

फ़र्माया, इंसान का अपने बाल—बच्चों पर ख़र्च करना भी बाइ़षे ष़वाब है।

रिवायत में ह़ज़रत अबू मसऊ़द बद्री (रज़ि.) का ज़िक्र है । ह़दीष़ और बाब में यही मुत़ाबक़त है।

4007. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्होंने उ़र्वा बिन ज़ुबेर से सुना कि अमीरुल मोमिनीन उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रज़ि.) से उन्होंने उनके अ़हदे ख़िलाफ़त में ये ह़दीष़ बयान की कि मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) जब कूफ़ा के अमीर थे, तो उन्होंने एक दिन अ़स्र की नमाज़ में देर की। इस पर ज़ैद बिन ह़सन के नाना अबू मसऊ़द उ़क़्बा बिन अ़म्र अंस़ारी (रज़ि.) उनके यहाँ गये। वो बद्र की लड़ाई में शरीक होने वाले स़ह़ाबा में से थे और कहा, आपको मा'लूम है कि ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) (नमाज़ का त़रीक़ा बताने के लिये) आए और आपने नमाज़ पढ़ी और हुज़ूर (ﷺ) ने उनके पीछे नमाज़ पढ़ी, पाँचों वक़्त की नमाज़ें। फिर फ़र्माया कि इसी त़रह मुझे हुक्म मिला है। बशीर बिन अबी मसऊ़द भी ये ह़दीष़ अपने वालिद से बयान करते थे। (राजेअ़ : 521)

٤٠٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ سَمِعْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ يُحَدِّثُ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ فِي إِمَارَتِهِ أَخَّرَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ الْعَصْرَ وَهُوَ أَمِيرُ الْكُوفَةِ فَدَخَلَ أَبُو مَسْعُودٍ عُقْبَةُ بْنُ عَمْرٍو الأَنْصَارِيُّ جَدُّ زَيْدِ بْنِ حَسَنٍ شَهِدَ بَدْرًا فَقَالَ: لَقَدْ عَلِمْتَ نَزَلَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ فَصَلَّى، فَصَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ خَمْسَ صَلَوَاتٍ ثُمَّ قَالَ : هَكَذَا أُمِرْتَ. كَذَلِكَ كَانَ بَشِيرُ بْنُ أَبِي مَسْعُودٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ. [راجع: ٥٢١]

तशरीह़ : अबू मसऊ़द (रज़ि.) की बेटी उम्मे बशर पहले सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल को मन्सूब थीं। बाद में ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) ने उनसे निकाह़ कर लिया और उनके बत़न से ह़ज़रत ज़ैद बिन ह़सन (रज़ि.) पैदा हुए। अबू मसऊ़द (रज़ि.)बद्री थे। यही बाब से वजहे मुत़ाबक़त है।

4008. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद नख़ई ने, उनसे अ़ल्क़मा बिन यस्अ़ा ने और उनसे अबू मसऊ़द बद्री (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सूरह बक़रः की दो आयतें (आमनर्रसूल से आख़िर तक) ऐसी हैं कि जो शख़्स़ रात में इन्हें पढ़ ले वो उसके लिये काफ़ी हो जाती हैं। अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया कि फिर मैंने अबू मसऊ़द (रज़ि.) से मुलाक़ात की, वो उस वक़्त बैतुल्लाह का त़वाफ कर रहे थे, मैंने उनसे इस ह़दीष़ के बारे में पूछा तो उन्होंने ये ह़दीष़ मुझसे बयान की।

٤٠٠٨- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْبَدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((الآيَتَانِ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ مَنْ قَرَأَهُمَا فِي لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ)) قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: فَلَقِيتُ أَبَا مَسْعُودٍ وَهُوَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ فَسَأَلْتُهُ فَحَدَّثَنِيهِ.

4009. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें मह़मूद बिन रबीअ़ ने ख़बर दी कि ह़ज़रत इत्बान बिन

٤٠٠٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي مَحْمُودُ بْنُ الرَّبِيعِ أَنَّ عِتْبَانَ بْنَ مَالِكٍ

रसूले करीम (ﷺ) ने एक घाटी पर मुक़र्रर फ़र्माकर सख़्त ताकीद फ़माई थी कि हमारी जीत हो या हार हमारा हुक्म आए बग़ैर तुम उस घाटी से मत हटना, मगर उन्होंने नाफ़र्मानी की और मुसलमानों की अव्वल मरह़ले पर फ़तह़ देखकर वो अम्वाले ग़नीमत लूटने के ख़्याल से घाटी को छोड़कर मैदान में आ गये। इस नाफ़र्मानी का जो ख़ामियाज़ा सारे मुसलमानों को भुगतना पड़ा वो मा'लूम है। अल्लाह ने बतला दिया कि नाफ़र्मानी और मअ़स़ियत के इर्तिकाब का नतीजा ऐसा ही होता है और इन ह़िक्मतों में से एक ह़िक्मत ये भी है कि अल्लाह की त़रफ़ से मुक़र्रर है कि रसूलों को आज़माया जाता है और आख़िर अंजाम भी उन ही की फ़तह़ होती है जैसा कि हिरक़्ल और अबू सुफ़यान के क़िस्से में गुज़र चुका है। अगर हमेशा रसूलों के लिये मदद ही होती रहे तो मोमिनों में ग़ैर मोमिन भी दाख़िल हो सकते हैं और स़ादिक़ और काज़िब लोगों में तमीज़ उठ सकती है और अगर वो हमेशा हारते ही रहें तो बिअ़ष़त का मक़्स़ूद फ़ौत हो जाता है।

पस ह़िक्मते इलाही का तक़ाज़ा फ़तह़ व शिकस्त हर दौर के दरम्यान हुआ ताकि स़ादिक़ और काज़िब में फ़र्क़ होता रहे। मुनाफ़िक़ीन का निफ़ाक़ पहले मुसलमानों पर मख़्फ़ी (छुपा हुआ) था। इस इम्तिह़ान ने उनको ज़ाहिर कर दिया और उन्होंने अपने क़ौल और अ़मल से खुले त़ौर पर अपने निफ़ाक़ को ज़ाहिर कर दिया। तब मुसलमानों पर ज़ाहिर हो गया कि उनके घरों ही में उनके दुश्मन छुपे हुए हैं जिनसे परहेज़ करना लाज़िम है। आजकल भी ऐसे नामो निहाद मुसलमान मौजूद हैं जो नमाज़ व रोज़ा करते हैं मगर वक़्त आने पर इस्लाम और मुसलमानों के साथ ग़द्दारी करते रहते हैं। ऐसे लोगों से हर वक़्त चौकन्ना रहना ज़रूरी है। निफ़ाक़ बहुत ही बुरा मर्ज़ है। जिसकी मज़म्मत क़ुर्आन मजीद में कई जगह बड़े ज़ोरदार लफ़्ज़ों में हुई है और उनके लिये दोज़ख़ का सबसे नीचे वाला ह़िस़्स़ा **वैल** सज़ा के लिये तज्वीज़ होना बतलाया है। हर मुसलमान को पाँचों वक़्त ये दुआ़ पढ़नी चाहिये **अल्लाहुम्म अऊ़ज़ुबिक मिनन्निफ़ाक़ि वशिक़ाक़ि व सूइल्अख़्लाक़ि**, ऐ अल्लाह! मैं निफ़ाक़ से और आपस की फूट से और बुरे अख़्लाक़ से तेरी पनाह चाहता हूँ। आमीन या रब्बल आ़लमीन।

٤٠٤١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ: ((هَذَا جِبْرِيلُ آخِذٌ بِرَأْسِ فَرَسِهِ عَلَيْهِ أَدَاةُ الْحَرْبِ)). [راجع: ٣٩٩٥]

4041. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, हमको अ़ब्दुल वह्हाब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर फ़र्माया, ये ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहि.) हैं, हथियारबन्द, अपने घोड़े की लगाम थामे हुए। (राजेअ : 3995)

٤٠٤٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيٍّ أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ حَيْوَةَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ: عَلَى قَتْلَى أُحُدٍ بَعْدَ ثَمَانِي سِنِينَ كَالْمُوَدِّعِ لِلأَحْيَاءِ وَالأَمْوَاتِ ثُمَّ طَلَعَ الْمِنْبَرَ فَقَالَ : ((إِنِّي بَيْنَ أَيْدِيكُمْ فَرَطٌ، وَأَنَا عَلَيْكُمْ شَهِيدٌ، وَإِنَّ مَوْعِدَكُمُ الْحَوْضُ وَإِنِّي لأَنْظُرُ إِلَيْهِ مِنْ مَقَامِي هَذَا

4042. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़ीम ने बयान किया, कहा हमको ज़करिया बिन अ़दी ने ख़बर दी, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें हैवा ने, उन्हें यज़ीद बिन ह़बीब ने, उन्हें अबुल ख़ैर ने और उनसे ह़ज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आठ साल बाद या'नी आठवीं बरस में ग़ज़्व-ए-उहुद के शुह्दा पर नमाज़े जनाज़ा अदा की, जैसे आप ज़िन्दों और मुर्दों सबसे रुख़्स़त हो रहे हों। उसके बाद आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, मैं तुमसे आगे आगे हूँ, मैं तुम पर गवाह रहूँगा और मुझसे (क़यामत के दिन) तुम्हारी मुलाक़ात ह़ौज़े (कौष़र) पर होगी। इस वक़्त भी मैं अपनी इस जगह से ह़ौज़ (कौष़र) को देख रहा हूँ। तुम्हारे बारे में मुझे

وَإِنِّي لَسْتُ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا، وَلَكِنِّي أَخْشَى عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا أَنْ تَنَافَسُوهَا)). قَالَ فَكَانَتْ آخِرَ نَظْرَةٍ نَظَرْتُهَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ.

[راجع: ١٣٤٤]

उसका कोई ख़तरा नहीं है कि तुम शिर्क करोगे, हाँ मैं तुम्हारे बारे में दुनिया से डरता हूँ कि तुम कहीं दुनिया के लिये आपस में मुक़ाबला न करने लगो। उक़्बा बिन आमिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये आख़िरी दीदार था जो मुझको नसीब हुआ। (राजेअ़ : 1344)

तशरीह : उहुद की लड़ाई 3 हिजरी शव्वाल के महीने में हुई और 11 हिजरी माहे रबीउ़ल अव्वल में आपकी वफ़ात हो गई। इसलिये रावी का ये कहना कि आठ बरस बाद सहीह नहीं हो सकता। मतलब ये है कि आठवीं बरस जैसा कि हमने तर्जुमा में ज़ाहिर कर दिया है। ज़िन्दों का रुख़्सत करना तो ज़ाहिर है क्योंकि ये वाक़िया आपके हयाते तय्यिबा के आख़िरी साल का है और मुर्दों का विदाअ़ उसका मा'नी यूँ कर रहे हैं कि अब बदन के साथ उनकी ज़ियारत न हो सकेगी। जैसे दुनिया में हुआ करती थी। **हाफ़िज़ साहब ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) वफ़ात के बाद भी ज़िन्दा हैं लेकिन वो उख़रवी ज़िन्दगी है जो दुनियावी ज़िन्दगी से मुशाबिहत नहीं रखती।** रिवायत में हौज़े कौषर पर शर्फ़े दीदारे नबवी (ﷺ) का ज़िक्र है। वहाँ हम सब मुसलमान आपसे शर्फ़े मुलाक़ात हासिल करेंगे। मुसलमानों! कोशिश करो कि क़यामत के दिन हम अपने पैग़म्बर (ﷺ) के सामने शर्मिन्दा न हों। जहाँ तक हो सके आपके दीन की मदद करो। क़ुरआन व हदीष़ फैलाओ। जो लोग हदीष़ शरीफ़ और हदीष़ वालों से दुश्मनी रखते हैं न मा'लूम वो हौज़े कौषर पर रसूले करीम (ﷺ) को क्या मुँह दिखाएँगे। अल्लाह तआला हम सबको हौज़े कौषर पर हमारे रसूल (ﷺ) की मुलाक़ात नसीब फ़र्माए, आमीन।

٤٠٤٣ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لَقِينَا الْمُشْرِكِينَ يَوْمَئِذٍ وَأَجْلَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَيْشًا مِنَ الرُّمَاةِ وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَبْدَ اللهِ وَقَالَ: ((لاَ تَبْرَحُوا إِنْ رَأَيْتُمُونَا ظَهَرْنَا عَلَيْهِمْ فَلاَ تَبْرَحُوا وَإِنْ رَأَيْتُمُوهُمْ ظَهَرُوا عَلَيْنَا فَلاَ تُعِينُونَا)) فَلَمَّا لَقِينَا هَرَبُوا حَتَّى رَأَيْتُ النِّسَاءَ يَشْتَدِدْنَ فِي الْجَبَلِ رَفَعْنَ عَنْ سُوقِهِنَّ قَدْ بَدَتْ خَلاَخِلُهُنَّ فَأَخَذُوا يَقُولُونَ: الْغَنِيمَةَ الْغَنِيمَةَ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ جُبَيْرٍ: عَهِدَ إِلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ لاَ تَبْرَحُوا فَأَبَوْا فَلَمَّا أَبَوْا صُرِفَ وُجُوهُهُمْ فَأُصِيبَ سَبْعُونَ قَتِيلاً

4043. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे इब्ने इस्हाक़ (अ़म्र बिन उ़बैदुल्लाह सबीई) ने और उनसे बरा (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे उहुद के मौक़े पर जब मुश्रिकीन से मुक़ाबला के लिये हम पहुँचे तो आँहज़रत (ﷺ) ने तीरंदाज़ों का एक दस्ता अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) की मातहती में (पहाड़ी पर) मुक़र्रर फ़र्माया था और उन्हें ये हुक्म दिया था कि तुम अपनी जगह से न हटना, उस वक़्त भी जब तुम लोग देख लो कि हम उन पर ग़ालिब आ गये हैं, फिर भी यहाँ से न हटना और उस वक़्त भी जब तुम देख लो कि वो हम पर ग़ालिब आ गये, तुम लोग हमारी मदद के लिये न आना। फिर जब हमारी मुठभेड़ कुफ़्फ़ार से हुई तो उनमें भगदड़ मच गई। मैंने देखा कि उनकी औरतें पहाड़ियों पर बड़ी तेज़ी के साथ भागी जा रही थीं, पिण्डलियों से ऊपर कपड़े उठाए हुए, जिससे उनके पाज़ेब दिखाई दे रहे थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के (तीरंदाज़) साथी कहने लगे कि ग़नीमत ग़नीमत। इस पर अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मुझे नबी करीम (ﷺ) ने ताकीद की थी कि अपनी जगह से न हटना (इसलिये तुम लोग ग़नीमत का माल लूटने न जाओ)

4425. हमसे उ़ष्मान बिन हैष्रम ने बयान किया, कहा हमसे औ़फ़ अअ़राबी ने बयान किया, उनसे इमाम ह़सन बस़री ने, उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे जमल के मौक़े पर वो कलाम मेरे काम आ गया जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था। मैं इरादा कर चुका था कि अस्ह़ाबे जमल ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) और आपके लश्कर के साथ शरीक होकर (ह़ज़रत अ़ली रज़ि. की) फ़ौज से लड़ूँ। उन्होंने बयान किया कि जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को मा'लूम हुआ कि अहले फ़ारस ने किसरा की लड़की को वारिष़े तख़्त व ताज बनाया है तो आपने फ़र्माया कि वो क़ौम कभी फ़लाह नहीं पा सकती जिसने अपना हुक्मरान किसी औरत को बनाया हो। (तशरीह़ पीछे हो चुकी है) (दीगर मक़ाम : 7099)

٤٤٢٥- حدَّثنا عُثمانُ بنُ الهَيْثَمِ، حَدَّثَنا عَوْفٌ عَنِ الحَسَنِ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: لَقَدْ نَفَعَنِي اللهُ بِكَلِمَةٍ سَمِعْتُهَا مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَيَّامَ الجَمَلِ بَعْدَ مَا كِدْتُ أَنْ أَلْحَقَ بِأَصْحَابِ الجَمَلِ فَأُقَاتِلَ مَعَهُمْ، قَالَ: فَلَمَّا بَلَغَ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَنَّ أَهْلَ فَارِسَ قَدْ مَلَّكُوا عَلَيْهِمْ بِنْتَ كِسْرَى، قَالَ: ((لَنْ يُفْلِحَ قَوْمٌ وَلَّوْا أَمْرَهُمْ امْرَأَةً)). [طرفه في : ٧٠٩٩].

4426. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुहरी से सुना, उन्होंने साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मुझे याद है जब मैं बच्चों के साथ ष़निय्यतुल वदाअ़ की त़रफ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) का इस्तिक़्बाल करने गया था। सुफ़यान ने एक बार (मअ़ल ग़िल्मान के बजाय) मअ़स्सिब्यान बयान किया।

٤٤٢٦- حدَّثنا عَلِيُّ بنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنا سُفْيَانُ، قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ يَقُولُ: أَذْكُرُ أَنِّي خَرَجْتُ مَعَ الغِلْمَانِ إِلَى ثَنِيَّةِ الوَدَاعِ نَتَلَقَّى رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَقَالَ سُفْيَانُ: مَرَّةً مَعَ الصِّبْيَانِ. [راجع: ٣٠٨٣]

4427. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने और उनसे साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) ने कि मुझे याद है, जब मैं बच्चों के साथ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का इस्तिक़बाल करने गया था। आप ग़ज़्व-ए-तबूक़ से वापस तशरीफ़ ला रहे थे। (राजेअ़ : 3073)

٤٤٢٧- حدَّثنا عَبْدُ اللهِ بنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ السَّائِبِ أَذْكُرُ أَنِّي خَرَجْتُ مَعَ الصِّبْيَانِ نَتَلَقَّى النَّبِيَّ ﷺ إِلَى ثَنِيَّةِ الوَدَاعِ مَقْدَمَهُ مِنْ غَزْوَةِ تَبُوكَ. [راجع: ٣٠٨٣]

ऊपर वाली ह़दीष़ में ष़निय्यतुल वदाअ़ तक इस्तिक़बाल के लिये जाना मज़्कूर है। ये ग़ज़्व-ए-तबूक़ ही की वापसी पर हुआ है।

बाब 84 : नबी करीम (ﷺ) की बीमारी और आप (ﷺ) की वफ़ात का बयान

٨٤- باب مَرَضِ النَّبِيِّ ﷺ وَوَفَاتِهِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ، ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ القِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ﴾

और अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान कि, आपको भी मरना है और उन्हें भी मरना है फिर तुम सब क़यामत के दिन अपने रब के हुज़ूर में झगड़ा करोगे।

4428. और यूनुस ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे उ़र्वा ने

٤٤٢٨- وَقَالَ يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ

बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अपने मर्ज़े वफ़ात में फ़र्माते थे कि ख़ैबर में (ज़हर आलूद) लुक़्मा जो मैंने अपने मुँह में रख लिया था, उसकी तकलीफ़ आज भी मैं महसूस करता हूँ। ऐसा मा'लूम होता है कि मेरी शहे-रग उस ज़हर की तकलीफ़ से कट जाएगी।

عُرْوَةُ قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ ((يَا عَائِشَةُ مَا أَزَالُ أَجِدُ أَلَمَ الطَّعَامِ الَّذِي أَكَلْتُ بِخَيْبَرَ فَهَذَا أَوَانُ وَجَدْتُ انْقِطَاعَ أَبْهَرِي مِنْ ذَلِكَ السُّمِّ)).

4429. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने और उनसे उम्मे फ़ज़ल बिन्ते हारिष़ (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने सुना रसूलुल्लाह (ﷺ) मग़रिब की नमाज़ में वल मुर्सलाति उ़र्फ़ा की क़िरात कर रहे थे, उसके बाद फिर आपने हमें कभी नमाज़ नहीं पढ़ाई, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली।

(राजेअ़: 763)

٤٤٢٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ أُمِّ الْفَضْلِ بِنْتِ الْحَارِثِ قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْمَغْرِبِ بِالْمُرْسَلاَتِ عُرْفًا ثُمَّ مَا صَلَّى لَنَا بَعْدَهَا حَتَّى قَبَضَهُ اللهُ.

[راجع: ٧٦٣]

4430. हमसे मुहम्मद बिन अ़रअ़रह ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) आपको (मजलिस में) अपने क़रीब बिठाते थे। इस पर अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने ए'तिराज़ किया कि इस जैसे तो हमारे बच्चे हैं। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने ये तर्ज़े अमल जिस वजह से इख़्तियार किया, वो आपको मा'लूम भी है? फिर हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से इस आयत (या'नी) इज़ा जाअ नस्रुल्लाहि वल फ़त्ह के बारे में पूछा। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने जवाब दिया कि ये रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात थी, आपको अल्लाह तआ़ला ने (आयत में) उसी की ख़बर दी है। उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जो तुमने बताया वही मैं भी इस आयत के बारे में जानता हूँ। (राजेअ़ : 3627)

٤٤٣٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يُدْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ: إِنَّ لَنَا أَبْنَاءً مِثْلَهُ، فَقَالَ: إِنَّهُ مِنْ حَيْثُ تَعْلَمُ. فَسَأَلَ عُمَرُ ابْنَ عَبَّاسٍ عَنْ هَذِهِ الآيَةِ ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ﴾ فَقَالَ: أَجَلُ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَعْلَمَهُ إِيَّاهُ فَقَالَ: مَا أَعْلَمُ مِنْهَا إِلاَّ مَا تَعْلَمُ.

[راجع: ٣٦٢٧]

4431. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे सुलैमान अह़वल ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास

٤٤٣١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سُلَيْمَانَ الأَحْوَلِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَوْمُ الْخَمِيسِ وَمَا يَوْمُ

सको। कुछ लोगों ने उसके खिलाफ़ दूसरी राय पर इसरार किया। जब शोरो–गुल और झगड़ा ज़्यादा हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि यहाँ से जाओ। उबैदुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते थे कि मुसीबत सबसे बड़ी ये थी कि लोगों ने इख़्तिलाफ़ और शोर करके आँहज़रत (ﷺ) को वो हिदायत नहीं लिखने दी।

(राजेअ: 114)

مَنْ يَقُولُ غَيْرَ ذَلِكَ فَلَمَّا أَكْثَرُوا اللَّغْوَ وَالاخْتِلاَفَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قُومُوا)). قَالَ عُبَيْدُ اللهِ: فَكَانَ يَقُولُ ابْنُ عَبَّاسٍ: إِنَّ الرَّزِيَّةَ كُلَّ الرَّزِيَّةِ مَا حَالَ بَيْنَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَبَيْنَ أَنْ يَكْتُبَ لَهُمْ ذَلِكَ الْكِتَابَ لاخْتِلاَفِهِمْ وَلَغَطِهِمْ.

[راجع: ١١٤]

तश्रीह : ये रहलत से चार दिन पहले की बात है। जब मर्ज ने शिद्दत इख़्तियार की तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, लाओ तुम्हें कुछ लिख दूँ ताकि तुम मेरे बाद गुमराह न हो। कुछ ने कहा कि आप पर शिद्दते दर्द ग़ालिब है, क़ुर्आन हमारे पास मौजूद है और हमको काफ़ी है। इस पर आपस में इख़्तिलाफ़ हुआ। कोई कहता था सामाने किताबत ले आओ कि ऐसा नविश्ता लिखा जाए कोई कुछ और कहता था ये शोरो-शग़फ़ बढ़ा तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम सब उठ जाओ। ये जुम्अ़ेरात का वाक़िया है। उसी रोज़ आपने तीन वसिय्यतें फ़र्माईं। यहूद को अ़रब से निकाल दिया जाए। वफ़ूद की इ़ज़्ज़त हमेशा उसी तरह की जाए जैसा मैं करता रहा हूँ। क़ुर्आन मजीद को हर काम में मा'मूल बनाया जाए। कुछ रिवायात के मुताबिक़ किताबुल्लाह और सुन्नत पर तमस्सुक का हुक्म फ़र्माया। आज मग़रिब तक की तमाम नमाज़ें हुज़ूर (ﷺ) ने ख़ुद पढ़ाई थीं मगर इशा में न जा सके और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को फ़र्माया कि वो नमाज़ पढ़ाएँ। जिसके तहत हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने ह़याते नबवी में सत्रह नमाज़ों की इमामत फ़र्माई। **रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु** आमीन।

4433, 4434. हमसे बुस्रा बिन सफ़्वान बिन जमील लख़्मी ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मर्ज़ुल मौत में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़ातिमा (रज़ि.) को बुलाया और आहिस्ता से कोई बात उनसे कही जिस पर वो रोने लगीं, फिर दोबारा आहिस्ता से कोई बात कही जिस पर वो हंसने लगीं। फिर हमने उनसे उसके बारे में पूछा तो उन्होंने बतलाया कि आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि आपकी वफ़ात उसी मर्ज़ में हो जाएगी, मैं ये सुनकर रोने लगी। दूसरी बार आप (ﷺ) ने मुझसे जब सरगोशी की तो ये फ़र्माया कि आपके घर के आदमियों में सबसे पहले मैं आपसे जा मिलूँगी तो मैं हंसी थी।

(राजेअ: 3623, 3624)

٤٤٣٣، ٤٤٣٤- حَدَّثَنَا بُسْرَةُ بْنُ صَفْوَانَ بْنِ جَمِيلٍ اللَّخْمِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ فِي شَكْوَاهُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَبَكَتْ ثُمَّ دَعَاهَا فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَضَحِكَتْ، فَسَأَلْنَا عَنْ ذَلِكَ فَقَالَتْ: سَارَّنِي النَّبِيُّ ﷺ أَنَّهُ يُقْبَضُ فِي وَجَعِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ فَبَكَيْتُ، ثُمَّ سَارَّنِي فَأَخْبَرَنِي أَنِّي أَوَّلُ أَهْلِهِ يَتْبَعُهُ فَضَحِكْتُ. [راجع: ٣٦٢٣، ٣٦٢٤]

4435. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे

٤٤٣٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدٍ، عَنْ عُرْوَةَ

सअ़द ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं सुनती आई थी कि हर नबी को वफ़ात से पहले दुनिया और आख़िरत के रहने में इख़्तियार दिया जाता है, फिर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से भी सुना, आप अपने मर्ज़ुल मौत में फ़र्मा रहे थे, आपकी आवाज़ भारी हो चुकी थी। आप आयत 'मअ़ल्लज़ीन अन्अ़मल्लाहु अ़लैहिम अल्ख़' की तिलावत फ़र्मा रहे थे (या'नी उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह ने इन्आ़म किया है) मुझे यक़ीन हो गया कि आपको भी इख़्तियार दे दिया गया है। (दीगर मक़ाम: 4436, 4437, 4586, 6337, 6509)

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : كُنْتُ أَسْمَعُ أَنَّهُ لاَ يَمُوتُ نَبِيٌّ حَتَّى يُخَيَّرَ بَيْنَ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، فَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ وَأَخَذَتْهُ بُحَّةٌ يَقُولُ: ﴿مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ﴾ الآيَةَ فَظَنَنْتُ أَنَّهُ خُيِّرَ. [أطرافه في : ٤٤٣٦، ٤٤٣٧، ٤٥٨٦، ٦٣٣٨، ٦٥٠٩].

तश्रीह: या'नी आपने आख़िरत को इख़्तियार किया। वाक़दी ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) ने दुनिया में आने पर सबसे पहले जो कलिमा ज़ुबान से निकाला वो अल्लाहु अकबर था और आख़िरी कलिमा जो वफ़ात के वक़्त फ़र्माया, वो अर्रफ़ीक़ुल्आला था। (वह़ीदी)

4436. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने मर्ज़ुल वफ़ात में बार बार फ़र्माते थे। (अल्लाहुम्म) अर्रफ़ीक़ुल आ़ला, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे रुफ़्क़ाअ (अंबिया और सिद्दीक़ीन) में पहुँचा दे (जो आला इल्लियीन में रहते हैं) (राजेअ: 4435)

٤٤٣٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدٍ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : لَمَّا مَرِضَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَرَضَ الَّذِي مَاتَ فِيهِ جَعَلَ يَقُولُ : ((فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)). [راجع: ٤٤٣٥]

4437. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने कि उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया तन्दरुस्ती के ज़माने में रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माया करते थे कि जब भी किसी नबी की रूह़ क़ब्ज़ की गई तो पहले जन्नत में उसकी क़यामगाह उसे ज़रूर दिखा दी गई, फिर उसे इख़्तियार दिया गया (रावी को शक था कि लफ़्ज़ यह्या है या युख़य्यिरु, दोनों का मफ़्हूम एक ही है) फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) बीमार पड़े और वक़्त क़रीब आ गया तो सरे मुबारक आ़इशा (रज़ि.) की रान पर था और आप पर ग़शी त़ारी हो गई थी, जब कुछ होश हुआ तो आपकी आँखे घर की छत की त़रफ़ उठ गईं और आपने फ़र्माया। अल्लाहुम्म फ़िर्रफ़ीक़िल आ़ला। मैं समझ गई कि अब ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) हमें (या'नी दुनियवी ज़िन्दगी को) पसन्द नहीं फ़र्माएँगे। मुझे वो ह़दीष़ याद आ गई जो आपने तन्दुरुस्ती के ज़माने में फ़र्माई थी। (राजेअ: 4435)

٤٤٣٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ إِنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ صَحِيحٌ يَقُولُ ((إِنَّهُ لَمْ يُقْبَضْ نَبِيٌّ قَطُّ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ، ثُمَّ يُحَيَّا أَوْ يُخَيَّرَ)) فَلَمَّا اشْتَكَى وَحَضَرَهُ الْقَبْضُ وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِ عَائِشَةَ غُشِيَ عَلَيْهِ فَلَمَّا أَفَاقَ شَخَصَ بَصَرُهُ نَحْوَ سَقْفِ الْبَيْتِ ثُمَّ قَالَ : ((اللَّهُمَّ فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)) فَقُلْتُ: إِذًا لاَ يُجَاوِرُنَا فَعَرَفْتُ أَنَّهُ حَدِيثُهُ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا وَهُوَ صَحِيحٌ. [راجع: ٤٤٣٥]

4438. हमसे मुह़म्मद बिन यह्या ज़ुह्ली ने बयान किया, कहा

٤٤٣٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عَفَّانُ عَنْ

हमसे अफ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे सख़र बिन जुवैरिया ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद (क़ासिम बिन मुहम्मद) ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि (उनके भाई) अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत मे हाज़िर हुए। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे। अब्दुर्रहमान (रज़ि.) के हाथ में एक ताज़ा मिस्वाक इस्ते'माल के लिये थी आप (ﷺ) इस मिस्वाक की तरफ़ देखते रहे। चुनाँचे मैं ने उनसे मिस्वाक ले ली और उसे अपने दांतों से चबाकर अच्छी तरह झाड़ने और साफ़ करने के बाद हुज़ूर (ﷺ) को दे दी। आपने वो मिस्वाक इस्ते'माल की जितने उम्दा तरीक़ा से हुज़ूर (ﷺ) उस वक़्त मिस्वाक कर रहे थे, मैंने आपको इतनी अच्छी तरह मिस्वाक करते कभी नहीं देखा। मिस्वाक से फ़ारिग़ होने के बाद आपने अपना हाथ या अपनी उँगली उठाई और फ़र्माया। फ़िर्रफ़ीक़िल आला तीन बार और आपका इंतिक़ाल हो गया। हज़रत आइशा(रज़ि.) कहा करती थीं कि हुज़ूर अकरम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो सरे मुबारक मेरी हंसली और ठोडी के बीच में था। (राजेअ : 890)

صَخْرِ بْنِ جُوَيْرِيَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا دَخَلَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا مُسْنِدَتُهُ إِلَى صَدْرِي وَمَعَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ سِوَاكٌ رَطْبٌ يَسْتَنُّ بِهِ فَأَبَدَّهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَصَرَهُ فَأَخَذْتُ السِّوَاكَ فَقَصَمْتُهُ وَنَفَضْتُهُ وَطَيَّبْتُهُ، ثُمَّ دَفَعْتُهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَاسْتَنَّ بِهِ، فَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ اسْتَنَّ اسْتِنَانًا قَطُّ أَحْسَنَ مِنْهُ، فَمَا عَدَا أَنْ فَرَغَ رَسُولُ اللهِ ﷺ رَفَعَ يَدَهُ أَوْ إِصْبَعَهُ ثُمَّ قَالَ: ((فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)) ثَلاَثًا ثُمَّ قَضَى وَكَانَتْ تَقُولُ: مَاتَ وَرَأْسُهُ بَيْنَ حَاقِنَتِي وَذَاقِنَتِي.

[راجع: ٨٩٠]

तश्रीह : इसमें ये इशारा था कि हज़रत आइशा (रज़ि.) और आँहज़रत (ﷺ) दुनिया और आख़िरत दोनों में एक जगह रहेंगे। हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं अल्लाह जानता है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) दुनिया और आख़िरत में आपकी बीवी हैं। हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ ष़ानी (रह) फ़र्माते हैं कि मैं खाना तैयार करके ईसाले ष़वाब के वक़्त आँहज़रत (ﷺ) और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) और हस्नैन (रज़ि.) के ष़वाब की निय्यत किया करता था। एक शब ख़्वाब में आँहज़रत (ﷺ) को मैंने देखा कि आप गुस्से की नज़र से मुझको देख रहे हैं। मैंने सबब पूछा इर्शाद हुआ ये अम्र सबको मा'लूम है कि मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) के घर में खाना खाया करता हूँ। (लिहाज़ा तुमको भी ईसाले ष़वाब में हज़रत आइशा रज़ि. को भी शामिल करना चाहिये)। हज़रत मुजद्दिद कहते हैं मैंने उस रोज़ से आपकी अज़्वाजे मुतह्हरात ख़ुसूसन हज़रत आइशा (रज़ि.) को भी ईसाले ष़वाब में शरीक करना शुरू कर दिया। **खाना खिलाने के लिये मुत्लक़न ऐसा ईसाले ष़वाब जो किसी क़ैद या रस्म के बग़ैर हो और ख़ालिस अल्लाह की रज़ा के लिये किसी ग़रीब मिस्कीन यतीम को खिलाया जाए और उसका ष़वाब बुज़ुर्गों को बख़्शा जाए, उसके जवाज़ में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है।**

4439. मुझसे हिब्बान बिन मूसा मरवज़ी ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे उर्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब बीमार पड़ते तो अपने ऊपर मुअव्वज़तैन (सूरह फ़लक़ और सूरह नास) पढ़कर दम कर लिया करते थे और

٤٤٣٩ - حَدَّثَنِي حِبَّانُ : أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا اشْتَكَى نَفَثَ عَلَى نَفْسِهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ وَمَسَحَ عَنْهُ بِيَدِهِ

فلما اشتكى وَجَعَهُ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ طَفِقْتُ أَنفِثُ عَلَى نَفْسِهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ الَّتِي كَانَ يَنفِثُ وَامْسَحُ بِيَدِ النَّبِيِّ ﷺ عَنْهُ.

[أطرافه في: ٥٠١٦، ٥٧٣٥، ٥٧٥١].

अपने जिस्म पर अपने हाथ फेर लिया करते थे, फिर जब वो मर्ज़ आपको लाहिक़ हुआ जिसमें आपकी वफ़ात हुई तो मैं मुअव्वज़तैन पढ़कर आप पर दम किया करती थी और हाथ पर दम करके हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के ज़िस्म पर फेरा करती थी।

(दीगर मक़ाम : 5016, 5735, 5751)

٤٤٤٠ - حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُخْتَارٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ عَبَّادِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا سَمِعَتِ النَّبِيَّ ﷺ وَأَصْغَتْ إِلَيْهِ قَبْلَ أَنْ يَمُوتَ وَهُوَ مُسْنِدٌ إِلَيَّ ظَهْرَهُ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَأَلْحِقْنِي بِالرَّفِيقِ)).

[طرفه في: ٥٦٤٧].

4440. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन मुख़्तार ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे अब्बाद बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आपने नबी करीम (ﷺ) से सुना, वफ़ात से कुछ पहले आँहज़रत (ﷺ) पुश्त से उनका सहारा लिए हुए थे। आपने कान लगाकर सुना कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) दुआ कर रहे हैं। ऐ अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा, मुझ पर रहम कर और मेरे रफ़ीक़ों से मुझे मिला।

(दीगर मक़ाम : 5647)

٤٤٤١ - حَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ هِلاَلٍ الْوَزَّانِ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ فِي مَرَضِهِ الَّذِي لَمْ يَقُمْ مِنْهُ: ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ)) قَالَتْ عَائِشَةُ: لَوْلاَ ذَلِكَ لأُبْرِزَ قَبْرُهُ خَشِيَ أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا. [راجع: ٤٣٥]

4441. हमसे सल्त बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना वज़्ज़ाह यश्करी ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अबी हुमैद वज़ान ने, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने मर्ज़ुल वफ़ात में फ़र्माया, अल्लाह तआला ने यहूदियों को अपनी रहमत से दूर कर दिया कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया था। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि अगर ये बात न होती तो आपकी क़ब्र भी खुली रखी जाती लेकिन आपको ये ख़तरा था कि कहीं आपकी क़ब्र को भी सज्दा न किया जाने लगे। (राजेअ : 435)

ग़ालिबन आपकी इस मुबारक दुआ की बरकत थी कि क़ब्रे मुबारक को अब बिलकुल मुसक़्क़फ़ करके बन्द कर दिया गया है। ये कितना बड़ा मोअजजा है कि आज सारी दुनिया में सिर्फ़ एक ही सच्चे आख़िरी रसूल (ﷺ) की क़ब्र महफ़ूज़ है और वो भी इस हालत में कि वहाँ कोई किसी भी क़िस्म की पूजा-पाठ नहीं। (ﷺ)

٤٤٤٢ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ

4442. हमसे सईद बिन उफ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष बिन सअद ने बयान किया, कि मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा बिन मसऊद ने ख़बर दी और उनसे उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये उठना बैठना दुश्वार हो गया और आपके मर्ज़ ने

फ़र्मा गये और आपका हाथ झुक गया। (राजेअ : 890)

4450. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन ड़र्वा ने बयान किया, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें ड़ाइशा (रज़ि.) ने कि मर्ज़ुल मौत में रसूलुल्लाह (ﷺ) पूछते रहते थे कि कल मेरा क़याम कहाँ होगा, कल मेरा क़याम कहाँ होगा? आप ड़ाइशा (रज़ि.) की बारी के मुंतज़िर थे, फिर अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि.) ने ड़ाइशा (रज़ि.) के घर क़याम की इजाज़त दे दी और आपकी वफ़ात उन्हीं के घर में हुई। ड़ाइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आपकी वफ़ात उसी दिन हुई जिस दिन क़ायदे के मुताबिक़ मेरे यहाँ आपके क़याम की बारी थी। रहलत के वक़्त सरे मुबारक मेरे सीने पर था और मेरा थूक आपके थूक के साथ मिला था। उन्होंने बयान किया कि अ़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) दाख़िल हुए और उनके हाथ में इस्ते'माल के क़ाबिल मिस्वाक थी। हुज़ूर (ﷺ) ने उसकी त़रफ़ देखा तो मैंने कहा कि अ़ब्दुर्रहमान! ये मिस्वाक मुझे दे दो। उन्होंने मिस्वाक मुझे दे दी। मैंने उसे अच्छी त़रह चबाया और झाड़कर हुज़ूर (ﷺ) को दी, फिर आपने वो मिस्वाक की, उस वक़्त आप मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे।

(राजेअ : 890)

٤٤٥٠- حدَّثنا إسْماعيلُ. قال: حدَّثني سُلَيْمانُ بْنُ بِلاَلٍ. حدَّثنا هِشامُ بْنُ عُرْوةَ. أخْبَرَني أبي عَنْ عائشةَ رَضيَ اللهُ عَنْها أنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كانَ يَسْأَلُ في مَرَضِهِ الَّذي ماتَ فيهِ يَقُولُ: ((أيْنَ أنا غَدًا؟)) يُريدُ يَوْمَ عائشةَ فأذِنَ لهُ أزْواجُهُ يَكُونُ حَيْثُ شاءَ فكانَ في بَيْتِ عائشةَ حتّى ماتَ عِنْدَها. قالتْ عائشةُ: فماتَ في اليَوْمِ الَّذي كانَ يَدُورُ عَليَّ فيهِ في بَيْتي فقَبَضَهُ اللهُ، وإنَّ رأسَهُ لَبَيْنَ نَحْرِي وسَحْرِي وخالَطَ رِيقُهُ رِيقي. ثُمَّ قالتْ: دَخَلَ عَبْدُ الرَّحْمنِ بْنُ أبي بَكْرٍ ومَعهُ سِواكٌ يَسْتَنُّ بهِ، فنَظَرَ إلَيْهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ فقُلْتُ لهُ: أعْطِني هذا السِّواكَ يا عَبْدَ الرَّحْمنِ فأعْطانِيهِ. فقَضِمْتُهُ ثُمَّ مَضَغْتُهُ فأعْطَيْتُهُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فاسْتَنَّ بهِ وهُوَ مُسْتَنِدٌ إلى صَدْري. [راجع: ٨٩٠]

4451. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे ह़ज़रत ड़ाइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात मेरे घर में, मेरी बारी के दिन हुई। आप उस वक़्त मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे। जब आप बीमार पड़े तो हम आपकी सेहत के लिये दुआएँ किया करते थे। उस बीमारी में भी मैं आपके लिये दुआ करने लगी लेकिन आप फ़र्मा रहे थे और आप (ﷺ) का सर आसमान की त़रफ़ उठा हुआ था फ़िर्रफ़ीक़िल ड़ाला फ़िर्रफ़ीक़िल ड़ाला और ड़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) आए तो उनके हाथ में एक ताज़ा टहनी थी। हुज़ूर (ﷺ) ने उसकी त़रफ़ देखा तो मैं समझ गई कि आप (ﷺ) मिस्वाक करना चाहते हैं। चुनाँचे वो

٤٤٥١- حدَّثنا سُلَيْمانُ بْنُ حَرْبٍ، حدَّثنا حَمّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أيُّوبَ عن ابْنِ أبي مُلَيْكةَ، عَنْ عائشةَ رَضِيَ اللهُ عَنْها قالتْ: تُوُفِّيَ النَّبيُّ ﷺ في بَيْتي وفي يَوْمي وبَيْنَ سَحْرِي ونَحْرِي، وكانَتْ إحْدانا تُعَوِّذُهُ بدُعاءٍ إذا مَرِضَ. فذَهَبْتُ أُعَوِّذُهُ فرَفَعَ رَأْسَهُ إلى السَّماءِ وقالَ وقالَ: ((في الرَّفيقِ الأعْلَى. في الرَّفيقِ الأعْلَى)) ومَرَّ عَبْدُ الرَّحْمنِ بْنُ أبي بَكْرٍ وفي يَدِهِ جَرِيدَةٌ رَطْبَةٌ فنَظَرَ إلَيْهِ النَّبيُّ

टहनी मैंने उनसे ले ली। पहले मैंने उसे चबाया, फिर साफ़ करके आपको दे दी। हुज़ूर (ﷺ) ने उससे मिस्वाक की, जिस तरह पहले आप मिस्वाक किया करते थे, उससे भी अच्छी तरह से, फिर हुज़ूर (ﷺ) ने वो मिस्वाक मुझे इनायत की और आपका हाथ झुक गया, या (रावी ने ये बयान किया कि) मिस्वाक आपके हाथ से छूट गई। इस तरह अल्लाह तआ़ला ने मेरे और हुज़ूर (ﷺ) के थूक को उस दिन जमा कर दिया जो आपकी दुनिया की ज़िन्दगी का सबसे आख़िरी और आख़िरत की ज़िन्दगी का सबसे पहला दिन था। (राजेअ़ : 890)

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَظَنَنْتُ أَنَّ لَهُ بِهَا حَاجَةً. فَأَخَذْتُهَا فَمَضَغْتُ رَأْسَهَا وَنَفَضْتُهَا، فَدَفَعْتُهَا إِلَيْهِ فَاسْتَنَّ بِهَا كَأَحْسَنِ مَا كَانَ مُسْتَنًّا. ثُمَّ نَاوَلَنِيهَا فَسَقَطَتْ يَدُهُ أَوْ سَقَطَتْ مِنْ يَدِهِ فَجَمَعَ اللهُ بَيْنَ رِيقِي وَرِيقِهِ. فِي آخِرِ مِنَ الدُّنْيَا وَأَوَّلِ يَوْمٍ مِنَ الآخِرَةِ.
[راجع: ٨٩٠]

4452,4453. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें अबू सलमा ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अपनी क़यामगाह, मस्ख़ से घोड़े पर आए और आकर उतरे, फिर मस्जिद के अंदर गये। किसी से आपने कोई बात नहीं की। उसके बाद आप आइशा (रज़ि.) के हुज्रे में आए और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की तरफ़ गये, नअशे मुबारक एक यमनी चादर से ढंकी हुई थी। आपने चेहरा खोला और झुककर चेहर-ए-मुबारक को बोसा दिया और रोने लगे, फिर कहा मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हो अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआ़ला आप पर दो मर्तबा मौत तारी नहीं करेगा। जो एक मौत आपके मुक़द्दर में थी, वो आप पर तारी हो चुकी है। (राजेअ़ : 1241, 1242)

٤٤٥٢، ٤٤٥٣ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَقْبَلَ عَلَى فَرَسٍ مِنْ مَسْكَنِهِ بِالسُّنْحِ حَتَّى نَزَلَ فَدَخَلَ الْمَسْجِدَ فَلَمْ يُكَلِّمِ النَّاسَ، حَتَّى دَخَلَ عَلَى عَائِشَةَ فَتَيَمَّمَ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَهُوَ مُغَشًّى بِثَوْبِ حِبَرَةٍ، فَكَشَفَ عَنْ وَجْهِهِ ثُمَّ أَكَبَّ عَلَيْهِ فَقَبَّلَهُ وَبَكَى، ثُمَّ قَالَ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، وَاللهِ لاَ يَجْمَعُ اللهُ عَلَيْكَ مَوْتَتَيْنِ، أَمَّا الْمَوْتَةُ الَّتِي كُتِبَتْ عَلَيْكَ فَقَدْ مُتَّهَا. [راجع: ١٢٤١، ١٢٤٢]

4454. ज़ुह्री ने बयान किया और उनसे अबू सलमा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आए तो हज़रत उ़मर (रज़ि.) लोगों से कुछ कह रहे थे। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा, उ़मर! बैठ जाओ, लेकिन हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बैठने से इंकार कर दिया। इतने में लोग हज़रत उ़मर (रज़ि.) को छोड़कर अबूबक्र (रज़ि.) के पास आ गये और आपने ख़ुत्बा मस्नूना के बाद फ़र्माया, अम्माबअ़द! तुममें जो भी मुहम्मद (ﷺ) की इ़बादत करता था तो उसे मा'लूम होना चाहिये कि आपकी वफ़ात हो चुकी है और जो

٤٤٥٤ - قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَحَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ. أَنَّ أَبَا بَكْرٍ خَرَجَ وَعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يُكَلِّمُ النَّاسَ، فَقَالَ: اجْلِسْ يَا عُمَرُ فَأَبَى عُمَرُ أَنْ يَجْلِسَ، فَأَقْبَلَ النَّاسُ إِلَيْهِ وَتَرَكُوا عُمَرَ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَمَّا بَعْدُ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا ﷺ فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ،

को आपने कब वसी बना दिया। (राजेअ : 2741)

[راجع: ٢٧٤١]

4460. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन मिग़्वल ने बयान किया, उनसे तल्हा बिन मुसर्रिफ़ ने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलल्लाह (ﷺ) ने किसी को वसी बनाया था। उन्होंने कहा कि नहीं। मैंने पूछा कि लोगों पर वसिय्यत करना कैसे फ़र्ज़ है या वसिय्यत करने का कैसे हुक्म है? उन्होंने बताया कि आपने किताबुल्लाह के मुताबिक़ अमल करते रहने की वसिय्यत की थी। (राजेअ : 2740)

٤٤٦٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ، عَنْ طَلْحَةَ قَالَ : سَأَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَوْصَى النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: لاَ، فَقُلْتُ كَيْفَ كُتِبَ عَلَى النَّاسِ الْوَصِيَّةُ أَوْ أُمِرُوا بِهَا قَالَ: أَوْصَى بِكِتَابِ اللهِ. [راجع: ٢٧٤٠]

4461. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुल अह्वस़ (सलाम बिन हकीम) ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अ़म्र बिन हारिष़ (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने न दिरहम छोड़े थे, न दीनार, न कोई ग़ुलाम न बांदी, सिवा अपने सफ़ेद ख़च्चर के जिस पर आप सवार हुआ करते थे और आपका हथियार और कुछ वो ज़मीन जो आप (ﷺ) ने अपनी ज़िन्दगी में मुजाहिदों और मुसाफ़िरों के लिये वक़्फ़ कर रखी थी। (राजेअ : 2739)

٤٤٦١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ، قَالَ: مَا تَرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ دِينَارًا وَلاَ دِرْهَمًا، وَلاَ عَبْدًا وَلاَ أَمَةً إِلاَّ بَغْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ الَّتِي كَانَ يَرْكَبُهَا وَسِلاَحَهُ، وَأَرْضًا جَعَلَهَا لاِبْنِ السَّبِيلِ صَدَقَةً. [راجع: ٢٧٣٩]

4462. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे षाबित बिनानी ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि शिद्दते मर्ज़ के ज़माने में नबी करीम (ﷺ) की बेचैनी बहुत बढ़ गई थी। हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा (रज़ि.) ने कहा, आह अब्बाजान को कितनी बेचैनी है। हुज़ूर (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया, आज के बाद तुम्हारे अब्बाजान की बेचैनी नहीं रहेगी। फिर जब आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई तो फ़ातिमा (रज़ि.) कहती थीं, हाय अब्बाजान! आप अपने रब के बुलावे पर चले गये, हाए अब्बाजान! आप जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मुक़ाम पर चले गये। हम हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) को आपकी वफ़ात की ख़बर सुनाते हैं। फिर जब आँहज़रत (ﷺ) दफ़न कर दिये गये तो आप (रज़ि.) ने अनस (रज़ि.) से कहा, अनस! तुम्हारे दिल रसूलुल्लाह (ﷺ) की नअश पर मिट्टी डालने के लिये किस तरह आमादा हो गये थे।

٤٤٦٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا ثَقُلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَعَلَ يَتَغَشَّاهُ فَقَالَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ: وَاكَرْبَ أَبَاهُ فَقَالَ لَهَا: ((لَيْسَ عَلَى أَبِيكِ كَرْبٌ بَعْدَ الْيَوْمِ)). فَلَمَّا مَاتَ قَالَتْ: يَا أَبَتَاهُ أَجَابَ رَبًّا دَعَاهُ يَا أَبَتَاهُ مَنْ جَنَّةُ الْفِرْدَوْسِ مَأْوَاهُ يَا أَبَتَاهُ إِلَى جِبْرِيلَ نَنْعَاهُ فَلَمَّا دُفِنَ قَالَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ : يَا أَنَسُ أَطَابَتْ أَنْفُسُكُمْ أَنْ تَحْثُوا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ التُّرَابَ.

बाब 85 : नबी करीम (ﷺ) का आख़िरी कलिमा जो ज़ुबाने मुबारक से निकला

٨٥- باب آخِرِ مَا تَكَلَّمَ النَّبِيُّ ﷺ

हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने कई अहले इल्म की मौजूदगी में ख़बर दी और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हालते सेहत में फ़र्माया करते थे कि हर नबी की रूह क़ब्ज़ करने से पहले उन्हें जन्नत में उनकी क़यामगाह दिखाई गई, फिर इख़्तियार दिया गया, फिर जब आप (ﷺ) बीमार हुए और आपका सरे मुबारक मेरी रान पर था। उस वक़्त आप पर ग़शी त़ारी हो गई। जब होश मे आए तो आपने अपनी नज़र घर की छत की त़रफ़ उठा ली और फ़र्माया, अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़ुल आ़ला (ऐ अल्लाह! मुझे अपनी बारगाह में अंबिया और सिद्दीक़ीन से मिला दे) मैं उसी वक़्त समझ गई कि अब आप हमें पसन्द नहीं कर सकते और मुझे वो हदीष़ याद आ गई जो आप हालते सेहत में हमसे बयान किया करते थे। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आख़िरी कलिमा जो ज़ुबान मुबारक से निकला वो यही था कि अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़ुल आ़ला। (राजेअ़ : 4435)

٤٤٦٣- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ يُونُسُ: قَالَ الزُّهْرِيُّ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ فِي رِجَالٍ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ، أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ وَهُوَ صَحِيحٌ: ((إِنَّهُ لَمْ يُقْبَضْ نَبِيٌّ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ، ثُمَّ يُخَيَّرُ)) فَلَمَّا نَزَلَ بِهِ وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِي غُشِيَ عَلَيْهِ. ثُمَّ أَفَاقَ فَأَشْخَصَ بَصَرَهُ إِلَى سَقْفِ الْبَيْتِ، ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)) فَقُلْتُ: إِذاً لاَ يَخْتَارُنَا وَعَرَفْتُ أَنَّهُ الْحَدِيثُ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا بِهِ وَهُوَ صَحِيحٌ. قَالَتْ: فَكَانَ آخِرَ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)).

[راجع: ٤٤٣٥]

तश्रीह : नज़्आ की हालत में ह़ज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) आप (ﷺ) को सहारा दिये हुए पसे पुश्त बैठी हुई थीं। पानी का प्याला हुज़ूर (ﷺ) के सिराहने रखा हुआ था। आप प्याला में हाथ डालते और चेहरा पर फेर लेते थे। चेहरा मुबारक कभी सुर्ख़ होता कभी ज़र्द पड़ जाता, ज़ुबाने मुबारक से फ़र्मा रहे थे **ला इलाह इल्लल्लाहु अन्न लिल्मौति सकरात** इतने में अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र (रज़ि.) हाथ में ताज़ा मिस्वाक लिये हुए आ गये। आप (ﷺ) ने मिस्वाक पर नज़र डाली तो ह़ज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने मिस्वाक को अपने दांतों से नरम करके पेश कर दिया। हुज़ूर (ﷺ) ने मिस्वाक की फिर हाथ को बुलन्द फ़र्माया और ज़ुबाने अक़्दस से फ़र्माया **अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़िल्आला** उस वक़्त हाथ लटक गया और पुतली ऊपर को उठ गई। **इन्न लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न।**

बाब 86 : नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात का बयान

٨٦- باب وَفَاةِ النَّبِيِّ ﷺ

4464,65. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे शैबान बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे आइशा (रज़ि.) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (बेअ़ष़त के बाद) मक्का में दस साल तक क़याम किया जिसमें आप (ﷺ) पर वह्य नाज़िल होती रही और मदीना में भी

٤٤٦٤، ٤٤٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ وَابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَبِثَ بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ يُنْزَلُ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ وَبِالْمَدِينَةِ عَشْرًا.

दस साल तक आपका क़याम रहा। (दीगर मक़ाम : 4978)

[طرفه في: ٤٩٧٨].

4466. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आपकी उ़म्र 63 साल थी। इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने भी उसी त़रह़ ख़बर दी थी। (राजेअ़ : 3536)

٤٤٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ تُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيِّبِ مِثْلَهُ.

[راجع: ٣٥٣٦]

तशरीह : 13 रबीउ़ल अव्वल 11 हिजरी यौमे सोमवार वक़्त चाश्त था कि जिस्मे अत़्हर से रूहे अनवर ने परवाज़ किया, उस वक़्त उ़म्रे मुबारक 63 साल क़मरी पर चार दिन थी। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न।**

बाब 87 :

٨٧- باب

4467. हमसे क़ुबैस़ा बिन उ़त्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आपकी ज़िरह़ एक यहूदी के यहाँ तीस स़ाअ़ जौ के बदले में गिरवी रखी हुई थी। (राजेअ़ : 2067)

٤٤٦٧- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ وَدِرْعُهُ مَرْهُونَةٌ عِنْدَ يَهُودِيٍّ بِثَلاَثِينَ يَعْنِي صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ.

[راجع: ٢٠٦٨]

तशरीह : ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उस यहूदी का क़र्ज़ अदा करके आपकी ज़िरह छुड़ा ली। उन ह़ालात में अगर ज़रा सी भी अ़क़्ल वाला आदमी ग़ौर करेगा तो स़ाफ़ समझ लेगा कि आप सच्चे पैग़म्बर थे। दुनिया के बादशाहों की त़रह़ एक बादशाह न थे। अगर आप दुनिया के बादशाहों की त़रह़ होते तो लाखों करोड़ों रुपये की जायदाद अपने बच्चों और बीवियों के लिये छोड़ देते।

बाब : नबी करीम (ﷺ) का उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को मर्ज़ुल मौत में एक मुहिम पर रवाना करना

٨٨- باب بَعْثِ النَّبِيِّ ﷺ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي مَرَضِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ

4468. हमसे अबू आ़स़िम ज़िह़ाक बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे उनके वालिद (अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को एक लश्कर का अमीर

٤٤٦٨- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ، عَنِ الْفُضَيْلِ بْنِ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ. عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ. اسْتَعْمَلَ النَّبِيُّ ﷺ أُسَامَةَ فَقَالُوا فِيهِ: فَقَالَ

किया कि मुझसे ख़ुबैब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे ह़फ़्स बिन आ़सिम ने और उनसे अबू सईद बिन मुअ़ल्ला (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे इसी ह़ालत में बुलाया, मैंने कोई जवाब नहीं दिया (फिर बाद में, मैंने ह़ाज़िर होकर) अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं नमाज़ पढ़ रहा था। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या अल्लाह तआ़ला ने तुमसे नहीं फ़र्माया है 'इस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूलि इज़ा दआ़कुम' (अल्लाह और उसके रसूल जब तुम्हें बुलाएँ तो हाँ मे जवाब दो) फिर हुज़ूर (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि आज मैं तुम्हें मस्जिद से निकलने से पहले एक ऐसी सूरत की ता'लीम दूँगा जो क़ुर्आन की सबसे बड़ी सूरत है। फिर आपने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया और जब आप बाहर निकलने लगे तो मैंने याद दिलाया कि हु ज़ूर (ﷺ) ने मुझे क़ुर्आन की सबसे बड़ी सूरत बताने का वा'दा किया था। आपने फ़र्माया अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल्आलमीन यही वो सब्अ़े मषानी और क़ुर्आने अ़ज़ीम है जो मुझे अ़ता किया गया है। (दीगर मक़ाम : 4647, 4703, 5006)

الرَّحْمَنِ عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي سَعِيدِ بْنِ الْمُعَلَّى، قَالَ: كُنْتُ أُصَلِّي فِي الْمَسْجِدِ، فَدَعَانِي رَسُولُ اللهِ ﷺ فَلَمْ أُجِبْهُ فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي كُنْتُ أُصَلِّي فَقَالَ : ((أَلَمْ يَقُلِ اللهُ اسْتَجِيبُوا للهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ؟)) ثُمَّ قَالَ لِي: ((لأُعَلِّمَنَّكَ سُورَةً هِيَ أَعْظَمُ السُّوَرِ فِي الْقُرْآنِ قَبْلَ أَنْ تَخْرُجَ مِنَ الْمَسْجِدِ، ثُمَّ أَخَذَ بِيَدِي فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ قُلْتُ لَهُ : أَلَمْ تَقُلْ لأُعَلِّمَنَّكَ سُورَةً هِيَ أَعْظَمُ سُورَةٍ فِي الْقُرْآنِ؟ قَالَ : ﴿الْحَمْدُ للهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ هِيَ السَّبْعُ الْمَثَانِي، وَالْقُرْآنُ الْعَظِيمُ الَّذِي أُوتِيتُهُ)).

[أطرافه في :٤٦٤٧، ٤٧٠٣، ٥٠٠٦].

सब्अ़े मषानी वो सात आयात जो बार बार पढ़ी जाती हैं। जिनको नमाज़ की हर रकअ़त में इमाम और मुक़्तदी सबके लिये पढ़ना ज़रूरी है जिसके पढ़े बग़ैर किसी की नमाज़ नहीं होती। यही क़ुर्आने अ़ज़ीम है। **सदक़ल्लाहु तबारक व तआ़ला।**

बाब 02 : आयत ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन की तफ़्सीर

٢- باب ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ﴾

मग़्ज़ूबि अ़लैहिम से यहूद और ज़ाल्लीन से नसारा मुराद हैं या'नी या अल्लाह! तू हमको उन लोगों की राह पर न चलाइयो जिन पर तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ और वो यहूद हैं और न गुमराहों की राह पर जो नसारा हैं।

4475. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें सुमय ने, उन्हें अबू स़ालेह ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब इमाम 'ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन' कहे तो तुम आमीन कहो क्योंकि जिसका ये कहना मलाइका के कहने के साथ हो जाए उसकी तमाम पिछली ख़ताएँ मुआ़फ़ हो जाती हैं।

(राजेअ़ : 782)

٤٤٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ سُمَيٍّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ الإِمَامُ ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ﴾ فَقُولُوا : آمِينَ، فَمَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). [راجع: ٧٨٢]

الْحَجِّ وَذَلِكَ قَبْلَ يَوْمِ عَرَفَةَ، فَإِنْ كَانَ آخِرُ يَوْمٍ مِنَ الأَيَّامِ الثَّلاَثَةِ يَوْمَ عَرَفَةَ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِ ثُمَّ لِيَنْطَلِقْ حَتَّى يَقِفَ بِعَرَفَاتٍ مِنْ صَلاَةِ الْعَصْرِ إِلَى أَنْ يَكُونَ الظَّلاَمُ، ثُمَّ لِيَدْفَعُوا مِنْ عَرَفَاتٍ إِذَا أَفَاضُوا مِنْهَا حَتَّى يَبْلُغُوا جَمْعًا الَّذِي يَبِيتُونَ بِهِ ثُمَّ لِيَذْكُرِ اللهَ كَثِيرًا، وَأَكْثِرُوا التَّكْبِيرَ وَالتَّهْلِيلَ قَبْلَ أَنْ تُصْبِحُوا، ثُمَّ أَفِيضُوا فَإِنَّ النَّاسَ كَانُوا يُفِيضُونَ وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللهَ إِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ حَتَّى تَرْمُوا الْجَمْرَةَ.

रखे। अ़रफ़ा के दिन से पहले अगर आख़िर रोज़ा अ़रफ़ा के दिन आ जाए तब भी कोई क़बाह़त नहीं शहरे मक्का से चलकर अ़रफ़ात को जाए वहाँ अ़स्र की नमाज़ से रात की तारीकी होने तक ठहरे, फिर अ़रफ़ात से उस वक़्त लौटे जब दूसरे लोग लौटें और सब लोगों के साथ रात मुज़दलिफ़ा में गुज़ारे और अल्लाह की याद और तक्बीर और तह्लील बहुत करता रहे सुबह़ होने तक। सुबह़ को लोगों के साथ मुज़दलिफ़ा से मिना को लौटे जैसे अल्लाह ने फ़र्माया, 'षुम्मा अफ़ीज़ू मिन ह़ैषु अफ़ाज़न्नासु' अल आयति या'नी कंकरियाँ मारने तक उसी त़रह अल्लाह की याद और तक्बीर व तह्लील करते रहो।

٣٦- باب قوله ﴿وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ : رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾

बाब 36 : आयत 'व मिन्हुम मंय्यक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

और कुछ उनमे ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमको दुनिया में बेहतरी दे और आख़िरत में भी बेहतरी दे और हमको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा.

٤٥٢٢- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ)). [طرفه في: ٦٣٨٥].

4522. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) दुआ़ करते थे, ऐ परवरदिगार! हमारे हमको दुनिया में भी बेहतरी दे और आख़िरत में भी बेहतरी और हमको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा। (दीगर मक़ाम : 6375)

तश्रीह़ : ये दुआ बड़ी अहमियत रखती है। जिसे बकष़रत पढ़ना दीन और दुनिया में बहुत सी बरकतों का ज़रिया है। क़ुर्आन मजीद मे इससे पहले कुछ ऐसे लोगों का ज़िक्र है जो ह़ज्ज में ख़ाली दुनियावी मफ़ाद की दुआएँ करते और आख़िरत को बिलकुल भूल जाते थे। मुसलमानों को ये दुआ सिखाई गई कि वो दुनिया के साथ आख़िरत की भी भलाई मांगे। इस आयत का शाने नुज़ूल यही है। अ़रफ़ात में भी ज़्यादातर इस दुआ की फ़ज़ीलत है।

باب قوله ﴿وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ﴾

बाब 37 : आयत 'व हुव अलद्दुल्ख़िसाम' की तफ़्सीर

وَقَالَ عَطَاءٌ : النَّسْلُ : الْحَيَوَانُ.

या'नी हालाँकि वो बहुत ही सख़्त क़िस्म का झगड़ालू है। अ़त़ा

कर बैठी थीं कि हिम्मत हार दें, जबकि ह़ाल ये कि अल्लाह दोनों का मददगार था। सुफ़यान ने बयान किया कि हम दो जमाअतें बनू ह़ारिष़ और बनू सलाम थे। ह़ालाँकि इस आयत में हमारे बोदेपन का ज़िक्र है, मगर हमको ये पसन्द नहीं कि ये आयत न उतरती क्योंकि उसमें ये मज़्कूर है कि अल्लाह उन दोनों गिरोहों का मददगार (सरपरस्त) है। (राजेअ़ : 5051)

تفشلا واللهُ وَلِيُّهُمَا﴾ قَالَ: نَحْنُ الطَّائِفَتَانِ بَنُو حَارِثَةَ، وَبَنُو سَلِمَةَ، وَمَا نُحِبُّ وَقَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً : وَمَا يَسُرُّنِي أَنَّهَا لَمْ تَنْزِلْ لِقَوْلِ اللهِ: ﴿وَاللهُ وَلِيُّهُمَا﴾.

[راجع: ٥٠٥١]

इससे बढ़कर और फ़ज़ीलत क्या होगी कि विलायते इलाही हमको ह़ासिल हो गई। हमारे बोदेपन का जो ज़िक्र है वो स़ह़ीह़ है। इस फ़ज़ीलत के सामने हमको इस ऐब के फ़ाश होने का बिलकुल मलाल नहीं।

बाब 9 : आयत 'लैस लक मिनल्अम्रि शैउन' की तफ़्सीर या'नी, आपको इस अम्र में कोई दख़ल नहीं कि ये हिदायत क्यूँ नहीं क़ुबूल करते अल्लाह जिसे चाहे उसे हिदायत मिलती है।

٩- باب قوله ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾

4559. हमसे ह़िब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा मुझसे सालिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़ज्र की दूसरी रकअ़त के रुकूअ़ से सर उठाकर ये बद्दुआ की, 'ऐ अल्लाह! फ़लाँ फ़लाँ और फ़लाँ काफ़िर पर ला'नत कर', ये बद्दुआ आपने समिअ़ल्लाहुलिमन ह़मिदह् और रब्बना लकल ह़म्द के बाद की थी। इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत उतारी, 'आपको उसमें कोई दख़ल नहीं' आख़िर आयत फ़इन्नहुम ज़ालिमून तक। इस रिवायत को इस्ह़ाक़ बिन राशिद ने ज़ुहरी से नक़ल किया है। (राजेअ़ : 4069)

٤٥٥٩- حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ. قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمٌ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فِي الرَّكْعَةِ الآخِرَةِ مِنَ الْفَجْرِ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ الْعَنْ فُلاَنًا وَفُلاَنًا وَفُلاَنًا)) بَعْدَ مَا يَقُولُ : ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ)) فَأَنْزَلَ اللهُ لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ إِلَى قَوْلِهِ ﴿فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ﴾. رَوَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ رَاشِدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ.

[راجع: ٤٠٦٩]

तश्रीह़ : इस्ह़ाक़ बिन राशिद की रिवायत को त़बरानी ने मुअ़जमे कबीर में वस़्ल किया है। आपने चार शख़्सों का नाम लेकर बद्दुआ की थी। स़फ़्वान बिन उमय्या, सुहैल बिन अ़मर, ह़ारिष़ बिन हिशाम और अ़म्र बिन आस़ (रज़ि.) और बाद में ये चारों मुसलमान हो गये। अल्लाह को उनका मुस्तक़्बिल मा'लूम था, इसीलिये अल्लाह ने उन पर ला'नत करने से मना किया।

4560. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलाम बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.)

٤٥٦٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ. حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، وَأَبِي

जिसे अल्लाह तआला ने माल दिया और फिर उसने उसकी ज़कात नहीं अदा की तो (आख़िरत में) उसका माल निहायत ज़हरीले सांप बनकर जिसकी आँखों के ऊपर दो नुक़्ते होंगे। उसकी गर्दन में तौक़ की तरह पहना दिया जाएगा। फिर वो सांप उसके दोनों जबड़ों को पकड़कर कहेगा कि मैं ही तेरा माल हूँ, मैं ही तेरा ख़ज़ाना हूँ, फिर आपने इस आयत की तिलावत की, 'और जो लोग कि उस माल में बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से दे रखा है, वो ये न समझे कि ये माल उनके हक़ में बेहतर है', आख़िर तक। (राजेअ : 1403)

الله ﷺ: ((مَنْ آتاهُ الله مَالاً فَلَمْ يُؤَدِّ زَكَاتَهُ مُثِّلَ لَهُ مَالُهُ شُجَاعًا أَقْرَعَ لَهُ زَبِيبَتَانِ، يُطَوَّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَأْخُذُ بِلِهْزِمَتِهِ - يَعْنِي بِشِدْقَيْهِ - يَقُولُ أَنَا مَالُكَ أَنَا كَنْزُكَ)) ثُمَّ تَلاَ هَذِهِ الآيَةَ: ((﴿وَلاَ يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ الله مِنْ فَضْلِهِ﴾)) إِلَى آخِرِ الآيَةِ.

[راجع: ١٤٠٣]

तश्रीह : आयत में उन मालदारों का बयान है जो ज़कात नहीं अदा करते बल्कि सोने चाँदी को बतौरे ख़ज़ाना जमा करके रखते हैं। उनका हाल क़यामत के दिन ये होगा कि उनका वो ख़ज़ाना ज़हरीला सांप बनकर उनकी गर्दनों का हार बनेगा और उनके जबड़ों को चीरेगा। ये वो दौलत के पुजारी लोग होंगे जिन्होंने दुनिया में ख़ज़ाना गाड़-गाड़कर रखा और उसकी ज़कात तक अदा नहीं की।

बाब 15 : आयत 'वल तस्मउ़ना मिनल्लज़ीन ऊतुल किताब' की तफ़्सीर या'नी,

١٥- باب قوله ﴿وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيرًا﴾

और यक़ीनन तुम लोग बहुत सी दिल दुखाने वाली बातें उनसे सुनोगे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिल चुकी है और उनसे भी सुनोग जो मुश्रिक हैं।

या'नी यहूद व नसारा व बुतपरस्त क़ौमें हमेशा तकलीफ़ देने पर आमादा रहेंगी मगर तुमको सब्र व इस्तिक़ामत के साथ ये सारे मसाइब बर्दाश्त करने होंगे।

4566. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक गधे की पुश्त पर फ़िदक की बनी हुई एक मोटी चादर रखने के बाद सवार हुए और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को अपने पीछे बिठाया। आप (ﷺ) बनू हारिष़ बिन ख़ज़रज में सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) की मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे। ये जंगे बद्र से पहले का वाक़िया है। रास्ते में एक मजलिस से आप गुज़रे जिसमें अ़ब्दुल्लाह बिन उबय इब्ने सलूल (मुनाफ़िक़) भी मौजूद था, ये अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के ज़ाहिरी इस्लाम लाने से भी पहले का क़िस्सा है। मज्लिस में मुसलमान और मुश्रिकीन या'नी बुतपरस्त और यहूदी सब ही

٤٥٦٦- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَوْلَهُ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ الله عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ رَكِبَ عَلَى حِمَارٍ عَلَى قَطِيفَةٍ فَدَكِيَّةٍ وَأَرْدَفَ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ وَرَاءَهُ يَعُودُ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ فِي بَنِي الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ قَبْلَ وَقْعَةِ بَدْرٍ، قَالَ: حَتَّى مَرَّ بِمَجْلِسٍ فِيهِ عَبْدُ الله بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ، وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ يُسْلِمَ عَبْدُ الله بْنُ أُبَيٍّ فَإِذَا فِي الْمَجْلِسِ أَخْلاَطٌ

बाब 15 : आयत 'वल तस्मउ़ना मिनल्लज़ीन ऊतुल किताब' की तफ़्सीर या'नी,

١٥- باب قوله ﴿وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيرًا﴾

और यक़ीनन तुम लोग बहुत सी दिल दुखाने वाली बातें उनसे सुनोगे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिल चुकी है और उनसे भी सुनोग जो मुश्रिक हैं।

या'नी यहूद व नसारा व बुतपरस्त क़ौमें हमेशा तकलीफ़ देने पर आमादा रहेंगी मगर तुमको सब्र व इस्तिक़ामत के साथ ये सारे मसाइब बर्दाश्त करने होंगे।

4566. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक गधे की पुश्त पर फ़िदक की बनी हुई एक मोटी चादर रखने के बाद सवार हुए और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को अपने पीछे बिठाया। आप (ﷺ) बनू ह़ारिष़ बिन ख़ज़रज में सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) की मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे। ये जंगे बद्र से पहले का वाक़िया है। रास्ते में एक मजलिस से आप गुज़रे जिसमें अ़ब्दुल्लाह बिन उबय इब्ने सलूल (मुनाफ़िक़) भी मौजूद था, ये अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के ज़ाहिरी इस्लाम लाने से भी पहले का क़िस्सा है। मज्लिस में मुसलमान और मुश्रिकीन या'नी बुतपरस्त और यहूदी सब ही

٤٥٦٦- حدَّثَنَا أبو اليمان أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَوْله أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَكِبَ عَلَى حِمَارٍ عَلَى قَطِيفَةٍ فَدَكِيَّةٍ وَأَرْدَفَ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ وَرَاءَهُ يَعُودُ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ فِي بَنِي الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ قَبْلَ وَقْعَةِ بَدْرٍ. قَالَ : حَتَّى مَرَّ بِمَجْلِسٍ فِيهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي ابْنُ سَلُولَ، وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ يُسْلِمَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ فَإِذَا فِي الْمَجْلِسِ أَخْلاَطٌ

त़रह के लोग थे, उन्हीं में अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) भी थे। सवारी की (टापों से गर्द उड़ी और) मज्लिस वालों पर पड़ी तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने चादर से अपनी नाक बन्द कर ली और बत़ौरे तह़क़ीर कहने लगा कि हम पर गर्द न उड़ाओ, इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) भी क़रीब पहुँच गये और उन्हें सलाम किया, फिर आप सवारी से उतर गये और मज्लिस वालों को अल्लाह की त़रफ़ बुलाया और क़ुर्आन की आयतें पढ़कर सुनाईं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल कहने लगा, जो कलाम आपने पढ़कर सुनाया है, उससे उ़म्दह कोई कलाम नहीं हो सकता। अगरचे ये कलाम बहुत अच्छा है, फिर भी हमारी मज्लिसों में आ आकर आप हमें तकलीफ़ न दिया करें, अपने घर बैठें, अगर कोई आपके पास जाए तो उसे अपनी बातें सुनाया करें। (ये सुनकर) अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) ने

مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُشْرِكِينَ قَوْلِهِ عَبَدَةِ الأَوْثَانِ وَالْيَهُودِ وَالْمُسْلِمِينَ وَفِي الْمَجْلِسِ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ، فَلَمَّا غَشِيَتِ الْمَجْلِسَ عَجَاجَةُ الدَّابَّةِ، خَمَّرَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أَنْفَهُ بِرِدَائِهِ ثُمَّ قَالَ: لاَ تُغَبِّرُوا عَلَيْنَا فَسَلَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَيْهِمْ ثُمَّ وَقَفَ فَنَزَلَ فَدَعَاهُمْ إِلَى اللهِ وَقَرَأَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنَ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ أَيُّهَا الْمَرْءُ إِنَّهُ لاَ أَحْسَنَ مِمَّا تَقُولُ إِنْ كَانَ حَقًّا فَلاَ تُؤْذِينَا بِهِ فِي مَجْلِسِنَا

त़रह के लोग थे, उन्हीं में अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा (रज़ि.) भी थे। सवारी की (टापों से गर्द उड़ी और) मज्लिस वालों पर पड़ी तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने चादर से अपनी नाक बन्द कर ली और बत़ौरे तहक़ीर कहने लगा कि हम पर गर्द न उड़ाओ, इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) भी क़रीब पहुँच गये और उन्हें सलाम किया, फिर आप सवारी से उतर गये और मज्लिस वालों को अल्लाह की त़रफ़ बुलाया और क़ुर्आन की आयतें पढ़कर सुनाईं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल कहने लगा, जो कलाम आपने पढ़कर सुनाया है, उससे उ़म्दह कोई कलाम नहीं हो सकता। अगरचे ये कलाम बहुत अच्छा है, फिर भी हमारी मज्लिसों में आ आकर आप हमें तकलीफ़ न दिया करें, अपने घर बैठें, अगर कोई आपके पास जाए तो उसे अपनी बातें सुनाया करें। (ये सुनकर) अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा (रज़ि.) ने कहा, ज़रूर या रसूलल्लाह! आप हमारी मज्लिसों में तशरीफ़ लाया करें, हम उसी को पसन्द करते हैं। उसके बाद मुसलमान, मुश्रिकीन और यहूदी आपस में एक–दूसरे को बुरा–भला कहने लगे और क़रीब था कि फ़साद और लड़ाई तक नौबत पहुँच जाती लेकिन आपने उन्हें ख़ामोश और ठण्डा कर दिया और आख़िर सब लोग ख़ामोश हो गये, फिर आप (ﷺ) अपनी सवारी पर सवार होकर वहाँ से चले आए और सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ ले गये। हुज़ूर (ﷺ) ने सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) से भी इसका ज़िक्र किया कि सअ़द! तुमने नहीं सुना, अबू हुबाब! आपकी मुराद अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल से थी, क्या कह रहा था? उसने इस त़रह की बातें की हैं। सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप उसे मुआ़फ़ फ़र्मा दें और उससे दरगुज़र करें। उस ज़ात की क़सम! जिसने आप पर किताब नाज़िल की है अल्लाह आप (ﷺ) के ज़रिये वो ह़क़ भेजा है जो उसने आप पर नाज़िल किया है, इस शहर (मदीना) के लोग (पहले) इस पर मुत्तफ़िक़ हो चुके थे कि इस (अ़ब्दुल्लाह बिन उबई) को ताज पहना दें और (शाही) अ़मामा उसके सर पर बाँध दें लेकिन जब अल्लाह तआ़ला ने उस ह़क़ के ज़रिये जो आपको उसने अ़त़ा किया है, उस बात़िल को रोक दिया तो अब वो चिढ़ गया है और इस वजह से वो मामला उसने आपके साथ किया जो आपने

مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُشْرِكِينَ قَوْلِهِ عَبَدَةِ الأَوْثَانِ وَالْيَهُودِ وَالْمُسْلِمِينَ وَفِي الْمَجْلِسِ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ، فَلَمَّا غَشِيَتِ الْمَجْلِسَ عَجَاجَةُ الدَّابَّةِ، خَمَّرَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ أَنْفَهُ بِرِدَائِهِ ثُمَّ قَالَ: لاَ تُغَبِّرُوا عَلَيْنَا فَسَلَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَيْهِمْ ثُمَّ وَقَفَ فَنَزَلَ فَدَعَاهُمْ إِلَى اللهِ وَقَرَأَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنَ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ أَيُّهَا الْمَرْءُ إِنَّهُ لاَ أَحْسَنَ مِمَّا تَقُولُ إِنْ كَانَ حَقًّا فَلاَ تُؤْذِينَا بِهِ فِي مَجْلِسِنَا ارْجِعْ إِلَى رَحْلِكَ فَمَنْ جَاءَكَ فَاقْصُصْ عَلَيْهِ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ: بَلَى. يَا رَسُولَ اللهِ فَاغْشَنَا بِهِ فِي مَجَالِسِنَا فَإِنَّا نُحِبُّ. ذَلِكَ فَاسْتَبَّ الْمُسْلِمُونَ وَالْمُشْرِكُونَ وَالْيَهُودُ، حَتَّى كَادُوا يَتَثَاوَرُونَ فَلَمْ يَزَلِ النَّبِيُّ ﷺ يُخَفِّضُهُمْ حَتَّى سَكَنُوا ثُمَّ رَكِبَ النَّبِيُّ ﷺ دَابَّةً فَسَارَ حَتَّى دَخَلَ عَلَى سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا سَعْدُ أَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالَ أَبُو حُبَابٍ - يُرِيدُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ - قَالَ كَذَا وَكَذَا)) قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ: يَا رَسُولَ اللهِ اعْفُ عَنْهُ وَاصْفَحْ عَنْهُ فَوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ لَقَدْ جَاءَ اللهُ بِالْحَقِّ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ لَقَدِ اصْطَلَحَ أَهْلُ هَذِهِ الْبُحَيْرَةِ عَلَى أَنْ يُتَوِّجُوهُ فَيُعَصِّبُونَهُ بِالْعِصَابَةِ، فَلَمَّا أَبَى اللهُ ذَلِكَ بِالْحَقِّ الَّذِي أَعْطَاكَ اللهُ شَرِقَ بِذَلِكَ

तो आपने फ़र्माया कि ठहर जाओ। मैंने देखा तो आप (ﷺ) की आँखों से आंसू बह रहे थे। (दीगर मक़ाम : 5049, 5050, 5055, 5056)

تذرفان. [أطرافه في : ٥٠٤٩، ٥٠٥٠، ٥٠٥٥، ٥٠٥٦].

आप इस वजह से रो रहे थे कि कि उम्मत ने जो कुछ किया है उस पर गवाही देनी होगी। कुछ ने कहा आपका ये रोना ख़ुशी का रोना था चूँकि आप तमाम पैग़म्बरों के गवाह बनेंगे। आयत का तर्जुमा ऊपर गुज़र चुका है।

बाब 10 : आयत 'इनकुन्तुम मर्ज़ा औ अला सफ़रिन'

की तफ़्सीर या'नी, और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई क़ज़ा-ए-हाजत से आया हो और पानी न हो तो पाक मिट्टी पर तयम्मुम करे। सईदा ज़मीन की ज़ाहिर सतह को कहते हैं। जाबिर ने कहा कि, ताग़ूत बड़े ज़ालिम मुश्रिक क़िस्म के सरदार लोग जिनके यहाँ जाहिलियत में लोग मुक़द्दमात ले जाते थे। एक ऐसा सरदार क़बीला जुहैना में था, एक क़बीला असलम में था और हर क़बीले में ही एक ऐसा ताग़ूत होता था। ये वही काहिन थे जिनके पास शैतान (ग़ैब की ख़बरें लेकर) आया करते थे। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने कहा कि, अल् जिब्तु से मुराद जादू है और अत् ताग़ूत से मुराद शैतान है और इक्रिमा ने कहा कि अल् जिब्तु हब्शी ज़ुबान में शैतान को कहते हैं और अत् ताग़ूत बमा'नी काहिन के आता है।

١٠ - باب قوله

قَوْلِه: ﴿وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَى أَوْ عَلَى سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ﴾ صَعِيدًا: وَجْهَ الأَرْضِ. وَقَالَ جَابِرٌ كَانَتِ الطَّوَاغِيتُ الَّتِي يَتَحَاكَمُونَ إِلَيْهَا فِي جُهَيْنَةَ وَاحِدٌ وَفِي أَسْلَمَ وَاحِدٌ وَفِي كُلِّ حَيٍّ وَاحِدٌ كُهَّانٌ، يَنْزِلُ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ وَقَالَ عُمَرُ: الْجِبْتُ: السِّحْرُ، وَالطَّاغُوتُ : الشَّيْطَانُ. وَقَالَ عِكْرِمَةُ: الْجِبْتُ بِلِسَانِ الْحَبَشَةِ شَيْطَانٌ. وَالطَّاغُوتُ : الْكَاهِنُ.

4583. हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अब्दह बिन सुलैमान ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उर्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि (मुझसे) हज़रत अस्मा (रज़ि.) का एक हार गुम हो गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चन्द सहाबा (रज़ि.) को उसे तलाश करने के लिये भेजा। इधर नमाज़ का वक़्त हो गया, न लोग वुज़ू से थे और न पानी मौजूद था। इसलिये वुज़ू के बग़ैर नमाज़ पढ़ी गई इस पर अल्लाह तआला ने तयम्मुम की आयत नाज़िल की।

٤٥٨٣ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: هَلَكَتْ قِلاَدَةٌ لأَسْمَاءَ فَبَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ فِي طَلَبِهَا رِجَالاً فَحَضَرَتِ الصَّلاَةُ، وَلَيْسُوا عَلَى وُضُوءٍ وَلَمْ يَجِدُوا مَاءً فَصَلُّوا وَهُمْ عَلَى غَيْرِ وُضُوءٍ فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى يَعْنِي آيَةَ التَّيَمُّمِ. [راجع: ٣٣٤]

तश्रीह : तयम्मुम का मा'नी क़स्द करना, इस्तिलाह में पानी न होने पर पाकी हासिल करने के लिये पाक मिट्टी का क़स्द करना जिसकी तफ़्सीलात मज़्कूर हो चुकी है।

बाब 11 : आयत 'व उलिल्अम्रि मिन्कुम'

की तफ़्सीर ऊलुल अम्र से बाइख़्तियार हाकिम लोग मुराद हैं।

١١ - باب قوله ﴿وَأُولِي الأَمْرِ مِنْكُمْ﴾ ذَوِي الأَمْرِ

या'नी, ऐ ईमानवालों! अल्लाह की इताअत करो और रसूल की और अपने में से उलिल अम्र की, आगे आयत यूँ है, **फ़इन**

तनाज़अतुम फ़ी शैइन फरुद्दूहू इलल्लाहि वर्रसूलि इन्कुन्तुम तूमिनून बिल्लाहि वल्यौमिलआख़िरि ज़ालिक ख़ैरुव्व अहसनु तावीला (अन् निसा : 59) या'नी अगर तुममें आपस में कोई इख़्तिलाफ़ पैदा हो तो इस मसले को अल्लाह और उसके रसूल की त़रफ़ लौटा दो, अगर अल्लाह और पिछले दिन पर तुम ईमान रखते हो, उसी में ख़ैर है और फ़ैसले के लिहाज़ से यही त़रीक़ा बेहतर है। इस आयत से मुक़ल्लिदीन ने तक़्लीदे शख़्सी का वुजूब षाबित किया है लेकिन दरहक़ीक़त उसमें तक़्लीदे शख़्सी की तर्दीद है जबकि इख़्तिलाफ़ के वक़्त अल्लाह व रसूल की त़रफ़ रुजूअ करने का हुक्म दिया गया है। अल्लाह की त़रफ़ से मुराद क़ुर्आन मजीद है और रसूल की त़रफ़ रुजूअ से मुराद ह़दीष़ शरीफ़ है। किसी भी इख़्तिलाफ़ के वक़्त क़ुर्आन व ह़दीष़ से फ़ैसला होगा जिसके आगे न किसी ह़ाकिम की बात चलेगी न किसी इमाम की। सिर्फ़ क़ुर्आन व ह़दीष़ को ह़ाकिमे मुत़्लक़ माना जाएगा। अइम्म-ए-मुज्तहिदीन की भी यही हिदायत है अल्लाह तआला जामिद मुक़ल्लिदों को नेक समझ अ़ता करे, आमीन।

4584. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको ह़ज्जाज बिन मुह़म्मद ने ख़बर दी, उन्हे इब्ने जुरैज ने, उन्हें यअ़ला बिन मुस्लिम ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत, अल्लाह की इत़ाअ़त करो और रसूल (ﷺ) की और अपने में से ह़ाकिमों की। अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुज़ाफ़ा बिन क़ैस बिन अ़दी (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई थी। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें एक मुहिम पर बत़ौरे अफ़सर रवाना किया था।

٤٥٨٤- حدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ يَعْلَى بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿أَطِيعُوا اللهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الأَمْرِ مِنْكُمْ﴾ قَالَ: نَزَلَتْ فِي عَبْدِ اللهِ بْنِ حُذَافَةَ بْنِ قَيْسِ بْنِ عَدِيٍّ، إِذْ بَعَثَهُ النَّبِيُّ ﷺ فِي سَرِيَّةٍ.

तश्रीह़ : रास्ते में उनको किसी बात पर ग़ुस्सा आ गया, उन्होंने अपने लोगों से कहा आग सुलगाओ, जब आग रोशन हुई तो कहा उसमें कूद जाओ। कुछ ने कहा उनकी इत़ाअ़त करनी चाहिये, कुछ ने कहा कि उनका ये हुक्म शरीअ़त के ख़िलाफ़ है। इसका मानना ज़रूरी नहीं। आख़िर ये आयत, **फ़इन तनाज़अ़तुम फ़ी शैइन** (अन् निसा : 59) नाज़िल हुई। ह़ाफ़िज़ ने कहा मत़लब ये है कि जब किसी मसले में इख़्तिलाफ़ हो तो किताबुल्लाह व ह़दीष़े रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ रुजूअ करो इससे तक़्लीदे शख़्सी की जड़ कट गई।

बाब 12 : आयत 'फला व रब्बिक ला यूमिनून हत्ता युहक्किमूक' की तफ़्सीर या'नी,

١٢- باب قوله ﴿فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم﴾

तेरे रब की क़सम! ये लोग हर्गिज़ ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक ये लो उस झगड़े में जो उनके आपस में हों, तुझको अपना ह़ाकिम न बना लें, फिर तेरे फ़ैसले को ब रज़ा व रग़बत के साथ तस्लीम कर लें।

4585. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने और उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) का एक अंसारी (षाबित बिन क़ैस रज़ि.) स़ह़ाबी से मुक़ामे ह़र्रह की एक नाली के बारे में झगड़ा हो गया (कि उससे कौन अपने बाग़ को पहले सींचने का ह़क़ रखता

٤٥٨٥- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ. حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ. أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ قَالَ: خَاصَمَ الزُّبَيْرُ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ فِي شَرِيجٍ مِنَ الْحَرَّةِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اسْقِ

है) नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़ुबैर (रज़ि.) पहले तुम अपना बाग़ सींच लो फिर अपने पड़ौसी को जल्द पानी दे देना। इस पर उस अंसारी सहाबी (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह! इसलिये कि ये आपके फूफीज़ाद भाई हैं? ये सुनकर आँहुज़ूर (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल गया और आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़ुबैर! अपने बाग़ को सींचो और पानी उस वक़्त तक रोके रखो कि मुँडेर भर जाए, फिर अपने पड़ौसी के लिये उसे छोड़ो। (पहले हुज़ूर ﷺ ने अंसारी के साथ अपने फ़ैसले में रिआयत रखी थी) लेकिन इस बार आप (ﷺ) ने हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) को साफ़ तौर पर उनका पूरा हक़ दे दिया क्योंकि अंसारी ने ऐसी बात कही थी कि जिससे आपका गुस्सा होना क़ुदरती था। हज़रत (ﷺ) ने अपने पहले फ़ैसले में दोनों के लिये रिआयत रखी थी। ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरा ख़याल है, ये आयात इसी सिलसिले में नाज़िल हुई थीं। तेरे परवरदिगार की क़सम! कि ये लोग तब तक ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि ये उस झगड़े में जो इनके आपस में हों आपको हाकिम न बना लें और आपके फ़ैसले को खुले दिल के साथ ब रज़ा व रग़बत तस्लीम करने के लिये तैयार न हों। (राजेअ : 2360)

يَا زُبَيْرُ ثُمَّ أَرْسِلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ)) فَقَالَ الأَنْصَارِيُّ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ كَانَ ابْنَ عَمَّتِكَ فَتَلَوَّنَ وَجْهُهُ ثُمَّ قَالَ: ((اسْقِ يَا زُبَيْرُ ثُمَّ احْبِسِ الْمَاءَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَى الْجَدْرِ. ثُمَّ أَرْسِلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ)) وَاسْتَوْعَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلزُّبَيْرِ حَقَّهُ فِي صَرِيحِ الْحُكْمِ حِينَ أَحْفَظَهُ الأَنْصَارِيُّ وَكَانَ أَشَارَ عَلَيْهِمَا بِأَمْرٍ لَهُمَا فِيهِ سَعَةٌ قَالَ الزُّبَيْرُ: فَمَا أَحْسَبُ هَذِهِ الآيَاتِ إِلاَّ نَزَلَتْ فِي ذَلِكَ ﴿فَلاَ وَرَبِّكَ لاَ يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ﴾.

[راجع: ٢٣٦٠]

तश्रीह : इस आयत में अल्लाह तआला अपनी ज़ात की क़सम खाकर इर्शाद फ़र्माता है कि उन लोगों का ईमान कभी पूरा नहीं होने वाला जब तक ये अपने आपस के झगड़ों में आपको अपना हाकिम न बना लें फिर आपके फ़ैसले को सुनकर ख़ुशी ख़ुशी तस्लीम न कर लें। मोमिन की यही निशानी है कि जिस मसले मे अगर सहीह हदीष मिल जाए बस ख़ुशी ख़ुशी उस पर अमल शुरू कर दे। अगर तमाम जहाँ के मौलवी व मुज्तहिद मिलकर उसके ख़िलाफ़ बयान करें तो करते रहें, ज़रा भी दिल में ये ख़याल न लाए कि मुज्तहिदों का मज़हब जो हम छोड़ते हैं अच्छी बात नहीं है, बल्कि दिल में बहुत ख़ुशी और सुरूर पैदा हो कि हक़ तआला ने हदीष शरीफ़ की पैरवी की तौफ़ीक़ दी और कैदानी और क़हिस्तानी के फंदे से नजात दिलवाई। (वहीदी)

बाब 13 : आयत 'फउलाइक मअल्लज़ीन अन्अमल्लाहु अलैहिम' की तफ़्सीर या'नी,

١٣ - باب قوله ﴿فَأُولَئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ﴾

तश्रीह : तो ऐसे लोग जिन पर अल्लाह तआला ने (अपना ख़ास) इन्आम किया है। जैसे नबियों और सिद्दीक़ीन और शुहदा और सालिहीन, उनके साथ उनका हश्र होगा। ये आयत उस वक़्त उतरी जब एक शख़्स ने आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझको आपसे बेहद मुहब्बत है। घर में रहूँ तो चैन नहीं आता। जब आप (ﷺ) की सूरत आकर देख लेता हूँ तो तसल्ली होती है। अब मुझको ये फ़िक्र है कि आख़िरत में आप तो आला दर्जे पर होंगे मैं अल्लाह जाने कहाँ होऊँगा। आपका जमाले मुबारक वहाँ कैसे देख सकूँगा? उसकी तसल्ली के लिये ये आयत नाज़िल हुई। हुक्म आम है और हर मुहिब्बे रसूल (ﷺ) मुसलमान इस बशारत का मिस्दाक़ है। **जअल्नल्लाहु मिन्कुम**

4586. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हौशब ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे ड़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो नबी मर्ज़ुल मौत में बीमार होता है तो उसे दुनिया और आख़िरत का इख़्तियार दिया जाता है। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) की मर्ज़ुल वफ़ात में जब आवाज़ गले में फंसने लगी तो मैंने सुना कि आप फ़र्मा रहे थे। उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह ने इन्आ़म किया है या'नी अंबिया, स़िद्दीक़ीन, शुह्दा और स़ालेह़ीन के साथ, इसलिये मैं समझ गई कि आपको भी इख़्तियार दिया गया है (और आपने अल्लाहुम्म बिर्रफ़ीक़िल आ़ला) कहकर आख़िरत को पसन्द फ़र्माया (ﷺ). (राजेअ़ : 4435)

٤٥٨٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَوْشَبٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَا مِنْ نَبِيٍّ يَمْرَضُ إِلاَّ خُيِّرَ بَيْنَ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ))، وَكَانَ فِي شَكْوَاهُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ أَخَذَتْهُ بُحَّةٌ شَدِيدَةٌ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ)) فَعَلِمْتُ أَنَّهُ خُيِّرَ. [راجع: ٤٤٣٥]

बाब 14 : आयत 'वमा लकुम ला तुक़ातिलून फ़ी सबीलिल्लाह' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

١٤- باب قَوْلِهِ : ﴿وَمَا لَكُمْ لاَ تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ إِلَى الظَّالِمِ أَهْلُهَا﴾ الآيَةَ.

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में जिहाद नहीं करते और उन लोगों की मदद के लिये नहीं लड़ते जो कमज़ोर हैं, मर्दों में से और औ़रतों और बच्चों में से,

तश्रीह़ : मक्का में जो कमज़ोर लोग क़ैद में रह गये थे उनको आज़ाद कराने की तर्ग़ीब में ये आयत नाज़िल हुई।

4587. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ड़बैदुल्लाह ने बयान किया, कि मैंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैं और मेरी वालिदा मुस्तज़्अ़फ़ीन (कमज़ोरों) में से थे। (राजेअ़ : 1357)

٤٥٨٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ: كُنْتُ أَنَا وَأُمِّي مِنَ الْمُسْتَضْعَفِينَ. [راجع: ١٣٥٧]

उनकी वालिदा का नाम लुबाबा बिन्ते ह़ारिष़ (रज़ि.) था जो ह़ज़रत मैमूना (रज़ि.) की बहन थीं। ये दोनों दिल से मुसलमान हो गये थे मगर मक्का में काफ़िरों के हाथों में फंसे हुए थे, हिजरत नहीं कर सकते थे, उनके बारे में ये आयत नाज़िल हुई।

4588. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने अबी मुलैयका ने कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.)ने आयत 'इल्लल्मुस्तज़्अ़फ़ीन मिनर्रिजालि वन्निसाइ वल्वालिदानि' की तिलावत की और फ़र्माया कि मैं और मेरी वालिदा भी उन लोगों में से थीं, जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने मा'ज़ूर रखा था। और ह़ज़रत

٤٥٨٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ تَلاَ: ﴿إِلاَّ الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ﴾ قَالَ: كُنْتُ أَنَا وَأُمِّي مِمَّنْ عَذَرَ اللهُ. وَيُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ حَصِرَتْ

तशरीह : क़ैस बिन मुस्लिम की दूसरी रिवायत में बिल यक़ीन मज़्कूर है कि वो जुम्आ ही का दिन था। ये आयत हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर नाज़िल हुई थी जो पैग़म्बर (ﷺ) का आख़िरी हज्ज था जिसके तीन माह बाद आप (ﷺ) दुनिया से तशरीफ़ ले गये। हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ये आयत अरफ़ा की शाम को जुम्अे के रोज़ उतरी थी। उसके बाद हलाल हराम का कोई हुक्म नहीं उतरा। आप (ﷺ) की वफ़ात से नौ रात पहले आख़िरी आयत **वत्तक़ू यौमन तुरजऊना फ़ीही इलल्लाह** नाज़िल हुई जिस दिन ये आयत उतरी उस दिन पाँच ईदें जमा थीं। जुम्अे का दिन, अरफ़ा का दिन, यहूद की ईद, नसारा की ईद, मजूस की ईद। इस आयत से उन लोगों को सबक़ लेना चाहिये जो राय और क़यास पर चलते हैं और नस्स को छोड़ते हैं गोया उनके नज़दीक दीन कामिल नहीं हुआ। नऊज़ुबिल्लाह।

बाब 3 : आयत 'फलम् तजिदू माअन फतयम्ममू सइदन तय्यिबा' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب قَوْلِهِ :

﴿فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا﴾ تَيَمَّمُوا تَعَمَّدُوا. آمِّينَ عَامِدِينَ أَمَّمْتُ وَتَيَمَّمْتُ وَاحِدٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَمَسْتُمْ وَتَمَسُّوهُنَّ وَاللاَّتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ، وَالإِفْضَاءُ : النِّكَاحُ.

फिर अगर तुमको पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो, तयम्ममू या'नी तअम्मदु इसीलिये आता है या'नी क़स्द करो आमीन या'नी आमिदीन क़स्र करने वाले अम्ममतु और तयम्ममतु एक ही मा'नी में है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि लमस्तुम, तम्सूहुन्ना, वल्लाती दख़लतुम बिहिन्ना और वल् इफ़्ज़ाऊ सबके मा'नी औरत से हमबिस्तरी करने के हैं।

٤٦٠٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْبَيْدَاءِ - أَوْ بِذَاتِ الْجَيْشِ - انْقَطَعَ عِقْدٌ لِي فَأَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الْتِمَاسِهِ وَأَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ فَأَتَى النَّاسُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ فَقَالُوا: أَلاَ تَرَى مَا صَنَعَتْ عَائِشَةُ أَقَامَتْ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ وَبِالنَّاسِ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ فَجَاءَ أَبُوبَكْرٍ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ وَاضِعٌ رَأْسَهُ عَلَى فَخِذِي قَدْ نَامَ فَقَالَ : حَبَسْتِ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَالنَّاسَ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ

4607. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद क़ासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सफ़र मे हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रवाना हुए। जब हम मुक़ामे बैदा या ज़ातुल जैश तक पहुँचे तो मेरा हार गुम हो गया। इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे तलाश करवाने के लिये वहीं क़याम किया और सहाबा (रज़ि.) ने भी आप (ﷺ) के साथ क़याम किया। वहाँ कहीं पानी नहीं था और सहाबा (रज़ि.) के साथ भी पानी नहीं था। लोग अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास आए और कहने लगे कि, मुलाहिज़ा नहीं फ़र्माते, आइशा (रज़ि.) ने क्या कर रखा है और हुज़ूर (ﷺ) को यहीं ठहरा लिया और हमें भी, हालाँकि यहाँ कहीं पानी नहीं है और न किसी के पास पानी है। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) (मेरे यहाँ) आए। हुज़ूर (ﷺ) सरे मुबारक मेरी रान पर रखकर सो गये थे और कहने लगे तुमने आँहज़रत (ﷺ) को और सबको रोक लिया, हालाँकि यहाँ कहीं पानी नहीं है। और न ही किसी के साथ पानी है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि

أَجفَاتِ الْقِدْرِ: إِذَا غَلَتْ فَعَلاَهَا الزَّبَدُ ثُمَّ تَسْكُنُ فَيَذْهَبُ الزَّبَدُ بِلاَ مَنْفَعَةٍ فَكَذَلِكَ يُمَيِّزُ الْحَقُّ مِنَ الْبَاطِلِ. ﴿الْمِهَادُ﴾ الْفِرَاشُ ﴿يَدْرَؤُونَ﴾: يَدْفَعُونَ دَرَأْتُهُ عَنِّي دَفَعْتُهُ. ﴿سَلاَمٌ عَلَيْكُمْ﴾ : أَيْ يَقُولُونَ : سَلاَمٌ عَلَيْكُمْ. ﴿وَإِلَيْهِ مَتَابِ﴾ تَوْبَتِي. ﴿أَفَلَمْ يَيْأَسِ﴾: لَمْ يَتَبَيَّنْ. ﴿قَارِعَةٌ﴾ : دَاهِيَةٌ. ﴿فَأَمْلَيْتُ﴾ : أَطَلْتُ مِنَ الْمَلِيِّ وَالْمِلاَوَةِ وَمِنْهُ. ﴿مَلِيًّا﴾: وَيُقَالُ لِلْوَاسِعِ الطَّوِيلِ مِنَ الأَرْضِ مَلًى مِنَ الأَرْضِ. ﴿أَشَقُّ﴾ : أَشَدُّ مِنَ الْمَشَقَّةِ. ﴿مُعَقِّبٌ﴾: مُغَيِّرٌ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿مُتَجَاوِرَاتٌ﴾ : طَيِّبُهَا وَخَبِيثُهَا السِّبَاخُ. ﴿صِنْوَانٌ﴾ : النَّخْلَتَانِ : أَوْ أَكْثَرُ فِي أَصْلٍ وَاحِدٍ. ﴿وَغَيْرُ صِنْوَانٍ﴾ : وَحْدَهَا. ﴿بِمَاءٍ وَاحِدٍ﴾ : كَصَالِحِ بَنِي آدَمَ وَخَبِيثِهِمْ أَبُوهُمْ وَاحِدٌ. ﴿السَّحَابَ الثِّقَالَ﴾ : الَّذِي فِيهِ الْمَاءُ. ﴿كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ﴾ : يَدْعُو الْمَاءَ بِلِسَانِهِ وَيُشِيرُ إِلَيْهِ بِيَدِهِ فَلاَ يَأْتِيهِ أَبَدًا. ﴿سَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا﴾ تَمْلأُ بَطْنَ وَادٍ. ﴿زَبَدًا رَابِيًا﴾: زَبَدُ السَّيْلِ: خَبَثُ الْحَدِيدِ وَالْحِلْيَةِ.

हक़ बातिल से इसी तरह जुदा हो जाता है अल्मिदाह बिछौना। यदरून धकेलते हैं दूर करते हैं ये दरातुहू से निकला है या'नी मैंने उसको दूर किया दफ़ा कर दिया। सलाम अलैकुम या'नी फ़रिश्ते मुसलमानों को कहते जाएँगे तुम सलामत रहो। व इलैहि मताब में उसी की दरगाह में तौबा करता हूँ। अ फ़लम यब्अस किया उन्होंने नहीं जाना। क़ारिअत आफ़त मुसीबत। फ़अम्लयता मैंने ढीला छोड़ा मुह्लत दी ये लफ़्ज़ मल्ली और मिलावत से निकला है। उसी से निकला है जो जिब्रईल की हदीष में है। फ़लबिस्तु मलिय्या (या क़ुर्आन में है) वहजुर्नी मलिय्या और कुशादा लम्बी ज़मीन को मल्ली कहते हैं। अशुक्कु अफ़्अलुल तफ़्ज़ील का सैग़ा है मुशक़्क़त से या'नी बहुत सख़्त। मुअक़्क़ब ला मुअक़्क़ब लिहुक्मिही में या'नी नहीं बदलने वाला और मुजाहिद ने कहा। मुतजाविरात का मा'नी ये है कि कुछ क़िट्अे उम्दह क़ाबिले ज़राअत हैं कुछ ख़राब शुर खारे हैं। सिन्वान वो खजूर के पेड़ जिनकी जड़ मिली हुई हो (एक ही जड़ पर खड़े हों) ग़ैरा सिन्वान अलग अलग जड़ पर सब एक ही पानी से उगते हैं (एक ही हवा से एक ही ज़मीन में आदमियों की भी यहो मिषाल है कोई अच्छा कोई बुरा हालाँकि सब एक बाप आदम (अलैहि.) की औलाद हैं। अस्सिहाबुल षिक़ाल वो बादल जिनमें पानी भरा हुआ हो और वो पानी के बोझ से भारी—भरकम हों। कबासिति कफ़्फ़ैहि या'नी उस शख़्स की तरह जो दूर से हाथ फैलाकर पानी को ज़ुबान से बुलाए हाथ से उसकी तरफ़ इशारा करे इस सूरत में पानी कभी उसकी तरफ़ नहीं आएगा। सालत औदियतुन बिकदरिहा या'नी नाले अपने अंदाज़ से बहते हैं। या'नी पानी भरकर ज़ब्दा राबिया से मुराद बहते पानी का फैन झाग ज़बद मिष्लुहू से लोहे, ज़ेवरात वग़ैरह का फैन झाग मुराद है। लफ़्ज़े मुअक़्क़िबात से मुराद ये है कि रात के फ़रिश्ते अलग और दिन के अलग हैं।

जैसे दूसरी हदीष में है कि रात दिन के फ़रिश्ते अस्र और सुबह की नमाज़ में जमा हो जाते हैं। तबरी ने निकाला कि हज़रत उष्मान ने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा आदमी पर कितने फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं। आपने फ़र्माया कि हर आदमी पर दस फ़रिश्ते सुबह को और दस रात को मुतअय्यन रहते हैं।

बाब 1 : आयत 'अल्लाहु यअलमु मा तहमिलु' की तफ़्सीर या'नी,

١ - بَابُ قَوْلِهِ : ﴿اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَى وَمَا تَغِيضُ

अल्लाह को इल्म है उसका जो कुछ किसी मादा के हमल

الأَرْحَامُ﴾ غِيضَ : نُقِصَ

में होता है और जो कुछ उनके रह्म में कमी-बेशी होती रहती है। ग़ीज़ अय नुक़िस कम किया गया।

٤٦٩٧- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ، لاَ يَعْلَمُهَا إِلاَّ اللهُ لاَ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَا تَغِيضُ الأَرْحَامُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى يَأْتِي الْمَطَرُ أَحَدٌ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ. وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ إِلاَّ اللهُ)). [راجع: ١٠٣٩]

4697. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मअ़न बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ग़ैब की पाँच कुँजियाँ हैं जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि कल क्या होने वाला है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि औरतों के रह्म में क्या कमी बेशी होती रहती है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि बारिश कब बरसेगी, कोई शख़्स नहीं जानता कि उसकी मौत कहाँ होगी और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि क़यामत कब क़ायम होगी। (राजेअ : 1039)

तश्रीह : इस आयत से षाबित हुआ कि इल्मे ग़ैब ख़ास अल्लाह के लिये है जो किसी ग़ैर के लिये इल्मे ग़ैब का अक़ीदा रखता है वो झूठा है। पैग़म्बरों को भी इल्मे ग़ैब हासिल नहीं उनको जो कुछ अल्लाह चाहता है वह्य के ज़रिये मा'लूम करा देता है। इसे ग़ैब दानी नहीं कहा जा सकता। हमल की कमी बेशी का मतलब ये है कि पेट में एक बच्चा है या दो बच्चे या तीन या चार।

[١٤] سُورَةُ إِبْرَا...َ عَلَيْهِ الصَّلاَةُ وَالسَّلاَمُ (بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ).

सूरह इब्राहीम की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तश्रीह : सूरह इब्राहीम मक्की है जिसमें बावन (52) आयात सात (7) रुकूअ और 831 कलिमात और 3434 हुरूफ़ हैं। हज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) दुनिया के अ़ज़ीमतरीन तारीख़ी इंसान हैं जिनसे दो बड़े ख़ानदान ज़ुहूर पज़ीर हुए जिनको बनी इस्राईल और बनी इस्माईल से याद किया जाता है। हज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) को आदमे षालिष भी कहा गया है। यहूद और नस़ारा और मुसलमान तीनों इनको अपना जद्दे अमजद (पूर्वज) तस़व्वुर करते हैं।

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ هَادٍ : دَاعٍ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ صَدِيدٌ : قَيْحٌ وَدَمٌ. وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ : اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللهِ عَلَيْكُمْ أَيَادِيَ اللهِ عِنْدَكُمْ وَأَيَّامَهُ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ رَغِبْتُمْ إِلَيْهِ فِيهِ، يَبْغُونَهَا عِوَجًا : يَلْتَمِسُونَ لَهَا عِوَجًا. وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ : أَعْلَمَكُمْ آذَنَكُمْ. رَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा हाद का मा'नी बुलाने वाला, हिदायत करने वाला (नबी व रसूल मुराद हैं) और मुजाहिद ने कहा स़दीद का मा'नी पीप और लहू और सुफ़यान बिन उ़ययना ने कहा उज़्कुरू निअ़मतल्लाहि अ़लैकुम का मा'नी ये है कि अल्लाह की जो नेअ़मतें तुम्हारे पास हैं उनको याद करो और जो जो अगले वाक़ियात उसकी क़ुदरत के हुए हैं और मुजाहिद ने कहा मिन कुल्लि मा सअल्तुमूहु का मा'नी ये है कि जिन जिन चीज़ों की तुमने रग़बत की यब्ग़ूनहा इवजा इसमें कजी पैदा करने की तलाश करते रहते हैं वइज़ तअज़्ज़ना

4721. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने, कहा हमसे आ'मश ने, कहा कि मुझसे इब्राहीम नख़ई ने बयान किया, उनसे अ़ल्क़मा ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक खेत में हाज़िर था। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त खजूर के एक तने पर टेक लगाये हुए थे कि कुछ यहूदी उस त़रफ़ से गुज़रे। किसी यहूदी ने अपने दूसरे साथी से कहा कि इनसे रूह़ के बारे में पूछो। उनमें से किसी ने इस पर कहा कि ऐसा क्यूँ करते हो? दूसरा यहूदी बोला, कहीं वो कोई ऐसी बात न कह दें, जो तुमको नापसंद हो राय इस पर ठहरी कि रूह़ के बारे में पूछना ही चाहिये। चुनाँचे उन्होंने आपसे इसके बारे में सवाल किया। आँह़ज़रत (ﷺ) थोड़ी देर के लिये खामोश हो गये और उनकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। मैं समझ गया कि इस वक़्त आप (ﷺ) पर वह्य उतर रही है। इसलिये मैं वहीं खड़ा रहा। जब वह्य ख़त्म हुई तो आप (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की, और ये आपसे रूह़ के बारे में सवाल करते हैं। आप कह दें कि रूह़ मेरे परवरदिगार के हुक्म ही से है और तुम्हें इ़ल्म तो थोड़ा ही दिया गया है। (राजेअ़ : 125)

٤٧٢١- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا أَنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَرْثٍ وَهُوَ مُتَّكِىءٌ عَلَى عَسِيبٍ، إِذْ مَرَّ الْيَهُودُ فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: سَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ؟ فَقَالَ: مَا رَابَكُمْ إِلَيهِ؟ وَقَالَ بَعْضُهُمْ لاَ يَسْتَقْبِلُكُمْ بِشَيْءٍ تَكْرَهُونَهُ فَقَالُوا سَلُوهُ فَسَأَلُوهُ عَنِ الروحِ فَأَمْسَكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِمْ شَيئًا فَعَلِمْتُ أَنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ فَقُمت مَقَامِي فَلَمَّا نَزَلَ الْوَحْيُ قَالَ: ﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً﴾.

[راجع: ١٢٥]

तश्रीह : रूह़ को अम्रे रब या'नी परवरदिगार का हुक्म फ़र्माया और उसकी ह़क़ीक़त बयान नहीं की क्योंकि अगले पैग़म्बरों ने भी उसकी ह़क़ीक़त बयान नहीं की और यहूदियों ने बाहम यही कहा कि अगर रूह़ की ह़क़ीक़त बयान न करें तो ये बेशक पैग़म्बर है। अगर बयान करें तो हम समझ लेंगे कि ह़कीम हैं पैग़म्बर नहीं। इब्ने कष़ीर ने कहा रूह़ एक माद्दा है लत़ीफ़ हवा की त़रह और बदन के हर जुज़ में इस त़रह ह़ुलूल किये हुए है जैसे पानी हरी भरी शाख़ों में। ये रूहे ह़ैवानी की ह़क़ीक़त है और रूहे इंसानी या'नी नफ़्से नात़िक़ा वो बदन से मुता'ल्लिक़ है हुक्मे इलाही से जब मौत आती है तो ये ता'ल्लुक़ टूट जाता है। तफ़्सील के लिये ह़ज़रत इमाम इब्ने क़य्यिम (रह़) की किताबुर्रूह़ का मुत़ालआ़ किया जाए। सनद में मज़्कूर अ़ल्क़मा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के आज़ादकर्दा गुलाम हैं। अनस बिन मालिक (रज़ि.) और अपनी वालिदा से रिवायत करते हैं। उनसे मालिक बिन अनस (रज़ि.) और सुलैमान बिन हिलाल ने रिवायत की है।

बाब 14 : आयत 'व ला तज्हर बिस़लातिक' की तफ़्सीर या'नी,

١٤- باب قوله ﴿وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾

और आप नमाज़ में न तो बहुत पुकारकर पढ़ें और न (बिल्कुल) चुपके ही चुपके पढ़ें।

فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ أَوْ يُنَصِّرَانِهِ أَوْ يُمَجِّسَانِهِ، كَمَا تُنْتَجُ الْبَهِيمَةُ بَهِيمَةً جَمْعَاءَ، هَلْ تُحِسُّونَ فِيهَا مِنْ جَدْعَاءَ؟ ثُمَّ يَقُولُ: ﴿فِطْرَةَ اللهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا، لاَ تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللهِ، ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ﴾)).

[راجع: ١٣٥٨]

नसरानी या मजूसी बना लेते हैं। उसकी मिसाल ऐसी है जैसी जानवर का बच्चा सहीह सालिम पैदा होता है क्या तुमने उन्हें नाक कान कटा हुआ कोई बच्चा देखा है। उसके बाद आपने इस आयत की तिलावत की, अल्लाह की इस फ़ितरत का इत्तिबाअ करो जिस पर उसने इंसान को पैदा किया है, अल्लाह की बनाई हुई फ़ितरत में कोई तब्दीली मुम्किन नहीं। यही सीधा दीन है। (राजेअ: 1358)

[٣١] سُورَةُ لُقْمَانَ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सूरह लुक़्मान की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मक्की है। इसमें तीस आयात और तीन रुकूअ हैं।

١- باب قوله ﴿لاَ تُشْرِكْ بِاللهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾

बाब 1 : आयत 'ला तुश्रिक बिल्लाहि' की तफ़्सीर

या'नी अल्लाह का शरीक न ठहरा, बेशक शिर्क करना बहुत बड़ा ज़ुल्म है।

٤٧٧٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ ﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ شَقَّ ذَلِكَ عَلَى أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَقَالُوا: أَيُّنَا لَمْ يَلْبِسْ إِيمَانَهُ بِظُلْمٍ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّهُ لَيْسَ بِذَاكَ، أَلاَ تَسْمَعُ إِلَى قَوْلِ لُقْمَانَ لاِبْنِهِ ﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾)).

[راجع: ٣٢]

4776. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत, जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान के साथ ज़ुल्म की मिलावट नही की, नाज़िल हुई तो अस्हाबे रसूल (ﷺ) बहुत घबराए और कहने लगे कि हम में कौन ऐसा होगा जिसने अपने ईमान के साथ ज़ुल्म की मिलावट नहीं की होगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि आयत में ज़ुल्म से ये मुराद नहीं है। तुमने लुक़्मान (अलैहि.) की वो नसीहत नहीं सुनी जो उन्होंने अपने बेटे को की थी कि, बेशक शिर्क करना बड़ा भारी ज़ुल्म है। (राजेअ: 32)

٢- باب قَوْلِهِ : ﴿إِنَّ اللهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾

बाब 2 : आयत 'इन्नल्लाह इन्दहू इल्मुस्साअति' की तफ़्सीर

या'नी क़यामत (के वाक़ेअ होने की तारीख़) की ख़बर सिर्फ़ अल्लाह पाक ही को है।

٤٧٧٧- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ عَنْ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِي حَيَّانَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

4777. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे जरीर ने, उनसे अबू हय्यान ने, उनसे अबू ज़ुरआ ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह

है तअज्जुबम्मिन्ना कालहुल्लिहब्रू व तस्दीक़ल्लहू मा मिन क़ल्बिन इल्ला व हुव बैन इस्बअ़यनि मिन अस़ाबिइर्रहमान अतानिल्लैलत रब्बी फ़ी अहसिन सूरतिन फवज़अ यदहू बैन कतफ़य हत्ता वजत्तु बुर्द अनामिलिही बैन षदई अनामिल उँगलियों की पोरें। ग़र्ज़ उँगलियों का इष्बात परवरदिगार के लिये ऐसा ही है जैसे वज्हुन और यदैनि और क़दमुन और रज्लुन और जम्बुन वग़ैरह का और अहले हृदीष़ का अ़क़ीदा उनकी निस्बत ये है कि ये सब अपने मा'नी ज़ाहिरी पर मह़मूल हैं लेकिन उनकी ह़क़ीक़त अल्लाह ही जानता है और मुतकल्लिमीन उन चीज़ों की तावील करते हैं क़ुदरत वग़ैरह से। मैं कहता हूँ मुहम्मद बिन सल्त रावी ने इस ह़दीष़ के रिवायत करते वक़्त छुँगलिया की तरफ़ इशारा किया फिर पास वाली उँगली की तरफ़ फिर उसके पास वाली उँगली की तरफ़, यहाँ तक कि अंगूठे तक पहुँचे और उससे अहले तावील का मज़हब रद्द होता है। (वह़ीदी)

बाब आयत 'वल्अर्ज़ु जमीअन क़बज़्तुहू यौमल्क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुन बियमीनिही सुब्हानहू व तआला अम्मा युश्रिकून' की तफ़्सीर,

باب ﴿وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾.

4812. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ालिद बिन मुसाफ़िर ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अबू सलमा और ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना आप फ़र्मा रहे थे कि क़यामत के दिन अल्लाह सारी ज़मीन को अपनी मुट्ठी में लेगा और आसमान को अपने दाहिने हाथ में लपेट लेगा। फिर फ़र्माएगा, आज हुकूमत सिर्फ़ मेरी है। दुनिया के बादशाह आज कहाँ हैं? (दीगर मक़ाम : 6519, 7382, 7413)

٤٨١٢- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدِ بْنِ مُسَافِرٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((يَقْبِضُ اللهُ الأَرْضَ، وَيَطْوِي السَّمَاوَاتِ بِيَمِينِهِ، ثُمَّ يَقُولُ : أَنَا الْمَلِكُ، أَيْنَ مُلُوكُ الأَرْضِ؟)).

[أطرافه في : ٦٥١٩، ٧٣٨٢، ٧٤١٣].

बाब 4 : आयत 'व नुफ़िख़ फिस्सूरि फ़सइक़ मन फिस्समावात' की तफ़्सीर में,

٤- باب قَوْلِهِ:

﴿وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الأَرْضِ إِلاَّ مَنْ شَاءَ اللهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ﴾.

और सूर फूँका जाएगा तो सब बेहोश हो जाएँगे जो आसमानों और ज़मीनों में हैं सिवा उसके जिसको अल्लाह चाहे, फिर दोबारा सूर फूँका जाएगा तो फिर अचानक सबके सब देखते हुए उठ खड़े होंगे।

4813. मुझसे ह़सन ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रहीम ने ख़बर दी, उन्हें ज़करिया बिन अबी ज़ायदा ने, उन्हें आ़मिर ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आख़िरी मर्तबा सूर फूँके जाने के बाद सबसे पहले अपना सर

٤٨١٣- حدثني الْحَسَنُ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ خَلِيلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحِيمِ عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ عَامِرٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ

उठाने वाला मैं होऊँगा लेकिन उस वक़्त मैं हज़रत मूसा (अलैहि.) को देखूँगा कि अर्श के साथ लिपटे हुए हैं, अब मुझे नहीं मा'लूम कि वो पहले ही से इसी तरह थे या दूसरे सूर के बाद (मुझसे पहले उठकर अर्शे इलाही को थाम लेंगे) (राजेअ : 2411)

قَالَ: ((إِنِّي أَوَّلُ مَنْ يَرْفَعُ رَأْسَهُ بَعْدَ النَّفْخَةِ الآخِرَةِ، فَإِذَا أَنَا بِمُوسَى مُتَعَلِّقٌ بِالْعَرْشِ فَلاَ أَدْرِي، أَكَذَلِكَ كَانَ أَمْ بَعْدَ النَّفْخَةِ)). [راجع: ٢٤١١]

4814. हमसे उमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने अबू सालेह से सुना और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, दोनों सूरों के फूँके जाने का दरम्यानी अर्सा चालीस है। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के शागिर्दों ने पूछा, क्या चालीस दिन मुराद हैं? उन्होंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं फिर उन्होंने पूछा चालीस साल? उस पर भी उन्होंने इंकार किया। फिर उन्होंने पूछा चालीस महीने? उसके बारे में भी उन्होंने कहा कि मुझको ख़बर नहीं और हर चीज़ फ़ना हो जाएगी, सिवा रीढ़ की हड्डी के कि उसी से सारी मख़्लूक़ दोबारा बनाई जाएगी। (दीगर मक़ाम : 4935)

٤٨١٤- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي. قَالَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا صَالِحٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَ النَّفْخَتَيْنِ أَرْبَعُونَ))، قَالُوا: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ أَرْبَعُونَ يَوْمًا؟ قَالَ أَبَيْتُ قَالَ: أَرْبَعُونَ سَنَةً قَالَ أَبَيْتُ قَالَ: أَرْبَعُونَ شَهْرًا: قَالَ أَبَيْتُ، وَيَبْلَى كُلُّ شَيْءٍ مِنَ الإِنْسَانِ إِلاَّ عَجْبَ ذَنَبِهِ فِيهِ يُرَكَّبُ الْخَلْقُ.

[طرفه في : ٤٩٣٥].

इस रिवायत में यूँ ही है लेकिन इब्ने मर्वदवैह की रिवायत में चालीस साल मज़्कूर हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से भी ऐसा ही मन्क़ूल है। हलीमी ने कहा अक्सर रिवायतें इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि दोनों नफ़्ख़ों में चालीस बरस का फ़ासला होगा।

सूरतुल मोमिन

[٤٠] سورة ﴿الْمُؤْمِنُ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा हामीम का मा'नी अल्लाह को मा'लूम है जैसे दूसरी सूरतों में जो हुरूफ़े मुक़त्तआत शुरू में आए हैं उनके बारे मे हक़ीक़ी मआनी सिर्फ़ अल्लाह ही को मा'लूम हैं। कुछ ने कहा हामीम क़ुर्आन या सूरत का नाम है जैसे शुरैह इब्ने अबी औफ़ा अब्सी इस शेअर में कहता है जबकि नेज़ा जंग में चलने लगा। पढ़ता है हामीम पहले पढ़ना था। अत्तौल के मा'नी एहसान और फ़ज़्ल करना। दाख़िरीन के मा'नी ज़लील व ख़्वार होकर। हज़रत मुजाहिद (रह) ने कहा उदऊकुम इलन्नजात से ईमान मुराद है। लयसा लहू दअवह या'नी बुत किसी की दुआ क़ुबूल नहीं कर सकता। यस्जरून के मा'नी वो दोज़ख़ के ईंधन बनेंगे। तम्रहून के मा'नी तुम इतराते थे। और अलाअ बिन ज़ियाद

قَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿حم﴾ مَجَازُهَا مَجَازُ أَوَائِلِ السُّوَرِ، وَيُقَالُ: بَلْ هُوَ اسْمٌ لِقَوْلِ شُرَيْحِ بْنِ أَبِي أَوْفَى الْعَبْسِيِّ.

يُذَكِّرُنِي حَامِيمَ وَالرُّمْحُ شَاجِرٌ
فَهَلاَّ تَلاَ حَامِيمَ قَبْلَ التَّقَدُّمِ

الطَّوْلُ: التَّفَضُّلُ. دَاخِرِينَ خَاضِعِينَ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿إِلَى النَّجَاةِ﴾ الإِيمَانِ. لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ يَعْنِي الْوَثَنَ. ﴿يُسْجَرُونَ﴾ تُوقَدُ بِهِمُ النَّارُ ﴿تَمْرَحُونَ﴾ تَبْطَرُونَ. وَكَانَ

रोये। आँहज़रत (ﷺ) से तुमने तीन मर्तबा सवाल में इसरार किया, लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने तुम्हें किसी मर्तबा जवाब नहीं दिया। हज़रत उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने अपने ऊँट को हरकत दी और लोगों से आगे बढ़ गया। मुझे डर था कि कहीं मेरे बारे में क़ुर्आन मजीद की कोई आयत न नाज़िल हो। अभी थोड़ी देर ही हुई थी कि एक पुकारने वाले की आवाज़ मैंने सुनी जो मुझे ही पुकार रहा था। मैंने कहा कि मुझे तो डर था ही कि मेरे बारे में कोई आयत न नाज़िल हो जाए। मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सलाम किया, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मुझ पर आज रात एक सूरत नाज़िल हुई है जो मुझे इस सारी कायनात से ज़्यादा अज़ीज़ है जिस पर सूरज तुलूअ होता है फिर आपने सूरह फ़तह की तिलावत फ़र्माई। (राजेअ: 4177)

الْخَطَّابِ: ثَكِلَتْ أُمُّ عُمَرَ نَزَرْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ كُلُّ ذَلِكَ لاَ يُجِيبُكَ، قَالَ عُمَرُ: فَحَرَّكْتُ بَعِيرِي ثُمَّ تَقَدَّمْتُ أَمَامَ النَّاسِ وَخَشِيتُ أَنْ يُنْزَلَ فِيَّ الْقُرْآنُ فَمَا نَشِبْتُ أَنْ سَمِعْتُ صَارِخًا يَصْرُخُ بِي فَقُلْتُ لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ يَكُونَ نَزَلَ فِيَّ قُرْآنٌ، فَجِئْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: ((لَقَدْ أُنْزِلَتْ عَلَيَّ اللَّيْلَةَ سُورَةٌ لَهِيَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ. ثُمَّ قَرَأَ: ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا﴾)). [راجع: ٤١٧٧]

4834. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने क़तादा से सुना और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि सूरह फ़तह सुलह हुदैबिया के बारे में नाज़िल हुई। (राजेअ: 4182)

٤٨٣٤ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا﴾ قَالَ: الْحُدَيْبِيَةُ.
[راجع: ٤١٧٢]

4835. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन क़ुर्रह ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़तह मक्का के दिन सूरह फ़तह ख़ूब ख़ुश इल्हानी से पढ़ी। मुआविया बिन क़ुर्रह ने कहा कि अगर मैं चाहूँ कि तुम्हारे सामने आँहज़रत (ﷺ) की इस मौक़े पर तर्ज़े क़िरात की नक़ल करूँ तो कर सकता हूँ। (राजेअ: 4281)

٤٨٣٥ - حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ قُرَّةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ قَالَ: قَرَأَ النَّبِيُّ ﷺ، يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ سُورَةَ الْفَتْحِ فَرَجَّعَ فِيهَا، قَالَ مُعَاوِيَةُ: لَوْ شِئْتُ أَنْ أَحْكِيَ لَكُمْ قِرَاءَةَ النَّبِيِّ ﷺ لَفَعَلْتُ. [راجع: ٤٢٨١]

बाब 2 : आयत 'लियग़्फ़िरुल्लाहु लकल्लाहु मा तक़द्दम मिन ज़म्बिक व मा तअख़्ख़र' की तफ़्सीर

٢- باب

या'नी, ताकि अल्लाह आपकी सब अगली पिछली ख़ताएँ मुआफ़ कर दे और आप पर एहसानात की तकमील कर दे और आपको सीधे रास्ते पर ले चले।

﴿لِيَغْفِرَ لَكَ اللهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا﴾.

4836. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, उन्हें इब्ने ज़ुयैना ने ख़बर दी, उनसे ज़ियाद ने बयान किया और उन्होंने मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ मे रात भर खड़े रहे यहाँ तक कि आपके दोनों पैर सूज गये। आपसे अर्ज़ किया गया कि अल्लाह तआला ने तो आपकी अगली पिछली तमाम ख़ताएँ मुआफ़ कर दी हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ? (राजेअ: 1130)

٤٨٣٦- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، حَدَّثَنَا زِيَادٌ أَنَّهُ سَمِعَ الْمُغِيرَةَ يَقُولُ: قَامَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى تَوَرَّمَتْ قَدَمَاهُ، فَقِيلَ لَهُ غَفَرَ اللهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ؟ قَالَ: ((أَفَلاَ أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا)). [راجع: ١١٣٠]

4837. हमसे हसन बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन यह्या ने बयान किया, उन्हें हयवह ने ख़बर दी, उन्हें अबुल अस्वद ने, उन्होंने उर्वा से सुना और उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) रात की नमाज़ में इतना लम्बा क़याम करते कि आपके क़दम फट जाते। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने एक बार अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप इतनी ज़्यादा मुशक़्क़त क्यूँ उठाते हैं। अल्लाह तआला ने तो आपकी अगली पिछली सारी ख़ताएँ मुआफ़ कर दी हैं। आपने फ़र्माया क्या फिर मैं शुक्रगुज़ार बन्दा बनना पसंद न करूँ। उम्र की आख़िरी हिस्सा में (जब लम्बा क़याम दुश्वार हो गया तो) आप बैठकर रात की नमाज़ पढ़ते और जब रुकूअ का वक़्त आता तो खड़े हो जाते (और तक़रीबन तीस या चालीस आयतें और पढ़ते) फिर रुकूअ करते। (राजेअ: 1118)

٤٨٣٧- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا حَيْوَةُ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ سَمِعَ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: أَنَّ نَبِيَّ اللهِ كَانَ يَقُومُ مِنَ اللَّيْلِ حَتَّى تَتَفَطَّرَ قَدَمَاهُ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ: لِمَ تَصْنَعُ هَذَا يَا رَسُولَ اللهِ وَقَدْ غَفَرَ اللهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ؟ قَالَ: ((أَفَلاَ أُحِبُّ أَنْ أَكُونَ عَبْدًا شَكُورًا)). فَلَمَّا كَثُرَ لَحْمُهُ صَلَّى جَالِسًا فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ قَامَ فَقَرَأَ ثُمَّ رَكَعَ. [راجع: ١١١٨]

बाब 3 : आयत 'इन्ना अर्सल्नाक शाहिदव्वं मुबश्शिरंव्वनज़ीरा' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب قوله ﴿إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا﴾

4838. हमसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी सलमा ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अबी हिलाल ने, उनसे अता बिन यसार ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ने कि ये आयत जो क़ुर्आन में है, ऐ नबी! बेशक मैंने आपको गवाही देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। तो आँहज़रत (ﷺ) के बारे में यही अल्लाह तआला ने तोरियत मे भी फ़र्माया था, ऐ नबी! बेशक हमने आपको गवाही देने वाला और बशारत देने वाला और अनपढ़ों (अरबों) की हिफ़ाज़त करने वाला बनाकर भेजा है। आप मेरे

٤٨٣٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ هَذِهِ الآيَةَ الَّتِي فِي الْقُرْآنِ ﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا﴾ قَالَ فِي التَّوْرَاةِ: يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ

(हमज़ाद) मुराद है जो हर आदमी के साथ लगा हुआ है फ़नक़्क़बू फ़िल् बिलाद या'नी शहरों में फिरे दौरा किया। अव अल्क़स् सम्अ का ये मत़लब है कि दिल में दूसरा कुछ ख़्याल न करे कान लगाकर सुने अफ़अययना बिल ख़ल्क़िल् अव्वल या'नी जब तुमको शुरू में पैदा किया तो क्या उसके बाद हम आजिज़ बन गये अब दोबारा पैदा नहीं कर सकते? साइक़ु और शहीदा दो फ़रिश्ते हैं एक लिखने वाला दूसरा गवाह। शहीद से मुराद ये है कि दिल लगाकर सुने। लुग़ूब थकन। मुजाहिद के सिवा ओरों ने कहा नज़ीद वो गाभा है, जब तक वो पत्तों के ग़िलाफ़ में छिपा रहे। नज़ीदा उसको इसलिये कहते हैं कि वो तह ब तह होता है जब पेड़ का गाभा ग़िलाफ़ से निकल आए तो फिर उसको नज़ीद नहीं कहेंगे। अदबारन् नुजूम (जो सूरह तूर में है) और अदबारस्सुजूद जो इस सूरत में है। तो आसिम सूरह क़ाफ़ मे (अदबार को) बरफ़त्हा अलिफ़ और सूरह तूर में बकसरा अलिफ़ पढ़ते हैं। कुछ ने दोनों जगह बकसरा अलिफ़ पढ़ा है कुछ ने दोनों जगह बर फ़त्ह अलिफ़ पढ़ा है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा यौमल ख़ुरूज से वो दिन मुराद है जिस दिन क़ब्रों से निकलेंगे।

عَلَيْنَا. ﴿وَقَالَ قَرِينُهُ﴾ الشَّيْطَانُ الَّذِي قُيِّضَ لَهُ. ﴿فَنَقَّبُوا﴾ ضَرَبُوا. ﴿أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ﴾ لاَ يُحَدِّثُ نَفْسَهُ بِغَيْرِهِ. ﴿حِينَ أَنْشَأَكُمْ﴾ وَأَنْشَأَ خَلْقَكُمْ. ﴿رَقِيبٌ عَتِيدٌ﴾ رَصَدٌ. ﴿سَائِقٌ وَشَهِيدٌ﴾ الْمَلَكَانِ ﴿كَاتِبٌ وَشَهِيدٌ﴾. شَهِيدٌ شَاهِدٌ بِالْقَلْبِ. ﴿لُغُوبٍ﴾ النَّصَبُ. وَقَالَ غَيْرُهُ : نَضِيدٌ الْكُفُرَّى مَا دَامَ فِي أَكْمَامِهِ وَمَعْنَاهُ مَنْضُودٌ بَعْضُهُ عَلَى بَعْضٍ فَإِذَا خَرَجَ مِنْ أَكْمَامِهِ فَلَيْسَ بِنَضِيدٍ. فِي أَدْبَارِ النُّجُومِ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ، كَانَ عَاصِمٌ يَفْتَحُ الَّتِي فِي ق وَيَكْسِرُ الَّتِي فِي الطُّورِ وَيُكْسَرَانِ جَمِيعًا وَيُنْصَبَانِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : يَوْمَ الْخُرُوجِ يَخْرُجُونَ مِنَ الْقُبُورِ.

तश्रीह : सूरह क़ाफ़ मक्की है जिसमें 45 आयात और तीन रुकूअ हैं जिन सूरतों को मुफ़स्सल की सूरत कहा जाता है। उनमें से पहली सूरत यही है आँहज़रत (ﷺ) नमाज़े ईदैन की पहली रकअत में ज़्यादातर सूरह सूरह क़ाफ़ और दूसरी रकअत में सूरह इक़्तरबतिस्साअत पढ़ा करते थे। जुम्आ के ख़ुत्बा में ज़्यादातर आपका उन्वान यही मुबारक सूरत हुआ करती थी। मुश्रिकीने मक्का को क़यामत और हश्र अज्साद में सख़्त इंकार था उनके जवाब में ये सूरह शरीफ़ा नाज़िल हुई।

बाब 1 : आयत 'व तक़ूलु हल मिम्मज़ीद' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب قَوْلِهِ : ﴿وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ﴾

अल्लाह का इर्शाद, और वो जहन्नम कहेगी कि कुछ और भी है।

4848. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी अल अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे हरमी ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जहन्नम में दोज़ख़ियों को डाला जाएगा और वो कहे कि कुछ और भी है? यहाँ तक कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपना क़दम उस पर रखेगा और वो कहेगी कि बस बस। (दीगर मक़ाम : 1343, 6661)

٤٨٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا حَرَمِيٌّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يُلْقَى فِي النَّارِ، وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ، حَتَّى يَضَعَ قَدَمَهُ فَتَقُولُ : قَطْ قَطْ)).

[طرفاه في : ٦٦٦١، ١٣٨٤].

4849. हमसे मुहम्मद बिन मूसा क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे अबू सुफ़यान हिम्यरी सईद बिन यह्या बिन मह्दी ने बयान किया, उनसे औफ़ ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से अबू सुफ़यान हिम्यरी अकष़र इस हदीष़ को आँहज़रत (ﷺ) से मौक़ूफ़न ज़िक्र करते थे कि जहन्नम से पूछा जाएगा तू भर भी गई? वो कहेगी कि कुछ और भी है? फिर अल्लाह तबारक व तआला अपना क़दम उस पर रखेगा और कहेगी कि बस बस।

(दीगर मक़ाम : 7449, 4750)

٤٨٤٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُوسَى الْقَطَّانُ، حَدَّثَنَا أَبُو سُفْيَانَ الْحِمْيَرِيُّ سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَفَعَهُ، وَأَكْثَرُ مَا كَانَ يُوقِفُهُ أَبُو سُفْيَانَ يُقَالُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلأْتِ؟ وَتَقُولُ : هَلْ مِنْ مَزِيدٍ؟ فَيَضَعُ الرَّبُّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَدَمَهُ عَلَيْهَا فَتَقُولُ : قَطْ قَطْ. [طرفاه في : ٤٨٥٠، ٧٤٤٩].

तश्रीह : क़स्तलानी (रह) ने इस मुक़ाम पर पिछले मुतकल्लिमीन की पैरवी से तावील की है और कहा है क़दम रखने से इसका ज़लील करना मुराद है या किसी मख़्लूक़ का क़दम मुराद है। अहले हदीष़ इस क़िस्म की तावीलें नहीं करते बल्कि क़दम और रिज्ल को इसी तरह तस्लीम करते हैं जैसे समअ और बस़र और ऐन और वज्ह वग़ैरह को और इब्ने फ़ौरक ने ला इल्मी से रिज्ल का इंकार किया और कहा रिज्ल का लफ़्ज़ ष़ाबित नहीं है हालाँकि सहीहैन की रिवायत में रिज्ल का लफ़्ज़ भी मौजूद है। इन हदीष़ों से जहमियों की जान निकलती है और अहले हदीष़ को हयाते ताज़ा हासिल होती है। (वहीदी)

व क़ाल मुहियुस्सुन्नति अव तक़ूलु हल मिम्मज़ीद अल्क़दमु वरिज्लु फी हाज़ल्हदीषि मिन सिफ़ातिल्लाहि तआला फ़ल्ईमानु बिहा फर्ज़ुन वल्इम्तिनाउ अनिल्खौज़ि फ़ीहा वाजिबुन फल्मुहतदी मन सलक फीहिमा तरीक़त्तस्लीम व इन्नमा नस़्सुन फ़ीहा ज़ाइउन वल्मुन्करू मुअत्तलुन वल्मुकीफ़ु मुशब्बहुन लैस कमिष्लिही शैउन

4850. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जन्नत और दोज़ख़ ने बहष़ की, दोज़ख़ ने कहा मैं मुतकब्बिरों और ज़ालिमों के लिये ख़ास की गई हूँ। जन्नत ने कहा मुझे क्या हुआ कि मेरे अंदर स़िर्फ़ कमज़ोर और कम रुत्बा वाले लोग दाख़िल होंगे। अल्लाह तआला ने इस पर जन्नत से कहा कि तू मेरी रहमत है, तेरे ज़रिया में अपने बन्दो मे जिस पर चाहूं रह्म करूँ और दोज़ख़ से कहा कि तू अज़ाब है तेरे ज़रिये में अपने बन्दों मे से जिसे चाहूँ अज़ाब दूँ। जन्नत और दोज़ख़ दोनों भरेंगी। दोज़ख़ तो उस वक़्त तक नहीं भरेगी। जब तक अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपना क़दम उस पर नहीं रख देगा। उस वक़्त वो बोलेगी कि बस बस बस! और उस वक़्त भर जाएगी और उसका कुछ हिस़्सा कुछ दूसरे हिस़्से पर चढ़ जाएगा और अल्लाह तआला अपने बन्दों में से किसी पर भी ज़ुल्म नहीं करेगा और जन्नत के

٤٨٥٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((تَحَاجَّتِ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ، فَقَالَتِ النَّارُ: أُوثِرْتُ بِالْمُتَكَبِّرِينَ وَالْمُتَجَبِّرِينَ، وَقَالَتِ الْجَنَّةُ: مَا لِي لاَ يَدْخُلُنِي إِلاَّ ضُعَفَاءُ النَّاسِ وَسَقَطُهُمْ؟ قَالَ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى : لِلْجَنَّةِ أَنْتِ رَحْمَتِي أَرْحَمُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي، وَقَالَ لِلنَّارِ: إِنَّمَا أَنْتِ عَذَابٌ أُعَذِّبُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي. وَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مِلْؤُهَا، فَأَمَّا النَّارُ فَلاَ تَمْتَلِىءُ، حَتَّى يَضَعَ رِجْلَهُ فَتَقُولُ: قَطْ قَطْ قَطْ فَهُنَالِكَ تَمْتَلِىءُ

ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़िर्रा बिन हबीश से सुना और उन्होंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से आयत फ़काना क़ाबा क़ौसैनि औ अदना या'नी सिर्फ़ दो कमानों का फ़ासला रह गया था बल्कि और भी कम। फिर अल्लाह ने अपने बन्दे पर वह्य नाज़िल की जो कुछ भी नाज़िल किया, के बारे में बयान किया कि हमसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) को उनकी अस़्ल सूरत में देखा था उनके छः सौ पर थे। (राजेअ़ : 3232)

الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ زِرًّا عَنْ عَبْدِ اللهِ ﴿فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى﴾ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ مَسْعُودٍ أَنَّهُ رَأَى جِبْرِيلَ لَهُ سِتُّمِائَةِ جَنَاحٍ.

[راجع: ٣٢٣٢]

बाब 'क़ौलुहू फ़औहा इला अ़ब्दिही मा औहा' की तफ़्सीर या'नी,

باب قَوْلِهِ ﴿فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى﴾

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे की त़रफ़ वह्य की जो भी वह्य की।

4857. हमसे त़ल्क़ बिन ग़न्नाम ने बयान किया, उनसे ज़ायदा बिन क़ुदामा कूफ़ी ने बयान किया, उनसे सुलैमान शैबानी ने बयान किया कि मैंने ज़िर्र बिन हुबैश से इस आयत के बारे में पूछा फ़कान क़ाब क़वसैन अल्अख़ या'नी सो दो कमानों का फ़ास़ला रह गया बल्कि और भी कम। फिर अल्लाह ने अपने बन्दे पर वह्य नाज़िल की जो कुछ भी नाज़िल किया तो उन्होंने बयान किया कि हमें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि) को देखा था जिनके छः सौ पर थे। (राजेअ़ : 3232)

٤٨٥٧- حَدَّثَنَا طَلْقُ بْنُ غَنَّامٍ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ قَالَ: سَأَلْتُ زِرًّا عَنْ قَوْلِهِ تَعَالَى ﴿فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى﴾ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَنَّ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى جِبْرِيلَ لَهُ سِتُّمِائَةِ جَنَاحٍ.

[راجع: ٣٢٣٢]

तश्रीह : तो फ़ओहा इला अ़ब्दिही वमा औहा में अ़ब्दुहू की ज़मीर अल्लाह की त़रफ़ फिरेगी और फ़ओहा की ज़मीर हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि) की त़रफ़ क़रीन-ए-कलाम भी उसी को मुक़्तज़ा है क्योंकि शदीदुल क़ुवा और ज़ुमिर्रत ये हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि) के सिफ़ात हैं कुछ ने कहा ख़ुद परवरदिगार मुराद है इस सूरत में औहा और अ़ब्दहू दोनों की ज़मीर अल्लाह की त़रफ़ लौटेंगी।

बाब 'क़ौलुहू राअ मिन आयति रब्बिहिल्कुबरा' की तफ़्सीर या'नी,

باب قوله ﴿لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى﴾

तहक़ीक़ आँहुज़ूर (ﷺ) ने अपने रब की बड़ी बड़ी निशानियों को देखा।

4858. हमसे क़बीस़ा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने आयत लक़द रआ मिन आयाति रब्बिहिल्कुबरा या'नी आपने अपने रब की अ़ज़ीम निशानियाँ

٤٨٥٨- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ﴿لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى﴾ قَالَ: رَأَى رَفْرَفًا أَخْضَرَ قَدْ سَدَّ الأُفُقَ.

[راجع: ٣٢٣٢]

يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ قَاتَلَهُمُ اللهُ أَنَّى يُؤْفَكُونَ﴾.

हैं, जब वो बातें करते हैं तो तू उनकी बात सुनता है गोया वो बहुत बड़ी लकड़ी के खम्बे हैं जिनके साथ लोग तकिया लगाते हैं, हर एक ज़ोरदार आवाज़ को अपने ही बरख़िलाफ़ जानते हैं पस तुम ऐ नबी! इन दुश्मनों से बचते रहो। इन पर अल्लाह की मार हो कहाँ को बहके जाते हैं।

٤٩٠٣- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ قَالَ : خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ أَصَابَ النَّاسَ فِيهِ شِدَّةٌ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ لأَصْحَابِهِ: لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى يَنْفَضُّوا مِنْ حَوْلِهِ، وَقَالَ : لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَأَرْسَلَ إِلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ فَسَأَلَهُ، فَاجْتَهَدَ يَمِينَهُ مَا فَعَلَ قَالُوا كَذَبَ زَيْدٌ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَقَعَ فِي نَفْسِي مِمَّا قَالُوا شِدَّةٌ، حَتَّى أَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ تَصْدِيقِي فِي ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ﴾ فَدَعَاهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَغْفِرَ لَهُمْ فَلَوَّوْا رُؤُوسَهُمْ. وَقَوْلُهُ ﴿خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ﴾ قَالَ: كَانُوا رِجَالاً أَجْمَلَ شَيْءٍ.

[راجع: ٤٩٠٠]

4903. हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर बिन मुआविया ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक सफ़र (ग़ज़्व-ए-तबूक़ या बनी अल् मुस्तलक़) में थे जिसमें लोगों पर बड़े तंग औक़ात आए थे। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने अपने साथियों से कहा कि, जो लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास जमा हैं उन पर कुछ ख़र्च मत करो ताकि वो उनके पास से मुंतशिर हो जाएँ, उसने ये भी कहा कि, अगर हम अब मदीना लौटकर जाएँगे तो इ़ज़्ज़त वाला वहाँ से ज़लीलों को निकाल बाहर करेगा। मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर उनकी इस बातचीत की ख़बर दी तो आपने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल को बुलाकर पूछा। उसने बड़ी क़समें खाकर कहा कि मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही। लोगों ने कहा कि ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने झूठ बोला है। लोगों की इस त़रह़ की बातों से मैं बड़ा रंजीदा हुआ यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मेरी तस्दीक़ फ़र्माई और ये आयत नाज़िल हुई इज़ा जाअकल मुनाफ़िक़ूना अल्अख़ या'नी जब आपके पास मुनाफ़िक़ आए फिर आप (ﷺ) ने उन्हें बुलाया ताकि उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें लेकिन उन्होंने अपने सर फेर लिये। ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआला के इर्शाद ख़ुशुबुम् मुसन्नदह् गोया वो बहुत बड़े लकड़ी के खम्बे हैं (उनके बारे में इसलिये कहा गया कि) वो बड़े ख़ूबसूरत और डील डोल मअ़क़ूल मगर दिल में निफ़ाक़ था। (राजेअ़: 4900)

٤- بَابُ قَوْلِهِ
﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ

बाब 4 : आयत 'व इज़ा क़ील लहुम तआलौ यस्तग़्फ़िर लकुम रसूलुल्लाहि लव्वव रूऊसहुम ...'

की तफ़्सीर या'नी, और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह के रसूल (ﷺ) तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार फ़र्माए तो वो अपना सर फेर लेते हैं और आप उन्हें देखेंगे कि घमण्ड करते हुए वो किस क़द्र बेरुख़ी बरत रहे हैं। लव्वव का मा'नी ये है कि अपने सर हंसी ठठ्ठे की राह से हिलाने लगे। कुछ ने लव्वव बर तख़फ़ीफ़ वाव लवयत से पढ़ा है या'नी सर फेर लिया।

﴿ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴾

حَرَّكُوا اسْتَهْزَءُوا بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيُقْرَأُ بِالتَّخْفِيفِ مِنْ لَوَيْتُ.

4904. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अपने चचा के साथ था। मैंने अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल को कहते सुना कि, जो लोग रसूल (ﷺ) के पास हैं उन पर कुछ ख़र्च न करो ताकि वह बिखर जाएँ और अगर अब हम मदीना वापस लौटेंगे तो हमम में से जो इज़्ज़त वाले हैं वो ज़लीलों को बाहर कर देंगे। मैंने उसका ज़िक्र अपने चचा से किया और उन्होंने रसूल (ﷺ) से कहा जब आँहज़रत (ﷺ) ने उन ही की तस्दीक़ कर दी तो मुझे उसका इतना अफ़सोस हुआ कि पहले कभी किसी बात पर न हुआ होगा, मैं ग़म से अपने घर मे बैठ गया। मेरे चचा ने कहा कि तुम्हारा क्या ऐसा ख़याल था कि आँहज़रत (ﷺ) ने तुम्हें झुठलाया और तुम पर ख़फ़ा हुए हैं? फिर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की इज़ा जाअकल मुनाफ़िक़ूना.. अल आयत जब मुनाफ़िक़ आपके पास आते हैं तो कहते कि आप बेशक अल्लाह के रसूल (ﷺ) हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे बुलवाकर इस आयत की तिलावत फ़र्माई और फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी तस्दीक़ नाज़िल कर दी है। (राजेअ : 4900)

٤٩٠٤- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ عَمِّي فَسَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أُبَيٍّ ابْنَ سَلُولٍ يَقُولُ : لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ حَتَّى يَنْفَضُّوا، وَلَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِعَمِّي فَذَكَرَ عَمِّي لِلنَّبِيِّ ﷺ وَصَدَّقَهُمْ، فَأَصَابَنِي هَمٌّ لَمْ يُصِبْنِي مِثْلُهُ قَطُّ، فَجَلَسْتُ فِي بَيْتِي وَقَالَ عَمِّي : مَا أَرَدْتَ إِلَى أَنْ كَذَّبَكَ النَّبِيُّ ﷺ وَمَقَتَكَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ﴾، وَأَرْسَلَ إِلَى النَّبِيُّ ﷺ فَقَرَأَهَا وَقَالَ : ((إِنَّ اللَّهَ قَدْ صَدَّقَكَ)).

[راجع: ٤٩٠٠]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) ग़ैबदाँ नहीं थे, दिलों का हाल सिर्फ़ अल्लाह तआला जानता है। अब्दुल्लाह बिन उबई ने क़समें खा खाकर अपनी बराअत ज़ाहिर की। आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी बातों का यक़ीन कर लिया बाद में वह्य इलाही ने अब्दुल्लाह बिन उबई का झूठ ज़ाहिर फ़र्माया और हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) के ब यान की तस्दीक़ फ़र्माई जिससे हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) का दिल मुत्मईन हो गया और मुनाफ़िक़ीन का सूरह मुनाफ़िक़ीन में सारा पोल खोल दिया गया।

बाब 5 : 'सवाउन अलैहिमुस्तग़्फ़र्त लहुम अम लम तस्तग़्फ़िर्लहुम लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम .... (अल्आयः)' की तफ़्सीर या'नी,

उनके लिये बराबर है ख़्वाह आप उनके लिये इस्तिग़्फ़ार करें या

٥- باب قَوْلِهِ :

﴿سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ اسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لاَ

नहीं है वो शवा है। इज़ून गिरोह गिरोह इसका मुफ़रद इज़तुन है।

ये सूरह मक्की है इसमें 44 आयात और दो रुकूअ हैं।

सूरह नूह की तफ़्सीर

[٧١] سُورَةُ ﴿إِنَّا أَرْسَلْنَا﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अत़्वार कभी कुछ कभी कुछ मष़लन मनी फिर गोश्त का लौथड़ा अरब लोग कहते हैं अदा त़ौरूहू अपने अंदाज़ से बढ़ गया। कुब्बार (बतशदीद बाअ) में कुबार से ज़्यादा मुबालग़ा है या'नी बहुत ही बड़ा, जैसे जमील ख़ूबसूरत जुम्माल बहुत ही ख़ूबसूरत ग़र्ज़ कुब्बार का मा'नी बड़ा कभी उसको कुब्बार तख़्फ़ीफ़ बाअ से भी पढ़ा है। अरब लोग कहते हैं हुस्सान और जुम्माल (तशदीद से) और हुसान और जुमाल (तख़्फ़ीफ़ से) दय्यारा दौर से निकला है। इसका वज़न फ़यआल है (अस़ल में दीवार था) जैसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अल हय्युल् क़य्यूम को अल् हय्युल क़ियाम पढ़ा है। ये क़यामत क़ुम्तु से निकला है (तो अस़ल में क़यवाम था) औरों ने कहा दय्यारा के मअ़नी किसी को तबारा हलाकत। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा मिदरारा एक के पीछे दूसरा या'नी लगातार बारिश। वक़ारा अ़ज़्मत बड़ाई मुराद है।

﴿أَطْوَارًا﴾ طَوْرًا كَذَا وَطَوْرًا كَذَا يُقَالُ عَدَا طَوْرَهُ أَيْ قَدْرَهُ. وَالْكُبَّارُ أَشَدُّ مِنَ الْكُبَارِ وَكَذَلِكَ جُمَّالٌ وَجَمِيلٌ لأَنَّهَا أَشَدُّ مُبَالَغَةً وَكُبَّارٌ الْكَبِيرُ وَكُبَارًا أَيْضًا بِالتَّخْفِيفِ وَالْعَرَبُ تَقُولُ رَجُلٌ حُسَّانٌ وَجُمَّالٌ وَحُسَانٌ مُخَفَّفٌ وَجُمَالٌ مُخَفَّفٌ. دَيَّارًا مِنْ دَوْرٍ وَلَكِنَّهُ فَيْعَالٌ مِنَ الدَّوَرَانِ كَمَا قَرَأَ عُمَرُ الْحَيُّ الْقَيَّامُ وَهْيَ مِنْ قُمْتُ وَقَالَ غَيْرُهُ ﴿دَيَّارًا﴾ أَحَدًا ﴿تَبَارًا﴾ هَلاَكًا. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿مِدْرَارًا﴾ يَتْبَعُ بَعْضُهَا بَعْضًا. ﴿وَقَارًا﴾ عَظَمَةً.

ये सूरत मक्की है इसमें 28 आयात और दो रुकूअ हैं।

बाब 'वद्दा वला सुवाअंव् वला यग़ूषवं् व यऊक़ व नस्र' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب ﴿وَدًّا وَلاَ سُوَاعًا وَلاَ يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا﴾

4920. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उनसे इब्ने जुरैज ने और अ़ता ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जो बुत ह़ज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम मे पूजे जाते थे बाद मे वही अरब में पूजे जाने लगे। वद्दा दौमतुल जन्दल में बनी कल्ब का बुत था। सुवाअ बनी हुज़ैल का। यग़ूष़ बनी मुराद का और मुराद की शाख़ बनी ग़ुत़ैफ़ का जो वादी जौफ़ में क़ौमे सबा के पास रहते थे यऊक़ बनी हम्दान का बुत था। नस्र हिम्यर का बुत था जो ज़ुल कलाअ की आल

٤٩٢٠- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ وَقَالَ عَطَاءٌ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا : صَارَتِ الأَوْثَانُ الَّتِي كَانَتْ فِي قَوْمِ نُوحٍ فِي الْعَرَبِ بَعْدُ، أَمَّا وُدٌّ كَانَتْ لِكَلْبٍ بِدَوْمَةِ الْجَنْدَلِ، وَأَمَّا سُوَاعٌ كَانَتْ لِهُذَيْلٍ، وَأَمَّا يَغُوثُ فَكَانَتْ لِمُرَادٍ، ثُمَّ لِبَنِي غُطَيْفٍ

بِهِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ وَهَّاجًا: مُضِيئًا. وَقَالَ غَيْرُهُ: غَسَاقًا: غَسَقَتْ عَيْنُهُ وَيَغْسِقُ الْجُرْحُ يَسِيلُ كَأَنَّ الْغَسَاقَ وَالْغَسِيقَ وَاحِدٌ. عَطَاءً حِسَابًا: جَزَاءً كَافِيًا، أَعْطَانِي مَا أَحْسَبَنِي، أَيْ كَفَانِي.

जिसने दुनिया में सच्ची बात कही थी उस पर अ़मल किया था। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा वह्हाजा रोशन चमकता हुआ। औरों ने कहा ग़स्साक़्स ग़सक़त अयनुहू से निकला है या'नी उसकी आँख तारीक हो गई, उसी से है। यग़्सिक़ुल जरह़ या'नी ज़ख़्म बह रहा है ग़साक़ और ग़सीक़ दोनों का एक ही मा'नी है या'नी दोज़ख़ियों का ख़ून पीप। अ़त़ाअन ह़िसाबा पूरा बदला अ़रब लोग कहते हैं। अअ़त़ानी मा अह़सबनी या'नी मुझको इतना दिया जो काफ़ी हो गया।

ये सूरत मक्की है इसमे चालीस आयात और 2 रुकूअ़ हैं।

١- باب ﴿يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا﴾ زُمَرًا

बाब 1 : आयत 'यौम युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि अल्आय:' की तफ़्सीर या'नी,

वो दिन कि जब सूर फूँका जाएगा तो तुम गिरोह दर गिरोह होकर आओगे। अफ़्वाजा के मा'नी ज़ुमुरा या'नी गिरोह गिरोह के हैं।

٤٩٣٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا بَيْنَ النَّفْخَتَيْنِ أَرْبَعُونَ، قَالَ: أَرْبَعُونَ، يَوْمًا؟ قَالَ: أَبَيْتُ. قَالَ : أَرْبَعُونَ شَهْرًا؟ قَالَ : أَبَيْتُ. قَالَ : أَرْبَعُونَ سَنَةً؟ قَالَ : أَبَيْتُ. قَالَ : ثُمَّ يُنْزِلُ اللهُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً، فَيَنْبُتُونَ كَمَا يَنْبُتُ الْبَقْلُ، لَيْسَ مِنَ الإِنْسَانِ شَيْءٌ إِلاَّ يَبْلَى، إِلاَّ عَظْمًا وَاحِدًا وَهُوَ عَجْبُ الذَّنَبِ، وَمِنْهُ يُرَكَّبُ الْخَلْقُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)). [راجع: ٤٨١٤]

4935. हमसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी, उन्हे आ'मश ने, उन्हें अबू स़ालेह़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि दो सूर फूँके जाने के दरम्यान चालीस फ़ास़ला होगा। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के शागिर्दों ने पूछा क्या चालीस दिन मुराद हैं? उन्होंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं। शागिर्दों ने पूछा क्या चालीस महीने मुराद हैं? उन्होंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं। शागिर्दों ने पूछा क्या चालीस साल मुराद हैं? कहा कि मुझे मा'लूम नहीं। कहा कि फिर अल्लाह तआ़ला आसमान से पानी बरसाएगा। जिसकी वजह से तमाम मुर्दे जी उठेंगे जैसे सब्ज़ियाँ पानी से आग आती हैं। उस वक़्त इंसान का हर ह़िस्सा गल चुका होगा। सिवा रीढ़ की हड्डी के और उससे क़यामत के दिन तमाम मख़्लूक़ दोबारा बनाई जाएगी। (राजेअ़ : 4814)

इब्ने मर्दवैह ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से निकाला कि दोनों नफ़्ख़ों में चालीस बरस का फ़ास़ला होगा।

[٧٩] سُورَةُ ﴿وَالنَّازِعَاتِ﴾

सूरह वन् नाज़िआत की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूरह कौष़र की तफ़्सीर

[١٠٨] سُورَةُ ﴿إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بسم الله الرحمن الرحيم

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा शानिअक तेरा दुश्मन।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : (شَانِئَكَ) عَدُوَّكَ

जिससे आ़स़ बिन वाइल या अबू जहल या उ़त्बा बल्कि क़यामत तक होने वाले तमाम दुश्मनाने रसूल (ﷺ) मुराद हैं जो हमेशा अंजाम के लिह़ाज़ से ख़ाइब व ख़ासिर व नामुराद रहे हैं। ये सूरत मक्की है इसमें तीन आयात हैं।

4964. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शैबान बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) को मेअ़राज हुई तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं एक नहर के किनारे पर पहुँचा जिसके दोनों किनारों पर ख़ोलदार मोतियों के डेरे लगे हुए थे। मैंने पूछा ऐ जिब्रईल! ये नहर कैसी है? उन्होंने बताया कि ये ह़ौज़े कौष़र है (जो अल्लाह ने आपको दिया है)

٤٩٦٤- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ. لَمَّا عُرِجَ بِالنَّبِيِّ ﷺ إِلَى السَّمَاءِ، قَالَ ((أَتَيْتُ عَلَى نَهَرٍ حَافَتَاهُ قِبَابُ اللُّؤْلُؤِ مُجَوَّفٌ، فَقُلْتُ : مَا هَذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ هَذَا الْكَوْثَرُ)).

4965. हमसे ख़ालिद बिन यज़ीद काहिली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया, उनसे अबू उ़बैदह ने कि मैंने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से अल्लाह के इर्शाद इन्ना अअ़त़यनाक अल्अख़ या'नी मैंने आपको कौष़र अ़ता किया है के बारे में पूछा तो उन्होंने बतलाया कि ये (कौष़र) एक नहर है जो तुम्हारे नबी (ﷺ) को बख़्शी गई है, इसके दो किनारे हैं जिन पर ख़ोलदार मोतियों के डेरे हैं। उसके आबख़ोरे सितारों की त़रह़ अनगिनत हैं। इस ह़दीष़ की रिवायत ज़करिया और अबुल अह़वस़ और मुत़र्रिफ़ ने अबू इस्ह़ाक़ से की है।

٤٩٦٥- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ الْكَاهِلِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَ : سَأَلْتُهَا عَنْ قَوْلِهِ تَعَالَى ﴿إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ﴾ قَالَتْ: نَهَرٌ أُعْطِيَهُ نَبِيُّكُمْ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، شَاطِئَاهُ عَلَيْهِ دُرٌّ مُجَوَّفٌ آنِيَتُهُ كَعَدَدِ النُّجُومِ. رَوَاهُ زَكَرِيَّا وَأَبُو الأَحْوَصِ وَمُطَرِّفٌ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ.

4966. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कौष़र के बारे में कि वो ख़ैरे कष़ीर है जो अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (ﷺ) को दी है। अबू बिश्र ने बयान किया कि मैंने सईद बिन जुबैर से अ़र्ज़ की,

٤٩٦٦- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ حَدَّثَنَا أَبُو بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ فِي الْكَوْثَرِ : هُوَ الْخَيْرُ الَّذِي أَعْطَاهُ اللهُ إِيَّاهُ. قَالَ أَبُو بِشْرٍ قُلْتُ لِسَعِيدِ

बाब 4 : नबी करीम (ﷺ) के कातिब का बयान

٤ - باب كَاتِبِ النَّبِيِّ ﷺ

4989. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़बैद इब्ने सिबाक़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने बयान किया, कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अपने ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में मुझे बुलाया और कहा कि तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने क़ुर्आन लिखते थे। इसलिये अब भी क़ुर्आन (जमा करने के लिये) तुम ही तलाश करो। मैंने तलाश की और सूरह तौबा की आख़री दो आयतें मुझे हज़रत ख़ुज़ैमा अंस़ारी (रज़ि.) के पास लिखी हुई मिलीं, उनके सिवा और कहीं ये दो आयतें नहीं मिल रही थीं। वो आयतें ये थीं, लक़द जाअकुम रसूलुम्मिन अन्फ़ुसिकुम अज़ीज़ुन अ़लैहि मा अ़नित्तुम आख़िर तक। (राजेअ़ : 2807)

٤٩٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ ابْنَ السَّبَّاقِ قَالَ : إِنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ قَالَ : أَرْسَلَ إِلَيَّ أَبُوبَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّكَ كُنْتَ تَكْتُبُ الْوَحْيَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَاتَّبِعِ الْقُرْآنَ. فَتَتَبَّعْتُ حَتَّى وَجَدْتُ آخِرَ سُورَةِ التَّوْبَةِ آيَتَيْنِ مَعَ أَبِي خُزَيْمَةَ الأَنْصَارِيِّ لَمْ أَجِدْهُمَا مَعَ أَحَدٍ غَيْرِهِ ﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ﴾ إِلَى آخِرِهِ. [راجع: ٢٨٠٧]

490. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत ला यस्तविल् क़ाइदूना मिनल् मोमिनीन वल् मुजाहिदून फ़ी सबीलिल्लाह नाज़िल हुई तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़ैद को मेरे पास बुलाओ और उनसे कहो कि तख़्ती, दवात और मूँढ़े की हड्डी (लिखने का सामान) लेकर आएं, या रावी ने इसके बजाय हड्डी और दवात (कहा) फिर (जब वो आ गये तो) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि लिखो ला यस्तविल्क़ाइदून अल्अख़ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पीछे अ़म्र इब्ने उम्मे मक्तूम बैठे हुए थे जो नाबीना थे, उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर आपका मेरे बारे में क्या हुक्म है? मैं तो नाबीना हूँ (जिहाद में नहीं जा सकता अब मुझको भी मुजाहिदीन का दर्जा मिलेगा या नहीं) उस वक़्त ये आयत यूँ उतरी, ला यस्तविल्क़ाइदून मिनल्मूमिनीन वल्मुजाहिदून फ़ी सबीलिल्लाहि ग़ैर उलिज़्ज़ररि नाज़िल हुई। (राजेअ़ : 2831)

٤٩٩٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ : لَمَّا نَزَلَتْ ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ﴾ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ادْعُ لِي زَيْدًا وَلْيَجِيءْ بِاللَّوْحِ وَالدَّوَاةِ، وَالْكَتِفِ أَوِ الْكَتِفِ وَالدَّوَاةِ، ثُمَّ قَالَ : اكْتُبْ ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ﴾)) وَخَلْفَ ظَهْرِ النَّبِيِّ ﷺ عَمْرُو بْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ الأَعْمَى قَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ فَمَا تَأْمُرُنِي؟ فَإِنِّي رَجُلٌ ضَرِيرُ الْبَصَرِ فَنَزَلَتْ مَكَانَهَا ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي سَبِيلِ اللهِ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ﴾. [راجع: ٢٨٣١]

बाब 5 : क़ुर्आन मजीद सात क़िरातों से नाज़िल हुआ है

٥- باب أُنْزِلَ الْقُرْآنُ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ

٤٩٩١- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ:

يَقُولُ : سَمِعْتُ هِشَامَ بْنَ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ فِي حَيَاةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَاسْتَمَعْتُ لِقِرَاءَتِهِ فَإِذَا هُوَ يَقْرَؤُهَا عَلَى حُرُوفٍ كَثِيرَةٍ لَمْ يُقْرِئْنِيهَا رَسُولُ اللهِ، فَكِدْتُ أُسَاوِرُهُ فِي الصَّلاَةِ، فَانْتَظَرْتُهُ حَتَّى سَلَّمَ فَلَبَّبْتُهُ فَقُلْتُ: مَنْ أَقْرَأَكَ هَذِهِ السُّورَةَ الَّتِي سَمِعْتُكَ تَقْرَأُ؟ قَالَ: أَقْرَأَنِيهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ. فَقُلْتُ لَهُ : كَذَبْتَ، فَوَ اللهِ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَهُوَ أَقْرَأَنِي هَذِهِ السُّورَةَ الَّتِي سَمِعْتُكَ، فَانْطَلَقْتُ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ أَقُودُهُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي سَمِعْتُ هَذَا يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ عَلَى حُرُوفٍ لَمْ تُقْرِئْنِيهَا، وَإِنَّكَ أَقْرَأْتَنِي سُورَةَ الْفُرْقَانِ. فَقَالَ: ((يَا هِشَامُ اقْرَأْهَا)). فَقَرَأَهَا الْقِرَاءَةَ الَّتِي سَمِعْتُهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَكَذَا أُنْزِلَتْ)). ثُمَّ قَالَ: ((اقْرَأْ يَا عُمَرُ)). فَقَرَأْتُهَا الَّتِي أَقْرَأَنِيهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَكَذَا أُنْزِلَتْ)). ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ الْقُرْآنَ أُنْزِلَ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ فَاقْرَؤُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ)). [راجع: ٢٤١٩]

में सूरह फ़ुरक़ान पढ़ते सुना। मैं उनकी क़िरात को ग़ौर से सुनने लगा तो मा'लूम हुआ कि वो ऐसे बहुत से त़रीक़ों मे तिलावत कर रहे थे जिन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें नहीं सिखाया था। मुम्किन था कि मैं नमाज़ ही में उनका सर पकड़ लेता लेकिन मैंने इंतिज़ार किया और जब उन्होंने सलाम फेरा तो मैंने उनके गले में चादर लपेट दी और पूछा ये सूरतें जिन्हें अभी अभी तुम्हें पढ़ते हुए मैंने सुना है तुम्हें किसने सिखाई हैं? उन्होंने कहा कि मुझे इस त़रह़ इन सूरतों को रसूले करीम (ﷺ) ने सिखाया है। मैंने कहा कि तुम झूठ बोल रहे हो। ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मुझे भी ये सूरतें पढ़ाई हैं जो मैंने तुमसे सुनीं। मैं उन्हें खींचते हुए आप (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने ख़ुद सुना कि ये शख़्स़ सूरह फ़ुरक़ान ऐसी क़िरात से पढ़ रहा था। जिसकी ता'लीम आप (ﷺ) ने हमें नहीं दी है आप (ﷺ) मुझे भी सूरह फ़ुरक़ान पढ़ा चुके हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हिशाम! पढ़कर सुनाओ। उन्होंने इसी त़रह़ उसकी क़िरात की जिस त़रह़ मैं उनसे सुन चुका था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया इसी त़रह़ ये सूरत नाज़िल हुई है। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उ़मर! अब तुम पढ़ो। मैंने भी इसी त़रह़ क़िरात की जिस त़रह़ आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे सिखाया था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया उसी त़रह़ ये सूरत नाज़िल हुई थी। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुर्आन मजीद सात क़िस्म की क़िरातों पर नाज़िल हुआ है बस तुम्हारे लिये जो आसान हो उसके मुत़ाबिक़ पढ़ो। (राजेअ: 2419)

इस ह़दीष़ शरीफ़ में सूरह फ़ुरक़ान का लफ़्ज़ है। बाब से यही वजहे मुत़ाबक़त है। इस ह़दीष़ से ये भी ज़ाहिर हुआ कि उमूरे मुख़्तलिफ़ा में इंशिक़ाक़ व इफ़्तिराक से बचना ज़रूरी है।

٥٠٤٢ - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ آدَمَ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا فَقَالَتْ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ قَارِئًا يَقْرَأُ مِنَ اللَّيْلِ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ:

5042. हमसे बिश्र बिन आदम ने बयान किया, कहा हमको अ़ली बिन मिस्हर ने ख़बर दी, कहा हमको हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक क़ारी को रात के वक़्त मस्जिद में क़ुर्आन मजीद पढ़ते हुए सुना तो फ़र्माया

कि अल्लाह उस आदमी पर रह्म करे उसने मुझे फ़लाँ फ़लाँ आयतें याद दिला दीं जिन्हें मैंने फ़लाँ फ़लाँ सूरतों में से छोड़ रखा था। (राजेअ़ : 2655)

((يَرْحَمُهُ اللهُ لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَذَا وَكَذَا، آيَةً اسْقَطْتُهَا مِنْ سُورَةِ كَذَا وَكَذَا)).

[راجع: ٢٦٥٥]

बाब 28 : क़ुर्आन मजीद की तिलावत साफ़ साफ़ और ठहर ठहरकर करना

٢٨- باب التَّرْتِيلِ فِي الْقِرَاءَةِ، وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلاً﴾ وَقَوْلِهِ: ﴿وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْثٍ﴾ وَمَا يُكْرَهُ أَنْ يُهَذَّ كَهَذِّ الشِّعْرِ. يُفْرَقُ : يُفَصَّلُ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَرَقْنَاهُ : فَصَّلْنَاهُ.

और अल्लाह तबारक व तआला ने सूरत मुज़म्मिल में फ़र्माया, और क़ुर्आन मजीद को तरतील से पढ़। (या'नी हर एक हर्फ़ अच्छी तरह निकालकर इत्मीनान के साथ) और सूरह बनी इस्राईल में फ़र्माया और हमने क़ुर्आन मजीद को थोड़ा थोड़ा करके इसलिये भेजा कि तू ठहर ठहरकर लोगों को पढ़कर सुनाए और शे'र व सुख़न की तरह उसका जल्दी जल्दी पढ़ना मकरूह है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा इस सूरत में जो फ़रक़्ना का लफ़्ज़ है (व क़ुर्आनन फ़रक़्नाहू) उसका मा'नी ये है कि हमने उसे कई हिस्से करके उतारा।

5044. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे महदी बिन मैमून ने, कहा हमसे वासिल अहदब ने, उनसे अबू वाइल ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से बयान किया कि हम उनकी ख़िदमत में सुबह सवेरे हाज़िर हुए। हाज़िरीन में से एक साहब ने कहा कि रात मैंने (तमाम) मुफ़स्सल सूरतें पढ़ डालों। इस पर अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) बोले जैसे अश्आर जल्दी जल्दी पढ़ते हैं तुमने वैसे ही पढ़ ली होंगी। हमने क़िरात सुनी है और मुझे वो जोड़ वाली सूरतें भी याद हैं जिनको मिलाकर नमाज़ों म नबी करीम (ﷺ) पढ़ा करते थे। ये अठारह सूरतें मुफ़स्सल की हैं और वो दो सूरतें जिनके शुरू में हामीम है। (राजेअ़ : 775)

٥٠٤٣- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ حَدَّثَنَا وَاصِلٌ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : غَدَوْنَا عَلَى عَبْدِ اللهِ، فَقَالَ رَجُلٌ : قَرَأْتُ الْمُفَصَّلَ الْبَارِحَةَ فَقَالَ: هَذًّا كَهَذِّ الشِّعْرِ إِنَّا قَدْ سَمِعْنَا الْقِرَاءَةَ، وَإِنِّي لأَحْفَظُ الْقُرَنَاءَ الَّتِي كَانَ يَقْرَأُ بِهِنَّ النَّبِيُّ ﷺ. ثَمَانِيَ عَشْرَةَ سُورَةً مِنَ الْمُفَصَّلِ وَسُورَتَيْنِ مِنْ آلِ حم.

[راجع: ٧٧٥]

5044. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे मूसा बिन अबी आइशा ने, उनसे सईद बिन ज़ुबैर ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने अल्लाह तआला के फ़र्मान, आप क़ुर्आन को जल्दी जल्दी लेने के लिये इस पर नाज़िल होते तो रसूले करीम (ﷺ) अपनी ज़ुबान और होंठ हिलाया करते थे। उसकी वजह से आपके लिये वह्य याद करने में बहुत बार पड़ता था और ये आपके चेहरे से भी ज़ाहिर हो जाता था। इसलिये अल्लाह

٥٠٤٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مُوسَى بْنِ أَبِي عَائِشَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي قَوْلِهِ: ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ﴾، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا نَزَلَ جِبْرِيلُ بِالْوَحْيِ،

 M-09825696131

इंकार करती हैं, अगर तुम उनमें से किसी एक के साथ ज़िंदगी भर भी हुस्ने सुलूक़ का मामला करो फिर भी तुम्हारी तरफ़ से कोई चीज़ उसके लिये नागवारी ख़ातिर हुई तो कह देगी कि मैंने तुमसे कभी भलाई देखी ही नहीं।

((بِكُفْرِهِنَّ)) قِيلَ يَكْفُرْنَ بِاللهِ قَالَ: ((يَكْفُرْنَ الْعَشِيرَ وَيَكْفُرْنَ الإِحْسَانَ لَوْ أَحْسَنْتَ إِلَى إِحْدَاهُنَّ الدَّهْرَ ثُمَّ رَأَتْ مِنْكَ شَيْئًا قَالَتْ مَا رَأَيْتُ مِنْكَ خَيْرًا قَطُّ)).

तश्रीह : ह़दीष़ में नमाज़े कुसूफ़ का बयान है आख़िर में दोज़ख़ का एक नज़ारा पेश किया गया है जो नाफ़र्मान औरतों के बारे में है। इसी से बाब का मतलब ष़ाबित होता है औरतों की ये फ़ित़रत है जो बयान हुई इल्ला माशाअल्लाह बहुत कम नेकबख़्त औरतें ऐसी होती हैं जो शुक्रगुज़ार और इत़ाअत शिआर हों।

5198. हमसे उ़ष्मान बिन हैशम ने बयान किया, कहा हमसे औ़फ़ ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम ने, उनसे इमरान ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने जन्नत मे झांक कर देखा तो उसके अकष़र रहने वाले ग़रीब लोग थे और मैंने दोज़ख़ में झांककर देखा तो उसके अंदर रहने वाली अकष़र औरतें थीं। इस रिवायत की मुताबअ़त अबू अय्यूब और सलम बिन ज़रीर ने की है। (राजेअ़ : 3241)

٥١٩٨- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنْ أَبِي رَجَاءٍ عَنْ عِمْرَانَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اطَّلَعْتُ فِي الْجَنَّةِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا الْفُقَرَاءَ وَاطَّلَعْتُ فِي النَّارِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ)). تَابَعَهُ أَيُّوبُ وَسَلْمُ بْنُ زَرِيرٍ. [راجع: ٣٢٤١]

बाब 90 : तुम्हारी बीवी का भी तुम पर ह़क़ है

٩٠- باب لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقٌّ. أَبُو جُحَيْفَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

इस ह़दीष़ को अबू जुहैफ़ा (अ़ब्दुल्लाह बिन वहब आमिरी) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्फ़ूअ़न रिवायत किया है।

5199. हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको औज़ाई ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे यह़्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, कहा कि मुझसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अ़ब्दुल्लाह! क्या मेरी ये ख़बर स़ह़ीह़ है कि तुम (रोज़ाना) दिन में रोज़े रखते हो और रात भर इ़बादत करते हो? मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ या रसूलल्लाह! आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसा न करो, रोज़े भी रखो और बिला रोज़े भी रहो। रात में इ़बादत भी करो और सोओ भी। क्योंकि तुम्हारे बदन का भी तुम पर ह़क़ है, तुम्हारी आँखों का भी तुम पर ह़क़ है और तुम्हारी बीवी का भी तुम पर ह़क़ है। (राजेअ़ : 1131)

٥١٩٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا عَبْدَ اللهِ أَلَمْ أُخْبَرْ أَنَّكَ تَصُومُ النَّهَارَ وَتَقُومُ اللَّيْلَ؟)) قُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: ((فَلاَ تَفْعَلْ، صُمْ وَأَفْطِرْ، وَقُمْ وَنَمْ، فَإِنَّ لِجَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِعَيْنِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقًّا)). [راجع: ١١٣١]

बाब 10 : अगर कोई (किसी ज़ालिम के डर से) जबरन बीवी को अपनी बहन कह दे

١٠- باب إِذَا قَالَ لِامْرَأَتِهِ وَهُوَ مُكْرَهٌ : هَذِهِ أُخْتِي، فَلاَ شَيْءَ عَلَيْهِ

قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِسَارَةَ هَذِهِ أُخْتِي، وَذَلِكَ فِي ذَاتِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ)).

तो कुछ नुक़्सान न होगा न उस औरत पर तलाक़ पड़ेगी न ज़िहार का कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपनी बीवी सारा को कहा कि ये मेरी बहन है (या'नी अल्लाह की राह में दीनी बहन)

बाब 11 : ज़बरदस्ती और जबरन तलाक़ देने का हुक्म

١١- باب الطَّلاَقِ فِي الإِغْلاَقِ وَالْمُكْرَهِ وَالسَّكْرَانِ وَالْمَجْنُونِ وَأَمْرِهِمَا وَالْغَلَطِ وَالنِّسْيَانِ فِي الطَّلاَقِ

وَالشِّرْكِ وَغَيْرِهِ، لِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((الأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ، وَلِكُلِّ امْرِىءٍ مَا نَوَى)). وَتَلاَ الشَّعْبِيُّ ﴿لاَ تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا﴾ وَمَا لاَ يَجُوزُ مِنْ إِقْرَارِ الْمُوَسْوِسِ. وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لِلَّذِي أَقَرَّ عَلَى نَفْسِهِ أَبِكَ جُنُونٌ؟)) وَقَالَ عَلِيٌّ بَقَرَ حَمْزَةُ خَوَاصِرَ شَارِفَيَّ فَطَفِقَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلُومُ حَمْزَةَ، فَإِذَا حَمْزَةُ قَدْ ثَمِلَ مُحْمَرَّةٌ عَيْنَاهُ. ثُمَّ قَالَ حَمْزَةُ : هَلْ أَنْتُمْ إِلاَّ عَبِيدٌ لأَبِي؟ فَعَرَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَدْ ثَمِلَ، فَخَرَجَ وَخَرَجْنَا مَعَهُ. وَقَالَ عُثْمَانُ لَيْسَ لِمَجْنُونٍ وَلاَ لِسَكْرَانَ طَلاَقٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: طَلاَقُ السَّكْرَانِ وَالْمُسْتَكْرَهِ لَيْسَ بِجَائِزٍ. وَقَالَ عُقْبَةُ بْنُ عَامِرٍ. لاَ يَجُوزُ

इसी तरह नशा या जुनून में दोनों का हुक्म एक होना, इसी तरह भूल या चूक से तलाक़ देना या भूल चूक से कोई शिर्क (कुछ ने यहाँ लफ़्ज़ वशशक नक़ल किया है जो ज़्यादा क़रीने क़यास है) का हुक्म निकाल बैठना या शिर्क का कोई काम करना क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तमाम काम निय्यत से सहीह होते हैं और हर एक आदमी को वही मिलेगा जो निय्यत करे और आमिर शअबी ने ये आयत पढ़ी रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्नसीना औ अख़्तअना और इस बाब मे ये भी बयान है कि वसवासी और मज्नून आदमी का इक़रार सहीह नहीं है क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उस शख़्स से फ़र्माया जो ज़िना का इक़रार कर रहा था, कहीं तुझको जुनून तो नहीं है और हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा जनाब अमीर हम्ज़ा ने मेरी ऊँटनियों के पेट फाड़ डाले (उनके गोश्त के कबाब बनाए) आँहज़रत (ﷺ) ने उनको मलामत करनी शुरू की फिर आपने देखा कि वो नशे मे चूर हैं, उनकी आँखें सुर्ख़ हैं। उन्होंने (नशे की हालत में) ये जवाब दिया तुम सब क्या मेरे बाप के गुलाम नहीं हो? आँहज़रत (ﷺ) ने पहचान लिया कि वो बिल्कुल नशे में चूर हैं, आप निकलकर चले आए, हम भी आपके साथ निकल खड़े हुए। और उष्मान (रज़ि.) ने कहा मज्नून और नशे वाले की तलाक़ नहीं पड़ेगी (उसे इब्ने अबी शैबा ने वस्ल किया) और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा नशे और ज़बरदस्ती की तलाक़ नहीं पड़ेगी (इसको सईद बिन मंसूर और इब्ने अबी शैबा ने वस्ल किया) और उक़्बा बिन आमिर जहनी सहाबी (रज़ि.) ने कहा अगर तलाक़ का वस्वसा दिल में आए तो जब तक ज़ुबान से न निकाले तलाक़ नहीं पड़ेगी और अता बिन

M-09825696131

(रज़ि.) के शौहर एक ह़ब्शी ग़ुलाम थे। उनका मुग़ीष़ नाम था, वो बनी फ़लाँ के ग़ुलाम थे। जैसे वो मंज़र अब भी मेरी आँखों में है कि वो मदीना की गलियों में बरीरह (रज़ि.) के पीछे पीछे फिर रहे हैं। (राजेअ़ : 5280)

زَوْجُ بَرِيرَةَ عَبْدًا أَسْوَدَ يُقَالُ لَهُ: مُغِيثٌ، عَبْدًا لِبَنِي فُلاَنٍ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَطُوفُ وَرَاءَهَا فِي سِكَكِ الْمَدِينَةِ.[راجع: ٥٢٨٠

बाब 16 : बरीरह (रज़ि.) के शौहर के बारे में नबी करीम (ﷺ) का सिफ़ारिश करना

١٦- باب شَفَاعَةِ النَّبِيِّ ﷺ فِي زَوْجِ بَرِيرَةَ

5283. हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने ख़बर दी, कहा हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि बरीरह (रज़ि.) के शौहर ग़ुलाम थे और उनका नाम मुग़ीष़ था। गोया मैं इस वक़्त उसको देख रहा हूँ जब वो बरीरह (रज़ि.) के पीछे-पीछे रोते हुए फिर रहे थे और आंसुओं से उनकी दाढ़ी तर हो रही थी। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने अ़ब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया, अ़ब्बास! क्या तुम्हें मुग़ीष़ की बरीरह से मुहब्बत और बरीरह की मुग़ीष़ से नफ़रत पर हैरत नहीं हुई? आख़िर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने बरीरह (रज़ि.) से फ़र्माया काश! तुम उसके बारे में अपना फ़ैसला बदल देतीं। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आप मुझे उसका हुक्म फ़र्मा रहे हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मैं सिर्फ़ सिफ़ारिश कर रहा हूँ। उन्होंने इस पर कहा कि मुझे मुग़ीष़ के पास रहने की ख़्वाहिश नहीं है। (राजेअ़ : 5280)

٥٢٨٣- حدثني مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ زَوْجَ بَرِيرَةَ كَانَ عَبْدًا يُقَالُ لَهُ مُغِيثٌ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَطُوفُ خَلْفَهَا يَبْكِي وَدُمُوعُهُ تَسِيلُ عَلَى لِحْيَتِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعَبَّاسٍ: ((يَا عَبَّاسُ أَلاَ تَعْجَبُ مِنْ حُبِّ مُغِيثٍ بَرِيرَةَ، وَمِنْ بُغْضِ بَرِيرَةَ مُغِيثًا)). فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((لَوْ رَاجَعْتِهِ)) قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، تَأْمُرُنِي. قَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا أَشْفَعُ)). قَالَتْ لاَ حَاجَةَ لِي فِيهِ.

[راجع: ٥٢٨٠]

बाब : 17

١٧- باب

5284. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें ह़कम ने, उन्हें इब्राहीम नख़ई ने, उन्हें अस्वद ने कि आइशा (रज़ि.) ने बरीरह (रज़ि.) को ख़रीदने का इरादा किया लेकिन उनके मालिकों ने कहा कि वो इसी शर्त पर उन्हें बेच सकते हैं कि बरीरह का तर्का हम लें और उनके साथ विलाअ (आज़ादी के बाद) उन्हीं से क़ायम हो। आइशा (रज़ि.) ने जब उसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि उन्हें ख़रीदकर आज़ाद कर दो तर्का तो उसी को मिलेगा जो लौण्डी ग़ुलाम को आज़ाद करे और विलाअ भी उसी के साथ क़ायम हो सकती है जो आज़ाद करे और नबी करीम (ﷺ) के सामने गोश्त लाया गया फिर

٥٢٨٤- حدثنا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ أَنَّ عَائِشَةَ أَرَادَتْ أَنْ تَشْتَرِي بَرِيرَةَ فَأَبَى مَوَالِيهَا إِلاَّ أَنْ يَشْتَرِطُوا الْوَلاَءَ، فَذَكَرَتْ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ:((اشْتَرِيهَا وَأَعْتِقِيهَا، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). وَأُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِلَحْمٍ، فَقِيلَ: إِنَّ هَذَا مَا تُصُدِّقَ عَلَى

मियाँ–बीवी से क़सम खिलवाई और फिर दोनों में जुदाई करा दी। (राजेअ : 4748)

قذف امرأته فأحلفهما النبيُّ ﷺ ثم فرّق بينهما. [راجع: ٤٧٤٨]

बाब : 28 लिआन की इब्तिदा मर्द करेगा (फिर औरत)

٢٨- باب يَبْدَأُ الرَّجُلُ بِالتَّلاَعُنِ

5307. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन हस्सान ने, कहा कि हमसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि हिलाल बिन उमय्या ने अपनी बीवी पर तोह्मत लगाई, फिर वो आए और गवाही दी। नबी करीम (ﷺ) ने उस वक़्त फ़र्माया, अल्लाह ख़ूब जानता है कि तुममें से एक झूठा है, तो क्या तुममें से कोई (जो वाक़ई गुनाह का मुर्तकिब हुआ है) रुजूअ करेगा? उसके बाद उनकी बीवी खड़ी हुईं और उन्होंने गवाही दी। अपने बरी होने की। (राजेअ : 2671)

٥٣٠٧- حدثني مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ هِلاَلَ بْنَ أُمَيَّةَ قَذَفَ امْرَأَتَهُ فَجَاءَ فَشَهِدَ وَالنَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ اللهَ يَعْلَمُ أَنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ، فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ؟)) ثُمَّ قَامَتْ فَشَهِدَتْ. [راجع: ٢٦٧١]

तशरीह : बाब और हदीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है। हदीष़ से ये निकला कि पहले मर्द से गवाही लेनी चाहिये। इमाम शाफ़िई और अकष़र उलमा का यही क़ौल है। अगर औरत से पहले गवाही ली जाए तब भी लिआन दुरुस्त हो जाएगा। कहते हैं उस औरत ने पाँचवीं बार में ज़रा ताम्मुल किया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा हम समझे कि वो अपने क़सूर का इक़रार करेगी मगर फिर कहने लगी मैं अपनी क़ौम को सारी उम्र के लिये ज़लील नहीं कर सकती और उसने पाँचवीं बार भी क़सम खाकर लिआन कर दिया।

बाब 29 : लिआन और लिआन के बाद तलाक़ देने का बयान

٢٩- باب اللِّعَانِ، وَمَنْ طَلَّقَ بَعْدَ اللِّعَانِ

5308. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उन्हें सहल बिन सअद साएदी ने ख़बर दी कि उवैमिर अज्लानी, आसिम बिन अदी अंसारी के पास आए और उनसे कहा कि आसिम आपका क्या ख़्याल है कि एक शख़्स अगर अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को देखे तो क्या उसे क़त्ल कर देगा लेकिन फिर आप लोग उसे भी क़त्ल कर देंगे। आख़िर उसे क्या करना चाहिये? आसिम, मेरे लिये ये मसला पूछ दो। चुनाँचे आसिम (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये मसला पूछा। आँहज़रत (ﷺ) ने इस तरह के सवालात को नापसंद फ़र्माया और इज़्हारे नागवारी किया। आसिम (रज़ि.) ने इस सिलसिले में आँहज़रत (ﷺ) से जो कुछ सुना उसका बहुत अष़र लिया। फिर जब घर वापस आए

٥٣٠٨- حدثنا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ السَّاعِدِيَّ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُوَيْمِرًا الْعَجْلاَنِيَّ جَاءَ إِلَى عَاصِمِ بْنِ عَدِيٍّ الأَنْصَارِيِّ فَقَالَ لَهُ: يَا عَاصِمُ أَرَأَيْتَ رَجُلاً وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً أَيَقْتُلُهُ فَتَقْتُلُونَهُ، أَمْ كَيْفَ يَفْعَلُ؟ سَلْ لِي يَا عَاصِمُ عَنْ ذَلِكَ، فَسَأَلَ عَاصِمٌ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ذَلِكَ، فَكَرِهَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَسَائِلَ وَعَابَهَا حَتَّى كَبُرَ عَلَى عَاصِمٍ مَا سَمِعَ مِنْ

हाँक ले जाना जाइज़ दुरुस्त है।

5492. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्हें अम्र ने ख़बर दी, उनसे अबुन् नज़्र ने बयान किया, उनसे क़तादा के गुलाम नाफ़ेअ और तवामा के गुलाम अबू सालेह ने कि उन्होंने हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं मक्का और मदीना के दरम्यान रास्ते में नबी करीम (ﷺ) के साथ था। दूसरे लोग तो एहराम बाँधे हुए थे लेकिन मैं एहराम में नहीं था और एक घोड़े पर सवार था। मैं पहाड़ों पर चढ़ने का बड़ा आदी था फिर अचानक मैंने देखा कि लोग ललचाई हुई नज़रों से कोई चीज़ देख रहे हैं। मैंने जो देखा तो एक गोरख़र था। मैंने उनसे पूछा कि ये क्या है? लोगों ने कहा हमें मा'लूम नहीं! मैंने कहा कि ये तो गोरख़र है। लोगों ने कहा कि जो तुमने देखा है वही है। मैं अपना कोड़ा भूल गया था इसलिये उनसे कहा कि मुझे मेरा कोड़ा दे दो लेकिन उन्होंने कहा कि हम इसमें तुम्हारी कोई मदद नहीं करेंगे (क्योंकि हम मुहरिम हैं) मैंने उतरकर ख़ुद कोड़ा उठाया और उसके पीछे से उसे मारा, वो वहीं गिर गया फिर मैंने उसे ज़िब्ह किया और अपने साथियों के पास उसे लेकर आया। मैंने कहा कि अब उठो और उसे उठाओ, उन्होंने कहा कि हम इसे नहीं छुएँगे। चुनाँचे मैं ही उसे उठाकर उनके पास लाया। कुछ ने तो उसका गोश्त खाया लेकिन कुछ ने इंकार कर दिया फिर मैंने उनसे कहा कि अच्छा मैं अब तुम्हारे लिये आँहज़रत (ﷺ) से रुकने की दरख़्वास्त करूँगा। मैं आँहज़रत (ﷺ) के पास पहुँचा और आपसे वाक़िया बयान किया। आपने फ़र्माया कि तुम्हारे पास उसमें से कुछ बाक़ी बचा है? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ। फ़र्माया खाओ क्योंकि ये एक खाना है जो अल्लाह तआला ने तुमको खिलाया है। (राजेअ : 1521)

٥٤٩٢ - حدَّثنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنَا عَمْرٌو أَنَّ أَبَا النَّضْرِ حَدَّثَهُ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ وَأَبِي صَالِحٍ مَوْلَى التَّوْأَمَةِ سَمِعْتُ أَبَا قَتَادَةَ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِيمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ وَهُمْ مُحْرِمُونَ وَأَنَا رَجُلٌ حِلٌّ عَلَى فَرَسٍ، وَكُنْتُ رَقَّاءً عَلَى الْجِبَالِ، فَبَيْنَا أَنَا عَلَى ذَلِكَ إِذْ رَأَيْتُ النَّاسَ مُتَشَوِّفِينَ لِشَيْءٍ، فَذَهَبْتُ أَنْظُرُ فَإِذَا هُوَ حِمَارُ وَحْشٍ، فَقُلْتُ لَهُمْ: مَا هَذَا؟ قَالُوا: لاَ نَدْرِي، قُلْتُ: هُوَ حِمَارٌ وَحْشِيٌّ، فَقَالُوا: هُوَ مَا رَأَيْتَ. وَكُنْتُ نَسِيتُ سَوْطِي، فَقُلْتُ لَهُمْ : نَاوِلُونِي سَوْطِي فَقَالُوا: لاَ نُعِينُكَ عَلَيْهِ، فَنَزَلْتُ فَأَخَذْتُهُ، ثُمَّ ضَرَبْتُ فِي أَثَرِهِ، فَلَمْ يَكُنْ إِلاَّ ذَاكَ حَتَّى عَقَرْتُهُ، فَأَتَيْتُ إِلَيْهِمْ فَقُلْتُ لَهُمْ: قُومُوا فَاحْتَمِلُوا قَالُوا : لاَ نَمَسُّهُ، حَتَّى جِئْتُهُمْ بِهِ فَأَبَى بَعْضُهُمْ وَأَكَلَ بَعْضُهُمْ، فَقُلْتُ : أَنَا أَسْتَوْقِفُ لَكُمُ النَّبِيَّ ﷺ فَأَدْرَكْتُهُ، فَحَدَّثْتُهُ الْحَدِيثَ. فَقَالَ لِي ((أَبَقِيَ مَعَكُمْ شَيْءٌ مِنْهُ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ: ((كُلُوا فَهُوَ طُعْمٌ أَطْعَمَكُمُوهَا اللهُ)).

[راجع: ١٥٢١]

तश्रीह : हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) ने अपने को शिकार के लिये पहाड़ों पर चढ़ने का आदी बताया है। यही बाब से मुताबक़त है। तवामा वो लड़की जो जुड़वाँ पैदा हो। ये उमय्या बिन ख़ल्फ़ की बेटी थी जो अपने भाई के साथ जुड़वा पैदा हुई थी। इसलिये उसका यही नाम पड़ गया।

बाब 12 : सूरह माइदह की उस आयत की तफ़्सीर कि, हलाल किया गया है तुम्हारे लिये

١٢ - باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿أُحِلَّ

दरिया का शिकार खाना

لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ﴾

وَقَالَ عُمَرُ: صَيْدُهُ مَا اصْطِيدَ، وَطَعَامُهُ مَا رُمِيَ بِهِ. وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: الطَّافِي حَلاَلٌ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : طَعَامُهُ مَيْتَتُهُ، إِلاَّ مَا قَذِرْتَ مِنْهَا وَالْجِرِيُّ لاَ تَأْكُلُهُ الْيَهُودُ، وَنَحْنُ نَأْكُلُهُ وَقَالَ شُرَيْحٌ صَاحِبُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كُلُّ شَيْءٍ فِي الْبَحْرِ مَذْبُوحٌ. وَقَالَ عَطَاءٌ : أَمَّا الطَّيْرُ فَأَرَى أَنْ يَذْبَحَهُ وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: قُلْتُ لِعَطَاءٍ صَيْدُ الأَنْهَارِ وَقِلاَتِ السَّيْلِ أَصَيْدُ بَحْرٍ هُوَ؟ قَالَ: نَعَمْ : ثُمَّ تَلاَ ﴿هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ. وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ، وَمِنْ كُلٍّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا﴾ وَرَكِبَ الْحَسَنُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ عَلَى سَرْجٍ مِنْ جُلُودِ كِلاَبِ الْمَاءِ. وَقَالَ الشَّعْبِيُّ : لَوْ أَنَّ أَهْلِي أَكَلُوا الضَّفَادِعَ لأَطْعَمْتُهُمْ. وَلَمْ يَرَ الْحَسَنُ بِالسُّلَحْفَاةِ بَأْسًا. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: كُلْ مِنْ صَيْدِ الْبَحْرِ، وَ إِنْ صَادَهُ نَصْرَانِيٌّ أَوْ يَهُودِيٌّ أَوْ مَجُوسِيٌّ. وَقَالَ أَبُو الدَّرْدَاءِ فِي الْمُرْيِ: ذَبَحَ الْخَمْرَ النِّينَانُ وَالشَّمْسُ.

उमर (रज़ि.) ने कहा कि दरिया का शिकार वो है जो तदबीर या'नी जाल वग़ैरह से शिकार किया जाए और, उसका खाना वो है जिसे पानी ने बाहर फेंक दिया हो। अबूबक्र (रज़ि .) ने कहा कि जो दरिया का जानवर मरकर पानी के ऊपर तैरकर आए वो ह़लाल है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि, उसका खाना से मुराद दरिया का मुरदार है, सिवा उसके जो बिगड़ गया हो। बाम, झींगा मछली को यहूदी नहीं खाते, लेकिन हम (फ़राग़त से) खाते हैं, और नबी करीम (ﷺ) के स़हाबी शुरैह़ (रज़ि.) ने कहा कि हर दरियाई जानवर मज़्बूह़ा है, उसे ज़िब्ह़ की ज़रूरत नहीं। अ़ता ने कहा कि दरियाई परिन्दे के बारे में मेरी राय है कि उसे ज़िब्ह़ करे। इब्ने जुरैज ने कहा कि मैंने अ़ता बिन अबी रिबाह़ से पूछा, क्या नहरों का शिकार और सैलाब के गढ़ों का शिकार भी दरियाई शिकार है (कि उसका खाना बिला ज़िब्ह़ जाइज़ हो) कहा कि हाँ। फिर उन्होंने (दलील के तौर पर) सूरह नह़ल की इस आयत की तिलावत की कि, ये दरिया बहुत ज़्यादा मीठा है और ये दूसरा दरिया बहुत ज़्यादा खारा है और तुम उनमें से हर एक से ताज़ा गोश्त (मछली) खाते हो और ह़सन (रज़ि.) दरियाई कुत्ते के चमड़े से बनी हुई ज़ीन पर सवार हुए और शअ़बी ने कहा कि अगर मेरे घर वाले मेंढक खाएँ तो मैं भी उनको खिलाऊँगा और ह़सन बस़री कछुआ खाने में कोई ह़र्ज नहीं समझते थे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि दरियाई शिकार खाओ ख़्वाह नस़रानी ने किया हो या किसी यहूदी ने किया हो या मजूसी ने किया हो और अबू दर्दा (रज़ि.) ने कहा कि शराब में मछली डाल दें और सूरज की धूप उस पर पड़े तो फिर वो शराब नहीं रहती।

तश्रीह़ : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) इस अष़र को इसलिये लाए कि मछली के शराब में डालने से वही अष़र होता है जो शराब में नमक डालने से क्योंकि फिर शराब की स़िफ़त उसमें बाक़ी नहीं रह जाती। ये उन लोगों के मज़हब पर मब्नी है जो शराब का सिर्का बनाना दुरुस्त जानते हैं। कुछ ने मरी को मकरूह रखा है। मरी उसको कहते हैं कि शराब में नमक और मछली डालकर धूप में रख दें। क़स्तलानी ने कहा कि यहाँ इमाम बुख़ारी (रह़.) ने शाफ़िइया का ख़िलाफ़ किया है क्योंकि इमाम बुख़ारी (रह़.) किसी ख़ास़ मुज्तहिद की पैरवी करने वाले नहीं हैं बल्कि जिस क़ौल की दलील क़वी होती है उसको ले लेते हैं। आजकल अकष़र मुक़ल्लिदीन ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) को शाफ़ई कह कर गिराते हैं। उनकी ये हफ़्वात हर्गिज़ लायक़े तवज्जह नहीं हैं। इमाम बुख़ारी (रह़.) पुख़्ता अहले ह़दीष़ और किताबो सुन्नत को मानने वाले, तक़्लीदे जामिद से कोसों दूर ख़ुद फ़क़ीहे आज़म व मुज्तहिदे मुअ़ज़्ज़म थे।

ह़ज़रत इमाम शअ़बी का नाम आ़मिर बिन शुरह़बील बिन अ़ब्द अबू अ़म्र शअ़बी ह़िमयरी है। मुष़्बत व षि़क़ा व इमाम बुज़ुर्ग मर्तबा ताबेई हैं। पाँच सौ स़ह़ाबा किराम को देखा। अड़तालीस (48) स़ह़ाबा से अह़ादीष़ रिवायत की हैं। सन 17 हिजरी में पैदा हुए और सन 107 हिजरी के लगभग में वफ़ात पाई। इमाम शअ़बी ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) के सबसे बड़े उस्ताद और इब्राहीम नख़ई के हम अ़स़र हैं। इमाम शअ़बी अह़कामे शरइया में क़यास के क़ाइल न थे। उनके ह़िल्म व करम का ये आ़लम था कि रिश्तेदारी में जिसके बारे में उनको मा'लूम हो जाता कि वो क़र्ज़दार होकर मरे हैं तो उनका क़र्ज़ ख़ुद अदा कर देते। इमाम शअ़बी ने कभी अपने किसी ग़ुलाम व लौण्डी को ज़द व कूब नहीं किया। कूफ़ा के अकष़र उ़लमा के बरख़िलाफ़ ह़ज़रत उ़ष़्मान व ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) दोनों के बारे में अच्छा अ़क़ीदा रखते थे। फ़त्वा देने में निहायत मुह़तात़ थे। उनसे जो मसला पूछा जाता अगर उसके बारे मे उनके पास कोई ह़दीष़ न होती तो ला अदरी मैं नहीं जानता कह दिया करते। आ'मश का बयान है कि एक शख़्स़ ने इमाम शअ़बी से पूछा कि इब्लीस की बीवी का क्या नाम है। इमाम शअ़बी ने कहा कि ज़ाक अ़र्स मा शहित्तुहू मुझे उस शादी में शिर्कत का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ था। एक मर्तबा ख़ुरासान की मुहिम पर क़ुतैबा बिन मुस्लिम बाहली अमीरुल मुजाहिदीन के साथ जिहाद में शरीक हुए और कार हाय नुमायाँ अंजाम दिये। अ़ब्दुल मलिक ने इमाम शअ़बी को शाहे रोम के पास सफ़ीर बनाकर भेजा था। (तज़्किरतुल हुफ़्फ़ाज़ : जिल्द 1 पेज नं. 45 त़मीम)

5493. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या क़त्त़ान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने कहा कि मुझे अ़म्र ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम ग़ज़्व-ए-ख़ब्त़ में शरीक थे, हमारे अमीरुल जैश ह़ज़रत अबू उ़बैदह (रज़ि.) थे। हम सब भूख से बेताब थे कि समुन्दर ने एक मुर्दा मछली बाहर फेंकी। ऐसी मछली देखी नहीं गई थी। उसे अ़म्बर कहते थे, हमने वो मछली पन्द्रह दिन तक खाई। फिर अबू उ़बैदह (रज़ि.) ने उसकी एक हड्डी लेकर (खड़ी कर दी) तो वो इतनी ऊँची थी कि एक सवार उसके नीचे से गुज़र गया। (राजेअ़ : 2483)

٥٤٩٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: غَزَوْنَا جَيْشَ الْخَبَطِ، أَبُو عُبَيْدَةَ، فَجُعْنَا جُوعًا شَدِيدًا، فَأَلْقَى الْبَحْرُ حُوتًا مَيِّتًا لَمْ يُرَ مِثْلُهُ يُقَالُ لَهُ الْعَنْبَرُ، فَأَكَلْنَا مِنْهُ نِصْفَ شَهْرٍ، فَأَخَذَ أَبُو عُبَيْدَةَ عَظْمًا مِنْ عِظَامِهِ فَمَرَّ الرَّاكِبُ تَحْتَهُ.
[راجع: ٢٤٨٣]

ये ग़ज़्वा सन 8 हिजरी में किया गया था जिसमें भूख की वजह से लोगों ने पत्ते खाए, इसीलिये उसे जैशुल ख़ब्त़ कहा गया।

5494. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बरदी, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने तीन सौ सवार रवाना किये। हमारे अमीर अबू उ़बैदह (रज़ि.) थे। हमें क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िला की नक़्ल व ह़रकत पर नज़र रखनी थी फिर (खाना ख़त्म हो जाने की वजह से) हम सख़्त भूख और फ़ाक़ा की ह़ालत में थे। नौबत यहाँ तक पहुँच गई थी कि हम सल्लम के पत्ते (ख़ब्त़) खाकर वक़्त गुज़ारते थे। इसीलिये इस मुहिम का नाम जैशुल ख़ब्त़ पड़ गया और समुन्दर ने एक मछली बाहर डाल दी। जिसका नाम अ़म्बर

٥٤٩٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو وَقَالَ: سَمِعْتُ جَابِرًا يَقُولُ: بَعَثَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلاَثَمِائَةِ رَاكِبٍ، وَأَمِيرُنَا أَبُوعُبَيْدَةَ نَرْصُدُ عِيرًا لِقُرَيْشٍ، فَأَصَابَنَا جُوعٌ شَدِيدٌ حَتَّى أَكَلْنَا الْخَبَطَ فَسُمِّيَ جَيْشَ الْخَبَطِ، وَأَلْقَى الْبَحْرُ حُوتًا يُقَالُ لَهُ الْعَنْبَرُ : فَأَكَلْنَا نِصْفَ شَهْرٍ، وَادَّهَنَّا بِوَدَكِهِ حَتَّى صَلَحَتْ

और (ज़िब्ह करते वक़्त) जानवर पर अल्लाह का नाम लिया हो तो उसे खाओ अल्बत्ता (ज़िब्ह करने वाला आला) दांत और नाख़ुन न होना चाहिये। दांत इसलिये नहीं कि ये हड्डी है (और हड्डी से ज़िब्ह करना जाइज़ नहीं है) और नाख़ुन इसलिये नहीं कि हब्शी लोग उनको छुरी की जगह इस्ते'माल करते हैं। (राजेअ: 2488)

وَسَأُخْبِرُكُمْ عَنْهُ أَمَّا السِّنُّ فَعَظْمٌ وَأَمَّا الظُّفُرُ فَمُدَى الْحَبَشَةِ)).

[راجع: ٢٤٨٨]

इस बाब का मतलब इस लफ़्ज़ से निकलता है **व ज़ुकिरस्मुल्लाहि अलैहि** हनफ़िया ने उस नाख़ून और दांत से ज़िब्ह जाइज़ रखा है जो आदमी के बदन से जुदा हो मगर ये सहीह नहीं है।

बाब 16 : वो जानवर जिनको थानों और बुतों के नाम पर ज़िब्ह किया गया हो उनका खाना हराम है

١٦- باب مَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَالأَصْنَامِ

5499. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ या'नी इब्नुल मुख़्तार ने बयान किया, उन्हें मूसा बिन उक़्बा ने ख़बर दी, कहा कि मुझे सालिम ने ख़बर दी, उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना और उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कि आँहुज़ूर (ﷺ) की ज़ैद बिन अम्र बिन नौफ़िल से मुक़ामे बलदह के नशीबी हिस्सा में मुलाक़ात हुई। ये आप पर वह्य नाज़िल होने से पहले का ज़माना है। आपने वो दस्तरख़्वान जिसमें गोश्त था जिसे उन लोगों ने आपकी ज़ियाफ़त के लिये पेश किया था मगर उन पर ज़िब्ह के वक़्त बुतों का नाम लिया गया था, आपने उसे ज़ैद बिन अम्र के सामने वापस फ़र्मा दिया और आपने फ़र्माया कि तुम जो जानवर अपने बुतों के नाम पर ज़िब्ह करते हो मैं उन्हें नहीं खाता, मैं सिर्फ़ उसी जानवर का गोश्त खाता हूँ जिस पर (ज़िब्ह करते वक़्त) अल्लाह का नाम लिया गया हो।

٥٤٩٩- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، يَعْنِي ابْنَ الْمُخْتَارِ أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ لَقِيَ زَيْدَ بْنَ عَمْرِو ابْنِ نُفَيْلٍ بِأَسْفَلِ بَلْدَحٍ وَذَاكَ قَبْلَ أَنْ يُنْزَلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ الْوَحْيُ، فَقَدَّمَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ سُفْرَةً فِيهَا لَحْمٌ، فَأَبَى أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا، ثُمَّ قَالَ: ((إِنِّي لاَ آكُلُ مِمَّا تَذْبَحُونَ عَلَى أَنْصَابِكُمْ، وَلاَ آكُلُ إِلاَّ مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ)).

तश्रीह : क़ुर्आनी दलील **व मा उहिल्ल लिग़ैरिल्लाहि** (अल माइद : 3) से उन तमाम जानवरों का गोश्त हराम हो जाता है जो जानवर ग़ैरुल्लाह के नाम पर तक़र्रुब के लिये नज़्र कर दिये जाते हैं। उसी में मदार का बकरा और सय्यद सालार के नाम पर छोड़ा हुआ जानवर भी दाख़िल है जैसा कि अहले बिदअत का मा'मूल है। बलदह ह्रिजाज में मक्का के क़रीब एक मुक़ाम है। रिवायत में मज़्कूरा ज़ैद बिन अम्र सईद बिन ज़ैद के वालिद हैं और सईद अशरा मुबश्शरह में से हैं। रज़ियल्लाहु अन्हुम व अरज़ाहुम।

बाब 17 : इस बारे में कि नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद है कि जानवर को अल्लाह ही के नाम पर ज़िब्ह करना चाहिये

١٧- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((فَلْيَذْبَحْ عَلَى اسْمِ اللهِ))

5500. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने, उनसे जुन्दब बिन सुफ़यान

٥٥٠٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ جُنْدَبِ بْنِ

या सअ़द बिन मुआ़ज़ ने उन्हें ख़बर दी कि कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) की एक लौण्डी सल्इ पहाड़ी पर बकरियाँ चराया करती थी। रेवड़ में से एक बकरी मरने लगी तो उसने उसे मरने से पहले पत्थर से ज़िब्ह कर दिया फिर नबी करीम (ﷺ) से उसके बारे में पूछा गया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे खाओ।

جَارِيَةً لِكَعْبِ بْنِ مَالِكٍ كَانَتْ تَرْعَى غَنَمًا بِسَلْعٍ فَأُصِيبَتْ شَاةٌ مِنْهَا، فَأَدْرَكَتْهَا فَذَبَحَتْهَا بِحَجَرٍ، فَسُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((كُلُوهَا)).

बाब और अह़ादीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है।

बाब 20 : इस बारे में कि जानवर को दांत, हड्डी और नाख़ुन से ज़िब्ह न किया जाए

٢٠– باب لاَ يُذَكَّى بِالسِّنِّ وَالْعَظْمِ وَالظُّفُرِ

5506. हमसे क़ुबैसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अ़बाया बिन रिफ़ाअ़ा ने, और उनसे राफ़ेअ़ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि खाओ या'नी (ऐसे जानवर को जिसे ऐसी धारदार चीज़ से ज़िब्ह किया गया हो) जो ख़ून बहा दे। सिवा दांत और नाख़ुन के (या'नी उनसे ज़िब्ह करना दुरुस्त नहीं है) (राजेअ़ : 2488)

٥٥٠٦– حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((كُلْ يَعْنِي – مَا أَنْهَرَ الدَّمَ – إِلاَّ السِّنَّ وَالظُّفُرَ)).
[راجع: ٢٤٨٨]

तश्रीह : बाब की ह़दीष़ में सिर्फ़ दांत और नाख़ुन का ज़िक्र है हड्डी इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस ह़दीष़ के दूसरे त़रीक़ से निकाली जिसमें दांत से ज़िब्ह जाइज़ न होने की ये वजह मज़्कूर है कि वो हड्डी है।

बाब : 21 देहातियों या उनके जैसे (अह़कामे दीन से बेख़बर लोगों) का ज़बीह़ा कैसा है?

٢١– باب ذَبِيحَةِ الأَعْرَابِ وَنَحْوِهِمْ

5507. हमसे मुह़म्मद बिन उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे उसामा बिन ह़फ़्स मदनी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि (गाँव के) कुछ लोग हमारे यहाँ गोश्त (बेचने) लाते हैं और हमें मा'लूम नहीं कि उन्होंने उस पर अल्लाह का नाम भी (ज़िब्ह करते वक़्त) लिया था या नहीं? आपने फ़र्माया कि तुम उन पर खाते वक़्त अल्लाह का नाम लिया करो और खा लिया करो। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ये लोग अभी इस्लाम में नये नये दाख़िल हुए थे। उसकी मुताबअ़त अ़ली ने दरावर्दी से की और उसकी मुताबअ़त अबू ख़ालिद और तुफ़ावी ने की। (राजेअ़ : 2057)

٥٥٠٧– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أُسَامَةُ بْنُ حَفْصٍ الْمَدَنِيُّ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا. أَنَّ قَوْمًا قَالُوا لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ قَوْمًا يَأْتُونَا بِاللَّحْمِ لاَ نَدْرِي أَذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ أَمْ لاَ، فَقَالَ: ((سَمُّوا عَلَيْهِ أَنْتُمْ وَكُلُوهُ)). قَالَتْ: وَكَانُوا حَدِيثِي عَهْدٍ بِالْكُفْرِ. تَابَعَهُ عَلِيٌّ عَنِ الدَّرَاوَرْدِيِّ وَتَابَعَهُ أَبُو خَالِدٍ وَالطُّفَاوِيُّ.[راجع: ٢٠٥٧]

बाब 22 : अहले किताब के ज़बीहे और उन ज़बीहों की चर्बी

٢٢– باب ذَبَائِحِ أَهْلِ الْكِتَابِ

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) फिर उन्होंने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की ह़दीष़ में बताई गई बातों के साथ इतना और ज़्यादा करते थे कि कोई शख़्स़ (दिन दहाड़े) अगर किसी बड़ी पूँजी पर इस त़ौर डाका डालता है कि लोग देखते के देखते रह जाते हैं तो वो मोमिन रहते हुए ये लूटमार नहीं करता। (राजेअ़ : 2475)

الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ كَانَ يُحَدِّثُهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ثُمَّ يَقُولُ : كَانَ أَبُو بَكْرٍ يُلْحِقُ مَعَهُنَّ وَلاَ يَنْتَهِبُ نُهْبَةً ذَاتَ شَرَفٍ يَرْفَعُ النَّاسُ إِلَيْهِ أَبْصَارَهُمْ فِيهَا حِينَ يَنْتَهِبُهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ. [راجع: ٢٤٧٥]

तश्रीह : मत़लब ये है कि उन गुनाहों का इर्तिकाब करने वाला ईमान से बिलकुल महरूम हो जाता है क्योंकि ये गुनाह ईमान की ज़िद (विपरीत) हैं फिर अगर वो तौबा कर ले तो उसके दिल में ईमान लौट आता है और अगर यही काम करता रहे तो वो बेईमान बनकर मरता है। इसकी ताईद वो ह़दीष़ करती है जिसमें फ़र्माया कि **अल्मूमिनु मन अमिनहुन्नासु अ़ला दिमाइहिम व अम्वालिहिम** मोमिन वो है जिसको लोग अपने ख़ून और अपने मालों के लिये अमानतदार समझें, सच है। **ला ईमान लिमन ला अमानत लहू व ला दीन लिमन ला अ़हद लहू औ कमा क़ाल (ﷺ)**

बाब 2 : शराब अंगूर वग़ैरह से भी बनती है

٢- باب الْخَمْرِ مِنَ الْعِنَبِ وَغَيْرِهِ

जैसे खजूर और शहद वग़ैरह से। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये बाब लाकर उन लोगों का रद्द किया जो शराब को अंगूर से ख़ास़ करते हैं और कहते हैं कि अंगूर के सिवा और चीज़ों की शराब इतनी पीनी दुरुस्त है कि नशा न पैदा हो लेकिन इमाम मुह़म्मद ने इस बाब में अपने मज़हब के ख़िलाफ़ किया है और वो अहले ह़दीष़ और इमाम अह़मद और इमाम मालिक और इमाम शाफ़िई और जुम्हूर के मुवाफ़िक़ हो गये हैं। उन्होंने कहा कि जिस चीज़ से नशा पैदा हो वो शराब है। थोड़ी हो या ज़्यादा बिलकुल ह़राम है।

5579. हमसे ह़सन बिन स़ब्बाह़ ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन साबिक़ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने जो मिग़्वल के स़ाह़बज़ादे हैं, बयान किया उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब शराब ह़राम की गई तो अंगूर की शराब मदीना मुनव्वरह में नहीं मिलती थी। (राजेअ़ : 4616)

٥٥٧٩- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ صَبَّاحٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ هُوَ ابْنُ مِغْوَلٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : لَقَدْ حُرِّمَتِ الْخَمْرُ وَمَا بِالْمَدِينَةِ مِنْهَا شَيْءٌ. [راجع: ٤٦١٦]

5580. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू शिहाब अ़ब्दुरब्बिह बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यूनुस ने, उनसे ष़ाबित बिनानी ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जब शराब हम पर ह़राम की गई तो मदीना मुनव्वरह में अंगूर की शराब बहुत कम मिलती थी। आ़म इस्ते'माल की शराब कच्ची और पक्की खजूर से तैयार की जाती थी। (राजेअ़ : 2464)

٥٥٨٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا أَبُو شِهَابٍ عَبْدُ رَبِّهِ بْنُ نَافِعٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: حُرِّمَتْ عَلَيْنَا الْخَمْرُ، حِينَ حُرِّمَتْ، وَمَا نَجِدُ - يَعْنِي بِالْمَدِينَةِ - خَمْرَ الأَعْنَابِ إِلاَّ قَلِيلاً، وَعَامَّةُ خَمْرِنَا الْبُسْرُ وَالتَّمْرُ. [راجع: ٢٤٦٤]

5581. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, कहा उनसे अबू ह़य्यान ने, कहा हमसे आ़मिर ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत

٥٥٨١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ أَبِي حَيَّانَ حَدَّثَنَا عَامِرٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ

उमर (रज़ि.) मिम्बर पर खड़े हुए और कहा अम्मा बअ़द! जब शराब की हुर्मत का हुक्म नाज़िल हुआ तो वो पाँच चीज़ों से बनती थी। अंगूर, खजूर, शहद, गेहूँ और जौ और शराब (ख़म्र) वो है जो अ़क़्ल को ज़ाइल कर दे। (राजेअ़ : 2619)

الله عَنْهُمَا قَامَ عُمَرُ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: أَمَّا بَعْدُ، نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ وَهْيَ مِنْ خَمْسَةٍ: الْعِنَبِ، وَالتَّمْرِ، وَالْعَسَلِ، وَالْحِنْطَةِ، وَالشَّعِيرِ. وَالْخَمْرُ مَا خَامَرَ الْعَقْلَ.

[راجع: ٢٦١٩]

तश्रीह : इस ह़दीष़ से मसाइल पेशआमदा की तफ़्सीलात का मिम्बर पर बयान करना भी ष़ाबित हुआ और ज़ाहिर है कि ये सामेईन की मादरी ज़ुबान में मुनासिब है नेज़ ह़म्द व नअ़त के बाद लफ़्ज़ अम्मा बअ़द! का इस्ते'माल करना भी उससे ष़ाबित हुआ। (फ़त्हुल बारी) सामेईन की मादरी ज़ुबान में अ़रबी ख़ुत्बा पढ़कर इसका तर्जुमा सुनाना ज़रूरी है वरना ख़ुत्बा का मक़्सद फ़ौत हो जाएगा।

बाब 3 : शराब की हुर्मत जब नाज़िल हुई तो वो कच्ची और पक्की खजूरों से तैयार की जाती थी

٣- باب نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ وَهْيَ مِنَ الْبُسْرِ وَالتَّمْرِ

5582. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मालिक बिन अनस ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लह़ा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अबू उ़बैदह, अबू त़लह़ा और उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) को कच्ची और पक्की खजूर से तैयार की हुई शराब पिला रहा था कि एक आने वाले ने आकर बताया कि शराब ह़राम कर दी गई है। उस वक़्त ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने कहा कि अनस उठो और शराब को बहा दो चुनाँचे मैंने उसे बहा दिया। (राजेअ़ : 2464)

٥٥٨٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ الله قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ الله بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ الله عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ أَسْقِي أَبَا عُبَيْدَةَ وَأَبَا طَلْحَةَ وَأُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ مِنْ فَضِيخِ زَهْوٍ وَتَمْرٍ فَجَاءَهُمْ آتٍ فَقَالَ : إِنَّ الْخَمْرَ قَدْ حُرِّمَتْ. فَقَالَ: أَبُو طَلْحَةَ قُمْ يَا أَنَسُ فَأَهْرِقْهَا، فَأَهْرَقْتُهَا. [راجع: ٢٤٦٤]

तश्रीह : ता'मील के लिये मदीना का ये ह़ाल था कि शराब बारिश के पानी की त़रह़ मदीना की गलियों में बह रही थी अल्अहादीष़ुल्वारिदतु अ़न अनसिन व ग़ैरूहु अ़ला सिह्हतिहा व कष़्रतिहा तब्तिलु मज़्हबल्कूफ़ीयीन अल्क़ाइलीन बिअन्नल्खम्र ला यकूनु इल्ला मिनल्इनबि व मा कान मिन ग़ैरिही ला युसम्मा खम्रन व ला यतानवलुहू इस्मुल्खम्रि व हुव क़ौलु मुखालिफ़िन लिलुग़तिल्अरबि व लिसुन्नतिस्सह़ीह़ति व लिस्सह़ाबति (फ़त्हुल्बारी)। या'नी क़ुर्तुबी ने कहा कि ह़ज़रत अनस (रज़ि.) वग़ैरह से जो स़ह़ीह़ रिवायात ह़ज़रत से नक़ल हुई हैं वो कूफ़ियों के मज़हब को बात़िल ठहराती हैं जो कहते है कि ख़म्र सिर्फ़ अंगूर ही से कशीद कर्दा शराब को कहा जाता है और जो उसके अ़लावा चीज़ों से तैयार की जाए वो ख़म्र नहीं है। अहले कूफ़ा का ये क़ौल लुग़ते अ़रब और सुन्नते स़ह़ीह़ा और स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) के ख़िलाफ़ है।

5583. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने कि मैंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक क़बीला में खड़ा मैं अपने चचाओं को खजूर की शराब पिला रहा था उनमें

٥٥٨٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسًا قَالَ : كُنْتُ قَائِمًا عَلَى الْحَيِّ أَسْقِيهِمْ عُمُومَتِي، وَأَنَا

नहीं लेना चाहिये

الإِنَاء

5630. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कषीर ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुममें से कोई शख़्स पानी पिये तो (पीने के) बर्तन में (पानी पीते वक़्त) सांस न ले और जब तुममें से कोई शख़्स पेशाब करे तो दाहिने हाथ को ज़कर पर न फेरे और जब इस्तिंजा करे तो दाहिने हाथ से न करे।

(राजेअ: 153)

٥٦٣٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا شَرِبَ أَحَدُكُمْ فَلاَ يَتَنَفَّسْ فِي الإِنَاءِ وَإِذَا بَالَ أَحَدُكُمْ فَلاَ يَمْسَحْ ذَكَرَهُ بِيَمِينِهِ وَإِذَا تَمَسَّحَ أَحَدُكُمْ فَلاَ يَتَمَسَّحْ بِيَمِينِهِ)).

[راجع: ١٥٣]

उनकी ख़िदमात के लिये अल्लाह ने बायाँ हाथ बनाया है और सीधा हाथ खाने–पीने के लिये और तमाम ज़रूरी कामों के लिये है, इसलिये हर हाथ से उसकी हैषियत का काम लेना चाहिये बर्तन में सांस लेना त़िब्ब की रू से भी नुक़्सानदेह है। इस त़रह़ मेअ़दा के बुख़ारात इसमें दाख़िल हो सकते हैं (फ़त्हुलबारी)

बाब 26 : पानी दो या तीन सांस में पीना चाहिये

٢٦- باب الشُّرْبِ بِنَفَسَيْنِ أَوْ ثَلاَثَةٍ

5631. हमसे अबू आ़सिम और अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ड़र्वा बिन षाबित ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे षुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, बयान किया कि ह़ज़रत अनस (रज़ि.) दो या तीन सांसों में पानी पीते थे और कहा कि रसूले करीम (ﷺ) तीन सांसों में पानी पीते थे।

٥٦٣١- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ أَبُو نُعَيْمٍ قَالاَ: حَدَّثَنَا عَزْرَةُ بْنُ ثَابِتٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كَانَ أَنَسٌ يَتَنَفَّسُ فِي الإِنَاءِ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا وَزَعَمَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَتَنَفَّسُ ثَلاَثًا.

तशरीह : त़बरानी की रिवायत में है कि जब आपके पास पानी का प्याला आता तो पहले आप बिस्मिल्लाह पढ़कर पीना शुरू करते, दरम्यान में तीन सांस लेते आख़िर में अल्ह़म्दुलिल्लाह पढ़ते और फ़र्माया कि पीने के इब्तिदा में बिस्मिल्लाह पढ़ो आख़िर में अल्ह़म्दु लिल्लाह कहो (फ़त्हुल बारी)

बाब 27 : सोने के बर्तन में खाना और पीना ह़राम है

٢٧- باب الشُّرْبِ فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ

5632. हमसे ह़फ़्स़ बिन ड़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कीम बिन अबी लैला ने, उन्होंने बयान किया कि ह़ुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) मदाइन में थे। उन्होंने पानी मांगा तो एक देहाती ने उनको चँदी के बर्तन में पानी लाकर दिया, उन्होंने बर्तन को उस पर फेंक मारा फिर कहा मैंने बर्तन स़िर्फ़ इस वजह से फेंका है कि उस शख़्स़ को मैं इससे मना कर चुका था लेकिन ये बाज़ न आया और रसूले करीम (ﷺ) ने हमें रेशम व दीबा के पहनने से और सोने और चाँदी के बर्तन में खाने–पीने से मना किया था और आपने

٥٦٣٢- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: كَانَ حُذَيْفَةُ بِالْمَدَائِنِ، فَاسْتَسْقَى، فَأَتَاهُ دِهْقَانٌ بِقَدَحِ فِضَّةٍ، فَرَمَاهُ بِهِ فَقَالَ: إِنِّي لَمْ أَرْمِهِ إِلاَّ أَنِّي نَهَيْتُهُ فَلَمْ يَنْتَهِ وَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَانَا عَنِ الْحَرِيرِ وَالدِّيبَاجِ وَالشُّرْبِ فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَقَالَ: ((هُنَّ لَهُمْ

ग़ालिब आ गया है और उसे क़ब्र तक पहुँचा के रहेगा। आपने फ़र्माया कि फिर ऐसा ही होगा। (राजेअ : 3618)

شَيْخٍ كَبِيرٍ تُزِيرُهُ الْقُبُورُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((فَنَعَمْ إِذًا)). [راجع: ٣٦١٨]

तश्रीह: बूढ़े के मुँह से बजाय कलिमात शुक्र के नाशुक्री का लफ़्ज़ निकला तो आपने भी ऐसा ही फ़र्माया और जो आपने फ़र्माया वही हुआ। एक तरफ़ आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़ुश अख़्लाक़ी देखिए कि आप एक देहाती की एयादत के लिये तशरीफ़ ले गये और आपने अपनी पाकीज़ा दुआओं से उसे नवाज़ा। सच है इन्नका लअ़ला ख़ुलुक़िन अ़ज़ीम।

बाब 11 : मुशिरक की एयादत भी जाइज़ है

١١- باب عِيَادَةِ الْمُشْرِكِ

5657. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि एक यहूदी लड़का (अ़ब्दूस नामी) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत किया करता था वो बीमार हुआ तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उसकी मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ लाए आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस्लाम क़ुबूल कर ले चुनाँचे उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया अपने वालिद से कि जब अबू त़ालिब की वफ़ात का वक़्त क़रीब हुआ तो आँह़ज़रत (ﷺ) उनके पास मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ ले गये। (राजेअ : 1356)

٥٦٥٧- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّ غُلاَمًا لِيَهُودَ كَانَ يَخْدُمُ النَّبِيَّ ﷺ فَمَرِضَ فَأَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُهُ فَقَالَ ((أَسْلِمْ)) فَأَسْلَمَ. وَقَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ لَمَّا حُضِرَ أَبُو طَالِبٍ جَاءَهُ النَّبِيُّ ﷺ. [راجع: ١٣٥٦]

तश्रीह: दूसरी रिवायत में यूँ है कि उसने अपने बाप की त़रफ़ देखा बाप ने कहा कि बेटा अबुल क़ासिम (ﷺ) जो फ़र्मा रहे हैं वो मान ले चुनाँचे वो मुसलमान हो गया। ये ह़दीष़ ऊपर गुज़र चुकी है ह़ज़रत इमाम बुख़ारी ने इस बाब में इन अह़ादीष़ को लाकर ये ष़ाबित किया है कि अपने नौकरों और ग़ुलामों तक की अगर वो बीमार हों एयादत करना सुन्नत है।

बाब 12 : कोई शख़्स किसी मरीज़ की एयादत के लिये गया और वहीं नमाज़ का वक़्त हो गया तो वहीं लोगों के साथ बाजमाअ़त नमाज़ अदा करे

١٢- باب إِذَا عَادَ مَرِيضًا فَحَضَرَتِ الصَّلاَةُ فَصَلَّى بِهِمْ جَمَاعَةً

5658. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि कुछ स़ह़ाबा नबी करीम (ﷺ) की आपके एक मर्ज़ के दौरान मिज़ाजपुर्सी करने आए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें बैठकर नमाज़ पढ़ाई लेकिन स़ह़ाबा खड़े होकर ही नमाज़ पढ़ रहे थे। इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें बैठने का इशारा किया। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इमाम इसलिये है कि उसकी

٥٦٥٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنِي يَحْيَى حَدَّثَنَا هِشَامٌ، قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهِ نَاسٌ يَعُودُونَهُ فِي مَرَضِهِ فَصَلَّى بِهِمْ جَالِسًا فَجَعَلُوا يُصَلُّونَ قِيَامًا فَأَشَارَ إِلَيْهِمْ أَنِ اجْلِسُوا فَلَمَّا فَرَغَ قَالَ : ((إِنَّ الإِمَامَ لَيُؤْتَمُّ بِهِ فَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا

अस्अलुकल अफ़ुव्व वल आफ़िया ऐ अल्लाह! मैं तुझसे आफ़ियत के लिये सवाल करता हूँ।

5724. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उन्होंने कहा उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे फ़ातिमा बिन्ते मुंज़िर ने बयान किया कि हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के यहाँ जब कोई बुख़ार में मुब्तला औरत लाई जाती थी तो उसके लिये दुआ करतीं और उसके गिरेबान में पानी डालतीं वो बयान करती थीं कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया था कि बुख़ार को पानी से ठण्डा करो।

٥٧٢٤- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ الْمُنْذِرِ أَنَّ أَسْمَاءَ بِنْتَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَتْ إِذَا أُتِيَتْ بِالْمَرْأَةِ قَدْ حُمَّتْ تَدْعُو لَهَا أَخَذَتِ الْمَاءَ فَصَبَّتْهُ بَيْنَهَا وَبَيْنَ جَيْبِهَا وَقَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَأْمُرُنَا أَنْ نَبْرُدَهَا بِالْمَاءِ.

तशरीह : एक रिवायत में है ज़मज़म के पानी से ठण्डा करो मुराद वो बुख़ार है जो सफ़रा के जोश से हो उसमें ठण्डे पानी से नहाना या हाथ पैर का धोना भी मुफ़ीद है। इसे आज की डॉक्टरी ने भी तस्लीम किया है शदीद बुख़ार में बर्फ़ का इस्ते'माल भी उसी क़बील से है।

5725. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा कि मेरे वालिदने मुझको ख़बर दी और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बुख़ार जहन्नम की भाप में से है इसलिये उसे पानी से ठण्डा करो।

(राजेअ : 3263)

٥٧٢٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا أَبِي عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ فَأَبْرِدُوهَا بِالْمَاءِ)).

[راجع: ٣٢٦٣]

5726. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अह्वस ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन मसरूक़ ने बयान किया, उनसे अबाया बिन रिफ़ाआ ने, उनसे उनके दादा राफ़ेअ बिन ख़दीज ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया कि बुख़ार जहन्नम की भाप में से है पस उसे पानी से ठण्डा कर लिया करो। (राजेअ : 3262)

٥٧٢٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ عَنْ جَدِّهِ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الْحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ فَابْرُدُوهَا بِالْمَاءِ)).

[راجع: ٣٢٦٢]

तशरीह : मुरव्वजा (प्रचलित) डॉक्टरी का एक शुअबा इलाज पानी से भी है जो काफ़ी तरक़्क़ी पज़ीर है हमारे रसूलुल्लाह (ﷺ) को अल्लाह पाक ने जमीउ़ल उ़लूम नाफ़िया का ख़ज़ाना बनाकर मब्ऊ़ष फ़र्माया था चुनाँचे फ़न्ने तिबाबत (मेडिकल) में आपके पेश कर्दा उसूल इस क़द्र जामेअ हैं कि कोई भी अ़क़्लमंद उनकी तर्दीद नहीं करा सकता।

बाब 29 : जहाँ की आबो हवा नामुवाफ़िक़ हो वहाँ से निकलकर दूसरे मुक़ाम पर जाना दुरुस्त है

٢٩- باب مَنْ خَرَجَ مِنْ أَرْضٍ لاَ تُلاَئِمُهُ

5727. हमसे अ़ब्दुल आला बिन ह़म्माद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरेअ़ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि क़बीला उ़क्ल और उ़रैना के कुछ लोग रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और इस्लाम के बारे में बातचीत की। उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के नबी! हम मवेशी वाले हैं हम लोग अहले मदीना की त़रह़ काश्तकार नहीं हैं। मदीना की आबो हवा उन्हें मुवाफ़िक़ नहीं आई थी। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके लिये चंद ऊँटों और एक चरवाहे का हुक्म दिया और आपने फ़र्माया कि वो लोग उन ऊँटों के साथ बाहर चले जाएँ और उनका दूध और पेशाब पियें। वो लोग चले गये लेकिन ह़र्रा के नज़दीक पहुँचकर वो इस्लाम से मुर्तद हो गये और आँह़ज़रत (ﷺ) के चरवाहे को क़त्ल कर डाला और ऊँटों को लेकर भाग पड़े जब आँह़ज़रत (ﷺ) को इसकी ख़बर मिली तो आपने उनकी तलाश में आदमी दौड़ाए फिर आपने उनके बारे में हुक्म दिया और उनकी आँखों में सलाई फेर दी गई, उनके हाथ काट दिये गये और ह़र्रा के किनारे उन्हें छोड़ दिया गया, वो उसी ह़ालत में मर गये। (राजेअ़ : 233)

٥٧٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ حَدَّثَهُمْ أَنَّ نَاسًا أَوْ رِجَالاً مِنْ عُكْلٍ وَعُرَيْنَةَ قَدِمُوا عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَتَكَلَّمُوا بِالإِسْلاَمِ وَقَالُوا: يَا نَبِيَّ اللهِ إِنَّا كُنَّا أَهْلَ ضَرْعٍ وَلَمْ نَكُنْ أَهْلَ رِيفٍ وَاسْتَوْخَمُوا الْمَدِينَةَ فَأَمَرَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِذَوْدٍ وَبِرَاعٍ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يَخْرُجُوا فِيهِ فَيَشْرَبُوا مِنْ أَلْبَانِهَا وَأَبْوَالِهَا فَانْطَلَقُوا حَتَّى كَانُوا نَاحِيَةَ الْحَرَّةِ كَفَرُوا بَعْدَ إِسْلاَمِ وَقَتَلُوا رَاعِيَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَاسْتَاقُوا الذَّوْدَ فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ فَبَعَثَ الطَّلَبَ فِي آثَارِهِمْ وَأَمَرَ بِهِمْ فَسَمَرُوا أَعْيُنَهُمْ وَقَطَعُوا أَيْدِيَهُمْ وَتُرِكُوا فِي نَاحِيَةِ الْحَرَّةِ حَتَّى مَاتُوا عَلَى حَالِهِمْ.
[راجع: ٢٣٣]

आबो हवा रास न आने पर आपने उन लोगों को मदीना से ह़र्रा भेज दिया था बाद में वो मुर्तद होकर डाकू बन गये और उन्होंने ऐसी ह़रकत की जिनकी यही सज़ा मुनासिब थी जो उनको दी गई। ह़दीष़ से बाब का मत़लब ज़ाहिर है ह़दीष़ और बाब में मुत़ाबक़त वाज़ेह़ है क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनको मदीना की आबो हवा नामुवाफ़िक़ आने की वजह से बाहर जाने का हुक्म दे दिया था।

बाब 30 : त़ाऊ़न का बयान

٣٠- باب مَا يُذْكَرُ فِي الطَّاعُون

5728. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, कहा कि मुझे ह़बीब बिन अबी ष़ाबित ने ख़बर दी, कहा कि मैंने इब्राहीम बिन सअ़द से सुना, कहा कि मैंने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से सुना, वो सअ़द (रज़ि.) से बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुम सुन लो कि किसी जगह त़ाऊ़न की वबा फैल रही है तो वहाँ मत जाओ लेकिन जब किसी जगह ये वबा फूट पड़े और तुम वहीं मौजूद हो तो उस जगह से निकलो भी मत (ह़बीब बिन अबी ष़ाबित ने बयाना किया कि मैंने इब्राहीम बिन सअ़द से) कहा तुमने ख़ुद ये ह़दीष़ उसामा (रज़ि.) से सुनी है कि उन्होंने सअ़द (रज़ि.) से बयान

٥٧٢٨- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي حَبِيبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ قَالَ: سَمِعْتُ إِبْرَاهِيمَ بْنَ سَعْدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ يُحَدِّثُ سَعْدًا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا سَمِعْتُمْ بِالطَّاعُونِ فِي أَرْضٍ فَلاَ تَدْخُلُوهَا وَإِذَا وَقَعَ بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا فَلاَ تَخْرُجُوا مِنْهَا)) فَقُلْتُ أَنْتَ

मालिक ने, उनसे सुमय ने, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि पेट की बीमारी में या'नी हैज़ा से मरने वाला शहीद है और त़ाऊन की बीमारी में मरने वाला शहीद है। (राजेअ : 653)

سُمَيٍّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمَبْطُونُ شَهِيدٌ وَالْمَطْعُونُ شَهِيدٌ)).[راجع: ٦٥٣]

तश्रीह : त़ाऊन एक बड़ी ख़त़रनाक वबाई बीमारी है जिसने बारहा नूए इंसानी को सख़्त तरीन नुक़्सान पहुँचाया है। हिन्दुस्तान में भी इसके ब रहा ह़मले हुए और लाखों इंसान लुक़्मा-ए-अजल बन गये। इस्लाम में त़ाऊन ज़दा मुसलमान की मौत को शहादत की मौत क़रार दिया गया है त़ाऊन अ़ज़ाबे इलाही है जो कष़रते मआ़सी से दुनिया पर मुसल्लत़ किया जाता है, **अल्लाहुम्म अहफ़िज़्ना मिन्हु।**

बाब 31 : जो शख़्स त़ाऊन में स़ब्र करके वहीं रहे गो उसको त़ाऊन न हो, उसकी फ़ज़ीलत का बयान

٣١- باب أَجْرِ الصَّابِرِ فِي الطَّاعُونِ

5734. हमसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमको ह़िब्बान ने ख़बर दी, कहा हमसे दाऊद बिन अबिल फ़ुरात ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने, उनसे यह़्या बिन उ़मर ने और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा आ़इशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से त़ाऊन के बारे में पूछा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये एक अ़ज़ाब था अल्लाह तआ़ला जिस पर चाहता उस पर उसको भेजता फिर अल्लाह तआ़ला ने उसे मोमिनीन (उम्मते मुहम्मदिया के लिये) रह़मत बना दिया अब कोई भी अल्लाह का बन्दा अगर स़ब्र के साथ उस शहर में ठहरा रहे जहाँ त़ाऊन फूट प ड़ी हो और यक़ीन रखता है कि जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने उसके लिये लिख दिया है उसके सिवा उसको और कोई नुक़्सान नहीं पहुँच सकता और फिर त़ाऊन में उसका इंतिक़ाल हो जाए तो उसे शहीद जैसा ष़वाब मिलेगा। ह़िब्बान बिन हिलाल के साथ इस ह़दीष़ को नज़्र बिन शुमैल ने भी दाऊद से रिवायत किया है। (राजेअ : 3473)

٥٧٣٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا حَبَّانُ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفُرَاتِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ عُمَرَ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ أَنَّهَا أَخْبَرَتْنَا أَنَّهَا سَأَلَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنِ الطَّاعُونِ فَأَخْبَرَهَا نَبِيُّ اللهِ صلى الله عليه وسلم: ((أَنَّهُ كَانَ عَذَابًا يَبْعَثُهُ اللهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ، فَجَعَلَهَا اللهُ رَحْمَةً لِلْمُؤْمِنِينَ، فَلَيْسَ مِنْ عَبْدٍ يَقَعُ الطَّاعُونُ فَيَمْكُثُ فِي بَلَدِهِ صَابِرًا يَعْلَمُ أَنَّهُ لَنْ يُصِيبَهُ إِلاَّ مَا كَتَبَ اللهُ لَهُ إِلاَّ كَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ الشَّهِيدِ)). تَابَعَهُ النَّضْرُ عَنْ دَاوُدَ. [راجع: ٣٤٧٤]

तश्रीह : इब्ने माजा और बैहक़ी की रिवायत में यूँ है कि त़ाऊन उस वक़्त पैदा होता है जब किसी मुल्क में बदकारी आ़म तौर पर फैल जाती है। मौलाना रूम ने सच कहा है। वज़ ज़िना ख़ीज़द वबा अंदर जिहात। मुसलमान के लिये त़ाऊन की मौत मरना शहादत का दर्जा रखता है। जैसा कि इस ह़दीष़ में ज़िक्र है।

बाब 32 : क़ुर्आन मजीद और मुअ़व्विज़ात पढ़कर मरीज़ पर दम करना

٣٢- بَابُ الرُّقَى بِالْقُرْآنِ وَالْمُعَوِّذَاتِ

तश्रीह : क़स्त़लानी ने कहा कि नीचे की रिवायत से दम झाड़ का जवाज़ निकलता है बशर्ते कि अल्लाह के कलाम और उसके अस्मा व सि़फ़ात से हो और अ़रबी ज़ुबान में हो उसके मआ़नी मा'लूम हों और बशर्ते कि ये ए'तिक़ाद

न रहे कि दम झाड़ करना बज़ाते ख़ुद मुअष्षिर है बल्कि अल्लाह की तक़्दीर से मुअष्षिर हो सकते हैं। जैसे दवा अल्लाह के हुक्म से मुअष्षिर होती है।

5735. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) अपने मर्ज़ुल वफ़ात में अपने ऊपर मुअव्विज़ात (सूरह फ़लक़ और सूरह नास) का दम किया करते थे। फिर जब आपके लिये दुश्वार हो गया तो मैं उनका दम आप पर किया करती थी और बरकत के लिये आँह़ज़रत (ﷺ) का हाथ आपके जिस्मे मुबारक पर भी फेर लेती थी। फिर मैं ने उसके बारे में पूछा कि आँह़ज़रत (ﷺ) किस त़रह़ दम करते थे, उन्होंने बताया कि अपने हाथ पर दम करके हाथ को चेहरे पर फेरा करते थे। (राजेअ़ : 4439)

٥٧٣٥– حدثني إبراهيم بن موسى أخبرنا هشام عن معمر عن الزهري عن عروة عن عائشة رضي الله عنها أن النبي كان ينفث على نفسه في المرض الذي مات فيه بالمعوذات فلما ثقل كنت أنفث عليه بهن وأمسح بيد نفسه لبركتها فسألت الزهري كيف ينفث؟ قال: كان ينفث على يديه ثم يمسح بهما وجهه. [راجع: ٤٤٣٩]

बाब 33 : सूरह फ़ातिह़ा से दम करना, इस बाब में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से एक रिवायत की है

٣٣– باب الرقى بفاتحة الكتاب

ويذكر عن ابن عباس عن النبي ﷺ

5736. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने, उनसे शुअ़बा ने, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे अबुल मुतवक्किल ने, उनसे अबू सई़द ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के चंद स़ह़ाबा ह़ालते सफ़र में अ़रब के एक क़बीला पर गुज़रे। क़बीला वालों ने उनकी ज़ियाफ़त नहीं की कुछ देर के बाद उस क़बीले के सरदार को बिच्छू ने काट लिया, अब क़बीले वालों ने उन स़ह़ाबा से कहा कि आप लोगों के पास कोई दवा या कोई झाड़ने वाला है। स़ह़ाबा ने कहा कि तुम लोगों ने हमें मेहमान नहीं बनाया और अब हम उस वक़्त तक दम नहीं करेंगे जब तक तुम हमारे लिये उसकी मज़दूरी न मुक़र्रर कर दो। चुनाँचे उन लोगों ने चंद बकरियाँ देनी मंज़ूर कर लीं फिर (अबू सई़द ख़ुदरी रज़ि.) सूरह फ़ातिह़ा पढ़ने लगे और उस पर दम करने में मुँह का थूक भी उस जगह पर डालने लगे। उससे वो शख़्स़ अच्छा हो गया। चुनाँचे क़बीला वाले बकरियाँ लेकर आए लेकिन स़ह़ाबा ने कहा कि जब तक हम नबी करीम (ﷺ) से न पूछ लें ये बकरियाँ नहीं ले सकते फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछा तो आप मुस्कुराए और फ़र्माया तुम्हें कैसे मा'लूम हो गया था कि सूरह फ़ातिह़ा से दम भी

٥٧٣٦– حدثنا محمد بن بشار حدثنا غندر حدثنا شعبة عن أبي بشر عن أبي المتوكل عن أبي سعيد الخدري رضي الله عنه أن ناسا من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم أتوا على حي من أحياء العرب فلم يقروهم فبينما هم كذلك إذ لدغ سيد أولئك فقالوا هل معكم من دواء أو راق؟ فقالوا: إنكم لم تقرونا ولا نفعل حتى تجعلوا لنا جعلا فجعلوا لهم قطيعا من الشاء فجعل يقرأ بأم القرآن ويجمع بزاقه ويتفل فبرأ فأتوا بالشاء فقالوا: لا نأخذه حتى نسأل النبي ﷺ فسألوه فضحك وقال: وما أدراك أنها رقية خذوها واضربوا لي

एक औ़रत का मह्र ता'लीमे क़ुर्आन पर कर दिया था जैसा कि पहले बयान हो चुका है।

बाब 35 : नज़रे बद लग जाने की सूरत में दम करना

٣٥- باب رُقْيَةِ الْعَيْنِ

5738. हमसे मुह़म्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे मअबद बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद से सुना, उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे हुक्म दिया या (आपने इस त़रह़ बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने) हुक्म दिया कि नज़रे बद लग जाने पर मुअव्वज़तैन से दम कर लिया जाए।

٥٧٣٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنِي مَعْبَدُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ، سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ شَدَّادٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَمَرَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ أَوْ أَمَرَ أَنْ يُسْتَرْقَى مِنَ الْعَيْنِ.

मुअ़व्वज़तैन और सूरह फ़ातिह़ा पढ़ना बेहतरीन मुजर्रब दम हैं नीज़ दुआओं में **अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन शर्रि मा ख़लक़** मुजर्रब दुआ है।

5739. हमसे मुह़म्मद बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन वहब बिन अ़तिया दमिश्क़ी ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन वलीद ज़ुबैदी ने बयान किया, कहा हमको ज़ुह्री ने ख़बर दी, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उन्हें ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा (रज़ि.) ने और उनसे ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उनके घर में एक लड़की देखी जिसके चेहरे पर (नज़रे बद लगने की वजह से) काले धब्बे पड़ गये थे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस पर दम करा दो क्योंकि इसे नज़रे बद लग गई है। और अ़क़ील ने कहा उनसे ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी और उन्होंने उसे नबी करीम (ﷺ) से मुर्सलन रिवायत किया है। मुह़म्मद बिन ह़र्ब के साथ इस ह़दीष़ को अ़ब्दुल्लाह बिन सालिम ने भी ज़ुबैदी से रिवायत किया है।

٥٧٣٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ وَهْبِ بْنِ عَطِيَّةَ الدِّمَشْقِيُّ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ الزُّبَيْدِيُّ أَخْبَرَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى فِي بَيْتِهَا جَارِيَةً فِي وَجْهِهَا سَفْعَةٌ فَقَالَ: ((اسْتَرْقُوا لَهَا فَإِنَّ بِهَا النَّظْرَةَ)). وَقَالَ عُقَيْلٌ: عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنَا عُرْوَةُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، تَابَعَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَالِمٍ عَنِ الزُّبَيْدِيِّ.

तश्रीह : इसे ज़ुहली ने ज़ुहरियात में वस़्ल किया है। मा'लूम हुआ कि नज़रे बद का लग जाना ह़क़ है जैसे कि दूसरी ह़दीष़ में वारिद है। मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ लिखते हैं कि नज़रे बद वाले पर आयत **व इय्यकादुल्लज़ीन कफ़रू लियुज़्लिक़ूनक बिअब्सारिहिम लम्मा समिअ़ुज़्ज़िक्र व यक़ूलून इन्नहू लमज्नून** (अल् क़लम : 51)

बाब 36 : नज़रे बद का लगना ह़क़ है

٣٦- باب الْعَيْنُ حَقٌّ

5740. हमसे इस्ह़ाक़ बिन नस़्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया नज़रे बद लगना ह़क़ है और आँह़ज़रत (ﷺ) ने जिस्म पर गोदने से मना फ़र्माया। (दीगर : 5944)

٥٧٤٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْعَيْنُ حَقٌّ)) وَنَهَى عَنِ الْوَشْمِ.

उन्हें अ़म्रह ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) दम करते वक़्त ये दुआ पढ़ा करते थे, हमारी ज़मीन की मिट्टी और हमारा कुछ थूक हमारे रब के हुक्म से हमारे मरीज़ को शिफ़ा हो। (राजेअ : 5745)

عَنْ عَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ فِي الرُّقْيَةِ: ((تُرْبَةُ أَرْضِنَا وَرِيقَةُ بَعْضِنَا يُشْفَى سَقِيمُنَا بِإِذْنِ رَبِّنَا)).

[راجع: ٥٧٤٥]

तश्रीह : नववी ने कहा आँहज़रत (ﷺ) अपना थूक कलिमे की उंगली पर लगाकर उसको ज़मीन पर रखते और ये दुआ पढ़ते फिर वो मिट्टी ज़ख़्म या दर्द के मक़ाम पर लगवाते अल्लाह के हुक्म से शिफ़ा हो जाती थी। ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **व इन्न हाज़ा मिन बाबित्तबर्रूकि बिअस्माइल्लाहि तआ़ला व आष़ार रसूलिही व अम्मा वज़्उल्इस्बइ बिलअर्ज़ि फलअल्लहू ख़ास़िय्यतहू फ़ी ज़ालिक औ बिहिक्मति इख़फ़ाइ आषारल्क़ुदरति बिमुबाशरतिल्अस्बाबिल् मुअ़ताद** (फत्ह) या'नी अल्लाह पाक के मुबारक नामों के साथ बरकत ह़ासिल करना और उसके रसूल के आष़ार के साथ उस पर उँगली रखना पस ये शायद उसकी ख़ास़ियत की वजह से हो या आष़ारे क़ुदरत की कोई पोशिदा ह़िक्मत उसमें हो जो अस्बाबे ज़ाहिरी के साथ मेल रखती हो आष़ारे रसूल से वो उँगली मुराद है जो आप ज़मीन पर रखकर मिट्टी लगाकर दुआ पढ़ते थे। बनावटी आष़ार मुराद नहीं हैं।

बाब 39 : दुआ पढ़कर मरीज़ पर फूँक मारना इस त़रह कि मुँह से ज़रा सा थूक भी निकले

٣٩- باب النَّفْثِ فِي الرُّقْيَةِ

5747. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया कि मैंने अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ से सुना, कहा कि मैंने हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बेशक अच्छा ख़्वाब अल्लाह की त़रफ़ से होता है, और ह़ुल्म (बुरा ख़्वाब जिसमें घबराहट हो) शैतान की त़रफ़ से होता है इसलिये जब तुममें से कोई शख़्स कोई ऐसा ख़्वाब देखे जो बुरा हो तो जागते ही तीन मर्तबा बाईं त़रफ़ थू थू करे और उस ख़्वाब की बुराई से अल्लाह की पनाह मांगे, इस त़रह ख़्वाब का उसे नुक़्सान नहीं होगा और अबू सलमा ने कहा कि पहले कुछ ख़्वाब मुझ पर पहाड़ से भी ज़्यादा भारी होता था जबसे मैंने ये ह़दीष़ सुनी और इस पर अ़मल करने लगा, अब मुझे कोई परवाह नहीं होती। (राजेअ : 3292)

٥٧٤٧- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا قَتَادَةَ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((الرُّؤْيَا مِنَ اللهِ وَالْحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ شَيْئًا يَكْرَهُهُ فَلْيَنْفُثْ حِينَ يَسْتَيْقِظُ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، وَيَتَعَوَّذْ مِنْ شَرِّهَا فَإِنَّهَا لاَ تَضُرُّهُ)). وَقَالَ أَبُو سَلَمَةَ: وَإِنْ كُنْتُ لأَرَى الرُّؤْيَا أَثْقَلَ عَلَيَّ مِنَ الْجَبَلِ فَمَا هُوَ إِلاَّ أَنْ سَمِعْتُ هَذَا الْحَدِيثَ فَمَا أُبَالِيهَا.

[راجع: ٣٢٩٢]

ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब का तर्जुमा से इस त़रह है कि अल्लाह की पनाह चाहना यही मंतर है मंतर में फूँकना थू थू करना भी ष़ाबित हुआ।

5748. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने, उनसे इब्ने शिहाब ज़ुहरी ने,

٥٧٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأُوَيْسِيُّ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ يُونُسَ عَنِ

कहा कि फिर मैंने ये मंसूर से बयान किया तो उन्होंने मुझसे इब्राहीम नख़ई से बयान किया, उनसे मसरूक़ ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने इसी तरह बयान किया। (राजेअ : 5675)

فَحَدَّثَنِي عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا بِنَحْوِهِ.

[راجع: ٥٦٧٥]

इस हदीष़ की रोशनी में लफ़्ज़ दस्ते शिफ़ा राइज हुआ है। कुछ हाथों में अल्लाह पाक ये अष़र रख देता है कि वो दम करें या कोई नुस्ख़ा लिखकर दें अल्लाह उनके ज़रिये से शिफ़ा देता है हर हकीम डॉक्टर वेद्य को ये ख़ूबी नहीं मिलती इल्ला माशाअल्लाह।

बाब 41 : हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जअफ़ी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ सन्आनी ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें उर्वा ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) अपने मर्ज़े वफ़ात में मुअव्वज़ात पढ़कर फूँकते थे फिर जब आपके लिये ये दुश्वार हो गया तो मैं आप पर दम किया करती थी और बरकत के लिये आँहज़रत (ﷺ) का हाथ आपके जिस्म पर फेरती थी (मअमर ने बयान किया कि) फिर मैंने इब्ने शिहाब से सवाल किया कि आँहज़रत (ﷺ) किस तरह दम किया करते थे? उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) पहले अपने दोनों हाथों पर फूँक मारते फिर उनको चेहरे पर फेर लेते। (राजेअ : 4439)

٤١- باب فِي الْمَرْأَةِ تَرْقِي الرَّجُلَ

٥٧٥١- حدَّثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَنْفِثُ عَلَى نَفْسِهِ فِي مَرَضِهِ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ، فَلَمَّا ثَقُلَ كُنْتُ أَنَا أَنْفِثُ عَلَيْهِ بِهِنَّ وَأَمْسَحُ بِيَدِ نَفْسِهِ لِبَرَكَتِهَا فَسَأَلْتُ ابْنَ شِهَابٍ كَيْفَ كَانَ يَنْفِثُ قَالَ: يَنْفِثُ عَلَى يَدَيْهِ ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ.

[راجع: ٤٤٣٩]

इस तरह मुअव्विज़ात की ताष़ीर हाथों में अष़र करके फिर चेहरे पर भी ताष़्षुरात पैदा कर देती है जो चेहरे से नुमायाँ होने लगते हैं इसलिये मुअव्विज़ात का दम करना और हाथों को चेहरे पर फेरना भी मस्नून है।

बाब 42 : दम झाड़ न कराने की फ़ज़ीलत

٤٢- باب مَنْ لَمْ يَرْقِ

तश्रीह : हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं **क़ाल इब्नुल्अष़ीर हाज़ा मिन सिफ़तिल्औलियाइल्मूमिनीन अनिद्दुनिया व अस्बाबिहा व अलाइक़िहा व हाउलाइ हुम अख़स्सुल्औलिया व ला यरिदु हाज़ा वुक़ूउ ज़ालिक मिनन्नबिय्यि (ﷺ) फ़िअलन व अम्रन लिअन्नहू कान फ़ी आला मक़ामातिज़्ज़मानि व दरजातित्तवक्कुलि फकान ज़ालिक मिन्हु तश्रीउन व बयानुल्जवाज़** (फ़त्ह) या'नी ये औलिया अल्लाह की सिफ़त है जो दुनिया और अस्बाब व अलाइक़े दुनिया से बिलकुल मुँह मोड़ लेते हैं और ये ख़ासुल ख़ास औलिया होते हैं। इससे उस पर कोई शुब्हा वारिद नहीं किया जा सकता है कि आँहज़रत (ﷺ) से दम झाड़ करना कराना और उसके लिये हुक्म फ़र्माना ष़ाबित है चूँकि आँहज़रत (ﷺ) को इरफ़ान और तवक्कल के आलातरीन दरजात हासिल हैं पस आपने शरीअत में ऐसे उमूर बतौर जवाज़ के ख़ुद किये और बतलाए।

5752. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन बिन नुमैर ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दिन हमारे पास बाहर

٥٧٥٢- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حُصَيْنُ بْنُ نُمَيْرٍ عَنْ حُصَيْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ

عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا فَقَالَ: ((عُرِضَتْ عَلَيَّ الأُمَمُ فَجَعَلَ يَمُرُّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَهُ الرَّجُلُ وَالنَّبِيُّ مَعَهُ الرَّجُلاَنِ وَالنَّبِيُّ مَعَهُ الرَّهْطُ وَالنَّبِيُّ لَيْسَ مَعَهُ أَحَدٌ وَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الأُفُقَ فَرَجَوْتُ أَنْ تَكُونَ أُمَّتِي، فَقِيلَ: هَذَا مُوسَى وَقَوْمُهُ، ثُمَّ قِيلَ لِي انْظُرْ فَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الأُفُقَ فَقِيلَ لِي، انْظُرْ هَكَذَا وَهَكَذَا، فَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الأُفُقَ فَقِيلَ: هَؤُلاَءِ أُمَّتُكَ وَمَعَ هَؤُلاَءِ سَبْعُونَ أَلْفًا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ)) فَتَفَرَّقَ النَّاسُ وَلَمْ يُبَيِّنْ لَهُمْ فَتَذَاكَرَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالُوا: أَمَّا نَحْنُ فَوُلِدْنَا فِي الشِّرْكِ وَلَكِنَّا آمَنَّا بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَلَكِنْ هَؤُلاَءِ هُمْ أَبْنَاؤُنَا فَبَلَغَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((هُمُ الَّذِينَ لاَ يَتَطَيَّرُونَ وَلاَ يَكْتَوُونَ وَلاَ يَسْتَرْقُونَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ)). فَقَامَ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ فَقَالَ: أَمِنْهُمْ أَنَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). فَقَامَ آخَرُ فَقَالَ: أَمِنْهُمْ أَنَا؟ فَقَالَ: ((سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةُ)).

[راجع: ٣٤١٠]

तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि (ख़्वाब मे) मुझ पर तमाम उम्मतें पेश की गईं। कुछ नबी गुज़रते और उनके साथ (उनकी इत्तिबाअ करने वाला) सिर्फ़ एक होता। कुछ गुज़रते और उनके साथ दो होते कुछ के साथ पूरी जमाअत होती और कुछ के साथ कोई भी न होता फिर मैंने एक बड़ी जमाअत देखी जिससे आसमान का किनारा ढंक गया था मैं समझा कि ये मेरी ही उम्मत होगी लेकिन मुझसे कहा गया कि ये ह़ज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) और उनकी उम्मत के लोग हैं फिर मुझसे कहा कि देखो मैंने एक बहुत बड़ी जमाअत देखी जिसने आसमानों का किनारा ढांप लिया है। फिर मुझसे कहा गया कि उधर देखो, उधर देखो, मैंने देखा कि बहुत सी जमाअतें हैं जो तमाम उफ़ुक़ पर मुहीत थीं। कहा गया कि ये तुम्हारी उम्मत है और उसमें से सत्तर ह़ज़ार वो लोग होंगे जो बे ह़िसाब जन्नत में दाख़िल किये जाएँगे फिर स़ह़ाबा मुख़्तलिफ़ जगहों में उठकर चले गये और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसकी वज़ाह़त नहीं की कि ये सत्तर ह़ज़ार कौन लोग होंगे। स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) ने आपस में उसके बारे में मुज़ाकिरा किया और कहा कि हमारी पैदाइश तो शिर्क में हुई थी अल्बत्ता बाद में हम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आए लेकिन ये सत्तर ह़ज़ार हमारे बेटे होंगे जो पैदाइश ही से मुसलमान हैं। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये बात पहुँची तो आपने फ़र्माया कि ये सत्तर ह़ज़ार वो लोग होंगे जो बदफ़ाली नहीं करते, न मंतर से झाड़ फूँक कराते हैं और न दाग़ लगाते हैं बल्कि अपने रब पर भरोसा करते हैं। ये सुनकर ह़ज़रत उक्काशा बिन मिह़स़न (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं भी उनमें से हूँ? फ़र्माया कि हाँ। एक दूसरे स़ाह़ब ह़ज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.) ने खड़े होकर अर्ज़ किया मैं भी उनमें से हूँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उक्काशा तुमसे बाज़ी ले गए कि तुमसे पहले उक्काशा के लिये जो होना था वो हो चुका। (राजेअ : 3410)

तशरीह : ये सत्तर ह़ज़ार बड़े बड़े स़ह़ाबा और औलिया-ए-उम्मत होंगे वरना उम्मते मुह़म्मदिया तो करोड़ों अरबों गुज़र चुकी है और हर वक़्त दुनिया में करोड़ों-करोड़ रहती है। सत्तर ह़ज़ार का उन अरबों में क्या शुमार। बहरह़ाल उम्मते मुह़म्मदी तमाम उम्मतों से ज़्यादा होगी और आप अपनी उम्मत की ये कष़रत देखकर फ़ख़्र करेंगे। या अल्लाह! आपकी

सच्ची उम्मत में हमारा भी ह़श्र फ़र्माइयो और आपका ह़ौज़े कौषर पर दीदार नसीब कीजियो आमीन या रब्बल आ़लमीन।

बाब 43 : बदशगुनी लेने का बयान

٤٣- بَابُ الطِّيَرَةِ

जिसे अ़रबी में त़यरह कहते हैं अ़रब लोग जब किसी काम के लिये बाहर निकलते तो परिन्दा उड़ाते अगर वो दाईं त़रफ़ उड़ता तो नेक फ़ाल समझते। अगर बाईं त़रफ़ उड़ता तो मन्ह़ूस जानकर वापस लौट आते। जाहिल लोग आजकल भी ऐसे ख़यालाते फ़ासिदा में मुब्तला हैं।

5753. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे उ़ष्मान बिन उ़मर ने, कहा कि हमसे यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने, उनसे सालिम ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अम्राज़ में छूतछात की और बदशगुनी की कोई अ़स्ल नहीं और अगर नह़ूसत होती तो ये सिर्फ़ तीन चीज़ों में होती है। औ़रत में, घर में और घोड़े में। (राजेअ़: 2099)

٥٧٥٣- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: لاَ عَدْوَى، وَلاَ طِيَرَةَ، وَالشُّؤْمُ فِي ثَلاَثٍ: فِي الْمَرْأَةِ، وَالدَّارِ، وَالدَّابَّةِ.[راجع: ٢٠٩٩]

तश्रीह : बदशगुनी के बेकार होने पर सब अ़क़्ल वालों का इत्तिफ़ाक़ है मगर छूत के मामले में कुछ डॉक्टर इख़्तिलाफ़ करते हैं और कहते हैं तजुर्बे से मा'लूम होता है कि कुछ बीमारियाँ छूत वाली होती हैं मषलन जुज़ाम और त़ाऊ़न वग़ैरह। हम कहते हैं कि ये तुम्हारा वहम है अगर वो दरह़क़ीक़त मुतअ़द्दी होते तो एक घर के या एक शहर के सब लोग मुब्तला हो जाते मगर ऐसा नहीं होता बल्कि एक घर में ही कुछ लोग बीमार होते और कुछ तन्दुरुस्त रह जाते हैं जैसा कि आ़म मुशाहिदा है।

5754. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा हमको उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बदशगुनी की कोई अ़स्ल नहीं अल्बत्ता नेक फ़ाल लेना कुछ बुरा नहीं है। स़ह़ाबा किराम (ﷺ) ने अ़र्ज़ किया नेक फ़ाल क्या चीज़ है? फ़र्माया कोई ऐसी बात सुनना। (दीगर मक़ामात : 5755)

٥٧٥٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ طِيَرَةَ وَخَيْرُهَا الْفَأْلُ)) قَالُوا وَمَا الْفَأْلُ؟ قَالَ: ((الْكَلِمَةُ الصَّالِحَةُ يَسْمَعُهَا أَحَدُكُمْ)).

[طرفه في : ٥٧٥٥].

मषलन बीमार आदमी सलामती तन्दरुस्ती का सुन पाए या लड़ाई पर जाने वाला शख़्स रास्ते में किसी ऐसे शख़्स से मिले जिसका नाम फ़तह़ ख़ाँ हो उससे फ़ाले नेक लिया जा सकता है कि लड़ाई में फ़तह़ हमारी होगी, इंशाअल्लाह तआ़ला।

बाब 44 : नेक फ़ाल लेना कुछ बुरा नहीं है

٤٤- بَابُ الْفَأْلِ

5755. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह

٥٧٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي

इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि दो औरतें थीं। एक ने दूसरी को पत्थर दे मारा जिससे उसके पेट का हमल गिर गया। आँहज़रत (ﷺ) ने इस मामले में एक ग़ुलाम या बाँदी दियत में दिये जाने का फ़ैसला किया। (राजेअ : 5758)

شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ امْرَأَتَيْنِ رَمَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى بِحَجَرٍ فَطَرَحَتْ جَنِينَهَا فَقَضَى فِيهِ النَّبِيُّ ﷺ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ.

[راجع: ٥٧٥٨]

5760. और इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे हज़रत सईद बिन मुसय्यिब ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जनीन जिसे उसकी माँ के पेट में मार डाला गया हो, की दियत के तौर पर एक ग़ुलाम या एक बाँदी दिये जाने का फ़ैसला किया था जिसे दियत देनी थी उसने कहा कि ऐसे बच्चे की दियत आख़िर क्यूँ दूँ जिसने न खाया, न पिया, न बोला और न विलादत के वक़्त ही आवाज़ निकाली? ऐसी सूरत में तो दियत नहीं हो सकती। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये शख़्स तो काहिनों का भाई मा'लूम होता है। (राजेअ : 5758)

٥٧٦٠- وَعَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَضَى فِي الْجَنِينِ يُقْتَلُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ وَلِيدَةٍ فَقَالَ: الَّذِي قُضِيَ عَلَيْهِ كَيْفَ أَغْرَمُ مَا لاَ أَكَلَ وَلاَ شَرِبَ وَلاَ نَطَقَ وَلاَ اسْتَهَلَّ؟ وَمِثْلُ ذَلِكَ بَطَلَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّمَا هَذَا مِنْ إِخْوَانِ الْكُهَّانِ)).

[راجع: ٥٧٥٨]

तश्रीह : जो कुछ आँहज़रत (ﷺ) ने फ़ैसला फ़र्माया वही बरहक़ था बाक़ी उस शख़्स की हफ़्वात थीं जिनको आँहुज़ूर (ﷺ) ने कहानत से तश्बीह देकर मिष्ले कहानत के बातिल ठहरा दिया (ﷺ)।

5761. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान इब्ने उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन हारिष़ ने और उनसे अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने कुत्ते की क़ीमत, ज़िना की उजरत और काहिन की कहानत की वजह से मिलने वाले हदिये से मना फ़र्माया है। (राजेअ : 2237)

٥٧٦١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ وَمَهْرِ الْبَغِيِّ وَحُلْوَانِ الْكَاهِنِ.

[راجع: ٢٢٣٧]

तश्रीह : या'नी एक मोमिन मुसलमान के लिये उनका खाना लेना ह़राम है। कुत्ते की क़ीमत, ज़ानिया औरत की उजरत और काहिनों के तोहफ़े उनका लेना और खाना सरासर ह़राम है।

5762. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें यह्या बिन उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से काहिनों के बारे में पूछा

٥٧٦٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ يَحْيَى بْنِ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

5762. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें यह्या बिन उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से काहिनों के बारे में पूछा

٥٧٦٢– حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عبدِ اللهِ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ يَحْيَى بْنِ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी कोई बुनियाद नहीं। लोगों ने कहा कि, या रसूलल्लाह (ﷺ)! कुछ औक़ात वो हमें ऐसी चीज़ें भी बताते हैं जो स़हीह हो जाती हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये कलिमा ह़क़ होता है। उसे काहिन किसी जिन्नी से सुन लेता है वो जिन्नी अपने दोस्त काहिन के कान में डाल जाता है और फिर ये काहिन उसके साथ सौ झूठ मिलाकर बयान करते हैं। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ इस कलिमे तिल्कल कलिमतु मिनल ह़क़ को मुर्सलन रिवायत करते थे फिर उन्होंने कहा मुझको ये ख़बर पहुँची कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने उसके बाद उसको मुस्नदन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत किया है। (राजेअ : 3210)

قَالَتْ: سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَاسٌ عَنِ الْكُهَّانِ فَقَالَ: ((لَيْسَ بِشَيْءٍ)) فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهُمْ يحدثوننا أَحْيَانًا بِشَيْءٍ فَيَكُونُ حقًا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تِلْكَ الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ يَخْطَفُهَا الْجِنِّيُّ فَيُقِرُّهَا فِي أُذُنِ وَلِيِّهِ فَيَخْلِطُونَ مَعَهَا مَائَةَ كَذِبَةٍ)). قَالَ عَلِيٌّ قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: مُرْسَلٌ. الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ ثُمَّ بَلَغَنِي أَنَّهُ أَسْنَدَهُ بَعْدَهُ. [راجع: ٣٢١٠]

तश्रीह : क़स्तलानी (रह़.) ने कहा ये कहानत या'नी शैत़ान जो आसमान पर जाकर फ़रिश्तों की बात उड़ा लेते थे, आँह़ज़रत (ﷺ) की बिअ़ष़त से मौक़ूफ़ हो गई अब आसमान पर इतना शदीद पहरा है कि शैत़ान वहाँ फटकने नहीं पाते न अब वैसे काहिन मौजूद हैं जो शैत़ान से ता'ल्लुक़ रखते थे हमारे ज़माने के काहिन मह़ज़ अटकल पच्चू बात करते हैं।

قَالَتْ: سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَاسٌ عَنِ الْكُهَّانِ فَقَالَ: ((لَيْسَ بِشَيْءٍ)) فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهُمْ يحدثوننا أَحْيَانًا بِشَيْءٍ فَيَكُونُ حقًّا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تِلْكَ الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ يَخْطَفُهَا الْجِنِّيُّ فَيَقِرُّهَا فِي أُذُنِ وَلِيِّهِ فَيَخْلِطُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَذِبَةٍ)). قَالَ عَلِيٌّ قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: مُرْسَلٌ. الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ ثُمَّ بَلَغَنِي أَنَّهُ أَسْنَدَهُ بَعْدَهُ. [راجع: ۳۲۱۰]

आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी कोई बुनियाद नहीं। लोगों ने कहा कि, या रसूलल्लाह (ﷺ)! कुछ औक़ात वो हमें ऐसी चीज़ें भी बताते हैं जो सह़ीह़ हो जाती हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये कलिमा ह़क़ होता है। उसे काहिन किसी जिन्नी से सुन लेता है वो जिन्नी अपने दोस्त काहिन के कान में डाल जाता है और फिर ये काहिन उसके साथ सौ झूठ मिलाकर बयान करते हैं। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ इस कलिमे तिल्कल कलिमतु मिनल ह़क़ को मुर्सलन रिवायत करते थे फिर उन्होंने कहा मुझको ये ख़बर पहुँची कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने उसके बाद उसको मुस्नदन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 3210)

तश्रीह़ : क़स्तलानी (रह़.) ने कहा ये कहानत या'नी शैतान जो आसमान पर जाकर फ़रिश्तों की बात उड़ा लेते थे, आँह़ज़रत (ﷺ) की बिअ़षत से मौक़ूफ़ हो गई अब आसमान पर इतना शदीद पहरा है कि शैतान वहाँ फटकने नहीं पाते न अब वैसे काहिन मौजूद हैं जो शैतान से ता'ल्लुक़ रखते थे हमारे ज़माने के काहिन महज़ अटकल पच्चू बात करते हैं।

बाब 47 : जादू का बयान

٤٧- بَابُ السِّحْرِ

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया, लेकिन शैतान काफ़िर हो गये वही लोगों को सेह़र या'नी जादू सिखलाते हैं और उस इल्म की भी ता'लीम देते हैं जो मक़ामे बाबिल में दो फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर उतारा गया था और वो दोनों किसी को भी इस इल्म की बातें नहीं सिखलाते थे जब तक ये न कह देते देखो अल्लाह ने हमको दुनिया में आज़माइश के लिये भेजा है तो जादू सीखकर काफ़िर मत बन। मगर लोग उन दोनों के इस त़रह़ कह देने पर भी उनसे वो जादू सीख ही लेते जिससे वो मर्द और उसकी बीवी के बीच जुदाई डाल देते हैं और ये जादूगर जादू की वजह से बग़ैर अल्लाह के हुक्म के किसी को नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते। ग़र्ज़ वो इल्म सीखते हैं जिससे फ़ायदा तो कुछ नहीं उल्टा नुक़्सान है और यहूदियों को भी मा'लूम है कि जो कोई जादू सीखे उसका आख़िरत में कोई ह़िस्सा न रहा। और सूरह त़ाहा में फ़र्माया कि, जादूगर जहाँ भी जाए कमबख़्त बामुराद नहीं होता। और सूरह अंबिया में फ़र्माया, क्या तुम देख समझकर जादू की पैरवी करते हो, और सूरह त़ाहा में फ़र्माया कि ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को उनके जादू की वजह से ऐसा मा'लूम होता था कि वो रस्सियाँ और लाठियाँ सांप की त़रह़ दौड़ रही हैं और सूरह फ़लक़ में फ़र्माया और बदी है उन औ़रतों की जो गिरहों में फूँक मारती हैं। और सूरह मोमिनून में फ़र्माया **फ़इन्ना तस्ह़रून** या'नी फिर तुम पर जादू की मार है।

٥٧٦٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَحَرَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي زُرَيْقٍ يُقَالُ لَهُ لَبِيدُ بْنُ

5763. हमसे इब्राहीम बिन मूसा अशअ़री ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उ़र्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बनी ज़ुरैक़ के एक शख़्स़ यहूदी लबीद बिन आ़स़म ने रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जादू कर दिया था और उसकी वजह से आँह़ज़रत (ﷺ) किसी चीज़ के बारे में ख़्याल करते कि आपने वो काम कर लिया है ह़ालाँकि आपने वो काम न

 M-09825696131

اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لَا عَدْوَى)) فَقَامَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: أَرَأَيْتَ الإِبِلَ تَكُونُ فِي الرِّمَالِ أَمْثَالَ الظِّبَاءِ فَيَأْتِيهَا الْبَعِيرُ الأَجْرَبُ فَتَجْرَبُ؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَمَنْ أَعْدَى الأَوَّلَ؟)). [راجع: ٥٧٠٧]

पूछा आप (ﷺ) ने देखा होगा एक ऊँट रेगिस्तान में हिरन जैसा स़ाफ़ रहता है लेकिन जब ही एक ख़ारिश वाले ऊँट के पास आ जाता है तो उसे भी खारिश हो जाती है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन पहले ऊँट को किसने ख़ारिश लगाई थी।

(राजेअ़ : 5707)

तशरीह : यही इसका षुबूत है कि छूत की कोई ह़क़ीक़त नहीं है। अगर कहें कि उसको किसी और ऊँट से ख़ारिश लगी थी तो उस ऊँट को किससे लगी? आख़िर में तसलसुल लाज़िम आएगा जो मह़ाल है या ये कहना होगा कि एक ऊँट को ख़ुद बख़ुद ख़ारिश पैदा हुई थी आपने ऐसी दलील मन्तक़ी बयान फ़र्माई कि डाक्टरों का लंगड़ा टट्टू उसके सामने चल ही नहीं सकता। अब जो ये देखने में आता है कि कुछ बीमारियाँ जैसे ताऊ़न (प्लेग), हैज़ा वग़ैरह एक बस्ती से दूसरी बस्ती में फैलती है या एक शख़्स़ के बाद दूसरे शख़्स़ को हो जाती हैं तो इससे ये षाबित नहीं होता कि बीमारी मुंतक़िल हुई है बल्कि बहुक्मे इलाही इस दूसरी बस्ती या शख़्स़ में भी पैदा हुई और इसकी दलील ये है कि एक ही घर में कुछ त़ाऊ़न से मरते हैं कुछ नहीं मरते और एक ही शिफ़ाख़ाने में डॉक्टर-नर्स वग़ैरह त़ाऊ़न वालों का इ़लाज करते हैं कि कुछ डॉक्टरों नर्सों को त़ाऊ़न हो जाता है कुछ को नहीं होता। अगर छूत लगना होता तो सब ही को हो जाता लिहाज़ा वही ह़क़ है जो मुख़्बिर स़ादिक़ (ﷺ) ने फ़र्माया मगर वहम की दवा अफ़लातून के पास भी नहीं है। (वह़ीदी)

٥٧٧٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَا عَدْوَى وَلَا طِيَرَةَ، وَيُعْجِبُنِي الْفَأْلُ)) قَالُوا وَمَا الْفَأْلُ؟ قَالَ : ((كَلِمَةٌ طَيِّبَةٌ)). [راجع: ٥٧٥٦]

5776. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मैंने क़तादा से सुना और उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया छूत लगना कोई चीज़ नहीं है और बदशगुनी नहीं है अल्बत्ता नेक फ़ाल मुझे पसंद है। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया नेक फ़ाल क्या है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छी बात मुँह से निकालना या किसी से सुन लेना। (राजेअ़ : 5756)

कोई कलिमा ख़ैर सुन पाना जिससे किसी ख़ैर को मुराद लिया जा सकता हो ये नेक फ़ाली है जिसकी मुमानअ़त नहीं है।

٥٥- باب ما يُذْكَرُ فِي سُمِّ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، رَوَاهُ عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

बाब 55 : नबी करीम (ﷺ) को ज़हर दिये जाने के बारे में बयान। इस क़िस्स़े को उ़र्वा ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से बयान किया, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है।

٥٧٧٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ قَالَ: لَمَّا فُتِحَتْ خَيْبَرُ أُهْدِيَتْ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ شَاةٌ فِيهَا سُمٌّ فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ

5777. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने, उनसे सईद बिन अबी सईद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, उन्होंने बयान किया कि जब ख़ैबर फ़तह हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) को एक बकरी हदिये में पेश

तरफ़ देखा और फ़र्माया कि जो अल्लाह की मख़्लूक़ पर रहम नहीं करता उस पर भी रहम नहीं किया जाता।

رَسُولَ اللهِ ﷺ، ثُمَّ قَالَ : ((مَنْ لاَ يَرْحَمُ لاَ يُرْحَمُ)).

मज़ीद तशरीह नीचे वाली हदीष में आ रही है।

5998. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा आप लोग बच्चों को बोसा देते हैं, हम तो उन्हें बोसा नहीं देते। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिल से रहम निकाल दिया है तो मैं क्या कर सकता हूँ?

٥٩٩٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ فَقَالَ: تُقَبِّلُونَ الصِّبْيَانَ فَمَا نُقَبِّلُهُمْ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَوَ أَمْلِكُ لَكَ إِنْ نَزَعَ اللهُ مِنْ قَلْبِكَ الرَّحْمَةَ)).

5999. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास कुछ क़ैदी आए क़ैदियों में एक औ़रत थी जिसका पिस्तान दूध से भरा हुआ था और वो दौड़ रही थी, इतने में एक बच्चा उसको क़ैदियों में मिला उसने झट अपने पेट से लगा लिया और उसको दूध पिलाने लगी। हमसे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्या तुम ख़याल कर सकते हो कि ये औ़रत अपने बच्चे को आग में डाल सकती है हमने अ़र्ज़ किया कि नहीं जब तक इसको क़ुदरत होगी ये अपने बच्चे को आग में नहीं फेंक सकती। आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि अल्लाह अपने बन्दों पर इससे भी ज़्यादा रहम करने वाला है। जितना ये औ़रत अपने बच्चे पर मेहरबान हो सकती है।

٥٩٩٩- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ سَبْيٌ فَإِذَا امْرَأَةٌ مِنَ السَّبْيِ تَحْلُبُ ثَدْيَهَا تَسْقِي إِذَا وَجَدَتْ صَبِيًّا فِي السَّبْيِ أَخَذَتْهُ فَأَلْصَقَتْهُ بِبَطْنِهَا وَأَرْضَعَتْهُ فَقَالَ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ ((أَتُرَوْنَ هَذِهِ طَارِحَةً وَلَدَهَا فِي النَّارِ؟)) قُلْنَا لاَ وَهِيَ تَقْدِرُ عَلَى أَنْ لاَ تَطْرَحَهُ فَقَالَ: ((اللهُ أَرْحَمُ بِعِبَادِهِ مِنْ هَذِهِ بِوَلَدِهَا)).

तश्रीह : ग़ालिबन ये उस औ़रत का गुमशुदा बच्चा था जो उसे मिल गया और उसको उसने इस मुहब्बत के साथ अपने पेट से चिमटा लिया।

बाब 19 : अल्लाह तआ़ला ने अपनी रहमत के सौ हिस्से बनाए हैं

١٩- باب جَعَلَ اللهُ الرَّحْمَةَ مِائَةَ جُزْءٍ

6000. हमसे हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, कहा हमको सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह ने रहमत के सौ हिस्से बनाए और अपने

٦٠٠٠- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيِّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((جَعَلَ اللهُ

पास उनमें से निन्नानवे (99) हिस्से रखे सिर्फ़ एक हिस्सा ज़मीन पर उतारा और उसी की वजह से तुम देखते हो कि मख़्लूक़ एक–दूसरे पर रहम करती है, यहाँ तक कि घोड़ी भी अपने बच्चे को अपने सम नहीं लगने देती बल्कि समूँ को उठा लेती है कि कहीं उससे उस बच्चे को तकलीफ़ न पहुँचे। (दोगर मक़ामात : 6469)

الرَّحْمَةَ مِائَةَ جُزْءٍ، فَأَمْسَكَ عِنْدَهُ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ جُزْءًا، وَأَنْزَلَ فِي الأَرْضِ جُزْءًا وَاحِدًا، فَمِنْ ذَلِكَ الْجُزْءِ يَتَرَاحَمُ الْخَلْقُ حَتَّى تَرْفَعَ الْفَرَسُ حَافِرَهَا عَنْ وَلَدِهَا خَشْيَةَ أَنْ تُصِيبَهُ)). [طرفه في : ٦٤٦٩].

तश्रीह : घोड़ी का अपने बच्चे पर इस दर्जा रहम करना भी क़ुदरत का एक करिश्मा है मगर कितने लोग दुनिया में ऐसे हैं कि वो रहम व करम करना मुत्लक़ नहीं जानते बल्कि हर वक़्त ज़ुल्म पर अड़े रहते हैं उनको याद रखना चाहिये कि जल्द ही वो अपने मज़ालिम की सज़ा भुगतेंगे क़ानूने क़ुदरत यही है **फ़क़ुतिअ दाबिरुल्क़ौमिल्लज़ीन ज़लमू वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्आलमीन** (अल अन्आम : 45)

٢٠- باب قَتْلِ الْوَلَدِ خَشْيَةَ أَنْ يَأْكُلَ مَعَهُ

६००१- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُرَحْبِيلَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ الذَّنْبِ أَعْظَمُ؟ قَالَ ((أَنْ تَجْعَلَ للهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَكَ)) ثُمَّ قَالَ أَيٌّ؟ قَالَ : ((أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ خَشْيَةَ أَنْ يَأْكُلَ مَعَكَ)) قَالَ : ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((أَنْ تُزَانِيَ حَلِيلَةَ جَارِكَ)) وَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى تَصْدِيقَ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ﴿وَالَّذِينَ لاَ يَدْعُونَ مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ﴾. [الفرقان: ٦٨].

[راجع: ٤٤٧٧]

6001. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान षौरी ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर बिन मुअतमिर ने, उन्हें अबू वाइल ने, उन्हें अम्र बिन शुरहबील ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने कहा या रसूलल्लाह! कौनसा गुनाह सबसे बड़ा है? फ़र्माया कि तुम अल्लाह तआला का किसी को शरीक बनाओ हालाँकि उसी ने तुम्हें पैदा किया है। उन्होंने कहा फिर उसके बाद फ़र्माया ये कि तुम अपने लड़के को इस डर से क़त्ल करो कि अगर ज़िन्दा रहा तो तुम्हारी रोज़ी में शरीक होगा। उन्होंने कहा उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये कि तुम अपने पड़ौसी की बीवी से ज़िना करो। चुनाँचे अल्लाह तआला ने भी आँहज़रत (ﷺ) के इस इर्शाद की ताईद में ये आयत वल्लज़ीन ला यदऊना मअल्लाहि इलाहन आख़र अल्अख़, नाज़िल की कि, और वो लोग जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पुकारते और न वो नाहक़ किसी का क़त्ल करते हैं और न वो ज़िना करते हैं। (राजेअ : 4477)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि शिर्क अकबरुल कबाइर है और दूसरे मज़्कूरा कबीरा गुनाह हैं अगर उनका मुर्तकिब बग़ैर तौबा मर जाए तो उसे दोज़ख़ में पहुँचा देते हैं शिर्क की हालत में मरने वाला हमेशा के लिये दोज़ख़ी है ख़्वाह वो नामो–निहाद मुसलमान ही हों क्योंकि क़ब्रों को सज्दा करता है, मुर्दों को पुकारता और उनसे हाजात तलब करता है तो वो काहे का मुसलमान है वो मुसलमान भी मुश्रिक है।

बाब 21 : बच्चे को गोद में बिठा लेना

٢١- باب وَضْعِ الصَّبِيِّ فِي الْحِجْرِ

6002. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा

٦٠٠٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى،

स़ालेह़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा ह़ज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ यहूदी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और कहा अस्सामु अ़लैकुम (तुम्हें मौत आए) मैं उसका माना समझ गई और मैंने उनका जवाब दिया कि व अलैकुमुस्सामु वल्लअ़नतु (या'नी तुम्हें मौत आए और ला'नत हो) बयान किया कि उस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ठहरो, ऐ आइशा! अल्लाह तआ़ला तमाम मामलात में नर्मी और मुलाइमत को पसंद करता है। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आपने सुना नहीं उन्होंने क्या कहा था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने उसका जवाब दे दिया था कि व अ़लैकुम (और तुम्हें भी) (राजेअ़ : 2935)

ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: دَخَلَ رَهْطٌ مِنَ الْيَهُودِ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: السَّامُ عَلَيْكُمْ قَالَتْ عَائِشَةُ: فَفَهِمْتُهَا فَقُلْتُ: وَعَلَيْكُمُ السَّامُ وَاللَّعْنَةُ، قَالَتْ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَهْلاً يَا عَائِشَةُ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الأَمْرِ كُلِّهِ)). فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَوَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوا؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَدْ قُلْتُ وَعَلَيْكُمْ)).

[راجع: ٢٩٣٥]

6025. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे स़ाबित ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया था। स़ह़ाबा किराम उनकी त़रफ़ दौड़े लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उसके पेशाब को मत रोको। फिर आपने पानी का डोल मंगवाया और वो पेशाब की जगह पर बहा दिया गया।

٦٠٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ أَعْرَابِيًّا بَالَ فِي الْمَسْجِدِ فَقَامُوا إِلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تُزْرِمُوهُ)) ثُمَّ دَعَا بِدَلْوٍ مِنْ مَاءٍ فَصُبَّ عَلَيْهِ.

तश्रीह : अख़्लाक़े मुह़म्मदी का एक नमूना इस ह़दीस़ से ही ज़ाहिर है कि देहाती ने मस्जिद के कोने में पेशाब कर दिया मगर आपने उसे रोकने के बजाय उस पर पानी डलवा दिया बाद में बड़ी नर्मी से उसे समझा दिया। (ﷺ)

बाब 36 : एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान की मदद करना

٣٦- باب تَعَاوُنِ الْمُؤْمِنِينَ بَعْضِهِمْ بَعْضًا

6026. हमसे मुह़म्मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा बुरैद बिन अबी बुर्दा ने कहा कि मुझे मेरे दादा अबू बुर्दा ने ख़बर दी, उनसे उनके वालिद अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये इस त़रह़ है जैसे इमारत कि उसका एक ह़िस्सा दूसरे ह़िस्से को थामे रहता है (गिरने नहीं देता) फिर आपने अपनी उँगलियों को क़ैंची की त़रह कर लिया। (राजेअ़ : 481)

٦٠٢٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، بُرَيْدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَدِّي أَبُو بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ، يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا)) ثُمَّ شَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ. [راجع: ٤٨١]

6038. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने सलाम बिन मिस्कीन से सुना, कहा कि मैंने षाबित से सुना, कहा कि हमसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की दस साल तक ख़िदमत की लेकिन आपने कभी मुझे उफ़ तक नहीं कहा और न कभी ये कहा कि फ़लाँ काम क्यूँ किया और फ़लाँ काम क्यूँ नहीं किया। (राजेअ : 2768)

٦٠٣٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، سَمِعَ سَلاَمَ بْنَ مِسْكِينٍ قَالَ: سَمِعْتُ ثَابِتًا يَقُولُ: حَدَّثَنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَدَمْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَشْرَ سِنِينَ فَمَا قَالَ لِي أُفٍّ وَلاَ لِمَ صَنَعْتَ وَلاَ مالاَ صَنَعْتَ؟. [راجع: ٢٧٦٨]

तश्रीह : दस साल की मुद्दत काफ़ी तवील होती है मगर इस सारी मुद्दत में हज़रत अनस (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) ने कभी भी नहीं डांटा न धमकाया न कभी आपने उनसे सख़्त कलामी फ़र्माई। ये आपके हुस्ने अख़लाक़ की दलील है और हक़ीक़त है कि आपसे ज़्यादा दुनिया में कोई शख़्स नर्मदिल ख़ुशअख़लाक़ पैदा नहीं हुआ। अल्लाह पाक उस प्यारे रसूल पर हज़ारहा हज़ार दरूदो–सलाम नाज़िल फ़र्माए, आमीन षुम्म आमीन।

बाब 40 : आदमी अपने घर में क्या करता रहे

٤٠- باب كَيْفَ يَكُونُ الرَّجُلُ فِي أَهْلِهِ؟

6039. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हकम ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अस्वद ने बयान किया कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने घर में क्या करते थे? फ़र्माया आँहज़रत (ﷺ) अपने घर के काम काज करते और जब नमाज़ का वक़्त हो जाता तो नमाज़ के लिये मस्जिद तशरीफ ले जाते थे। (राजेअ : 676)

٦٠٣٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْنَعُ فِي أَهْلِهِ؟ قَالَتْ: كَانَ فِي مِهْنَةِ أَهْلِهِ، فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلاَةُ قَامَ إِلَى الصَّلاَةِ. [راجع: ٦٧٦]

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है कि आप बाज़ार से सौदा ले आते और अपना जूता आप टाँक लेते गोया उम्मत के लिये आप सबक़ दे रहे थे कि आप काज महा काज, इंसान का रवैया होना चाहिये। **अल्मिहनतु बिकस्रिल्मीम व फत्हिहा व उन्किर इल्ला लिमअल्कस्रि व फस्सरहा बिख़िदमति अहलिही** (फ़तहुल्बारी) या'नी लफ़्ज़े महना मीम के ज़ेर और ज़बर दोनों के साथ जाइज़ है और घर वालों की ख़िदमत पर ये लफ़्ज़ बोला जाता है।

बाब 41 : नेक आदमी की मुहब्बत अल्लाह पाक लोगों के दिलों में डाल देता है।

٤١- باب الْمِقَةِ مِنَ اللهِ

6040. हमसे अम्र बिन अली ने बयान किया, कहा हमसे अबू आसिम ने, उनसे इब्ने जुरैज ने, कहा मुझको मूसा बिन उक़्बा ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब अल्लाह किसी बन्दे से

٦٠٤٠- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

तश्रीह : ग़ीबत ये कि पीठ पीछे किसी भाई की ऐसी ऐबजोई करे जो उसको नागवार हो ये ग़ीबत करना बदतरीन गुनाह है क़ाल इब्नुल अष़ीर फ़िन् नहायति ग़ीबत इन तज़्किरल इंसान फ़ी ग़ीबतही बिसूइन व इन काना फ़ीही (फ़त्ह)

6052. हमसे यह्या बिन मूसा बल्ख़ी ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने मुजाहिद से सुना, वो ताउस से बयान करते थे और वो हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) दो क़ब्रों के पास से गुज़रे और फ़र्माया कि उन दोनों क़ब्रों के मुर्दों को अ़ज़ाब हो रहा है और ये किसी बड़े गुनाह की वजह से अ़ज़ाब में गिरफ़्तार नहीं हैं बल्कि ये (एक क़ब्र का मुर्दा) अपने पेशाब की छींटों से नहीं बचता था (या पेशाब करते वक़्त पर्दा नहीं करता था) और ये (दूसरी क़ब्र वाला मुर्दा) चुग़लख़ोर था, फिर आपने एक हरी शाख़ मंगाई और उसे दो टुकड़ों में फाड़कर दोनों क़ब्रों पर गाड़ दिया उसके बाद फ़र्माया कि जब तक ये शाख़ें सूख न जाएँ उस वक़्त तक शायद इन दोनों का अ़ज़ाब हल्का रहे। (राजेअ़ : 216)

٦٠٥٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ: سَمِعْتُ مُجَاهِدًا يُحَدِّثُ عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ الله عَنْهُمَا قَالَ: مَرَّ رَسُولُ الله ﷺ عَلَى قَبْرَيْنِ فَقَالَ: ((إِنَّهُمَا لَيُعَذَّبَانِ، وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيرٍ أَمَّا هَذَا فَكَانَ لاَ يَسْتَتِرُ مِنْ بَوْلِهِ، وَأَمَّا هَذَا فَكَانَ يَمْشِي بِالنَّمِيمَةِ)) ثُمَّ دَعَا بِعَسِيبٍ رَطْبٍ فَشَقَّهُ بِاثْنَيْنِ فَغَرَسَ عَلَى هَذَا وَاحِدًا وَعَلَى هَذَا وَاحِدًا، ثُمَّ قَالَ: ((لَعَلَّهُ يُخَفَّفُ عَنْهُمَا مَا لَمْ يَيْبَسَا)). [راجع: ٢١٦]

तश्रीह : ये टहनी गाड़ने का अ़मल आपके साथ ख़ास था। इसलिये कि आपको क़ब्र वालों का सह़ीह़ ह़ाल मा'लूम हो गया था और ये मा'लूम होना भी आप ही के साथ ख़ास था। आज कोई नहीं जान सकता कि क़ब्र वाला किस ह़ाल में है, लिहाज़ा कोई अगर टहनी गाड़े तो वो बेकार है, वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

बाब : 47 नबी करीम (ﷺ) का फ़र्माना अंसार के सब घरों में फ़लाना घराना बेहतर है

٤٧- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ خَيْرُ دُورِ الأَنْصَارِ

इस बाब से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की अ़र्ज़ ये है कि किसी शख़्स की या क़ौम की फ़ज़ीलत बयान करना उसको दूसरे अश्ख़ास या अक़्वाम पर तरजीह देना ग़ीबत में दाख़िल नहीं है।

6053. हमसे क़ुबैसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू उसैद साइ़दी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़बीला अंसार में सबसे बेहतर घराना बनू नज्जार का घराना है। (राजेअ़ : 3789)

٦٠٥٣- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((خَيْرُ دُورِ الأَنْصَارِ بَنُو النَّجَّارِ)). [راجع: ٣٧٨٩]

बाब 48 : मुफ़्सिद और शरीर लोगों की या जिन पर गुमाने ग़ालिब बुराई का हो, उनकी ग़ीबत दुरुस्त होना

٤٨- باب مَا يَجُوزُ مِنْ اغْتِيَابِ أَهْلِ الْفَسَادِ وَالرِّيَبِ

ताकि दूसरे मुसलमान उनके बुराई से बचे रहें।

6054. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सुफ़यान बिन उ़यय्ना ने ख़बर दी, उन्होंने मुहम्मद बिन मुंकदिर से सुना, उन्होंने उ़र्वा बिन ज़ुबैर से सुना और उन्हें उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अंदर आने की इजाज़त चाही तो आपने फ़र्माया कि उसे इजाज़त दे दो, फ़लाँ क़बीले का ये बुरा आदमी है। जब वो शख़्स अंदर आया तो आपने उसके साथ बड़ी नर्मी से बातचीत की, मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपको उसके बारे में जो कुछ कहना था वो इर्शाद फ़र्माया और फिर उसके साथ नर्म बातचीत की। आपने फ़र्माया, आइशा (रज़ि.)! वो आदमी है बदतरीन जिसे उसकी बदकलामी के डर से लोग छोड़ दें। (राजेअ़ : 6032)

٦٠٥٤- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، سَمِعْتُ ابْنَ الْمُنْكَدِرِ سَمِعَ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ قَالَتْ: اسْتَأْذَنَ رَجُلٌ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((ائْذَنُوا لَهُ بِئْسَ أَخُو الْعَشِيرَةِ، أَوِ ابْنُ الْعَشِيرَةِ)) فَلَمَّا دَخَلَ أَلاَنَ لَهُ الْكَلاَمَ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ قُلْتَ الَّذِي قُلْتَ: ثُمَّ أَلَنْتَ لَهُ الْكَلاَمَ؟ قَالَ : ((أَيْ عَائِشَةُ إِنَّ شَرَّ النَّاسِ مَنْ تَرَكَهُ النَّاسُ، أَوْ وَدَعَهُ النَّاسُ اتِّقَاءَ فُحْشِهِ)). [راجع: ٦٠٣٢]

ये ह़क़ीक़त थी कि वो बुरा आदमी है मगर मैं तो बुरा नहीं हूँ मुझे तो अपनी नेक आदत के मुताबिक़ हर बुरे भले आदमी के साथ नेक ख़ू, ही बरतनी होगी। सदक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)।

बाब 49 : चुग़लख़ोरी करना कबीरा गुनाहों में से है

٤٩- بَابُ النَّمِيمَةُ مِنَ الْكَبَائِرِ

तश्रीह: व हिय नक़्लुन मक्रूहुन बिक़सदिल्इफ़्सादि (अल्ख) (क़स्तलानी) या'नी फ़साद कराने के लिए किसी की बुराई किसी और के सामने नक़ल करना। चुग़लख़ोर एक साअ़त में इतना फ़साद फैला सकता है कि कोई जादूगर इतना फ़साद एक महीने में भी नहीं करा सकता, इसलिये ये कबीरा गुनाह है।

6055. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको उ़बैदह बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर बिन मअ़मर ने, उन्हें मुजाहिद ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मदीना मुनव्वरह के किसी बाग़ से तशरीफ़ लाए तो आपने दो (मुर्दा) इंसानों की आवाज़ सुनी जिन्हें उनकी क़ब्रों में अ़ज़ाब दिया जा रहा था फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उन्हें अ़ज़ाब हो रहा है और किसी बड़े गुनाह की वजह से उन्हें अ़ज़ाब नहीं हो रहा है। उनमें से एक शख़्स पेशाब के छींटो से नहीं बचता था और दूसरा चुग़लख़ोर था। फिर आपने खजूर की एक हरी शाख़ मंगवाई और उसे दो हिस्सों में तोड़ा और एक टुकड़ा एक की क़ब्र पर और दूसरा दूसरी की क़ब्र पर गाड़ दिया। फिर फ़र्माया शायद कि उनके

٦٠٥٥- حَدَّثَنَا ابْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا عَبِيدَةُ بْنُ حُمَيْدٍ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ بَعْضِ حِيطَانِ الْمَدِينَةِ فَسَمِعَ صَوْتَ إِنْسَانَيْنِ يُعَذَّبَانِ فِي قُبُورِهِمَا فَقَالَ ((يُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيرَةٍ، وَإِنَّهُ لَكَبِيرٌ كَانَ أَحَدُهُمَا لاَ يَسْتَتِرُ مِنَ الْبَوْلِ، وَكَانَ الآخَرُ يَمْشِي بِالنَّمِيمَةِ)) ثُمَّ دَعَا بِجَرِيدَةٍ فَكَسَرَهَا بِكِسْرَتَيْنِ أَوِ اثْنَتَيْنِ فَجَعَلَ كِسْرَةً فِي قَبْرِ هَذَا وَكِسْرَةً فِي قَبْرِ

सलमा से सुना और उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ : 6103)

أَبَا سَلَمَةَ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ
[راجع: ٦١٠٣]

तश्रीह : जिसको काफ़िर कहा वो वाक़ई में काफ़िर है तब तो वो काफ़िर है और जब वो काफ़िर नहीं तो कहने वाला काफ़िर हो गया। इसीलिये अहले ह़दीष़ ने तक्फ़ीर में बड़ी एह़तियात़ बरती है, वो कहते हैं कि हम किसी अहले क़िब्ला को काफ़िर नहीं कहते लेकिन बाद वाले फ़ुक़हा अपनी किताबों में अदना अदना बातों पर अपने मुख़ालिफ़ीन की तक्फ़ीर करते हैं, स़ाह़िबे दुर्रे-मुख़्तार ने बड़ी जुर्अत (बहादुरी) से ये फ़त्वा दर्ज कर दिया, **फलअनतु रबिना इअदादु रम्लिन अला मन रद्द क़ौल अबी ह़नीफ़त** या'नी जो ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा के किसी क़ौल को रद्द कर दे उस पर इतनी ला'नत हो जितने दुनिया में ज़र्रात हैं। कहिये इस उस़ूल के मुवाफ़िक़ तो सारे अइम्मा-ए-दीन मल्ऊन ठहरे जिन्होंने बहुत से मसाइल में ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) के क़ौल को रद्द किया है। ख़ुद ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़ .) के शागिर्दों ने कितने ही मसाइल में ह़ज़रत इमाम से इख़्तिलाफ़ किया है तो क्या स़ाह़िबे दुर्रे-मुख़्तार के नज़दीक वो भी सब मल्ऊन और मत्रूद थे। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) को ऐसे लोगो ने पैग़म्बर समझ लिया है या आयत **इत्तख़ज़ू अह़बारहुम व रुहबानहुम** के तह़त उनको अल्लाह बना लिया है, ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) एक आलिमे दीन थे, उनसे कितने ही मसाइल में ख़त़ा हुई वो मा'स़ूम नहीं थे। इस ह़दीष़ से उन लोगों को सबक़ लेना चाहिये जो बिला तह़क़ीक़ मह़ज़ गुमान की बिना पर मुसलमानों को मुश्रिक या काफ़िर कह देते हैं। (वह़ीदी)

6104. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह़ .) ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिस शख़्स़ ने भी अपने किसी भाई को कहा कि ऐ काफ़िर! तो उन दोनों में से एक काफ़िर हो गया।

٦١٠٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أَيُّمَا رَجُلٍ قَالَ لأَخِيهِ: يَا كَافِرُ فَقَدْ بَاءَ بِهَا أَحَدُهُمَا)).

6105. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने, उनसे ष़ाबित बिन ज़ह्ह़ाक (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने इस्लाम के सिवा किसी और मज़हब की झूठ मूट क़सम खाई तो वो वैसा ही हो जाता है, जिसकी उसने क़सम खाई है और जिसने किसी चीज़ से ख़ुदकुशी कर ली तो उसे जहन्नम में उसी से अ़ज़ाब दिया जाएगा और मोमिन पर ला'नत भेजना उसे क़त्ल करने के बराबर है और जिसने किसी मोमिन पर कुफ़्र की तोह्मत लगाई तो ये उसके क़त्ल के बराबर है। (राजेअ : 1363)

٦١٠٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ ثَابِتِ بْنِ الضَّحَّاكِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَلَفَ بِمِلَّةٍ غَيْرِ الإِسْلاَمِ كَاذِبًا فَهُوَ كَمَا قَالَ: وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِشَيْءٍ عُذِّبَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ، وَلَعْنُ الْمُؤْمِنِ كَقَتْلِهِ، وَمَنْ رَمَى مُؤْمِنًا بِكُفْرٍ فَهُوَ كَقَتْلِهِ)). [راجع: ١٣٦٣]

किसी मज़हब पर क़सम खाना मष़लन यूँ कहा कि अगर मैं ने ये काम किया तो मैं यहूदी या नस़रानी वग़ैर[illegible] ये बहुत बुरी क़सम है अआ़ज़नल्लाहु मिन्हू

बाब 74 : अगर किसी ने कोई वजह मा'क़ूल रखकर किसी को काफ़िर कहा या नादानिस्ता तो वो काफ़िर होगा और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने

لَمْ يَرَ إِكْفَارَ مَنْ قَالَ لاَ وَقَالَ عُمَرُ لِحَاطِبٍ

बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुमैदी बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें से जिसने लात व उ़ज़्ज़ा की (या दूसरे बुतों की क़सम) खाई तो उसे ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ना चाहिये और जिसने अपने साथी से कहा कि आओ जुआ खेलें तो उसे बतौरे कफ़्फ़ारा सदक़ा देना चाहिये। (राजेअ़ : 4860)

الزُّهْرِيُّ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ حَلَفَ مِنْكُمْ فَقَالَ فِي حَلِفِهِ: بِاللاَّتِ وَالْعُزَّى فَلْيَقُلْ : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَمَنْ قَالَ لِصَاحِبِهِ : تَعَالَ أُقَامِرْكَ فَلْيَتَصَدَّقْ)). [راجع: ٤٨٦٠]

तश्रीह : लात व उ़ज़्ज़ा बुतों की क़सम वही लोग खा सकते हैं जो उनको मा'बूद जानते होंगे, लिहाज़ा अगर कोई मुसलमान ऐसी क़सम खा बैठे तो लाज़िम है कि वो दोबारा कलिमा त़य्यिबा पढ़कर ईमान की तज्दीद करे। ग़ैरुल्लाह में सब दाख़िल हैं बुत हों या अवतार या पैग़म्बर या शहीद या वली या फ़रिश्ते किसी भी बुत या ह़जर वग़ैरह की क़सम खाने वाला दोबारा कलिमा त़य्यिबा पढ़कर तज्दीदे ईमान के लिये मामूर है।

6108. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि वो ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के पास पहुँचे जो चंद सवारों के साथ थे, उस वक़्त ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) अपने वालिद की क़सम खा रहे थे। उस पर रसूले करीम (ﷺ) ने उन्हें पुकारकर कहा, आगाह हो, यक़ीनन अल्लाह पाक तुम्हें मना करता है कि तुम अपने बाप दादों की क़सम खाओ, पस अगर किसी को क़सम ही खानी है तो वो अल्लाह की क़सम खाए, वरना चुप रहे। (राजेअ़ : 2679)

٦١٠٨– حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ أَدْرَكَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ فِي رَكْبٍ وَهُوَ يَحْلِفُ بِأَبِيهِ فَنَادَاهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ إِنَّ اللهَ يَنْهَاكُمْ أَنْ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ، فَمَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِاللهِ وَإِلاَّ فَلْيَصْمُتْ)).[راجع: ٢٦٧٩]

दूसरी ह़दीष़ में आया है कि ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना मना है अगर किसी की ज़ुबान से ग़ैरुल्लाह की क़सम निकल गई तो उसे कलिमा तौह़ीद पढ़कर फिर ईमान की तज्दीद करना चाहिये अगर कोई इरादतन किसी पीर या बुत की अ़ज़्मत मिष़्ले अ़ज़्मते इलाही के जानकर उनके नाम की क़सम खाएगा तो वो यक़ीनन मुश्रिक हो जाएगा एक ह़दीष़ में जो अफ़्लह व अबीहि इन स़दक़ के लफ़्ज़ आए हैं । ये ह़दीष़ पहले की है। लिहाज़ा यहाँ क़सम का जवाज़ मन्सूख़ है।

बाब 75 : ख़िलाफ़े शरअ़ काम पर ग़ुस्सा और सख़्ती करना, और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया सूरह बरात में, कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन से जिहाद कर और उन पर सख़्ती कर

٧٥– بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الْغَضَبِ وَالشِّدَّةِ لأَمْرِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ﴾.

6109. हमसे बुसरा बिन स़फ़्वान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे क़ासिम ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाए और घर में एक पर्दा लटका हुआ था जिस पर तस्वीरें थीं। आँह़ज़रत (ﷺ) के चेहरे का रंग बदल गया, फिर

٦١٠٩– حَدَّثَنَا بُسَرَةُ بْنُ صَفْوَانَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَى النَّبِيُّ ﷺ وَفِي الْبَيْتِ قِرَامٌ فِيهِ صُوَرٌ فَتَلَوَّنَ وَجْهُهُ ثُمَّ تَنَاوَلَ السِّتْرَ فَهَتَكَهُ وَقَالَتْ :

6118. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू सलमा ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) का गुज़र एक शख़्स पर से हुआ जो अपने भाई पर ह़या की वजह से नाराज़ हो रहा था और कह रहा था कि तुम बहुत शर्माते हो, गोया वो कह रहा था कि तुम उसकी वजह से अपना नुक़्स़ान कर लेते हो। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि उसे छोड़ दो कि ह़या ईमान में से है। (राजेअ़ : 24)

٦١١٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى رَجُلٍ وَهُوَ يُعَاتِبُ أَخَاهُ فِي الْحَيَاءِ يَقُولُ: إِنَّكَ لَتَسْتَحْيِي حَتَّى كَأَنَّهُ يَقُولُ: قَدْ أَضَرَّ بِكَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((دَعْهُ فَإِنَّ الْحَيَاءَ مِنَ الإِيمَانِ)). [راجع: ٢٤]

6119. हमसे अ़ली बिन अल जअ़द ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें क़तादा ने, उन्हें अनस (रज़ि.) के गुलाम क़तादा ने, अबू अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि उनका नाम अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उ़त्बा है, मैंने अबू सईद से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) पर्दा में रहने वाली कुँवारी लड़की से भी ज़्यादा ह़या वाले थे। (राजेअ़ : 3562)

٦١١٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مَوْلَى أَنَسٍ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ اسْمُهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي عُتْبَةَ : سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ يَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَشَدَّ حَيَاءً مِنَ الْعَذْرَاءِ فِي خِدْرِهَا. [راجع: ٣٥٦٢]

बाब 78 : जब ह़या न हो तो जो चाहो करो

٧٨- باب إِذَا لَمْ تَسْتَحِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ.

6120. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मंसूर ने बयान किया, उनसे रिब्ई बिन ख़राश ने बयान किया,उनसे अबू मसऊ़द अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगले पैग़म्बरों का कलाम जो लोगों को मिला उसमें ये भी है कि जब शर्म ही न रही तो फिर जो जी चाहे वो करो। (राजेअ़ : 3483)

٦١٢٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ مِمَّا أَدْرَكَ النَّاسُ مِنْ كَلاَمِ النُّبُوَّةِ الأُولَى إِذَا لَمْ تَسْتَحِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ)). [راجع: ٣٤٨٣]

बाब 79 : शरीअ़त की बातें पूछने में शर्म न करना चाहिये

٧٩- باب مَا لاَ يُسْتَحْيَا مِنَ الْحَقِّ لِلتَّفَقُّهِ فِي الدِّينِ

6121. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने उनसे ज़ैनब बिन्ते अबी

٦١٢١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ

ने, उनसे हफ़्स बिन आसिम ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने इसी तरह बयान किया और ये इज़ाफ़ा किया कि फिर मैंने इसका ज़िक्र उमर (रज़ि.) से किया तो उन्होंने कहा अगर तुमने कह दिया होता तो मुझे इतना इतना माल मिलने से भी ज़्यादा ख़ुशी हासिल होती। (राजेअ : 61)

خُبَيْبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ مِثْلَهُ وَزَادَ فَحَدَّثْتُ بِهِ عُمَرَ، فَقَالَ: لَوْ كُنْتَ قُلْتَهَا لَكَانَ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ كَذَا وَكَذَا.[راجع: ٦١]

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इसी रिवायत से बाब का मतलब निकाला कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने बेटे अब्दुल्लाह की इस शर्म को पसंद न किया जो दीन की बात बतलाने में उन्होंने की। बेमहल शर्म करना ग़लत है।

6123. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे मरहूम बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने कहा कि मैंने षाबित से सुना, और उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक ख़ातून नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अपने आपको आँहज़रत (ﷺ) के निकाह के लिये पेश किया और अर्ज़ किया, क्या आँहज़रत (ﷺ) को मुझसे निकाह की ज़रूरत है? इस पर अनस (रज़ि.) की साहबज़ादी बोलीं, वो कितनी बेहया थी। अनस (रज़ि.) ने कहा कि वो तुमसे तो अच्छी थीं उन्होंने अपने आपको आँहज़रत (ﷺ) के निकाह के लिये पेश किया। (राजेअ : 5120)

٦١٢٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا مَرْحُومٌ، سَمِعْتُ ثَابِتًا أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ تَعْرِضُ عَلَيْهِ نَفْسَهَا فَقَالَتْ: هَلْ لَكَ حَاجَةٌ فِيَّ؟

ये सआदत कहाँ मिलती है कि आँहज़रत (ﷺ) किसी औरत को अपनी ज़ौजियत के लिये पसंद फ़र्माएँ।

बाब 80 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान कि आसानी करो, सख़्ती न करो, आप (ﷺ) लोगों पर तख़्फ़ीफ़ और आसानी को पसंद फ़र्माया करते थे

٨٠- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَسِّرُوا وَلاَ تُعَسِّرُوا)) وَكَانَ يُحِبُّ التَّخْفِيفَ وَالْيُسْرَ عَلَى النَّاسِ.

अल्लाह पाक हमारे उलमा और फ़ुक़हा को भी इस नबी (ﷺ) के तरीक़े पर अमल की तौफ़ीक़ दे जिन्होंने मिल्लते इस्लामिया को मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों में बांट करके उम्मत को बहुत सी मुश्किलात में मुब्तला कर रखा है।

6124. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे नज़र ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन अबी बुर्दा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनके दादा ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें (अबू मूसा अशअरी रज़ि.) और मुआज़ बिन जबल को (यमन) भेजा तो उनसे फ़र्माया कि (लोगों के लिए) आसानियाँ पैदा करना, तंगी में न डालना, उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाना, दीन से नफ़रत न दिलाना और तुम दोनों आपस में इत्तिफ़ाक़ से काम करना, अबू मूसा

٦١٢٤- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا النَّضْرُ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: لَمَّا بَعَثَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ قَالَ لَهُمَا: ((يَسِّرَا وَلاَ تُعَسِّرَا وَبَشِّرَا وَلاَ تُنَفِّرَا وَتَطَاوَعَا)) قَالَ أَبُو مُوسَى: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا بِأَرْضٍ يُصْنَعُ فِيهَا شَرَابٌ مِنَ الْعَسَلِ يُقَالُ لَهُ

(रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हम ऐसी सरज़मीन में जा रहे हैं जहाँ शहद से शराब बनाई जाती है और उसे बित्अ़ कहा जाता है और जौ से शराब बनाई जाती है और उसे मिज़्र कहा जाता है? आँहज़रत ने फ़र्माया कि हर नशा लाने वाली चीज़ हराम है। (राजेअ : 2261)

الْبِتْعُ وَشَرَابٌ مِنَ الشَّعِيرِ يُقَالُ لَهُ : الْمِزْرُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ)). [راجع: ٢٢٦١]

कोई शराब हो जो नशा करे वो ह़राम है।

6125. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह़ ने बयान किया, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आसानी पैदा करो, तंगी न पैदा करो, लोगों को तसल्ली और तशफ़्फ़ी दो नफ़रत न दिलाओ।

٦١٢٥- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَسِّرُوا وَلاَ تُعَسِّرُوا وَسَكِّنُوا وَلاَ تُنَفِّرُوا)).

6126. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब भी रसूलुल्लाह (ﷺ) को दो चीज़ों में से एक को इख़्तियार करने का इख़्तियार दिया गया तो आपने हमेशा उनमें आसान चीज़ों को इख़्तियार किया, बशर्ते कि उसमें गुनाह का कोई पहलू न होता। अगर उसमें गुनाह का कोई पहलू होता तो आँह़ज़रत (ﷺ) उससे सबसे ज़्यादा दूर रहते और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अपनी ज़ात के लिये किसी से बदला नहीं लिया, अल्बत्ता अगर कोई शख़्स अल्लाह की हुर्मत वहृद को तोड़ता तो आँहज़रत (ﷺ) उनसे तो महज़ अल्लाह की रज़ामंदी के लिये बदला लेते। (राजेअ़ : 3560)

٦١٢٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: مَا خُيِّرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَيْنَ أَمْرَيْنِ قَطُّ إِلاَّ أَخَذَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمًا، فَإِنْ كَانَ إِثْمًا كَانَ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنْهُ، وَمَا انْتَقَمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِنَفْسِهِ فِي شَيْءٍ قَطُّ إِلاَّ أَنْ تُنْتَهَكَ حُرْمَةُ اللَّهِ فَيَنْتَقِمَ بِهَا لِلَّهِ.
[راجع: ٣٥٦٠]

बज़ाहिर इस ह़दीष़ में इश्काल है क्योंकि जो काम गुनाह होता है उसके लिये आपको कैसे इख़्तियार दिया जाता, शायद ये मुराद हो कि काफ़िरों की तरफ़ से ऐसा इख़्तियार दिया जाता।

6127. हमसे अबुन नोअ़मान बिन फ़ज़्ल सदूसी ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अज़्रक़ बिन क़ैस ने कि अह्वाज़ नामी ईरानी शहर में हम एक नहर के किनारे थे जो ख़ुश्क पड़ी थी, फिर अबू बर्ज़ा असलमी स़ह़ाबी घोड़े पर तशरीफ़ लाए और नमाज़ पढ़ी और घोड़ा छोड़ दिया। घोड़ा भागने लगा तो आपने नमाज़ तोड़ दी और उसका पीछा किया, आख़िर उसके क़रीब पहुँचे और उसे पकड़ लिया। फिर वापस आकर नमाज़ क़ज़ा की, वहाँ एक शख़्स

٦١٢٧- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنِ الأَزْرَقِ بْنِ قَيْسٍ، قَالَ: كُنَّا عَلَى شَاطِئِ نَهْرٍ بِالأَهْوَازِ قَدْ نَضَبَ عَنْهُ الْمَاءُ فَجَاءَ أَبُو بَرْزَةَ الأَسْلَمِيُّ عَلَى فَرَسٍ فَصَلَّى وَخَلَّى فَرَسَهُ، فَانْطَلَقَتِ الْفَرَسُ فَتَرَكَ صَلاَتَهُ وَتَبِعَهَا حَتَّى أَدْرَكَهَا، فَأَخَذَهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَضَى صَلاَتَهُ وَفِينَا رَجُلٌ

लग सकता।

وَاحِدٍ مَرَّتَيْنِ)).

एक ही बार धोखा खाता है फिर होशियार रहता है। सच कहा गया है कि,

आदमी बनता है लाखों ठोकरें खाने के बाद, रंग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद

बाब 84 : मेहमान के हक़ के बयान में

٨٤- باب حَقِّ الضَّيْفِ

6134. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे रौह बिन उबादा ने, कहा हमसे हुसैन ने, उनसे यह्या बिन अबीबक्र ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, क्या ये मेरी ख़बर सहीह है कि तुम रात भर इबादत करते रहते हो और दिन में रोज़े रखते हो? मैंने कहा कि जी हाँ ये सहीह है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसा न करो, इबादत भी कर और सो भी, रोज़े भी रख और बिला रोज़े भी रह, क्योंकि तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारी आँखों का भी तुम पर हक़ है, तुमसे मुलाक़ात के लिये आने वालों का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है, उम्मीद है कि तुम्हारी उम्र लम्बी हो क्योंकि हर नेकी का बदला दस गुना मिलता है, इस तरह ज़िंदगी भर का रोज़ा होगा। उन्होंने बयान किया कि मैंने सख़्ती चाही तो आपने मेरे ऊपर सख़्ती कर दी, मैंने अर्ज़ किया कि मैं इससे ज़्यादा की ताक़त रखता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर हर हफ़्ते तीन रोज़ा रखा कर, बयान किया कि मैंने और सख़्ती चाही और आपने मेरे ऊपर और सख़्ती कर दी। मैंने अर्ज़ किया कि मैं इससे भी ज़्यादा की ताक़त रखता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के नबी दाऊद (अलैहिस्सलाम) जैसा रोज़ा रख। मैंने पूछा, अल्लाह के नबी दाऊद (अलैहि.) का रोज़ा कैसा था? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक दिन रोज़ा एक दिन इफ़्तार गोया आधी उम्र के रोज़े। (राजेअ : 1131)

٦١٣٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَلَمْ أُخْبَرْ أَنَّكَ تَقُومُ اللَّيْلَ وَتَصُومُ النَّهَارَ))، قُلْتُ: بَلَى قَالَ: ((فَلاَ تَفْعَلْ قُمْ وَنَمْ، وَصُمْ وَأَفْطِرْ، فَإِنَّ لِجَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِعَيْنِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْرِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّكَ عَسَى أَنْ يَطُولَ بِكَ عُمُرٌ، وَإِنَّ مِنْ حَسْبِكَ أَنْ تَصُومَ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ فَإِنَّ بِكُلِّ حَسَنَةٍ عَشْرَ أَمْثَالِهَا فَذَلِكَ الدَّهْرُ كُلُّهُ))، قَالَ فَشَدَّدْتُ فَشُدِّدَ عَلَيَّ قُلْتُ : فَإِنِّي أُطِيقُ غَيْرَ ذَلِكَ قَالَ: ((فَصُمْ مِنْ كُلِّ جُمُعَةٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ)) قَالَ: فَشَدَّدْتُ فَشُدِّدَ عَلَيَّ قُلْتُ : أُطِيقُ غَيْرَ ذَلِكَ قَالَ: ((فَصُمْ صَوْمَ نَبِيِّ اللهِ دَاوُدَ)) قُلْتُ: وَمَا صَوْمُ نَبِيِّ اللهِ دَاوُدَ؟ قَالَ : ((نِصْفُ الدَّهْرِ)).

[راجع: ١١٣١]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) के इस इर्शादे गिरामी का हासिल ये है कि अल्लाह पाक ने इंसान को मिल्की और बहीमी दोनों ताक़तें देकर मअजूने मुरक्कब पैदा फ़र्माया है। अगर एक कुव्वत को बिलकुल तबाह करके इंसान फ़रिश्ता बन जाए तो गोया वो अपनी फ़ितरत बिगाड़ता है। मंशा-ए-कुदरत ये है कि आदमी को आदमी ही रहना चाहिये, इबादते इलाही

के लिये या क़ानूने क़ुदरत के बरअक्स कोई मुतालबा अल्लाह के सामने रख रहे हैं तो हर्गिज़ ये गुमान न करें कि इस क़िस्म की दुआएँ भी आपकी क़ुबूल होंगी।

(4) दुआ करने के बाद फ़ौरन ही इसकी क़ुबूलियत आप पर ज़ाहिर हो जाए, ऐसा तसव्वुर भी स़ह़ीह़ नहीं है बहुत सी दुआएँ फ़ौरन अष़र दिखाती हैं और बहुत सी काफ़ी देर के बाद अष़र पज़ीर होती हैं। बहुत सी दुआएँ बज़ाहिर क़ुबूल नहीं होतीं मगर उनकी बरकात से हम किसी आने वाली बड़ी आफ़त से बच जाते हैं और बहुत सी दुआएँ स़िर्फ़ आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा बनकर रह जाती हैं। बहरह़ाल दुआ बशराइते बाला किसी ह़ाल में भी बेकार नहीं जाती।

(5) आँह़ज़रत (ﷺ) ने आदाबे दुआ में बतलाया है कि अल्लाह के सामने हाथों को हथेलियों की त़रफ़ से फैला कर सच्चे दिल से साइल बनकर दुआ मांगो। फ़र्माया, **तुम्हारा रब्बे करीम बहुत ही ह़यादार है उसको शर्म आती है कि अपने मुख़्लिस़ बन्दे के हाथों को ख़ाली हाथ वापस कर दे।** आख़िर में हाथों को चेहरे पर मल लेना भी आदाबे दुआ से है।

(6) पीठ पीछे अपने मुसलमान भाई के लिये दुआ करना क़ुबूलियत के लिह़ाज़ से फ़ौरी अष़र रखता है मज़ीद ये कि फ़रिश्ते साथ में आमीन कहते हैं और दुआ करने वाले को दुआ देते हैं कि अल्लाह तुमको भी वो चीज़ अ़त़ा करे जो तुम अपने भाई के लिये मांग रहे हो।

(7) आँह़ज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं कि पाँच क़िस्म के आदमियों की दुआ ज़रूर क़ुबूल होती है। मज़्लूम की दुआ, ह़ाजी की दुआ जब तक वो वापस हो, मुजाहिद की दुआ यहाँ तक कि वो अपने मक़्सद को पहुँचे, मरीज़ की दुआ यहाँ तक कि वो तन्दुरुस्त हो, पीठ पीछे अपने भाई के लिये दुआए ख़ैर जो क़ुबूलियत में फ़ौरी अष़र रखती है।

(8) एक दूसरी रिवायत की बिना पर तीन दुआएँ ज़रूर क़ुबूल होती हैं। वालिदैन का अपनी औलाद के ह़क़ में दुआ करना और मज़्लूम की कुछ रिवायत की बिना पर रोज़ेदार की दुआ और इमामे आ़दिल की दुआ भी फ़ौरी अष़र दिखलाती है। मज़्लूम की दुआ के लिये आसमानों के दरवाज़े खुल जाते हैं और बारगाहे अह़दियत से आवाज़ आती है कि मुझको क़सम है अपने जलाल की और इ़ज़्ज़त की मैं ज़रूर तेरी मदद करूँगा अगरचे उसमें कुछ वक़्त लगे।

(9) कुशादगी, बेफ़िक्री, फ़ारिग़ुल बाली के औक़ात में दुआओं में मशग़ूल रहना कमाल है वरना शदाइद व मस़ाइब में तो सब ही दुआ करने लग जाते हैं। औलाद के ह़क़ में बद् दुआ करने की मुमानअ़त है। इसी त़रह़ अपने लिये या अपने माल के लिये बद् दुआ नहीं करनी चाहिये।

(10) दुआ करने से पहले फिर अपने दिल का जाइज़ा लीजिए कि उसमें सुस्ती-ग़फ़लत का कोई दाग़ धब्बा तो नहीं है। दुआ वही क़ुबूल होती जो दिल की गहराई से स़िद्क़ निय्यत से ह़ुज़ूरे क़ल्ब व यक़ीने कामिल के साथ की जाए।

बाब : अल्लाह तआला ने फ़र्माया, मुझे पुकारो! मैं तुम्हारी पुकार क़ुबूल करूँगा

باب قوله تعالى ﴿ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ - إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾ [غافر: ٦٠]. وَلِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ مُسْتَجَابَةٌ

बिला शुब्हा जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं वो बहुत जल्द दोज़ख़ में ज़िल्लत के साथ दाख़िल होंगे। उस ह़दीष़ का बयान कि हर नबी की एक दुआ ज़रूर ही क़ुबूल होती है।

तश्रीह : इस आयत को लाकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये ष़ाबित किया कि दुआ भी इ़बादत है और इस बाब में एक स़रीह़ ह़दीष़ वारिद है जिसे इमाम अह़मद और तिर्मिज़ी और नसाई और इब्ने माजा ने निकाला कि दुआ भी इ़बादत है फिर आपने ये आयत पढ़ी। **उदऊनी अस्तजिब लकुम** दूसरी रिवायत में यूँ है कि दुआ ही इ़बादत का मग़ज़

है। पस अब जो कोई अल्लाह के सिवा किसी दूसरे से दुआ करे तो वो मुश्रिक होगा क्योंकि उसने ग़ैरुल्लाह की इबादत की और यही शिर्क है।

6304. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया हर नबी को एक दुआ ह़ासिल होती है (जो क़ुबूल की जाती है) और मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी दुआ को आख़िरत में अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिये मह़फ़ूज़ रखूँ। (दीगर : 7474)

٦٣٠٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ يَدْعُو بِهَا، وَأُرِيدُ أَنْ أَخْتَبِيءَ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لأُمَّتِي فِي الآخِرَةِ)).[طرفه في : ٧٤٧٤].

6305. और मुअ़तमिर ने बयान किया, उन्हों ने अपने वालिद से सुना, उन्होंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर नबी ने कुछ चीज़ें मांगी या फ़र्माया कि हर नबी को एक दुआ दी गई जिस चीज़ की उसने दुआ मांगी फिर उसे क़ुबूल किया गया लेकिन मैंने अपनी दुआ क़यामत के दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिये मह़फ़ूज़ रखी हुई है।

٦٣٠٥- قَالَ خَلِيفَةُ قَالَ مُعْتَمِرٌ: سَمِعْتُ أَبِي، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كُلُّ نَبِيٍّ سَأَلَ سُؤَالاً)) أَوْ قَالَ: ((لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ قَدْ دَعَا بِهَا فَاسْتُجِيبَ فَجَعَلْتُ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لأُمَّتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

तश्रीह : **क़ाल इब्नु बत्ताल फ़ी हाज़ल्हदीषि बयानु फज़्लि नबय्यिना** अल् अख़। या'नी इस ह़दीष़ में हमारे नबी (ﷺ) की फ़ज़ीलत बयान की गई है जो आपको तमाम रसूलों पर ह़ासिल है कि आपने उस मख़्सूस दुआ के लिये अपने नफ़्स पर सारी उम्मत और अपने अहले बैत के लिये ईष़ार फ़र्माया। नववी (रह़.) ने कहा कि इसमें आपकी तरफ़ से उम्मत पर कमाले शफ़क़त का इज़्हार है इसमें उन पर भी दलील है कि अहले सुन्नत मे से जो शख़्स तौह़ीद पर मरा वो दोज़ख़ में हमेशा नहीं रहेगा अगरचे वो कबाइर पर इस्रार करता हुआ मर जाए। (फ़त्हुल बारी)

बाब 2 : इस्तिग़फ़ार के लिये अफ़ज़ल दुआ का बयान

٢- باب أَفْضَلِ الاسْتِغْفَارِ

और अल्लाह तआला ने सूरह नूह में फ़र्माया, अपने रब से बख़्शिश मांगो वो बड़ा बख़्शने वाला है तुम ऐसा करोगे तो वो आसमान के दहाने खोल देगा और माल और बेटों से तुमको सरफ़राज़ करेगा और बाग़ अ़ता करेगा और नहरें इनायत करेगा। और सूरह आले इमरान में फ़र्माया, बहिश्त उन लोगों के लिये तैयार की गई है जिनसे कोई बेहयाई का काम हो जाता है या कोई गुनाह सरज़द होता है तो अल्लाह पाक को याद करके अपने गुनाहों की बख़्शिश चाहते हैं और अल्लाह के सिवा कौन है जो गुनाहों को बख़्शे और वो अपने बुरे कामों पर जान बूझकर हठधर्मी नहीं करते हैं। (आले इमरान : 135)

وَقَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا. يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا. وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ، وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا﴾ [نوح: ١٠]. ﴿وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ اللهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَى مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ﴾ [آل عمران : ١٣٥].

6306. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल

٦٣٠٦- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا

वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन बिन ज़क्वान मुअल्लिम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदह ने बयान किया, उनसे बशीर बिन कअ़ब अ़दवी ने कहा कि मुझसे शद्दाद बिन औस (रज़ि.) ने बयान किया, और उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कि सय्यिदुल इस्तिग़्फ़ार (मग़्फ़िरत मांगने के सब कलिमात का सरदार) ये है कि यूँ कहे, ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तूने ही मुझे पैदा किया और मैं तेरा ही बन्दा हूँ मैं अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ तुझसे किये हुए अ़हद और वादे पर क़ायम हूँ। उन बुरी ह़रकतों के अ़ज़ाब से जो मैंने की हैं तेरी पनाह मांगता हूँ, मुझ पर नेअ़मतें तेरी हैं इसका इक़रार करता हूँ। मेरी मग़्फ़िरत कर दे कि तेरे सिवा और कोई भी गुनाह मुआफ़ नहीं करता। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने इस दुआ के अल्फ़ाज़ पर यक़ीन रखते हुए दिल से इनको कह लिया और उसी दिन उसका इंतिक़ाल हो गया शाम होने से पहले तो वो जन्नती है और जिसने इस दुआ के अल्फ़ाज़ पर यक़ीन रखते हुए रात में इनको पढ़ लिया और फिर उसका सुबह होने से पहले इंतिक़ाल हो गया तो वो जन्नती है।

عبدُالوارثِ، حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ، عَنْ بُشَيْرِ بْنُ كَعْبٍ الْعَدَوِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنِي شَدَّادُ بْنُ أَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((سَيِّدُ الاِسْتِغْفَارِ أَنْ تَقُولَ: اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ، قَالَ: وَمَنْ قَالَهَا مِنَ النَّهَارِ مُوقِنًا بِهَا فَمَاتَ مِنْ يَوْمِهِ، قَبْلَ أَنْ يُمْسِيَ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، وَمَنْ قَالَهَا مِنَ اللَّيْلِ وَهُوَ مُوقِنٌ بِهَا فَمَاتَ قَبْلَ أَنْ يُصْبِحَ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ

बाब 3 : दिन और रात नबी करीम (ﷺ) का इस्तिग़्फ़ार करना

٣- باب اسْتِغْفَارِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ

तश्रीह : आँह़ज़रत (ﷺ) का ये इस्तिग़्फ़ार और तौबा करना इज़्हारे अ़ब्दियत के लिये था या दुनिया की ता'लीम के लिये या बरत़रीक़े तवाज़ोअ़ या इसलिये कि आपकी तरक़्क़ी दरजात हर वक़्त होती रहती तो हर मर्तबा आ़ला पहुँचकर मर्तब-ए-औला से इस्तिग़्फ़ार करते। सत्तर बार से मुराद ख़ास़ अ़दद है या बहुत होना। अ़रबों की आ़दत है जब कोई चीज़ बहुत बार की जाती है तो उसको सत्तर बार कहते हैं। इमाम मुस्लिम की रिवायत में सौ बार मज़्कूर है।

6307. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने कहा कि मुझे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी उन्होंने कहा कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम! मैं दिन में सत्तर मर्तबा से ज़्यादा अल्लाह से इस्तिग़्फ़ार और उससे तौबा करता हूँ।

٦٣٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((وَاللهِ إِنِّي لأَسْتَغْفِرُ اللهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً)).

बाब 4 : तौबा का बयान

٤- باب التَّوْبَةِ

वजह से कि उनके मुबारक हाथ को सदमा पहुँचता है तो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में एक ख़ादिम मांगने के लिये हाज़िर हुईं। आँहज़रत (ﷺ) घर में मौजूद नहीं थे। इसलिये उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से ज़िक्र किया। जब आप तशरीफ़ लाए तो हज़रत आइशा (रज़ि.) ने आपसे इसका ज़िक्र किया। हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए हम उस वक़्त तक अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे, मैं खड़ा होने लगा तो आपने फ़रमाया कि क्या मैं तुम दोनों को वो चीज़ें न बता दूँ जो तुम्हारे लिये ख़ादिम से भी बेहतर हो। जब तुम अपने बिस्तर पर जाने लगो तो तैंतीस मर्तबा अल्लाहु अकबर तैंतीस मर्तबा सुब्हानल्लाह और तैंतीस मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह कहो, ये तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है और शुअबा से रिवायत है उनसे ख़ालिद ने, उनसे इब्ने सीरीन ने बयान किया कि सुब्हानल्लाह चौंतीस मर्तबा कहो।

(राजेअ: 3113)

شَكَتْ مَا تَلْقَى فِي يَدِهَا مِنَ الرُّحَى فَأَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ تَسْأَلُهُ خَادِمًا فَلَمْ تَجِدْهُ فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِعَائِشَةَ فَلَمَّا جَاءَ أَخْبَرَتْهُ قَالَ: فَجَاءَنَا وَقَدْ أَخَذْنَا مَضَاجِعَنَا، فَذَهَبْتُ أَقُومُ فَقَالَ: ((مَكَانَكِ)) فَجَلَسَ بَيْنَنَا حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ قَدَمَيْهِ عَلَى صَدْرِي، فَقَالَ : ((أَلاَ أَدُلُّكُمَا عَلَى مَا هُوَ خَيْرٌ لَكُمَا مِنْ خَادِمٍ؟ إِذَا أَوَيْتُمَا إِلَى فِرَاشِكُمَا أَوْ أَخَذْتُمَا مَضَاجِعَكُمَا فَكَبِّرَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَسَبِّحَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَاحْمَدَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، فَهَذَا خَيْرٌ لَكُمَا مِنْ خَادِمٍ))، وَعَنْ شُعْبَةَ عَنْ خَالِدٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ قَالَ التَّسْبِيحُ أَرْبَعٌ ثَلاَثُونَ. [راجع: ٣١١٣]

तश्रीह: मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी शहज़ादी साहिबा से पूछा मैंने सुना है कि तुम मुझसे मिलने को आई थी लेकिन मैं नहीं था कहो क्या काम है? उन्होंने अर्ज़ किया हज़रत अब्बाजान मैंने सुना है कि आपके पास लौण्डी और गुलाम आए हैं। एक गुलाम या लौण्डी हमको भी दे दीजिए क्योंकि आटा पीसने या पानी लाने में मुझको सख़्त मशक़्क़त हो रही है, उस वक़्त आपने ये वज़ीफ़ा बतलाया। दूसरी रिवायत में यूँ है कि आपने फ़र्माया सुफ़्फ़ा वाले लोग भूखे हैं, उन गुलामों को बेचकर उनके खिलाने का इंतिज़ाम करूँगा।

बाब 12 : सोते वक़्त शैत़ान से पनाह मांगना और तिलावते क़ुर्आन करना

١٢- باب التَّعَوُّذِ وَالْقِرَاءَةِ عِنْدَالْمَنَامِ

6319. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) लेटते तो अपने हाथों पर फूँकते और मुअ़व्विज़ात पढ़ते और दोनों हाथ अपने जिस्म पर फेरते। (राजेअ: 5017)

٦٣١٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، قَالَ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ نَفَثَ فِي يَدَيْهِ وَقَرَأَ بِالْمُعَوِّذَاتِ وَمَسَحَ بِهِمَا جَسَدَهُ. [راجع: ٥٠١٧]

6320. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे

٦٣٢٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا

M-09825696131

दिया है, उसमें उसे बरकत अ़ता फ़र्माइयो। (राजेअ़ : 1982)

راجع: ١٢

6335. हमसे उ़़स्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक स़ह़ाबी को मस्जिद में क़ुर्आन पढ़ते सुना तो फ़र्माया, अल्लाह इस पर रह़म करे इसने मुझे फ़लाँ फ़लाँ आयतें याद दिला दीं जो मैं फ़लाँ फ़लाँ सूरतों से भूल गया था। (राजेअ़ : 2655)

٦٣٣٥ - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاً يَقْرَأُ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ: ((رَحِمَهُ اللهُ لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَذَا وَكَذَا آيَةً أَسْقَطْتُهَا فِي سُورَةِ كَذَا وَكَذَا))

[راجع: ٢٦٥٥].

6336. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने, कहा मुझको सुलैमान बिन मह्रान ने ख़ बर दी, उन्हें अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने कोई चीज़ तक़्सीम फ़र्माई तो एक शख़्स़ बोला कि ये ऐसी तक़्सीम है कि इससे अल्लाह की रज़ा मक़्सूद नहीं है। मैंने नबी करीम (ﷺ) को इसकी ख़बर दी तो आप उस पर ग़ुस़्सा हुए और मैंने ख़फ़्गी के आष़ार आपके चेहरा-ए-मुबारक पर देखे और आपने फ़र्माया कि अल्लाह मूसा (अ़लैहिस्सलाम) पर रह़म फ़र्माए, उन्हें उससे भी ज़्यादा तकलीफ़ दी गई लेकिन उन्होंने स़ब्र किया। (राजेअ़ : 3150)

٦٣٣٦ - حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ قَسْمًا فَقَالَ رَجُلٌ: إِنَّ هَذِهِ لَقِسْمَةٌ مَا أُرِيدَ بِهَا وَجْهُ اللهِ فَأَخْبَرْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَغَضِبَ حَتَّى رَأَيْتُ الْغَضَبَ فِي وَجْهِهِ وَقَالَ: ((يَرْحَمُ اللهُ مُوسَى لَقَدْ أُوذِيَ بِأَكْثَرَ مِنْ هَذَا فَصَبَرَ)). [راجع: ٣١٥٠]

मैं भी ऐसे बेजा इल्तिज़ामात पर स़ब्र करूँगा। ये ए'तिराज़ करने वाला मुनाफ़िक़ था और ए'तिराज़ भी बिलकुल बात़िल था। आँह़ज़रत (ﷺ) मस़ालेहे मिल्ली को सबसे ज़्यादा समझने वाले और मुस्तह़िक़्क़ीन को सबसे ज़्यादा जानने वाले थे। फिर आपकी तक़्सीम पर ए'तिराज़ करना किसी मोमिन मुसलमान का काम नहीं हो सकता। सिवाय उस शख़्स़ के जिसका दिल नूरे ईमान से मह़रूम हो। तमाम अह़कामे इस्लाम के लिये यही क़ानून है।

बाब 20 : दुआ़ में सजअ़ या'नी क़ाफ़िये लगाना मकरूह है

٢٠ - باب مَا يُكْرَهُ مِنَ السَّجْعِ فِي الدُّعَاءِ

(क़ालल्अज़्हरी हुवल्कलामुल्मुकफ़्फ़ा मिन ग़ैर मुराअ़ति वज़्निन) अज़्हरी ने कहा कि कलामे मुक़्फ़ा वो है जिसमें मह़ज़ क़ाफ़िया बन्दी हो वज़न की रिआ़यत मद्देनज़र न हो।

6337. हमसे यह़्या बिन मुह़म्मद बिन सकन ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ब्बान बिन हिलाल अबू ह़बीब ने बयान किया, कहा हमसे हारून मुक़्री ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुबैर बिन ख़िर्रीत ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे

٦٣٣٧ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ السَّكَنِ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ هِلاَلٍ أَبُو حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا هَارُونُ الْمُقْرِئُ، حَدَّثَنَا

नेक अ़मल कभी करना, कभी छोड़ देना महमूद नहीं जो भी हो उस पर हमेशगी होना महमूद है।

6463. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे किसी शख़्स को उसका अ़मल नजात नहीं दिला सकेगा। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया और आपको भी नहीं या रसूलल्लाह! फ़र्माया और मुझे भी नहीं, सिवा उसके कि अल्लाह तआ़ला मुझे अपनी रह़मत के साये में ले ले। पस तुमको चाहिये कि दुरुस्ती के साथ अ़मल करो और मियाना रवी इख़्तियार करो। सुबह़ और शाम, इसी त़रह़ रात को ज़रा सा चल लिया करो और ए'तिदाल के साथ चला करो मंज़िले मक़्सूद को पहुँच जाओगे। (राजेअ़ : 39)

٦٤٦٣- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَنْ يُنَجِّيَ أَحَدًا مِنكُمْ عَمَلُهُ)) قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللهُ بِرَحْمَةٍ، سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَاغْدُوا وَرُوحُوا، وَشَيْءٌ مِنَ الدُّلْجَةِ وَالْقَصْدَ الْقَصْدَ تَبْلُغُوا)).

[راجع: ٣٩]

मक़्सूद ये है कि आदमी सुबह़ व शाम को इसी त़रह़ रात को थोड़ी सी इ़बादत कर लिया करे और हमेशा करता रहे। ये तीन वक़्त निहायत मुतबर्रक हैं। आयत **अक़िमिस़्स़लात लिदुलूकिश्शम्सि** से ज़ुहर और **हाफ़िज़ू अ़लस़्स़लवाति वस़्स़लातिल्वुस्ता** (अल बक़र : 238) से अ़स्र इस त़रह़ से क़ुर्आने करीम से पंजवक़्त इ़बादत का तक़ाज़ा है।

6464. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया दरम्यानी चाल इख़्तियार करो और बुलंद परवाज़ी न करो और अ़मल करते रहो, तुममें से किसी का अ़मल उसे जन्नत में नहीं दाख़िल कर सकेगा, मेरे नज़दीक सबसे पसंदीदा अ़मल वो है जिस पर हमेशगी की जाए, ख़्वाह कम ही क्यूँ न हो। (दीगर : 6467)

٦٤٦٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَاعْلَمُوا أَنْ لَنْ يُدْخِلَ أَحَدَكُمْ عَمَلُهُ الْجَنَّةَ، وَأَنَّ أَحَبَّ الأَعْمَالِ أَدْوَمُهَا إِلَى اللهِ وَإِنْ قَلَّ)). [طرفه في : ٦٤٦٧].

फ़राइज़े इलाही में कमी बेशी का सवाल ही नहीं है। ये तमाम नफ़्ली इ़बादतों का ज़िक्र है।

6465. मुझसे मुह़म्मद बिन अ़रअ़रा ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से पूछा गया कौनसा अ़मल अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा पसंद है? फ़र्माया कि जिस पर हमेशगी की जाए, ख़्वाह वो थोड़ा ही हो और फ़र्माया नेक काम करने में उतनी ही तकलीफ़ उठाओ जितनी त़ाक़त है (जो हमेशा निभ सके)।

٦٤٦٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ: أَيُّ الأَعْمَالِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ؟ قَالَ: ((أَدْوَمُهَا وَإِنْ قَلَّ، وَقَالَ اكْلَفُوا مِنَ الأَعْمَالِ مَا تُطِيقُونَ)).

6466. मुझसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़ई ने और उनसे अ़ल्क़मा ने बयान किया कि मैंने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से पूछा उम्मुल मोमिनीन! नबी करीम (ﷺ) क्यूँकर इ़बादत किया करते थे क्या आपने कुछ ख़ास़ दिन ख़ास़ कर रखे थे? बतलाया कि नहीं, आँह़ज़रत (ﷺ) के अ़मल में हमेशगी होती थी और तुममें कौन है जो उन अ़मलों की त़ाक़त रखता हो जिनकी आँह़ज़रत (ﷺ) त़ाक़त रखते थे। (राजेअ : 1987)

٦٤٦٦- حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: سَأَلْتُ أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ عَائِشَةَ قُلْتُ: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ كَيْفَ كَانَ عَمَلُ النَّبِيِّ ﷺ، هَلْ كَانَ يَخُصُّ شَيْئًا مِنَ الأَيَّامِ؟ قَالَتْ: لاَ، كَانَ عَمَلُهُ دِيمَةً وَأَيُّكُمْ يَسْتَطِيعُ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَسْتَطِيعُ.

[راجع: ١٩٨٧]

सारी रात इ़बादत में गुज़ार देता यहाँ तक कि पैरों में वरम हो जाना सिवाय ज़ाते क़ुदसी सि़फ़ात फ़िदाहू रूह़ी के और किसमें ऐसी त़ाक़त हो सकती है।

6467. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन ज़िब्रिक़ान ने, कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया देखो जो नेक काम करो ठीक त़ौर से करो और ह़द से न बढ़ जाओ बल्कि उसके क़रीब रहो (म्यानारवी इख़्तियार करो) और ख़ुश रहो और याद रखो कि कोई भी अपने अ़मल की वजह से जन्नत में नहीं जाएगा। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया और आप (ﷺ) भी नहीं या रसूलल्लाह! फ़र्माया, और मैं भी नहीं सिवा उसके कि अल्लाह की मग़्फ़िरत व रह़मत के साये में मुझे ढाँक ले। मदीनी ने बयान किया कि मेरा ख़्याल है कि मूसा बिन उ़क़्बा ने ये ह़दीष़ अबू सलमा से अबुन् नज़्र के वास्त़े से सुनी है। अबू सलमा ने आ़इशा (रज़ि.) से। और अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने बयान किया कि हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू सलमा (रज़ि.) से सुना और उन्होंने आ़इशा (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि आपने फ़र्माया दुरुस्ती के साथ अ़मल करो और ख़ुश रहो। और मुजाहिद ने बयान किया कि सदादन सदीदा दोनों के मा'नी स़दक़ के हैं। (राजेअ़ : 6464)

٦٤٦٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الزِّبْرِقَانِ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَأَبْشِرُوا، فَإِنَّهُ لاَ يَدْخِلُ أَحَدًا الْجَنَّةَ عَمَلُهُ))، قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((وَلاَ أَنَا. إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللهُ بِمَغْفِرَةٍ وَرَحْمَةٍ)). قَالَ: أَظُنُّهُ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ. وَقَالَ عَفَّانُ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((سَدِّدُوا وَأَبْشِرُوا)). وَقَالَ مُجَاهِدٌ: سَدَادًا سَدِيدًا: صِدْقًا.

[راجع: ٦٤٦٤]

तश्रीह़ : या'नी सच्चाई को हर ह़ाल में इख़्तियार करो तुम आमाले ख़ैर करोगे तुमको जन्नत की बल्कि दुनिया में भी कामयाबी की बशारत है। क़ुर्आन की आयत, **क़ूलू क़ौलन सदीदा** (अल अह़ज़ाब : 70) की त़रफ़ इशारा है। अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) के उस्ताद हैं इस सनद को लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अ़ली बिन

हिसाब दाख़िल होंगे

بغير حساب

6541. हमसे इमरान बिन मैसरह ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फुज़ैल ने, कहा हमसे हुसैन बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझसे उसैद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया कि मैं सईद बिन जुबैर की ख़िदमत में मौजूद था उस वक़्त उन्होंने बयान किया कि मुझसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे सामने उम्मतें पेश की गईं किसी नबी के साथ पूरी उम्मत गुज़री, किसी नबी के साथ चंद आदमी गुज़रे, किसी नबी के साथ दस आदमी गुज़रे, किसी नबी के साथ पाँच आदमी गुज़रे और कोई नबी तन्हा गुज़रा। फिर मैंने देखा तो इंसानों की एक बहुत बड़ी जमाअ़त दूर से नज़र आई। मैंने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से पूछा क्या ये मेरी उम्मत है? उन्होंने कहा कि नहीं बल्कि उफ़ुक़ की त़रफ़ देखो। मैंने देखा तो एक बहुत ज़बरदस्त जमाअ़त दिखाई दी। फ़र्माया कि ये है आपकी उम्मत और ये जो आगे आगे सत्तर हज़ार की ता'दाद है उन लोगों से हिसाब न लिया जाएगा और न उन पर अ़ज़ाब होगा। मैंने पूछा, ऐसा क्यूँ होगा? उन्होंने कहा कि इसकी वजह ये है कि ये लोग दाग़ नहीं लगवाते थे, दम झाड़ नहीं करवाते थे शगुन नहीं लेते थे, अपने रब पर भरोसा करते थे। फिर आँहज़रत (ﷺ) की त़रफ़ उ़क्काशा बिन मिह़सन (रज़ि.) उठकर बढ़े और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर दुआ करें कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उन लोगों में कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई कि ऐ अल्लाह! इन्हें भी उनमें से कर दे। उसके बाद एक और स़हाबी खड़े हुए और अ़र्ज़ किया कि मेरे लिये भी दुआ कीजिए कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उनमें से कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उ़क्काशा इसमें तुमसे आगे बढ़ गये। (राजेअ़ : 3410)

٦٥٤١ - حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ، ح وَحَدَّثَنِي أَسِيدُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ حُصَيْنٍ، قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، فَقَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((عُرِضَتْ عَلَيَّ الأُمَمُ، فَأَخَذَ النَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ الأُمَّةُ، وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ النَّفَرُ، وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمُرُّ مَعَهُ الْعَشَرَةُ وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ الْخَمْسَةُ وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ وَحْدَهُ، فَنَظَرْتُ فَإِذَا سَوَادٌ كَثِيرٌ قُلْتُ: يَا جِبْرِيلُ هَؤُلاَءِ أُمَّتِي؟ قَالَ: لاَ، وَلَكِنِ انْظُرْ إِلَى الأُفُقِ فَنَظَرْتُ فَإِذَا سَوَادٌ كَثِيرٌ، قَالَ : هَؤُلاَءِ أُمَّتُكَ، وَهَؤُلاَءِ سَبْعُونَ أَلْفًا قُدَّامَهُمْ لاَ حِسَابَ عَلَيْهِمْ، وَلاَ عَذَابَ، قُلْتُ : وَلِمَ؟ قَالَ : كَانُوا لاَ يَكْتَوُونَ وَلاَ يَسْتَرْقُونَ وَلاَ يَتَطَيَّرُونَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ))، فَقَامَ إِلَيْهِ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ فَقَالَ: ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، قَالَ. ((اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ مِنْهُمْ)) ثُمَّ قَامَ إِلَيْهِ رَجُلٌ آخَرُ قَالَ : ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ قَالَ : ((سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةُ)).

[راجع: ٣٤١٠]

तशरीह़ : ये उ़क्काशा बिन मिह़सन असदी बनी उमय्या के ह़लीफ़ हैं। जंगे बद्र में इनकी तलवार टूट गई थी तो आँहज़रत (ﷺ) ने इनको एक छड़ी दे दी जो उनके हाथ में तलवार हो गई। बाद की लड़ाइयों में भी शरीक रहे। फ़ाज़िल स़हाबा मे से थे जो ख़िलाफ़ते सि़द्दीक़ी में बउ़म्र 45 साल फ़ौत हुए। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास, ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) और उनकी बहन उम्मे क़ैस (रज़ि.) इनसे रिवायत करती हैं। सनद में ह़ज़रत सईद बिन जुबैर का नाम आया है जिन्हें

قَالَ: ((وَيْحَكُمْ -أَوْ وَيْلَكُمْ- لاَ تَرْجِعُنَّ بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)). [راجع: ١٧٤٢]

बन जाना कि एक-दूसरे की गर्दन मारने लगो।
(राजेअ : 1742)

इस ह़दीष़ से ज़ाहिर है कि मुसलमान का अल्लाह के नज़दीक कितना बड़ा मुक़ाम है। जिसका लिहाज़ रखना हर मुसलमान का अहम फ़रीज़ा है।

١١- باب إِقَامَةِ الْحُدُودِ وَالانْتِقَامِ لِحُرُمَاتِ اللهِ

बाब 11 : हुदूद क़ायम करना और अल्लाह की हुर्मतों को जो कोई तोड़े उससे बदला लेना

٦٧٨٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا خُيِّرَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ أَمْرَيْنِ إِلاَّ اخْتَارَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمٌ، فَإِذَا كَانَ الإِثْمُ كَانَ أَبْعَدَهُمَا مِنْهُ، وَاللهِ مَا انْتَقَمَ لِنَفْسِهِ فِي شَيْءٍ يُؤْتَى إِلَيْهِ قَطُّ، حَتَّى تُنْتَهَكَ حُرُمَاتُ اللهِ فَيَنْتَقِمُ للهِ. [راجع: ٣٥٦٠]

6786. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने, उनसे अ़क़ील ने, उनसे शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को जब भी दो चीज़ों में से एक का इख़्तियार करने का हुक्म दिया गया तो आपने उनमे से आसान ही को पसंद किया, बशर्तेकि उसमें गुनाह का कोई पहलू न हो, अगर उसमें गुनाह का कोई पहलू होता तो आप उससे सबसे ज़्यादा दूर होते। अल्लाह की क़सम! आँह़ज़रत (ﷺ) ने कभी अपने ज़ाती मामले में किसी से बदला नहीं लिया अल्बत्ता जब अल्लाह की हुर्मतों को तोड़ा जाता तो आप अल्लाह के लिये बदला लेते थे। (राजेअ : 3560)

١٢- باب إِقَامَةِ الْحُدُودِ عَلَى الشَّرِيفِ وَالْوَضِيعِ

बाब 12 : कोई बुलंद मर्तबा शख़्स हो या कम मर्तबा सब पर बराबर ह़द क़ायम करना

ये नहीं कि अशराफ़ (ऊँचे दर्जे के लोगों) को छोड़ दिया जाए।

٦٧٨٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ أُسَامَةَ كَلَّمَ النَّبِيَّ ﷺ فِي امْرَأَةٍ فَقَالَ: ((إِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، أَنَّهُمْ كَانُوا يُقِيمُونَ الْحَدَّ عَلَى الْوَضِيعِ، وَيَتْرُكُونَ الشَّرِيفَ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ فَاطِمَةُ فَعَلَتْ ذَلِكَ، لَقَطَعْتُ يَدَهَا)). [راجع: ٢٦٤٨]

6787. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि उसामा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से एक औ़रत की (जिस पर ह़द का मुक़द्दमा होने वाला था) सिफ़ारिश की तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुमसे पहले के लोग इसलिये हलाक हो गये कि वो कमज़ोरों पर तो ह़द क़ायम करते और बुलंद मर्तबा लोगों को छोड़ देते थे। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। अगर (मेरी बेटी) फ़ातिमा (रज़ि.) ने भी (चोरी) की होती तो मैं उसका भी हाथ काट लेता। (राजेअ : 2648)

इस्लामी हुदूद का अज्र बहरहाल हमेशा के लिये है बशर्ते कि इस्लामी स्टेट में इस्लामी अदालत में हो।

बाब 13 : जब हद्दी मुक़द्दमा हाकिम के पास पहुँच जाए फिर सिफ़ारिश करना मना है

١٣– باب كَرَاهِيَةِ الشَّفَاعَةِ فِي الْحَدِّ إِذَا رُفِعَ إِلَى السُّلْطَانِ

बल्कि गुनाहे अज़ीम है।

6788. हमसे सईद बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़र्वा ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मख़्ज़ूमी औरत का मामला जिसने चोरी की थी, क़ुरैश के लोगों के लिये अहमियत इख़्तियार कर गया और उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) से इस मामले में कौन बात कर सकता है उसामा (रज़ि.) के सिवा, जो आँहज़रत (ﷺ) को बहुत प्यारे हैं और कोई आपसे सिफ़ारिश की हिम्मत नहीं कर सकता? चुनाँचे उसामा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से बात की तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या तुम अल्लाह की हदों में सिफ़ारिश करने आए हो। फिर आप खड़े हुए और ख़ुत्बा दिया और फ़र्माया ऐ लोगों! तुमसे पहले के लोग इसलिये गुमराह हो गये कि जब उनमें कोई बड़ा आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते लेकिन अगर कमज़ोर चोरी करता तो उस पर हद क़ायम करते थे और अल्लाह की क़सम! अगर फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (ﷺ) ने भी चोरी की होती तो मुहम्मद (ﷺ) उसका हाथ ज़रूर काट डालते। (राजेअ : 2648)

٦٧٨٨– حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ قُرَيْشًا أَهَمَّتْهُمُ الْمَرْأَةُ الْمَخْزُومِيَّةُ الَّتِي سَرَقَتْ فَقَالُوا: مَنْ يُكَلِّمُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَمَنْ يَجْتَرِىءُ عَلَيْهِ إِلاَّ أُسَامَةُ حِبُّ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَكَلَّمَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَتَشْفَعُ فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللهِ؟)) ثُمَّ قَامَ فَخَطَبَ فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا ضَلَّ مَنْ قَبْلَكُمْ، أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا سَرَقَ الضَّعِيفُ فِيهِمْ أَقَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ، وَايْمُ اللهِ لَوْ أَنَّ فَاطِمَةَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعَ مُحَمَّدٌ يَدَهَا)). [راجع: ٢٦٤٨]

इस सिफ़ारिश पर आपने हज़रत उसामा को तम्बीह फ़र्माई।

बाब 14 : अल्लाह तआला ने सूरह माइदह में फ़र्माया और चोर मर्द और चोर औरत का हाथ काटो

١٤– باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا﴾

(कितनी मालियत पर हाथ काटा जाए हज़रत अली रज़ि. ने पहुँचे से हाथ कटवाया था। और क़तादा ने कहा अगर किसी औरत ने चोरी की और ग़लती से उसका बायाँ हाथ काट डाला गया तो बस अब दाहिना हाथ न काटा जाएगा।)

وَفِي كَمْ يُقْطَعُ؟ وَقَطَعَ عَلِيٌّ مِنَ الْكَفِّ وَقَالَ قَتَادَةُ: فِي امْرَأَةٍ سَرَقَتْ فَقُطِعَتْ شِمَالُهَا لَيْسَ إِلاَّ ذَلِكَ.

इस बाब में ये बयान है कि कितनी मालियत पर हाथ काटा जाए। बयान की गई अहादीष़ से मा'लूम होता कि कम अज़्कम तीन दिरहम की मालियत पर हाथ काटा जाएगा।

6789. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा

٦٧٨٩– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ،

अल्लाह ने ह़राम की है, हम लूटमार नहीं करेंगे और आप (ﷺ) की नाफ़र्मानी नहीं करेंगे और ये कि अगर हमने इस पर अ़मल किया तो हमें जन्नत मिलेगी और अगर हमने इनमें से किसी त़रह़ का गुनाह किया तो उसका फ़ैसला अल्लाह तबारक व तआ़ला के यहाँ होगा। (राजेअ़ : 18)

نَزْنِي، وَلاَ نَسْرِقَ، وَلاَ نَقْتُلَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ، وَلاَ نَنْتَهِبَ وَلاَ نَعْصِيَ بِالْجَنَّةِ إِنْ فَعَلْنَا فَإِنْ غَشِينَا مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا كَانَ قَضَاءُ ذَلِكَ إِلَى اللهِ.

[راجع: ١٨]

जो बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।

6874. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने हम पर हथियार उठाया वो हममें से नहीं है। ह़ज़रत मूसा (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से ये ह़दीष़ रिवायत की है। (दीगर मक़ाम : 7070)

٦٨٧٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلاَحَ فَلَيْسَ مِنَّا)). رَوَاهُ أَبُو مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفه في: ٧٠٧٠]

अगर मुबाह़ समझकर उठाता है तो काफ़िर होगा और जो मुबाह़ नहीं समझता तो काफ़िर नहीं हुआ मगर काफ़िरों जैसा काम किया इसलिये तग़्लीज़न फ़र्माया कि वो मुसलमान नहीं है बल्कि काफ़िर है।

6875. हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने, कहा हमसे अय्यूब और यूनुस ने, उनसे इमाम ह़सन बस़री ने, उनसे अह़नफ़ बिन क़ैस ने कि मैं उन स़ाह़ब (अ़ली बिन अबी त़ालिब रज़ि.) की जंगे जमल में मदद के लिये तैयार था कि अबू बक्रा (रज़ि.) से मेरी मुलाक़ात हुई। उन्होंने पूछा, कहाँ का इरादा है? मैंने कहा कि उन स़ाह़ब की मदद के लिये जाना चाहता हूँ। उन्होंने फ़र्माया कि वापस चले जाओ मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है आँह़ज़रत (ﷺ) फ़र्माते थे कि जब दो मुसलमान तलवार खींचकर एक-दूसरे से भिड़ जाएँ तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों दोज़ख़ में जाते हैं। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! एक तो क़ातिल था लेकिन मक़्तूल को सज़ा क्यूँ मिलेगी? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया वो भी अपने क़ातिल के क़त्ल पर आमादा था। (राजेअ़ : 31)

٦٨٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ وَ يُونُسُ عَنِ الْحَسَنِ، عَنِ الأَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ قَالَ : ذَهَبْتُ لأَنْصُرَ هَذَا الرَّجُلَ فَلَقِيَنِي أَبُو بَكْرَةَ فَقَالَ: أَيْنَ تُرِيدُ : قُلْتُ : أَنْصُرُ هَذَا الرَّجُلَ قَالَ: ارْجِعْ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِذَا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا فَالْقَاتِلُ وَالْمَقْتُولُ فِي النَّارِ)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا الْقَاتِلُ فَمَا بَالُ الْمَقْتُولِ؟ قَالَ : ((إِنَّهُ كَانَ حَرِيصًا عَلَى قَتْلِ صَاحِبِهِ)).[راجع: ٣١]

तश्रीह़ : मगर इत्तिफ़ाक़ से ये मौक़ा उसको न मिला ख़ुद मारा गया। ह़दीष़ का मत़लब ये है कि जब बिला वजहे शरई एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को मारने की निय्यत करे।

बाब 3 : अल्लाह तआला ने सूरह बक़र: में फ़र्माया, ऐ ईमानवालों! तुममें जो लोग

٣- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

क़त्ल किये जाएँ उनका क़िसास फ़र्ज़ किया गया है। आज़ाद के बदले मे आज़ाद और ग़ुलाम के बदले में ग़ुलाम और औरत के बदले में औरत। हाँ! जिस किसी को उसके फ़रीक़े मुक़ाबिल की तरफ़ से क़िसास का कोई हिस्सा माफ़ कर दिया जाए सौ मुतालबा मा'कूल और नर्म तरीक़ पर करना चाहिये और दियत को उस फ़रीक़ के पास ख़ूबी से पहुँचा देना चाहिये। ये तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से रिआयत और मेहरबानी है सो जो कोई इसके बाद भी ज़्यादती करे उसके लिये आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है। (अल बक़र: : 178)

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالأُنْثَى بِالأُنْثَى فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدَى بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ [البقرة : ١٧٨].

बाब 4 : हाकिम का क़ातिल से पूछगछ करना यहाँ तक कि वो इक़रार कर ले और हुदूद में इक़रार (इष्बाते जुर्म के लिये) काफ़ी ह

٤- باب سُؤَالِ الْقَاتِلِ حَتَّى يُقِرَّ وَالإِقْرَارِ فِي الْحُدُودِ

6876. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक यहूदी ने एक लड़की का सर दो पत्थरों के बीच में रखकर कुचल दिया फिर उस लड़की से पूछा गया कि ये किसने किया है? फ़लाँ ने फ़लाँ ने? आख़िर जब उस यहूदी का नाम लिया गया (तो लड़की ने सर के इशारे से हाँ कहा) फिर यहूदी को नबी करीम (ﷺ) के यहाँ लाया और उससे पूछगछ की जाती रही यहाँ तक कि उसने जुर्म का इक़रार कर लिया चुनाँचे उसका सर भी पत्थरों से कुचला गया। (राजेअ : 2413)

٦٨٧٦- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عَنْهُ أَنَّ يَهُودِيًّا رَضَّ رَأْسَ جَارِيَةٍ بَيْنَ حَجَرَيْنِ فَقِيلَ لَهَا: مَنْ فَعَلَ بِكِ هَذَا أَفُلاَنٌ أَوْ فُلاَنٌ؟ حَتَّى سُمِّيَ الْيَهُودِيُّ فَأُتِيَ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ فَلَمْ يَزَلْ بِهِ حَتَّى أَقَرَّ فَرُضَّ رَأْسُهُ بِالْحِجَارَةِ.

[راجع: ٢٤١٣]

तश्रीह : इस हदीष से हनफ़िया का रद्द हुआ जो कहते हैं कि क़िसास हमेशा तलवार ही से लिया जाएगा और ये भी षाबित हुआ कि मर्द औरत के बदले क़त्ल किया जाएगा। कुछ लोगों ने इससे दलील ली है कि इज्माअ का मुंकिर काफ़िर है मगर ये सहीह नहीं है। ऐसी इज्माई बात का मुंकिर काफ़िर है जिसका वजूब शरीअत से तवातरन षाबित हो लेकिन जिस मसले का षुबूत हदीष सहीह मुतवातिर या आयते क़ुर्आन से षाबित न हो और उसमें कोई इज्माअ का ख़िलाफ़ करे तो वो काफ़िर न होगा। क़ाज़ी अयाज़ ने कहा जो आलिम की हुदूष का मुंकिर हो और उसे क़दीम कहे वो काफ़िर है और जमाअत के छोड़ने में बाग़ी और रहज़न और उस क़ौल से मुड़ने वाले और इमामे बरहक़ से मुख़ालफ़त करने वाले भी आ गये उनका भी क़त्ल दुरुस्त है।

बाब 5 : जब किसी ने पत्थर या डंडे से किसी को क़त्ल किया

٥- باب إِذَا قَتَلَ بِحَجَرٍ أَوْ بِعَصًا

इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का तर्जुमा गोल रखा क्योंकि इसमें इख़्तिलाफ़ है कि इस सूरत में क़ातिल को भी पत्थर या

लकड़ी से क़त्ल करेंगे या तलवार से। हनफ़िया कहते हैं कि हमेशा क़िसास़ तलवार से लिया जाएगा और जुम्हूर उ़लमा कहते हैं कि जिस त़रह क़ातिल ने क़त्ल किया है उस त़रह भी क़िसास़ ले सकते हैं।

6877. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें हिशाम बिन ज़ैद बिन अनस ने, उनसे उनके दादा अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना मुनव्वरह में एक लड़की चाँदी के ज़ेवर पहने बाहर निकली। रावी ने बयान किया कि फिर उसे एक यहूदी ने पत्थर से मार दिया। जब उसे नबी करीम (ﷺ) के पास लाया गया तो अभी उसमें जान बाक़ी थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा तुम्हें फ़लाँ ने मारा है? उस पर लड़की ने अपना सर (इंकार के लिये) उठाया फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा तुम्हें फ़लाँ ने मारा है? लड़की ने उस पर भी सर उठाया। तीसरी मर्तबा आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा फ़लाँ ने तुम्हें मारा है? उस पर लड़की ने अपना सर नीचे की त़रफ़ झुका लिया (इक़रार करते हुए झुका लिया) चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस शख़्स़ को बुलाया तब आप (ﷺ) ने दो पत्थरों से कुचल कर उसको क़त्ल कराया। (राजेअ़ : 2413)

٦٨٧٧- حدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ جَدِّهِ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: خَرَجَتْ جارِيةٌ عَلَيْهَا أَوْضَاحٌ بِالْمَدِينَةِ قَالَ: فَرَمَاهَا يَهُودِيٌّ بِحَجَرٍ قَالَ: فَجِيءَ بِهَا إِلَى النَّبِيِّ ، وَبِهَا رَمَقٌ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فُلاَنٌ قَتَلَكِ؟)) فَرَفَعَتْ رَأْسَهَا فَأَعَادَ عَلَيْهَا قَالَ: ((فُلاَنٌ قَتَلَكِ)) فَرَفَعَتْ رَأْسَهَا فَقَالَ لَهَا فِي الثَّالِثَةِ: ((فُلاَنٌ قَتَلَكِ؟)) فَخَفَضَتْ رَأْسَهَا فَدَعَا بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَتَلَهُ بَيْنَ الْحَجَرَيْنِ. [راجع: ٢٤١٣]

बाब 6 : अल्लाह तआ़ला ने सूरह माइदह में फ़र्माया कि

٦- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

जान का बदला जान है और आँख का बदला आँख और नाक का बदला नाक और कान का बदला कान और दांत का बदला दांत और ज़ख़्मों में क़िसास़ है, सो कोई उसे माफ़ कर दे तो वो उसकी त़रफ़ से कफ़्फ़ारा हो जाएगा और जो कोई अल्लाह के नाज़िल किये हुए अहकाम के मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करे तो वो ज़ालिम हैं। (अल माइदह : 45)

﴿أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالأَنْفَ بِالأَنْفِ وَالأُذُنَ بِالأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ، وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ، وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ﴾ [المائدة: ٤٥].

6878. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुर्रह ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया किसी मुसलमान का ख़ून जो कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का मानने वाला हो ह़लाल नहीं है अल्बत्ता तीन सूरतों में जाइज़ है। जान के बदले जान लेने वाला, शादी शुदा होकर ज़िना करने वाला और इस्लाम से निकल जाने वाला (मुर्तद) जमाअ़त को छोड़ देने वाला।

٦٨٧٨- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ يَحِلُّ دَمُ امْرِىءٍ مُسْلِمٍ يَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَنِّي رَسُولُ اللهِ إِلاَّ بِإِحْدَى ثَلاَثٍ: النَّفْسُ بِالنَّفْسِ، وَالثَّيِّبُ الزَّانِي، وَالْمَارِقُ مِنَ الدِّينِ التَّارِكُ الْجَمَاعَةَ)).

क़दमी है। और क़तादा, यूनुस, हिशाम और अबू हिलाल ने इब्ने सीरीन से नक़ल किया है, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। और कुछ ने ये सारी रिवायत ह़दीष़ में शुमार की है लेकिन औ़फ़ की रिवायत ज़्यादा वाज़ेह है और यूनुस ने कहा कि क़ैद के बारे में रिवायत को मैं नबी करीम (ﷺ) की ह़दीष़ ही समझता हूँ। अबू अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि त़ौक़ हमेशा गर्दनों ही में होते हैं।

وَكَانَ يَكْرَهُ الْغُلَّ فِي النَّوْمِ، وَكَانَ يُعْجِبُهُمُ الْقَيْدُ وَيُقَالُ: الْقَيْدُ ثَبَاتٌ فِي الدِّينِ. وَرَوَى قَتَادَةُ وَيُونُسُ وَهِشَامٌ وَأَبُو هِلاَلٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَدْرَجَهُ بَعْضُهُمْ كُلَّهُ فِي الْحَدِيثِ وَحَدِيثُ عَوْفٍ أَبْيَنُ وَقَالَ يُونُسُ: لاَ أَحْسِبُهُ إِلاَّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْقَيْدِ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: لاَ تَكُونُ الأَغْلاَلُ إِلاَّ فِي الأَعْنَاقِ.

और बेड़ियाँ हाथों में। आयत, ग़ुल्लत अयदीहिम में हाथों की बेड़ियाँ मज़्कूर हैं।

बाब 27 : ख़्वाब में पानी का बहता चश्मा देखना

٢٧- بَابُ الْعَيْنِ الْجَارِيَةِ فِي الْمَنَامِ

7018. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें ख़ारिजा बिन ज़ैद बिन ष़ाबित ने और उनसे ह़ज़रत उम्मे अ़ला (रज़ि.) ने बयान किया जो उन्हीं में से एक ख़ातून हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की थी। उन्होंने बयान किया कि जब अंसार ने मुहाजिरीन के क़याम के लिये कुर्आअंदाज़ी की तो ह़ज़रत उ़ष्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) का नाम हमारे यहाँ ठहरने के लिये निकला। फिर वो बीमार पड़े, हमने उनकी तीमारदारी की लेकिन उनकी वफ़ात हो गई। फिर हमने उन्हें उनके कपड़ों में लपेट दिया। उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) हमारे घर तशरीफ़ लाए तो मैंने कहा अबू साइब! तुम पर अल्लाह की रह़मतें हों, मेरी गवाही है कि तुम्हें अल्लाह तआ़ला इ़ज़्ज़त बख़्शी है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें ये कैसे मा'लूम हुआ? मैंने अ़र्ज़ किया अल्लाह की क़सम! मुझे मा'लूम नहीं है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसके बाद फ़र्माया कि जहाँ तक इनका ता'ल्लुक़ है तो यक़ीनी बात (मौत) इन तक पहुँच चुकी है और मैं अल्लाह से इनके लिए ख़ैर की उम्मीद रखता हूँ लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं रसूलुल्लाह हूँ और इसके बावजूद मुझे मा'लूम नहीं कि मेरे साथ क्या मामला किया जाएगा? उम्मे अ़ला ने कहा कि वल्लाह! इसके बाद मैं किसी इंसान की पाकी नहीं बयान करूँगी। उन्होंने बयान किया मैंने ह़ज़रत

٧٠١٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ خَارِجَةَ بْنِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ أُمِّ الْعَلاَءِ وَهِيَ امْرَأَةٌ مِنْ نِسَائِهِمْ بَايَعَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَتْ: طَارَ لَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَظْعُونٍ فِي السُّكْنَى حِينَ اقْتَرَعَتِ الأَنْصَارُ عَلَى سُكْنَى الْمُهَاجِرِينَ، فَاشْتَكَى فَمَرَّضْنَاهُ حَتَّى تُوُفِّيَ، ثُمَّ جَعَلْنَاهُ فِي أَثْوَابِهِ فَدَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ فَشَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللهُ قَالَ: ((وَمَا يُدْرِيكِ؟)) قُلْتُ: لاَ أَدْرِي وَاللهِ قَالَ: ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ الْيَقِينُ، إِنِّي لأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ مِنَ اللهِ، وَاللهِ مَا أَدْرِي وَأَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ مَا يُفْعَلُ بِي وَلاَ بِكُمْ)). قَالَتْ أُمُّ الْعَلاَءِ: فَوَاللهِ لاَ أُزَكِّي أَحَدًا بَعْدَهُ، قَالَتْ: وَرَأَيْتُ

قَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً وَأُمُورًا تُنْكِرُونَهَا)). قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((أَدُّوا إِلَيْهِمْ حَقَّهُمْ وَسَلُوا اللهَ حَقَّكُمْ)).

[راجع: ٣٦٠٣]

हमसे फ़र्माया, तुम मेरे बाद कुछ काम ऐसे देखोगे जो तुमको बुरे लगेंगे। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप इस सिलसिले में क्या हुक्म फ़र्माते हैं? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उन्हें उनका ह़क़ अदा करो और अपना ह़क़ अल्लाह से मांगो। (राजेअ़: 3603)

तश्रीह़ : या'नी अल्लाह से दुआ़ करो कि अल्लाह उनको इंसाफ़ और ह़क़ पहचानने की तौफ़ीक़ दे। जैसे षौरी की रिवायत में है या अल्लाह! इनके बदल तुम पर दूसरे ह़ाकिम जो आ़दिल और मुंसिफ़ हों, मुक़र्रर कर। मुस्लिम और त़बरानी की रिवायत में यूँ है कि या रसूलल्लाह! हम उनसे लड़ें नहीं। आपने फ़र्माया नहीं जब तक वो नमाज़ पढ़ते रहें। मा'लूम हुआ कि जब मुसलमान ह़ाकिम नमाज़ पढ़ना भी छोड़ दे तो फिर उससे लड़ना और उसका ख़िलाफ़ करना दुरुस्त हो गया। बेनमाज़ी ह़ाकिम की इत़ाअ़त ज़रूरी नहीं है। इस पर तमाम अहले ह़दीष का इत्तिफ़ाक़ है। ह़ाफ़िज़ ने कहा इसका ये मत़लब नहीं है कि वो काफिर हो जाएगा बल्कि मत़लब ये है कि जाहिलियत वालों की त़रह़ मरेगा या'नी जैसे जाहिलियत वालों का कोई इमाम नहीं होता। उसी त़रह़ उसका भी न होगा। दूसरी रिवायत में यूँ फ़र्माया है कि जो शख़्स़ जमाअ़त से बालिश्त बराबर जुदा हो गया उसने इस्लाम की रस्सी अपनी गर्दन से निकाल डाली। इब्ने बत्ताल ने कहा इस ह़दीष से ये निकला ह़ाकिम गो ज़ालिम या फ़ासिक़ हो उससे बग़ावत करना दुरुस्त नहीं अल्बत्ता अगर स़रीह़ कुफ़्र इख़्तियार करे तब उसकी इत़ाअ़त जाइज़ नहीं बल्कि जिसको क़ुदरत हो उसको उस पर जिहाद करना वाजिब है। आजकल के कुछ अइम्मा मस्जिद लोगों से अपनी इमामत की बेअ़त लेकर बेअ़त न करने वालों को जाहिलियत की मौत का फ़त्वा सुनाते हैं और लोगों से ज़कात वसूल करते हैं। ये सब फ़रेब ख़ूरदा हैं। यहाँ मुराद ख़लीफ़ा इस्लाम है, जो स़ह़ीह़ मा'नों में इस्लामी त़ौर पर स़ाह़िबे इक़्तिदा हो।

٧٠٥٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، عَنْ عَبْدِ الْوَارِثِ، عَنِ الْجَعْدِ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ كَرِهَ مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا فَلْيَصْبِرْ، فَإِنَّهُ مَنْ خَرَجَ مِنَ السُّلْطَانِ شِبْرًا مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً)).

7053. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वारिष बिन सईद ने बयान किया, उनसे जअ़दि स़ीरफ़ी ने, उनसे अबू रजाअ अ़त़ारदी ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स़ अपने अमीर में कोई नापसंद बात देखे तो स़ब्र करे (ख़लीफ़ा) की इत़ाअ़त से अगर कोई बालिश्त भर भी बाहर निकला तो उसकी मौत जाहिलियत की मौत होगी। (दीगर मक़ामात : 7054, 7143)

ख़लीफ़ा-ए-इस्लाम की इत़ाअ़त से मक़्स़द ये है कि मा'मूली बातों को बहाना बनाकर क़ानून शिकनी करके लाक़ानूनियत (अराजकता) न पैदा की जाए वरना अ़हदे जाहिलियत की याद ताज़ा हो जाएगी फ़ित्ना व फ़साद ज़ोर पकड़ जाएगा।

٧٠٥٤- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنِ الْجَعْدِ أَبِي عُثْمَانَ، حَدَّثَنِي أَبُو رَجَاءٍ الْعُطَارِدِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ رَأَى مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا يَكْرَهُهُ

7054. हमसे अबूल नोअ़मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे जअ़दि अबी उ़ष्मान ने बयान किया, उनसे अबू रजाअ अ़त़ारदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने अपने अमीर की कोई नापसंद चीज़ देखी तो उसे चाहिये कि स़ब्र करे इसलिये कि जिसने जमाअ़त से एक बालिश्त भर जुदाई इख़्तियार की और

फَلْيَصْبِرْ عَلَيْهِ، فَإِنَّهُ مَنْ فَارَقَ الْجَمَاعَةَ شِبْرًا فَمَاتَ إِلاَّ مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً)).

[راجع: ٧٠٥٣]

इसी ह़ाल में मरा तो वो जाहिलियत की सी मौत मरेगा।

(राजेअ़ : 7053)

तश्रीह़ : इमाम अह़मद की रिवायत में इतना ज़्यादा है गो तुम अपने तईं हुकूमत का ह़क़दार समझो जब भी इस राय पर न चलो बल्कि ह़ाकिमे वक़्त की इत़ाअ़त करो, उसका हुक्म सुनो, यहाँ तक कि अगर अल्लाह को मंज़ूर है तो बिन लड़े भिड़े तुमको हुकूमत मिल जाए। इब्ने ह़िब्बान और इमाम अह़मद की रिवायत मे है गो ये ह़ाकिम तुम्हारा माल खाए, तुम्हारी पीठ पर मार लगाए या'नी तब भी स़ब्र करो। अगर कुफ़्र करे तो उससे लड़ने पर तुमको मुवाख़िज़ा न होगा। दूसरी रिवायत में यूँ है जब तक वो तुमको साफ़ और स़रीह़ गुनाह की बात का हुक्म न दे। तीसरी रिवायत में है जो ह़ाकिम अल्लाह की नाफ़र्मानी करे उसकी इत़ाअ़त नहीं करना चाहिये। इब्ने अबी शैबा की रिवायत में यूँ है तुम पर ऐसे लोग ह़ाकिम होंगे जो तुमको ऐसी बातों का हुक्म करेंगे जिनको तुम नहीं पहचानते और ऐसे काम करेंगे जिनको तुम बुरा जानते हो तो ऐसे ह़ाकिमों की इत़ाअ़त करना तुमको ज़रूरी नहीं ये जो फ़र्माया अल्लाह के पास तुमको दलील मिल जाएगी या'नी उससे लड़ने और उसकी मुख़ालफ़त करने की सनद तुमको मिल जाएगी। इससे ये निकला कि जब तक ह़ाकिम के क़ौल व फ़ेअ़ल की तावील शरई हो सके उस वक़्त तक उससे लड़ना या उस पर ख़ुरूज करना जाइज़ नहीं अल्बत्ता अगर स़ाफ़ व स़रीह़ वो शरअ़ के मुख़ालिफ़ हुक्म दे और क़वाइदे इस्लाम के बरख़िलाफ़ चले जब तू उस पर ए'तिराज़ करना और अगर न माने तो उससे लड़ना दुरुस्त है। दाऊदी ने कहा अगर ज़ालिम ह़ाकिम का मअ़ज़ूल करना बग़ैर फ़ित्ने और फ़साद के मुम्किन हो तब तो वाजिब है कि वो मअ़ज़ूल कर दिया जाए वरना स़ब्र करना चाहिये। कुछ ने कहा इब्तिदा फ़ासिक़ को ह़ाकिम बनाना दुरुस्त नहीं अगर हुकूमत मिलते वक़्त आ़दिल हो फिर फ़ासिक़ हो जाए उस पर ख़ुरूज करने में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है और स़ह़ीह़ ये है कि ख़ुरूज उस वक़्त तक जाइज़ नहीं जब तक ए'लानिया कुफ़्र न करे, अगर ए'लानिया कुफ़्र की बातें करने लगे उस वक़्त उसको मअ़ज़ूल करना वाजिब है।

٧٠٥٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ عَمْرٍو عَنْ بُكَيْرٍ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ جُنَادَةَ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ قَالَ: دَخَلْنَا عَلَى عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ وَهُوَ مَرِيضٌ فَقُلْنَا: أَصْلَحَكَ اللهُ حَدِّثْ بِحَدِيثٍ يَنْفَعُكَ اللهُ بِهِ سَمِعْتَهُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ دَعَانَا النَّبِيُّ ﷺ فَبَايَعْنَا.

[راجع: ١٨]

7055. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन ह़ारिष़ ने, उनसे बुकैर बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे बुस्र बिन सईद ने, उनसे जुनादा बिन अबी उमय्या ने बयान किया कि हम उ़बादह़ बिन स़ामित (रज़ि.) की ख़िदमत में पहुँचे वो मरीज़ थे और हमने अ़र्ज़ किया अल्लाह तआ़ला आपको स़ेह़त अ़ता करे कोई ह़दीष़ बयान कीजिए जिसका नफ़ा आपको अल्लाह तआ़ला पहुँचाए। उन्होंने बयान किया कि) मैंने नबी करीम (ﷺ) से लैलतुल उ़क़्बा में सुना है कि आपने हमें बुलाया और हमने आपसे बेअ़त की। (राजेअ़ : 18)

٧٠٥٦- فَقَالَ: فِيمَا أَخَذَ عَلَيْنَا أَنْ بَايَعَنَا عَلَى السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ فِي مَنْشَطِنَا وَمَكْرَهِنَا وَعُسْرِنَا وَيُسْرِنَا، وَأَثَرَةٍ عَلَيْنَا وَأَنْ لاَ نُنَازِعَ الأَمْرَ أَهْلَهُ إِلاَّ أَنْ تَرَوْا

7056. उन्होंने बयान किया कि जिन बातों का आँह़ज़रत (ﷺ) ने हम से अ़हद लिया था उनमें ये भी था कि ख़ुशी व नागवारी, तंगी और कुशादगी और अपनी ह़क़ तलफ़ी में भी इत़ाअ़त व फ़र्माबरदारी करें और ये भी कि हुक्मरानों के साथ हुकूमत के बारे में उस वक़्त तक झगड़ा न करें जब तक उनको ए'लानिया

الْحِمَارِ بِرَحَاهُ فَيُطِيفُ بِهِ أَهْلُ النَّارِ فَيَقُولُونَ أَيْ فُلاَنُ أَلَسْتَ كُنْتَ تَأْمُرُ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَى عَنِ الْمُنْكَرِ؟ فَيَقُولُ: إِنِّي كُنْتُ آمُرُ بِالْمَعْرُوفِ وَلاَ أَفْعَلُهُ وَأَنْهَى عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَفْعَلُهُ)).

[راجع: ٣٢٦٧]

शख़्स को (क़यामत के दिन) लाया जाएगा और उसे आग में डाल दिया जाएगा। फिर वो उसमें इस त़रह़ चक्की पीसेगा जैसे गधा पीसता है। फिर दोज़ख़ के लोग उसके चारों त़रफ़ जमा हो जाएँगे और कहेंगे, ऐ फ़लाँ! क्या तुम नेकियों का हुक्म करते और बुराइयों से रोका नहीं करते थे? वो शख़्स कहेगा कि मैं अच्छी बात के लिये कहता तो ज़रूर था लेकिन ख़ुद नहीं करता था और बुरी बात से रोकता भी था लेकिन ख़ुद करता था। (राजेअ: 3267)

तश्रीह: ह़ज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) का मत़लब ये था कि मेरी निस्बत तुम लोग ये ख़्याल न करना कि मैं उ़ष्मान (रज़ि.) को नेक बात समझाने में मुराहिनत और सुस्ती करता हू और उ़ष्मान (रज़ि.) की इस वजह से कि वो ह़ाकिम हैं ख़्वाह मख़्वाह ख़ुशामद के त़ौर पर ता'रीफ़ करता हूँ। कुछ ने कहा मत़लब ये है कि जो शख़्स दो आदमियों पर भी ह़ाकिम बने मैं उसकी ता'रीफ़ करने वाला नहीं, इसलिये कि हुकूमत बड़े मुवाख़िज़ा की चीज़ है। ह़ाकिम को अ़दल और इंसाफ़ और रिआ़या की पूरी ख़बरगीरी का इंतिज़ाम करना चाहिये तो ह़ाकिम शख़्स के लिये यही ग़नीमत है कि हुकूमत की वजह से और मुवाख़िज़ा में गिरफ़्तार न हो, चहजा ये कि भलाई और षवाब ह़ासिल करे। उसामा (रज़ि.) ने उस दोज़ख़ी आदमी से ये ह़दीष़ बयान करके लोगों को ये समझाया कि तुम मेरी निस्बत ये गुमान न करना कि मैं उ़ष्मान (रज़ि.) को नेक स़लाह़ देने में कोताही करता हूँ क्या मैं क़यामत के दिन अपना ह़ाल उस शख़्स का सा कर लूँगा जो अंतड़ियों को उठाए हुए गधे की त़रह़ घूमेगा या'नी अगर मैं तुम लोगों को ये कहूँगा कि बुरी बात देखने पर मना किया करो और जो कोई बुरा काम करे उसको समझाकर उसे ऐसे काम से दूर रखा करो और ख़ुद मैं ऐसा न करूँ बल्कि बुरे कामों को देखकर खामोश रह जाऊँ तो मेरा ह़ाल उसी शख़्स का सा होना है।

١٨- باب

बाब 18

٧٠٩٩- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ، حَدَّثَنَا عَوْفٌ، عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: لَقَدْ نَفَعَنِي اللهُ بِكَلِمَةٍ أَيَّامَ الْجَمَلِ لَمَّا بَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ أَنَّ فَارِسًا مَلَّكُوا ابْنَةَ كِسْرَى قَالَ: ((لَنْ يُفْلِحَ قَوْمٌ وَلَّوْا أَمْرَهُمُ امْرَأَةً)).

[راجع: ٤٤٢٥]

7099. हमसे उ़ष्मान बिन हैशम ने बयान किया, कहा हमसे औ़फ़ ने बयान किया, कहा उनसे ह़सन ने और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे जमल के ज़माने में मुझे एक कलिमा ने फ़ायदा पहुँचाया जब नबी करीम (ﷺ) को मा'लूम हुआ कि फ़ारस की सल्तनत वालों ने बौरान नामी किसरा की बेटी को बादशाह बना लिया है तो आपने फ़र्माया कि वो क़ौम कभी फ़लाह़ नहीं पाएगी जिसकी हुकूमत एक औ़रत के हाथ में हो। (राजेअ: 4425)

तश्रीह: जंगे जमल में ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के मुक़ाबिल फ़रीक़ की सरदार थीं, नतीजा नाकामी हुआ। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के क़ौल का यही मत़लब है। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) को भड़काने वाले चंद मुनाफ़िक़ क़िस्म के फ़सादी लोग थे। जिन्होंने ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के ख़ून का बदला लेने के बहाने मुसलमानों को आपस में लड़ाना चाहा और ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) पर अपना जादू चलाकर उनको फ़ौज का सरदार बना लिया और जंगे जमल वाक़ेअ़ हुई, जिसमें सरासर मुनाफ़िक़ यहूदी सिफ़त लोगों का हाथ था।

٧١٠٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ،

7100. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने

कहा कि आप दोनों भाई कपड़े पहनकर जुम्आ पढ़ने चलें। (राजेअ : 7102,103,104)

وَالأُخْرَى عَمَّارًا وَقَالَ : رُوحَا فِيهِ إِلَى الْجُمُعَةِ.

[راجع: ٧١٠٢، ٧١٠٣، ٧١٠٤]

तश्रीह : हुआ ये था कि अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) की तरफ़ से कूफ़ा के हाकिम थे। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने उन्हीं को क़ायम रखा। जब हज़रत आइशा (रज़ि.) एक बड़ी फ़ौज के साथ बसरा तशरीफ़ ले गईं और तलहा (रज़ि.) और ज़ुबैर (रज़ि.) दोनों हज़रत अ़ली (रज़ि.) की बेअ़त तोड़कर उनके साथ गये तो हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने अबू मूसा (रज़ि.) को कहला भेजा कि मुसलमानों को जंग के लिये तैयार रख और हक़ की मदद कर। अबू मूसा (रज़ि.) ने साइब बिन मालिक अश्अ़री से राय ली। उन्होंने भी राय दी कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के हुक्म पर चलना चाहिये लेकिन अबू मूसा (रज़ि.) ने न सुना और उल्टा लोगों से ये कहने लगे कि जंग का इरादा न करो। आख़िर हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कुर्ज़ा बिन कअ़ब को कूफ़ा का हाकिम किया और अबू मूसा (रज़ि.) को मअ़ज़ूल किया। उधर तलहा (रज़ि.) और ज़ुबैर (रज़ि.) ने बसरा जाकर क्या किया कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) के नाइब इब्ने हनीफ़ा को गिरफ़्तार कर लिया। ये तो ए'लानिया बग़ावत और अ़हदशिकनी ठहरी और ऐसे लोगो से लड़ना बमौजिब नस्से कुर्आनी, **फ़क़ातिलुल लती तब्ग़ी हत्ता तफ़िअ इला अम्रिल्लाह** (अल हुजुरात : 9) ज़रूर था और अ़म्मार (रज़ि.) की राय बिलकुल साइब थी कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की ता'मीले हुक्म में देर न करना चाहिये और आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद अ़ली (रज़ि.) से फ़र्माया था या अ़ली! तुम बेअ़त तोड़ने वालों और बाग़ियों से लड़ोगे। कहते हैं जब जंगे जमल शुरू हुई सन 36 हिजरी 15 जमादिल ऊला को तो एक शख़्स हज़रत अ़ली (रज़ि.) के पास आया कहने लगे तुम उन लोगों से कैसे लड़ते हो उन्होंने कहा मैं हक़ पर लड़ता हूँ। वो कहने लगा वो भी यही कहते हैं हम हक़ पर लड़ते हैं। अ़ली (रज़ि.) ने कहा, मैं उनसे बेअ़त शिकनी और जमाअ़त को छोड़ देने पर लड़ता हूँ। ग़फ़रल्लाहु लहुम अज्मईन।

बाब 19 : जब अल्लाह किसी क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल करता है तो सब क़िस्म के लोग उसमें शामिल हो जाते हैं

١٩- باب إِذَا أَنْزَلَ اللهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا

7108. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़स्मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें हम्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब अल्लाह किसी क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल करता है तो अ़ज़ाब उन सब लोगों पर आता है जो उस क़ौम में होते हैं फिर उन्हें उनके आ'माल के मुताबिक़ उठाया जाएगा। (राजेअ : 2704)

٧١٠٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُثْمَانَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أَنْزَلَ اللهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا أَصَابَ الْعَذَابُ مَنْ كَانَ فِيهِمْ ثُمَّ بُعِثُوا عَلَى أَعْمَالِهِمْ)).

[راجع: ٢٧٠٤]

आयते कुर्आनी, **वत्तक़ू फ़ित्नतल ला तुसीबन्नल लज़ीन ज़लमू मिन्कुम ख़ास्सा** में इसी हक़ीक़त को बयान किया गया है। सच है कि चने के साथ गेहूँ पिस जाता है।

बाब 20 : नबी करीम (ﷺ) का हज़रत हसन (रज़ि.) के बारे में फ़र्माना

٢٠- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لِلْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ ((إِنَّ ابْنِي هَذَا لَسَيِّدٌ وَلَعَلَّ اللهَ

أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ)).

मेरा ये बेटा सरदार है और यक़ीनन अल्लाह पाक इसके ज़रिये मुसलमानों की दो जमाअतों में सुलह कराएगा।

जो आपस में लड़ाई चाहते होंगे मगर उनके इक़्दामे सुलह से वो जंग ख़त्म हो जाएगी। हज़रत हसन (रज़ि.) ने हज़रत मुआविया (रज़ि.) से सुलह करके फ़साद को ख़त्म करा दिया जो बेहद क़ाबिले ता'रीफ़ है।

٧١٠٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ أَبُو مُوسَى وَلَقِيتُهُ بِالْكُوفَةِ جَاءَ إِلَى ابْنِ شُبْرُمَةَ فَقَالَ: أَدْخِلْنِي عَلَى عِيسَى فَأَعِظَهُ فَكَأَنَّ ابْنَ شُبْرُمَةَ خَافَ عَلَيْهِ فَلَمْ يَفْعَلْ قَالَ: حَدَّثَنَا الْحَسَنُ قَالَ : لَمَّا سَارَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا إِلَى مُعَاوِيَةَ بِالْكَتَائِبِ قَالَ عَمْرُو بْنُ الْعَاصِ لِمُعَاوِيَةَ: أَرَى كَتِيبَةً لاَ تُوَلِّي حَتَّى تُدْبِرَ أُخْرَاهَا قَالَ مُعَاوِيَةُ: مَنْ لِذَرَارِيِّ الْمُسْلِمِينَ؟ فَقَالَ: أَنَا فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَامِرٍ وَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَمُرَةَ نَلْقَاهُ فَنَقُولُ لَهُ الصُّلْحَ قَالَ الْحَسَنُ: وَلَقَدْ سَمِعْتُ أَبَا بَكْرَةَ قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ جَاءَ الْحَسَنُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ، وَلَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ)).

7109. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल अबू मूसा ने बयान किया और मेरी उनसे मुलाक़ात कूफ़ा में हुई थी। वो इब्ने शुबरमा के पास आए और कहा कि मुझे ईसा (मंसूर के भाई और कूफ़ा के वाली) के पास ले चलो ताकि मैं उसे नसीहत करूँ। ग़ालिबन इब्ने शुबरमा ने डर महसूस किया और नहीं ले गये। उन्होंने उस पर बयान किया कि हमसे हसन बस़री ने बयान किया कि जब हसन बिन अ़ली अमीर मुआविया (रज़ि.) के ख़िलाफ़ लश्कर लेकर निकले तो अ़म्र बिन आ़स ने अमीर मुआविया (रज़ि.) से कहा कि मैं ऐसा लश्कर देखता हूँ जो उस वक़्त तक वापस नहीं जा सकता जब तक अपने मुक़ाबिल को भगा न ले। फिर अमीर मुआविया (रज़ि.) ने कहा कि मुसलमानों के अहलो अ़याल का कौन कफ़ील होगा? जवाब दिया कि मैं। फिर अ़ब्दुल्लाह बिन आमिर और अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह ने कहा कि हम अमीर मुआविया (रज़ि.) से मिलते हैं (और उनसे सुलह के लिये कहते हैं) हसन बस़री (रज़ि.) ने कहा कि मैंने अबूबक्र (रज़ि) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ख़ुत्बा दे रहे थे कि हसन (रज़ि.) आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरा ये बेटा सय्यद है और उम्मीद है कि इसके ज़रिये अल्लाह मुसलमानों की दो जमाअतों में सुलह कराएगा।

तश्रीह : हज़रत हसन (रज़ि.) के इस इक़्दाम से मुसलमानों में एक बड़ी जंग टल गई जबकि हालात हज़रत हसन (रज़ि.) के लिये साज़गार थे मगर आपने उस ख़ानाजंगी को हुस्ने तदब्बुर से ख़त्म कर दिया। अल्लाह पाक आपकी रूहे पाक पर हज़ारों रहमतें नाज़िल फ़र्माए। इस तरह रसूले करीम (ﷺ) की ये पेशीनगोई सच्ची हो गई जो इस हदीष़ में मज़्कूर है। **अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलिही व अस़्हाबिही अज्मईन।** फिर ये दोनों हज़रत हसन (रज़ि.) के पास आए और सुलह की तज्वीज़ ठहर गई और उन्होंने सुलह कर ली। हज़रत हसन (रज़ि.) के मुकद्दम लश्कर के सरदार क़ैस बिन सअद थे। ये दोनों लश्कर कूफ़ा के क़रीब एक दूसरे से मिले। हज़रत हसन (रज़ि.) ने उन लश्करों की ता'दाद पर नज़र डालकर हज़रत मुआविया (रज़ि.) को पुकारा फ़र्माया मैंने अपने परवरदिगार पास जो मिलने वाला है उसको इख़्तियार किया अगर ख़िलाफ़त अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिखी है तो मुझको मिलने वाली नहीं और अगर मेरे लिये लिखी है तो मैंने तुमको दे डाली। उस वक़्त हज़रत मुआविया (रज़ि.) के लश्कर वालों ने तक्बीर कही और मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) ने ये हदीष़ सुनाई, **इन्नब्नी हाज़ा सय्यिदुन** अख़ीर तक। फिर हज़रत हसन (रज़ि.) ने ख़ुत्बा सुनाया और

ख़िलाफ़त मुआविया (रज़ि.) के सुपुर्द कर दी, इस शर्त पर कि वो अल्लाह की किताब और सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) पर अमल करते रहें। लोग हज़रत हसन (रज़ि.) को कहने लगे **या आरिल मुस्लिमीन** या'नी मुसलमानों के नंग। आपने जवाब दिया **अल आर ख़ैरुम् मिनन्नार**। जो सुलहनामा क़रार पाया था उसमें ये भी शर्त थी कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) के बाद फिर ख़िलाफ़त हज़रत हसन को मिलेगी। मुहम्मद बिन क़ुदामा ने ब सनद सहीह और इब्ने अबी ख़ुषैमा ने ऐसा ही रिवायत किया है कि हज़रत हसन (रज़ि.) ने हज़रत मुआविया (रज़ि.) से इसी शर्त पर बेअत की थी।

7110. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, कहा कि अम्र ने बयान किया, उन्हें मुहम्मद बिन अली ने ख़बर दी, उन्हें उसामा (रज़ि.) के ग़ुलाम हरमला ने ख़बर दी। अम्र ने बयान किया कि मैंने हरमला को देखा था। हरमला ने बयान किया कि मुझे उसामा ने अली (रज़ि.) के पास भेजा और मुझसे कहा, उस वक़्त तुमसे अली (रज़ि.) पूछेंगे कि तुम्हारे साथी (उसामा रज़ि.) जंगे जमल व सिफ़्फ़ीन से क्यूँ पीछे रह गये थे तो उनसे कहना कि उन्होंने आपसे कहा है कि अगर आप शेर के मुँह में हों तब भी मैं उसमें भी आपके साथ रहू लेकिन ये मामला ही ऐसा है या'नी मुसलमानों की आपस की जंग तो (उसमें शिर्कत सहीह) नहीं मा'लूम हुई (हरमला कहते हैं कि) चुनाँचे उन्होंने कोई चीज़ नहीं दी। फिर मैं, हसन, हुसैन और अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (रज़ि.) के पास गया तो उन्होंने मेरी सवारी पर इतना माल लदवा दिया जितना कि ऊँट उठा न सकता था।

٧١١٠- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ الله، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ : قَالَ عَمْرٌو أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ ان حَرْمَلَةَ مَوْلَى أُسَامَةَ أَخْبَرَهُ قَالَ عَمْرٌو: وَقَدْ رَأَيْتُ حَرْمَلَةَ قَالَ: أَرْسَلَنِي أُسَامَةُ إِلَى عَلِيٍّ وَقَالَ: إِنَّهُ سَيَسْأَلُكَ الآنَ فَيَقُولُ :مَا خَلَّفَ صَاحِبَكَ؟ فَقُلْ لَهُ : يَقُولُ لَكَ لَوْ كُنْتَ فِي شِدْقِ الأَسَدِ لأَحْبَبْتُ أَنْ أَكُونَ مَعَكَ فِيهِ، وَلَكِنْ هَذَا أَمْرٌ لَمْ أَرَهُ فَلَمْ يُعْطِي شَيْئًا فَذَهَبْتُ إِلَى حَسَنٍ وَحُسَيْنٍ وَابْنِ جَعْفَرٍ فَأَوْقَرُوا لِي رَاحِلَتِي.

तश्रीह : हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) हज़रत उम्मे ऐमन के बतन से पैदा हुए जो आप (ﷺ) के वालिद जनाब अब्दुल्लाह की आज़ादकर्दा लौण्डी थी जिसने आँहज़रत (ﷺ) की परवरिश की थी। हज़रत उसामा आँहज़रत (ﷺ) के महबूबतरीन ख़ादिम थे। वफ़ाते नबवी के वक़्त उनकी उम्र बीस साल की थी। वादियुल क़ुरा में सन 54 हिजरी में शहीद हुए, रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहू।

बाब 21 : कोई शख़्स लोगों के सामने एक बात कहे फिर उसके पास से निकलकर दूसरी बात कहने लगे तो ये दग़ाबाज़ी है।

٢١- باب إِذَا قَالَ عِنْدَ قَوْمٍ شَيْئًا ثُمَّ خَرَجَ فَقَالَ بِخِلاَفِهِ

7111. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि जब अहले मदीना ने यज़ीद बिन मुआविया की बेअत से इंकार किया तो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अपने ख़ादिमों और लड़कों को जमा किया और कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आपने फ़र्माया कि हर बहाना करने वाले के लिये क़यामत के दिन एक झण्डा खड़ा किया जाएगा

٧١١١- حدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ قَالَ: لَمَّا خَلَعَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَزِيدَ بْنَ مُعَاوِيَةَ جَمَعَ ابْنُ عُمَرَ حَشَمَهُ وَوَلَدَهُ فَقَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((يُنْصَبُ لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ،

وَإِنَّا قَدْ بَايَعْنَا هَذَا الرَّجُلَ عَلَى بَيْعِ اللهِ وَرَسُولِهِ، وَإِنِّي لاَ أَعْلَمُ غَدْرًا أَعْظَمَ مِنْ أَنْ يُبَايَعَ رَجُلٌ عَلَى بَيْعِ اللهِ وَرَسُولِهِ، ثُمَّ يُنْصَبُ لَهُ الْقِتَالُ وَإِنِّي لاَ أَعْلَمُ أَحَدًا مِنْكُمْ خَلَعَهُ وَلاَ بَايَعَ فِي هَذَا الأَمْرِ إِلاَّ كَانَتِ الْفَيْصَلَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ)).

[راجع: ٣١٨٨]

और हमने उस शख़्स (यज़ीद) की बेअत अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर की है और मेरे इल्म में कोई बहाना इससे बढ़कर नहीं है कि किसी शख़्स से अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर बेअत की जाए और फिर उससे जंग की जाए और देखो मदीनावालों! तुममें से जो कोई यज़ीद की बेअत को तोड़े और दूसरे किसी से बेअत करे तो मुझमें और उसमें कोई रिश्ता नहीं रहा, मैं उससे अलग हूँ। (राजेअ : 3188)

तश्रीह : हुआ ये था कि पहले पहल मदीना वालों ने यज़ीद का अच्छा समझा तो उससे बेअत कर ली थी फिर लोगों को उसके हाल पूछने के बाद यज़ीद के नाइब उ़स्मान बिन मुहम्मद इब्ने अबी सुफ़यान को मदीना से निकाल दिया और यज़ीद की बेअ़त तोड़ दी।

٧١١٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا أَبُو شِهَابٍ، عَنْ عَوْفٍ عَنْ أَبِي الْمِنْهَالِ قَالَ: لَمَّا كَانَ ابْنُ زِيَادٍ وَمَرْوَانُ بِالشَّأْمِ وَوَثَبَ ابْنُ الزُّبَيْرِ بِمَكَّةَ وَوَثَبَ الْقُرَّاءُ بِالْبَصْرَةِ، فَانْطَلَقْتُ مَعَ أَبِي إِلَى أَبِي بَرْزَةَ الأَسْلَمِيِّ حَتَّى دَخَلْنَا عَلَيْهِ فِي دَارِهِ وَهُوَ جَالِسٌ فِي ظِلِّ عُلِّيَّةٍ لَهُ مِنْ قَصَبٍ، فَجَلَسْنَا إِلَيْهِ فَأَنْشَأَ أَبِي يَسْتَطْعِمُهُ الْحَدِيثَ فَقَالَ: يَا أَبَا بَرْزَةَ أَلاَ تَرَى مَا وَقَعَ فِيهِ النَّاسُ؟ فَأَوَّلُ شَيْءٍ سَمِعْتُهُ تَكَلَّمَ بِهِ إِنِّي احْتَسَبْتُ عِنْدَ اللهِ أَنِّي أَصْبَحْتُ سَاخِطًا عَلَى أَحْيَاءِ قُرَيْشٍ إِنَّكُمْ يَا مَعْشَرَ الْعَرَبِ كُنْتُمْ عَلَى الْحَالِ الَّذِي عَلِمْتُمْ مِنَ الذِّلَّةِ وَالْقِلَّةِ وَالضَّلاَلَةِ، وَإِنَّ اللهَ أَنْقَذَكُمْ بِالإِسْلاَمِ وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ حَتَّى بَلَغَ بِكُمْ مَا تَرَوْنَ وَهَذِهِ الدُّنْيَا الَّتِي أَفْسَدَتْ بَيْنَكُمْ إِنَّ ذَاكَ الَّذِي بِالشَّأْمِ وَاللهِ إِنْ يُقَاتِلُ إِلاَّ عَلَى الدُّنْيَا، وَإِنَّ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ

7112. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शिहाब ने, बयान किया उनसे औ़फ़ ने बयान किया, उनसे अबी मिन्हाल ने बयान किया कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ियाद और मरवान शाम में थे और इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) ने मक्का में और ख़्वारिज ने बस़रा में क़ब्ज़ा कर लिया था तो मैं अपने वालिद के साथ ह़ज़रत अबू बर्ज़ा असलमी (रज़ि.) के पास गया। जब हम उनके घर में एक कमरे के साये में बैठे हुए थे जो बांस का बना हुआ था, हम उनके पास बैठ गये और मेरे वालिद उनसे बात करने लगे और कहा ऐ अबू बर्ज़ा! आप नहीं देखते लोग किन बातों में आफ़त और इख़्तिलाफ़ में उलझ गये हैं। मैंने उनकी ज़ुबान से सबसे पहली बात ये सुनी कि मैं जो उन क़ुरैश के लोगों से नाराज़ हूँ तो महज़ अल्लाह की रज़ामन्दी के लिये, अल्लाह मेरा अज्र देने वाला है। अ़रब के लोगों! तुम जानते हो पहले तुम्हारा क्या हाल था तुम गुमराही में गिरफ़्तार थे, अल्लाह ने इस्लाम के ज़रिये और ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) के ज़रिये तुमको उस बुरी ह़ालत से नजात दी। यहाँ तक कि तुम इस रुत्बे को पहुँचे। (दुनिया के ह़ाकिम और सरदार बन गये) फिर इसी दुनिया ने तुमको ख़राब कर दिया। देखो! ये शख़्स जो शाम में ह़ाकिम बन बैठा है या'नी मरवान दुनिया के लिये लड़ रहा है। ये लोग जो तुम्हारे सामने हैं (ख़्वारिज) वल्लाह! ये लोग सिर्फ़ दुनिया के लिये लड़ रहे हैं और वो जो मक्का में है अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) वल्लाह! वो भी सिर्फ़ दुनिया के

बदलना और अ़रब में फिर बुतपरस्ती का शुरू होना

الأَوْثَانَ

7116. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बरदी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे सई़द बिन मुसय्यब ने बयान किया और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत क़ायम नहीं होगी यहाँ तक कि क़बीला दौस की औ़रतों का ज़ुल ख़ल्सा का (त़वाफ़ करते हुए) खोए से ख़ूब उछलेगा और ज़ु ल ख़ल्सा क़बीला दौस का बुत था जिसको वो ज़माना जाहिलियत में पूजा करते थे।

٧١١٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : قَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَضْطَرِبَ أَلَيَاتُ نِسَاءِ دَوْسٍ عَلَى ذِي الْخَلَصَةِ، وَذُو الْخَلَصَةِ طَاغِيَةُ دَوْسٍ الَّتِي كَانُوا يَعْبُدُونَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ)).

तश्रीह़ : कूल्हे मटकाने से मुराद ये है कि उसके गिर्द त़वाफ़ करेंगी मा'लूम हुआ कि का'बा के सिवा और किसी क़ब्र या झण्डे या शद्दे या बुत का त़वाफ़ करना शिर्क है। इस ह़दीष़ से ये भी निकला कि पहले शिर्क और बुतपरस्ती औ़रतों से निकलेगी क्योंकि औ़रतें ज़ई़फ़ुल ए'तिक़ाद होती हैं, जल्दी से कुफ़्र की बातें इख़्तियार कर लेती हैं, ह़दीष़ से ये भी निकला कि क़यामत तक कुछ न कुछ इस्लाम बाक़ी रहेगा मगर ज़ई़फ़ हो जाएगा। जैसे दूसरी ह़दीष़ में है, **बदअल इस्लामु ग़रीबन व सयऊदु कमा बदअ।** अरब ही के मुल्क से सारे जहान में तौह़ीद फैली है। क़यामत के क़रीब वहाँ भी शिर्क होने लगेगा। दूसरे मुल्कों का क्या कहना वो तो अब भी शिर्क और मुश्रिकों से पटे पड़े हैं। दूसरी रिवायत मे यूँ है कि क़यामत क़ायम न होगी जब तक लात और उ़ज़्ज़ा की फिर से पूजा न शुरू होगी। तीसरी रिवायत में यूँ है यहाँ तक कि मेरी उम्मत के कई क़बीले बुत परस्ती शुरू न कर देंगे। ह़ाकिम की रिवायत में यूँ है यहाँ तक कि बनी आ़मिर की औ़रतों के मूँढ़े ज़ुल ख़ल्सा के पास न लड़ें और और टक्कर न खाएँ। एक रिवायत में यूँ है यहाँ तक कि मेरी उम्मत के कई क़बीले मुश्रिकों से न मिल जाएँ। मआ़ज़ल्लाह! हमारे पैग़म्बर स़ाह़ब दुनिया में इसीलिये तशरीफ़ लाए थ कि अल्लाह की तौह़ीद जारी करें शिर्क और कुफ़्र और बुतपरस्ती की कमर तोड़ें। बस जो शख़्स़ शिर्क और शिर्क के मक़ामात को मिटाए, बुतों और थानों और झण्डों और क़ब्रों और गुम्बदों को जहाँ पर शिर्क किया जाता है, उनसे दिली नफ़रत करे वही दरह़क़ीक़त पैग़म्बर स़ाह़ब का पैरोकार है और यूँ तो हर कोई दा'वा करता है मैं पैग़म्बर का आ़शिक़ हूँ, पर ए'लानिया शिर्क होते देखता है और मुँह से एक ह़र्फ़ नहीं निकालता ऐसा ज़ुबानी दा'वा कुछ काम नहीं आएगा।

7117. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबुल ग़ैष़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी यहाँ तक कि क़ह़त़ान का एक शख़्स़ (बादशाह बनकर) निकलेगा और लोगों को अपने डंडे से हाँकेगा। (राजेअ़ : 3517)

٧١١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ، عَنْ ثَوْرٍ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَخْرُجَ رَجُلٌ مِنْ قَحْطَانَ يَسُوقُ النَّاسَ بِعَصَاهُ)).

[راجع: ٣٥١٧]

तश्रीह़ : ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का नाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन स़ख़र है। जंगे ख़ैबर में मुसलमान होकर अस़्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में दाख़िल हुए और सुह़बते नबवी में हमेशा ह़ाज़िर रहे। 78 साल की उ़म्र में 58 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया। एक छोटी सी बिल्ली पाल रखी थी, उसी से अबू हुरैरह (रज़ि.) मशहूर हुए रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहू। क़यामत के क़रीब

याजूज माजूज के किसी शख़्स का न मरना जब तक वो हज़ार आदमी अपनी नस्ल से न देख ले। ये भी मुम्किन है कि उसी वक़्त तक का बयान हो जब तक आदमी की उ़म्र हज़ार दो हज़ार साल तक हुआ करती थी न कि हमारे ज़माने का जब उ़म्रे इंसानी की मिक़्दार सौ बरस या एक सौ बीस बरस रह गई है। आख़िर याजूज माजूज भी इंसान हैं हमारी उ़म्रों की त़रह़ उनकी उ़म्रें भी घटी होंगी अब ये जो आष़ार स़ह़ाबा और ताबेईन से मन्कूल हैं कि उनके क़द व क़ामत और कान ऐसे हैं, उनकी सनदें स़ह़ीह़ और क़ाबिले ए'तिमाद नहीं हैं और भूगोल वालों ने जिन क़ौमों को देखा है उन्हीं में से दो बड़ी क़ौमें याजूज माजूज हैं।

94. किताबुल अहकाम

किताब ह़ुकूमत और क़ज़ा के बयान में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तश्रीह : किताबुल अह़काम के ज़ैल में ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रज़ि.) फ़र्माते हैं, **वल अहकामु जम्उ हुक्मिन वल्मुरादु बयानु आदाबिही व शुरूतिही व कजल हाकिम व यतवानलु लफ़्ज़ुल हाकिम अल्ख़लीफ़त वल क़ाज़ी फ़जिक्रूहा यतअ़ल्लक़ु बिकुल्लिम मिन्हा वलहुक्मुश्शरइय्यु इन्दल उसूलिय्यिन ख़िताबुल्लाहि तआ़ला अल्मुतअ़ल्लिक़ु बिअफ़्आ़लिल मुकल्लफ़ीन बिल इक़्तिज़ाइ वत्तख़ईरि व माद्दतुल हुक्मि मिनल अह़कामि व हुवल इत्कानु लिश्शैइ व मनअ़हू मिनल ऐ़बि बाबु क़ौलिल्लाहि तआ़ला अतीउल्लाह व अतीउर्रसूल व उलिल अम्रि मिन्कुम फ़ी हाज़ा इशारतुन मिनल मुस़न्निफ़ि इला तर्जीहिल क़ौलिस्साइरि इला अन्नल आयत नज़लत फ़ी ताअ़तिल उमराइ ख़िलाल लिमन क़ाल नज़लत फ़िल उ़लमाइ व क़द रज्जह ज़ालिक अयज़न अत्तब्री** (फ़त्हुल बारी) ख़ुलास़ा ये है कि लफ़्ज़ अह़काम हुक्म की जमा है मुराद हुकूमत के आदाब और शराइत़ हैं जो इस किताब में बयान होंगे ऐसा ही लफ़्ज़ ह़ाकिम है जो ख़लीफ़ा और क़ाज़ी दोनों पर मुश्तमिल है। पस उनके बारे में ज़रूरी उमूर यहाँ ज़िक्र किये जाएंगे और हुक्मे शरई उसूलियों के नज़दीक मुकल्लिफ़ीन के लिये उमूरे ख़ुदावन्दी हैं जो ज़रूरी हों या मुस्तह़ब और लफ़्ज़ अह़काम का माद्दा लफ़्ज़ हुक्म है और वो किसी कारे ष़वाब को बजा लाना या मम्नूआते शरइया से रुक जाना दोनों पर बोला जाता है।

बाब 1 : अल्लाह तआ़ला ने सूरह निसा में फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की इत़ाअ़त करो और अपने सरदारों का हुक्म मानो. (सूरह : 59)

١ - باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿أَطِيعُوا اللهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الأَمْرِ مِنْكُمْ﴾ [النساء : ٥٩].

तश्रीह : इस्लाम का आख़िरी नस़बुल ऐ़न एक ख़ालिस़ अ़द्ल (न्याय), मसावात (बराबरी) व आज़ादी पर मब्नी हुकूमत का क़याम भी है जैसा कि बहुत सी आयाते क़ुर्आनी से ये अम्र ष़ाबित है। चुनाँचे यही हुआ कि रसूले करीम (ﷺ) अपने अ़हदे आख़िर में अ़रब मे एक आज़ाद इस्लामी हुकूमत क़ायम फ़र्माकर दुनिया से रुख़्स़त हुए और बाद में ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन से उसका दायरा अ़रब व अ़जम में दूर दूर तक वसीअ़ होता गया। रसूले करीम (ﷺ) ने इस

सिलसिले की भी बेशतर हिदायात फ़र्माई। ऐसी ही अह़ादीष़ को ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस किताबुल अह़काम में जमा फ़र्माया है जिसे आयते क़ुर्आनी, **या अय्युहल्लज़ीन आमनू अत़ीउल्लाह व अत़ीउर्रसूल व उलिल अम्रि मिन्कुम** (सूरह निसा : 59) से शुरू फ़र्माया। अल्लाह और रसूल की इत़ाअ़त के बाद ख़ुलफ़ा-ए-इस्लाम की इत़ाअ़त भी ज़रूरी क़रार दी थी जो क़ौमी व मिल्ली नज़्म व नस्क़ को क़ायम रखने के लिये बेह़द ज़रूरी है साथ ही ये उसूल भी क़रार पाया कि **ला त़ाअ़त लिल मख़्लूक़ि फ़ी मअ़सियतिल ख़ालिक़ि** ख़ुलफ़ा-ए-इस्लाम या दीगर अइम्मा-ए-इस्लाम की इत़ाअ़त किताब व सुन्नत की ह़द तक है अगर किसी जगह उसकी इत़ाअ़त में किताबो सुन्नत से टकराव होता हो तो वहाँ बहरह़ाल उनकी फ़र्मांबरदारी को छोड़ना और किताब व सुन्नत को लाज़िम पकड़ना ज़रूरी होगा। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) का इर्शादे गिरामी बिलकुल बजा है कि जब मेरा कोई मसला कोई फ़त्वा क़ुर्आन व ह़दीष़ के ख़िलाफ़ हो तो मेरी बात को छोड़कर क़ुर्आन व ह़दीष़ को लाज़िम पकड़ो। दीगर अइम्मा-ए-किराम के भी ऐसे ही इर्शादात हैं जो किताब हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा और रिसाला इंसाफ़ व अक़्दुल जय्यिद मुअल्लफ़ात ह़ज़रत हुज्जतुल हिन्द शाह वली उल्लाह मुह़द्दिष़ देहलवी में देखे जा सकते हैं, वबिल्लाहित्तौफ़ीक़।

7137. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अबू सलमा इब्ने अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) को बयान करते हुए सुना कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने मेरी इत़ाअ़त की उसने अल्लाह की इत़ाअ़त की और जिसने मेरी नाफ़र्मानी की उसने अल्लाह की नाफ़र्मानी की और जिसने मेरे (मुक़र्रर किये हुए) अमीर की इत़ाअ़त की उसने मेरी इत़ाअ़त की और जिसने मेरे अमीर की नाफ़र्मानी की उसने मेरी नाफ़र्मानी की। (राजेअ़ : 2957)

٧١٣٧- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَطَاعَنِي فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ عَصَى اللهَ، وَمَنْ أَطَاعَ أَمِيرِي، فَقَدْ أَطَاعَنِي، وَمَنْ عَصَى أَمِيرِي فَقَدْ عَصَانِي)). [راجع: ٢٩٥٧]

लेकिन अगर अमीर का हुक्म क़ुर्आन व ह़दीष़ के ख़िलाफ़ हो तो उसे छोड़कर क़ुर्आन व ह़दीष़ पर अ़मल करना होगा।

7138. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आगाह हो जाओ, तुममें से हर एक निगहबान है और हर एक से उसकी रिआ़या के बारे में सवाल किया जाएगा। पस इमाम (अमीरुल मोमिनीन) लोगों पर निगहबान है और उससे उनके बारे में सवाल होगा और किसी शख़्स़ का गुलाम अपने सरदार के माल का निगहबान है और उससे उसके बारे में सवाल होगा। आगाह हो जाओ कि तुममें से हर एक निगहबान है और हर एक से उसकी रिआ़या के बारे में पुरसिश होगी। (राजेअ़ : 893)

٧١٣٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أَلاَ كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، فَالإِمَامُ الَّذِي عَلَى النَّاسِ رَاعٍ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلَى أَهْلِ بَيْتِ زَوْجِهَا وَوَلَدِهِ وَهِيَ مَسْؤُولَةٌ عَنْهُمْ، وَعَبْدُ الرَّجُلِ رَاعٍ عَلَى مَالِ سَيِّدِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْهُ أَلاَ فَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ

को अल्लाह तआला ने दीन का इल्म भी दिया था और दौलत भी इनायत फ़र्माई थी। उन्होंने अपनी दौलत बहुत से नेक कामों में जैसे इशाअत कुतुबे हदीष वग़ैरह में सर्फ़ की अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द करे और उनकी नेकियाँ क़ुबूल फ़र्माएँ, आमीन।

बाब 4 : इमाम और बादशाह इस्लाम की बात सुनन और मानना वाजिब है जब तक वह ख़िलाफ़ शरअ और गुनाह की बात का हुक्म न दे

٤- باب - السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ لِلإِمَامِ مَا لَمْ تَكُنْ مَعْصِيَةً

हदीष का मतलब ये है कि बादशाहे इस्लाम अगर किसी हब्शी गुलाम को भी आमिल मुक़र्रर करे तो उसकी इताअत वाजिब होगी। हब्शी गुलाम का ख़लीफ़ा होना मुराद नहीं है।

7142. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया सुनो और इताअत करो, ख़्वाह तुम पर किसी ऐसे हब्शी गुलाम को ही आमिल बनाया जाए जिसका सर मुनक़्क़ा की तरह छोटा हो। (राजेअ : 693)

٧١٤٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَإِنِ اسْتُعْمِلَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ كَأَنَّ رَأْسَهُ زَبِيبَةٌ)).

[راجع: ٦٩٣]

या'नी अदना से अदना हाकिम की भी इताअत ज़रूरी है बशर्ते कि मअसियते इलाही का हुक्म न दे।

7143. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे जअद ने बयान किया और उनसे अबू रजाअ ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने अपने अमीर में कोई बुरा काम देखा तो उसे सब्र करना चाहिये क्योंकि कोई अगर जमाअत से एक बालिश्त भी जुदा हो तो वो जाहिलियत की मौत मरेगा। (राजेअ : 7053)

٧١٤٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنِ الْجَعْدِ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ يَرْوِيهِ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((مَنْ رَأَى مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا فَكَرِهَهُ فَلْيَصْبِرْ، فَإِنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ يُفَارِقُ الْجَمَاعَةَ شِبْرًا فَيَمُوتَ إِلاَّ مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً)).

[راجع: ٧٠٥٣]

तश्रीह : जमाअत से अलग होना इससे ये मुराद है कि हाकिमे इस्लाम से बाग़ी होकर उसकी इताअत से निकल जाए जैसा अली (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में ख़ारजियों ने किया था ऐसा करना मिल्ली निज़ाम को तोड़ना और अहदे जाहिलियत की सी ख़ुदसरी में गिरफ़्तार होना है जो अहले जाहिलियत का शैवा है। मुसलमान को ऐसी ख़ुदसरी की हालत में मरना अहदे जाहिलियत वालों की सी मौत मरना है जो मुसलमान के लिये किसी तरह ज़ैबा नहीं देता।

7144. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुसलमान के लिये अमीर की बात सुनना और उसकी इताअत करना ज़रूरी है। उन चीज़ों में भी जिन्हें वो पसंद करे और उनमें भी जिन्हें वो नापसंद करे,

٧١٤٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ حَدَّثَنِي نَافِعٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ عَلَى الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ فِيمَا أَحَبَّ وَكَرِهَ، مَا لَمْ يُؤْمَرْ

बिमअ़सियतिन, फ़इज़ा उमिर बिमअ़सियतिन फ़ला सम्अ़ व ला

بِمَعْصِيَةٍ، فَإِذَا أُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ فَلاَ سَمْعَ وُلاَ طَاعَةَ)). [راجع: ٢٩٥٥]

जब तक उसे मअ़सियत का हुक्म न दिया जाए। फिर जब उसे मअ़सियत का हुक्म दिया जाए तो न सुनना बाक़ी रहता है न इत़ाअ़त करना। (राजेअ़ : 2955)

अमीर हा या इमाम मुज्तहिद ग़लती होने का इम्कान सबसे है, इसलिये ग़लती में उनकी इत़ाअ़त करना जाइज़ नहीं है। इसी से अंधी तक़्लीद की जड़ कटती है। आजकल किसी इमाम मस्जिद का इमाम व ख़लीफ़ा बन बैठना और अपने न मानने वालों को इस ह़दीष़ का मिस्दाक़ ठहराना इस ह़दीष़ का मज़ाक़ उड़ाना है और लिखे न पढ़े नाम मुहम्मद फ़ाज़िल का मिस्दाक़ बनना है जबकि ऐसे इमाम अग़्यार की ग़ुलामी में रहकर ख़लीफ़ा कहलाकर ख़िलाफ़ते इस्लामी का मज़ाक़ उड़ाते हैं।

٧١٤٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ سَرِيَّةً وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يُطِيعُوهُ، فَغَضِبَ عَلَيْهِمْ وَقَالَ: أَلَيْسَ قَدْ أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تُطِيعُونِي؟ قَالُوا: بَلَى. قَالَ: عَزَمْتُ عَلَيْكُمْ لَمَا جَمَعْتُمْ حَطَبًا وَأَوْقَدْتُمْ نَارًا ثُمَّ دَخَلْتُمْ فِيهَا، فَجَمَعُوا حَطَبًا فَأَوْقَدُوا فَلَمَّا هَمُّوا بِالدُّخُولِ فَقَامَ يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّمَا تَبِعْنَا النَّبِيَّ ﷺ فِرَارًا مِنَ النَّارِ أَفَنَدْخُلُهَا؟ فَبَيْنَمَا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ خَمَدَتِ النَّارُ وَسَكَنَ غَضَبُهُ فَذُكِرَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((لَوْ دَخَلُوهَا مَا خَرَجُوا مِنْهَا أَبَدًا، إِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الْمَعْرُوفِ)). [راجع: ٣٣٤٠]

7145. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन उ़बैदह ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक दस्ता भेजा और उस पर अंस़ार के एक शख़्स़ को अमीर बनाया और लोगों को हुक्म दिया कि इनकी इत़ाअ़त करें। फिर अमीर फ़ौज के लोगों पर ग़ुस्सा हुए और कहा कि क्या आँह़ज़रत (ﷺ) ने तुम्हें मेरी इत़ाअ़त का हुक्म नहीं दिया है? लोगों ने कहा कि ज़रूर दिया है। इस पर उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि लकड़ी जमा करो और उससे आग लगाओ और उसमें कूद पड़ो। लोगो ने लकड़ी जमा की और आग जलाई, जब कूदना चाहा तो एक दूसरे को लोग देखने लगे और उनमें से कुछ ने कहा कि हमने आँह़ज़रत (ﷺ) की फ़र्मांबरदारी आग से बचने के लिये की थी, क्या फिर हम इसमें ख़ुद ही दाख़िल हो जाएँ। इसी दौरान में आग ठण्डी हो गई और अमीर को ग़ुस्सा भी जाता रहा। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया कि अगर ये लोग उसमें कूद पड़ते तो फिर उसमें से न निकल सकते। इत़ाअ़त सिर्फ़ अच्छी बातों में है। (राजेअ़ : 3340)

ग़लत बातों में इत़ाअ़त जाइज़ नहीं है। ये अमीरे लश्कर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सह्मी अंस़ारी (रज़ि.) थे ग़ुस्से में उनसे ये बात हुई ग़ुस्सा ठण्डा होने तक वो आग भी ठण्डी हो गई।

٥- باب مَنْ لَمْ يَسْأَلِ الإِمَارَةَ أَعَانَهُ اللهُ

बाब 5 : जिसे बिन मांगे सरदारी मिले तो अल्लाह उसकी मदद करेगा

रिवायत यूनुस, मअ़मर और इब्ने जुरैज ने ज़ुह्री से की, उनसे अबू सलमा ने, उनसे जाबिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रजम के सिलसिले में यही ह़दीष़ ज़िक्र की। (राजेअ : 5270)

وَابْنُ جُرَيْجٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الرَّجْمِ. [راجع: ٥٢٧٠]

ईदगाह के क़रीब उनको रजम किया गया। ये शख़्स माइज़ बिन मालिक असलमी मदनी है जो बहुक्मे नबवी संगसार किये गये। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहू।

बाब 20 : फ़रीक़ैन को इमाम का नसीहत करना

٢٠- باب مَوْعِظَةِ الإِمَامِ لِلْخُصُومِ

7169. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे हिशाम ने,उनसे उनके वालिद ने, उनसे ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने और उनसे उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बिलाशुब्हा मैं एक इंसान हूँ, तुम मेरे पास अपने झगड़े लाते हो। मुम्किन है तुममें से कुछ अपने मुक़द्दमे पेश करने में फ़रीक़े ष़ानी के मुक़ाबले में ज़्यादा चर्ब ज़ुबान हो और मैं तुम्हारी बात सुनकर फ़ैसला कर दूँ तो जिस शख़्स के लिये मैं उसके भाई (फ़रीक़े ष़ानी) का कोई ह़क़ दिला दूँ। चाहिये कि वो उसे न ले क्योंकि ये आग का एक टुकड़ा है जो मैं उसे देता हूँ। (राजेअ : 2458)

٧١٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ، وَإِنَّكُمْ تَخْتَصِمُونَ إِلَيَّ، وَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَنْ يَكُونَ أَلْحَنَ بِحُجَّتِهِ مِنْ بَعْضٍ فَأَقْضِي نَحْوَ مَا أَسْمَعُ، فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ بِحَقِّ أَخِيهِ شَيْئًا فَلاَ يَأْخُذْهُ فَإِنَّمَا أَقْطَعُ لَهُ قِطْعَةً مِنَ النَّارِ)). [راجع: ٢٤٥٨]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि किसी भी क़ाज़ी का ग़लत़ फ़ैसला अल्लाह के नज़दीक स़ह़ीह़ नहीं हो सकता गो वो नाफ़िज़ कर दिया जाए, ग़लत़ ग़लत़ ही रहेगा। इस ह़दीष़ से इमाम मालिक और शाफ़िई और अह़मद और अहले ह़दीष़ और जुम्हूर उ़लमा का मज़हब ष़ाबित हुआ कि क़ाज़ी का फ़ैसला ज़ाहिर में नाफ़िज़ होता है लेकिन उसके फ़ैसले से जो चीज़ ह़राम है वो ह़लाल नहीं हो सकती न ह़लाल ह़राम होती है और इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) का क़ौल रद्द हो गया कि क़ाज़ी का फ़ैसला ज़ाहिरन और बात़िनन दोनों त़रह़ नाफ़िज़ हो जाता है और इस मसले का ज़िक्र ऊपर हो चुका है। ह़दीष़ से ये भी निकला कि आँह़ज़रत (ﷺ) को ग़ैब का इल्म नहीं था। अल्बत्ता अल्लाह तआ़ला अगर आपको बतला देता तो मा'लूम हो जाता।

बाब 21 : अगर क़ाज़ी ख़ुद ओहद-ए-क़ज़ा ह़ासिल होने के बाद या उससे पहले एक अम्र का गवाह हो तो क्या उसकी बिना पर फ़ैसला कर सकता है?

٢١- باب الشَّهَادَةِ تَكُونُ عِنْدَ الْحَاكِمِ فِي وِلاَيَتِهِ الْقَضَاءَ أَوْ قَبْلَ ذَلِكَ لِلْخَصْمِ

और शुरैह़ (मक्का के क़ाज़ी) से एक आदमी (नाम नामा'लूम) ने कहा तुम इस मुक़द्दमे में गवाही दो। उन्होंने कहा तू बादशाह के पास जाकर कहना तो मैं वहाँ दूँगा। और इक्रिमा कहते हैं उ़मर (रज़ि.) ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) से पूछा अगर तू ख़ुद अपनी आँख से किसी को ज़िना या चोरी का जुर्म करते देखे और तू अमीर हो तो क्या उसको ह़द लगा देगा। अ़ब्दुर्रह़मान ने कहा

وَقَالَ شُرَيْحٌ الْقَاضِي: وَسَأَلَهُ إِنْسَانٌ الشَّهَادَةَ فَقَالَ: ائْتِ الأَمِيرَ حَتَّى أَشْهَدَ لَكَ وَقَالَ عِكْرِمَةُ: قَالَ عُمَرُ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ لَوْ رَأَيْتَ رَجُلاً عَلَى حَدٍّ زِنًا أَوْ سَرِقَةٍ وَأَنْتَ أَمِيرٌ فَقَالَ:

तशरीह : सुब्हानल्लाह! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की एह़तियात उन्होंने जब देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने तो किसी को ख़लीफ़ा नहीं किया, मुसलमानों की राय पर छोड़ा और अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) ख़लीफ़ा कर गये तो वो ऐसे रास्ते चले जिसमें दोनो की पैरवी हो जाती है या'नी कुछ मश्विरा पर छोड़ा कुछ मुक़र्रर कर दिया। उन्होंने छः आदमियों को जो उस वक़्त अफ़ज़ल और आ़ला थे, मुअ़य्यन किया फिर उन छः में से किसी की तअ़य्युन मुसलमानों की राय पर छोड़ दी। गोया दोनों सुन्नतों पर अ़मल किया। दूसरे तक़्वा शिआ़री देखिए कि अ़शरा मुबश्शरा में से सईद बिन ज़ैद भी ज़िन्दा थे मगर उनका नाम तक न लिया, इस ख़्याल से कि वो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कुछ रिश्ता रखते थे। हाय! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की त़रह़ मुसलमानों में कौन बेनफ़्स और आ़दिल और मुंसिफ़ पैदा हुआ है। उनका एक एक काम ऐसा है जो उनकी फ़ज़ीलत पहचानने के लिये काफ़ी है और अफ़सोस है इन अ़क़्ल के अँधों पर जो ऐसे फ़र्दे फ़रीद को जिसका नज़ीर इस्लाम में नहीं हुआ बुरा जानते हैं।

7219. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने उ़मर (रज़ि.) का दूसरा ख़ुत्बा सुना जब आप मिम्बर पर बैठे हुए थे, ये वाक़िया रसूलल्लाह (ﷺ) की वफ़ात के दूसरे दिन का है। उन्होंने कलिमा-ए-शहादत पढ़ा, ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ख़ामोश थे और कुछ नहीं बोल रहे थे, फिर कहा मुझे उम्मीद थी कि आँह़ज़रत (ﷺ) ज़िन्दा रहेंगे और हमारे कामों की तदबीर व इंतिज़ाम करते रहेंगे। उनका मंशा ये था कि आँह़ज़रत (ﷺ) उन सब लोगों के बाद तक ज़िन्दा रहेंगे तो अगर आज मुह़म्मद (ﷺ) वफ़ात पा गये हैं तो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे सामने नूर (क़ुर्आन) को बाक़ी रखा है जिसके ज़रिये तुम हिदायत ह़ासिल करते रहोगे और अल्लाह ने ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) को इससे हिदायत की और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) के साथी (जो ग़ारे स़ौर में) दो में से दूसरे हैं, बिला शक वो तुम्हारे उमूरे ख़िलाफ़त केलिये तमाम मुसलमानों में सबसे बेहतर हैं, पस उठो और उनसे बेअ़त करो। एक जमाअ़त उनसे पहले ही सक़ीफ़ा बनी साएदा में बेअ़त कर चुकी थी, फिर आ़म लोगों ने मिम्बर पर बेअ़त की। ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, उन्होंने उ़मर (रज़ि.) से सुना कि वो ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से, उस दिन कह रहे थे, मिम्बर पर चढ़ आइये। चुनाँचे वो इसका बराबर इस़रार करते रहे, यहाँ तक कि अबूबक्र (रज़ि.) मिम्बर पर चढ़ गये और सब लोगों ने आपसे बेअ़त की।

(दीगर मक़ाम : 7269)

٧٢١٩- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ خُطْبَةَ عُمَرَ الآخِرَةَ حِينَ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ وَذَلِكَ الْغَدَ مِنْ يَوْمٍ تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ فَتَشَهَّدَ وَأَبُو بَكْرٍ صَامِتٌ لاَ يَتَكَلَّمُ قَالَ: كُنْتُ أَرْجُو أَنْ يَعِيشَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى يَدْبُرَنَا، يُرِيدُ بِذَلِكَ أَنْ يَكُونَ آخِرَهُمْ فَإِنْ يَكُ مُحَمَّدٌ ﷺ قَدْ مَاتَ فَإِنَّ اللهَ تَعَالَى قَدْ جَعَلَ بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ نُورًا تَهْتَدُونَ بِهِ، هَدَى اللهُ مُحَمَّدًا ﷺ وَإِنَّ أَبَا بَكْرٍ صَاحِبُ رَسُولِ اللهِ ﷺ ثَانِي اثْنَيْنِ، فَإِنَّهُ أَوْلَى الْمُسْلِمِينَ بِأُمُورِكُمْ فَقُومُوا فَبَايِعُوهُ، وَكَانَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ قَدْ بَايَعُوهُ قَبْلَ ذَلِكَ فِي سَقِيفَةِ بَنِي سَاعِدَةَ، وَكَانَتْ بَيْعَةُ الْعَامَّةِ عَلَى الْمِنْبَرِ قَالَ الزُّهْرِيُّ: عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ سَمِعْتُ عُمَرَ يَقُولُ لأَبِي بَكْرٍ يَوْمَئِذٍ: اصْعَدِ الْمِنْبَرَ فَلَمْ يَزَلْ بِهِ حَتَّى صَعِدَ الْمِنْبَرَ فَبَايَعَهُ النَّاسُ عَامَّةً. [طرفه في : ٧٢٦٩].

तश्रीह : सक़ीफ़ा का तर्जुमा मौलाना वहीदुज़्ज़माँ (रह़.) ने मँडवे से किया है। उ़र्फ़े आ़म में बनू साएदा की चौपाली ठीक है। **कानत मकानु इज्तिमाइहिम लिल्हुकूमाति** या'नी वो पंचायत घर था। इब्ने मुईन ने कहा कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का इसरार ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को मिम्बर पर चढ़ाने का दुरुस्त था ताकि आपका सबसे तआरुफ़ हो जाए और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) तवाज़ोअ की बिना पर चढ़ने से इंकार कर रहे थे। आख़िर चढ़ गये और अब बेअ़ते उ़मूमी हुई जबकि सक़ीफ़ा बनू साएदा की बेअ़त ख़ुसूसी थी। बाब की मुनासबत इससे निकली कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) की निस्बत फ़र्माया वो तुम सब में ख़िलाफ़त के ज़्यादा मुस्तहि़क़ और ज़्यादा लायक़ हैं। शिया कहते हैं कि ह़ज़रत स़िद्दीक़ (रज़ि.) की ख़िलाफ़त ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ही के ज़ोर और इसरार से हुई वरना ह़ज़रत स़िद्दीक़ (रज़ि.) बिलकुल दुर्वेश स़िफ़त और मुंकसिरुल मिज़ाज और ख़िलाफ़त से मुतनफ़्फ़िर थे। हम कहते हैं अगर ऐसा ही हो जब भी क्या क़बाह़त है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने नज़दीक जिसको ख़िलाफ़त के लायक़ समझा इसके लिये ज़ोर दिया और ह़क़पसंद लोगों का यही क़ायदा होता है। अगर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की ये राय ग़लत़ होती तो दूसरे हज़ारों स़ह़ाबा जो वहाँ मौजूद थे वो क्यूँ इत्तिफ़ाक़ करते? ग़र्ज़ बइज्माअ स़ह़ाबा अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ख़िलाफ़त के अहल और क़ाबिल ठहरे।

7220. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मुह़म्मद बिन जुबैर बिन मुत़्इ़म ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास एक ख़ातून आईं और किसी मामले में आपसे बातचीत की, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे कहा कि वो दोबारा आपके पास आएँ। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अगर मैं आऊँ और आपको न पाऊँ तो फिर आप क्या फ़र्माते हैं? जैसे उनका इशारा वफ़ात की त़रफ़ हो। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मुझे न पाओ तो अबूबक्र (रज़ि.) के पास आइयो। (राजेअ : 3659)

٧٢٢٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ امْرَأَةٌ فَكَلَّمَتْهُ فِي شَيْءٍ فَأَمَرَهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ إِنْ جِئْتُ وَلَمْ أَجِدْكَ كَأَنَّهَا تُرِيدُ الْمَوْتَ قَالَ : ((إِنْ لَمْ تَجِدِينِي فَأْتِي أَبَا بَكْرٍ)). [راجع: ٣٦٥٩]

तश्रीह : ये ह़दीष़ स़ाफ़ दलील है इस बात की कि आँह़ज़रत (ﷺ) को मा'लूम था कि आपके बाद ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ख़लीफ़ा होंगे। दूसरी रिवायत में जिसे त़बरानी और इस्माईली ने निकाला यूँ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) से एक गंवार ने बेअ़त की, पूछा अगर आपकी वफ़ात हो जाए तो किसके पास आऊँ? आपने फ़र्माया कि अबूबक्र (रज़ि.) के पास आना। पूछा अगर वो भी गुज़र जाएँ? फ़र्माया कि फिर उ़मर (रज़ि.) के पास। तर्तीब ख़िलाफ़त का ये खुला हुआ षुबूत है।

7221. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे क़ैस बिन मुस्लिम ने, उनसे त़ारिक़ बिन शिहाब ने कि अबूबक्र (रज़ि.) ने क़बाइल बुज़ाख़ा के वफ़द से (जो आँह़ज़रत ﷺ की वफ़ात के बाद मुर्तद हो गया था और अब मुआ़फ़ी केलिये आया था) फ़र्माया कि ऊँटों की दुमों के पीछे पीछे जंगलों मे घूमते रहो, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपने नबी (ﷺ) के ख़लीफ़ा और मुहाजिरीन की कोई अम्र बतला दे जिसकी वजह से वो तुम्हारा क़ुसूर माफ़ कर दे।

٧٢٢١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي قَيْسُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لِوَفْدِ بُزَاخَةَ: تَتْبَعُونَ أَذْنَابَ الإِبِلِ حَتَّى يُرِيَ اللهُ خَلِيفَةَ نَبِيِّهِ ﷺ وَالْمُهَاجِرِينَ أَمْرًا يَعْذِرُونَكُمْ بِهِ.

[راجع: ٢٧٥٧]

तश्रीह : हज़रत कअ़ब बिन मालिक ने ग़ज़्व-ए-तबूक़ से बिला इजाज़त ग़ैर हाज़िरी की थी और ये बड़ा भारी मिल्ली जुर्म था जो उनसे स़ादिर हुआ। रसूले करीम (ﷺ) ने उनसे और उनके साथियों से पूरा तर्के मवालात फ़र्माया यहाँ तक कि उनकी तौबा अल्लाह ने क़ुबूल की। अब ऐसे मामलात ख़लीफ़ा इस्लाम की स़वाब दीद पर मौक़ूफ़ किये जा सकते हैं।

९५. किताबुत्तमन्ना

किताब नेकतरीन आरज़ुओं के जाइज़ होने में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(तमन्ना उ़र्फ़े आ़म में आदमी का यूँ कहना काश! ऐसा होता, तमन्ना और तरज्जी मे ये फ़र्क़ है कि तमन्ना उस बात में भी होती है जो मह़ाल हो जैसे कहना कि काश! जवानी फिर आ जाती और तरज्जो हमेशा उन ही बातों में होती है जो होने वाली हों)

बाब 1 : आरज़ू करने के बारे में और जिसने शहादत की आरज़ू की

١- باب مَا جَاءَ فِي التَّمَنِّي وَمَنْ تَمَنَّى الشَّهَادَةَ

7226. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने, कहा मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा और सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। अगर उन लोगों का ख़याल न होता जो मेरे साथ ग़ज़्वा में शरीक न हो सकने को बुरा जानते हैं मगर अस्बाब की कमी की वजह से वो शरीक नहीं हो सकते और कोई ऐसी चीज़ मेरे पास नहीं है जिस पर उन्हें सवार करूँ तो मैं कभी (ग़ज़्वात में शरीक होने से) पीछे न रहता। मेरी तो ख़्वाहिश है कि अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ फिर क़त्ल किया जाऊँ, फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ और फिर ज़िंदा किया जाऊँ और फिर मारा जाऊँ। (राजेअ़ : 36)

٧٢٢٦- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ انَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ لاَ أَنْ رِجَالاً يَكْرَهُونَ أَنْ يَتَخَلَّفُوا بَعْدِي وَلاَ أَجِدُ مَا أَحْمِلُهُمْ، مَا تَخَلَّفْتُ لَوَدِدْتُ أَنِّي أُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللهِ ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ)).

[راجع: ٣٦]

ऐसी पाकीज़ा तमन्नाएँ करना बिला शुब्हा जाइज़ है। जैसा कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) से ये मन्क़ूल है।

7227. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअ़रज ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। मेरी आरज़ू है कि मैं अल्लाह के रास्ते में जंग करूँ और क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ, फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ, अबू हुरैरह (रज़ि.) इन अल्फ़ाज़ को तीन बार दोहराते थे कि मैं अल्लाह का गवाह करके कहता हूँ। (राजेअ़ : 36)

٧٢٢٧- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ وَدِدْتُ أَنِّي أُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللهِ، فَأُقْتَلُ ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ ثُمَّ أُحْيَا)) فَكَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يَقُولُهُنَّ ثَلاَثًا أَشْهَدُ بِاللهِ.

[راجع: ٣٦]

कि आँहज़रत (ﷺ) ने इसी तरह फ़र्माया। आख़िर में ख़त्म शहादत पर किया क्योंकि मक़्सूद वही थी जो आपको बतला दिया गया था कि अल्लाह आपकी जान की हिफ़ाज़त करेगा जैसा कि फ़र्माया, **वल्लाहु यअ़सिमुक मिनन्नासि** लेकिन ये आरज़ू महज़ फ़ज़ीलते जिहाद के ज़ाहिर करने के लिये आपने फ़र्माई।

बाब 2 : नेक काम जैसे ख़ैरात की आरज़ू करना

٢- باب تَمَنِّي الْخَيْرِ

और नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद है, अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना होता तो मैं उसे भी ख़ैरात कर देता।

وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوْ كَانَ لِي أُحُدٌ ذَهَبًا)).

7228. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम बिन मुनब्बा ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना होता तो मैं पसंद करता कि अगर उनके लेने वाले मिल जाएँ तो तीन दिन गुज़रने से पहले ही मेरे पास उसमें से एक दीनार भी न बचे, सिवा उसके जिसे मैं अपने ऊपर क़र्ज़ की अदायगी के लिये रोक लूँ। (राजेअ़ : 2389)

٧٢٢٨- حدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَوْ كَانَ عِنْدِي أُحُدٌ ذَهَبًا لأَحْبَبْتُ أَنْ لاَ يَأْتِيَ ثَلاَثٌ وَعِنْدِي مِنْهُ دِينَارٌ لَيْسَ شَيْءٌ أَرْصُدُهُ فِي دَيْنٍ عَلَيَّ أَجِدُ مَنْ يَقْبَلُهُ)).

[راجع: ٢٣٨٩]

तश्रीह : बस असल दुर्वेशी ये है जो आँहज़रत (ﷺ) ने बयान फ़र्मा दी कि कल के लिये कुछ न रख छोड़े, जो रुपया या माल मताअ़ आए वो ग़ुरबा और मुस्तहिक़्क़ीन को फ़ौरन तक़्सीम कर दे। अगर कोई शख़्स ख़ज़ाना अपने लिये जमा करे और तीन दिन से ज़्यादा रुपया पैसा अपने पास रख छोड़े तो उसको दुर्वेश न कहेंगे बल्कि दुनियादार कहेंगे। एक बुज़ुर्ग के पास रुपया आया, उन्होंने पहले चालीसवाँ हिस्सा उसमें से ज़कात का निकाला फिर बाक़ी 39 हिस्से भी तक़्सीम कर दिये और कहने लगे मैंने ज़कात का ष़वाब हासिल करने के लिये पहले चालीसवाँ हिस्सा निकाला अगर सब एक बारगी ख़ैरात कर देता तो उस फ़र्ज़ के ष़वाब से महरूम रहता। हैदराबाद में बहुत से मशाइख़ और दुर्वेश ऐसे नज़र आते हैं कि दुनियादार उनसे बमरातिब बेहतर हैं। अफ़सोस! उनको अपने तईं दुर्वेश कहते हुए शर्म नहीं आती वो तो साहूकारों की तरह माल व

मताअ़ दौलत इकट्ठा करते हैं उनको महाजन या साहूकार का लक़ब देना चाहिये न कि शाह और फ़क़ीर का। (वह़ीदी) इल्ला माशाअल्लाह।

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद

٣- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ:

कि अगर मुझे पहले से वो मा'लूम होता जो बाद को मा'लूम हुआ

((لَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ)).

7229. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उ़क़ैल ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा (रज़ि.) ने कि आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर) फ़र्माया अगर मुझको अपना ह़ाल पहले से मा'लूम होता जो बाद में मा'लूम हुआ तो मैं अपने साथ क़ुर्बानी का जानवर न लाता और उ़मरह करके दूसरे लोगों की त़रह मैं भी एह़राम खोल डालता। (राजेअ़ : 294)

٧٢٢٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ. مَا سُقْتُ الْهَدْيَ وَلَحَلَلْتُ مَعَ النَّاسِ حِينَ حَلُّوا)). [راجع: ٢٩٤]

7230. हमसे ह़सन बिन उ़मर जुर्मी ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ बस़री ने, उनसे ह़बीब बिन अबी क़ुरैबा ने, उनसे अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने, उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के (ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर) साथ थे, फिर हमने ह़ज्ज के लिये तल्बिया कहा और 4 ज़िलहिज्ज को मक्का पहुँचे, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमे बैतुल्लाह और स़फ़ा और मरवा के त़वाफ़ का हुक्म दिया और ये कि हम उसे उ़मर: बना लें और उसके बाद ह़लाल हो जाएँ (सिवा उनके जिनके साथ क़ुर्बानी का जानवर हो वो ह़लाल नहीं हो सकते) बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) और त़लह़ा (रज़ि.) के सिवा हममें से किसी के पास क़ुर्बानी का जानवर न था और अ़ली (रज़ि.) यमन से आए थे और उनके साथ भी हदी थी और कहा कि मैं भी उसका एह़राम बाँधकर आया हूँ जिसका रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एह़राम बाँधा है, फिर दूसरे लोग कहने लगे कि क्या हम अपनी औ़रतों के साथ सुह़बत करने के बाद मिना जा सकते हैं ? (इस ह़ाल में कि हमारे ज़कर मनी टपकाते हों?) आँह़ज़रत (ﷺ) ने इसपर फ़र्माया कि जो बात मुझे बाद में मा'लूम हुई अगर पहले ही मा'लूम होती तो मैं हदी साथ न लाता और अगर मेरे साथ हदी न होती तो मैं भी ह़लाल हो जाता। बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) से सुराक़ा बिन मालिक ने मुलाक़ात की। उस वक़्त आप बड़े शैत़ान पर रमी कर रहे थे और पूछा या रसूलल्लाह

٧٢٣٠- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، عَنْ حَبِيبٍ، عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَلَبَّيْنَا بِالْحَجِّ وَقَدِمْنَا مَكَّةَ لأَرْبَعٍ خَلَوْنَ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ، فَأَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ أَنْ نَطُوفَ بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، وَأَنْ نَجْعَلَهَا عُمْرَةً وَلْنَحِلَّ إِلاَّ مَنْ كَانَ مَعَهُ هَدْيٌ قَالَ: وَلَمْ يَكُنْ مَعَ أَحَدٍ مِنَّا هَدْيٌ غَيْرَ النَّبِيِّ ﷺ وَطَلْحَةَ وَجَاءَ عَلِيٌّ مِنَ الْيَمَنِ مَعَهُ الْهَدْيُ فَقَالَ: أَهْلَلْتُ بِمَا أَهَلَّ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: نَنْطَلِقُ إِلَى مِنًى وَذَكَرُ أَحَدِنَا يَقْطُرُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنِّي لَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ مَا أَهْدَيْتُ وَلَوْ لاَ أَنَّ مَعِي الْهَدْيَ لَحَلَلْتُ)) قَالَ: وَلَقِيَهُ سُرَاقَةُ وَهُوَ يَرْمِي جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ: أَلَنَا هَذِهِ خَاصَّةً؟ قَالَ: ((لاَ بَلْ لِلأَبَدِ)) قَالَ: وَكَانَتْ عَائِشَةُ قَدِمَتْ مَكَّةَ وَهِيَ

तश्रीह : क़ुर्आन व ह़दीष़ पर चंगुल मारना और उनके ख़िलाफ़ राय व क़यास से बचना बुनियादे ईमान है। सबसे पहले राय क़यास पर अ़मल करने और नस्से स़रीह़ को रद्द करने वाला इब्लीस है। क़ुर्आन मजीद की सरीह़ आयात और रसूले करीम (ﷺ) की ह़दीष़ के मुंकिर की सज़ा यही है कि वो दोज़ख़ में अपना ठिकाना बना रहा है। एक औरत ज़ात ने गोश्त के बारे में बतलाया कि वो सांडे का गोश्त है। इसकी ख़बर को सबने तस्लीम किया। इसी से औरत की ख़बर भी क़ुबूल की जाएगी बशर्ते कि वो ष़िक़ह हो। इसी से ख़बरे वाह़िद का हुज्जत होना ष़ाबित हुआ जो लोग ख़बरे वाह़िद को हुज्जत नहीं मानते उनका मसलक स़ह़ीह़ नहीं है तमाम अह़ादीष़ के नक़ल करने से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) का यही मक़्स़द है। **वल्ह़म्दु अव्वलन व आख़िरन** ये बाब ख़त्म हुआ।

97. किताबुल ए'तिसाम बिल किताब वस्सुन्नः

किताबुल्लाह व सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) को मज़बूती से थामे रहना

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तश्रीह : अल इअतिस़ामु इफ़्तिआलुम मिनल इ़स्मति वल्मुरादु इम्तिष़ालु क़ौलिही तआ़ला वअ़तस़िमू बिह़ब्लिल्लाहि जमीअ़न अल्आय: क़ालल किर्मानी हाज़िहित्तर्जुमतु मुन्तज़िअ़तुम मिन क़ौलिही तआ़ला वअ़तस़िमू बिह़ब्लिल्लाहि जमीअ़न लिअन्नल मुराद बिल्ह़ब्लि अल्किताब वस्सुन्नह अ़ला सबीलिल इस्तिआरति वल जामिउ कौनुहुमा सबबल लिल मक़्सूदि व हुवष़्ष़वाबु वन्नजातु मिनल अ़ज़ाबि कमा अन्नल हब्ल सबबुन लिहुसूलिल मक़्सूदि बिही मिनस्सुक़्या व ग़ैरूहू वल्मुरादु बिल किताबि अल्क़ुर्आन लित्तअ़ब्बुदि बि तिलावतिही व बिस्सुन्नति मा जाअ अनिन्नबिय्यि (ﷺ) मिन अक़्वालिही व अफ़्आलिही व तक़्रीरातिही व मा हुम बिफ़िअलिही वस्सुन्नतु फ़ी अस़्लिल लुग़ति अत्तरीक़तु व फ़ी इस्तिलाहिल उस़ूलिय्यीन वल मुह़द्दिष़ीन मा तक़द्दम क़ाल इब्नु बत्ताल ला इ़स्मत लिअहदिन इल्ला फ़ी किताबिल्लाहि औ फ़ी सुन्नति रसूलिही औ फ़ी इज्माइन उ़लमाइ अ़ला मअ़ना फ़ी अहदिहिमा षुम्म तकल्लम अलस्सुन्नति बिइतिबारि मा जाअ अनिन्नबिय्यि (ﷺ). (फ़त्हुल बारी)

लफ़्ज़ ए'तिस़ाम बाब इफ़्तिआ़ल का मस़दर इ़स्मत से माख़ूज़ है। इससे मुराद अल्लाह के इर्शाद, **वअ़तस़िमू बिह़ब्लिल्लाहि जमीअ़ा** की ता'मील है। किर्मानी ने कहा कि ये तर्जुमा अल्लाह के क़ौल, **वअ़तस़िमू बिह़ब्लिल्लाहि जमीअ़ा** से माख़ूज़ है क्योंकि ह़ब्ल से मुराद अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत है और मक़्सूद उनसे ष़वाबे आख़िरत पाना और अ़ज़ाबे आख़िरत से नजात ह़ासिल करना है जैसा कि रस्सी से खींचकर कुँए से पानी पिया जाता है और रस्सी में लटककर उसे मज़बूती से पकड़कर कुँए से बाहर आया जा सकता है। पस किताब से मुराद क़ुर्आन मजीद है जिसकी मह़ज़ तिलावत करना भी इ़बादत है और सुन्नत से मुराद रसूले करीम (ﷺ) के अक़्वाल और अफ़्आ़ल और आपका अपने सामने किसी काम को होते देखकर ष़ाबित रखना है और लफ़्ज़ सुन्नत लुग़त में त़रीक़े पर बोला जाता है और उस़ूलियों और मुह़द्दिष़ीन की इस्तिलाह़ में रसूले करीम (ﷺ) के अक़्वाल व अफ़्आ़ल और तक़रीर पर बोला जाता है। इब्ने बत्त़ाल ने कहा ग़लती से बचना स़िर्फ़ किताबुल्लाह या फिर सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) ही में है या फिर इज्माए उ़लमा में जो क़ुर्आन व ह़दीष़ के मुताबिक़ हो।

7268. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे मिस्अ़र

٧٢٦٨- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مِسْعَرٍ وَغَيْرِهِ عَنْ قَيْسِ بْنِ

हैं लेकिन किसी से क़ुर्आन की एक सूरत न बन सकी बावजूद ये कि हर ज़माने में क़ुर्आन के हजारों मुख़ालिफ़ और दुश्मन गुज़र चुके। अब कोई ये न कहे कि मर्दुम शुमारी की रू से नसारा की ता'दाद ब निस्बत मुसलमानों के ज़्यादा मा'लूम होती है तो मुसलमानों का शुमार आख़िरत में क्यूँकर ज़्यादा होगा। इसलिये कि नसारा जो ह़ज़रत ईसा (अ.) की उम्मत कहलाने के लायक़ हैं, वही हैं जो आँह़ज़रत (ﷺ) की बिअ़षत तक गुज़र चुके, उनमें भी वो नसारा जो ह़ज़रत ईसा (अ.) की सच्ची शरीअ़त पर क़ायम रहे या'नी तौह़ीदे इलाही के क़ाइल और ह़ज़रत ईसा (अ.) को अल्लाह का बन्दा और पैग़म्बर समझते थे। उन नसारा से क़यामत के दिन मुसलमान ता'दाद में ज़्यादा होंगे। इस ज़माने के नसारा दरह़क़ीक़त ह़ज़रत ईसा (अ.) की उम्मत और सच्चे नसारा नहीं हैं, वो सिर्फ़ ह़ज़रत ईसा (अ.) के नामलेवा हैं उन्होंने अपना दीन बदल डाला और दीन के बड़े रुक्न या'नी तौह़ीद ही को ख़राब कर दिया। अफ़सोस इसी त़रह़ नाम के मुसलमानों ने भी अपना दीन बदल डाला और शिर्क करने लगे, इस क़िस्म के मुसलमान भी दरह़क़ीक़त मुसलमान नहीं हैं न उम्मते मुह़म्मदी में उनका शुमार हो सकता है।

बाब 2 : नबी करीम (ﷺ) की सुन्नतों की पैरवी करना

٢- باب الإِقْتِدَاءِ بِسُنَنِ رَسُولِ اللهِ ﷺ

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا﴾ قَالَ: أَئِمَّةً نَقْتَدِي بِمَنْ قَبْلَنَا وَيَقْتَدِي بِنَا مَنْ بَعْدَنَا، وَقَالَ ابْنُ عَوْنٍ: ثَلاَثٌ أُحِبُّهُنَّ لِنَفْسِي وَلإِخْوَانِي هَذِهِ السُّنَّةُ أَنْ يَتَعَلَّمُوهَا وَيَسْأَلُوا عَنْهَا، وَالْقُرْآنُ أَنْ يَتَفَهَّمُوهُ وَيَسْأَلُوا عَنْهُ وَيَدَعُوا النَّاسَ إِلاَّ مِنْ خَيْرٍ.

और अल्लाह तआला का सूरह फ़ुर्क़ान में फ़र्माना कि, ऐ परवरदिगार! हमको परहेज़गारों का पेशवा बना दे। मुजाहिद ने कहा या'नी इमाम बना दे कि हम लोग अगले लोगों स़ह़ाबा और ताबेईन की पैरवी करें और हमारे बाद जो लोग आएं वो हमारी पैरवी करें और अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न ने कहा तीन बातें ऐसी हैं जिनको मैं ख़ास़ अपने लिये और दूसरे मुसलमान भाइयों के लिये पसंद करता हूँ, एक तो इल्मे ह़दीष़; मुसलमानों को उसे ज़रूर ह़ासिल करना चाहिये। दूसरे क़ुर्आन मजीद, उसे समझकर पढ़ें और लोगो से क़ुर्आन के मत़ालिब की तह़क़ीक़ करते रहें। तीसरे ये कि मुसलमानों का ज़िक्र हमेशा ख़ैर व भलाई के साथ किया करें, किसी की बुराई का ज़िक्र न करें।

٧٢٧٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ وَاصِلٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: جَلَسْتُ إِلَى شَيْبَةَ فِي هَذَا الْمَسْجِدِ قَالَ: جَلَسَ إِلَيَّ عُمَرُ فِي مَجْلِسِكَ هَذَا فَقَالَ: هَمَمْتُ أَنْ لاَ أَدَعَ فِيهَا صَفْرَاءَ وَلاَ بَيْضَاءَ، إِلاَّ قَسَمْتُهَا بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ قُلْتُ : مَا أَنْتَ بِفَاعِلٍ قَالَ : لِمَ قُلْتُ لَمْ يَفْعَلْهُ صَاحِبَاكَ؟ قَالَ : هُمَا الْمَرْآنِ يُقْتَدَى بِهِمَا.

[راجع: ١٥٩٤]

7275. हमसे अ़म्र बिन अ़ब्बास ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन मह्दी ने, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उनसे वास़िल ने, उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि इस मस्जिद (ख़ाना का'बा) में, मैं शैबा बिन उ़ष़्मान ह़ज्बी (जो का'बा के कलीद बरदार थे) के पास बैठा तो उन्हों ने कहा कि जहाँ तुम बैठे हो, वहीं उ़मर(रज़ि.) भी मेरे पास बैठे थे और उन्होंने कहा था कि मेरा इरादा है कि का'बा में किसी त़रह का सोना चाँदी न छोड़ूँ और सब मुसलमानों में तक़्सीम कर दूँ जो नज़्रुल्लाह का'बा में जमा है। मैंने कहा कि आप ऐसा नहीं कर सकते। कहा क्यूँ? मैंने कहा कि आपके दोनों साथियों (रसूलुल्लाह ﷺ और अबूबक्र रज़ि.) ने ऐसा नहीं किया था। इस पर उन्होंने कहा कि वो दोनों बुज़ुर्ग ऐसे ही थे जिनकी इक़्तिदा करनी ही

جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: جَاءَتْ مَلاَئِكَةٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ نَائِمٌ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّهُ نَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ فَقَالُوا : إِنَّ لِصَاحِبِكُمْ هَذَا مَثَلاً، فَاضْرِبُوا لَهُ مَثَلاً، فَقَالَ بَعْضُهُمْ : إِنَّهُ نَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ فَقَالُوا: مَثَلُهُ كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى دَارًا، وَجَعَلَ فِيهَا مَأْدُبَةً وَبَعَثَ دَاعِيًا فَمَنْ أَجَابَ الدَّاعِيَ دَخَلَ الدَّارَ وَأَكَلَ مِنَ الْمَأْدُبَةِ، وَمَنْ لَمْ يُجِبِ الدَّاعِيَ لَمْ يَدْخُلِ الدَّارَ وَلَمْ يَأْكُلْ مِنَ الْمَأْدُبَةِ، فَقَالُوا : أَوِّلُوهَا لَهُ يَفْقَهْهَا فَقَالَ بَعْضُهُمْ : إِنَّهُ نَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ، فَقَالُوا: فَالدَّارُ الْجَنَّةُ، وَالدَّاعِي مُحَمَّدٌ ﷺ، فَمَنْ أَطَاعَ مُحَمَّدًا، فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَى مُحَمَّدًا ﷺ فَقَدْ عَصَى اللهَ، وَمُحَمَّدٌ فَرْقٌ بَيْنَ النَّاسِ. تَابَعَهُ قُتَيْبَةُ عَنْ لَيْثٍ، عَنْ خَالِدٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ، عَنْ جَابِرٍ خَرَجَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि फ़रिश्ते नबी करीम (ﷺ) के पास आए, जिब्रईल (अ़.) व मीकाइल (अ़.) और आप सोये हुए थे। एक ने कहा कि ये सोये हुए हैं, दूसरे ने कहा कि इनकी आँखें सो रही हैं लेकिन इनका दिल बेदार है। उन्होंने कहा कि तुम्हारे इन स़ाहब (आँहज़रत ﷺ) की एक मिष़ाल है पस उनकी मिष़ाल बयान करो तो उनमें से एक ने कहा कि ये सो रहे हैं। दूसरे ने कहा कि आँख सो रही है और दिल बेदार है। उन्होंने कहा कि इनकी मिष़ाल उस शख़्स़ जैसी है जिसने एक घर बनाया और वहाँ खाने की दा'वत की और बुलाने वाले को भेजा, पस जिसने बुलाने वाले की दा'वत क़ुबूल कर ली वो घर में दाख़िल हो गया और दस्तरख़्वान से खाया और जिसने बुलाने वाले की दा'वत क़ुबूल नहीं की वो घर में दाख़िल नहीं हुआ और दस्तरख़्वान से खाना नहीं खाया, फिर उन्होंने कहा कि इसकी इनके लिये तफ़्सीर कर दो ताकि ये समझ जाएँ। कुछ ने कहा कि ये तो सोये हुए हैं लेकिन कुछ ने कहा कि आँखें भले ही सो रही हैं लेकिन दिल बेदार है। फिर उन्होंने कहा कि घर तो जन्नत है और बुलाने वाले मुहम्मद (ﷺ) हैं। पस जो इनकी इत़ाअ़त करेगा वो अल्लाह की इत़ाअ़त करेगा और जो इनकी नाफ़र्मानी करेगा वो अल्लाह की नाफ़र्मानी करेगा और मुहम्मद (ﷺ) अच्छे और बुरे लोगों के बीच फ़र्क़ करने वाले हैं। मुहम्मद बिन उ़बादह के साथ इस ह़दीष़ को क़ुतैबा बिन सईद ने भी लैष़ से रिवायत किया, उन्होंने ख़ालिद बिन यज़ीद मिस्री से, उन्होंने सईद बिन अबी हिलाल से, उन्होंने जाबिर से कि आँहज़रत (ﷺ) हम पर बेदार हुए, फिर यही ह़दीष़ नक़ल की इसे तिर्मिज़ी ने वस़्ल किया।

तश्रीह: इस ह़दीष़ से वाज़ेह़ त़ौर पर मा'लूम हुआ कि क़ुर्आन व ह़दीष़ ही दीन के अस़लुल उसूल हैं और सुन्नते नबवी ही बहरह़ाल मुक़द्दम है। इमाम, उस्ताद, बुज़ुर्ग सबको छोड़ा जा सकता है मगर क़ुर्आन व ह़दीष़ को मुक़द्दम रखना होगा, यही नजात का रास्ता है।

मसलके सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे धड़क
जन्नतुल फ़िरदौस को सीधी गई है ये सड़क

٧٢٨٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ

7282. हमसे अबू नुऐम फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया,

कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे हम्माम ने और उनसे हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने कहा कि ऐ क़ुर्आन व ह़दीष़ पढ़ने वालों! तुम अगर क़ुर्आन व ह़दीष़ पर न जमोगे, इधर उधर दाएँ बाएँ रास्ते लोगे तो गुमराह होओगे बहुत ही बड़े गुमराह।

عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ هَمَّامٍ عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ : يَا مَعْشَرَ الْقُرَّاءِ اسْتَقِيمُوا فَقَدْ سُبِقْتُمْ سَبْقًا بَعِيدًا، فَإِنْ أَخَذْتُمْ يَمِينًا وَشِمَالاً لَقَدْ ضَلَلْتُمْ ضَلاَلاً بَعِيدًا.

तश्रीह़ : या'नी उन लोगों से कहीं अफ़ज़ल होगे जो तुम्हारे बाद आएँगे। ये तर्जुमा उस वक़्त है जब लफ़्ज़ ह़दीष़ **फ़क़द सबक़्तुम बिही** सैग़ा मा'रूफ़ हो अगर ब सैग़ा मज्हूल **सबिक़्तुम** हो तर्जुमा ये होगा कि तुम ह़दीष़ और क़ुर्आन पर जम जाओ क्योंकि दूसरे लोग ह़दीष़ और क़ुर्आन की पैरवी करते हैं। तुमसे बहुत आगे बढ़े गये हैं या'नी दूर निकल गये हैं।

7283. हमसे अबू कुरैब मुहम्मद बिन अ़ला ने बयान किया, कहा हमसे उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद ने, उनसे उनके दादा अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी और जिस दा'वत के साथ मुझे अल्लाह तआ़ला ने भेजा है उसकी मिष़ाल एक ऐसे शख़्स़ जैसी है जो किसी क़ौम के पास आए और कहे कि ऐ क़ौम! मैंने एक लश्कर अपनी आँखों से देखा है और मैं नंग धड़ंग तुमको डराने वाला हूँ, पस बचाव की सूरत करो तो उस क़ौम के एक गिरोह ने बात मान ली और रात के शुरू ही में निकल भागे और ह़िफ़ाज़त की जगह चले गये। इसलिये नजात पा गये लेकिन उनकी दूसरी जमाअ़त ने झुठलाया और अपनी जगह ही पर मौजूद रहे, फिर सुबह सवेरे ही दुश्मन के लश्कर ने उन्हें आ लिया और उन्हें मारा और उनको बर्बाद कर दिया। तो ये मिष़ाल है इसकी जो मेरी इत्ताअ़त करें और जो दा'वत मैं लाया हूँ उसकी पैरवी करें और उसकी मिष़ाल है जो मेरी नाफ़र्मानी करें और जो ह़क़ में लेकर आया हूँ उसे झुठलाएँ।

٧٢٨٣- حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ مَا بَعَثَنِي اللهُ بِهِ، كَمَثَلِ رَجُلٍ أَتَى قَوْمًا فَقَالَ: يَا قَوْمِ إِنِّي رَأَيْتُ الْجَيْشَ بِعَيْنَيَّ وَإِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْعُرْيَانُ، فَالنَّجَاءَ، فَأَطَاعَهُ طَائِفَةٌ مِنْ قَوْمِهِ فَأَدْلَجُوا فَانْطَلَقُوا عَلَى مَهْلِهِمْ فَنَجَوْا، وَكَذَّبَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ فَأَصْبَحُوا مَكَانَهُمْ، فَصَبَّحَهُمُ الْجَيْشُ فَأَهْلَكَهُمْ وَاجْتَاحَهُمْ فَذَلِكَ مَثَلُ مَنْ أَطَاعَنِي، فَاتَّبَعَ مَا جِئْتُ بِهِ، وَمَثَلُ مَنْ عَصَانِي وَكَذَّبَ بِمَا جِئْتُ بِهِ مِنَ الْحَقِّ)).

तश्रीह़ : अ़रब में क़ायदा था जब दुश्मन नज़दीक आन पहुँचता और कोई शख़्स़ उसको देख लेता उसको ये डर होता कि मेरे पहुँचने से पहले ये लश्कर मेरी क़ौम पर पहुँच जाएगा तो नंगा होकर जल्दी जल्दी चीखता चिल्लाता भागता कुछ कहते हैं अपने कपड़े उतारकर झण्डे की त़रह़ एक लकड़ी पर लगाता और चिल्लाता हुआ भागता।

7284, 7285. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे ज़ुह्री ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम

٧٢٨٤، ٧٢٨٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ

فَأَنَا أَكْفِيكُمَاهَا.

[راجع: ٢٩٠٤]

बाब का तर्जुमा की मुताबक़त इस तरह है कि ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) और उनके साथियो ने अ़ली और अ़ब्बास (रज़ि.) के झगड़े और इख़्तिलाफ़ को बुरा समझा। जब तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कहा, इन दोनों का फ़ैसला करके इनको आराम दीजिए।

बाब 6 : जो शख़्स़ बिदअ़ती को ठिकाना दे, उसको अपने पास ठहराए

٦- باب إِثْمِ مَنْ آوَى مُحْدِثًا

رَوَاهُ عَلِيٌّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

उसका बयान इस बाब में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से रिवायत की है।

٧٣٠٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عبد الوَاحِدِ، حَدَّثَنَا عَاصِمٌ قَالَ: قُلْتُ لأَنَسٍ : أَحَرَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَدِينَةَ؟ قَالَ: نَعَمْ مَا بَيْنَ كَذَا إِلَى كَذَا لاَ يُقْطَعُ شَجَرُهَا، مَنْ أَحْدَثَ فِيهَا حَدَثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ. قَالَ عَاصِمٌ: فَأَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ أَنَسٍ أَنَّهُ قَالَ : أَوْ آوَى مُحْدِثًا.

[راجع: ١٨٦٧]

7306. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाह़िद ने बयान किया, कहा हमसे आ़सिम ने बयान किया, कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा क्या रसूलल्लाह (ﷺ) ने मदीना मुनव्वरह को हुर्मत वाला शहर क़रार दिया है? फ़र्माया कि हाँ फ़लाँ जगह (ष़ौर) तक। इस इलाक़े का पेड़ नहीं काटा जाएगा जिसने इस हुदूद में कोई नई बात पैदा की, उस पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और तमाम इंसानों की ला'नत है। आ़सिम ने बयान किया कि फिर मुझे मूसा बिन अनस ने ख़बर दी कि अनस (रज़ि.) ने ये भी बयान किया था कि, या किसी ने दीन में बिदअ़त पैदा करने वाले को पनाह दी। (राजेअ़ : 1867)

तश्रीह : मआ़ज़ल्लाह बिदअ़त से आँह़ज़रत (ﷺ) को कितनी नफ़रत थी कि फ़र्माया जो कोई बिदअती को अपने पास उतारे जगह दे, उस पर भी ला'नत। मुसलमानों! अपने पैग़म्बर स़ाह़ब के फ़र्मान पर ग़ौर करो बिदअ़त से और बिदअ़तियों की सुह़बत से बचते रहो और हर वक़्त सुन्नते नबवी और सुन्नत पर चलने वालों के आ़शिक़ रहो। अगर किसी काम के बिदअ़ते ह़सना या सय्यिआ होने में इख़्तिलाफ़ हो जैसे मज्लिसे मीलाद या क़याम वग़ैरह तो इससे भी बचना ही अफ़ज़ल होगा, इसलिये कि इसका करना कुछ फ़र्ज़ नहीं है और न करने में एह़तियात़ है। मुसलमानों! तुम जो बिदअ़त की त़रफ़ जाते हो ये तुम्हारी नादानी है अगर आख़िरत का ष़वाब चाहते हो तो आँह़ज़रत (ﷺ) की एक अदना सुन्नत पर अ़मल कर लो जैसे फ़ज्र की सुन्नत के बाद ज़रा सा लेट जाना इसमें हज़ार मौलूद से ज़्यादा तुमको ष़वाब मिलेगा।

बाब 7 : दीन के मसाइल में राय पर अ़म्ल करने की मज़म्मत, इसी त़रह़ बेज़रूरत क़यास करने की बुराई

٧- باب مَا يُذْكَرُ مِنْ ذَمِّ الرَّأْيِ وَتَكَلُّفِ الْقِيَاسِ

﴿وَلاَ تَقْفُ﴾ ﴿مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ﴾

[الأسراء: ٣٦].

जैसा कि इर्शादे बारी है सूरह बनी इस्राईल में वला तक़्फ़ु ला तक़ुल मा लैस लक बिही इल्म या'नी न कहो वो बात जिसका तुमको इल्म न हो।

तश्रीह : या तकल्लुफ़ के साथ क़यास करने की जैसे ह़नफ़िया ने इस्तिह़सान निकाला है या'नी क़यासे जली के ख़िलाफ़ एक

बारीक इल्लत को लेना हमारी शरअ में उन बातों को किसी सहाबी ने पसंद नहीं किया बल्कि हमेशा किताब व सुन्नत पर अमल करते रहे जिस मसले में किताब व सुन्नत का हुक्म न मिला इसमें अपनी राय को दख़ल दिया वो भी सीधे साधे तौर से और पेचदार वजहों से हमेशा परहेज़ किया। बाब का तर्जुमा में राय की मज़म्मत से वही राय मुराद है जो नस़ होने के बावजूद राय को तर्जीह दी जाए।

٧٣٠٧- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ تَلِيدٍ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ شُرَيْحٍ وَغَيْرُهُ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ، عَنْ عُرْوَةَ قَالَ: حَجَّ عَلَيْنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ اللهَ لاَ يَنْزِعُ الْعِلْمَ بَعْدَ أَنْ أَعْطَاهُمُوهُ انْتِزَاعًا، وَلَكِنْ يَنْتَزِعُهُ مِنْهُمْ مَعَ قَبْضِ الْعُلَمَاءِ بِعِلْمِهِمْ، فَيَبْقَى نَاسٌ جُهَّالٌ يُسْتَفْتَوْنَ فَيُفْتُونَ بِرَأْيِهِمْ فَيَضِلُّونَ وَيُضِلُّونَ)) فَحَدَّثْتُ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ إِنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو حَجَّ بَعْدُ فَقَالَتْ : يَا ابْنَ أُخْتِي انْطَلِقْ إِلَى عَبْدِ اللهِ فَاسْتَثْبِتْ لِي مِنْهُ الَّذِي حَدَّثْتَنِي عَنْهُ، فَجِئْتُهُ فَسَأَلْتُهُ فَحَدَّثَنِي بِهِ كَنَحْوِ مَا حَدَّثَنِي فَأَتَيْتُ عَائِشَةَ فَأَخْبَرْتُهَا، فَعَجِبَتْ فَقَالَتْ: وَاللهِ لَقَدْ حَفِظَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو.

[راجع: ١٠٠]

7307. हमसे सईद बिन तलीद ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने, कहा मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन शुरैह और उनके अ़लावा इब्ने लहया ने बयान किया, उनसे अबुल अस्वद ने और उनसे उ़र्वा ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने हमें साथ लेकर ह़ज्ज किया तो मैंने उन्हें ये कहते सुना कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला इल्म को, उसके बाद कि तुम्हें दिया है एकदम से नहीं उठा लेगा बल्कि उसे इस त़रह ख़त्म करेगा कि उ़लमा को उनके इल्म के साथ उठा लेगा फिर कुछ जाहिल लोग बाक़ी रह जाएँगे, उनसे फ़त्वा पूछा जाएगा और वो फ़त्वा अपनी राय के मुत़ाबिक़ देंगे। पस वो लोगों को गुमराह करेंगे और वो ख़ुद भी गुमराह होंगे। फिर मैंने ये ह़दीष़ आँह़ज़रत (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा आ़इशा (रज़ि.) से बयान की। उनके बाद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने दोबारा ह़ज्ज किया तो उम्मुल मोमिनीन ने मुझसे कहा कि भांजे अ़ब्दुल्लाह के पास जाओ और मेरे लिये इस ह़दीष़ को सुनकर ख़ूब मज़बूत कर लो जो ह़दीष़ तुमने मुझसे उनके वास्ते से बयान की थी। चुनाँचे मैं उनके पास आया और मैंने उनसे पूछा तो उन्होंने मुझसे वो ह़दीष़ बयान की, इसी त़रह जैसा कि वो पहले मुझसे बयान कर चुके थे, फिर मैं आ़इशा (रज़ि.) के पास आया और उन्हें उसकी ख़बर दी तो उन्हें तअ़ज्जुब हुआ और बोलीं कि वल्लाह! अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ने ख़ूब याद रखा। (राजेअ़ : 100)

कि इतनी मुद्दत के बाद भी ह़दीष़ में एक लफ़्ज़ का भी फ़र्क़ नहीं किया।

٧٣٠٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا أَبُو حَمْزَةَ سَمِعْتُ الأَعْمَشَ قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا وَائِلٍ هَلْ شَهِدْتَ صِفِّينَ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَسَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ حُنَيْفٍ يَقُولُ ح. وحَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو

7308. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अबू ह़म्ज़ा ने ख़बर दी, कहा मैंने आ'मश से सुना, कहा कि मैंने अबू वाइल से पूछा तुम स़िफ़्फ़ीन की लड़ाई में शरीक थे? कहा कि हाँ, फिर मैंने सहल बिन ह़नीफ़ को कहते सुना (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा और हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि सहल

बिन हनीफ़ (रज़ि.) ने (जंगे सि़फ़्फ़ीन के मौक़े पर) कहा कि लोगों! अपने दीन के मुक़ाबले मे अपनी राय को बेह़क़ीक़त समझो। मैंने अपने आपको अबू जन्दल (रज़ि.) के वाक़िये के दिन (सुलह़ हुदैबिया के मौक़े पर) देखा कि अगर मेरे अंदर रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म से हटने की त़ाक़त होती तो मैं उस दिन आपसे इंह़िराफ़ करता (और कुफ़्फ़ारे कुरैश के साथ उन शराइत़ को क़ुबूल न करता) और हमने जब किसी मुहिम पर अपनी तलवारें काँधों पर रखीं (लड़ाई शुरू की) तो उन तलवारों की बदौलत हमको एक आसानी मिल गई जिसे हम पहचानते थे मगर इस मुहिम में (या'नी जंगे सि़फ़्फ़ीन में हम मुश्किल में गिरफ़्तार हैं दोनों त़रफ़ वाले अपने अपने दलाइल पेश करते हैं) अबू आ'मश ने कहा कि अबू वाइल ने बताया कि मैं सि़फ़्फ़ीन में मौजूद था और सि़फ़्फ़ीन की लड़ाई भी क्या बुरी लड़ाई थी जिसमें मुसलमान आपस में कट मरे। (राजेअ : 3181)

عَوَانَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: قَالَ سَهْلُ بْنُ حُنَيْفٍ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّهِمُوا رَأْيَكُمْ عَلَى دِينِكُمْ، لَقَدْ رَأَيْتُنِي يَوْمَ أَبِي جَنْدَلٍ، وَلَوْ أَسْتَطِيعُ أَنْ أَرُدَّ أَمْرَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَرَدَدْتُهُ، وَمَا وَضَعْنَا سُيُوفَنَا عَلَى عَوَاتِقِنَا إِلَى أَمْرٍ يُفْظِعُنَا إِلاَّ أَسْهَلْنَ بِنَا إِلَى أَمْرٍ نَعْرِفُهُ، غَيْرَ هَذَا الأَمْرِ قَالَ: وَقَالَ أَبُو وَائِلٍ شَهِدْتُ صِفِّينَ وَبِئْسَتْ صِفِّينَ.

[راجع: ٣١٨١]

तशरीह़ : कुछ नुस्ख़ों में यहाँ इतनी इबारत ज़्यादा है, **क़ाल अबू अ़ब्दुल्लाहि इत्तहमू रायकुम यक़ूलु मालम यकुन फ़ीहि किताबुन व ला सुन्नतुन व ला यम्बी लहू अंय्युफ़्तिय** इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा **इत्तहमू रायकुम** जो सहल की कलाम में है इसका ये मत़लब है कि हर मसले में जब तक किताब और सुन्नत से कोई दलील न हो तो अपनी राय को स़ह़ीह़ न समझो और राय पर फ़त्वा न दो बल्कि किताबो सुन्नत में ग़ौर करके उसमें से उसका हुक्म निकालो। इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने कहा राय मज़्मूम से वही राय मुराद है कि किताबो सुन्नत को छोड़कर आदमी क़ियास पर अ़मल करे।

बाब 8 : आँह़ज़रत (ﷺ) ने कोई मसला राय या क़ियास से नहीं बतलाया

٨- بَابُ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُسْأَلُ مِمَّا لَمْ يُنْزَلْ عَلَيْهِ الْوَحْيُ

बल्कि जब आपसे कोई ऐसी बात पूछी जाती जिस बाब में वह़्य न उतरी होती तो आप फ़र्माते मैं नहीं जानता या वह़्य उतरने तक ख़ामोश रहते कुछ जवाब न देते क्योंकि अल्लाह पाक ने सूरह निसा में फ़र्माया ताकि अल्लाह जैसा तुझको बतलाये उसके मुवाफ़िक़ तू हुक्म दे। (सूरह निसा : 105)

और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछा गया रूह़ क्या चीज़ है? आप ख़ामोश हो रहे यहाँ तक कि ये आयत उतरी।

فَيَقُولُ : ((لاَ أَدْرِي)) أَوْ لَمْ يُجِبْ حَتَّى يُنْزَلَ عَلَيْهِ الْوَحْيُ وَلَمْ يَقُلْ بِرَأْيٍ وَلاَ بِقِيَاسٍ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿بِمَا أَرَاكَ اللهُ﴾ [النساء : ١٠٥]

وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ : سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الرُّوحِ فَسَكَتَ حَتَّى نَزَلَتِ الآيَةُ.

7309. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा मैं ने मुह़म्मद बिन मुंकदिर से सुना, बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह

٧٣٠٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ الْمُنْكَدِرِ يَقُولُ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: مَرِضْتُ

(रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं बीमार पड़ा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) अयादत के लिये तशरीफ़ लाए। ये दोनों बुज़ुर्ग पैदल चलकर आए थे, फिर आँहज़रत (ﷺ) पहुँचे तो मुझ पर बेहोशी तारी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने वुज़ू किया और वुज़ू का पानी मुझ छिड़का, उससे मुझे अफ़ाक़ा हुआ तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! और कुछ औक़ात सुफ़यान ने ये अल्फ़ाज़ बयान किये कि मैंने कहा। अय रसूलुल्लाह! मैं अपने माल के बारे में किस तरह फ़ैसला करूँ, मैं अपने माल का क्या करूँ? बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने कोई जवाब नहीं दिया। यहाँ तक कि मीराष की आयत नाज़िल हुई। (राजेअ : 194)

فَجَاءَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ يَعُودُنِي وَأَبُو بَكْرٍ وَهُمَا مَاشِيَانِ، فَأَتَانِي وَقَدْ أُغْمِيَ عَلَيَّ، فَتَوَضَّأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ صَبَّ وَضُوءَهُ عَلَيَّ فَأَفَقْتُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ وَرُبَّمَا قَالَ: سُفْيَانُ فَقُلْتُ: أَيْ رَسُولَ اللهِ كَيْفَ أَقْضِي فِي مَالِي كَيْفَ أَصْنَعُ فِي مَالِي؟ قَالَ: فَمَا أَجَابَنِي بِشَيْءٍ حَتَّى نَزَلَتْ آيَةُ الْمِيرَاثِ. [راجع: ١٩٤]

तश्रीह : हदीष से आपका सुकूत निकला, वह्य उतरने तक लेकिन ये फ़र्माना कि मैं नहीं जानता इब्ने हिब्बान की रिवायत में है, एक शख़्स ने आप (ﷺ) से पूछा कौनसी जगह अफ़ज़ल है? आपने फ़र्माया नहीं जानता। दारे क़ुत्नी और हाकिम की रिवायत में है आपने फ़र्माया मैं नहीं जानता हुदूदे गुनाह करने वालों का कफ़्फ़ारा है या नहीं। मिह्लब ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने कुछ मुश्किल मुक़ामात में सुकूत फ़र्माया लेकिन आप ही ने अपनी उम्मत को क़यास की ता'लीम फ़र्माई। एक औरत से फ़र्माया अगर तेरे बाप पर क़र्ज़ होता तो तू अदा करती या नहीं? तो अल्लाह का हक़ ज़रूर अदा करना होगा। ये ऐने क़यास है और इमाम बुख़ारी (रह.) का मतलब ये नहीं है कि बिलकुल क़यास न करना चाहिये बल्कि उनका मतलब ये है कि ऐसा क़यास जो उसूले शरइया के ख़िलाफ़ हो या किसी दलीले शरई पर मबनी न हो सिर्फ़ एक ख़याली बात हो न करना चाहिये और ये मसला तो उलमा का इज्मा है कि नस़ मौजूद होते हुए क़यास जाइज़ नहीं और जो शख़्स हदीष का ख़िलाफ़ करता है हालाँकि वो दूसरी हदीष से उसका मुआरिज़ा न करता हो न उसके नस्ख़ का दा'वा करे न उसकी सनद में क़दह करे तो उसकी अदालत जाती रहेगी वो लोगों का इमाम कहाँ हो सकता है और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने फ़र्माया जो आँहज़रत (ﷺ) से षाबित हो वो तो सर और आँखों पर है और सहाबा के मुख़्तलिफ़ क़ौलों में से हम कोई क़ौल चुन लेंगे। मैं कहता हूँ बस हनफ़िया को अपने इमाम के क़ौल पर तो कम अज़्कम चलना चाहिये।

बाब 9 : रसूलुल्लाह (ﷺ) का अपनी उम्मत के मर्दों और औरतों को वही बातें सिखाना जो अल्लाह ने आपको सिखाई थीं बाक़ी राय और तम्षील आपने नहीं सिखाई

٩- باب تَعْلِيمِ النَّبِيِّ ﷺ أُمَّتَهُ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ مِمَّا عَلَّمَهُ اللهُ لَيْسَ بِرَأْيٍ وَلاَ تَمْثِيلٍ

तम्षील या'नी एक चीज़ का हुक्म दूसरी चीज़ के मिष्ल क़रार देना बवजह इल्लत जामेआ के जिसको क़यास कहते हैं।

7310. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अस्बहानी ने, उनसे अबू सालेह ज़क्वान ने और उनसे अबू सईद (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और कहा या रसूलल्लाह! आपकी तमाम अहादीष मर्द ले गये, हमारे लिये भी आप कोई दिन अपनी तरफ़ से मख़्सूस कर दें जिसमें हम आपके पास आएँ और आप हमें वो ता'लीमात दें जो

٧٣١٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَصْبَهَانِيِّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ ذَكْوَانَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ: فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللهِ ذَهَبَ الرِّجَالُ بِحَدِيثِكَ فَاجْعَلْ لَنَا مِنْ نَفْسِكَ يَوْمًا نَأْتِيكَ فِيهِ

अल्लाह ने आपको सिखाई है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर फ़लाँ फ़लाँ दिन फ़लाँ फ़लाँ जगह जमा हो जाओ। चुनाँचे औरतें जमा हुईं और आँहज़रत (ﷺ) उनके पास आये और उन्हें उसकी ता'लीम दी जो अल्लाह ने आपको सिखाया था। फिर आपने फ़र्माया, तुममें से जो औरत भी अपनी ज़िंदगी में अपने तीन बच्चे आगे भेज देगी (या'नी उनकी वफ़ात हो जाएगी) तो वो उसके लिये दोज़ख़ से रुकावट बन जाएँगे। इस पर उनमें से एक ख़ातून ने कहा, या रसूलल्लाह! दो? उन्होंने इस कलिमे को दो मर्तबा दोहराया, फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ दो, दो, दो भी यही दर्जा रखते हैं। (राजेअ : 101)

تُعَلِّمُنَا مِمَّا عَلَّمَكَ اللهُ فَقَالَ : اجْتَمِعْنَ فِي يَوْمِ كَذَا وَكَذَا فِي مَكَانِ كَذَا وَكَذَا فَاجْتَمَعْنَ فَأَتَاهُنَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَعَلَّمَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَهُ اللهُ، ثُمَّ قَالَ: ((مَا مِنْكُنَّ امْرَأَةٌ تُقَدِّمُ بَيْنَ يَدَيْهَا مِنْ وَلَدِهَا ثَلاَثَةً، إِلاَّ كَانَ لَهَا حِجَابًا مِنَ النَّارِ)) فَقَالَتِ امْرَأَةٌ مِنْهُنَّ يَا رَسُولَ اللهِ وَاثْنَيْنِ قَالَ : فَأَعَادَتْهَا مَرَّتَيْنِ ثُمَّ قَالَ: ((وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ)).

[راجع: ١٠١]

बाब का मतलब यहीं से निकलता है। किरमानी ने कहा इस क़ौल से कि वो उसके लिये दोज़ख़ से आड़ होंगे क्योंकि ये अम्र बग़ैर अल्लाह के बतलाए क़यास और राय से मा'लूम नहीं हो सकता।

बाब 10 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद, मेरी उम्मत की एक जमाअत हक़ पर ग़ालिब रहेगी

और जंग करती रहेगी और इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि उस गिरोह से दीन के आलिमों का गिरोह मुराद है।

١٠- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي ظَاهِرِينَ عَلَى الْحَقِّ، يُقَاتِلُونَ وَهُمْ أَهْلُ الْعِلْمِ)).

अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी उस्ताद इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि इससे जमाअ़त अहले ह़दीष़ मुराद है।

7311. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने, उनसे मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा ग़ालिब रहेगा (उसमें इल्मी व दीनी ग़ल्बा भी दाख़िल है) यहाँ तक कि क़यामत आ जाएगी और वो ग़ालिब ही रहेंगे। (राजेअ : 3640)

٧٣١١- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي ظَاهِرِينَ حَتَّى يَأْتِيَهُمْ أَمْرُ اللهِ وَهُمْ ظَاهِرُونَ)). [راجع: ٣٦٤٠]

तश्रीह : ये दूसरी ह़दीष़ के ख़िलाफ़ नहीं है जिसमें ये है कि क़यामत बदतरीन ख़ल्कुल्लाह पर क़ायम होगी क्योंकि ये बदतरीन लोग एक मुक़ाम में होंगे और वो गिरोह दूसरे मुक़ाम में होगा या इस ह़दीष़ में अम्रुल्लाह से ये मुराद है यहाँ तक कि क़यामत क़रीब आन पहुँचे तो क़यामत से कुछ पहले ये फ़िर्क़ा वाले मर जाएँगे और निरे बुरे लोग रह जाएँगे दूसरी ह़दीष़ में है कि क़यामत के क़रीब एक हवा चलेगी जिससे हर मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ हो जाएगी।

7312. हमसेइस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें हुमैद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) से सुना, वो ख़ुत्बा दे

٧٣١٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي حُمَيْدٌ قَالَ: سَمِعْتُ مُعَاوِيَةَ بْنَ

रहे थे, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह जिसके साथ ख़ैर का इरादा करता है उसे दीन की समझ फ़र्मा देता है और मैं तो सिर्फ़ तक़्सीम करने वाला हूँ और देता अल्लाह है और इस उम्मत का मामला हमेशा दुरुस्त रहेगा, यहाँ तक कि क़यामत क़ायम हो जाए या (आपने यूँ फ़र्माया कि) यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचे। (राजेअ : 71)

أَبِي سُفْيَانَ يَخْطُبُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ، وَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَيُعْطِي اللهُ وَلَنْ يَزَالَ أَمْرُ هَذِهِ الأُمَّةِ مُسْتَقِيمًا حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ، أَوْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللهِ)). [راجع: ٧١]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि अल्लाह का दीन इस्लाम क़यामत तक क़ायम रहेगा मुआनिदीने इस्लाम लाख कोशिश करें मगर,

फूँकों से ये चराग़ बुझाया न जाएगा

बाब 11 : अल्लाह तआला का सूरह अन्आम में यूँ फ़र्माना कि या वो तुम्हारे कई फ़िर्क़े कर दे

١١- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا﴾ [الأنعام : ٦٥]

7313. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) पर ये आयत नाज़िल हुई कि, कहो कि वो इस पर क़ादिर है कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से अज़ाब भेजे। तो आँहज़रत (ﷺ) ने कहा कि मैं तेरे बाअज़्मत व बुज़ुर्ग मुँह की पनाह मांगता हूँ, या तुम्हारे पैरों के नीचे से (अज़ाब भेजे) तो उस पर फिर आँहज़रत (ﷺ) ने कहा कि मैं तेरे मुबारक मुँह की पनाह मांगता हूँ, फिर जब ये आयत नाज़िल हुई कि, या तुम्हें फ़िर्क़ों में बांट दे और तुममें से कुछ को कुछ का डर चखाए, तो आपने फ़र्माया कि ये दोनों आसान व सहल हैं। (राजेअ : 4628)

٧٣١٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: لَمَّا نَزَلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ ﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ﴾ [الانعام : ٦٥] قال أَعُوذُ بِوَجْهِكَ ﴿أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ﴾ [الانعام : ٦٥] قَالَ أَعُوذُ بِوَجْهِكَ فَلَمَّا نَزَلَتْ: ﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ﴾ قَالَ هَاتَانِ أَهْوَنُ أَوْ أَيْسَرُ. [راجع: ٤٦٢٨]

ऊपर से पत्थरों या बारिश का अज़ाब मुराद है। नीचे से ज़लज़ला और ज़मीन में धंस जाना मुराद है।

बाब 12 : एक अम्रे मा'लूम को दूसरे अम्रे वाज़ेह से तश्बीह देना जिसका हुक्म अल्लाह ने बयान कर दिया है ताकि पूछने वाला समझ जाए

١٢- باب مَنْ شَبَّهَ أَصْلاً مَعْلُومًا بِأَصْلٍ مُبَيَّنٍ، قَدْ بَيَّنَ اللهُ حُكْمَهُمَا لِيُفْهِمَ السَّائِلَ.

तश्रीह : इसी को क़यास कहते हैं। बाब की दोनों अहादीष़ से क़यास का जवाज़ निकलता है लेकिन इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने सहाबा में से और आमिर शअबी और इब्ने सीरीन ने फ़ुक़हा में से क़यास का इंकार किया है। बाक़ी तमाम फ़ुक़हा ने क़यास के जवाज़ पर इत्तिफ़ाक़ किया है। जब इसकी ज़रूरत हो और जुम्हूरे सहाबा और ताबेईन से क़यास मन्क़ूल

है और ऊपर जो इमाम बुख़ारी (रह.) ने राय और क़यास की मज़म्मत बयान की है, इससे मुराद वही क़यास और राय है जो फ़ासिद हो लेकिन क़यास सहीह शराइत के साथ वो भी जब हदीष और क़ुर्आन में वो मसला सराहत के साथ न मिले। अक्षर उलमा ने जाइज़ रखा है और बग़ैर उसके काम चलना दुश्वार है।

7314. हमसे अस्बग़ बिन फ़रज ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक अअराबी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत मे हाज़िर हुआ और कहा कि मेरी बीवी के यहाँ काला लड़का पैदा हुआ है जिसको मैं अपना नहीं समझता। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि तुम्हारे पास ऊँट हैं? उन्होंने कहा कि है। पूछा कि उनके रंग कैसे हैं? कहा कि सुर्ख़ हैं। पूछा कि उनमें कोई ख़ाकी भी है? उन्होंने कहा कि हाँ उनमें ख़ाकी भी है। उस पर आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि फिर किस तरह तुम समझते हो कि उस रंग का पैदा हुआ? उन्होंने कहा कि या रसूलल्लाह! किसी रग ने ये रंग खींच लिया होगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुम्किन है उस बच्चे का रंग भी किसी रग ने खींच लिया हो? और आँहज़रत (ﷺ) ने उनको बच्चे के इंकार करने की इजाज़त नहीं दी। (राजेअ : 5305)

٧٣١٤- حَدَّثَنَا اصْبَغُ بْنُ الْفَرَجِ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ أَعْرَابِيًّا أَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: إِنَّ امْرَأَتِي وَلَدَتْ غُلاَمًا أَسْوَدَ وَإِنِّي أَنْكَرْتُهُ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ))؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَمَا أَلْوَانُهَا؟)) قَالَ: حُمْرٌ قَالَ: ((هَلْ فِيهَا مِنْ أَوْرَقَ؟)) قَالَ: إِنَّ فِيهَا لَوُرْقًا قَالَ ((فَأَنَّى تُرَى ذَلِكَ جَاءَهَا؟)) قَالَ يَا رَسُولَ اللهِ عِرْقٌ نَزَعَهَا قَالَ : ((وَلَعَلَّ هَذَا عِرْقٌ نَزَعَهُ، وَلَمْ يُرَخِّصْ لَهُ فِي الانْتِفَاءِ مِنْهُ)).
[راجع: ٥٣٠٥]

7315. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आईं और अर्ज़ किया कि मेरी वालिदा ने हज्ज करने की नज़्र मानी थी और वो (अदायगी से पहले ही) वफ़ात पा गईं। क्या मैं उनकी तरफ़ से हज्ज कर लूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ उनकी तरफ़ से हज्ज कर लो। तुम्हारा क्या ख़याल है, अगर तुम्हारी वालिदा पर क़र्ज़ होता तो तुम उसे पूरा करतीं? उन्होंने कहा कि हाँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उस क़र्ज़ को भी पूरा कर जो अल्लाह तआला का है क्योंकि इस क़र्ज़ का पूरा करना ज़्यादा ज़रूरी है। (राजेअ : 1852)

٧٣١٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ امْرَأَةً جَاءَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: إِنَّ أُمِّي نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ فَمَاتَتْ قَبْلَ أَنْ تَحُجَّ أَفَأَحُجُّ عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ حُجِّي عَنْهَا، أَرَأَيْتِ لَوْ كَانَ عَلَى أُمِّكِ دَيْنٌ أَكُنْتِ قَاضِيَتَهُ؟)) قَالَتْ: نَعَمْ قَالَ: ((فَاقْضُوا الَّذِي لَهُ فَإِنَّ اللهَ أَحَقُّ بِالْوَفَاءِ)). [راجع: ١٨٥٢]

बाब 13 : क़ाज़ियों को कोशिश करके अल्लाह की किताब के मुवाफ़िक़ हुक्म देना चाहिये क्योंकि अल्लाह पाक ने फ़र्माया,

١٣- باب مَا جَاءَ فِي اجْتِهَادِ الْقُضَاةِ بِمَا أَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى لِقَوْلِهِ:

किया। बयान किया कि मैंने ये नबी करीम (ﷺ) से सुना और मुझे मा'लूम हुआ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अहले यमन के लिये यलमलम (मीक़ात है) और इराक़ का ज़िक्र हुआ तो उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में इराक़ नहीं था।

الْمَدِينَةِ: قَالَ سَمِعْتُ هَذَا مِنَ النَّبِيِّ ﷺ وَبَلَغَنِي أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ: قَالَ: ((وَلأَهْلِ الْيَمَنِ ((يَلَمْلَمُ)) وَذُكِرَ الْعِرَاقُ فَقَالَ : لَمْ يَكُنْ عِرَاقٌ يَوْمَئِذٍ.

ये मीक़ात एहरामे हज्ज की मीक़ात हैं इस लिहाज़ से क़ाबिले ज़िक्र हैं यही बाब से मुताबक़त है।

7345. हमसे अब्दुर्रहमान बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे मूसा बिन इस्माईल बिन उक़्बा ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे उनके वालिद अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) को जबकि आप मुक़ामे ज़ुल हुलैफ़ह में पड़ाव किये हुए थे, ख़्वाब दिखाया गया और कहा गया कि आप एक मुबारक वादी में हैं। (राजेअ : 483)

٧٣٤٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ أُرِيَ وَهُوَ فِي مُعَرَّسِهِ بِذِي الْحُلَيْفَةِ فَقِيلَ لَهُ إِنَّكَ بِبَطْحَاءَ مُبَارَكَةٍ. [راجع: ٤٨٣]

तश्रीह : ज़ुलहुलैफ़ह में एक मुबारक वादी है जिसका ज़िक्र किया गया। हाफ़िज़ ने कहा इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस बाब में जो अहादीष़ बयान की उससे मदीना की फ़ज़ीलत ज़ाहिर की और इसकी फ़ज़ीलत में शक क्या है? वहाँ वह्य उतरती रही, वहीं आँहज़रत (ﷺ) की क़ब्र है और मिम्बर है जो बहिश्त की एक क्यारी है। कलाम इसमें हैं कि क्या मदीना के आलिम दूसरे मुल्कों के आलिमों पर मुक़द्दम हैं, तो अगर ये मक़सूद हो कि आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में या उस ज़माने में जब तक सहाबा किराम (रज़ि.) मदीना में जमा थे तो ये मुसल्लम है। अगर ये मुराद हो कि हर ज़माने में तो इसमें नज़ाअ है और कोई वजह नहीं कि मदीने के आलिम हर ज़माने में दूसरे मुल्कों के आलिमों पर मुक़द्दम हों। इसलिये कि अइम्म-ए-मुज्तहिदीन के ज़माने के बाद फिर मदीना में एक भी आलिम ऐसा नहीं हुआ जो दूसरे मुल्कों के किसी आलिम से भी ज़्यादा इल्म रखता हो या दूसरे मुल्कों के सब आलिमों से बढ़कर हो बल्कि मदीना में ऐसे-ऐसे बिदअती और बदनिय्यत लोग जाकर रहे जिसके बिदअती और बदनिय्यत होने में कोई शक नहीं हो सकता।

बाब 17 : अल्लाह तआला का फ़र्मान सूरह आले इमरान में कि ऐ पैग़म्बर! आपको उस काम में कोई दख़ल नहीं आख़िर आयत तक

١٧- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾

7346. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सालिम ने और उन्हे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़ज्र की नमाज़ में ये दुआ रुकूअ से सर उठाने के बाद पढ़ते थे कि, ऐ अल्लाह! फ़लाँ और फ़लाँ को अपनी रहमत से दूर कर दे। उस पर अल्लाह अज़्ज़ व जल ने ये आयत नाज़िल की कि आपको इस मामले में कोई इख़्तियार नहीं है। या

٧٣٤٦- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ فِي الأَخِيرَةِ)) ثُمَّ قَالَ : ((اللَّهُمَّ الْعَنْ فُلاَنًا

وَفُلَانًا)) فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ﴾ [آل عمران: ١٢٨]. [راجع: ٤٦٩]

अल्लाह! उनकी तौबा क़ुबूल कर ले या उन्हें अ़ज़ाब दे कि बिला शुब्हा वो हद से तजावुज़ करने वाले हैं। (राजेअ़ : 469)

١٨- باب قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا﴾

[الكهف: ٥٤] وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَلَا تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ﴾ [العنكبوت: ٤٦].

बाब 18 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह कहफ़ में, और इंसान सबसे ज़्यादा झगड़ालू है

और इर्शादे ख़ुदावन्दी सूरह अ़न्कबूत में, और तुम अहले किताब से बह़ष़ न करो लेकिन उस त़रीक़े से जो अच्छा हो या'नी नर्मी के साथ अल्लाह के पैग़म्बरों और उसकी किताबों का अदब मल्हूज़ रखकर उनसे बह़ष़ करो। (अ़न्कबूत : 46)

٧٣٤٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ ح. حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ أَخْبَرَنَا عَتَّابُ بْنُ بَشِيرٍ عَنْ إِسْحَاقَ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ طَرَقَهُ وَفَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامُ بِنْتَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ لَهُمْ أَلَا تُصَلُّونَ فَقَالَ عَلِيٌّ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّمَا أَنْفُسُنَا بِيَدِ اللهِ فَإِذَا شَاءَ أَنْ يَبْعَثَنَا بَعَثَنَا فَانْصَرَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ قَالَ لَهُ ذَلِكَ: وَلَمْ يَرْجِعْ إِلَيْهِ شَيْئًا، ثُمَّ سَمِعَهُ وَهُوَ مُدْبِرٌ يَضْرِبُ فَخِذَهُ وَهُوَ يَقُولُ: ﴿وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا﴾. مَا أَتَاكَ لَيْلًا فَهُوَ طَارِقٌ وَيُقَالُ الطَّارِقُ: النَّجْمُ وَالثَّاقِبُ الْمُضِيءُ يُقَالُ: أَثْقِبْ نَارَكَ لِلْمُوقِدِ. [راجع: ١١٢٧]

7347. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि और मुझसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अ़त्ताब बिन बशीर ने ख़बर दी, उन्हें इस्हाक़ इब्ने अबी राशिद ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हे ज़ैनुल आ़बेदीन अ़ली बिन हुसैन (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद हुसैन बिन अ़ली (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके और फ़ात़िमा बिन्ते रसूलुल्लाह (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) के घर एक रात आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए और फ़र्माया क्या तुम लोग तहज्जुद की नमाज़ नहीं पढ़ते। अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हमारी जानें अल्लाह के हाथ में हैं पस जब वो हमें उठाना चाहे तो हमको उठा देगा। ज्यों ही मैंने आँहज़रत (ﷺ) से ये कहा तो आप पीठ मोड़कर वापस जाने लगे और कोई जवाब नहीं दिया लेकिन वापस जाते हुए आप अपनी रान पर हाथ मार रहे थे और कह रहे थे कि, और इंसान बड़ा ही झगड़ालू है, अगर कोई तुम्हारे पास रात में आए तो त़ारिक़ कहलाएगा और क़ुर्आन में जो वत्त़ारिक़ का लफ़्ज़ आया है उससे मुराद सितारा है और ष़ाक़िब बमा'नी चमकता हुआ। अ़रब लोग आग जलाने वाले से कहते हैं। अष़्क़ुब नारक या'नी आग रोशन कर। इससे लफ़्ज़े ष़ाक़िब है। (राजेअ़ : 1127)

तश्रीह : ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने ये जवाब बत़रीक़ इंकार के नहीं दिया मगर उनसे नींद की ह़ालत में ये कलाम निकल गया, इसमे शक नहीं कि अगर वो आँह़ज़रत (ﷺ) के फ़र्माने पर उठ खड़े होते और नमाज़ पढ़ते तो और ज़्यादा अफ़ज़ल होता। अगरचे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने जो कहा वो भी दुरुस्त था मगर किसी शख़्स का जगाना और बेदार करना भी अल्लाह ही का जगाना और बेदार करना है। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) का उस मौक़े पर ये कहना कि जब अल्लाह हमको जगाएगा तो उठेंगे मह़ज़ मुजादिला और मुकाबिरा था, इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) ये आयत पढ़ते हुए तशरीफ़ ले गये। और तहज्जुद की नमाज़ कुछ फ़र्ज़ न थी कि आँह़ज़रत (ﷺ) उनको मजबूर करते। दूसरे मुम्किन है कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) उसके बाद उठे हों और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी हो। (वह़ीदी)

٧٣٤٨ - حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ بَيْنَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: انْطَلِقُوا إِلَى يَهُودَ فَخَرَجْنَا مَعَهُ حَتَّى جِئْنَا بَيْتَ الْمِدْرَاسِ فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ فَنَادَاهُمْ فَقَالَ: ((يَا مَعْشَرَ يَهُودَ أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا)) فَقَالُوا: بَلَّغْتَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ قَالَ: فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ذَلِكَ أُرِيدُ أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا)) فَقَالُوا: قَدْ بَلَّغْتَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ذَلِكَ أُرِيدُ)) ثُمَّ قَالَهَا الثَّالِثَةَ فَقَالَ: ((اعْلَمُوا إِنَّمَا الأَرْضُ للهِ وَرَسُولِهِ، وَإِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُجْلِيَكُمْ مِنْ هَذِهِ الأَرْضِ، فَمَنْ وَجَدَ مِنْكُمْ بِمَالِهِ شَيْئًا فَلْيَبِعْهُ، وَإِلاَّ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا الأَرْضُ للهِ وَرَسُولِهِ)).

[راجع: ٣١٦٧]

7348. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे लैष़ बिन सअ़्द ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने, उनसे उनके वालिद अबू सईद कैसान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम मस्जिदे नबवी में थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया यहूदियों के पास चलो। चुनाँचे हम आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ रवाना हुए। जब हम उनके मदरसे तक पहुँचे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने खड़े होकर उन्हें आवाज़ दी और फ़र्माया ऐ यहूदियों! इस्लाम लाओ तो तुम सलामत रहोगे। इस पर यहूदियों ने कहा कि अबुल क़ासिम! आप (ﷺ) ने अल्लाह का हुक्म पहुँचा दिया। रावी ने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने दोबारा उनसे फ़र्माया कि यही मेरा मक़्सद है, इस्लाम लाओ तो तुम सलामत रहोगे। उन्होंने कहा कि अबुल क़ासिम! आपने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया। फिर आपने यही बात तीसरी बार कही और फ़र्माया, जान लो कि सारी ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है और मैं चाहता हूँ कि तुम्हें इस जगह से बाहर कर दूँ। पस तुममें से जो कोई अपनी जायदाद के बदले में कोई क़ीमत पाता हो तो उसे बेच ले वरना जान लो कि ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है। (तुमको ये शहर छोड़ना होगा)। (राजेअ : 3167)

١٩ - باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا﴾ [البقرة ١٤٣] وَمَا أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِلُزُومِ الْجَمَاعَةِ وَهُمْ أَهْلُ الْعِلْمِ.

बाब 19 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद, और मैंने इसी त़रह तुम्हें उम्मते वस्त़ बना दिया (या'नी मोतदिल और सीधी राह पर चलने वाली) और उसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जमाअ़त को लाज़िम पकड़ने का हुक्म दिया और आपकी मुराद जमाअ़त से अहले इल्म की जमाअ़त थी।

٧٣٤٩ - حدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ،

7349. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُجَاءُ بِنُوحٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيُقَالُ لَهُ: هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ. يَا رَبِّ فَتُسْأَلُ أُمَّتُهُ هَلْ بَلَّغَكُمْ فَيَقُولُونَ مَا جَاءَنَا مِنْ نَذِيرٍ فَيَقُولُ مَنْ شُهُودُكَ فَيَقُولُ مُحَمَّدٌ وَأُمَّتُهُ فَيُجَاءُ بِكُمْ فَتَشْهَدُونَ)) ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا﴾ - قَالَ عَدْلاً - ﴿لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا﴾ [البقرة : ١٤٣]. وَعَنْ جَعْفَرِ بْنِ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا.
[راجع: ٣٣٣٩]

अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे अबू स़ालेह़ (ज़क्वान) ने बयान किया, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत के दिन नूह़ (अ.) को लाया जाएगा और उनसे पूछा जाएगा, क्या तुमने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो अ़र्ज़ करेंगे कि हाँ ऐ रब! फिर उनकी उम्मत से पूछा जाएगा कि क्या इन्होंने तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो कहेंगे कि हमारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। अल्लाह तआ़ला ह़ज़रत नूह़ (अ.) से पूछेगा, तुम्हारे गवाह कौन हैं? नूह़ (अ.) अ़र्ज़ करेंगे कि मुह़म्मद (ﷺ) और उनकी उम्मत। फिर तुम्हें लाया जाएगा और तुम लोग उनके ह़क़ में शहादत (गवाही) दोगे, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये आयत पढ़ी, और इसी त़रह़ मैंने तुम्हें दरम्यानी उम्मत बनाया, कहा कि वस्त़ बमा'नी अ़दल (मियानारवी) है, ताकि तुम लोगों के लिए गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह बने। इस्ह़ाक़ बिन मंसूर से जा'फ़र बिन औ़न ने रिवायत किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने यही ह़दीष़ बयान की। (राजेअ़ : 3339)

तश्रीह : ह़ालाँकि मुसलमानों ने ह़ज़रत नूह़ (अ.) को दुनिया में नहीं देखा न उनकी उम्मत वालों को मगर यक़ीन के साथ गवाही देंगे क्योंकि जो बात अल्लाह और रसूल के फ़र्माने से और तवातुर के साथ सुनी जाए वो मिष़्ल देखी हुई बात की यक़ीनी होती है और दुनिया में भी ऐसी गवाही ली जाती है। मष़लन एक शख़्स़ किसी का बेटा हो और सब लोगों में मशहूर हो तो ये गवाही दे सकते हैं कि वो फ़लाँ शख़्स़ का बेटा है ह़ालाँकि उसको पैदा होते वक़्त आँख से किसी ने नहीं देखा। इस आयत से कुछ ने ये निकाला है कि इज्माअ़ हुज्जत है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को उम्मते आदिला फ़र्माया और ये मुम्किन नहीं कि सारी उम्मत का इज्माअ़ नाह़क़ और बातिल पर हो जाए।

बाब 20 : जबकि कोई आ़मिल या ह़ाकिम इज्तिहाद करे और लाइल्मी में रसूल (ﷺ) के हुक्म के ख़िलाफ़ कर जाए तो उसका फ़ैसला नाफ़िज़ नहीं होगा क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जिसने कोई ऐसा काम किया जिसके बारे में हमारा कोई फ़ैसला नहीं था तो वो रद्द है

٢٠- باب إِذَا اجْتَهَدَ الْعَامِلُ - أَوِ الْحَاكِمُ- فَأَخْطَأَ خِلاَفَ الرَّسُولِ مِنْ غَيْرِ عِلْمٍ، فَحُكْمُهُ مَرْدُودٌ لِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ عَمِلَ عَمَلاً لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا فَهُوَ رَدٌّ)).

उन कुछ लोगों के क़ौल की तर्दीद मक़्सूद है जो क़ाज़ी के हर फ़ैसले को बहरहाल नाफ़िज़ व ह़क़ क़रार देते हैं।

7350, 7351. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उनसे उनके भाई अबूबक्र ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मजीद बिन सुहैल बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने बयान किया, उन्होंने सईद बिन मुसय्यब से सुना, वो अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) और अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी अ़दी अंसारी के एक साहब सुवाद बिन अज़िया को ख़ैबर का आ़मिल बनाकर भेजा तो वो उम्दह क़िस्म की खजूरें वसूल करके लाए। आँहुज़ूर (ﷺ) ने पूछा क्या ख़ैबर की तमाम खजूरें ऐसी ही हैं? उन्होंने कहा कि नहीं या रसूलल्लाह! अल्लाह की क़सम! हम ऐसी एक साअ खजूर दो साअ (ख़राब) खजूर के बदले ख़रीद लेते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐसा न किया करो बल्कि (जिंस को जिंस के बदले) बराबर बराबर में ख़रीदो, या यूँ करो कि रद्दी खजूर नक़द बेच डालो फिर ये खजूर उसके बदले ख़रीद लो। इसी तरह हर चीज़ को जो तौलकर बिकती है उसका हुक्म उन ही चीज़ों का है जो नाप कर बिकती हैं। (राजेअ: 2201,2202)

٧٣٥٠، ٧٣٥١- حدَّثنا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ أَخِيهِ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ، عَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ بْنِ سُهَيْلِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّهُ سَمِعَ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ يُحَدِّثُ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ وَأَبَا هُرَيْرَةَ حَدَّثَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بَعَثَ أَخَا بَنِي عَدِيٍّ الأَنْصَارِيَّ وَاسْتَعْمَلَهُ عَلَى خَيْبَرَ فَقَدِمَ بِتَمْرٍ جَنِيبٍ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((أَكُلُّ تَمْرِ خَيْبَرَ هَكَذَا)) قَالَ: لاَ وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا لَنَشْتَرِي الصَّاعَ بِالصَّاعَيْنِ مِنَ الْجَمْعِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لاَ تَفْعَلُوا، وَلَكِنْ مِثْلاً بِمِثْلٍ - أَوْ بِيعُوا هَذَا - وَاشْتَرُوا بِثَمَنِهِ مِنْ هَذَا وَكَذَلِكَ الْمِيزَانُ)). [راجع: ٢٢٠١، ٢٢٠٢]

बाब 21 : हाकिम का षवाब, जबकि वो इज्तिहाद करे और सेहत पर हो या ग़लती कर जाए

٢١- باب أَجْرِ الْحَاكِمِ إِذَا اجْتَهَدَ فَأَصَابَ أَوْ أَخْطَأَ

षवाब बहरहाल मिलेगा।

7352. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद मुक़री मक्की ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हैवह बिन शुरैह ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अल्हाद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन हारिष ने, उनसे बुस्र बिन सईद ने, उनसे अ़म्र बिन आ़स के मौला अबू क़ैस ने, उनसे अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) ने, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि जब हाकिम कोई फ़ैसला अपने इज्तिहाद से करे और फ़ैसला सहीह हो तो उसे दोहरा षवाब मिलता है और जब किसी फ़ैसले में इज्तिहाद करे और ग़लती कर जाए तो उसे इकहरा षवाब मिलता है (इज्तिहाद का) बयान किया कि फिर मैंने ये हदीष अबूबक्र बिन अ़म्र बिन हज़म से बयान की तो उन्होंने बयान किया कि मुझसे अबू

٧٣٥٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِىءُ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ، حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي قَيْسٍ مَوْلَى عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِذَا حَكَمَ الْحَاكِمُ فَاجْتَهَدَ ثُمَّ أَصَابَ فَلَهُ أَجْرَانِ، وَإِذَا حَكَمَ فَاجْتَهَدَ ثُمَّ أَخْطَأَ فَلَهُ أَجْرٌ)) قَالَ: فَحَدَّثْتُ

بِهَذَا الْحَدِيثِ أَبَا بَكْرِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ فَقَالَ: هَكَذَا حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ. وَقَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ الْمُطَّلِبِ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ.

सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने इसी त़रह़ बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया। और अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुत्तलिब ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र ने बयान किया, उनसे अबू सलमा (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने इसी त़रह़ बयान किया।

तश्रीह़ : या'नी मुर्सलन रिवायत की, उसके वालिद ने मौसूलन रिवायत की थी। इस ह़दीष़ से ये निकला कि हर मसले में ह़क़ एक ही अम्र होता है लेकिन मुज्तहिद अगर ग़लती करे तो भी उससे मुवाख़ज़ा न होगा बल्कि उसको अज्र और ष़वाब मिलेगा। ये उस सूरत में है जब मुज्तहिद जान बूझकर नस़ या इज्माअ़ का ख़िलाफ़ न करे वरना गुनहगार होगा और उसकी अ़दालत जाती रहेगी। जैसे ऊपर गुज़र चुका। इस ह़दीष़ से कुछ ने ये भी निकाला है कि हर क़ाज़ी मुज्तहिद होना चाहिये वरना उसकी क़ज़ा स़ह़ीह़ न होगी। अहले ह़दीष़ का यही क़ौल है और यही राजेह़ है और ह़नफ़िया ने मुक़ल्लिद क़ाज़ी की भी क़ज़ा जाइज़ रखी है और ये कहा है कि मुक़ल्लिद को अपने इमाम के हुक्म के बरख़िलाफ़ हुक्म देना जाइज़ नहीं मगर उस पर कोई दलील नहीं है। मुम्किन है कि आदमी कुछ मसाइल में मुक़ल्लिद हो कुछ मसाइल में मुज्तहिद हो जिस मसले में आदमी तमाम दलाइल को अच्छी त़रह़ देख ले उसमें वो मुज्तहिद हो जाता है और जब उस मसले में मुज्तहिद हो गया तो अब उसको उस मसले में तक़्लीद दुरुस्त नहीं है बल्कि दलील पर अ़मल करना चाहिये। यही क़ौल ह़क़ और यही ष़वाब है और जिसने इसके ख़िलाफ़ किया है कि दलील मा'लूम होने पर भी उसके ख़िलाफ़ अपने इमाम की तक़्लीद पर जमा रहा उसका क़ौल नामा'कूल और ग़लत़ है। दलील मा'लूम होने के बाद दलील की पैरवी करना ज़रूरी है और तक़्लीद जाइज़ नहीं और अल्लाह तआ़ला ने जाबजा क़ुर्आन मे ऐसे मुक़ल्लिदों की मज़म्मत की है जो दलील मा'लूम होने पर भी तक़्लीद पर जमे रहते थे ये स़रीह़ जिहालत और नाइंसाफ़ी है।

٢٢- باب الْحُجَّةِ عَلَى مَنْ قَالَ : إِنَ أَحْكَامَ النَّبِيِّ ﷺ كَانَتْ ظَاهِرَةً وَمَا كَانَ يَغِيبُ بَعْضُهُمْ عَنْ مُشَاهِدِ النَّبِيِّ ﷺ وَأُمُورِ الإِسْلاَمِ

बाब 22 : उस शख़्स़ का रद्द जो ये समझता है

कि आँह़ज़रत (ﷺ) के तमाम अह़काम हर एक स़ह़ाबी को मा'लूम रहते थे इस बाब में ये भी बयान किया है कि बहुत से स़ह़ाबा आँह़ज़रत (ﷺ) के पास से ग़ायब रहते थे और उनको इस्लाम की कई बातों की ख़बर न होती थी।

तश्रीह़ : तो कुछ बात अकाबिर स़ह़ाबा पर जैसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) या अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) थे, पोशीदा रह जाती। जब दूसरे स़ह़ाबा से सुनते तो फ़ौरन उस पर अ़मल करते और अपनी राय से रुजूअ़ करते। स़ह़ाबा, ताबेईन, अइम्मा-ए-दीन सबके ज़मानों में यही होता रहा कुछ अह़ादीष़ उनको पहुँचीं, कुछ न पहुँचीं क्योंकि उस ज़माने में ह़दीष़ की किताबें जमा नहीं हुई थीं। अब ह़नफ़िया का ये समझना कि इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) को सब अह़ादीष़ पहुँची थीं बिलकुल ख़िलाफ़े अ़क़्ल और ख़िलाफ़े वाक़िया है। ऐसा होता तो ख़ुद इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ये क्यूँ फ़र्माते कि जहाँ तुमको आँह़ज़रत (ﷺ) की ह़दीष़ मिल जाए तो मेरा क़ौल छोड़ दो। जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को सब अह़ादीष़ न पहुँची हों तो इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) की निस्बत ये ख़्याल करना क्यूँकर स़ह़ीह़ हो सकता है और जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कुछ मसाइल मे ग़लती हुई है तो और इमाम या मुज्तहिद किस शुमार व क़त़ार में हैं। पस अस़ल इमाम व मुक़्तदा मा'सूम अ़निल ख़त़ा सय्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (ﷺ) ही हैं। उम्मत में किसी का ये मुक़ाम नहीं है।

٧٣٥٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، حَدَّثَنِي عَطَاءٌ، عَنْ عُبَيْدِ

7353. हमसे मुसद्दद बिन मुसरहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त्त़ान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज

ने, उनसे अ़ता बिन अबी रिबाह ने, उनसे उ़बैद बिन उ़मैर ने बयान किया कि अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने उ़मर (रज़ि.) से (मिलने की) इजाज़त चाही और ये देखकर कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) मशग़ूल हैं आप जल्दी से वापस चले गये। फिर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि क्या मैंने अभी अ़ब्दुल्लाह बिन कैस (अबू मूसा रज़ि .) की आवाज़ नहीं सुनी थी? उन्हें बुला लो। चुनाँचे उन्हें बुलाया गया तो उ़मर (रज़ि.) ने पूछा कि ऐसा क्यूँ किया? (कि जल्दी वापस हो गये) उन्होंने कहा कि हमें ह़दीष़ में इसका हुक्म दिया गया है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि इस ह़दीष़ पर कोई गवाह लाओ, वरना मैं तुम्हारे साथ ये (सख़्ती) करूँगा। चुनाँचे ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) अंस़ार की एक मज्लिस में गये। उन्होंने कहा कि इसकी गवाही हममें से सबसे छोटा दे सकता है। चुनाँचे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) खड़े हुए और कहा कि हमें दरबारे नबवी से इसका हुक्म दिया जाता था। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) का ये हुक्म मुझे मा'लूम नहीं था, मुझे बाज़ार के कामों ख़रीद व फ़रोख़्त ने इस ह़दीष़ से ग़ाफ़िल रखा। (राजेअ़ : 2062)

بْنِ عُمَيْرٍ قَالَ: اسْتَأْذَنَ أَبُو مُوسَى عَلَى عُمَرَ فَكَأَنَّهُ وَجَدَهُ مَشْغُولاً فَرَجَعَ فَقَالَ عُمَرُ: أَلَمْ أَسْمَعْ صَوْتَ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ ائْذَنُوا لَهُ؟ فَدُعِيَ لَهُ فَقَالَ: مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا صَنَعْتَ؟ فَقَالَ: إِنَّا كُنَّا نُؤْمَرُ بِهَذَا، قَالَ: فَأْتِنِي عَلَى هَذَا بِبَيِّنَةٍ أَوْ لأَفْعَلَنَّ بِكَ، فَانْطَلَقَ إِلَى مَجْلِسٍ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالُوا: لاَ يَشْهَدُ إِلاَّ أَصَاغِرُنَا، فَقَامَ أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ فَقَالَ : قَدْ كُنَّا نُؤْمَرُ بِهَذَا، فَقَالَ عُمَرُ: خَفِيَ عَلَيَّ هَذَا مِنْ أَمْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَلْهَانِي الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ.

[راجع: ٢٠٦٢]

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपनी निस्यान (भूल) को फ़ौरन तस्लीम करके ह़दीष़े नबवी के आगे सर झुका दिया। एक मोमिन मुसलमान की यही शान होनी चाहिये कि ह़दीष़े पाक के सामने इधर उधर की बातें छोड़कर सरे तस्लीम ख़म कर दे। बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि कुछ अह़ादीष़ ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को बाद में मा'लूम हुईं, ये कोई ऐ़ब की बात नहीं है। मज़्मूने ह़दीष़ एक बहुत बड़े अदबी, अख़्लाक़ी, समाजी अम्र पर मुश्तमिल है अल्लाह हर मुसलमान को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ दे, आमीन।

7354. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यय्ना ने, कहा मुझसे ज़ुह्री ने, उन्होंने अअ़रज से सुना, उन्होने बयान किया कि मुझे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि तुम समझते हो कि अबू हुरैरह (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की बहुत ज़्यादा ह़दीष़ बयान करते हैं, अल्लाह के ह़ुज़ूर में सबको जाना है। बात ये थी कि मैं एक मिस्कीन शख़्स था और पेट भरने के बाद हर वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ रहना चाहता था लेकिन मुहाजिरीन को बाज़ार के कारोबार मशग़ूल रखते थे और अंस़ार को अपने माला की देखभाल मस़रूफ़ रखती थी। मैं एक दिन आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर था और आपने फ़र्माया कि कौन अपनी चादर फैलाएगा, यहाँ तक मैं अपनी बात पूरी कर लूँ और फिर वो अपनी चादर समेट ले और उसके बाद कभी मुझसे सुनी हुई कोई

٧٣٥٤- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ مِنَ الأَعْرَجِ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ: إِنَّكُمْ تَزْعُمُونَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ يُكْثِرُ الْحَدِيثَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَاللهُ الْمَوْعِدُ إِنِّي كُنْتُ امْرَأً مِسْكِينًا أَلْزَمُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى مِلْءِ بَطْنِي، وَكَانَ الْمُهَاجِرُونَ يَشْغَلُهُمُ الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ، وَكَانَتِ الأَنْصَارُ يَشْغَلُهُمُ الْقِيَامُ عَلَى أَمْوَالِهِمْ، فَشَهِدْتُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ وَقَالَ: ((مَنْ

يَبْسُطْ رِدَاءَهُ حَتَّى أَقْضِيَ مَقَالَتِي ثُمَّ يَقْبِضْهُ فَلَنْ يَنْسَ شَيْئًا سَمِعَهُ مِنِّي؟)) فَبَسَطْتُ بُرْدَةً كَانَتْ عَلَيَّ فَوَ الَّذِي بَعَثَهُ بِالْحَقِّ مَا نَسِيتُ شَيْئًا سَمِعْتُهُ مِنْهُ.[راجع: ١١٨]

बात न भूले। चुनाँचे मैंने अपनी चादर जो मेरे जिस्म पर थी, फैला दी और उस ज़ात की क़सम! जिसने आँहज़रत (ﷺ) को हक़ के साथ भेजा था फिर कभी मैं आपकी कोई हदीष़ जो आपसे सुनी थी, नहीं भूला। (राजेअ : 118)

तश्रीह : हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को पाँच हज़ार से ज़ाइद अहादीष़ बरज़ुबान याद थीं। कुछ लोग इस कष़रते हदीष़ पर रश्क करते, उनके जवाब में आपने ये बयान दिया जो यहाँ मज़्कूर है बाब और हदीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है।

٢٣– باب مَنْ رَأَى تَرْكَ النَّكِيرِ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ حُجَّةً لاَ مِنْ غَيْرِ الرَّسُولِ

बाब 23 : आँहज़रत (ﷺ) से एक बात कही जाए और आप उस पर इंकार न करें जिसे तक़रीर कहते हैं तो ये हुज्जत है। आँहज़रत (ﷺ) के सिवा और किसी की तक़रीर हुज्जत नहीं

तश्रीह : क्योंकि आप ख़ता से मा'सूम और महफ़ूज़ थे और आप (ﷺ) का इंकार न करना इस फ़ेअल के जवाज़ की दलील है। दूसरे लोगों का सुकूत जवाज़ की दलील नहीं हो सकता। कुछ ने कहा अगर एक सहाबी ने दूसरे सहाबा के सामने या एक मुज्तहिद ने एक बात कही और दूसरे सहाबा ने या मुज्तहिदों ने उसको सुनकर उस पर सुकूत किया तो इज्माअ़े सुकूती कहलाया जाएगा वो भी हुज्जत है जैसे हज़रत उमर (रज़ि.) ने मुतआ की हुर्मत पर बरसरे मिम्बर बयान किया और दूसरे सहाबा ने उस पर इंकार नहीं किया तो गोया इसकी हुर्मत पर इज्माअ़े सुकूती हो गया।

٧٣٥٥– حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: رَأَيْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَحْلِفُ بِاللهِ إِنَّ ابْنَ الصَّيَّادِ الدَّجَّالُ قُلْتُ تَحْلِفُ بِاللهِ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ عُمَرَ يَحْلِفُ عَلَى ذَلِكَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ يُنْكِرْهُ النَّبِيُّ ﷺ.

7355. हमसे हम्माद बिन हुमैद ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मुआ़ज़ ने, कहा हमसे हमारे वालिद हज़रत मुआ़ज़ बिन हस्सान ने बयान किया, उनसे शुअ़बा बिन हज्जाज ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को देखा कि वो इब्ने स़य्याद के वाक़िये पर अल्लाह की क़सम खाते थे। मैंने उनसे कहा कि आप अल्लाह की क़सम खाते हैं? उन्होंने कहा कि मैंने उ़मर (रज़ि.) को नबी करीम (ﷺ) के सामने अल्लाह की क़सम खाते देखा और आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर कोई इंकार नहीं किया।

तश्रीह : अगर इब्ने स़य्याद दज्जाल न होता तो आप ज़रूर हज़रत उ़मर (रज़ि.) को उस पर क़सम खाने से मना करते। यहाँ ये इश्काल होता है कि ऊपर किताबुल जनाइज़ में गुज़र चुका है कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उसकी गर्दन मारना चाही तो आपने फ़र्माया अगर वो दज्जाल है तब तो तू इसकी गर्दन न मार सकेगा। अगर दज्जाल नहीं है तो इसका मारना तेरे हक़ में बेहतर न होगा। इससे मा'लूम होता है कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) को उसके दज्जाल होने में शक था, फिर हज़रत उ़मर (रज़ि.) के क़सम खाने पर आपने इंकार क्यूँ नहीं किया। इसका जवाब ये है कि शायद पहले आँहज़रत (ﷺ) को उसके दज्जाल होने में शुब्हा हो फिर हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ये क़सम खाई उस वक़्त मा'लूम हो गया कि वही दज्जाल है। अबू दाऊद ने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से निकाला वो क़सम खाते थे और कहते थे बेशक इब्ने स़य्याद ही मसीह दज्जाल है और मुम्किन है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत उ़मर (रज़ि.) पर इसलिये इंकार न किया हो कि इब्ने स़य्याद भी उन तीस दज्जालों में से एक दज्जाल

किया, कहा मुझसे मेरे वालिद और चचा ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया और उनसे उनके वालिद ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुबैर ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) ने ख़बर दी कि एक ख़ातून रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आईं तो आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें एक हुक्म दिया। उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अगर मैं आपको न पाऊँ तो फिर क्या करूँगी? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब मुझे न पाओ तो अबूबक्र (रज़ि.) के पास जाना। हुमैदी ने इब्राहीम बिन सअ़द से ये इज़ाफ़ा किया कि ग़ालिबन ख़ातून की मुराद वफ़ात थी। इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा हुमैदी ने इस रिवायत में इब्राहीम बिन सअ़द से इतना बढ़ाया है कि आपको न पाऊँ, इससे मुराद ये है कि आपकी वफ़ात हो जाए। (राजेअ : 3659)

إبْراهيمَ، حَدَّثَنا أبي وَعَمِّي قالاَ: حَدَّثَنا أبي عَنْ أبيهِ أخْبَرَني مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرٍ أنَّ أباهُ جُبَيْرَ بْنَ مُطْعِمٍ أخْبَرَهُ أنَّ امْرَأةً أتَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَكَلَّمَتْهُ في شَيْءٍ، فَأمَرَها بِأمْرٍ فَقالَتْ: أرَأيْتَ يا رَسُولَ اللهِ إنْ لَمْ أجِدْكَ قالَ: ((إنْ لَمْ تَجِدِيني فَائْتِي أبا بَكْرٍ)). زادَ الْحُمَيْدِيُّ عَنْ إبْراهيمَ بْنِ سَعْدٍ كَأنَّها تَعْني الْمَوْتَ.

[راجع: ٣٦٥٩]

तश्रीह : इस ह़दीष़ को इमाम बुख़ारी (रह़.) दलालत की मिष़ाल के त़ौर पर लाए कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने औ़रत के ये कहने से कि मैं आपको न पाऊँ ये समझ लिया कि मुराद इसकी मौत है। कुछ ने कहा इसमें दलालत है अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) के ख़लीफ़ा होने की और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने जो कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने किसी को ख़लीफ़ा नहीं किया तो इसका मत़लब ये है कि स़राह़त के साथ, बाक़ी इशारे के त़ौर पर तो कई अह़ादीष़ से मा'लूम होता है कि आप अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) को ख़लीफ़ा करना चाहते थे। मष़लन ये ह़दीष़ और मर्ज़े मौत में अबूबक्र (रज़ि.) को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म देने की ह़दीष़ और ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि) की वो ह़दीष़ कि अपने भाई और बाप को बुला भेज, मैं लिख दूँ, ऐसा न हो कोई आरज़ू करने वाला कुछ और आरज़ू करे और वो ह़दीष़ कि स़ह़ाबा ने आपसे पूछा, हम आपके बाद किसको ख़लीफ़ा करें फ़र्माया अबूबक्र (रज़ि.) को करोगे तो वो ऐसे हैं उ़मर(रज़ि.) को करोगे तो वो ऐसे हैं, अ़ली (रज़ि.) को करोगे तो वो ऐसे हैं मगर मुझको उम्मीद नहीं कि तुम अ़ली (रज़ि.) को करोगे। इस ह़दीष़ में भी अबूबक्र (रज़ि.) को पहले बयान किया और शाह वलीउल्लाह स़ाह़ब ने इज़ालतुल ख़ुलफ़ा में इस बह़ष़ को बहुत तफ़्स़ील से बयान किया है।

बाब 25 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान कि, अहले किताब से दीन की कोई बात न पूछो

٢٥- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ تَسْألُوا أهْلَ الْكِتابِ عَنْ شَيْءٍ))

7361. अबुल यमान इमाम बुख़ारी (रह़.) के शैख़ ने बयान किया, कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हे ज़ुह्री ने, उन्हें हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी, उन्होंने मुआ़विया (रज़ि.) से सुना, वो मदीने में क़ुरैश की एक जमाअ़त से ह़दीष़ बयान कर रहे थे। मुआ़विया (रज़ि.) ने कअ़ब अह़बार बहुत सच्चे थे और बावजूद उसके कभी कभी उनकी बात झूठ निकलती थी। ये मत़लब नहीं है कि कअ़ब अह़बार झूठ बोलते थे।

٧٣٦١- وَقالَ أبو الْيَمانِ، أخْبَرَنا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أخْبَرَني حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ سَمِعَ مُعاوِيَةَ يُحَدِّثُ رَهْطًا مِنْ قُرَيْشٍ بِالْمَدينَةِ، وَذَكَرَ كَعْبَ الأحْبارِ فَقالَ: إنْ كانَ مِنْ أصْدَقِ هَؤُلاءِ الْمُحَدِّثِينَ الَّذينَ يُحَدِّثُونَ عَنْ أهْلِ الْكِتابِ، وَإنْ كُنَّا مَعَ ذَلِكَ لَنَبْلُو عَلَيْهِ

लफ़्ज़ अहद से नफ़ी कर दी गई है और कभी शिर्कत मर्तबा और मन्सब में होती है उसकी नफ़ी लफ़्ज़े समद से की गई है। कभी शिर्कत निस्बत में होती है जिसकी लफ़्ज़ लम यलिद से नफ़ी की गई है और कभी शिर्कत काम और ताष़ीर मे होती है उसकी नफ़ी लफ़्ज़े वलम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद से की गई है। आगे हज़रत शाह साहब फ़र्माते हैं कि दुनिया के मज़ाहिबे बातिला पाँच हैं। अव्वल दहरिया, दौम फ़लासफ़ा, सौम ष़नविया, चौथा यहूद व नसारा, पाँचवाँ मजूसिया और हर एक के ज़िक्र में हज़रत शाह साहब ने इस सूरह का वो कलिमा ज़िक्र किया है जिससे उस फ़िर्के की तर्दीद होती है। पस इस सूरह को मसल-ए-तौहीद में जामेअ व मानेअ क़रार दिया गया है इसीलिये इसकी फ़ज़ीलत है जो इस हदीष़ में मज़्कूर है।

M-09825696131

7375. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अहमद बिन सालेह ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उनसे अम्र ने, उनसे अबू हिलाल ने और उनसे अबुर्रिजाल मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे उनकी वालिदा अम्र बिन्ते अब्दुर्रहमान ने, वो उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) की परवरिश में थीं। उन्होंने आइशा (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक साहब को एक मुहिम पर रवाना किया। वो साहब अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाते थे और नमाज़ में ख़त्म क़ुल हुवल्लाहु अहद पर करते थे। जब लोग वापस आए तो उसका ज़िक्र आँहज़रत (ﷺ) से किया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनसे पूछो कि वो ये तर्ज़े अमल क्यूँ इख़्तियार किये हुए थे। चुनाँचे लोगों ने पूछा तो उन्होंने कहा कि वो ऐसा इसलिये करते थे कि ये अल्लाह की सिफ़त है और मैं उसे पढ़ना अज़ीज़ रखता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें बता दो कि अल्लाह भी उन्हें अज़ीज़ रखता है।

٧٣٧٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنَا عَمْرٌو، عَنِ ابْنِ أَبِي هِلاَلٍ أَنَّ أَبَا الرِّجَالِ مُحَمَّدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَهُ عَنْ أُمِّهِ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَكَانَتْ فِي حَجْرِ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ رَجُلاً عَلَى سَرِيَّةٍ، وَكَانَ يَقْرَأُ لأَصْحَابِهِ فِي صَلاَتِهِ فَيَخْتِمُ بِقُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ فَلَمَّا رَجَعُوا ذَكَرُوا ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((سَلُوهُ لأَيِّ شَيْءٍ يَصْنَعُ ذَلِكَ؟)) فَسَأَلُوهُ فَقَالَ: لأَنَّهَا صِفَةُ الرَّحْمَنِ، وَأَنَا أُحِبُّ أَنْ أَقْرَأَ بِهَا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَخْبِرُوهُ أَنَّ اللهَ يُحِبُّهُ)).

तशरीह : इस सूरह शरीफ़ में अल्लाह तआला की अव्वलीन सिफ़त वहदानियत दूसरी सिफ़ते समदानियत को ज़ाहिर किया गया है। मअरिफ़ते इलाही के समझने के सिलसिले में वजूदे बारी तआला की ज़ात इससे बिलकुल पाक है कि वो औलाद मिष़्ल मख़्लूक़ के रखता हो या कोई उसका जनने वाला हो वो इन दोनों सिलसिलों से बहुत दूर है। इस सिलसिले के लिये मुज़क्कर हो या मुअन्नष़ हम ज़ात होना ज़रूरी है और सारी कायनात में उसका हम ज़ात कोई नहीं है। वो इस बारे में भी वहदहू ला शरीक लहू है। इन तमाम कामों को समझकर मअरिफ़ते इलाही हासिल करना अंबिया किराम का यही अव्वलीन पैग़ाम है। यही अस़ल दा'वते दीन है **ला इलाहा इल्लल्लाह** का यही मफ़्हूम है।

बाब 2 : अल्लाह तआला का इर्शाद सूरह बनी इस्राईल में कि आप कह दीजिए कि अल्लाह को पुकारो या रहमान को, जिस नाम से भी पुकारोगे

٢- باب قَوْلِ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى : ﴿قُلِ ادْعُوا اللهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَنَ أَيًّامَا تَدْعُوا

तो अल्लाह के सब नाम अच्छे हैं. (बनी इस्राईल)

فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ﴾ [الأسراء: ١١٠]

तश्रीह : निन्नान्वे नाम तो बहुत मशहूर हैं जो तिर्मिज़ी की ह़दीष़ में वारिद हैं और उनके सिवा भी बहुत नाम और स़िफ़ात क़ुर्आन व ह़दीष़ में वारिद हैं। उन सबसे अल्लाह को याद कर सकते हैं लेकिन अपने त़रफ़ से कोई नाम या स़िफ़त तराशना जाइज़ नहीं। ह़ज़राते सूफ़िया ने फ़र्माया है कि अल्लाह के मुबारक नामों में अजीब आष़ार हैं बशर्ते कि आदमी पाक होकर अदब से इनको पढ़ा करे और ये भी ज़रूरी है कि ह़लाल का लुक़्मा खाता हो, ह़राम से परहेज़ करता हो। मष़लन ग़िना और तवंगरी के लिये या ग़नी या मुग़नी का विर्द रखे। शिफ़ा और तन्दुरुस्ती के लिये या शाफ़ी या काफ़ी या माफ़ी का, हुसूले मत़ालिब के लिये या क़ाज़ियुल ह़ाजात या काफ़ियुल मुहिम्मात का, दुश्मन पर ग़ल्बा ह़ास़िल करने के लिये या अ़ज़ीज़ या क़ह्हार का, अज़्दियादे इ़ज़्ज़त और आबरू के लिये या राफ़िअ़ या मुइ़ज़्ज़ का, अ़ला हाज़ल क़यास। (वह़ीदी)

7376. हमसे मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू मुआ़विया ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें ज़ैद बिन वहब और अबू ज़िब्यान ने और उनसे जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो लोगों पर रह़म नही खाता अल्लाह भी उस पर रह़म नहीं खाता।

(राजेअ़ : 6013)

٧٣٧٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ وَأَبِي ظَبْيَانَ، عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ يَرْحَمُ اللهُ مَنْ لاَ يَرْحَمُ النَّاسَ)). [راجع: ٦٠١٣]

M-09825696131

बाब की मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि अल्लाह की एक स़िफ़त रह़म भी है तो रह़मान और रह़ीम नामों से भी उसे पुकार सकते हैं।

7377. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे आ़स़िम अह़वल ने, उनसे अबू उ़ष़्मान नह्दी ने और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास थे कि आपकी एक स़ाह़बज़ादी ह़ज़रत ज़ैनब के भेजे हुए एक शख़्स़ आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए कि उनके लड़के जाँकनी में मुब्तला हैं और वो आँह़ुज़ूर (ﷺ) को बुला रही हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि तुम जाकर उन्हें बता दो कि अल्लाह ही का सब माल है जो चाहे ले ले और जो चाहे दे दे और उसकी बारगाह में हर चीज़ के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है। पस उनसे कहो कि स़ब्र करें और उस पर स़ब्र ष़वाब की निय्यत से करें। स़ाह़बज़ादी ने दोबारा आपको क़सम देकर कहला भेजा कि आप ज़रूर तशरीफ़ लाएँ। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) खड़े हुए और आपके साथ सअ़द बिन मुआ़ज़ और मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) भी खड़े हुए (फिर जब आप स़ाह़बज़ादी के घर पहुँचे तो) बच्चे आपको दिया गया और उसकी सांस उखड़ रही थी जैसे पुरानी मुश्क का ह़ाल होता है। ये देखकर आँह़ज़रत (ﷺ) की आँखों मे आँसू भर आए। उस पर सअ़द (रज़ि.) ने कहा या

٧٣٧٧- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ إِذْ جَاءَهُ رَسُولُ إِحْدَى بَنَاتِهِ يَدْعُوهُ إِلَى ابْنِهَا فِي الْمَوْتِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((ارْجِعْ فَأَخْبِرْهَا أَنَّ للهِ مَا أَخَذَ، وَلَهُ مَا أَعْطَى وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُسَمًّى، فَمُرْهَا فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ)) فَأَعَادَتِ الرَّسُولَ أَنَّهَا أَقْسَمَتْ لَتَأْتِيَنَّهَا فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَامَ مَعَهُ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَمُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ فَدُفِعَ الصَّبِيُّ إِلَيْهِ وَنَفْسُهُ تَقَعْقَعُ كَأَنَّهَا فِي شَنٍّ، فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ فَقَالَ لَهُ سَعْدٌ : يَا رَسُولَ اللهِ مَا هَذَا؟ قَالَ:

M-09825696131

((هَذِهِ رَحْمَةٌ جَعَلَهَا اللهُ فِي قُلُوبِ عِبَادِهِ وَإِنَّمَا يَرْحَمُ اللهُ مِنْ عِبَادِهِ الرُّحَمَاءَ)).
[راجع: ١٢٨٤]

रसूलल्लाह! ये क्या है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये रहमत है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में रखी है और अल्लाह भी अपने उन्हीं बन्दों पर रहम करता है जो रहम दिल होते हैं। (राजेअ़ : 1284)

तर्जुम-ए-बाब यहीं से निकला कि अल्लाह के लिये सिफ़ते रहम का इष्बात हुआ।

٣- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿أَنَا الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ﴾

बाब 3 : अल्लाह तआला का इर्शाद सूरह वज़्ज़ारियात में, मैं बहुत रोज़ी देने वाला, ज़ोरदार मज़बूत हूँ

तश्रीह : कुर्आन मजीद में यूँ है, **इन्नल्लाह हुवर्रज़्ज़ाकु ज़ुल कुव्वतिल मतीन** (अज़्ज़ारियात : 58) हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ लफ़्ज़ अन्नर्रज़्ज़ाक़ लिखे हैं। इब्ने मसऊद (रज़ि) की यही क़िरात है।

٧٣٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا أَحَدٌ أَصْبَرَ عَلَى أَذًى سَمِعَهُ مِنَ اللهِ يَدْعُونَ لَهُ الْوَلَدَ، ثُمَّ يُعَافِيهِمْ وَيَرْزُقُهُمْ)).
[راجع: ٦٠٩٩]

7378. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे अबू अ़ब्दुर्रहमान सुल्मी ने और उनसे अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तकलीफ़ वो बात सुनकर अल्लाह से ज़्यादा स़ब्र करने वाला कोई नहीं है। कमबख़्त मुश्रिक कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है और फिर भी वो उन्हें माफ़ करता है और उन्हें रोज़ी देता है। (राजेअ़ : 6099)

٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿عَالِمُ الْغَيْبِ فَلاَ يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا﴾ [الجن: ٢٦]. ﴿وَإِنَّ اللهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾، وَأَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ - ﴿وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَى وَلاَ تَضَعُ إِلاَّ بِعِلْمِهِ﴾ - ﴿إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾. قَالَ يَحْيَى بْنُ زِيَادٍ الظَّاهِرُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا وَالْبَاطِنُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا.

बाब 4 : अल्लाह तआला का इर्शाद है सूरह जिन में कि, वो ग़ैब का जानने वाला है और अपने ग़ैब को किसी पर नहीं खोलता।

और सूरह लुक़्मान में फ़र्माया, बिला शुब्हा अल्लाह के पास क़यामत का इल्म है, और उसने अपने इल्म ही से उसे नाज़िल किया। और औरत जिसे अपने पेट में उठाती है और जो कुछ जनती है वो उसी के इल्म के मुताबिक़ होता है और उसी की तरफ़ क़यामत में लौटाया जाएगा। यह्या बिन ज़ियाद फ़रा ने कहा हर चीज़ पर ज़ाहिर है या'नी इल्म की वजह से और हर चीज़ पर बातिन है या'नी इल्म की वजह है।

٧٣٧٩- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ

7379. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उन्होंने

M-09825696131

कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। ग़ैब की पाँच कुँजियाँ हैं, जिन्हें अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता। अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि रहम मादर में क्या है, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि बारिश कब आएगी, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि किस जगह कोई मरेगा और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि क़यामत कब क़ायम होगी? (राजेअ़ : 1039)

دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ لاَ يَعْلَمُهَا إِلاَّ اللهُ لاَ يَعْلَمُ مَا تَغِيضُ الأَرْحَامُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ، إِلاَّ اللهُ وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى يَأْتِي الْمَطَرُ أَحَدٌ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ إِلاَّ اللهُ)).
[راجع: ١٠٣٩]

तश्रीह : इस पर सब मुसलमानों का इत्तिफ़ाक़ है कि ग़ैब का इल्म आँहज़रत (ﷺ) को भी न था मगर जो बात अल्लाह तआ़ला आपको बतला देता वो मा'लूम हो जाती। इब्ने इस्हाक़ ने मग़ाज़ी में नक़ल किया कि आँहज़रत (ﷺ) की ऊँटनी गुम हो गई तो इब्ने स़ल्लत कहने लगा। मुहम्मद (ﷺ) अपने तईं पैग़म्बर कहते हैं और आसमान के ह़ालात तुमसे बयान करते हैं लेकिन उनको अपनी ऊँटनी की ख़बर नहीं वो कहाँ है? ये बात आँहज़रत (ﷺ) को पहुँची तो फ़र्माया एक शख़्स ऐसा ऐसा कहता है और मैं तो क़सम अल्लाह की वही बात जानता हूँ जो अल्लाह तआ़ला ने मुझको बतलाई और अब अल्लाह तआ़ला ने मुझको बतला दिया वो ऊँटनी फ़लाँ घाटी में है, एक पेड़ पर अटकी हुई है, आख़िर स़ह़ाबा गये और उसको लेकर आए।

7380. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे शअ़बी ने बयान किया, कि अगर तुमसे कोई ये कहता है कि मुहम्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा तो वो ग़लत़ कहता है क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने बारे में ख़ुद कहता है कि नज़रें उसको देख नहीं सकतीं और जो कोई कहता है कि आँहज़रत (ﷺ) ग़ैब जानते थे तो ग़लत़ कहता है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ख़ुद कहता है कि ग़ैब का इल्म अल्लाह के सिवा और किसी को नहीं। (राजेअ़ : 3234)

٧٣٨٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : مَنْ حَدَّثَكَ أَنَّ مُحَمَّدًا ﷺ رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ كَذَبَ وَهُوَ يَقُولُ: ﴿لاَ تُدْرِكُهُ الأَبْصَارُ﴾ [الأنعام: ١٠٣] وَمَنْ حَدَّثَكَ أَنَّهُ يَعْلَمُ الْغَيْبَ فَقَدْ كَذَبَ، وَهُوَ يَقُولُ: ﴿لاَ يَعْلَمُ الْغَيْبَ إِلاَّ اللهُ﴾).
[راجع: ٣٢٣٤]

तश्रीह : सच है,

इल्म ग़ैबी किस नुमी दांद बजुज़ परवरदिगारगर किसे दा'वा कन्द हर्गिज़ अज़्बावर मदार

जो ग़ाली लोग रसूले करीम (ﷺ) के लिये इल्मे ग़ैब षाबित करते हैं वो क़ुर्आन मजीद की तह़रीफ़ करते हैं और अज़्ख़ुद एक ग़लत़ अक़ीदा घड़ते हैं। लोगों को ऐसे ख़न्नास लोगों से दूर रहकर अपने दीन व ईमान की ह़िफ़ाज़त करनी चाहिये। रसूले करीम (ﷺ) ने जो भी ग़ायबाना ख़बरें दी हैं वो सब वह्य इलाही से हैं। उनको ग़ैब कहना लोगों को धोखा देना है।

बाब 5 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह ह़श्र में,

٥- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿السَّلاَمُ

अगर वो मुझसे एक हाथ क़रीब आता है तो मैं उससे दो हाथ क़रीब हो जाता हूँ और अगर वो मेरी तरफ़ चलकर आता है तो मैं उसके पास दौड़कर आ जाता हूँ। (दीगर मक़ाम : 7505, 7537)

تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا، وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً)). [طرفاه في : ٧٥٠٥، ٧٥٣٧].

तश्रीह : या'नी मेरा बन्दा मेरे साथ जैसा गुमान रखेगा मैं उसी तरह उससे पेश आऊँगा। अगर ये गुमान रखेगा कि मैं उसके क़ुसूर माफ़ कर दूँगा तो ऐसा ही होगा। अगर ये गुमान रखेगा कि मैं उसको अज़ाब दूँगा तो ऐसा ही होगा। हदीष़ से ये निकला कि रजा का पहलू बन्दे में ग़ालिब होना चाहिये और परवरदिगार के साथ नेक गुमान रखना चाहिये। अगर गुनाह बहुत हैं तो भी ये ख़्याल रखना चाहिये कि वो ग़फ़ूरुर्रहीम है। उसकी रहमत से मायूस नहीं होना चाहिये। **इन्नल्लाह यग़्फ़िरुज़्ज़ुनुब जमीअन अन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम.** (अज़्ज़ुमर : 53)

बाब 16 : सूरह क़सस़ में अल्लाह तआला का इर्शाद, अल्लाह के चेहरे के सिवा तमाम चीज़ें मिट जाने वाली हैं

١٦- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلاَّ وَجْهَهُ﴾ [القصص : ٨٨]

तश्रीह : ग़र्ज़ इमाम बुख़ारी (रह़.) की ये है कि चेहरे का इत्लाक़ परवरदिगार पर क़ुर्आन व हदीष़ में आ रहा है और गुमराह जहमिया ने इसका इंकार किया है। उन्होंने चेहरे से ज़ात और यद से क़ुदरत के साथ तावील की है। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह़.) ने इसका रद्द किया है।

7406. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत नाज़िल हुई। आप कह दीजिए कि वो क़ादिर है इस पर कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से अ़ज़ाब नाज़िल करे, तो नबी करीम (ﷺ) ने कहा, मैं तेरे चेहरे की पनाह माँगता हूँ। फिर आयत के ये अल्फ़ाज़ नाज़िल हुए जिनका तर्जुमा ये है कि, वो तुम्हारे ऊपर से तुम पर अ़ज़ाब नाज़िल करे या तुम्हारे पैरों के नीचे से अ़ज़ाब आ जाए। तो आँहज़रत (ﷺ) ने फिर ये दुआ़ की कि मैं तेरे चेहरे की पनाह चाहता हूँ। फिर ये आयत नाज़िल हुई जिनका तर्जुमा ये है, या तुम्हें फ़िर्क़ाबन्दी में मुब्तला कर दे (कि ये भी अ़ज़ाब की क़िस्म है) तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये आसान है ब निस्बत अगले अ़ज़ाबों के। (राजेअ़ : 4628)

٧٤٠٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ: ﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ﴾ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَعُوذُ بِوَجْهِكَ فَقَالَ: ﴿أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ﴾)) [الانعام: ٦٥] فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَعُوذُ بِوَجْهِكَ قَالَ: ﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا﴾)) [الانعام : ٦٥] فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَذَا أَيْسَرُ)).

[راجع: ٤٦٢٨]

क्योंकि उनमें सब तबाह हो जाते हैं। मा'लूम हुआ कि फ़िर्क़ाबन्दी भी अल्लाह तआला का अ़ज़ाब है। उम्मत अ़र्से से इस अ़ज़ाब में मुब्तला हैं और वो इसको अ़ज़ाब मानने के लिये तैयार नहीं, सद अफ़सोस।

बाब 17 : सूरह त़ाहा (39) में अल्लाह तआला का हज़रत मूसा (अ़.) से फ़र्माना कि, मेरी आँखों के सामने तू परवरिश पाए. और इर्शाद इलाही

١٧- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : [طه : ٣٩] ﴿وَلِتُصْنَعَ عَلَى عَيْنِي﴾ تُغَذَّى وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ : ﴿تَجْرِي

भरती होने वाली है। कहा कि जहाँ तक जन्नत का ता'ल्लुक़ है तो अल्लाह अपनी मख़्लूक़ में किसी पर ज़ुल्म नही करेगा और दोज़ख़ की इस तरह से कि अल्लाह अपनी मख़्लूक़ में से जिसको चाहेगा और दोज़ख़ के लिये पैदा करेगा वो उसमें डाली जाएगी उसके बाद भी दोज़ख़ कहेगी और कुछ मख़्लूक़ है (मैं अभी ख़ाली हूँ) तीन बार ऐसा ही होगा। आख़िर परवरदिगार अपना पैर उसमें रख देगा। उस वक़्त वो भर जाएगी, एक पर एक उलट कर सिमट जाएगी। कहने लगेगी बस बस बस मैं भर गई। (राजेअ : 4849)

بِكِ مَنْ أَشَاءُ وَلِكُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْكُمَا مِلْؤُهَا قَالَ : فَأَمَّا الْجَنَّةُ فَإِنَّ اللهَ لاَ يَظْلِمُ مِنْ خَلْقِهِ أَحَدًا، وَإِنَّهُ يُنْشِىءُ لِلنَّارِ مَنْ يَشَاءُ فَيُلْقَوْنَ فِيهَا فَتَقُولُ: هَلْ مِنْ مَزِيدٍ؟ ثَلاَثًا حَتَّى يَضَعَ فِيهَا قَدَمَهُ فَتَمْتَلِىءُ وَيُرَدُّ بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ وَتَقُولُ: قَطْ قَطْ قَطْ)).

[راجع: ٤٨٤٩]

ये अल्लाह का क़दम रखना बरहक़ है जिसकी तफ़्सील अल्लाह ही को मा'लूम है उसमें कुरेद करना बिदअत है और तस्लीम करना सलफ़ का तरीक़ा है।

7450. हमसे हफ़्स बिन उमर हौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कुछ लोग उन गुनाहों की वजह से जो उन्होंने किये होंगे, आग से झुलस जाएँगे। ये उनकी सज़ा होगी। फिर अल्लाह अपनी रहमत से उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा और उन्हें जहन्नमीन कहा जाएगा। और हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से यही हदीष़ बयान की। (राजेअ : 6559)

٧٤٥٠– حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيُصِيبَنَّ أَقْوَامًا سَفْعٌ مِنَ النَّارِ بِذُنُوبٍ أَصَابُوهَا عُقُوبَةً، ثُمَّ يُدْخِلُهُمُ اللهُ الْجَنَّةَ بِفَضْلِ رَحْمَتِهِ يُقَالُ لَهُمْ: الْجَهَنَّمِيُّونَ)). وَقَالَ هَمَّامٌ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ حَدَّثَنَا أَنَسٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٦٥٥٩]

बाब 26 : अल्लाह तआला का सूरह फ़ातिर में ये फ़र्मान कि बिला शुब्हा अल्लाह आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है वो अपनी जगह से टल नहीं सकते

٢٦– بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّ اللهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ أَنْ تَزُولاَ﴾

7451. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि एक यहूदी आलिम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और कहा, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! क़यामत के दिन अल्लाह तआला आसमानों को एक उँगली पर, ज़मीन को एक उँगली पर, पहाड़ों को एक उँगली पर, पेड़ और नहरों को एक उँगली पर और तमाम मख़्लूक़ात को एक उँगली पर रखेगा। फिर अपने हाथ से इशारा करके कहेगा कि मैं ही बादशाह हूँ। इस पर

٧٤٥١– حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : جَاءَ حَبْرٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ اللهَ يَضَعُ السَّمَاءَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَالأَرْضَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَالْجِبَالَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالشَّجَرَ وَالأَنْهَارَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَسَائِرَ الْخَلْقِ عَلَى

إصْبَعٍ ثُمَّ يَقُولُ بِيَدِهِ: أَنَا ا[illegible]كُ، فَضَحِكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَقَالَ: ((﴿وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَقَّ قَدْرِهِ﴾)). [راجع: ٤٨١١]

आँहज़रत (ﷺ) हंस दिये और ये आयत पढ़ी, वमा क़दरुल्लाह हक़्क़ा क़दरिही जो सूरह ज़ुमर में है। (राजेअ : 4811)

अल्लाह के लिये उँगली का इ़्बात हुआ जिसकी तावील करना त़रीक़-ए-सलफ़ स़ालिह़ीन के ख़िलाफ़ है।

٢٧- بَابُ مَا جَاءَ فِي تَخْلِيقِ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَغَيْرِهَا مِنَ الْخَلاَئِقِ

बाब 27 : आसमानों और ज़मीन और दूसरी मख़्लूक़ के पैदा करने का बयान

وَهُوَ فِعْلُ الرَّبِّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى وَأَمْرُهُ فَالرَّبُّ بِصِفَاتِهِ وَفِعْلِهِ وَأَمْرِهِ وَهُوَ الْخَالِقُ الْمُكَوِّنُ غَيْرُ مَخْلُوقٍ، وَمَا كَانَ بِفِعْلِهِ وَأَمْرِهِ وَتَخْلِيقِهِ وَتَكْوِينِهِ فَهُوَ مَفْعُولٌ وَمَخْلُوقٌ وَمُكَوَّنٌ.

और ये पैदा करना अल्लाह तबारक व तआला का एक फ़ेअल और उसका अम्र है। पस अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त अपनी सिफ़ात, अपने फ़ेअल और अपने अम्र समेत ख़ालिक़ है, वही बनाने वाला है और ग़ैर मख़्लूक़ है और जो चीज़ भी उसके फ़ेअल, उसके अम्र, उसकी तख़्लीक़ और उसकी तक्वीन से बनी हैं वो सब मख़्लूक़ और मुकव्वन हैं।

तशरीह : ये बाब लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अहले सुन्नत का मज़हब ष़ाबित किया कि अल्लाह की स़िफ़ात ख़्वाह ज़ातिया हों जैसे इ़ल्म, क़ुदरत, ख़्वाह अफ़्आलिया हों ख़ल्क़, तरज़ीक़, कलाम, नुज़ूल, इस्तवा वग़ैरह ये सब ग़ैर मख़्लूक़ हैं और मुअतज़िला व जहमिया का रद्द किया। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने रिसाला ख़ल्क़े अफ़्आलुल इ़बाद में लिखा है कि क़दरिया तमाम अफ़्आल का ख़ालिक़ बशर को जानते हैं और जबरिया तमाम अफ़्आल का ख़ालिक़ और फ़ाइ़ल अल्लाह को कहते हैं और जहमिया कहते हैं फ़ेअल और मफ़ऊल एक है। इसी वजह से वो कलिमा कुन को भी मख़्लूक़ कहते हैं और सलफ़ अहले सुन्नत का ये क़ौल है कि तख़्लीक़ अल्लाह का फ़ेअल है और मख़्लूक़ हमारे अफ़्आल हैं न कि अल्लाह तआला के अफ़्आल वो अल्लाह की स़िफ़ात हैं। अल्लाह की ज़ात सिफ़ात के सिवा बाक़ी सब चीज़ें मख़्लूक़ हैं। (वह़ीदी)

٧٤٥٢- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، أَخْبَرَنِي شَرِيكُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: بِتُّ فِي بَيْتِ مَيْمُونَةَ لَيْلَةً وَالنَّبِيُّ ﷺ عِنْدَهَا لأَنْظُرَ كَيْفَ صَلاَةُ رَسُولِ اللهِ ﷺ بِاللَّيْلِ فَتَحَدَّثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَعَ أَهْلِهِ سَاعَةً ثُمَّ رَقَدَ فَلَمَّا كَانَ ثُلُثُ اللَّيْلِ الأَخِيرِ أَوْ بَعْضُهُ قَعَدَ فَنَظَرَ إِلَى السَّمَاءِ فَقَرَأَ: ﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ - إِلَى قَوْلِهِ لأُولِي - الأَلْبَابِ﴾

7452. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझे शुरैक बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी नम्र ने ख़बर दी, उन्हें कुरैब ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक रात मैंने उम्मुल मोमिनीन मैमूना (रज़ि.) के घर गुज़ारी। उस रात नबी करीम (ﷺ) उन्हीं के पास थे। मेरा मक़्स़द रात में आँहज़रत (ﷺ) की नमाज़ को देखना था। आँहज़रत (ﷺ) ने थोड़ी देर तो अपनी अहलिया के साथ बातचीत की, फिर सो गये। जब रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा या कुछ हिस्सा बाक़ी रह गया तो आप उठ बैठे और आसमान की त़रफ़ देखकर ये आयत पढ़ी। बिला शुब्हा आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में अ़क़्ल रखने वालों के लिये निशानियाँ हैं, फिर उठकर

किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रईल (अ.) को आवाज़ देता है कि अल्लाह फ़लाँ से मुहब्बत करता है तुम भी उससे मुहब्बत करो। चुनाँचे जिब्रईल (अ.) भी उससे मुहब्बत करते हैं। फिर वो आसमान में आवाज़ देते हैं कि अल्लाह फ़लाँ से मुहब्बत करता है तुम भी उससे मुहब्बत करो। चुनाँचे अहले आसमान भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं और इस तरह रूए ज़मीन में भी उसे मक़्बूलियत हासिल हो जाती है।

(राजेअ : 3209)

رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى إِذَا أَحَبَّ عَبْدًا نَادَى جِبْرِيلَ إِنَّ اللهَ قَدْ أَحَبَّ فُلاَنًا فَأَحِبَّهُ فَيُحِبُّهُ جِبْرِيلُ، ثُمَّ يُنَادِي جِبْرِيلُ فِي السَّمَاءِ إِنَّ اللهَ قَدْ أَحَبَّ فُلاَنًا، فَأَحِبُّوهُ فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ وَيُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي أَهْلِ الأَرْضِ)).

[راجع: ٣٢٠٩]

उसकी ता'ज़ीम और मुहब्बत सबके दिलों में समा जाती है। ये ख़ालिसन मुवह्हिदीन सुन्नते नबवी के ताबेदारों का ज़िक्र है उन ही को दूसरे लफ़्ज़ों में औलिया अल्लाह कहा जाता है न कि फ़ुस्साक़ फ़ुज्जार बिदअती लोग वो तो अल्लाह और रसूल के दुश्मन हैं।

7486. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारे पास रात और दिन के फ़रिश्ते एक के बाद एक आते हैं और अस्र और फ़ज्र की नमाज़ों में दोनों वक़्त के फ़रिश्ते इकट्ठे होते हैं। फिर जब वो फ़रिश्ते ऊपर जाते हैं जिन्होंने रात तुम्हारे साथ गुज़ारी है तो अल्लाह तआला उनसे पूछता है हालाँकि वो बन्दों के अहवाल का सबसे ज़्यादा जानने वाला है कि तुमने मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़ा? वो जवाब देते हैं कि हमने उन्हें इस हाल में छोड़ा कि वो नमाज़ पढ़ रहे थे और जब हम उनके पास गये जब भी वो नमाज़ पढ़ रहे थे। (राजेअ : 555)

٧٤٨٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، قَالَ: ((يَتَعَاقَبُونَ فِيكُمْ مَلاَئِكَةٌ بِاللَّيْلِ وَمَلاَئِكَةٌ بِالنَّهَارِ، وَيَجْتَمِعُونَ فِي صَلاَةِ الْعَصْرِ وَصَلاَةِ الْفَجْرِ، ثُمَّ يَعْرُجُ الَّذِينَ بَاتُوا فِيكُمْ فَيَسْأَلُهُمْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِهِمْ كَيْفَ تَرَكْتُمْ عِبَادِي؟ فَيَقُولُونَ: تَرَكْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ وَأَتَيْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ)).

[راجع: ٥٥٥]

इस हदीष से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों से कलाम करता है।

7487. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे वासिल ने, उनसे मअरूर ने बयान किया कि मैंने अबू ज़र्र (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे पास जिब्रईल (अ.) आए और मुझे ये बशारत दी कि जो शख़्स इस हाल में मरेगा कि वो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता होगा तो वो जन्नत में जाएगा। मैंने पूछा गो उसने चोरी की और ज़िना भी की हो? फ़र्माया कि गो उसने चोरी और ज़िना किया हो। (राजेअ : 1237)

٧٤٨٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ وَاصِلٍ عَنِ الْمَعْرُورِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَتَانِي جِبْرِيلُ فَبَشَّرَنِي أَنَّهُ مَنْ مَاتَ لاَ يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا، دَخَلَ الْجَنَّةَ قُلْتُ: وَإِنْ سَرَقَ وَإِنْ زَنَى قَالَ: وَإِنْ سَرَقَ وَإِنْ زَنَى)). [راجع: ١٢٣٧]